मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व का सन्दर्भ-ग्रन्थ

डॉ० राजकुमार शर्मा



मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अव

मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व का सन्दर्भ-ग्रन्थ

Published by Madhya Pradesh Hindi Granth Academy under the Centrally Sponsored Scheme of Production of Books and Literature in Regional Languages at the University Level, of the Government of India in the Ministry of Education and Social Welfare (Department of Culture), New Delhi.

मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व का सन्दर्भ-ग्रन्थ

(पूर्व-मुस्लिम काल)

डा० राजकुमार शर्मा
व्याख्याता, इतिहास विभाग, जबलपुर विश्वविद्यालय
जबलपुर



मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व का सन्दर्भ-ग्रन्थ

Madhyapradesh Ke Puratatva Ka Sandarbha-Grantha

BY

Dr. Raj Kumar Sharma

प्रकाशक
मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
97, मालवीय नगर, भोपाल-3

●

●

प्रथम संस्करण
1974

●

मूल्य : 50 रुपये

●

मुद्रक
धारा प्रेस, 609 कटरा, इलाहाबाद-2

R B 25/H B 2175/1974

श्रद्धा और उत्साह के आलम्बन

पूज्य

मां

के चरणों में

प्राक्कथन

स्वतन्त्र चिन्तन और सृजनात्मक प्रतिभा का विकास सच्चे अर्थ में तब तक सम्भव नहीं जब तक सभी स्तरों पर मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा नहीं दी जाती। भारतीय मानस और मेधा अपने परिवेश और आवश्यकताओं की अनुरूपता में तब तक नयी दिशाओं का संधान नहीं कर सकेगी जब तक वह विदेशी भाषा में अन्तर्निहित संस्कारों से मुक्त नहीं होती। राष्ट्रीय चरित्र का भावबोध अपनी भाषाओं के माध्यम से निश्चय ही अधिक प्रभावशाली हो सकेगा।

इस तथ्य को अनुभव के स्तर पर स्वीकार करने के बाद से भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने के सतत प्रयास किये जाते रहे हैं। इनकी सफलता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा थी पाठ्य पुस्तकों का अभाव। इस अभाव को दूर करने के लिए एक विशाल योजना और दृढ़ निश्चय की आवश्यकता थी। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने इसी उद्देश्य से विश्वविद्यालयीन ग्रन्थ-निर्माण योजना के अन्तर्गत प्रत्येक राज्य को एक-एक करोड़ रुपये का वित्तीय अनुदान देकर अकादमियों की स्थापना की प्रेरणा दी। इसी क्रम में मध्यप्रदेश में भी जुलाई, १९६९ में हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की स्थापना हुई।

विगत चार वर्षों में अकादमी ने विज्ञान, तकनीकी, कृषि तथा मानविकी के विभिन्न विषयों में डेढ़ सौ से भी अधिक मौलिक तथा अनुवाद-ग्रन्थ प्रकाशित किये हैं। इनमें स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थियों की आवश्यकता एवं पाठ्यक्रम की अनुरूपता का ध्यान रखा गया है। प्रकाशनों में केन्द्रीय शब्दावली आयोग द्वारा तैयार की गयी मानक शब्दावली समान रूप से प्रयुक्त हुई है।

मुझे विश्वास है कि अकादमी के प्रकाशनों से हिन्दी-भाषा में विश्वविद्यालयीन-स्तर के ग्रन्थों का अभाव पर्याप्त रूप में दूर होगा और विद्यार्थी अपनी मातृभाषा के माध्यम से ज्ञान-विज्ञान की प्रगति से अवगत हो सकेंगे। साथ ही, मैं यह भी आशा करता हूँ कि शिक्षा जगत में इन प्रकाशनों का दिन-प्रति-दिन अधिकाधिक स्वागत होगा।

अर्जुनसिंह

अध्यक्ष

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

प्रस्तावना

भारत के प्राचीन इतिहास को रूपायित करने में पुरातत्त्व एक अनिवार्य और अत्यन्त महत्वपूर्ण उपादान सिद्ध हुआ है। उसके द्वारा इतिहास के क्षेत्र में प्रचलित अनेक भ्रान्त धारणाओं का निराकरण हुआ है और इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए नये और सुदृढ़ आधार प्राप्त हुए हैं। इतिहास की टूटी कड़ियाँ जोड़ने में तो पुरातत्त्व का योगदान अपूर्व है ही।

यों तो भारत के प्रत्येक भू-भाग में पुरातत्त्व की सामग्री उपलब्ध होती रही है, परन्तु वर्तमान मध्यप्रदेश की भौगोलिक सीमाओं के अन्तर्गत जो सामग्री प्राप्त हुई है, उससे समस्त भारत का अतीत गौरवान्वित हुआ है इस दिशा में ज्यों-ज्यों अधिकाधिक कार्य होता रहेगा उसके गौरव में क्रमशः वृद्धि होती रहेगी।

इस प्रदेश की पुरातत्त्व सामग्री इतिहास की दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है। शिलालेखों के रूप में उपलब्ध यहाँ की सामग्री साहित्य की उज्ज्वल परम्परा को और उज्ज्वल बनाने वाली है। मूर्तियों, मन्दिरों और राज-प्रासादों के उत्कृष्ट नमूने इस प्रदेश की सूक्ष्म कलात्मक दृष्टि और परिष्कृत अभिरुचि के परिचायक मात्र नहीं, प्रत्यक्ष प्रमाण भी हैं।

पुरातत्त्व के समर्पित विद्वानों ने इस प्रदेश में उपलब्ध महत्वपूर्ण सामग्री को अपने-अपने साधनों और सामर्थ्य के अनुरूप समय-समय पर सूचीनिबद्ध करने का सराहनीय प्रयत्न किया है। उस समस्त सामग्री को तथा उन प्रयत्नों के अनन्तर की गयी खोज के परिणामस्वरूप प्राप्त सामग्री का एकत्र समावेश करके उसे प्रकाशित करने की आवश्यकता का अनुभव देर से किया जा रहा था यह आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य किसी भी सामान्य प्रकाशक की शक्ति के बाहर की बात थी। अकादमी ने इसकी आवश्यकता का तीव्र अनुभव किया और हमारे उस महत्वपूर्ण कार्य का सम्पादन करने का भार जबलपुर विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के व्याख्याता डाक्टर राजकुमार शर्मा को सौंपा गया। डाक्टर शर्मा ने इस कार्य को सम्पादित करके इतिहास के अध्येता विद्वानों और प्रौढ़ छात्रों की उल्लेखनीय सेवा की है।

प्रत्येक महत्वपूर्ण पुस्तकालय के लिए यह ग्रन्थ अनिवार्य रूप से संग्रहणीय है। हमें आशा है कि इस ग्रन्थ से पुरातत्त्व विषयक साहित्य की एक बहुत बड़ी कमी दूर होगी। प्राचीन इतिहास की अन्वेषक प्रतिभाओं को इससे अमूल्य सहायता मिलेगी और उनके द्वारा इस ग्रन्थ का समुचित स्वागत होगा।

[signature]

संचालक
मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

भूमिका

प्राचीन भारत के राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास में आधुनिक मध्यप्रदेश की सीमा के अन्तर्गत आने वाले भू-भाग का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक इस प्रदेश के विभिन्न भागों में भारतीय संस्कृति अनेक रूपों में फूली-फली। अतः स्वभावतः ही विद्वानों का ध्यान इस विस्तृत भू-खण्ड में फैली पुरातत्त्व विषयक उस सामग्री की ओर गया जो प्राचीन भारत के इतिहास तथा संस्कृति को समझने में महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के गत सौ वर्ष से भी लम्बे समय के परिश्रम के फलस्वरूप तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों, संस्थाओं और व्यक्तिगत प्रयत्नों से मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व के विभिन्न पहलुओं पर अनेक विद्वानों द्वारा पर्याप्त लिखा जा चुका है। परन्तु इस सामग्री का व्यवस्थित एकत्रीकरण आज तक भी नहीं हुआ है। प्रस्तुत ग्रन्थ में इसी लक्ष्य को पूरा करने का एक प्रयास किया गया है।

मध्यप्रदेश के कुछ सीमित क्षेत्रों से सम्बन्धित पुरातात्विक विषयक ग्रन्थ लिखने के प्रयत्न इसके पहले भी किये गये हैं। इस प्रकार का एक प्रयास डॉ० हरिहर त्रिवेदी के "ए बिबलियोग्राफ़ी आफ़ मध्यभारत आर्केयलाजी" में किया गया जो १९५३ में प्रकाशित हुआ। मध्यभारत क्षेत्र में फैले स्मारकों की एक सूची बनाने का प्रयत्न "ए डेसक्रिपटिव एण्ड क्लासिफाइड लिस्ट आफ़ एनशियन्ट मानुमेन्टस् इन मध्यभारत" नामक पुस्तक में श्री डी० आर० पाटिल ने किया। इसी प्रकार ग्वालियर राज्य में उपलब्ध अभिलेखों की तालिका श्री हरिहर निवास द्विवेदी द्वारा "ग्वालियर राज्य के अभिलेख" नामक ग्रन्थ के रूप में प्रस्तुत की गयी जिसका प्रकाशन १९४७ में हुआ। राज्य पुनर्गठन के पहले के मध्यप्रदेश की सीमा के अन्तर्गत, जिसमें विदर्भ भी शामिल था, उपलब्ध अभिलेखों की विवरणात्मक सूची बनाने का एक उल्लेखनीय प्रयास स्वर्गीय रायबहादुर हीरालाल द्वारा "इन्सक्रिपशन्स इन दी सी० पी० एण्ड बरार" नामक पुस्तक के रूप में किया गया जिसका अन्तिम संस्करण १९३२ में प्रकाशित हुआ था। इसके पहले हेनरी कज़िन्स द्वारा मध्यप्रदेश में उपलब्ध स्मारकों की एक सूची "लिस्ट्स आफ़ एन्टिक्वेरियन रिमेन्स इन दी सी० पी० एण्ड बरार" नामक पुस्तक के रूप में निर्मित की गयी जो १८९७ में प्रकाशित हुई। स्व० डॉ० मोरेश्वर दीक्षित द्वारा पुराने मध्यप्रदेश के अन्तर्गत स्थित पुरातत्त्व की सामग्री की ओर संकेत करने के लिए "मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व की रूपरेखा" नामक पुस्तक १९५४ में प्रकाशित की गयी।

इस ग्रन्थ में सात अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में मध्यप्रदेश के प्रागैतिहासिक काल से पूर्व-मुस्लिम काल (ग्वालियर के तोमर शासकों के पतन तक) का इतिहास संक्षिप्त, परन्तु प्रामाणिक रूप से प्रस्तुत किया गया है। पुरातत्त्व के मूल स्रोतों को आधार बनाकर इस इतिहास को लिखा गया है। इन स्रोतों का उल्लेख अध्याय की पाद-टिप्पणियों में है जो प्रस्तुत ग्रन्थ के विभिन्न सन्दर्भ-क्रमांकों की ओर संकेत करते हैं, जहाँ उनका संक्षिप्त विवरण है।

द्वितीय अध्याय मध्यप्रदेश के प्रागैतिहासिक तथा आद्यैतिहासिक काल के पुरातत्त्व से सम्बन्धित है। इसमें उन स्थलों तथा उपलब्ध उपकरणों का वर्णन है जो इस काल के हैं। स्थलों का वर्गीकरण आधुनिकतम मान्य कालक्रम के अनुसार कर उन्हें वर्णमाला के क्रमानुसार व्यवस्थित किया गया है। उपलब्ध सामग्री का वर्णन करने के लिए उसी शब्दावली का प्रयोग किया गया है जिसे केन्द्रीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के सम्बन्धित प्रतिवेदनों में उपयोग में लाया गया है। पुरातत्त्व विभाग के पिछले बीस वर्षों के प्रतिवेदनों में इस काल से सम्बन्धित शब्दावली के उपयोग में भिन्नता दिखलायी पड़ती है। विस्तृत विवरण के अभाव में लेखक ने उन्हें यथावत रहने देना ही उचित समझा है।

तृतीय अध्याय में मध्यप्रदेश की सीमा के अन्तर्गत प्राप्त अभिलेखों को सूचीकृति किया गया है। ये अभिलेख तोमरों के पतन के पूर्व (विक्रम संवत् १५८० अर्थात् १५२३ ई०) तक के हैं। इस बीच के जो मुस्लिम शासकों के अभिलेख प्राप्त हुए हैं, उन्हें इस सूची मे सम्मिलित नहीं किया गया है। विभिन्न राजवंशों से सम्बन्धित इन अभिलेखों को तिथि क्रमानुसार व्यवस्थित किया गया है। प्रत्येक अभिलेख में वर्णित सामग्री के संक्षिप्त विवरण का उल्लेख प्रस्तुत अध्याय में है।

चतुर्थ अध्याय मध्यप्रदेश के प्राचीन स्मारक तथा प्रतिमा-सम्पदा से सम्बन्धित है। ये स्मारक धार्मिक हैं, अतः अध्ययन की सुविधा के दृष्टिकोण से इनका वर्गीकरण धर्म के आधार पर किया गया है। प्रत्येक धर्म से सम्बन्धित स्मारक-स्थलों को वर्णक्रम से व्यवस्थित करके स्मारकों का विवरण देते हुए सन्दर्भ सहित रखा गया है।

पंचम अध्याय में मध्यप्रदेश के सीमा के अन्तर्गत उपलब्ध प्राचीन राजवंशों के सिक्के, मुहर तथा मुद्रांकनों का वर्णन है। मान्य कालक्रम के अनुसार इन्हें विभाजित कर प्रत्येक सिक्के अथवा सिक्कों की निधियों के प्राप्त-स्थलों को वर्णक्रम से रखा गया है।

षष्ठ अध्याय मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व संग्रहालयों से सम्बन्धित है। परन्तु केवल एक-दो संग्रहालयों को छोड़कर किसी भी संग्रहालय की सन्तोषजनक सूची अभी तक प्रकाशित नहीं हुई है। अभिलेखों के आधार पर संरक्षित पुरातत्त्व की सामग्री की संक्षिप्त सूची एवं व्यक्तिगत तथा स्थानीय संस्थाओं द्वारा संचालित संग्रहों की सूची प्रस्तुत अध्याय में समाविष्ट है।

सप्तम् अध्याय में मध्यप्रदेश के सीमा के अन्तर्गत आज तक किये गये लगभग सभी महत्वपूर्ण उत्खननों का संक्षिप्त विवरण है। प्रत्येक स्थल के उत्खनन में कौन-सी विभिन्न कालक्रमों की सभ्यताएँ प्रकाश में आयीं, उत्खनन के दौरान कौन-सी मूल्यवान वस्तुएँ प्राप्त हुई, तथा कार्बन-१४ की रीति से निर्धारित तिथियों का उल्लेख इस अध्याय में किया गया है।

सप्तम् अध्याय के बाद सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची दी गयी है। इसमें प्रत्येक अध्याय से सम्बन्धित केवल उन ग्रन्थों तथा लेखों का विवरण है जो साधारणतः प्रस्तुत ग्रन्थ के मूल भाग में नहीं सम्मिलित किये गये हैं अथवा जिनका पूर्ण विवरण देना नितान्त आवश्यक समझा गया है। इस खण्ड के अन्त में पी-एच० डी० के सम्बन्धित उन शोध-प्रबन्धों की सूची भी दी गयी है जो मध्यप्रदेश के प्राचीन इतिहास तथा पुरातत्त्व से सम्बन्धित हैं। पुस्तक के अन्त में वंशावली, स्थल-सूची, अनुक्रमणिका, शब्दावली तथा मध्यप्रदेश का पुरातात्विक मानचित्र दिया गया है।

अन्त में मैं उन सभी विद्वानों तथा मित्रों का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस कठिन विषय पर पुस्तक लिखने में सहायता प्रदान की अथवा प्रोत्साहित किया। प्रो० कृष्णदत्त वाजपेयी, अध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग, सागर विश्व-विद्यालय ने अपने सत्परामर्शों से मुझे उपकृत किया है। इस ग्रन्थ के अन्त में संलग्न मध्य-प्रदेश के पुरातत्त्व का मानचित्र उन्हीं की सहायता का परिणाम है। डा० अजयमित्र शास्त्री, रीडर, नागपुर विश्वविद्यालय ने इस पुस्तक के तृतीय तथा पंचम अध्याय के लिए नवीनतम सूचनाएँ उपलब्ध करा कर मुझे उपकृत किया है। मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व विभाग के उप-संचालक श्री वीरेन्द्र कुमार वाजपेयी तथा केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग के सहायक अधीक्षक श्री चन्द्रभूषण त्रिवेदी ने मुझे अपने सुझाओं द्वारा सामग्री एकत्रित करने में पूर्ण सहायता प्रदान की। मध्यप्रदेश के सभी संग्रहालयों के अध्यक्षों ने मुझे उनके संग्रहालय में संरक्षित पुरातत्त्व की सामग्री की सूची बनाने में पूर्ण सहयोग दिया। शासकीय संग्रहालयों के अतिरिक्त स्थानीय तथा व्यक्तिगत संग्रहों की सूची बनाने में उज्जैन के श्री वी० श्री० वाकणकर तथा इन्दौर के श्री आर० एस० गर्ग ने मुझे विशेष योगदान दिया। इन्दौर के डा० नागू तथा उमरावसिंह बघेल और जबलपुर के डा० सन्तलाल कटारे तथा डा० महेशचन्द्र चौबे ने अपने व्यक्तिगत संग्रहालयों की सूची प्रदान कर मुझे उपकृत किया है। मैं इन सभी विद्वानों का हृदय से आभारी हूँ। मेरे प्रिय शिष्य श्री शिवनारायण पाठक तथा श्री दिलीप जोशी ने इस कार्य में मेरी बहुत सहायता की है। प्राचीन भारतीय इतिहास तथा पुरातत्त्व के मर्मज्ञ मध्यप्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री पं० द्वारकाप्रसाद जी मिश्र ने इस ग्रन्थ के लेखन की प्रगति में विशेष रुचि लेते हुए मुझे निरन्तर प्रोत्साहित किया है। मैं उनका हृदय से अभारी हूँ।

राजकुमार शर्मा

विषय-सूची

प्रथम अध्याय

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

चतुर्थ अध्याय

सप्तम् अध्याय

संक्षेप-सूची

आ० क० त्रि०	: Anant R. S., **Art and Architecture of the Kalachuris of Tripuri**—A Thesis for Ph. D. in the University of Jabalpur (unpublished), 1966.
आ० ग्वा०	: M. B. Gadre, **Archaeology in Gwalior**, 2nd Ed. Gwalior, 1934.
आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट	: **Archaeological Survey of India, Annual Report.**
इ० आ० रि०	: **Indian Archaeology—A Review.**
इ० ए०	: **Indian Antiquary**, Bombay.
इ० क०	: **Indian Culture**, Calcutta.
इ० ख०	: Kunwarlal, **Immortal Khajuraho,** 1965.
इ० नि० ग०	: Govt. of M. P., **East Nimar Gazetteer,** Bhopal, 1969.
इ० न्यू० क्र०	: **Indian Numismatic Chronicle.**
इ० स्टे० ग०	: **Indore State Gazetteer** by L. C. Dhariwal, Indore, 1931.
इ० हि० क्वा० IHQ.	: **Indian Historical Quarterly,** Calcutta.
ई० पू०	: ईसवी-पूर्व
ए० आई० AI.	: **Ancient India**—the Bulletin of the Department of Archaeology, Govt. of India.
ए० इ० EI.	: **Epigraphia Indica.**

ए० बि० इ० आ०	: Annual Bibliography of Indian Archacology, Leyden.
ए० भ० ओ० रि० इ०	: **Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute**, Poona.
ए० मा० न०	: Sankalia H. D., Subbarao B. and Deo S. B., **The Excavations at Maheshwar and Navdatoli** (1952-53).
ए० रि०	: **Asiatic Researches.**
ए० रि० इ० ए०	: **Annual Report of Indian Epigraphy.**
क० आ० स० इ० रि०	: **Cunningham's Archaeological Survey of India Reports.**
क० इ० इ०	: **Corpus Inscriptionum Indicarum.**
क० प्र० रि०	: Cousens H., **Progress Report of Archaeological Survey of India.**
क० लि० ए० रि०	: **Cousens H., Lists of Antiquarian Remains in the C. P. and Berar**, Calcutta, 1897.
क्वा० ए० इ०	: Cunningham A , **Coins of Ancient India.**
क्वा० मे० इ०	: Cunningham A., **Coins of Mediaeval India.**
कीलहार्न सूची	: Kielhorn F., **A list of Inscriptions in Northern India (from about 400 A. D.)**. Appendix to Epigraphia Indica, Vol. V, VIII.
के० इ० क्वा० ब्रि० म्यू०	: **Catalogue of Indian Coins in the British Museum—Ancient India.**
के० क्वा० ना० प०	: Trivedi H. V., **Catalogue of the Coins of the Naga Kings of Padmavati**, Gwalior, 1957.
के० म्यू० आ० सा०	: Marshall J., **Catalogue of the Museum of Archaeology at Sanchi**, 1922.
के० स्क० ग्वा० म्यू०	: Thakore S. R., **Catalogue of Sculptures in the Archaeological Museum, Gwalior.**

खo अo : Director of Information, M. P., **Khajuraho** (Album), 1958.

खo कृo : Krishna Deva, **Khajuraho** (Guide book), 1965.

खo जेo : Zennas E. and Auboyer J., **Khajuraho** (1960).

खo देo प्रo : अवस्थी रामाश्रय, **खजुराहो की देव प्रतिमाएँ**, आगरा, १९६७।

खo धाo : Dhama B. L., **Khajuraho** (Guide Book), 1953.

खo विo : Vijayatunga J., **Khajuraho**, (Guide book), 1960.

खo विo प्रo : Vidya Prakash, **Khajuraho**, 1967.

खo वैo : मुनि कान्तिसागर, **खण्डहरों के वैभव**, काशी १९५३।

खo स्कo सिo : Agrawal Urmila, **Khajuraho Sculptures** and **their Significance**, 1964.

गाo चo : Garde M. B., **Guide to Chanderi**.

गाo पुo : त्रिवेदी हरिहर, **गांधीसागर का पुरातत्व**, भोपाल।

गाo सुo : Garde M. B., **Guide to Surwaya.**

गाo स्टेo म्यूo इo : Paranjpe P. G., **A short Guide Book to the Central Museum, Indore**, 1961.

गाo स्टेo म्युo धुo : Dikshit S. K., **A Guide to the State Museum, Dhubela, Nowgong (BKD), Vindhya Pradesh,** (1955-57).

ग्वाo डिo गo : Government **of** M. P., **Gwalior District Gazetteer**, 1965.

ग्वाo पुo रिo : **Annual Administration Report, Archaeological Department, Gwalior State**, Gwalior.

चo जेo टाo : Dikshit R. K., **The Chandellas of Jejakabhukti and their Times**, A Thesis for Ph. D., Agra University, 1950 (unpublished).

जo अo ओo सोo : **Journal of the American Oriental Society.**

जo आo हिo रिo सोo : **Journal of the Andhra Historical Research, Society**, Rajahmundry.

जo इo म्यूo : **Journal of Indian Museums**, Bombay.
JIM.

जo इo हिo : **Journal of Indian History**, Trivandrum.
JIH.

जo एo : **Journal of Asiatique**, Paris.

जo एo सोo बo : **Journal of the Asiatic Society of Bengal**, Calcutta.

जo ओo इo : **Journal of Oriental Institute**, M. S. University of Baroda, Baroda.

जo डिo गo : Govt. of M. P., **Jabalpur District Gazetteer**, 1968.

जo न्युo सोo इo : **Journal of the Numismatic Society o India**, Varanasi.
JNSI.

जo बo हिo यूo : **Journal of the Benares Hindu University**, Varanasi.

जo बo ब्राo रo एo सोo : **Journal of the Bombay Branch of Royal Asiatic Society**, Bombay.

जo बिo ओo रिo सोo : **Journal of the Bihar and Orissa Research** Society, Patna.
JBORS.

जo मo प्रo इo पo : **Journal of the Madhya Pradesh Itihasa Parishad**, Bhopal.

जo यूo पीo हिo सोo : **Journal of the U. P. Historical Society**, Lucknow.
JUPHS.

जo रo एo सोo : **Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland**, London.

जo विo यूo : **The Vikram**—Journal of Vikram University, Ujjain, Kayatha, Excavation Number, 1967.

ट्रेo ट्रोo रिo : **Treasure Trove Reports of Madhya Pradesh**, Nagpur.

डाo फोo ग्वाo स्टेo : Grade M. B., **Directory of Forts in Gwalior State**.

डे० लि० म० म० भा०	: Patil D. R., **Descriptive and Classified list of Ancient Monuments in Madhya Bharat.**
द० दी०	: हीरालाल राय बहादुर, **दमोह दीपक।**
दु० डि० ग०	: Nelson A. E., **Drug District Gazetteer,** Calcutta, 1910.
धा० प्र०	: बालचन्द्र जैन, **महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय (रायपुर) के पुरातत्त्व उपविभाग में संग्रहीत वस्तुओं का सूचीपत्र,** भाग ३–धातु प्रतिमाएँ (१९६०)।
धा० मा०	: Luard, **Dhar and Mandu.**
ना० म्यू० ए० रि०	: **Nagpur Museum Acquisition Report,** Nagpur.
ना० म्यू० के०	: **Catalogue of existing coins in the Central Museum,** Nagpur, 1908.
ना० यु० ज० NUJ.	: **Nagpur University Journal,** Nagpur.
ना० सू०	: **श्री नामदेव, शोध छात्र, जबलपुर विश्वविद्यालय से सूचना प्राप्त।**
न्यू० नो० मो०	: **Numismatic Notes and Monographs,** Varanasi.
न्यू० स०	: **The Numismatic Supplement.**
पा० प्र०	: बालचन्द्र जैन, **महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय (रायपुर) के पुरातत्त्व उपविभाग में संग्रहीत वस्तुओं का सूचीपत्र,** भाग २, पाषाण प्रतिमाएँ (१९६०)।
पे० रा० शे० म०	: Pandey S. K., **Painted Rock-shelters in Madhya Pradesh**—A Thesis for Ph. D. submitted in the University of Saugar, 1970.
प्रो० अ० इ० ओ० का० PAIOC.	: **Procedings of the All India Oriental Conference.**
प्रो० ए० सो० ब० PASB.	: **Proceedings of the Asiatic Society of Bengal, Calcutta.**
प्रो० रि० आ० स० इ० वे० स०	: **Progress Report of the Archaeological Survey of India, Western Circle.**
ब्रा० के०	: **Brown C., Catalogue of the Pre-historic Antiquities in the Indian Museum,** 1917.

बु० प्रि० म्यू०	: **Bulletin of the Prince of Wales Museum**, Bombay.
भण्डारकर सूची	: D. R. Bhandarkar, **A list of the Inscriptions of Northern India in Brahmi and its derivative scripts, from about 200 A. C.**— Apdendix to Epigraphia Indica, Vols. XIX-XXIII.
भा० इ० सं० मं०	: **Bhartiya Itihasa Samsodhan Mandala**, Poona, Quarterly.
भि० टो०	: Cunningham A., **The Bhilsa Topes**, London, 1954.
म० उ० हि०	: Patil D. R., **Monuments of the Udayagiri Hills.**
म० डि० ग०	: Rudman F. R., **Mandla District Gazetteer**, Bombay, 1912.
म० पु०	: वाजपेयी कृष्णदत्त, **मध्यप्रदेश का पुरातत्व**, भोपाल, १९७० ।
म० पु० रू०	: दीक्षित मो० ग०, **मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व की रूपरेखा**, १९५४ ।
म० प्र० सं०	: **मध्यप्रदेश सन्देश**, सूचना तथा प्रकाशन विभाग, मध्यप्रदेश शासन, ग्वालियर ।
म० भा०	: **मध्यभारती**, सागर विश्वविद्यालय की शोध पत्रिका ।
म० भा० इ०	: द्विवेदी हरिहर निवास, **मध्यभारत का इतिहास**, प्रथम खण्ड, ग्वालियर, १९५६ ।
म० भा० पु० रि०	: **Annual Administration Report, Department of Archaeology, Madhya Bharat.**
म० सा०	: Marshall and Foucher, **Monuments of Sanchi**, 3 Vols. Delhi, 1940.
मा० सि० ज०	: Yazdani, **Mandu-the city of Joy.**
मि० आ० स० इ० MASI.	: **Memoir of the Archaeological Survey of India.**
रि० अ० हो० स्टे०	: **Reports on the Administration of the Holkar State, 1929-45.**

रि० जि० स० इ० RGSI.	: **Reports of the Geological Survey of India.**
व्य० सू०	: लेखक की व्यक्तिगत सूचना के आधार पर।
वा० रा० इ० अ०	: मिराशी वा० वि, वाकाटक राजवंश का इतिहास तथा अभिलेख, नागपुर।
वि० सं०	: विक्रम संवत्।
वे० नि० डि० ग०	: Govt. of M. P., **West Nimar District Gazetteer**, 1970.
श० सं०	: शक संवत्।
शु० अ० ग्र०	: शुक्ल अभिनन्दन ग्रन्थ। मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन, नागपुर, १९५५।
स० अ० इ० ओ० का०	: **Summaries of Papers of All India Oriental Conference.**
स्ट० आ० ए०	: De Terra and Paterson, **Studies on the Ice Age in India and Associated Human Cultures**, Washington, 1939.
स० इ० स्क०	: Saraswati S. K., **Survey of Indian Sculptures**, Calcutta, 1957.
सा० क० SC.	: **Science and Culture.**
सा० डि० ग०	: Govt. of M. P., **Sagar District Gazetteer,** 1967.
से० इ० ग० सी०	: **Central India State Gazetteer Series, Vol. V, Pt. A.** 1908.
हि० इ० इ० आ०	: Coomaraswamy A. K., **History of Indian and Indonesian Art**, London, 1927.
हि० क० द०	: **Thakur V. S.**, Ancient **History and Culture of Dakshina Kosala,** A Thesis for Ph. D. in the University of Jabalpur (unpublished), 1965.
हीरालाल सूची	: Hiralal R. B., **Inscriptions in the C. P. and Berar,** Nagpur 1932.

हे० म० इ० : **Handlist of Monuments, Indore Museum.**

हे० म० मा० : **Handlist of Monuments of Mandu.**

है० त्रि० मा० : Banerji R. D., **The Haihayas of Tripuri And Their Monuments**, Calcutta, 1931.

हो० ख० : Anand Mulk Raj, **Homage to Khajuraho**, Marg X, No. 3, 1957.

BDCRI. : **Bulletin of the Deccan College Research Institute**, Poona.

BPWM. : **Bulletin of the Prince of Wales Museum of Western India, Bombay.**

IAL. : **Indian Art and Letters.**

ILN. : **Illustrated London News.**

JMSUB. : **Journal of Maharaja Sayaji Rao Univercity of Baroda.**

JOR. : **Journal of Oriental Research, Madras.**

MHSP. : **Mahakoshal Historical Research Society's Papers**, Bilaspur.

NIA. : **New Indian Antiquary**, Bombay.

NMB. : **Nagpur Museum Bulletin.**

NPP. : **Nagari Pracharini Patrika**, Varanasi,

OHRS. : **Orissa Historical Research Society's Journal**, Bhubaneswar.

SPCPC. : **Seminar of Papers on the Chronology of Punch-Marked coins.** Memoir No. 1 of the Department of Ancient Indian History and Culture, Benares Hindu University, Varanasi

SPLC. : **Seminar of Papers on the local Coins of North India (300 BC-300 AD).** Memoir No. 2 of the Department of Ancient Indian History and Culture, Benares Hindu University, Varanasi.

प्रथम अध्याय

•

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

•

प्रागैतिहासिक तथा आद्यैतिहासिक काल

मध्यप्रदेश के इतिहास का प्रारम्भ पाषाण युग से होता है। पाषाण युग वह युग है जब मनुष्य पशुओं की भाँति जंगलों, पर्वतों और नदी घाटियों में विचरण करता था तथा कन्द-मूल-फल या पशुओं का शिकार कर अपना पेट भरता था। मूलादि के खोदने तथा पशुओं का शिकार करने के लिए वह नदियों में तथा स्थानीय प्राप्त होने वाले बट्टि-दार पत्थरों को तोड़कर उन्हें नुकीला बनाकर भद्दे औज़ार बनाता था। जिस युग में मनुष्य ने इस प्रकार के औज़ार बनाये, उसे पाषाण युग कहा जाता है। विकास की अवस्थाओं को दृष्टि में रखते हुए विद्वानों ने पाषाण युग को तीन भागों में विभाजित किया है। ये भाग हैं—

१—पूर्व-पाषाण युग

२—मध्य-पाषाण युग

३—उत्तर-पाषाण युग

मध्यप्रदेश के विभिन्न स्थानों से इन तीनों कालों से सम्बन्धित औज़ार प्राप्त हुए हैं।

पूर्व-पाषाण युग

इस युग का विशेष औज़ार जिसे बिना बेंट अथवा लकड़ी के बेंट के साथ उपयोग में लाया जाता था, हस्तकुठार था। इसके अतिरिक्त खुरचनी, मुष्टिकुठार तथा क्रोड भी इस काल के औज़ारों में शामिल हैं। इन औज़ारों के प्राप्ति स्थानों से स्पष्ट होता है कि तत्कालीन मनुष्य या तो नदियों के कगारों और झीलों के तटों पर या पर्वत कन्दराओं में रहता था। अतः पुरातत्वविद् ऐसे स्थलों की खोज प्राचीन नदी घाटियों में अथवा पर्वत कन्दराओं में करते हैं। खोज की दृष्टि से मध्यप्रदेश में अभी तक अग्नि, कुण्डाला, गौर, चम्बल, नर्मदा, सोन्नार, रेतम,

•

परियट, पार्वती, वैनगंगा, बाघ, बिला, धसान, बीना, बेतवा, अन्सेर, गंजई, मुर्ना, सोन, हिरन तथा मचिकुन्दा नदी घाटियों का पर्यवेक्षण किया गया है। यह कार्य अभी भी जारी है। उपरोक्त खोज करने में केन्द्रीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग, केन्द्रीय जिओलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया विभाग, प्रचीन भारतीय इतिहास तथा संस्कृति विभाग सागर विश्वविद्यालय, डेक्कन कालेज रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना तथा विक्रम विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय संस्कृति विभाग अग्रणी रहे। इन खोजों से पूर्व-पाषाणयुगीन जो स्थल अब तक प्रकाश में आये हैं वे—सीधी, शहडोल, सागर, पूर्व तथा पश्चिम निमाड़, मन्दसौर, शाजापुर, इन्दौर, जबलपुर, गुना, बस्तर, विदिशा, दमोह, राजगढ़, होशंगाबाद, छतरपुर, मण्डला, नरसिंहपुर, रीवा, राजगढ़, सिवनी, पन्ना, धार, सीहोर, रायसेन तथा रायगढ़ जिलों के अन्तर्गत स्थिति हैं।[1]

भारत के पूर्व-पाषाण युग का महत्वपूर्ण अनुसंधान कार्य १९३५ में 'डिटेरा' के नेतृत्व में 'येल-कैम्ब्रिज एक्सपेडिशन' ने किया। इस अनुसन्धान का क्षेत्र काश्मीर घाटी से लेकर साल्ट रेंज तक था। 'डिटेरा' का लक्ष्य था—इस सम्पूर्ण क्षेत्र में हिमानी (Glacial) और अन्तर-हिमानी (Inter-Glacial) के क्रम के आधार पर पाषाण कालीन सभ्यता का विश्लेषण करना। इस विश्लेषण में स्तरीय प्रमाण का सहारा लेकर उन्होंने पाषाणयुगीन औज़ारों के विकास की समस्या को सुलझाने का प्रयत्न किया। मध्यप्रदेश में नर्मदा नदी की घाटी में भी अनुसंधान करना येल कैम्ब्रिज एक्सपेडिशन के कार्य का एक महत्वपूर्ण अंग था। होशंगाबाद तथा नरसिंहपुर के बीच खोज तथा उत्खनन करते हुए उन्होंने पाषाणयुगीन तीन स्तरों के अस्तित्व का निष्कर्ष निकाला। ये थे (१) निम्न स्तर जिसमें पूर्व-सोहन प्रणाली के शल्क, अबेवीली, ऐश्यूली प्रणाली के हस्तकुठार तथा विदारणी मिले। यह सामग्री मिट्टी की मोटी तह से ढंकी थी। इस तह में पूर्वकालीन सोहन प्रणाली के शल्क और उत्तर कालीन ऐश्यूली प्रणाली के हस्तकुठार उपलब्ध हुए। (२) ऊर्ध्व सतह से ऐश्यूली प्रणाली के दुधारा उपकरण (Bifaces) तथा उत्तरकालीन सोहन प्रणाली के 'पेवल' उपकरण, शल्क और क्रोड मिले। (३) काली मिट्टी से विभिन्न पत्थरों के बने लघु पाषाण औज़ार प्राप्त हुए।

येल केम्ब्रिज एक्सपेडिशन के उक्त निष्कर्ष को मेक क्राउन, बैनर्जी, डॉ० सांकलिया, खत्री, सुब्बाराव आदि विद्वानों द्वारा बाद में किये गये खोजों के आधार पर गलत बताने का प्रयत्न किया गया। नर्मदा के स्तरीय साक्षों का ठीक से अध्ययन करने के लिये महेश्वर, आदमगढ़, महादेव पिपरिया आदि स्थानों पर उत्खनन कार्य करवाया गया तथा विभिन्न निष्कर्षों पर पहुँचा गया।[2] इस दिशा में और खोज अपेक्षित है।

मालवा क्षेत्र में भी चम्बल की सहायक शिवना नदी की खोज में मन्दसौर तथा नाहरगढ़ नामक स्थानों पर प्राप्त पूर्व-पाषाणयुगीन औज़ारों के अध्ययन से डॉ० खत्री द्वारा महत्वपूर्ण निष्कर्ष पर पहुँचा गया है।[3]

---

१. विस्तृत विवरण के लिए देखिये, प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक १ से १६४

२. विभिन्न निष्कर्षों के लिए देखिये, प्रस्तुत ग्रन्थ, अध्याय ७

३. विस्तृत विवरण के लिए देखिये : ए० पी० खत्री—**'स्टोन एज कल्चर्स ऑफ़ मालवा;'** डेक्कन कालेज रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना

मध्य-पाषाण युग

१९५४ तक विद्वानों का यह मत था कि भारतवर्ष के पूर्व-पाषाण काल तथा उत्तर-पाषाण काल के बीच एक मध्यान्तर है। परन्तु १९५४-५५ में नेवासा में किये गये खोज में तथा बाद में किये गये अन्य स्थानों की खोज में यह प्रमाणित हो गया कि पूर्व-पाषाण युग तथा उत्तर-पाषाण युग के बीच एक संक्रान्ति का काल था जिसमें बनाये गये औज़ार आकार, प्रकार तथा उपयोग में पूर्व तथा उत्तर-पाषाणयुगीन औज़ारों से भिन्न थे। इस काल में बनाये गये औज़ारों की कला पूर्व-पाषाण युग के उत्तर चरण के औज़ार बनाने की कला पर ही आधारित थी। परन्तु इस काल के कुछ औज़ारों में लघुरूपता को प्रश्रय दिया गया। फलतः कुछ औज़ार तो १५ से० मी० लम्बे बनाये गये परन्तु इसके विपरीत कुछ केवल तीन से० मी० लघु ही बने। अतः इन्हें लघुपाषाण औज़ारों के कोटि में नहीं रखा जा सकता। ये औज़ार जैस्पर, चर्ट, क्वार्ट्ज़, फ्लिन्ट आदि उच्च कोटि के पत्थरों से बनाये जाते थे। बनाये जाने वाले औज़ारों में विभिन्न प्रकार की खुरचनियाँ, नोक तथा बेधनी प्रमुख हैं। मध्यप्रदेश में किये गये चम्बल, बेतवा, नर्मदा, महानदी तथा इनकी सहायक नदियों की घाटियों की खोज में अनेक ऐसे स्थल मिले हैं जहाँ से मध्यपाषाण युगीन औज़ार प्राप्त हुए हैं। इनके अतिरिक्त जबलपुर, सागर, मन्दसौर, सीधी, बस्तर, पूर्व तथा पश्चिम निमाड़, शहडोल, दमोह, सिवनी, रीवा, मण्डला, छतरपुर, विदिशा, गुना, होशंगाबाद, नरसिंहपुर, देवास, छिन्दवाड़ा तथा उज्जैन जिलों में किये गये खोजों में अनेक मध्य-पाषाणयुगीन औज़ार प्राप्त होने वाले स्थल मिले हैं।[1]

उत्तर-पाषाण युग

इस युग से सम्बन्धित औज़ारों की पहचान इनकी लघुरूपता से होती है। अपनी लघुरूपता के कारण ये लघुपाषाण औज़ार कहलाते हैं। दक्षिण भारत के उत्खननों में मध्य-पाषाण युगीन औज़ारों से उत्तर-पाषाणयुगीन औज़ारों के विकास का सम्पूर्ण चित्र स्पष्ट समझ में आ जाता है। परन्तु मध्यप्रदेश तथा गुजरात के क्षेत्र में अनेक उत्खनन किये जाने के बाद भी मध्य-पाषाणयुगीन औज़ारों से उत्तर-पाषाण युगीन औज़ारों का किस प्रकार विकास हुआ, इसका स्पष्ट चित्र सामने नहीं आया है। उत्तर-पाषाण युग से सम्बन्धित शल्क, क्रोड, फलक (समानान्तर), खुरचनी, बेधनी, समलम्ब, तिकोने तथा अर्धचन्द्राकार औज़ार हैं। ये औज़ार जास्पर, कैल्सेडोनी तथा क्वार्टज़ के बने पाये गये हैं। मध्यप्रदेश में उत्तर-पाषाणयुगीन औज़ार खोज के दौरान पूर्व-निमाड़, शहडोल, मन्दसौर, सीहोर, होशंगाबाद, रीवा, उज्जैन, जबलपुर, रायगढ़, इन्दौर, मण्डला, छतरपुर, बस्तर, विदिशा, सागर, गुना, पन्ना, छिन्दवाड़ा, रतलाम, बिलासपुर तथा धार जिलों में स्थित अनेक स्थानों से प्राप्त हुए हैं।[2]

इन औज़ारों तथा उत्खननों में प्राप्त अन्य उपकरणों से ज्ञात होता है कि उत्तर-

---

१. विस्तृत विवरण के लिए देखिये—अध्याय २ (आ), क्रमांक १९५-३४०
२. वही, क्रमांक ३४१-५१०

पाषाण युग के निवासी शिकारों में प्राप्त विभिन्न पशु तथा मछली पर अपनी जीविका निर्वाह किया करते थे। लघुपाषाण औज़ारों के साथ प्राप्त पशु तथा मछली की हड्डियाँ इस बात की साक्षी हैं। इस काल का मनुष्य मिट्टी के बरतनों का भी उपयोग करता था, ऐसा प्रतीत होता है। आभूषणों में मनके तथा सीप की बनी वस्तुओं का भी वे उपयोग करते थे, ऐसा उत्खननों से प्राप्त सामग्री से ज्ञात होता है। आदमगढ़ के उत्खनन में उत्तर-पाषाण युग से सम्बन्धित स्तर से सीप की बनी वस्तुएँ मिली हैं जिनकी तिथि कार्बन-१४ की विधि से निर्धारित की गई है। कार्बन-१४ की रीति से इनकी तिथि लगभग ५५०० ई० पू० ज्ञात हुई है, जो अभी तक भारत में किये गये उत्खननों में कार्बन-१४ की रीति से प्राप्त सभी तिथियों में प्राचीन-तम है।

नव-पाषाण युग

पाषाण युग के उपरोक्त तीन कालों के पश्चात् भारत में नव-पाषाण युग का प्रारम्भ हुआ। यह कहना कठिन है कि यह प्रादुर्भाव कब और किस जाति द्वारा हुआ। इस काल के उपकरण प्रधानतः गहरे हरे ट्रप पत्थर के बनाये जाते थे। इस युग के औज़ारों पर या तो सम्पूर्ण भाग पर ओप पाया जाता है अथवा कम से कम ऊपर और नीचे के सिरों पर। इस काल के जो औज़ार मिले हैं उनमें सेल्ट, कुल्हाड़ी, बसूला, रचक (Fabrictor) घन (Hammerstone) तथा ओप करने वाले उपकरण प्रमुख हैं। आकार प्रकार के आधार पर सम्पूर्ण भारत में पाये जाने वाले इन उपकरणों को पाँच समूहों में विभाजित किया गया है। ये समूह हैं क्रमशः (१) उत्तरी समूह (२) दक्षिणी समूह (३) पूर्वी-समूह (४) मध्य-समूह तथा (५) पूर्वी-मध्य समूह। मध्यप्रदेश में पाये जाने वाले ये उपकरण मध्य-समूह के अन्तर्गत आते हैं। नव-पाषाणयुगीन औज़ार मध्यप्रदेश में अर्जुनी, एरण, कुण्डम, गढ़ी-मोरीला, जतकारा, जबलपुर, दमोह, नांदगांव, बहूतराई, बुरचेंका, मुनई, सागर, हटा तथा होशंगाबाद से प्राप्त हुए हैं।[१]

नव-पाषाण युग के उपकरणों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इस काल का मनुष्य सभ्यता के दृष्टिकोण से प्रगति की ओर अग्रसर हुआ। इस काल के मनुष्य ने कृषि-कर्म का ज्ञान प्राप्त किया, पशु-पालन प्रारम्भ किया, मृद्भाण्ड कला का आविष्कार किया तथा वस्त्र निर्माण, गृह-निर्माण, अस्त्र-शस्त्र का उपयोग और अग्नि प्रयोग करना सीखा। इस प्रकार नव-पाषाण युग में वर्तमान सभ्यता के अनेक अंगों का बीजारोपण हुआ।

ताम्र-पाषाण युग

विश्व के अन्य भागों की तरह भारत में भी पाषाण युग के पश्चात् धातु-युग का प्रादुर्भाव हुआ। धातुओं में ताँबा सर्वप्रथम उपयोग में लाया गया, अतः यह युग ताम्र-युग के नाम से जाना जाता है। कालान्तर में मनुष्य ने यह अनुभव किया कि अति कठोर कर्मों के लिए ताँबा अधिक उपयोगी नहीं है। अतः इस आवश्यकता की कमी की पूर्ति हेतु मनुष्य

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक क्रमशः ५११ से ५२४

ने काँसे का आविष्कार कर लिया। अतः यह युग कांस्य-युग के नाम से जाना जाता है। परन्तु यह महत्वपूर्ण बात है कि ताँबे और काँसे की सामग्री विशेषतया उत्तर भारत में ही उपलब्ध हुई है। दक्षिण भारत में यह सामग्री नगण्य है। ऐसा प्रतीत होता है कि पाषाण काल के पश्चात् ताम्र-युग और कांस्य-युग का उदय उत्तर भारत में ही हुआ। दक्षिण भारत में पाषाण-युग के पश्चात् सीधे लौह-युग का पदार्पण हुआ ऐसा प्रतीत होता है। उत्तर भारत में लौह-युग ताम्र-युग तथा कांस्य-युग के बाद आता है। परन्तु यह न समझना चाहिये कि धातु-युग में पाषाण-प्रयोग का पूर्ण विलोप हो गया। धातु के साथ-साथ काफी मात्रा में पाषाण के औजार भी उपयोग में लाये गये। यही कारण है कि उत्खनन में अनेक स्थलों पर धातु-सामग्री के साथ-साथ पाषाण सामग्री भी उपलब्ध हुई।

प्राचीन भारत की प्रसिद्ध सिन्धु घाटी की सभ्यता—ताम्र तथा कांस्य-युग की सभ्यता है। जहाँ तक मध्यप्रदेश का प्रश्न है, इस सभ्यता के कोई भी अवशेष मध्यप्रदेश की सीमा के अन्तर्गत किसी भी स्थल से प्राप्त नहीं हुए हैं।

अधिकांश विद्वान् सिन्धु-सभ्यता का पतन १८वीं सदी ई० पू० के मध्य के लगभग स्वीकार करते हैं। इसके पश्चात् इस सभ्यता का क्या हुआ यह अभी तक अज्ञात है। परन्तु उत्खननों का सहारा ले कर विद्वानों का अब यह मत दृढ़ होता जा रहा है कि १८वीं सदी ई० पू० के पश्चात् ताम्र-पाषाण युग में सिन्धु घाटी की सभ्यता का सांस्कृतिक विस्तार तीन क्षेत्रों की ओर हुआ जहाँ से वे कालान्तर में और आगे बढ़े। पहला काठियावाड़ क्षेत्र था जहाँ पर लोथल, रंगपुर, सोमनाथ, रजोड़ी आदि स्थानों पर किये गये उत्खननों में हड़प्पा युगीन स्तरों से प्रारम्भ कर लौह-युग तक के स्तरीय प्रमाण मिले हैं। दूसरा राजस्थान क्षेत्र था जहाँ अहाड़ तथा गिलुण्ड में किये गये उत्खननों में १८०० ई० पू० से १२०० ई० पू० के स्तरीय प्रमाण मिले हैं। तीसरा मध्यप्रदेश के अन्तर्गत मालवा क्षेत्र था जहाँ नागदा, नावडाटोली, कायथा, आवरा, एरण, बेसनगर आदि के महत्वपूर्ण उत्खननों में इस ताम्र-पाषाण युगीन सभ्यता के महत्वपूर्ण अवशेष मिले हैं।[1] नावडाटोली के ताम्र-पाषाण युगीन स्तर १६६० ई० पू० से १४४० ई० पू० के बीच के मिले हैं। कायथा उत्खनन, जो और भी अधिक महत्वपूर्ण है, २०१५ ई० पू० से १३८० ई० पू० के स्तरीय प्रमाण उपलब्ध कराता है। एरण के उत्खनन में ताम्र-पाषाणयुगीन स्तर २००० ई० पू० से ७०० ई० पू० के बीच का मिला है। इसी प्रकार बेसनगर के उत्खनन में ताम्र-पाषाणयुगीन स्तर ११०० ई० पू० से ६०० ई० पू० के बीच का मिला है। इन उत्खननों के अतिरिक्त मध्यप्रदेश के मन्दसौर, शाजापुर, इन्दौर, पश्चिम निमाड़, धार, उज्जैन, जबलपुर, देवास तथा भिण्ड जिलों में किये गये खोजों में लगभग तीस ऐसे स्थल प्राप्त हुए हैं जहाँ ताम्र-पाषाण कालीन अवशेष मिले हैं।[2] विक्रम विश्वविद्यालय के श्री वाकणकर द्वारा चम्बल, शिवना, रेतम, छोटी कालीसिंध, पार्वती, बेतवा तथा गंभीर आदि नदियों में किये गये खोज में बावन ऐसे

१. विस्तृत विवरण के लिए देखिये—अध्याय ७

२. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ५२५-५६५

स्थल प्राप्त हुए हैं जहाँ ताम्र-पाषाणयुगीन सभ्यता से सम्बन्धित मृद्भाण्ड, लघु-पाषाण औज़ार आदि सामग्री प्राप्त हुई है।[1]

पुरातत्त्वविदों के अनुसार उपरोक्त तीन क्षेत्र वे क्षेत्र थे जहाँ सिन्धु सभ्यता के लोग अपने मूल क्षेत्र से उजड़ कर आकर बसे तथा स्थानीय सभ्यता के साथ घुल-मिल कर एक नयी सभ्यता को जन्म दिया। कालान्तर में इस नवीन सभ्यता का विस्तार सौराष्ट्र क्षेत्र से महाराष्ट्र तथा दक्कन की ओर, राजस्थान क्षेत्र से पंजाब, गंगा घाटी की ओर और मालवा क्षेत्र से मध्य भारत तथा बंगाल सहित पूर्वी तटीय प्रदेश:की ओर हुआ।

ताम्र-पाषाण युग के अन्त तथा लौह-युग के प्रारम्भ के बीच के काल के इतिहास के बारे में अब तक स्पष्ट चित्र सामने नहीं आया है। गंगा-जमुना दो-आब में किये गये कई उत्खननों से लौह-युग से प्रारम्भ के पूर्व के गेरुवे रंग के मृद्भाण्ड उपयोग में लाने वाली एक संकृति का पता चला है। इसके अतिरिक्त गंगा-जमुना दो-आब में कई स्थानों से ताम्र-निधि भी प्राप्त हुई है, जिसमें ताँबे के बने विभिन्न आकार-प्रकार के औज़ार मिले हैं। अधिकांश विद्वानों के अनुसार इन ताम्र औज़ारों को उपयोग में लाने वाली सभ्यता तथा गेरुवे रंग के मृदभाण्डों को उपयोग में लाने वाली सभ्यता एक ही थी। इस सभ्यता का अस्तित्व लौह युग के पूर्व ही था। गंगा-जमुना दो-आब में प्राप्त ताम्र-निधियों से मिलती-जुलती निधियाँ मध्यप्रदेश में भी गुंगेरिया,[2] जबलपुर,[3] दबकिया,[4] तथा रामजीपुरा[5] से प्राप्त हुई हैं। इन ताम्रनिधियों में सबसे महत्वपूर्ण निधि बालाघाट जिले में स्थिति गुंगेरिया की है जिसमें ४२४ उपकरण पाये गये। इनमें से कुछ उपकरण चाँदी के भी बने मिले जो आकार में सींगयुक्त बैल के सिर से मिलते-जुलते थे। मध्यप्रदेश में पाये जाने वाले इन उपकरणों का आकार-प्रकार गंगा-जमुना घाटी में प्राप्त उपकरणों से भिन्न होने के कारण विद्वानों का विश्वास है कि इन दोनों समकालीन सभ्यताओं में कुछ अन्तर रहा होगा जिसका स्वरूप तथा कारण अज्ञात है।

मध्य-भारतीय गुहा चित्र

मध्यप्रदेश तथा उत्तर प्रदेश के कतिपय स्थानों पर शिलाश्रय मिले हैं जिनके भीतरी छतों और दिवालों पर अनेक ढंग की रोचक चित्र रचना मिली है। इन शिलाश्रयों के काल के सम्बन्ध में विद्वानों में गहरा मतभेद है। एक ओर कुछ विद्वान् इन्हें प्रागैतिहासिक कालीन मानते हैं तो दूसरी ओर अन्य विद्वान् इन्हें इतिहास काल से सम्बन्धित मानते हैं। अधिकांश विद्वान् अब इस बात को स्वीकार करने लगे हैं कि ये सभी चित्रित शैलकृत निवास किसी

---

१. देखिये 'पुरातत्त्व' भाग-२, पृ० ६५-६६
२. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ५६६
३. वही, क्रमांक ५६७
४. वही, क्रमांक ५६८
५. वही, क्रमांक ५६९

एक विशेष युग के नहीं हैं। पुरातत्त्व उत्खनन तथा अन्य प्रमाणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इनमें से कुछ अवश्य ही प्रागैतिहासिक काल से सम्बन्धित हैं। परन्तु कुछ अन्य इतिहास काल से सम्बन्धित हैं, जैसा कि उनमें से कुछ में उपलब्ध उत्कीर्ण तथा चित्रित लेखों से पता लगता है। कुछ शिलाश्रयों में चित्रों की कई परतें मिलती हैं जिससे उनमें एक लम्बे समय तक विभिन्न जातियों के निवासियों के रहने का अनुमान किया जा सकता है। इन शिलाश्रयों का विशद अध्ययन जारी है।

भारत में जितने चित्रित शिलाश्रय प्राप्त हुए हैं, उनमें से मध्यप्रदेश में पाये जाने वाले शिलाश्रयों की संख्या सबसे अधिक है। ये चित्रित शिलाश्रय होशंगाबाद, सागर, रीवा, मन्दसौर, जबलपुर, रायगढ़, सीहोर, रायसेन, ग्वालियर, पूर्व-निमाड़, शिवपुरी, छिन्दवाड़ा, छतरपुर, दमोह, पन्ना तथा नरसिंहपुर जिलों के अनेक स्थानों पर मिले हैं[1]। अधिकांश गुफा चित्रों में लाल, सफेद, काला नीला या पीला रंग उपयोग में लाया गया है। कई चित्रों में पहले लाल अथवा सफेद रंग की पृष्ठभूमि देकर उस पर चित्र बनाये गये हैं। इन गुफा-चित्रों से वहाँ निवास करने वाले लोगों की जीवन-चर्चा तथा रुचि का पता चलता है। मुख्यत: जो दृश्य इन चित्रों में मिलते हैं, वे हैं—विविध आयुधों से पशु-पक्षियों का शिकार, जानवरों की लड़ाई, मानवों में पारस्परिक युद्ध, पशुओं पर सवारी, गीत, नृत्य, पूजन, मधु-संचय तथा घरेलू जीवन सम्बन्धी अनेक दृश्य।

लौह युग तथा इतिहास का प्रारम्भ

पश्चिम में हड़प्पा से लेकर पूर्व में गंगा-यमुना दो-आब के बीच स्थित विस्तृत क्षेत्र में कई स्थानों पर किये गये उत्खननों में चित्रित धूसर-भाण्ड प्राप्त हुए हैं। विद्वानों के अनुसार यह लौह युग से सम्बन्धित संस्कृति के हैं। उनका विश्वास है कि चित्रित धूसर-भाण्ड लौह युग का द्योतक है। स्तरीय प्रमाणों के अनुसार चित्रित धूसर-भाण्ड संस्कृति के पश्चात् काले ओपदार उत्तरी भाण्ड संस्कृति का उदय हुआ जो इतिहास काल में बौद्ध तथा जैन धर्मों के उदय तथा शिशुनाग-नन्दकाल से सम्बन्धित है।

उत्खननों में उपरोक्त स्तरीय प्रमाण केवल हड़प्पा से गंगा-यमुना दो-आब के विस्तृत क्षेत्र में ही पाया जाता है। गंगा-यमुना संगम के पूर्व में स्थित विस्तृत क्षेत्र में किये गये उत्खननों में ताम्र-पाषाणयुगीन स्तर के पश्चात् ही काले ओपदार उत्तरी भाण्ड से सम्बन्धित स्तर पाया जाता है। अर्थात् चित्रित धूसर भाण्ड से सम्बन्धित स्तर यहाँ नहीं मिलता। इससे इस तथ्य की ओर संकेत होता है कि इस क्षेत्र में ताम्र-पाषाण युग के पश्चात् सीधा इतिहास युग प्रारम्भ हुआ था। ठीक यही तथ्य मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र में किये गये अधिकांश उत्खननों में मिलता है। यहाँ पर भी चित्रित धूसर भाण्ड संस्कृति का अभाव तथा ताम्र-पाषाण संस्कृति के पश्चात् सीधा लौह-युग तथा इतिहास युग के प्रारम्भ का पता चलता है।[2]

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ५७०-६१२

२. विस्तृत विवरण के लिए देखिये, प्रस्तुत ग्रन्थ, अध्याय ७

महापाषाण युग

दक्षिण भारत में विशाल पाषाण-खण्डों की बनी हुई कुछ समाधियाँ प्राप्त होती हैं, जिन्हें महापाषाणीय स्मारक (मेगालिथ) के नाम से सम्बोधित किया जाता है। जिस काल में इनका निर्माण हुआ उसे महापाषाण काल (मेगालिथिक एज़) कहा जाता है। क्योंकि इन समाधियों में लौह सामग्री अवश्य ही प्राप्त होती है, इसलिये यह काल दक्षिण भारत के लौह-युग से सम्बन्धित था। अभी तक भारत में महापाषाण स्मारकों के जो विभिन्न प्रकार प्राप्त हुए हैं उनमें से उल्लेखनीय हैं ताबूती-क़ब्र (सिस्ट-ग्रेव), गर्त-वृत्त (पिट-सर्कल), संगोरा वृत्त (कैर्न-सर्कल), डोलमेन, छत्र-पाषाण (अम्ब्रेला-स्टोन), फणाकृति-पाषाण (हूड-स्टोन), कन्दरायें तथा एकाश्मीय मेहिर। यद्यपि इन महापाषाणयुगीन स्मारकों का निर्माण विशेषतया दक्षिण भारत में ही हुआ, तथापि उनके उदाहरण मध्यप्रदेश, उड़ीसा, आसाम, बिहार, राजस्थान, गुजरात तथा काश्मीर आदि प्रान्तों में भी उपलब्ध हुए हैं। मध्यप्रदेश में ये स्मारक दुर्ग, रायपुर, सिवनी तथा रीवा जिलों में पाये गये हैं।[1] दुर्ग जिले में स्थित धनोरा में एक ही स्थान पर लगभग ५०० महापाषाणीय स्मारक मिले हैं, जिन्हें चार वर्गों में विभाजित किया गया है। १९५६-५७ में यहाँ प्रथम वर्ग के तीन तथा दूसरे वर्ग के एक स्मारक का उत्खनन किया गया। उत्खनन से प्राप्त प्रमाण अपूर्ण रहे।

वैदिक युग

वैदिक काल का आदि ग्रन्थ ऋग्वेद है। ऋग्वेद की ऋचाओं की रचना मुख्यतया यज्ञों में उच्चारण के लिए हुई थी। उनमें जहाँ भी ऐतिहासिक उल्लेख आये हैं, वे केवल प्रसंगवश ही आये हैं। ऋग्वैदिक कालीन आर्यों का विस्तार इतना नहीं हुआ था, कि वे मध्यप्रदेश के किसी भाग तक पहुँच सके हों। अतः मध्यप्रदेश से सम्बन्धित किसी भी ऐतिहासिक तथ्य का ऋग्वेद में न होना स्वाभाविक ही है। उत्तर-वैदिक काल की कुछ अनार्य जातियों के नाम, ऐतरेय ब्राह्मण में मिलते हैं जो मध्यप्रदेश के अन्तर्गत घने जंगलों में निवास करती थीं। इनमें निषादों का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

अनुश्रुतिगम्य इतिहास

वैदिक और उत्तर-वैदिक काल के पश्चात् के इतिहास की जानकारी के लिए रामायण, महाभारत तथा पुराणों में वर्णित अनुश्रुतियाँ ही वर्तमान साधन हैं। इन अनुश्रुतियों के अनुसार मनुओं की परम्परा में अन्तिम मनु वैवस्वत हुए जिनके समय में विश्वव्यापक बाढ़ आई। उनके दस पुत्र हुए जिनका नाम था—इल, इक्ष्वाकु, नाभाग, धृष्ट, शर्याति, नरिष्यन्त, प्रांशु, नाभागोदिष्ट, करूष तथा पृषघ्र। इनमें से करूष नामक पुत्र से कारूष वंश चला तथा कारूष देश की स्थापना हुई। यह कारूष देश वर्तमान बघेलखण्ड में स्थित था।

वैवस्वत मनु की पुत्री का नाम इला था जिसका विवाह सोम से हुआ था। इसी से

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६१३-६२१

ऐल अर्थात् चन्द्रवंश की स्थापना हुई जिसका आदि पुरुष पुरूरवा था। पुरूरवा के अधीन ऐल साम्राज्य का विस्तार हुआ। अपने साम्राज्य का विस्तार करते हुए उसने वर्तमान बुन्देलखण्ड के क्षेत्र पर भी अधिकार कर लिया। इस विस्तार से उसके राज्य की सीमा बघेलखण्ड में राज्य करते हुए कारूष वंशी राजा के राज्य से आ मिली।

पुरूरवा के पुत्र आयु और अमावसु हुए। आयु की तीसरी पीढ़ी में ययाति हुआ। ययाति ने भार्गव ऋषि, शुक्र की कन्या देवयानी से विवाह किया। उसने वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा से भी विवाह किया। देवयानी से उसके दो पुत्र यदु और तुर्वसु हुए और शर्मिष्ठा से तीन पुत्र—अनु, द्रुह्यु तथा पुरु हुए। यदु से यादव वंश की स्थापना हुई तथा पुरु से पौरव वंश की। ययाति ने अपने विशाल साम्राज्य का विभाजन अपने पुत्रों में कर दिया। इस विभाजन में यदु को चर्मणवती (चम्बल), वेत्रवती (बेतवा) तथा शुक्तिमती (केन) की धाराओं से सिंचित प्रदेश प्राप्त हुआ। यदु के दो प्रसिद्ध पुत्र थे क्रोष्टु और सहस्रजित। क्रोष्टु की सन्तान यादव कहलाई और सहस्रजित की हैहय।

मानव वंश के इक्ष्वाकु के पुत्र दण्डक का राज्य मध्यप्रदेश के दक्षिण क्षेत्र पर था, जो घने जंगलों से घिरा हुआ था। उसी के नाम से यह क्षेत्र दण्डकारण्य कहलाया।

अयोध्या के ऐक्ष्वाकुओं के वंश में मान्धाता चक्रवर्ती सम्राट हुआ। ऐलवंश की राजकुमारी बिन्दुमती से उसके तीन पुत्र पुरुकुत्स, अम्बरीष और मुचुकुन्द तथा कावेरी नामक कन्या हुई। पुरुकुत्स ने मध्यप्रदेश में मध्यभारत क्षेत्र में बसे नाग राजाओं को मौनेय गंधर्वों के विरुद्ध सहायता देकर विजयी बनाया तथा नाग राजा की कन्या नर्मदा से विवाह किया। उसके भाई मुचुकुन्द ने पारियात्र और ऋक्ष पर्वत के प्रदेश को जीत कर नर्मदा के किनारे एक दुर्ग का निर्माण किया। हैहय राजा महिष्मन्त ने मुचुकुन्द को पराजित कर उससे यह गढ़ छीन लिया। इस नगर तथा गढ़ का नाम महिष्मन्त ने माहिष्मती (वर्तमान महेश्वर) रखा।

महिष्मन्त के वंश में कृतवीर्य हुआ जिसके राज्यकाल में विशाल हैहय साम्राज्य की स्थापना हुई। कृतवीर्य के वंश में अर्जुन, जिसे कार्तवीर्य, सहस्रार्जुन या सहस्रबाहु भी कहा जाता है सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में फैले विशाल हैहय साम्राज्य का उत्तराधिकारी हुआ। वह महान् चक्रवर्ती सम्राट् था और उसके हजार भुजाएँ कहीं जाती हैं जो संभवतः उसकी अपार सैन्यशक्ति का द्योतक है। अनुश्रुतियों के अनुसार उसने समस्त पृथ्वी को जीता और अनेक यज्ञ किये। इन विजयों से उसे दम्भ हुआ प्रतीत होता है जिसके परिणामस्वरूप वह ऋषियों से दुर्व्यवहार करने लगा। हिमालय में निवास कर रहे वशिष्ट के वंशज आपव ऋषि का आश्रम उसने जला दिया। इसी प्रकार जमदग्नि ऋषि के आश्रम में पहुँच कर सुरभी नामक कामधेनु की माँग की जो अस्वीकार कर दिये जाने पर उसने बल प्रयोग करने का प्रयत्न किया जिसमें वह असफल रहा। जमदग्नि द्वारा वह पराजित हुआ और भगा दिया गया। इस अपमान का बदला लेने के लिए कार्तवीर्य पुनः विशाल सेना लेकर आया और जमदग्नि को पराजित कर उसके आश्रम को उजाड़ दिया तथा कामधेनु छीन कर ले गया। यहाँ से भार्गवों और हैहयों का संघर्ष प्रारम्भ हुआ जो भविष्य में विशाल रूप धारण कर लम्बे समय तक चलता रहा। जमदग्नि के पुत्र परशुराम ने अपने पिता के अपमान का बदला लेने के लिए माहिष्मती पर

२

आक्रमण किया तथा कार्तवीर्य अर्जुन को पराजित कर उसकी हजार बाहुएँ काट डालीं और उसका वध कर दिया। उसके पुत्र भयभीत होकर भाग गये। परन्तु इसके पश्चात् पिता के आदेशानुसार राजवध के पाप से मुक्त होने के लिए जब परशुराम को तीर्थयात्रा में जाना पड़ा तो उसकी अनुपस्थिति का लाभ उठाकर कार्तवीर्य के पुत्रों ने आश्रम पर आक्रमण कर दिया तथा ध्यानमग्न जमदग्नि का वध कर दिया। इस घटना ने स्वाभाविक रूप से परशुराम के क्रोध की सीमाएँ तोड़ दीं और उसने राजन्य वर्ग के विरुद्ध ही युद्ध घोषित कर दिया और इक्कीस बार उनका संहार किया।

परशुराम के पश्चात् हैहय पुनः खड़े हो गये। कार्तवीर्य सहस्रार्जुन के पुत्र जयध्वज का राज्य अवन्ति (आधुनिक मालवा क्षेत्र) पर था। जयध्वज का पुत्र तालजंघ हुआ जिसके पाँच पुत्र थे—वीतिहोत्र, शार्यात, भोज, अवन्ति और कुंडिकेर। इनमें से वीतिहोत्र और कुंडिकेर विन्ध्याचल में वर्तमान बुन्देलखण्ड में फैली पर्वतमालाओं में रहे। अवन्ति ने मालवा क्षेत्र में राज्य किया और उसी के नाम से यह क्षेत्र अवन्ति नाम से जाना जाने लगा। उसने यादवों से विदिशा छीन लिया तथा कान्यकुब्ज, काशी और कोशल पर आक्रमण किये।

तालजंघ का समकालीन विदर्भ का शासक यादव वंशी था। इस वंश के शासक कौशिक ने अपने साम्राज्य का विस्तार कर चर्मणवती (चम्बल) और शुक्तिमती (केन नदी) के मध्य के प्रदेश (अर्थात् बुन्देलखण्ड) में राज्य स्थापित किया जो चेदि जनपद कहलाया। विदर्भ का एक अन्य प्रसिद्ध राजा भीमरथ हुआ जिनकी सुन्दरी कन्या दमयन्ती से नलपुर के राजा नल ने विवाह किया। अनुश्रुति के अनुसार नल ने ही नलपुर नगर बसाया था जो आधुनिक शिवपुरी जिले में नरवर के रूप में विद्यमान है।

रामायण में उपलब्ध कथा के अनुसार राम को वनवास दिये जाने पर राम ने अपना अधिकांश समय दण्डक वन में बिताया। यह दण्डक वन बस्तर जिले का दण्डकारण्य क्षेत्र ही है। वनवास के काल में लंका के राजा रावण द्वारा सीता का हरण कर लिया गया जिसके परिणामस्वरूप राम को लंका पर आक्रमण कर रावण को पराजित कर वध करना पड़ा। इस लंका राज्य की स्थिति क्या थी इस सम्बन्ध में विद्वानों में गहरा मतभेद है। कुछ विद्वानों का मत है कि लंका का राज्य नर्मदा के उद्गम स्थान अमरकंटक में था। कुछ अन्य विद्वानों के मतानुसार लंका आधुनिक जबलपुर के निकटवर्ती क्षेत्र में थी। वनवास काल के पश्चात् राम अयोध्या लौट आये तथा वहाँ के राजा बने। अपने राज्यकाल में उन्होंने लोकमत का सम्मान करने के लिए गर्भवती निर्दोष सीता को निर्वासित किया। उसने वाल्मीकि मुनि के आश्रम में शरण प्राप्त की जहाँ उनके लव और कुश नामक दो पुत्रों ने जन्म लिया। आदि कवि वाल्मीकि का आश्रम 'तमसा' नदी के तट पर था। कुछ विद्वानों के अनुसार यह 'तमसा' आधुनिक टोंस नदी है जो अमरकंटक से निकलती है। भविष्य में राम का पुत्र कुश दक्षिण कोसल का राजा हुआ।

महर्षि वाल्मीकि और दशरथि राम के पश्चात् भारतीय अनुश्रुति का त्रेतायुग समाप्त हुआ तथा द्वापर युग प्रारम्भ हुआ।

द्वापर युग की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी महाभारत का युद्ध। इस युद्ध में कृष्ण अर्जुन

के सारथी के रूप में पाण्डवों के साथ रहे। महाभारत के युद्ध में वत्स, काशी, चेदि, कारूष, दशार्ण और मत्स्य अर्थात् वर्तमान बुन्देलखण्ड और बघेलखण्ड की सीमाओं के जनपदों के राजा अपनी सेनाओं के साथ पाण्डवों की ओर से लड़े। माहिष्मती का नील, अवन्ति के बिन्द और अनुबिन्द, भोज, अंधक, वृष्णियों का कृतवर्मा, विदर्भ तथा निषध के राजा कौरवों की ओर से लड़े। कौरव इस युद्ध में पराजित हुए और पाण्डव विजयी। कुछ समय पश्चात् पाण्डव अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को राज्य देकर वे हिमालय को चले गये। इस प्रकार परीक्षित के राज्यारोहण के साथ द्वापर-युग समाप्त हुआ और कलियुग ने पदार्पण किया।

महाजनपद युग

छठीं शताब्दी ई० पू० के लगभग उत्तर भारत में सोलह महाजनपद स्थापित थे जिनका वर्णन बौद्ध ग्रन्थ, जैन ग्रन्थ तथा पुराणों में आया है। इनमें से मध्यप्रदेश के इतिहास से सम्बन्धित जनपद थे चेदि तथा अवन्ति।

चेदि जनपद आधुनिक बुन्देलखण्ड के पूर्वी भाग तथा उसके समीपस्थ भू-खण्ड में विस्तीर्ण था। चेतिय जातक से हमें ज्ञात होता है कि चेदि की राजधानी 'सोत्थिवती' अथवा महाभारत के अनुसार 'शुक्तिमती' थी। पार्जिटर के अनुसार 'शुक्तिमती' नगरी आधुनिक बाँदा के आस-पास स्थित थी। महाभारत शुक्तिमती नदी की चर्चा करता है, जो चेदि विषय के राजा उपरिचर की राजधानी से होकर प्रवाहित होती थी। पार्जिटर के अनुसार वह आधुनिक केन के रूप में अभी भी पहचानी जा सकती है। आगामी युग में चेदियों की एक शाखा कलिंग में स्थापित हुई।

अवन्ति जनपद लगभग उज्जैन प्रदेश के आस-पास के जिलों से मिलकर बना था। वेत्रवती नदी द्वारा यह प्रदेश उत्तर तथा दक्षिण दो प्रान्तों में विभाजित था। उत्तर अवन्ति की राजधानी उज्जयिनी थी तथा दक्षिण की राजधानी माहिष्मती। माहिष्मती तथा उज्जयिनी दोनों नगर राजगृह से प्रतिष्ठान तक जाने वाले सुप्रसिद्ध दक्षिण राजमार्ग पर अवस्थित थे। विदिशा नगरी भी इसी राजमार्ग पर स्थित थी। महाभारत एवं मेघदूत में दशार्ण प्रदेश का उल्लेख आया है जिसकी राजधानी विदिशा थी। बौद्ध तथा जैन ग्रन्थों के अनुसार अवन्ति के अन्य दो प्रसिद्ध नगर थे—कुररघर तथा सुदर्शनपुर। अवन्ति प्रदेश बौद्ध धर्म का एक सुप्रसिद्ध केन्द्र था।

पुराणों के अनुसार पुलिक (पुनिक) नामक सेनापति ने यदु वंशी वीतिहोत्र का वध कर अपने पुत्र प्रद्योत को अवन्ति के सिंहासन पर बैठाया। चण्डप्रद्योत गौतम बुद्ध के समय एक शक्तिशाली शासक था। उसके शासन काल में अवन्ति का मगध, वत्स तथा कोशल से शक्ति संयचन के लिए संघर्ष चला हुआ था। प्रद्योत तथा वत्सराज उदयन की प्रतिद्वन्दिता बराबर चल रही थी। बौद्ध ग्रन्थों में प्रद्योत और उदयन के सम्बन्ध में अनेक रोचक कथाएँ उपलब्ध हैं। बौद्ध ग्रन्थों से हमें यह भी ज्ञात होता है कि मगध शासक अजातशत्रु ने प्रद्योत के अभियान से बचने के लिए राजगृह का दुर्ग बनवाया था। बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार वह अत्यन्त दुराचारी तथा निर्दयी शासक था।

पुराणों के अनुसार चण्डप्रद्योत ने २३ वर्ष तक राज्य किया। उसके पश्चात् क्रमशः पालक, विशाखयूप, अजक तथा नन्दिवर्धन नामक शासक हुए। नन्दिवर्धन को शिशुनाग ने पराजित किया और इस प्रकार अवन्ति मगध के उदियमान साम्राज्य में सर्वदा के लिए विलीन हो गया।

नन्द-मौर्य युग

मगध के शिशुनाग वंश के पतन के पश्चात् नन्द वंश का राज्य प्रारम्भ हुआ। नन्द वंश के नरेश प्रतापी थे और उनका साम्राज्य दूर तक विस्तृत था। दक्षिण में मैसूर तक भू-भाग उनके राज्य के अन्तर्गत था। उन्होंने कलिंग भी जीत लिया था। मैसूर तक राज्य करने वाले नन्दों का मध्यप्रदेश पर अवश्य ही पूर्ण अधिकार रहा होगा, किन्तु उनके काल की कोई भी ऐतिहासिक सामग्री इस क्षेत्र से प्राप्त नहीं हो सकी।

चन्द्रगुप्त मौर्य ने नन्द वंश का नाश कर विशाल मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। मध्यप्रदेश इस विशाल साम्राज्य का अवश्य ही एक भाग रहा होगा, परन्तु इस सम्बन्ध में हमें कुछ भी जानकारी नहीं है। चन्द्रगुप्त मौर्य के उत्तराधिकारी बिन्दुसार के समय में हमें इस प्रदेश की राजनैतिक हलचल के सम्बन्ध में बौद्ध तथा जैन ग्रन्थों से कुछ जानकारी मिलती है। बिन्दुसार के लिए उसके राज्यकाल में युवराज अशोक ने अवन्ति महाजनपद जीत कर उसे मौर्य साम्राज्य में मिला लिया था, ऐसा बुद्धघोष ने समन्तपासादिका में उल्लेख किया है। परन्तु अशोक द्वारा अवन्ति विजय का अन्य किसी ग्रन्थ में उल्लेख नहीं है। सम्भवतः वह पहले से ही मगध साम्राज्य में था। हाँ यह हो सकता है कि तक्षशिला की भाँति अवन्ति में भी बिन्दुसार के समय में विद्रोह हुआ हो और अशोक ने उसे शस्त्र-बल से दबा दिया हो और उस पर पुनः सत्ता स्थापित की हो। बिन्दुसार के राज्यकाल में अशोक ११ वर्ष तक अवन्ति के कुमार-पाल रहे तथा उज्जयिनी को अवन्ति की राजधानी बनायी। उज्जयिनी जाते समय वे मार्ग में विदिशा ठहरे। यहाँ अशोक ने विदिशा के एक सेट्टी की कन्या 'देवी' से आकर्षित होकर विवाह कर लिया। इसी रानी से अशोक के पुत्र महेन्द्र तथा कन्या संघमित्रा का जन्म हुआ जिन्होंने भविष्य में बौद्ध धर्म के प्रचार में प्रमुख रूप के भाग लिया। अनुश्रुति के अनुसार अशोक ने अपनी इस वैश्यपुत्री रानी के लिए उज्जैन में एक विशाल स्तूप का निर्माण करवाया। इस स्तूप के अवशेष आज भी 'वैश्या-टेकरी' नामक टीले के रूप में विद्यमान हैं। 'वैश्या-टेकरी' के उत्खनन में इस स्तूप के अवशेष प्राप्त हुए हैं।[1]

मगध के सिंहासन पर बैठने के बाद अशोक ने कलिंग को जीता। कलिंग के युद्ध में जो अगणित नरबलि हुई उसने अशोक के हृदय को स्पर्श किया और उससे प्रभावित होकर अशोक ने युद्धों को समाप्त कर बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। चीनी यात्री फाह्यान के अनुसार बौद्ध धर्म प्रचारार्थ अशोक ने चौरासी हजार स्तूपों का निर्माण करवाया। साँची का प्रसिद्ध स्तूप अशोक के द्वारा बनाये गये इन्हीं स्तूपों में से एक स्तूप था।

अशोक के काल में बनाये गये साँची के स्तूप को भविष्य में अनेक राजाओं तथा

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, अध्याय ७, क्रमांक २४७४

व्यक्तियों द्वारा दान देकर विस्तृत किया गया। स्तूप के निकट प्राप्त एक विहार के अवशेष भी साँची में मिले हैं। विद्वानों के अनुसार यह विहार सम्भवतः अशोक की रानी 'देवी' तथा उसकी सहचरी भिक्षुणियों के निवास के लिये बनवाया गया था। सम्भवतः 'देवी' की मृत्यु के पश्चात् यह विहार बौद्ध संघ को दान कर दिया गया था।

साँची के अतिरिक्त अशोक द्वारा आधुनिक विदिशा, सुनारी, सतधारा, भोजपुर और अंधेर में भी अनेक स्तूप निर्माण किये गये। इन स्तूपों के अवशेष खोज में प्राप्त हुए हैं।[1]

बौद्ध धर्म स्वीकार करने के बाद अशोक ने शिलाओं तथा स्तम्भों पर धर्मादेश लिखवाये। ये धर्मादेश जो आज उपलब्ध हैं, अशोक के तत्कालीन शासन प्रबन्ध तथा संस्कृति पर काफी प्रकाश डालते हैं। अशोक के शिलालेखों में चौदह प्रमुख शिलोत्कीर्ण धर्मादेश हैं जो भारत के विभिन्न भागों से प्राप्त हुए हैं। इनके अतिरिक्त अनेक लघु शिलोत्कीर्ण धर्मादेश हैं जिनमें से एक जबलपुर जिले के रूपनाथ[2] नामक स्थान पर तथा दूसरा दतिया ज़िले के गुजर्रा[3] नामक स्थान पर विद्यमान है। रूपनाथ के धर्मादेश में अशोक ने पुरुषार्थ की महत्ता बताई है तथा गुजर्रा धर्मादेश की महत्ता यह है कि उसमें अशोक का व्यक्तिगत नाम उल्लिखित है। अशोक का एक धर्मादेश साँची के स्तूप क्रमांक १ के दक्षिण-द्वार के निकट स्थित खण्डित स्तम्भ पर भी उत्कीर्ण मिला है।[4] इन तथ्यों से स्पष्ट है कि विदिशा, साँची तथा उज्जयिनी अशोक के राजनैतिक तथा धार्मिक प्रवृत्तियों के मुख्य केन्द्र रहे।

अशोक के राज्य काल में अवन्ति का कुमारामात्य कौन था, इसका कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता। कुछ विद्वानों के अनुसार अशोक के अन्तिम दिनों में पाटलिपुत्र पहुँचने के पहले सम्प्रति ही उज्जैन में कुमारामात्य था। जैन ग्रन्थों के अनुसार उज्जयिनी में रहकर ही सम्प्रति ने जैन धर्म में दीक्षा ग्रहण की थी तथा यहीं से उसने जैन धर्म का प्रचार कार्य प्रारम्भ किया था।

कुछ अन्य पुरातात्विक प्रमाणों से भी स्पष्ट हो जाता है कि मध्यप्रदेश का क्षेत्र मौर्य साम्राज्य के अन्तर्गत था। पहला, मध्यप्रदेश के विभिन्न भागों के कई स्थानों से छोटे-बड़े अभिलेख मिले हैं जो मौर्य-कालीन ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण हैं। ये स्थान हैं—आरंग[5], कसरावद,[6] कारीतलाई,[7] खरवई,[8] भैन्यपुरा[9] तथा रामगढ़[10]। दूसरा, मौर्यकाल के आहत सिक्के मध्यप्रदेश के अनेक स्थानों से प्राप्त हुए हैं।[11]

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, अध्याय ४
२. वही, क्रमांक ६२९
३. वही, क्रमांक ६२६
४. वही, क्रमांक ६३०-अ
५. वही, क्रमांक ६२२
६. वही, क्रमांक ६२३
७. वही, क्रमांक ६२४
८. वही, क्रमांक ६२५
९. वही, क्रमांक ६२७
१०. वही, क्रमांक ६२८
११. वही, अध्याय ५, क्रमांक २२४३-२२६७

उपर्युक्त प्रमाणों से स्पष्ट है कि मध्यप्रदेश का क्षेत्र मौर्य साम्राज्य का एक अभिन्न अंग ही नहीं था बल्कि मौर्य नरेशों के कार्य-कलापों का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र था।

जनपद काल

मौर्यकाल के अंतिम चरण में भारत में अनेक जनपद-राज्य तथा नगर-राज्य स्थापित हुए। अभी तक जो प्रमाण उपलब्ध हुए हैं उनसे विदित होता है कि मध्यप्रदेश में उस समय कम-से-कम सात नगर-राज्य स्थापित हुए। ये नगर-राज्य थे—त्रिपुरी, एरण, माहिष्मती, भागिल, विदिशा तथा उज्जयिनी एवं पद्मावती। इन नगर-राज्यों द्वारा अपने नामों से अंकित ढले अथवा ठप्पे लगे सिक्के चलाये गये। आज इन सिक्कों की प्राप्ति से हमें इनके अस्तित्व का पता चला है।

त्रिपुरी नगर-राज्य के सिक्कों पर ३०० ई० पू० की ब्राह्मी लिपि में 'तिपुरी' लिखा है तथा ये त्रिपुरी (आधुनिक तेवर) तथा होशंगाबाद जिले के खिड़िया नामक गाँव से प्राप्त हुए हैं।[१] इसी प्रकार एरण नगर-राज्य के सिक्कों पर 'एरकण्य' लेख मिलता है जो दूसरी-प्रथम शताब्दी ई० पू० की ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण हैं।[२] इसके पहले मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् पूर्वी मालवा में धर्मपाल, इन्द्रगुप्त तथा शिवगुप्त नामक शासक राज्य करते थे। धर्मपाल के सिक्के कनिंघम को एरण में मिले थे और ये सिक्के हाल ही में किये गये एरण उत्खनन में भी प्राप्त हुए हैं।[३] इन्द्रगुप्त के नाम सहित एक धातुखण्ड भी एरण के उत्खनन में मिला है।[४] इसी प्रकार शिवगुप्त नामांकित एक अन्य राजा की ताम्रमुद्रा विदिशा में मिली है।[५] इन सभी राजाओं के नाम तीसरी-दूसरी शताब्दी ई० पू० की ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण हैं। ऐसा लगता है कि मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् पूर्वी मालवा क्षेत्र में इन राजाओं का राज्य हो गया होगा तथा उसके पश्चात् ही एरकिण तथा विदिशा के गणराज्य स्थापित हुए होंगे। विदिशा के नगर-राज्य के सिक्कों पर ब्राह्मी अक्षरों में 'वेदिस' अथवा 'वेद्‌दस' लेख उत्कीर्ण मिलता है।[६] इसी प्रकार उज्जैन से प्राप्त उज्जयिनी चिह्नांकित अनेक सिक्के मिले हैं जिनमें से कुछ पर ब्राह्मी अक्षरों में उत्कीर्ण 'उजयिन' स्पष्ट रूप से पढ़ा जा सकता है।[७] माहिष्मती नगर-राज्य के सिक्के मुख्यत: महेश्वर (जिला पश्चिम निमाड़) में किये गये खोज तथा उत्खनन में मिले हैं।[८] कुछ सिक्के उज्जैन में भी

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २२८२ तथा २२८४-अ-ई
२. वही, क्रमांक २२८०
३. वही, क्रमांक २४७५
४. वही, क्रमांक २४३६-ई
५. वही, क्रमांक २२९२-आ, इ
६. वही, क्रमांक २२९२-अ
७. वही, क्रमांक २२७९-ऐ
८. वही, क्रमांक २२९०

प्राप्त हुए हैं।[१] इन पर तीसरी शताब्दी ई० पू० की ब्राह्मी लिपि में 'माहिस' उत्कीर्ण है। इसी प्रकार पद्मावती नगर-राज्य के कुछ सिक्के पवाया से मिले हैं।[२] भागिल नामक अन्य नगर-राज्य का पता भी सिक्कों से ही चला है। ये सिक्के होशंगाबाद जिले के जमुनिया नामक गाँव में मिले हैं।[३]

शुंग-कण्व काल

हर्षचरित तथा पुराणों के अनुसार सेनापति पुष्यमित्र ने अन्तिम मौर्य नरेश बृहद्रथ की हत्या कर मगध का सिंहासन प्राप्त कर लिया था। राज्य प्राप्त कर पुष्यमित्र ने १८४-८५ ई० पू० में जो नये राजवंश की स्थापना की वह प्राचीन भारतीय इतिहास में शुंग वंश के नाम से प्रसिद्ध है। शुंग नरेश मौर्य साम्राज्य का केवल मध्यवर्ती भाग ही प्राप्त कर सके थे क्योंकि ठीक उसी समय दक्षिण में सातवाहन वंश तथा कलिंग में चेदि वंश के प्रभुत्व का विस्तार हो रहा था।

अपने शासन काल में पुष्यमित्र ने युवराज अग्निमित्र को विदिशा का शासक बनाकर भेज दिया था। कालिदास रचित मालविकाग्निमित्र में यही अग्निमित्र नाटक का नायक है। मालविकाग्निमित्र के अनुसार अग्निमित्र ने विदर्भ के शासक यज्ञसेन के साथ युद्ध कर विदर्भ के एक बड़े भाग पर अधिकार कर लिया तथा अपने राज्य की सीमा वरदा (वर्धा) नदी तक विस्तृत कर लिया।

पुष्यामित्र शुंग के समय भारत पर बेक्ट्रिया के यवनों का आक्रमण हुआ। मालविकाग्नि-मित्र के अनुसार पुष्यमित्र के पौत्र वसुमित्र ने यवनों को सिन्धु नदी के तट पर पराजित कर खदेड़ दिया। यवन आक्रमण का नेता कौन था—डेमेट्रियस अथवा मीनेण्डर (मिलिन्द) तथा यह आक्रमण एक बार हुआ अथवा दो बार इस सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। सिन्धु नदी (जिसके तट पर यवन पराजित हुए थे) के समीकरण के सम्बन्ध में भी विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वान् इसे काली-सिन्धु नदी मानते हैं जो चम्बल की सहायक है तथा मध्यप्रदेश के मध्यभारत क्षेत्र में बहती है। अन्य विद्वान् इसे पंजाब की सिन्धु नदी मानते हैं। डेमेट्रियस के कुछ मृद्-मुद्रांकन विदिशा के उत्खनन में यज्ञकुण्ड के साथ प्राप्त हुए थे।[४] इसी प्रकार मीनेण्डर के कुछ सिक्के बालाघाट जिले में मिले हैं।[५] इन सिक्कों तथा मृद्-मुद्रांकनों से स्थानीय इतिहास पर क्या प्रकाश पड़ सकता है यह कहना कठिन है।

शुंगों का शासन काल ब्राह्मण धर्म के पुनरुद्धार का काल था। नन्द और मौर्य काल

---

१. वही, क्रमांक २२७९-ई

२. वही, क्रमांक २२८५

३. वही, क्रमांक २२८३-इ

४. अ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९१३-१४, पृ० १८६-२२६; वही १९१४-१५, पृ० ६६-८८

५. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २३०८

में ब्राह्मण धर्म की काफी अवनति हो गयी थी। क्योंकि पुष्यमित्र शुंग स्वयं ब्राह्मण था, अत: साम्राज्य की बागडोर अपने हाथों सम्हालते ही उसने ब्राह्मण धर्म के पुनरुद्धार का कार्य प्रारम्भ किया। ब्राह्मण ग्रन्थों में प्रतापी राजा के लिए अश्वमेध करने का प्रावधान है। इस प्रावधान को पुष्यमित्र ने कार्यान्वित किया तथा दो अश्वमेध यज्ञ किये। पतंजलि पुष्यमित्र के राजपुरोहित थे। उन्होंने महाभाष्य की रचना की। कुछ विद्वानों के अनुसार मनु का काल भी यही था और उन्होंने मनुस्मृति की रचना की। कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार महाभारत के परिवर्धन का काल भी शुंगकाल में ही पड़ता है।

बौद्ध अनुश्रुतियों का सहारा लेकर कुछ विद्वानों ने शुंग काल को तथा विशेष रूप से पुष्यमित्र शुंग को बौद्ध-द्रोही प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है। किन्तु अधिकांश विद्वान् यही विश्वास करते हैं कि यह ऐतिहासिक तथ्य नहीं है। साँची तथा भरहुत के स्तूपों में शुंगकाल में किये गये मुख्य परिवर्तन इस बात के ज्वलन्त प्रमाण हैं कि शुंग काल में बौद्ध धर्म के साथ घोर अत्याचार नहीं हुआ जैसा कि दिव्यावदान, तारानाथ, आर्यमंजुश्रीमूलकल्प आदि बौद्ध ग्रन्थों द्वारा प्रचलित किया गया है। सतना जिले में स्थित भरहुत का स्तूप मूलतः अशोक द्वारा निर्माण करवाया गया था। शुंग काल में इसकी चहार-दीवारी तथा तोरण द्वार का निर्माण किया गया जैसा कि एक परिवेष्टनी के भाग पर उत्कीर्ण 'सुगनं रजे' लेख से पता चलता है। इसी प्रकार साँची का स्तूप भी अशोक द्वारा निर्मित किया गया था। शुंग काल में इसका आकार बहुत बढ़ा दिया गया। इसके चारों ओर पृथ्वी से १६ फीट ऊँची मेधी का निर्माण किया गया जिस पर पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ भी बनाई गयीं। स्तूप के ऊपर वर्गाकार वेदिका स्थापित की गयी। इस वेदिका के भीतर हर्मिक बनाया गया तथा उस पर छत्र-यष्टि को खड़ा किया गया। भविष्य में स्तूप के चारों ओर तोरण स्थापित किये गये।

शुंग वंश में दस राजा हुए। ये राजा थे (१) पुष्यमित्र (२) अग्निमित्र (३) वसुज्येष्ठ (४) वसुमित्र (५) अन्ध्रक (६) पुलिण्दक (७) घोष (८) वज्रमित्र (९) भाग और (१०) देव-भूति। इन सबने मिलकर ११२ वर्ष तक राज्य किया।

पुष्यमित्र के उत्तराधिकारियों के सम्बन्ध में हमारा ज्ञान अत्यन्त अल्प है। इस वंश का नवां नरेश भाग था। इतिहासकारों के मतानुसार इस राजा का समीकरण विदिशा में स्थित गरुड़-स्तम्भ (आजकल इसे खामबाबा के नाम से पुकारा जाता है) पर उत्कीर्ण लेख[1] में उल्लिखित महाराज भागभद्र से होना चाहिए। इस उत्कीर्ण लेख के अनुसार यूनानी नरेश ऐण्टिअलसिडस ने अपने राजदूत हेलियोडोरस को भारतीय नरेश भागभद्र की राजसभा में राजदूत के रूप में भेजा था। विदिशा में रहते हुए हेलियोडोरस भागवत धर्म का अनुयायी बन गया। अत: विष्णु भगवान के प्रति अपनी भक्ति का प्रदर्शन करते हुए उसने विष्णु मन्दिर के सम्मुख उपर्युक्त गरुड़-स्तम्भ को स्थापित करवाया। विदिशा से प्राप्त एक अन्य गरुड़-स्तम्भ पर उत्कीर्ण लेख में गौतमी-पुत्र भागवत द्वारा वासुदेव के प्रासादोत्तम (श्रेष्ठ

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६४५-अ

मन्दिर) में महाराज भागवत के राज्यकाल के बारहवें वर्ष में गरुड़ध्वज बनवाने का उल्लेख है।[1]

अंतिम शुंग राजा देवभूति था जिसकी हत्या वसुदेव कण्व ने कर कण्व वंश की स्थापना की। इन्होंने सम्भवतः ७२ ई० पू० से राज्य करना प्रारम्भ किया। मध्यप्रदेश के इतिहास में कण्व वंश से सम्बन्धित किसी भी महत्वपूर्ण घटना से हम परिचित नहीं हैं।

सातवाहन काल

कण्व वंश की शक्ति का नाश कर आन्ध्रदेशीय सातवाहनों ने २७ ई० पू० के लगभग अपने साम्राज्य की स्थापना की। पुराणों में इस वंश के संस्थापक का नाम सिन्धुक, शिशुक और शिप्रक मिलता है। इसे भृत्य भी कहा गया है जिससे विद्वानों ने अनुमान लगाया है कि स्वतन्त्र राजा होने के पूर्व वह सामन्त रहा होगा। पुराणों के अनुसार शिशुक का भाई कृष्ण उसका उत्तराधिकारी था। सम्भवतः उसका अधिकार नासिक क्षेत्र पर था।

सातवाहन वंश का सर्वप्रथम पराक्रमी राजा शातकर्णी था। पुराण इसे कृष्ण का पुत्र कहते हैं। शातकर्णी की उपलब्धियों के सम्बन्ध में उसकी रानी नागानिका के नानाघाट-अभिलेख से कुछ प्रकाश पड़ता है। साँची के बड़े स्तूप की वेदिका पर उत्कीर्ण एक लेख[2] से शातकर्णी के पूर्वी मालवा क्षेत्र पर अधिकार का पता चलता है। अभिलेख में 'राजा सिरि सातकणि' के समय 'वासिठिपुत आनन्द' नामक किसी वरिष्ठ अधिकारी द्वारा दिये गये दान का उल्लेख है। डॉ० ब्यूलर के अनुसार नानाघाट-अभिलेख में जिस 'दक्षिणापति सातकर्णि' का उल्लेख है, साँची का अभिलेख उसी के समय का है। कुछ सातवाहन सिक्कों पर 'राजा सिरि सात' का नामांकन मिलता है। रैप्सन महोदय ने 'सिरि सात' का समीकरण शातकर्णी के साथ किया। अधिकांश विद्वान् इस मत को स्वीकार करते हैं कि यह मुद्रा राजा शातकर्णी द्वारा अवन्ति देश पर अधिकार करने के बाद शीघ्र ही प्रसारित की गयी मुद्राओं में से एक है। 'सिरि सात' नामांकित सिक्के उज्जैन तथा देवास[3] के अतिरिक्त होशंगाबाद जिले के जमुनिया[4] नामक स्थान से तथा जबलपुर जिले के तेवर[5], भेड़ाघाट[6] और त्रिपुरी[7] में किये गये १९५१-५२ तथा १९६८-६९ के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। अतः विद्वानों का अनुमान है कि शातकर्णी प्रथम के राज्यकाल में सातवाहन साम्राज्य का विस्तार केवल मालवा तक ही नहीं वल्कि डाहल प्रदेश तक हो गया था।

शातकर्णी के मृत्यु के समय उसके दोनों पुत्र, शक्तिश्री और वेदश्री अल्प वयस्क थे।

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६४५-आ
२. वही, क्रमांक ६५५-अ
३. वही, क्रमांक २२९८
४. वही, क्रमांक २२९६
५. वही, क्रमांक २२९७
६. वही, क्रमांक २३०२
७. वही, क्रमांक २३०६

अतः शातकर्णी की रानी नागानिका ने अपने पुत्रों के संरक्षक के रूप में राज्य किया। पुराणों में प्राप्त वंशावली के अनुसार आन्ध्र कुल के इस छठे राजा का नाम भी शातकर्णी था। विद्वानों ने इसे शातकर्णी द्वितीय के नाम से पुकारा है। उज्जयिनी से 'रजो सिरि सतस' नामांकित सिक्के बड़ी संख्या में प्राप्त हुए हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार ये सिक्के सम्भवतः इसी द्वितीय शातकर्णी के काल में प्रचलित किये गये थे। क्योंकि पौराणिक परम्परा के अनुसार इसने ५६ वर्षों से भी अधिक राज्य किया, अतः इसकी मुद्राओं का अधिक मात्रा में प्राप्त होना स्वाभाविक है। कथासरित्सागर आदि ग्रन्थों में वर्णित अनुश्रुति के अनुसार महाकवि गुणाढ्य प्रतिष्ठान (पैठण) में किसी सातवाहन वंशी शातकर्णी राजा का मित्र बनकर अपना जीवन व्यतीत करता रहा। यह शातकर्णी सम्भवतः शातकर्णी द्वितीय होगा, ऐसा कुछ विद्वानों का मत है।

इसी काल से सम्बन्धित आपिलक नामक एक अन्य सातवाहन नरेश का सिक्का बालपुर के निकट महानदी में प्राप्त हुआ है[1] जिससे इस क्षेत्र पर भी तत्कालीन सातवाहन साम्राज्य के अधिकार की पुष्टि होती है। पुराणों के अनुसार यह सातवाहन वंश का ८वाँ नरेश था।

शातकर्णी के उत्तराधिकारियों का शासन-काल सातवाहन वंश के लिए अवनति का काल था। इस समय सातवाहन साम्राज्य पर शक क्षहरातों के आक्रमण हुए जिसके परिणामस्वरूप महाराष्ट्र सातवाहन राज्य से निकल गया और उस पर विदेशी आक्रमण-कारियों का आधिपत्य हो गया। महाराष्ट्र के निकल जाने के पश्चात् सातवाहनों को दक्षिण भारत की ओर प्रस्थान करना पड़ा और वे आन्ध्र में जाकर बस गये। यहीं पर राज्य करते हुए इस वंश के तेइसवें नरेश गौतमीपुत्र शातकर्णी ने सातवाहन वंश की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित किया।

गौतमीपुत्र शातकर्णी शातवाहन वंश का सबसे बड़ा और पराक्रमी राजा था। उसके पुत्र वासिष्ठीपुत्र पुलुमावी के नासिक अभिलेख में उसकी सफलताओं का वर्णन मिलता है। इस अभिलेख में उसे सातवाहन कुल को फिर से स्थापित करने वाला, क्षत्रियों के दर्प और मान का मर्दन करने वाला, शक, यवन और पहलवों का नाश करने वाला तथा क्षहरात वंश का निर्मूलन करने वाला कहा गया है। उसके राज्य के अन्तर्गत कौन-कौन से प्रदेश थे, इसकी सूची देते हुए बतलाया गया है कि उसके साम्राज्य में अनूप (माहिष्मती-आधुनिक महेश्वर के आस-पास का निमाड़), आकर (पूर्वी मालवा) तथा अवन्ति (पश्चिमी मालवा) भी शामिल थे। उज्जैन से प्राप्त गौतमीपुत्र शातकर्णी के सिक्के[2] इस बात को और पुष्ट करते हैं। उसका शासन काल १०६ ई० से १३० ई० तक था।

पुराणों के अनुसार गौतमीपुत्र की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र वासिष्ठीपुत्र पुलुमावी राजा हुआ। पुराण, टालमी, रुद्रदामन् का अभिलेख, सिक्के आदि अनेक साक्षों में इस राजा

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २२९९-अ

२. वही, क्रमांक २२९५ अ-आ

का उल्लेख मिलता है। भिलसा से प्राप्त उसके चाँदी, सीसे के सिक्के[१] तथा देवास में उपलब्ध उसके सिक्कों[२] से ज्ञात होता है कि उसने मध्यभारत के एक बड़े भाग पर अपना प्रभुत्व कायम रखा। उसका शासन काल कम से कम १३० ई० से १५४ ई० तक था।

सातवाहन वंश का अन्तिम प्रतापी नरश यज्ञश्री शातकर्णी था, जिसने कम से कम १६५ ई० से १९३ ई० तक राज्य किया। मध्यप्रदेश में इसके सिक्के बेसनगर के १९१३-१४ में किये गये उत्खनन में[३] तथा तेवर (त्रिपुरी)[४] और देवास[५] से प्राप्त हुए हैं।

यज्ञश्री शातकर्णी के पश्चात् सातवाहन वंश में कोई ऐसा पराक्रमी राजा न हुआ जो अपने वंश को संरक्षित रख सकता। अतः उसके पश्चात् सातवाहन राज्य की उत्तरोत्तर अवनति होती गई और सातवाहनों का साम्राज्य आभीर, इक्षाकु तथा पल्लवों के हाथ चला गया। अवनति काल से सम्बन्धित कुछ सातवाहन नरेशों का नाम हमें उनके द्वारा चलाये गये सिक्कों से ज्ञात होता है। उदाहरणस्वरूप कुम्भ शातकर्णी का एक सिक्का देवास में मिला है।[६] इनके अतिरिक्त सातवाहनों से सम्बन्धित कई अस्पष्ट सिक्के महेश्वर तथा त्रिपुरी के उत्खनन में, आवरा तथा विदिशा के धरातल खोज में प्राप्त हुए हैं।[७]

दक्षिण कोसल में सातवाहनों के राज्य का उल्लेख चीनी यात्री ह्यूनत्सांग के यात्रा-विवरण में है। ह्यूनत्सांग के अनुसार प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक नागार्जुन दक्षिण कोसल की राजधानी के निकट निवास करता था और उस समय कोसल का राजा कोई सातवाहन वंशी था। चीनी यात्री के इस कथन की पुष्टि बिलासपुर जिले में सक्ती के निकट गुंजी (ऋषभतीर्थ) में प्राप्त शिलालेख से भी होती है जिसमें सातवाहन राजा कुमारवरदत्त का उल्लेख है।[८] सातवाहन काल में निर्मित पाषाण प्रतिमाएँ बिलासपुर जिले में प्राप्त हुई हैं। इसी समय का एक काष्ठ-स्तम्भ लेख रायपुर संग्रहालय में संरक्षित है जो बिलासपुर जिले के किरारी नामक स्थान से प्राप्त हुआ था।[९] इसमें तत्कालीन शासकीय कर्मचारियों के पदनामों का उल्लेख है। सातवाहन काल से सम्बन्धित कुछ अन्य अभिलेख मध्यप्रदेश के विभिन्न भागों से भी प्राप्त हुए हैं।[१०]

सातवाहन काल में भारत का विदेशों से, विशेषकर रोम से, व्यापार बढ़ा था। इसलिए

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २३०१-आ-ई
२. वही, क्रमांक २२९८
३. वही, क्रमांक २३००
४. वही, क्रमांक २२९७-आ
५. वही, क्रमांक २२९८
६. वही, क्रमांक २२९८
७. वही, क्रमांक २२९३, २३०३, २३०६
८. वही, क्रमांक ६३७
९. वही, क्रमांक ६३५
१०. वही, क्रमांक ६३१-६५५

रोम देश के सिक्के भारत में आने लगे थे। कुछ सिक्के मध्यप्रदेश में भी मिले हैं। ये आवरा,[१] चकरबेड़ा[२] तथा बिलासपुर[३] में प्राप्त हुए हैं। १९५२ के त्रिपुरी के उत्खनन में मिट्टी का एक रोमन पदक तथा रोमन मृत्पात्र अंतिम सातवाहन स्तर में मिले हैं। सातवाहनों के माध्यम से सम्बन्ध के अभाव में, इन सिक्कों का यहाँ प्राप्त होना असम्भव था।

हिन्द-यूनानी उत्कर्ष

दूसरी-प्रथम शताब्दी ई० पू० के बीच भारत पर यूनानी नरेशों का आक्रमण हुआ जिसके फलस्वरूप उत्तर-पश्चिम सीमान्त प्रदेश, सिंध, पंजाब तथा उत्तर प्रदेश का कुछ भाग विदेशियों के अधिकार में चला गया। जहाँ तक मध्यप्रदेश के किसी क्षेत्र पर हिन्दू-युनानियों के अधिकार का प्रश्न है, अभी तक कोई ऐसा प्रमाण उपलब्ध नहीं हुआ है जिसके आधार पर यह कहा जा सके कि हिन्दू-यूनानियों का साम्राज्य यहाँ तक विस्तृत था। बालाघाट से अवश्य ही मिनेन्डर के तथा अन्य कुछ हिन्द-यूनानी शासकों के सिक्के मिले हैं।[४] इसी प्रकार स्व० अडवानी द्वारा मध्यभारत के कुछ स्थानों से विभिन्न हिन्द-यूनानी नरेशों के सिक्के प्राप्त कर अपने संग्रह में एकत्र किये गये।[५] परन्तु इन अपर्याप्त प्रमाणों के आधार पर मध्यप्रदेश के किसी क्षेत्र पर हिन्द-यूनानी नरेशों का अधिकार मान लेना कठिन है।

शक-क्षत्रप काल

प्रथम शताब्दी ई० पू० में उत्तर-पश्चिम भारत में यूनानी राज्य का अन्त हो गया। उसके स्थान पर शक नामक एक अन्य विदेशी जाति ने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। शक नरेशों ने भारत के एक विस्तृत प्रदेश पर सीधे अथवा अपने क्षत्रपों (अर्थात् शासकों) के माध्यम ने ईसा की तीसरी शताब्दी तक राज्य किया।

शकों के प्रारम्भिक नरेशों में मोअस, आजस प्रथम, एजिलिसेस, आजेस द्वितीय के नाम उल्लेखनीय हैं। मोअस तथा आजेस प्रथम के कुछ सिक्के इन्दौर के स्व० अडवानी द्वारा अपने संग्रह में एकत्र किये गये।[६]

उत्तर तथा पश्चिम भारत के शक-क्षत्रपों की कई शाखायें थीं। इनमें से विशेष उल्लेखनीय पंजाब के क्षत्रप, मथुरा के क्षत्रप तथा पश्चिम भारत के क्षत्रप थे। पश्चिम भारत के शक-क्षत्रपों का मध्यप्रदेश के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

पश्चिम भारत के क्षत्रपों के दो वंश थे। पहला वंश क्षहरात वंश के नाम से प्रसिद्ध

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २४२०
२. वही, क्रमांक २४२४
३. वही, क्रमांक २४२७
४. वही, क्रमांक २३०८
५. वही, क्रमांक २३०७ अ-आ
६. वही, क्रमांक २३१०-आ

था जिसके दो महत्वपूर्ण क्षत्रपों का नाम भूमक तथा नहपान था। भूमक का इतिहास एकमात्र उसकी मुद्राओं से ज्ञात होता है। उसकी मुद्रायें गुजरात, काठियावाड़ तथा मालव के प्रदेशों में मिली हैं, जिनसे प्रकट होता है कि इन प्रदेशों पर उसका अधिकार था। शिवपुरी के मुनिराज संग्रह में उसके ताँबे के कुछ सिक्के संग्रहीत हैं।[1]

क्षहरात वंश का सबसे प्रतापी क्षत्रप नहपान था। जैन साहित्य में इसका उल्लेख नरवाहन अथवा नववाहन के रूप में हुआ है। 'पेरिप्लस आफ दी एरिथ्रियन सी' नामक पुस्तक के लेखक ने उसका वर्णन नैम्बैनस के नाम से किया है। नहपान के दामाद उषवदात के अभिलेखों में आये हुए स्थान-नामों से पता चलता है कि नहपान का राज्य शूर्पारक (उत्तरी कोकण) से लेकर प्रभास (काठियावाड़), मन्दसौर, उज्जैन और अजमेर तक विस्तृत था। नासिक गुहालेख क्रमांक १० से पता चलता है कि नहपान का दामाद उषवदात अपने मित्र उत्तमभद्रों की मालव आक्रमणकारियों के विरुद्ध सहायता करने गया था। इस युद्ध में मालव पराजित हुए थे। ये मालव कौन थे, इस प्रश्न पर विद्वानों में मतभेद है। कुछ उन्हें मालव मानते हैं जो इस समय मध्यमिका (नगरी, राजस्थान के पास) के प्रदेश में रहते थे। कुछ विद्वान् इन्हें दक्षिण भारत के मलय पहाड़ों के निवासी बताते हैं। पेरिप्लस के लेखक के अनुसार नहपान की राजधानी मिन्नगर थी। यह एरिआक में थी। मिन्नगर को कुछ विद्वान् मन्दसौर मानते हैं तथा कुछ विद्वान् दोहद। कुछ विद्वान् एरिआक से अपरान्तिका समझते हैं तथा इसके विरुद्ध कुछ लोग एरिआक का समीकरण आर्यावर्त से करते हैं। जोगलथम्बी से प्राप्त नहपान की पुनर्मुद्रांकित सिक्कों से पता चलता है कि सातवाहन नरेश गौतमीपुत्र सातकर्णी ने नहपान को पराजित किया था। नहपान के इस प्रकार के चाँदी के सिक्के जिन्हें गौतमीपुत्र शातकर्णी द्वारा पुनर्मुद्रांकित किया गया, शिवपुरी में प्राप्त हुए हैं।[2] जैसा कि हम देख चुके हैं, नहपान के पराजित होने पर मालवा पर कुछ समय तक सातवाहनों का प्रभुत्व स्थापित हो गया। नहपान क्षहरात वंश का अन्तिम क्षत्रप था।

उज्जैन से 'महू,' 'दास' तथा 'सोम' नामक शासकों के सिक्के मिले हैं। कुछ विद्वान् इन्हें मालवा के भूमक वंश के शक-क्षत्रपों के पूर्वज मानते हैं।[3] इसी प्रकार क्षहरात 'अर्त' (?) का एक ताँबे का सिक्का शिवपुरी के मुनिराज संग्रह में संरक्षित है।[4] इसके सम्बन्ध में हमें कुछ भी ज्ञात नहीं।

पश्चिम भारत के शक-क्षत्रपों के दूसरे वंश का नाम कार्दमक था। इस वंश का संस्थापक यसोमतिक का पुत्र चष्टन था। टालमी के अनुसार चष्टन की राजधानी उज्जयिनी थी। अन्धौ अभिलेखों से प्रकट होता है कि वह कच्छ तथा समीपवर्ती कुछ अन्य भूखण्डों का शासक था। उसकी मुद्रायें जूनागढ़ और गुजरात में प्राप्त हुई हैं जिससे स्पष्ट है कि ये प्रदेश उसके अधीन थे। मध्यप्रदेश में उसके सिक्के उज्जैन तथा शिवपुरी में मिले हैं।

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २३१८-अ-२
२. वही, क्रमांक २३१८-अ-३
३. वही, क्रमांक २३११-आ, इ
४. वही, क्रमांक २३१८-अ-१

चष्टन का उत्तराधिकारी उसका पुत्र जयदामन् स्वतन्त्र रूप से राज्य न कर सका। शक शासन प्रणाली के अनुसार कुछ दिनों तक वह अपने पिता चष्टन की अधीनता में क्षत्रप रहा। परन्तु उसकी मृत्यु अपने पिता के शासन काल में ही हो गई। उसकी मृत्यु के पश्चात् चष्टन ने उसके पुत्र रुद्रदामन् को अपना सहयोगी क्षत्रप बनाया। कालान्तर में चष्टन की मृत्य के पश्चात् रुद्रदामन् महाक्षत्रप बना।

रुद्रदामन् का इतिहास प्रमुखतः उसके जूनागढ़ प्रशस्ति से मिलता है। इस अभिलेख के अनुसार उसके राज्य के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रदेश थे :—

१—पूर्व और अपर आकर तथा अवन्ती (पूर्वी और पश्चिमी मालवा)

२—अनूपनिभृत (मान्धाता प्रदेश)

३ – आनर्त (द्वारका का चतुर्दिक प्रदेश)

४—सुराष्ट्र (जूनागढ़ का चतुर्दिक प्रदेश)

५—स्वभ्र (साबरमती नदी का तटवर्ती प्रदेश)

६—मरु (मारवाड़)

७—कच्छ

८—सिन्धु-सौबीर (सिन्धु नदी का डेल्टा)

९—कुकुर (सिन्धु नदी और पारियात्र पर्वत के बीच का प्रदेश)

१०—अपरान्त (उत्तरी कोंकण)

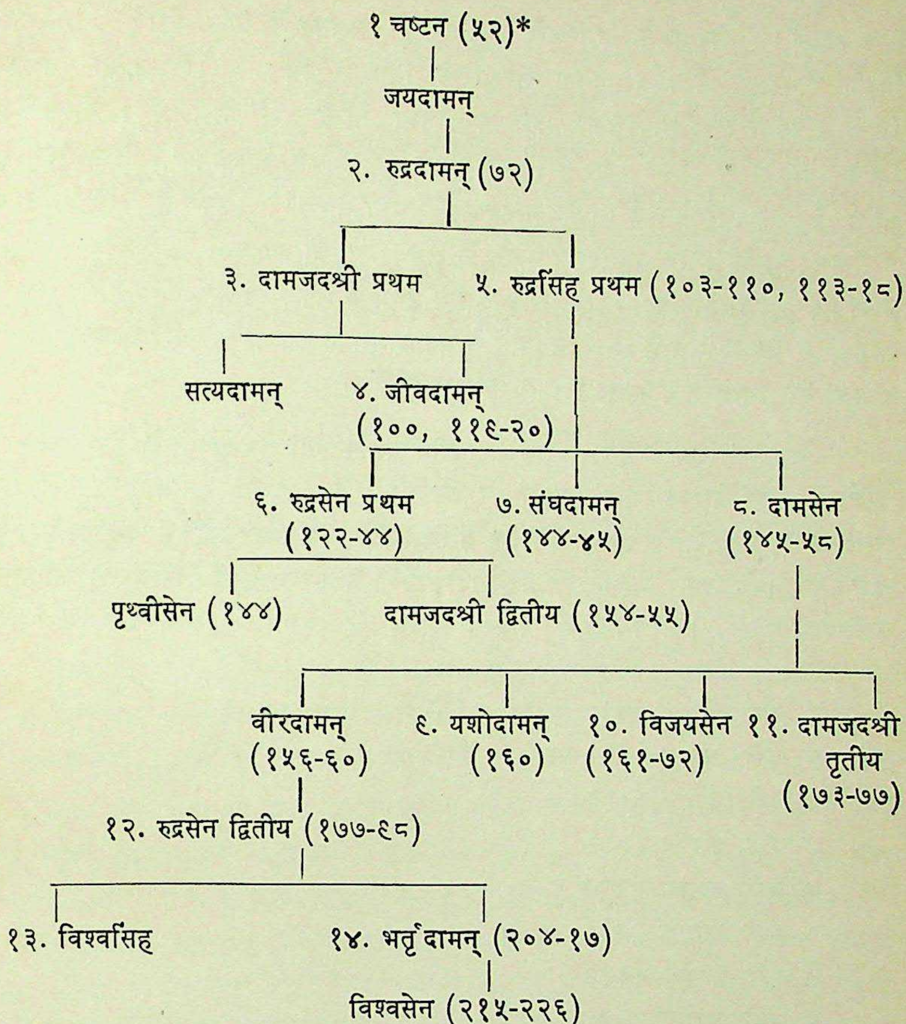
१२—निषाद (सरस्वती और पश्चिमी विन्ध्य का प्रदेश)

१२—और कुछ अन्य प्रदेश।

इन प्रदेशों में सुराष्ट्र, कुकुर, अपरान्त, अनूप और आकरावन्ती के प्रदेश गौतमीपुत्र शातकर्णी के अधीन थे। अतः स्पष्ट है कि रुद्रदामन् ने उन्हें गौतमीपुत्र के किसी उत्तराधिकारी से जीता होगा। जूनागढ़ अभिलेख का कथन है कि रुद्रदामन् ने दक्षिणापथ के राजा शातकर्णी को दो बार पराजित किया, परन्तु सम्बन्ध की निकटता के कारण उसका नाश नहीं किया। यहीं शातकर्णी स्वयं गौतमीपुत्र शातकर्णी था अथवा उसका कोई उत्तराधिकारी, इस सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है।

अपने दादा की तरह रुद्रदामन् ने भी अपनी राजधानी उज्जयिनी में ही रखी तथा यह से अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

रुद्रदामन् के पश्चात् उज्जयिनी में ही उसके वंशजों की राजधानी रही। उनका इतिहास तथा आपसी सम्बन्धों को समझने के लिए उज्जयिनी के क्षत्रपों के वंशवृक्ष को समझना आवश्यक है। उनकी वंशावली इस प्रकार है :—



रुद्रदामन् के अनेक उत्तराधिकारियों के सिक्के मध्यप्रदेश के विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए हैं। महाक्षत्रप रुद्रसिंह प्रथम के चाँदी के सिक्के शिवपुरी से प्राप्त हुए हैं।[1] रुद्रसेन प्रथम के सिक्के शिवपुरी,[2] साँची[3] तथा सिवनी[4] से प्राप्त हुए हैं। दामजदश्री द्वितीय के सिक्के आवरा के उत्खनन में मिलते हैं।[5] दामसेन के सिक्के शिवपुरी में संग्रहीत

*१. नामों के पूर्व में दिये गये अंक 'महाक्षत्रप' होने के सूचक हैं। जिन नामों के पूर्व में ये अंक नहीं दिये गये, वे केवल 'क्षत्रप' ही रहे।

*२. नामों के पश्चात् कोष्ठकों में दिये हुए अंक उपलब्ध शक संवत् के हैं।

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २३१८-अ (५)

२. वही, क्रमांक २३१८-आ

३. वही, क्रमांक २३१९

४. वही, क्रमांक २३२०

५. वही, क्रमांक २३०९-आ

किये गये हैं।[१] वीरदामन् के सिक्के बेसनगर के उत्खनन में मिले हैं।[२] विजयसेन के सिक्के गोंदरमऊ में प्राप्त क्षत्रप सिक्कों की निधि में मिले हैं।[३] रुद्रसेन द्वितीय के सिक्के केवलारी[४], गोंदरमऊ[५], बेसनगर[६] तथा साँची[७] में मिले हैं। विश्वसिंह के सिक्के साँची[८] से प्राप्त हुए हैं। भर्तृदामन् के सिक्के केवलारी[९], गोंदरमऊ[१०] तथा साँची[११] और विश्वसेन के सिक्के गोंदरमऊ[१२] तथा साँची[१३] में मिले हैं। छिन्दवाड़ा जिले में सोनपुर नामक स्थान से पश्चिम भारत के क्षत्रप शासकों की ६७० सिक्कों की एक निधि प्राप्त हुई है जिसमें संघदामन् को छोड़ रुद्रसेन प्रथम से लेकर स्वामी रुद्रसेन तृतीय तक सभी शासकों के सिक्के मिले हैं।[१४] इस निधि से महाकोशल के क्षेत्र पर भी पश्चिम भारत के क्षत्रप शासकों का प्रभाव जान पड़ता है।

कार्दमक वंश के इन क्षत्रपों के अतिरिक्त परवर्ती शक-क्षत्रपों के कुछ सिक्के तथा अभिलेख मध्यप्रदेश के कुछ स्थानों से प्राप्त हुए हैं। रुद्रसेन तृतीय के सिक्के आवरा उत्खनन[१५], गोंदरमऊ[१६] तथा साँची[१७] में मिले हैं। इसी प्रकार रुद्रसिंह द्वितीय तथा रुद्रसिंह तृतीय के सिक्के क्रमशः साँची[१८] और गोंदरमऊ[१९] में प्राप्त हुए हैं। पिछोर से श्रीदामन्[२०] के सिक्के मिले हैं। अभिलेखों में पश्चिम भारत के क्षत्रपों से सम्बन्धित एक अभिलेख

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २३१८-अ (७)
२. वही, क्रमांक २३१५-आ
३. वही, क्रमांक २३१३
४. वही, क्रमांक २३१२
५. वही, क्रमांक २३१३
६. वही, क्रमांक २३१५-आ
७. वही, क्रमांक २३१९
८. वही, क्रमांक २३१९
९. वही, क्रमांक २३१२
१०. वही, क्रमांक २३१३
११. वही, क्रमांक २३१९
१२. वही, क्रमांक २३१३
१३. वही, क्रमांक २३१९
१४. वही, क्रमांक २३२१
१५. वही, क्रमांक २३०९-अ
१६. वही, क्रमांक २३१३
१७. वही, क्रमांक २३१९
१८. वही, क्रमांक २३१९
१९. वही, क्रमांक २३१३
२०. वही, क्रमांक २३१४

उज्जैन[1] से प्राप्त हुआ है तथा विदिशा-एरण क्षेत्र में राज्य करते हुए एक नये शक वंश के शासक श्रीधरवर्मन का एक अभिलेख[2] एरण से तथा दूसरा साँची के निकट कानाखेरा से प्राप्त हुआ है।[3] इसके अतिरिक्त आभीर ईश्वरदत्त का एक सिक्का बेसनगर से प्राप्त हुआ है।[4] यहाँ उल्लेखनीय है कि पश्चिम भारत के क्षत्रपों के मालवा क्षेत्र पर शासन काल में कुछ थोड़े समय के लिए आभीरों का राज्य स्थापित हो गया था। तत्पश्चात् आभीरों को यहाँ से खदेड़ दिया गया तथा क्षत्रप शासन पुर्नस्थापित हो गया। उपरोक्त सिक्कों तथा अभिलेखों से मध्यप्रदेश के पूर्व-गुप्त काल के इतिहास पर प्रकाश डालने में सहायता मिलती है।

कुषाण काल

जब मध्यदेश में सातवाहनों और शक-क्षत्रपों के बीच संघर्ष चल रहा था, उस समय भारत पर उत्तर-पश्चिम की ओर से विदेशियों का एक नया आक्रमण हुआ। ये विदेशी पश्चिम चीन में बसने वाली यू-ची नामक जाति की पाँच शाखाओं में से एक शाखा थी जो कुई-शांग अथवा कुषाण कहलाती थी। प्रथम शताब्दी ई० पू० में इस जाति ने भारत में प्रवेश किया।

कुषाण वंश का सर्वप्रथम महत्वपूर्ण राजा कुजुल कैडफिसेस था। उसके साम्राज्य के अन्तर्गत बैक्ट्रिया, अफगानिस्तान, पूर्वी ईरान और भारतवर्ष का सिन्धु तटीय प्रदेश सम्मिलित था। उसकी मृत्यु ७० ई० पू० के लगभग हुई होगी।

कुजुल कैडफिसेस के मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र वीम कैडफिसेस राज्याधिकारी हुआ। उसकी मुद्रायें पंजाब से लेकर बनारस तक पायी गयी हैं। अतः यह अनुमान किया गया है कि उसका राज्य गान्धार, पंजाब और उत्तर प्रदेश के कुछ भाग पर अवश्य था। वीम कैडफिसेस का एक सिक्का विदिशा से प्राप्त हुआ है।[5] शहडोल में कुषाण शासकों के ७५७ सिक्कों की एक बड़ी निधि प्राप्त हुई थी। इसमें वीम कैडफिसेस के भी ४४ सिक्के मिले थे।[6] परन्तु क्या इन सिक्कों के आधार पर वीम कैडफिसेस के साम्राज्य का विस्तार मध्यप्रदेश तक मान लिया जाये, यह कहना कठिन है।

वीम कैडफिसेस का उत्तराधिकारी कनिष्क प्रथम था। अधिकांश विद्वान् इसके राज्यारोहण की तिथि ७८ ई० मानते हैं, जब उसके द्वारा प्रचलित शक संवत् का प्रारम्भ हुआ। कनिष्क प्रथम इस वंश का सबसे प्रतापी, प्रतिभाशाली और प्रसिद्ध शासक था। उसने अपने पूर्वजों से प्राप्त राज्य का बहुत विस्तार किया। राजतरंगिणी के अनुसार काश्मीर पर

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६३३
२. वही, क्रमांक ८४२
३. वही, क्रमांक ८४३
४. वही, क्रमांक २३१५-अ
५. वही, क्रमांक २३२८
६. वही, क्रमांक २३२९

कनिष्क का अधिकार हो गया था। चीनी और तिब्बती बौद्ध अनुश्रुतियों के अनुसार उसने साकेत और पाटलिपुत्र पर भी अपना अधिकार कर लिया था। उसके कुछ सिक्के बिहार और बंगाल में भी मिले हैं। मध्यप्रदेश में उसके सिक्के बिलासपुर जिले में स्थित झाझापुरी नामक स्थान से[१] प्राप्त हुए हैं। शाहडोल से प्राप्त उपरोक्त कुषाण शासकों के सिक्कों की निधि में कनिष्क प्रथम के ३२४ सिक्के मिले हैं।[२]

कनिष्क प्रथम का उत्तराधिकारी वासिष्क था। उसके शासन काल का एक अभिलेख मथुरा में तथा दूसरा साँची में[३] प्राप्त हुआ है। प्रथम लेख की तिथि २४ और दूसरे की २८ है। दूसरे अभिलेख के अनुसार साँची में किसी 'खर' की दुहिता मधुकरि ने एक बौद्ध-मूर्ति का निर्माण महाराज राजातिराज देवपुत्र शाहि वासिष्क के राज्य के २८वें संवत्सर में करवाया था। इतिहासज्ञ इस २८वें संवत् को शक संवत् मानते हैं। वासिष्क के कोई सिक्के अब तक प्राप्त नहीं हुए हैं।

वासिष्क के बाद हुविष्क सिंहासन पर बैठा। इसके अनेक सिक्के और अभिलेख मिले हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि उसका साम्राज्य पश्चिम में काबुल, उत्तर में काश्मीर तथा पूर्व में मथुरा तक विस्तृत था। मध्यप्रदेश के एक बड़े भाग पर भी उसके साम्राज्य के विस्तार का पता लगता है, जैसा कि झाझापुरी[४], शहडोल[५], तथा हरदा[६] से प्राप्त उसके सिक्कों से ज्ञात होता है। हुविष्क की तिथियाँ २६ से ६० तक मिली हैं जिससे प्रकट होता है कि उसने कम से कम १३८ ई० तक राज्य किया।

आरा से प्राप्त अभिलेख में एक कनिष्क का उल्लेख है जिसकी तिथि ४१ है। अधिकांश विद्वान् इसे कनिष्क द्वितीय मानते हैं जिसने हुविष्क के साथ राज्य किया होगा। इस कनिष्क द्वितीय अथवा कनिष्क तृतीय का एक सिक्का होशंगाबाद जिले के हरदा नामक स्थान से प्राप्त हुआ है।[७]

हुविष्क के पश्चात् वासुदेव प्रथम कुषाण साम्राज्य का उत्तराधिकारी बना। इसकी तिथियाँ ६७ से ९८ तक मिलती हैं, जिससे प्रकट होता है कि उसने कम से कम १७६ ई० तक राज्य किया। इसके द्वारा प्रचलित एक ताँबे का सिक्का जबलपुर जिले में स्थित तेवर (प्राचीन त्रिपुरी) नामक स्थान से प्राप्त हुआ है।[८] इस क्षेत्र पर कुषाण साम्राज्य के आधिपत्य के और प्रमाण तेवर के निकट भेड़ाघाट से प्राप्त कुषाण कालीन दो मूर्ति लेख[९]

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २३२३
२. वही, क्रमांक २३२९
३. वही, क्रमांक ६५५-इ
४. वही, क्रमांक २३२३
५. वही, क्रमांक २३२९
६. वही, क्रमांक २३३०
७. वही, क्रमांक २३३०
८. वही, क्रमांक २३२४
९. वही, क्रमांक ६४७

तथा निकटवर्ती घाट से प्राप्त कुषाण कालीन गांधार कला की बौद्ध प्रतिमाओं की प्राप्ति से होता है।

वासुदेव प्रथम के उत्तराधिकारी कनिष्क तृतीय तथा वासुदेव द्वितीय हुए। मध्यप्रदेश के किसी भी भाग पर इन दोनों शासकों के अधिकार का कोई भी प्रमाण अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ है। वासुदेव द्वितीय इस वंश का अंतिम नरेश प्रतीत होता है जिसके शासन काल के पश्चात् इस वंश का पूर्णतः विलोप हो गया।

नाग वंश

दूसरी शताब्दी ई० के अंतिम चरण में, जब मध्यभारत के दक्षिण क्षेत्र में राजनैतिक उथल-पुथल चल रही थी, उस समय विदिशा-ग्वालियर क्षेत्र में एक नये राजवंश का उदय हुआ जो नागवंश के नाम से प्रसिद्ध है। कुषाण वंश के अंतिम नरेशों की कमजोरी का पूरा लाभ उठाकर इस वंश के राजाओं ने अपने साम्राज्य का विस्तार किया तथा विदेशियों को भारत से खदेड़ने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

नागवंश के प्राचीन इतिहास के सम्बन्ध में केवल कुछ छुटपुट उल्लेखों के अतिरिक्त अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। इस वंश के शासकों के कोई अभिलेख उपलब्ध नहीं हैं। इन नरेशों ने सिक्के अवश्य ही प्रचलित किये और यही इनके इतिहास निर्माण के साधन हैं।

विष्णु पुराण में पद्मावती, कान्तिपुरी तथा मथुरा के 'नव' नाग शासकों का उल्लेख आया है। इसी प्रकार वायु पुराण मथुरा तथा पद्मावती के नाग शासकों का उल्लेख करता है। भवभूति के 'मालती-माधव' में भी पद्मावती नगर का वर्णन आया है। परन्तु इन उल्लेखों से नागवंश के प्राचीन इतिहास को जानने में अधिक सहायता नहीं मिलती। सिक्कों को आधार बनाकर जो जानकारी अभी तक उपलब्ध है, उससे विद्वानों का मत है कि इस वंश की स्थापना विदिशा में हुई तथा कालान्तर में यहीं से वे पद्मावती, कान्तिपुरी तथा मथुरा में गये। अधिकांश विद्वान् यह मानते हैं कि इन तीन स्थानों के नाग एक ही वंश से सम्बन्धित थे।

विद्वानों के अनुसार नागवंश का संस्थापक वृषनाथ था जिसने दूसरी शताब्दी ई० के अंतिम भाग में विदिशा में इस वंश की स्थापना की। वृषनाग का एक सिक्का यहाँ से प्राप्त हुआ था, जिसे ग्वालियर पुरातत्त्व संग्रहालय में संरक्षित किया गया।[1] विदिशा नागवंश का एक महत्वपूर्ण गढ़ था। १९१३-१४ के बेसनगर उत्खनन में नागों के सिक्के मिले थे। आज भी यहाँ नागों के सिक्के अक्सर मिल जाते हैं।

वृषनाग के पश्चात् संभवतः भीमनाग का शासन हुआ। ऐसा लगता है कि उसने अपनी राजधानी को विदिशा से पद्मावती स्थानान्तरित किया। उसके सभी उत्तराधिकारियों की राजधानी पद्मावती ही रही, जैसा कि उसके सभी उत्तराधिकारियों के सिक्कों की पवाया

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २३३९-अ

(प्राचीन पद्मावती) से प्राप्ति से ज्ञात होता है।[1] जायसवाल के अनुसार उसका शासन काल २१० ई० से २३० ई० के बीच माना जा सकता है।

भीमनाग के उत्तराधिकारी स्कन्दनाग, वसुनाग तथा बृहस्पतिनाग थे। इन तीनों शासकों के सिक्के पवाया से प्राप्त हुए हैं। बृहस्पतिनाग का शासन काल तीसरी शताब्दी ई० के अंतिम भाग में समाप्त हुआ प्रतीत होता है।

पद्मावती के अंतिम छः नरेश क्रमशः विभुनाग, रविनाग, भवनाग, प्रभाकरनाग, देवनाग तथा गणपतिनाग प्रतीत होते हैं। इन सभी शासकों के सिक्के पवाया में मिले हैं। रविनाग का एक नये प्रकार का सिक्का एरण में प्राप्त हुआ है।[2] भवनाग के सम्बन्ध में कुछ अधिक जानकारी हमें वाकाटक अभिलेखों से मिलती है। चम्मक से प्राप्त प्रवरसेन (द्वितीय) के ताम्रपत्र में गौतमीपुत्र वाकाटक का उल्लेख करते हुए लिखा है कि वह उन महाराज श्री भवनाग का दौहित्र था जो उन भारशिवों के वंश में उत्पन्न हुए जिनका आरम्भ इस प्रकार हुआ कि उन्होंने शिवलिंग को अपने कन्धे पर वहन करके शिव को परितुष्ट किया था तथा जिनका राज्याभिषेक उस भागीरथी के पवित्र जल से हुआ था जिसे उन्होंने अपने पराक्रम से प्राप्त किया था और जिसने दस अश्वमेघ यज्ञ कर अवभृथ स्थान प्राप्त किया था। इस वैवाहिक सम्बन्ध से विद्वानों द्वारा भवनाग का काल चौथी शताब्दी ई० के पूर्वार्द्ध में आंका गया है। इसी प्रकार गणपतिनाग के सम्बन्ध में कुछ जानकारी गुप्तों के अभिलेख में मिलती है। गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तम्भ लेख में उन शासकों की सूची में, जिन्हें समुद्रगुप्त ने उच्छेद किया था, गणपतिनाग का नाम आया है। संभवतः गणपतिनाग इस वंश का अंतिम नरेश था जिसे पराजित कर समुद्रगुप्त द्वारा नाग राज्य को अपने साम्राज्य में मिला लिया गया था। समुद्रगुप्त के उपरोक्त अभिलेख में आर्यावर्त के नागदत्त तथा नागसेन नामक दो शासकों का भी उल्लेख आया है जिनका समुद्रगुप्त द्वारा नाश किये जाने का वर्णन है। नागदत्त के सम्बन्ध में और कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है, परन्तु नागसेन का उल्लेख पद्मावती के राजा के रूप में बाण रचित हर्षचरित में आया है। परन्तु इस नागसेन के कोई भी सिक्के अभी तक प्राप्त नहीं हुए हैं।

पद्मावती के इन नरेशों के अतिरिक्त पवाया से प्राप्त सिक्कों में सबलसेन, अमितसेन, वीरसेन, महत, मखदत, यतग (?) आदि नरेशों के सिक्के भी मिले हैं। पद्मावती के नाग शासकों की वंशावली में इनका स्थान कहाँ है इस सम्बन्ध में अभी भी कोई निश्चित मत प्रतिपादित नहीं हुआ है।

पद्मावती के नाग शासकों के अतिरिक्त नरवर से प्राप्त एक सिक्के से[3] व्याघ्रनाग नामक एक अन्य नाग नरेश का पता चलता है। इसके सम्बन्ध में और जानकारी उपलब्ध नहीं है।

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २३३८-अ-ऊ

२. वही, क्रमांक २३३४-अ

३. वही, क्रमांक २३३७-आ

विदिशा तथा पद्मावती के अतिरिक्त पुराणों के अनुसार कान्तिपुरी (आधुनिक कुतवार) में भी नागों की एक राजधानी थी। कुतवार से प्राप्त नाग शासकों के १८९५९ सिक्कों की एक विशाल निधि[1] से भी यही बात प्रमाणित होती है।

नागवंश का इतिहास आज भी अस्पष्ट है। इस ओर अधिक शोध अपेक्षित है।

बोधि तथा मघ राजवंश

ईसा की दूसरी-तीसरी शती में त्रिपुरी क्षेत्र (आधुनिक तेवर, जबलपुर जिला) पर बोधिवंश के राजाओं के शासन का पता चलता है। त्रिपुरी उत्खनन में इस राजवंश के जो मृद्-मुद्रांकन प्राप्त हुए हैं उनसे इस वंश के चार शासक—श्रीबोधि, वसुबोधि, चन्द्रबोधि तथा शिवबोधि के नाम ज्ञात हुए हैं।[2] इस राजवंश के कुछ सिक्के जबलपुर के डा० महेशचन्द्र चौबे के निजी संग्रह में संरक्षित हैं।[3]

त्रिपुरी उत्खनन में प्राप्त एक मिट्टी की मुद्रा पर महासेन नामक शासक का नाम अंकित मिलता है।[4] महासेन ३५० ई० के लगभग त्रिपुरी क्षेत्र पर शासन करता होगा। महासेन का बोधि वंश से कुछ सम्बन्ध था अथवा नहीं यह अज्ञात है।

लगभग इसी समय मध्यप्रदेश के बघेलखण्ड क्षेत्र पर मघ वंश के शासकों का आधिपत्य था। इस वंश का प्रथम शासक भीमसेन था। मघ वंश के प्रसिद्ध राजा भद्रमघ और शिवमघ थे। इनके तथा मघवंशी कई अन्य शासकों के सिक्के, मुहर तथा शिलालेख कौशाम्बी एवं भीटा के अतिरिक्त बांधवगढ़ (जिला शहडोल) से प्राप्त हुए हैं। मघवंशी राजाओं ने कुषाणों का प्रतिरोध करने में विशेष कार्य किया, जिससे कुषाण सत्ता महाकोशल क्षेत्र में नहीं जम पायी।[5]

गुप्तकाल

तीसरी शताब्दी ई० के अन्त तथा चौथी के प्रारम्भ में उत्तर भारत में कोई सर्वोपरि राजनीतिक शक्ति नहीं थी। सारा देश कई छोटे-छोटे नृप-तंत्रों और प्रजातंत्र राज्यों में बँटा था। ऐसी परिस्थिति का लाभ उठा कर साकेत-प्रयाग क्षेत्र के आस-पास श्रीगुप्त नामक राजा ने एक राजवंश की स्थापना की जो गुप्त वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। गुप्त युग प्राचीन भारत के इतिहास में स्वर्णयुग कहलाता है।

श्रीगुप्त का पुत्र घटोत्कचगुप्त तथा उसका पुत्र चन्द्रगुप्त प्रथम था। चन्द्रगुप्त प्रथम

---

१. प्रन्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २३३५

२. वही, क्रमांक २४४४-अ-आ

३. वही, क्रमांक २४७०

४. वही, क्रमांक २४४४-ई

५. देखिये, इण्डियन न्यूमिसमैटिक क्रानिकल, भाग ३, अंक १ (१९६२), पृ० ११-२१

ने अपने वीरतापूर्ण कृत्यों द्वारा गुप्त साम्राज्य का विस्तार किया तथा अपने राज्य के भावी उत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त किया। उसने लिच्छवियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर अपनी स्थिति को सुदृढ़ किया तथा ३२० ई० में अपने राज्यारोहण की तिथि से गुप्त संवत् प्रारम्भ किया। उसके साम्राज्य के अन्तर्गत बिहार का एक बड़ा भाग और सम्भवतः उत्तर प्रदेश और बंगाल का कुछ हिस्सा शामिल था।

चन्द्रगुप्त प्रथम का उत्तराधिकारी उसके पुत्र समुद्रगुप्त ने अपने दिग्विजयों द्वारा गुप्त साम्राज्य की सीमा को भारत के एक बड़े भाग पर फैलाने का प्रयत्न किया। इलाहाबाद से प्राप्त उसके शासनकाल में उत्कीर्ण स्तम्भ-लेख में उसकी विजयों का उल्लेख किया गया है, जिससे ज्ञात होता है कि मध्यप्रदेश के इतिहास में उसका बड़ा योगदान रहा। आर्यावर्त पर उसके प्रथम अभियान का उल्लेख करते हुए प्रयाग प्रशस्ति में वर्णित है कि समुद्रगुप्त ने अच्युत और नागसेन नामक दो शासकों पर पूर्ण विजय प्राप्त की और तत्पश्चात् किसी कोट वंशीय राजा का पराभव किया तथा पुष्पपुर पर अधिकार किया। नागसेन नामक जिस राजा का वर्णन यहाँ आया है, विद्वानों के अनुसार वह सम्भवतः पद्मावती के नाग वंश से सम्बन्धित था।

इलाहाबाद प्रशस्ति में इसके पश्चात् समुद्रगुप्त के दक्षिणापथ विजय का वर्णन है। वर्णन के अनुसार उसने कोशल (अर्थात् दक्षिण कोसल) के राजा महेन्द्र को, महाकान्तार (आधुनिक वस्तर तथा सिहावा के जंगली प्रदेश) के राजा व्याघ्रराज को, केरल के राजा मण्टराज को, पिष्टपुर के राजा महेन्द्रगिरि को, कोट्टुर के राजा स्वामिदत्त को, एरण्डपल्ल के राजा दमन को, काँची के राजा विष्णुगोप को, अवमुक्त के राजा नीलराज को, वेंगी के राजा हस्तिवर्मन को, पालक्क के राजा उग्रसेन को, देवराष्ट्र के राजा कुबेर को तथा कुस्थल के राजा धनंजय को पराजित कर सिंहासनच्युत कर दिया। परन्तु इन राज्यों को अपने राज्य में सम्मिलित करने के बजाय सम्बन्धित राजाओं को लौटा दिया तथा अपनी छत्रछाया में राज्य करने की आज्ञा दी। इस वर्णन से स्पष्ट है कि अपने दक्षिणी अभियान में समुद्रगुप्त मध्यप्रदेश के पूर्वी और दक्षिणी भाग से होता हुआ उड़ीसा में पहुँचा और वहाँ से पूर्वी तट होता हुआ पल्लव राज्य की राजधानी काँची तक चला गया।

इस वर्णन के पश्चात् इलाहाबाद प्रशस्ति में आर्यावर्त के उन नौ राजाओं का उल्लेख है जिन्हें बलात् उखाड़ फेंका गया था तथा उनके राज्यों को गुप्त साम्राज्य में मिला लिया गया था। ये नौ राजा थे, रुद्रदेव, मतिल, नागदत्त, चन्द्रवर्मन, गणपतिनाग, नागसेन, अच्युत, नन्दि तथा बलवर्मन। इन में से गणपतिनाग तथा नागसेन मध्यभारत के नागवंश से सम्बन्धित थे। शेष राजाओं और उनके राज्यों की पहचान के विषय में विद्वानों में गहरा मत-भेद है।

इलाहाबाद प्रशस्ति में इसके पश्चात् पाँच सीमावर्ती राज्यों का संकेत मिलता है जो कर दिया करते थे और उसके अनुशासन के अनुसार स्वयं भेंट इत्यादि लेकर समुद्रगुप्त की सेवा में उपस्थित होते थे। ये राज्य थे—समतट, डवाक, कामरूप, नेपाल तथा कर्तृपुर। इस

विजेता ने भारत के पूरब, उत्तर और दक्षिण के प्रान्तों को जीतकर पश्चिमी प्रान्तों में स्वतंत्र रूप से शासन करने वाले गण-राजाओं पर भी अपनी नजर उठाई थी। इसके प्रबल पराक्रम से सीमावर्ती राजाओं की भाँति ये गणराजे भी उपहार लेकर राजसभा में उपस्थित हुए थे तथा अधीनता स्वीकार की थी। ये नौ गणराज्य थे—मालव, अर्जुनायन, यौधेय, मद्रक, आभीर, प्रार्जुन, सनकानीक, काक और खरपरिक। इनमें से कुछ गणराज्य मध्यप्रदेश से सम्बन्धित थे। आभीर मुख्यत: पश्चिम राजस्थान और महाराष्ट्र में बसे थे। किन्तु उनकी एक बस्ती मध्यप्रदेश में भी थी जिसे उनके नाम पर आज भी अहीरवारा कहा जाता है। यह स्थान विदिशा और झांसी के बीच में है। यही स्थान सम्भवत: वह प्रदेश है जिसका प्रयाग प्रशस्ति में उल्लेख है। इसी प्रकार सनकानीक विदिशा के पास-पड़ोस में ही कहीं बसे होंगे। सनकानिक जाति के एक सामन्त शासक ने चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन-काल में विदिशा के निकट स्थित उदयगिरि पहाड़ी के वैष्णव गुहा मन्दिर में एक दान-लेख अंकित कराया था जो आज भी उपलब्ध है। विदिशा से २० मील उत्तर की ओर काकपुर नामक एक गाँव है। इतिहासज्ञों ने इसे काकों की राजधानी से समीकरण किया है। इसी प्रकार खरपरिकों को मध्यप्रदेश के दमोह जिले में रखा गया है।

अन्त में प्रयाग प्रशस्ति में उन तीन विदेशी राजाओं का उल्लेख किया गया है जिन्होंने आत्म निवेदन, उपहार में कन्या की भेंट आदि देकर समुद्रगुप्त से मित्रता कर ली थी तथा उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। ये तीन नरेश थे—कुषाण वंशज, दैवपुत्रशाहिशाहानुशाहि, शक-मुरुण्ड और सिंहल। इनमें से शक-मुरुण्ड सम्भवत: पश्चिमी क्षत्रप के मालवा शाखा को अथवा मालवा में बसे उसके किसी गौण शाखा की ओर संकेत करती है।

एरण से प्राप्त एक अन्य अभिलेख[१] से एरण क्षेत्र समुद्रगुप्त के साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण केन्द्र प्रतीत होता है। इस खण्डित अभिलेख में ऐरिकिण प्रदेश में स्थित इस नगर को 'स्वभोग-नगर' के नाम से पुकारा गया है, जहाँ सम्भवत: समुद्रगुप्त अपनी वृद्धावस्था में अपनी रानी, पुत्र तथा पौत्रों के सहित विश्राम करने आया था। एरण के प्राकृतिक सौदर्य ने अवश्य ही समुद्रगुप्त को आकर्षित किया होगा, अत: उसने इसे अपना विश्राम-स्थल बनाया होगा।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि समुद्रगुप्त ने अपने दिग्विजयों द्वारा मध्यप्रदेश के एक बड़े भाग पर आधिपत्य स्थापित कर गुप्त सामाज्य के अन्तर्गत कर लिया था। बमनाला[२] तथा सकौर[३] से प्राप्त समुद्रगुप्त के सिक्कों से इस तथ्य का और भी पुष्टिकरण हो जाता है।

गुप्त इतिहास में इस काल से सम्बन्धित 'काच' नामक शासक के कुछ सिक्के मिले हैं।

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६५७-अ
२. वही, क्रमांक २३५०
३. वही, क्रमांक २३५६

मध्यप्रदेश में ये सिक्के विदिशा तथा सकौर से प्राप्त हुए हैं।[१] 'काच' कौन था, इतिहासज्ञों में इस पर गहरा मतभेद है। कुछ इतिहासज्ञ इसे समुद्रगुप्त ही मानते हैं। अन्य इसे समुद्रगुप्त का भाई अथवा पुत्र मानते हैं। इस सम्बन्ध में अभी भी निश्चित मत उपलब्ध नहीं हैं।

गुप्त अभिलेखों के अनुसार समुद्रगुप्त का उत्तराधिकारी उसका पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय हुआ। कुछ वर्ष पूर्व तक इतिहासज्ञ गुप्त अभिलेखों के इस कथन को सर्वसम्मति से स्वीकार करते थे। परन्तु विशाखदत्त कृत देवीचन्द्रगुप्तम् नामक लुप्त नाटक के कुछ अंशों की उपलब्धि से तथा कुछ अन्य प्रामाणिक साक्ष्यों के आधार पर अब इतिहासज्ञ इस बात को मानने लगे हैं कि समुद्रगुप्त का उत्तराधिकारी रामगुप्त नामक राजा हुआ जो चन्द्रगुप्त द्वितीय का बड़ा भाई था। मध्यप्रदेश में रामगुप्त के ताँबे के सिक्के मुख्यतः एरण[२] तथा विदिशा[३] में मिले हैं। ये सिक्के सिंह तथा गरुड़ प्रकार के हैं, जिन पर गुप्त लिपि में रामगुप्त का नाम लिखा मिलता है। कुछ सिक्कों पर गुप्त शासन चिह्न गरुड़ध्वज भी बना मिलता है। हाल ही में विदिशा से प्राप्त तीन जैन तीर्थंकर प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों में[४] महाराजाधिराज उपाधि सहित रामगुप्त के नामोल्लेख से अब इतिहासज्ञों में यह विश्वास दृढ़ हो रहा है कि रामगुप्त गुप्त सम्राट ही था, विदिशा का कोई अन्य स्थानीय शासक नहीं, जैसा कि कुछ विद्वानों का मत था। वह चन्द्रगुप्त द्वितीय का बड़ा भाई था जिसके सम्बन्ध में अनेक साहित्यिक उल्लेख मिलते हैं। इन उल्लेखों के अनुसार शकों द्वारा पराजित होकर रामगुप्त ने अपनी पत्नी ध्रुवदेवी को एक राजा के हाथों में समर्पित करना स्वीकार कर लिया था, परन्तु उसके छोटे भाई चन्द्रगुप्त ने हस्तक्षेप कर गुप्त साम्राज्य की प्रतिष्ठा को बचा लिया। उसने केवल शक राजा की ही हत्या नहीं की, बल्कि अपने बड़े भाई को भी मार डालने में सफल हुआ। साम्राज्य का अधिकारी होकर उसने अपने बड़े भाई की विधवा पत्नी से विवाह कर लिया।

चन्द्रगुप्त द्वितीय ३६६-६७ ई० के लगभग मगध के राजसिंहासन पर बैठा। अपने पिता की तरह वह भी पराक्रमी होने के कारण उसने कई अभियान किये। विदिशा क्षेत्र में किये गये उसके एक अभियान का पता विदिशा के निकट स्थित उदयगिरि पहाड़ी में एक गुफा में उत्कीर्ण उसके सन्धि-विग्रहीक (युद्ध तथा शान्ति के मन्त्री) वीरसेन के अभिलेख[५] से चलता है। इस अभिलेख में कहा गया है कि यह मन्त्री पाटलिपुत्र का रहने वाला था और वह अपने स्वामी के साथ, जब की वह सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतने की धुन में व्यस्त था, यहाँ आया था। इससे स्पष्ट है कि द्वितीय चन्द्रगुप्त ने अपने साम्राज्य के दक्षिण-पश्चिमीय भाग की ओर सैनिक अभियान किया था। चन्द्रगुप्त द्वारा प्राप्त सफलता अप्रत्यक्ष रूप से सिक्कों द्वारा प्रमाणित होती है।

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २३५५-अ, २३५६
२. वही, क्रमांक २३४४
३. वही, क्रमांक २३५३, २३५५
४. वही, क्रमांक ६६८-अ
५. वही, क्रमांक ६५६-ई

यह एक अर्थपूर्ण तथ्य है कि पश्चिमी क्षत्रपों के तीन सौ वर्ष से अधिक से चले आ रहे प्रायः अभग्न राज्य के समर्थक सिक्कों की लम्बी शृंखला ३८७-८८ ई० के बीच आकर समाप्त हो जाती है और उसका स्थान उसी भाँति के चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा प्रचलित सिक्के ले लेते हैं। इससे निःसन्देह यह कहा जा सकता है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय ने पश्चिमी क्षत्रपों की शक्ति को समाप्त किया और उनके प्रदेशों पर अधिकार जमा लिया। निःसन्देह यह उसके सैनिक अभियान का ही मुख्य फल था जो उसने 'पृथ्वी विजय' के लिये किया था, जैसा कि उसका मन्त्री वर्णन करता है।

वीरसेन के उपरोक्त अभिलेख के अतिरिक्त उदयगिरि गुफा में चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल का गुप्त संवत् ८२ (४०१-२ ई०) का एक अभिलेख उपलब्ध हुआ है,[1] जिसमें चन्द्रगुप्त के एक सामन्त किसी सनकानिक महाराज के द्वारा दान दिये जाने का उल्लेख है। उदयगिरि के अमृत गुफा के एक अन्य अभिलेख में, जो बहुत बाद का वि० सं० १०९३ का है,[2] चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का नाम आया है। मूलतः चन्द्रगुप्त द्वारा निर्मित किसी विष्णु मन्दिर के पुनः निर्माण का कार्य बाद में किया गया था, ऐसा इस अभिलेख का अभिप्राय है। विदिशा के निकट साँची के स्तूप से प्राप्त एक अन्य अभिलेख में, जो गुप्त संवत् ९३ (४१२-१३ ई०) का है,[3] आम्रकार्दव द्वारा काकनादबोट (अर्थात् साँची) के महाविहार के आर्यसंघ को दो दान देने का उल्लेख है। आम्रकार्दव चन्द्रगुप्त द्वितीय का एक कर्मचारी था जिसने 'अनेक युद्धों में कीर्ति तथा विजयध्वज उपलब्ध किये थे।'

पूर्वी मालवा के एक ही क्षेत्र में चन्द्रगुप्त द्वितीय के एक मन्त्री, एक सामन्त तथा एक सैनिक अधिकारी की उपस्थिति इस क्षेत्र में चन्द्रगुप्त की दीर्घकालीन अभियान की ओर संकेत करता है। इस अभियान से जो चतुर्थ शती के अंतिम दशक तथा पंचम शती के प्रथम शतक में घटित हुई होगी, गुप्त सम्राट ने न केवल विदेशियों को, जो मालवा पर एक लम्बे समय से शासन करते आ रहे थे, खदेड़ दिया, बल्कि काठियावाड़, और उत्तर गुजरात के समृद्ध प्रान्तों को भी अपने साम्राज्य में मिला लिया जो अब बंगाल की खाड़ी से पश्चिम समुद्र तक विस्तृत हो गया। तत्पश्चात् उसने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की जो शक्तिशाली शासक होने का द्योतक था। यह असम्भव नहीं कि रामगुप्त सम्बन्धी उपरोक्त साहित्यिक सन्दर्भों में चन्द्रगुप्त के शक राजा के विरुद्ध जो विजय का वर्णन है, उसमें चन्द्रगुप्त के इस महान विजय की प्रतिध्वनि समाविष्ट हो।

मालवा क्षेत्र के अतिरिक्त मध्यप्रदेश के अन्य भागों पर चन्द्रगुप्त द्वितीय के साम्राज्य

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६५६-अ

२. वही, क्रमांक ६५६-इ

३. वही, क्रमांक ६७१-अ

५

के विस्तार का पता उसके सिक्कों की प्राप्ति से होता है जो पट्टन,[1] बमनाला[2], सकौर[3], सिवनी[4] सिहोरा[5] तथा हरदा[6] में मिले हैं।

चन्द्रगुप्त द्वितीय का उत्तराधिकारी कुमारगुप्त प्रथम ४१५ ई० के लगभग मगध के राजसिंहासन पर बैठा और ४० वर्ष से भी अधिक समय तक राज्य करता रहा। उसने अपने पिता से उत्तराधिकार में प्राप्त विशाल साम्राज्य को अक्षुण्य बनाये रखा। अभिलेखों ने उसके कुछ राज्यपालों और सामन्तों के नाम सुरक्षित रखे हैं जो मालवा क्षेत्र में थे। गुना जिले के तुमेन नामक स्थान से प्राप्त गुप्त संवत् ११६ के शिलालेख[7] में कुमारगुप्त प्रथम के शासन काल में तुम्बवन के शासक घटोत्कचगुप्त का उल्लेख आया है। इसी प्रकार मन्दसौर से प्राप्त[8] मालव संवत् ४९३ के अभिलेख में कुमारगुप्त प्रथम के शासन काल में उसके एक सामन्त सेनापति बन्धुवर्मा के दशपुर (मन्दसौर) में शासन करने का उल्लेख आया है। बन्धुवर्मा विश्ववर्मा का पुत्र था। विश्ववर्मा के पिता का नाम नरवर्मा था तथा पितामह का नाम सिंहवर्मा जो जयवर्मा का पुत्र था। नरवर्मा सम्भवतः चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के अन्तर्गत सामन्त था। नरवर्मा के मालव संवत् ४६१ तथा ४७६ के दो अभिलेख मन्दसौर से प्राप्त हुये हैं।[9] इन अभिलेखों से गुप्त काल के शासन-तंत्र पर प्रकाश पड़ता है। उदयगिरि से प्राप्त गुप्त संवत् १०६ के जैन गुफा-लेख में कुमारगुप्त के शासन काल में शंकर नामक किसी व्यक्ति द्वारा पार्श्वनाथ की मूर्ति की प्रतिष्ठा का उल्लेख आया है।[10] मध्यप्रदेश में कुमारगुप्त के कुछ सिक्के भी मिले हैं, जिनसे इस क्षेत्र पर कुमारगुप्त के साम्राज्य के विस्तार का पता चलता है। ये सिक्के पूर्व निमाड़ जिले में स्थित बमनाला नामक स्थान से प्राप्त हुए हैं।[11]

कुमारगुप्त के शासन के अन्तिम चरण में राज्य पर कोई गम्भीर विपत्ति आयी जिसे स्कन्दगुप्त ने दूर किया। स्कन्दगुप्त कुमारगुप्त प्रथम का उत्तराधिकारी था। इतिहासज्ञों द्वारा उसका राज्यकाल ४५५ ई० से ४६७ ई० के बीच निश्चित किया गया है। उसे अपने शासन काल में म्लेच्छों (सम्भवतः हूणों) से युद्ध करना पड़ा जिन्हें उसने पूर्णतया पराजित किया।

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २३४८
२. वही, क्रमांक २३५०
३. वही, क्रमांक २३५६
४. वही, क्रमांक २३६०
५. वही, क्रमांक २३६१
६. वही, क्रमांक २३६२
७. वही, क्रमांक ६५९
८. वही, क्रमांक ६६६-इ
९. वही, क्रमांक ६६६-अ, आ। इस वंश से सम्बन्धित विस्तृत विवरण के लिये बाद में लिखे—औलिकर वंश का वर्णन देखिये।
१०. वही, क्रमांक ६५६-आ
११. वही, क्रमांक २३५०

स्कन्दगुप्त ने अपने राज्यकाल में भिन्न-भिन्न प्रान्तों में शासक नियुक्त किये जिनमें से कुछ का सीधा सम्बन्ध मध्यप्रदेश के इतिहास से है। मन्दसौर से प्राप्त मालव संवत् ५२४ (४६७-६८ ई०) के एक अभिलेख[1] में राजा प्रभाकर की सेनाओं के सेनापति दत्तभट्ट द्वारा कुछ शिल्प-रचनाओं का उल्लेख किया गया है। अभिलेख चन्द्रगुप्त और उसके पुत्र गोविन्दगुप्त का उल्लेख करता है तथा बतलाता है कि दत्तभट्ट का पिता वायुरक्षित गोविन्दगुप्त का सेनापति (सेनाधिप) था। परन्तु क्योंकि अभिलेख की तिथि उसे स्कन्दगुप्त के राज्यकाल के अन्तर्गत या शीघ्र पश्चात् स्थापित करती है, जिससे प्रभाकर उसका राज्यपाल प्रमाणित होता है, अतः इससे कई विवादास्पद समस्यायें खड़ी हो उठती हैं। इतिहासज्ञों में इस विषय में अभी भी गहरा मतभेद है। रीवा जिले के सुपिया नामक स्थान से प्राप्त स्कन्दगुप्त के शासन काल के गुप्त संवत् १४१ के स्मारक स्तम्भ-लेख[2] से स्कन्दगुप्त के विन्ध्यप्रदेश क्षेत्र पर प्रभाव का पता चलता है। स्कन्दगुप्त के कुछ सोने के सिक्के दमोह जिले के सकौर नामक स्थान से प्राप्त हुए हैं।[3] ये सिक्के उसके महाकोशल क्षेत्र पर प्रभाव के द्योतक हैं।

स्कन्दगुप्त ने अपने राज्यकाल में हुए विदेशी आक्रमण तथा अन्य झगड़ों के बावजूद अन्त तक विशाल गुप्त साम्राज्य पर अधिकार बनाये रखा। जब ४६७ ई० के लगभग उसकी मृत्यु हुई तो किसी को यह स्वप्न में भी नहीं आया था कि इतना शक्तिशाली साम्राज्य आने वाली पीढ़ियों के सामने आँखों देखते ही शीर्ण हो जायेगा।

ऐतिहासिक संकलन की वर्तमान परिस्थिति में स्कन्दगुप्त की मृत्यु के पश्चात् गुप्त सम्राटों के इतिहास की एक निश्चित रूपरेखा दे सकना असम्भव है। गहरे मतभेदों के बावजूद इतिहासज्ञों द्वारा जो अस्थायी पुनर्निर्माण उपस्थित किया गया है, उसके अनुसार स्कन्दगुप्त के पश्चात् क्रमशः पुरुगुप्त, बुधगुप्त, नरसिंहगुप्त, कुमारगुप्त (द्वितीय अथवा तृतीय) तथा अंतिम नरेश विष्णुगुप्त हुए। इनके अतिरिक्त अनेक नेरेशों के नाम ज्ञात हैं जिन्हें उत्तराधिकार के क्रम में निश्चित करना कठिन है। यह काल गुप्त साम्राज्य के अवनति का काल था। जब एक ओर उत्तराधिकारियों में सत्ता प्राप्ति के लिये संघर्ष चल रहा था, तो दूसरी ओर परिस्थिति का लाभ उठाकर सामन्त वर्ग क्रमशः स्वतन्त्र होते चले जा रहे थे। बुधगुप्त के शासन काल में मध्यप्रदेश में बुन्देलखण्ड के परिव्राजक महाराज तथा निकटवर्ती उच्चकल्प नरेश, कालिंजर तथा दक्षिण कोसल के पाण्डुवंशी नरेश, रीवा का लक्ष्मण तथा माहिष्मती का सुबन्धु जो सभी मूलतः गुप्त शासकों के अधीन सामन्त थे अपने अभिलेखों में गुप्त साम्राज्य की अधीनता का कोई भी उल्लेख नहीं करते। इससे उनकी स्वतन्त्रता का प्रमाण मिलता है। परन्तु अभी तक फिर भी ऊपरी तौर पर गुप्त साम्राज्य का ढाँचा बना हुआ था, जैसा कि एरण से प्राप्त बुधगुप्त के शासन काल के गुप्त संवत् १६५ के महाराज मातृविष्णु तथा धन्यविष्णु के स्तम्भ-लेख[4] से

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६६६-ई
२. वही, क्रमांक ६६६
३. वही, क्रमांक २३५६
४. वही, क्रमांक ६५७-आ

पता चलता है। परन्तु शीघ्र ही इस ढाँचे का अस्तित्व भी समाप्त हो गया जैसा कि हम एरण से ही प्राप्त स्वतन्त्र शासक भानुगुप्त के गुप्त संवत् १९१ के अभिलेख से जान सकते हैं।[1] इस अभिलेख के अनुसार भानुगुप्त का अधिकारी गोपराज एरण में हुए किसी भयंकर युद्ध में मारा गया था। इतिहासज्ञों के अनुसार यह युद्ध हूण नरेश तोरमाण के विरुद्ध लड़ा गया था, जिसने आक्रमण कर अन्ततः इस प्रदेश को जीत लिया।

एक ओर हूणों का विदेशी आक्रमण हुआ तो दूसरी ओर मालवा के यशोधर्मन् जैसे शासक विद्रोह घोषित कर स्वतन्त्र हो गये। गुप्त साम्राज्य के अन्तिम नरेश इन विकट परिस्थितियों का मुकाबला नहीं कर सके जिसके फलस्वरूप लगभग छठीं शताब्दी के मध्य में गुप्त वंश की प्रभुता का केवल कलिंग को छोड़ भारत के अन्य भाग में लोप हो गया।

वाकाटक राजवंश

वाकाटक राजवंश के मूलस्थान के सम्बन्ध में इतिहासज्ञों में मतभेद है। कुछ इतिहासज्ञ इन्हें उत्तर भारत के निवासी मानते हैं, अन्य दक्षिण भारत के। इस वंश का सर्वप्रथम राजा विन्ध्यशक्ति प्रथम था। विद्वानों ने उसका शासन काल २५० ई० से २७० ई० के बीच माना है। पुराणों के वर्णन के आधार पर कुछ विद्वानों का अनुमान है कि वह मूलतः विदिशा का निवासी था। परन्तु अन्य विद्वान् इस मत को स्वीकार नहीं करते। उसके राज्य विस्तार के सम्बन्ध में हमें कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है।

विन्ध्यशक्ति के अन्तन्तर उसका पुत्र प्रवरसेन प्रथम गद्दी पर बैठा। वह वाकाटक वंश का सर्वश्रेष्ठ राजा था। उसका शासन काल २७० ई० से ३३० ई० के बीच माना गया है। उसने अनेक दिशाओं में अपने साम्राज्य का विस्तार किया। उत्तर में नर्मदा तक अभियान कर उसने पुरिका नामक नगरी पर अधिकार किया। पुराणों के अनुसार पुरिका में उस समय विदिशा के नागराजा का दौहित्र शिशुक राज्य कर रहा था। प्रवरसेन ने उसे पदच्युत कर उस प्रदेश को अपने राज्य में मिला लिया तथा पुरिका को अपनी राजधानी बना ली। हरिवंश में कहा गया है कि यह नगरी ऋक्षवत् अथवा सतपुड़ा पर्वत की उपत्यका में स्थित थी। प्रवरसेन के अन्य अभियानों के विषय में कोई निश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं है। कुछ विद्वानों का यह मत कि प्रवरसेन ने मालवा के पश्चिमी क्षत्रपों का पराभव किया तथा नर्मदा के उत्तर में अभियान कर बघेलखण्ड पर अपनी सत्ता स्थापित की, सर्वमान्य नहीं है। प्रवरसेन ने अश्वमेध यज्ञ किया तथा अपनी शक्ति को सशक्त करने के उद्देश्य से पद्मावती के नागवंशी शासकों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया। पद्मावती के नागवंशी शासक भवनाग की कन्या का विवाह प्रवरसेन के ज्येष्ठ पुत्र गौतमीपुत्र के साथ हो गया। इस वैवाहिक सम्बन्ध के फलस्वरूप वाकाटकों को उत्तर भारत के शक्तिशाली नागराजाओं का संरक्षण प्राप्त हो गया।

प्रवरसेन के निधन के पश्चात् उसका विस्तृत साम्राज्य सम्भवतः उसके चार पुत्रों के बीच बँट गया। ज्येष्ठ पुत्र गौतमीपुत्र की मृत्यु इसके पूर्व ही हो जाने के कारण

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६५७—इ

उसका पुत्र रुद्रसेन प्रथम गद्दी पर बैठा। पुरिका अथवा नन्दिवर्धन (नागपुर के निकट स्थित आधुनिक नगरधन) से राज्य करते हुए उसने वाकाटक वंश के ज्येष्ठ शाखा की स्थापना की। दूसरे पुत्र सर्वसेन ने वत्सगुल्म (आधुनिक बाशीम, अलोका जिला) में अपनी राजधानी स्थापित कर वाकाटक वंश के वत्सगुल्म शाखा की स्थापना की। अन्तिम दो पुत्र कहाँ राज्य करते थे इस सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ भी ज्ञात नहीं। विद्वानों के अनुसार सम्भवत: उनमें से एक ने कृष्णा नदी की घाटी में उत्तर कुन्तल पर राज्य किया और दूसरे ने दक्षिण कोसल (आधुनिक छत्तीसगढ़) पर अपनी सत्ता स्थापित की।

इतिहासज्ञ रुद्रसेन प्रथम का काल ३३० ई० से ३५० ई० के बीच मानते हैं। इसके वंशजों के सभी लेखों में इसे 'भारशिव महाराज भवनाग का दौहित्र' कहा गया है जिससे प्रतीत होता है कि उसे पद्मावती के नागवंशी राजा का प्रबल समर्थन प्राप्त था। रुद्रसेन गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त का समकालीन था। समुद्रगुप्त जब दक्षिणापथ के राजाओं पर आक्रमण करने के उद्देश्य से दक्षिण कोसल तथा महाकान्तार जीतते हुए आगे बढ़ा, उस समय रुद्रसेन ने उसकी कुछ सहायता की अथवा नहीं यह ज्ञात नहीं है। परन्तु उसे समुद्रगुप्त की प्रभुता को स्वीकार करना पड़ा तथा महाकान्तार के व्याघ्रराज तथा दक्षिणापथ के अन्य राजाओं पर अभियान करने के लिये अपने राज्य से होकर मार्ग देना पड़ा। समुद्रगुप्त की इस विजय से वाकाटकों की शक्ति को बड़ा धक्का लगा। महाकान्तार (वर्तमान बस्तर जिला) का व्याघ्रराज, केरल का मण्टराज और पिष्ठपुर का महेन्द्रगिरि जैसे राजाओं ने वाकाटकों की प्रभुता को छोड़कर गुप्त राजाओं का स्वामित्व स्वीकार किया। इसके परिणामस्वरूप वाकाटकों की ज्येष्ठ शाखा का राज्य नर्मदा नदी तथा इन्ध्रादि पर्वतमाला के बीच सीमित हो गया।

रुद्रसेन प्रथम का उत्तराधिकारी पृथ्वीषेण प्रथम ३५० ई० के लगभग सिंहासन पर बैठा तथा लगभग ४०० ई० तक राज्य करता रहा। नचना तथा गंज से वाकाटक महाराजा पृथ्वीषेण के माण्डलिक व्याघ्रदेव के दो शिलालेख प्राप्त हुए हैं। कुछ विद्वान् इस पृथ्वीषेण को पृथ्वीषेण प्रथम मानते हैं परन्तु अधिकांश विद्वान् इसका समीकरण पृथ्वीषेण द्वितीय के साथ करते हैं। उसके राज्यकाल में वाकाटक तथा गुप्त वंश में वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हुआ। समकालीन गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी कन्या प्रभावतीगुप्ता का विवाह पृथ्वीषेण के पुत्र रुद्रसेन से कर दिया। वाकाटक तथा गुप्तों की मैत्री को चिरस्थायी रूप देने के राजनैतिक उद्देश्य से यह वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया गया था।

पृथ्वीषेण प्रथम के पश्चात उसका पुत्र रुद्रसेन द्वितीय राज्य करने लगा। उसका शासन काल ४०० ई० से ४०५ ई० तक केवल ५ वर्ष तक रहा। ४०५ ई० के लगभग उसका देहावसान हो गया। इस समय उसके दोनों पुत्र—दिवाकरसेन और दामोदरसेन अल्पवयस्क थे अत: उसकी विधवा पत्नी प्रभावतीगुप्ता दिवाकरसेन के नाम पर स्वयं राज-कार्य देखने लगी। दुर्भाग्यवश दिवाकरसेन भी अल्पायु हुआ और ४२० ई० के लगभग उसकी भी मृत्यु हो गयी।

दिवाकरसेन के पश्चात् उसका छोटा भाई दामोदरसेन गद्दी पर बैठा। डा० मिराशी के अनुसार राज्यारोहण के अवसर पर उसने अपने सुप्रसिद्ध पूर्वज प्रवरसेन का नाम धारण किया

तथा प्रवरसेन द्वितीय कहलाया। उसके बारह-तेरह दानपत्र अभी तक उपलब्ध हो चुके हैं, जिनमें से सात के लगभग मध्यप्रदेश के सीमा में—छिन्दवाड़ा, सिवनी, बैतूल, बालाघाट तथा दुर्ग जिले में प्राप्त हुए हैं। सिवनी से प्राप्त ताम्रपत्र[1] उसके राज्यकाल के १८वें वर्ष में प्रचलित किया गया था। छिन्दवाड़ा जिले में स्थित दुडिया[2] तथा बालाघाट जिले में स्थित तिरोड़ी[3] से प्राप्त और इन्दौर में उपलब्ध[4] ताम्रपत्र उसके राज्यकाल के २३वीं वर्ष में प्रचलित किये गये थे। बैतूल जिले में पट्टण नामक स्थान से उसके राज्यकाल के २७वें वर्ष का ताम्रपत्र मिला है।[5] इसी प्रकार छिन्दवाड़ा जिले के पण्डुर्णा से उसके राज्यकाल के २९वें वर्ष का ताम्रपत्र प्राप्त हुआ है।[6] बालाघाट से उसके शासनकाल का तिथि रहित एक अन्य ताम्रपत्र भी मिला है।[7] इन दानपत्रों में दिये गए ग्राम-दानों से यह स्पष्ट है कि सम्बन्धित क्षेत्र उसके राज्य के अन्तर्गत थे।

प्रवरसेन द्वितीय अपने राज्यकाल के ग्यारहवें वर्ष तक प्राचीन राजधानी नन्दिवर्धन से ही राज्य करता रहा। इसके अनन्तर उसने अपने नाम से प्रवरपुर नामक नगर बसाया तथा उसे अपनी नवीन राजधानी बनाया। इतिहासज्ञ वर्धा के निकट स्थित आधुनिक पवनार को ही प्राचीन प्रवरपुर मानते हैं। उसका शासन काल लगभग तीस वर्ष (४२० ई० से ४५० ई० तक) का था।

प्रवरसेन द्वितीय का उत्तराधिकारी उसका पुत्र नरेन्द्रसेन ४५० के लगभग गद्दी पर बैठा। अभी तक उसका एक भी लेख नहीं मिला। तथापि उसका उल्लेख बालाघाट से प्राप्त उसके पुत्र पृथ्वीषेण द्वितीय के ताम्रपत्र में आया है। उसके माण्डलिक मेकलदेशाधिपति भरतबल ने भी उसका उल्लेख किया है। पृथ्वीषेण द्वितीय के बालाघाट ताम्रपत्र के अनुसार नरेन्द्रसेन ने शत्रुओं का पराभव किया तथा कोसला (अर्थात् दक्षिण कोसल), मेकला (मेकल) तथा मालव देश के अधिपति उसकी आज्ञा को मानते थे। दक्षिण कोसल तथा मेकल पर नरेन्द्रसेन को अपनी प्रभुता-विस्तार का अवसर अवश्य ही मिल गया होगा, क्योंकि इस क्षेत्र पर इस काल में गुप्तों की सत्ता निर्बल होने लगी थी। मालवा में उसे कहाँ तक सफलता मिली होगी यह कहना कठिन है।

नरेन्द्रसेन का राज्यकाल ४७० ई० के लगभग समाप्त हुआ। परन्तु इसके पूर्व ही उसके राज्य पर एक संकट आया। बस्तर क्षेत्र में राज्य करते हुए नलवंशी भवदत्तवर्मा ने वाका-

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६८२
२. वही, क्रमांक ६७७
३. वही, क्रमांक ६७५
४. वही, क्रमांक ६७३
५. वही, क्रमांक ६८०
६. वही, क्रमांक ६७९
७. वही, क्रमांक ६८१-आ

टकों के राज्य पर आक्रमण कर एक बड़े भाग पर अधिकार कर लिया। उसका एक ताम्रपत्र महाराष्ट्र के अमरावती जिले के ऋद्धपुर नामक स्थान पर मिला है जिसमें भवदत्तवर्मा द्वारा आधुनिक यवतमाल जिले के कदंबगिरि ग्राम को दान में देने का उल्लेख है। इस ताम्रपत्र को वाकाटकों की प्राचीन राजधानी नन्दिवर्धन से प्रचलित किया गया जिससे स्पष्ट है कि वाकाटकों की राजधानी सहित भवदत्तवर्मा ने उनके राज्य के अन्तर्गत प्रदेश के एक बड़े भाग को जीत लिया। स्वयं वाकाटक भी इस बात को मानते हैं कि इस काल में उन बुरे दिन आ गये थे। नरेन्द्रसेन के उत्तराधिकारी पृथ्वीषेण द्वितीय के बालाघाट ताम्रपत्र में उसे 'निमग्न वंश का उद्धर्ता' कहा गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस कठिन समय में नरेन्द्रसेन ने अपनी राजधानी प्रवरपुर से हटाकर आधुनिक भंडारा जिले में स्थित आमगाँव के निकट पद्मपुर नगरी ले गया! इसी पद्मपुर से प्रचलित एक अपूर्ण ताम्रपत्र दुर्ग जिले में प्राप्त हुआ है।[१]

नरेन्द्रसेन का उत्तराधिकारी पृथ्वीषेण द्वितीय ४७० ई० के लगभग गद्दी पर बैठा। पद्मपुर में रहकर उसने अपनी शक्ति को बढ़ाया। बालाघाट से उसका एक अपूर्ण ताम्रपत्र मिला है जिसमें उसके द्वारा वाकाटक वंश को अवनत दशा से उत्कर्षपूर्ण स्थिति में लाने का उल्लेख किया गया है। शक्ति अर्जन कर उसने नलवंशी राजाओं को न केवल विदर्भ से बाहर किया बल्कि उनके राज्य पर आक्रमण कर उनकी राजधानी पुष्करी तक पहुँच कर उसे उद्ध्वस्त कर दिया। पोड़ागढ़ से प्राप्त स्कन्दवर्मा के शिलालेख में शत्रु द्वारा पुष्करी के उद्ध्वस्त किये जाने का उल्लेख है। यह शत्रु पृथ्वीषेण द्वितीय ही रहा होगा। इन विजयों के पश्चात् वह अपनी राजधानी पुनः प्रवरपुर ले गया अथवा नहीं, यह कहना कठिन है।

पृथ्वीषेण द्वितीय ने उत्तर में भी अपनी सत्ता दृढ़ की तथा मेकल के उत्तर में चेदि देश पर्यन्त अपने साम्राज्य का विस्तार किया। उसके माण्डलिक व्याघ्रदेव के दो शिलालेख नचना[३] तथा गंज[४] से प्राप्त हुए हैं। यह व्याघ्रदेव यथासंभव उच्चकल्प-वंशी था जिसके पुत्र जयनाथ ने गुप्त संवत् १७० से १९० (४९० से ५१० ई०) तक राज्य किया। अतः उसके पिता व्याघ्रदेव का काल ४९० के पूर्व प्रतीत होता है जिससे वह पृथ्वीषेण द्वितीय का समकालीन प्रमाणित हो जाता है। पाण्डववंशी राजाओं की तरह उच्चकल्प राजा भी गुप्त सम्राटों के माण्डलिक थे, परन्तु पाँचवी शताब्दी के अन्त में गुप्तों की सत्ता निर्बल होने पर सम्भवतः उन्होंने वाकाटकों की सत्ता स्वीकार कर ली।

पृथ्वीषेण द्वितीय के शासन का अन्त ४९० ई० के लगभग हुआ होगा। इसके पश्चात् वाकाटकों के इस शाखा का राज्य वत्सगुल्म शाखा के राजा हरिषेण के साम्राज्य में विलीन

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६७६
२. वही, क्रमांक ६८१-अ
३. वही, क्रमांक ६७८
४. वही, क्रमांक ६७४

हो गया। इस प्रकार लगभग १६० वर्ष शासन के पश्चात् वाकाटकों की इस शाखा का अन्त हो गया।

वत्सगुल्म शाखा के हरिषेण का शासन काल ४७५ ई० से ५०० ई० के बीच माना गया है। वह शूर और महत्वाकांक्षी था और उसने अपने राज्य की समस्त दिशाओं में विजय प्राप्त की। अजन्ता गुफा में प्राप्त उसके लेख में उसके द्वारा विजित अथवा कर देने के लिए बाध्य किये गये जिन राजाओं का उल्लेख है, उनमें अवन्ति (मालवा) तथा कोसला (दक्षिण कोसल) का भी नाम आया है। कहाँ तक ये प्रदेश उसके राज्य के अन्तर्गत आ सके अथवा आने के पश्चात् रह सके, यह कहना कठिन है।

हरिषेण वत्सगुल्म शाखा का अन्तिम ज्ञात राजा है। सम्भवतः उसके पश्चात् एक-दो राजा और हुए, परन्तु इस समय उनके सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात नहीं। प्रतीत होता है कि ५५० ई० के लगभग वाकाटक राजवंश का अन्त हो गया और विदर्भ पर माहिष्मती के कलचुरियों की सत्ता स्थापित हो गयी।

हूण आक्रमण

हूण यायावर जंगलियों का एक गिरोह था और चीन के आस-पास उनका आदि निवास-स्थान था। मूलतः इनकी दो शाखायें थीं जिनमें से एक शाखा ने आक्सस नदी पार कर ईरान तथा इसके पश्चात् भारत पर आक्रमण किया। हूणों का भारत पर पहला आक्रमण गुप्त सम्राटों के राज्यकाल में हुआ जब स्कन्दगुप्त ने उन्हें ४६० ई० के लगभग करारी हार दी और उनके उत्पातों से अपने साम्राज्य की रक्षा की। हूणों का दूसरा आक्रमण पाँचवीं शताब्दी के अन्त अथवा छटी शताब्दी के प्रारम्भ में हुआ। उनका नेता तोरमाण पंजाब तथा पश्चिमी भारत को जीतता हुआ मध्यप्रदेश के सागर जिले तक पहुँच गया। सागर जिले में स्थित एरण में उपलब्ध एक विशालकाय **वराह** मूर्ति पर तोरमाण के शासन काल के प्रथम वर्ष का अभिलेख उत्कीर्ण है।[1] इस अभिलेख में तोरमाण को 'महाराजाधिराज' उपाधि से विभूषित किया गया है। एरण के उत्खनन में भी तोरमाण के ताँबे के सिक्के मिले हैं।[2] इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि इस भाग पर तोरमाण का आधिपत्य स्थापित हो गया था। यह घटना गुप्त सम्राट बुधगुप्त के शासन काल के थोड़े पश्चात् ५१० ई० के लगभग हुई होगी, जैसा कि यहाँ से प्राप्त भानुगुप्त के गुप्त संवत् १९१ के अभिलेख से पता चलता है।[3] कुछ विद्वानों के विचार में तोरमाण हूण नहीं था वरन् कुषाण था जिसने हूणों से मैत्री करके उनका नेतृत्व ग्रहण कर लिया था। परन्तु अधिकांश विद्वान् तोरमाण को हूण शासक ही मानते हैं।

तोरमाण के पश्चात् उसका पुत्र मिहिरकुल ५१५ ई० के लगभग उसका उत्तराधिकारी बना। वह अपने पिता से भी अधिक निर्दयी और पैशाचिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था। उसका

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६८३
२. वही, क्रमांक २३६३
३. वही, क्रमांक ६५७-इ

राज्य काश्मीर से मालवा तक फैला हुआ था। उसकी राजधानी साकल अर्थात् सियालकोट थी। उसके राज्य के १५वें वर्ष (५३० ई०) का एक अभिलेख ग्वालियर दुर्ग से प्राप्त हुआ है जिसमें गोप-पर्वत पर सूर्यमंदिर के निर्माण का उल्लेख है।[1] परन्तु वह अधिक समय तक इतने बड़े साम्राज्य पर राज्य नहीं कर सका। मन्दसौर में औलिकरवंशी यशोधर्मन् नामक राजा का उदय हुआ और उसने मिहिरकुल को पराजित कर मालवा से खदेड़ दिया। मन्दसौर अभिलेख[2] में यशोधर्मन् की गर्वोक्ति है कि '(विख्यात) राजा मिहिरकुल भी उसके चरणों में सम्मानोपहार लाया'। वस्तुतः मिहिरकुल की पराजय हुई थी, परन्तु उसका राज्य व प्रभुत्व नष्ट नहीं हुआ था। यशोधर्मन् का पतन, जो संभवतः बहुत देर बाद नहीं हुआ, के साथ ही मिहिरकुल फिर से रंगमंच पर आ पहुँचा और गुप्त साम्राज्य की कमजोरियों का लाभ उठाकर गुप्त साम्राज्य के एक बड़े भाग पर अपना अधिकार जमाने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु समकालीन गुप्त सम्राट नरसिंहगुप्त बालादित्य द्वारा वह पराजित कर दिया गया और इस घटना के कुछ समय पश्चात् ही काश्मीर में उसकी मृत्यु हो गई।

मिहिरकुल के बाद हूणों का कोई योग्य नेता न हुआ। अतएव कुछ ही दिनों में हूणों का साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया।

दशपुर का औलिकर वंश

चौथी शताब्दी ई० के उत्तरार्ध में जब गुप्त साम्राज्य का विस्तार हो रहा था, प्राचीन दशपुर (आधुनिक मन्दसौर) में मालवों की एक शाखा औलिकरों ने अपना राज्य स्थापित किया। मन्दसौर और उसके आस-पास के क्षेत्र में कुछ अभिलेख प्राप्त हुए हैं जिनसे इस वंश के कुछ प्रतापी नरेशों का इस भूमि पर शासन करना ज्ञात होता है।

इस वंश का सर्वप्रथम शिलालेख मालव संवत् ४६१ का है जो नरवर्मन् के शासन काल का है।[3] इस अभिलेख में नरवर्मन् के पिता सिंहवर्मन् तथा पितामह जयवर्मन् का उल्लेख है। संभवतः समुद्रगुप्त के दिग्विजय के कारण जयवर्मन् तथा सिंहवर्मन् ने गुप्तों के राजवंश का लोहा मान लिया था, तथापि वे अपने आन्तरिक शासन-कार्य में स्वतन्त्र बने रहे। नरवर्मन् का एक और शिलालेख मन्दसौर के निकट मिला है जो मालव संवत् ४७६ का है।[4] नरवर्मन् का पुत्र विश्ववर्मन् था जिसका एक अभिलेख राजस्थान के गंगाधर नामक स्थान से प्राप्त हुआ है।[5] विश्ववर्मन् के पुत्र बन्धुवर्मन् का शिलालेख जिस पर मालव संवत् ४९३ तथा ५२९ उत्कीर्ण है, मन्दसौर से प्राप्त हुआ है।[6] इस वंश का यह प्रथम

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६८४
२. वही, क्रमांक ६८५
३. वही, क्रमांक ६६६-अ
४. वही, क्रमांक ६६६-आ
५. का० इ० इ० भाग ३, पृ० ७२
६. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६६६-इ

६

शिलालेख है, जिसमें गुप्त सम्राट की अधीनता स्पष्ट शब्दों में स्वीकार की गयी है। इसके पूर्व विश्ववर्मन् तथा नरवर्मन् के शिलालेख से यह कहीं नहीं ज्ञात होता कि वे गुप्त सम्राटों के अधीन हों। इन शिलालेखों में नरवर्मन् और विश्ववर्मन् का गुणगान स्वतन्त्र नरेशों की तरह किया गया है। यही नहीं, ये अभिलेख मालव संवत् में अंकित हैं, गुप्त संवत् में नहीं। ऐसा लगता है कि समकालीन गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय ने पश्चिमी मालवा तथा सौराष्ट्र के शकों के उन्मूलन में व्यस्त रहने के कारण इस वर्मन् राज्य के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया और इसलिये ये वर्मन् काफी हद तक स्वतन्त्र शासक बने रहे। बन्धुवर्मन् के शिलालेख से ज्ञात होता है कि वह गुप्त सम्राट कुमारगुप्त प्रथम के शासन काल में दशपुर का सामन्त शासक था। उसके शासन काल में उत्तरी मालवा ने सुख, शान्ति और समृद्धि के अपूर्व सुखद दिनों का उपभोग किया। बन्धुवर्मन् के शासन की शान्ति और समृद्धि से आकृष्ट हो लाट देश से बुनकरों की एक श्रेणी दशपुर आयी जिसे वन्धुवर्मन् ने संरक्षण प्रदान किया। इस श्रेणी की आज्ञा से दशपुर में मालव संवत् ४९३ में सूर्य के एक भव्य और अद्भुत मन्दिर का निर्माण किया गया। कालान्तर में दूसरे नृपतियों के शासन काल में मरम्मत न कराये जाने के कारण यह मन्दिर जीर्ण हो गया और अन्त में मालव संवत् ५२९ में उसी तन्तुवायों की श्रेणी ने इस मन्दिर का पुनरुद्धार किया। स्पष्ट है कि यह अभिलेख मालव संवत् ५२९ अथवा इसके ठीक बाद ही लिखा गया होगा। किन्तु वत्सभट्टी द्वारा रचित यह प्रशस्ति जिस ढंग से लिखी गयी है, उससे प्रशस्ति में उल्लिखित गुप्त सम्राट कुमारगुप्त का नाम काफी भ्रम पैदा करने वाला है। अभिलेखों के नियमानुसार प्रशस्ति का कुमारगुप्त वहीं गुप्त सम्राट होना चाहिये जो प्रशस्ति के लेखन के समय अर्थात् मालव संवत् ५२९ में शासन करता था। इस तरह नियमानुसार प्रशस्ति में उल्लिखित कुमारगुप्त गुप्त सम्राट कुमारगुप्त द्वितीय होना चाहिए। किन्तु अधिकांश इतिहासकारों के मतानुसार शिलालेख में उल्लिखित गुप्त सम्राट कुमारगुप्त प्रथम है। उनका यह निष्कर्ष तत्कालीन परिस्थिति के अध्ययन पर आधारित है।

स्कन्दगुप्त तथा परवर्ती गुप्त सम्राटों के समय में औलिकरवंशी इन वर्मन् नरेशों का क्या हुआ इस सम्बन्ध में हमें कुछ भी ज्ञात नहीं। इस बीच दशपुर में राज्य करते हुए राजा प्रभाकर तथा गोविन्दगुप्त, जिनका वर्णन मन्दसौर से प्राप्त मालव संवत् ५२४ के शिलालेख में आया है,[1] से वर्मन् वंश का क्या सम्बन्ध रहा, यह कुछ भी ज्ञात नहीं। इसी प्रकार ४९० ई० के लगभग दशपुर में राज्य करते हुए अज्ञात वंशी शासक महाराज गौरी, जिसका अभिलेख मन्दसौर से प्राप्त हुआ है,[2] से वर्मन् वंश का क्या सम्बन्ध था, यह ज्ञात नहीं। संभवतः दशपुर पर वर्मन् नरेशों का आधिपत्य थोड़े समय के लिए समाप्त हो गया।

मालव संवत् ५८९ (५३२-३३ ई०) में दशपुर पर यशोधर्मन् विष्णुवर्धन् नामक

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६६६-ई। देखिये गुप्त इतिहास से सम्बन्धित खण्ड।

२. वही, क्रमांक ६६६-ऊ। देखिये गुप्त इतिहास से सम्बन्धित खण्ड।

शासक के आधिपत्य का पता हमें मन्दसौर से प्राप्त उसके दो अभिलेखों से लगता है। इन अभिलेखों में तिथि रहित एक अभिलेख एक विजय-स्तम्भ पर उत्कीर्ण है तथा उसकी दोहरी प्रति दूसरे स्तम्भ पर खुदी है।[1] दूसरा अभिलेख जो मालव संवत् ५८९ का है, एक शिला पर उत्कीर्ण पाया गया है।[2] इन दोनों अभिलेखों से यशोधर्मन् के प्रारम्भिक जीवन का हमें कुछ भी पता नहीं लगता परन्तु क्योंकि यशोधर्मन् और पूर्ववर्ती वर्मन् नरेश नरवर्मन् दोनों ने अपने शिलालेखों में अपने को औलिकरवंशी तथा सूर्यवंशी इक्ष्वाकु का वंशज कहा है अतः इतिहासज्ञों का यह मत कि यशोधर्मन पूर्ववर्ती वर्मन् नरेशों का ही वंशज था तथा वर्मन् वंश की पुनः स्थापना का प्रयत्न करने वाला था, सत्य प्रतीत होता है।

यशोधर्मन् ने मन्दसौर शिलालेख में स्वतः को 'जनेन्द्र', 'नराधिपति', 'राजाधिराज', 'परमेश्वर', आदि उपाधियों से अलंकृत किया है। अभिलेख के अनुसार उसने अपनी दिग्विजय में लौहित्य (ब्रह्मपुत्र) से लेकर महेन्द्र पर्वत तक तथा हिमालय से लेकर पश्चिम समुद्र तक समस्त भू-भाग पर अपनी विजय पताकाएँ फहराई तथा उन क्षेत्रों पर भी अधिकार प्राप्त किया जिन पर गुप्त सम्राट तथा हूण नरेश भी न कर पाये थे। उसकी सबसे महत्व-पूर्ण उपलब्धि थी हूण शासक मिहिरकुल को पराजित करना। इस पराज्य का उल्लेख करते हुए अभिलेख में कहा गया है—'वह (यशोधर्मन्) जिसने स्थाणु (शिव) के अतिरिक्त किसी के सम्मुख अपना मस्तक झुका कर दीनता का परिचय नहीं दिया, जिसकी भुजाओं से रक्षित होने के कारण हिमालय पर्वत को दुर्गम होने का मिथ्याभिमान त्यागना पड़ा, जिसके युगल चरणों की अर्चना उस नृप मिहिरकुल ने अपनी अलकों के पुष्पों की भेंट चढ़ाकर दी थी, जिसका मस्तक अपने बाहुबल के कारण अधीन होकर नीचे झुकने में पीड़ित होता था।' यद्यपि यशोधर्मन् का हूणों को पराजित करना सत्य प्रतीत होता है परन्तु सम्पूर्ण उत्तर भारत पर उसके आधिपत्य को मानना, जैसा कि अभिलेख में वर्णित है, कठिन है।

यशोधर्मन् के शासन का अन्त कब और कैसे हुआ तथा औलिकर वंश में और कौन से शासक हुए इस सम्बन्ध में अभी तक कुछ भी ज्ञात नहीं। सम्भवतः यशोधर्मन् के पश्चात् दशपुर क्षेत्र पर औलिकरों की राजनीतिक सत्ता कुछ काल तक बनी रही। छठीं सदी के प्रारम्भ में कलचुरि शंकरगण तथा बाद में मैत्रकों का प्रभाव इस क्षेत्र पर फैलने पर औलिकरों का पतन हो गया।

परिव्राजक राजवंश

बुन्देलखण्ड से प्राप्त कुछ अभिलेखों से पता चलता है कि ५वीं सदी ई० में जब उत्तर भारत पर गुप्तों का आधिपत्य था, उस समय पन्ना जिले में परिव्राजक नामक राजवंश के राजाओं का राज्य चला हुआ था। ये गुप्त सम्राटों के माण्डलिक हो गये थे तथा अपने दान-पत्रों में गुप्त संवत् का प्रयोग करते थे। अपने सभी अभिलेखों में इन्होंने गुप्त सम्राटों की प्रभुता स्वीकार करने का उल्लेख किया है।

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६८६-अ-आ

२. वही, क्रमांक ६८५

परिव्राजक महाराजाओं का सर्वप्रथम अभिलेख खोह से प्राप्त महाराज हस्तिन् का गुप्त संवत् १५६ (४७५-७६ ई०) का ताम्रपत्र है[१] जिसमें इस वंश के राजाओं की वंशावली दी है। ताम्रपत्र के अनुसार इस वंश का सर्वप्रथम राजा देवाढ्य था। उसका पुत्र प्रभंजन और उसका पुत्र दामोदर हुआ। दामोदर का पुत्र हस्तिन् हुआ जो प्रतापी था। हस्तिन् के तीन और ताम्रपत्र खोह, जबलपुर तथा मझगवाँ से मिले हैं, जो क्रमशः गुप्त संवत् १६३ (४८२-८३ ई०) १७० तथा १९१ (५१०-११ ई०) के हैं।[२] इन सभी ताम्रपत्रों में इस वंश की वही वंशावली दी है जो हस्तिन् के प्रथम ताम्रपत्र में है। भूमरा से एक स्तम्भ-लेख मिला है[३] जिसको लगाने का उद्देश्य महाराज हस्तिन् तथा उनके पड़ोसी राज्य उच्चकल्प के महाराज सर्वनाथ के राज्यों का सीमा निर्धारण था। इससे ज्ञात होता है कि ये दोनों राजा समकालीन थे तथा इनका राज्य एक-दूसरे के पड़ोस में था।

महाराज हस्तिन् का पुत्र महाराज संक्षोभ हुआ जिसका एक ताम्रपत्र बैतूल से तथा दूसरा खोह से प्राप्त हुआ है। बैतूल के ताम्रपत्र[४] पर गुप्त संवत् १९९ की तिथि (५१८-१९ ई०) पड़ी है तथा उल्लिखित है कि वह डाहल तथा अठारह आटविक राज्यों का स्वामी था। इस दानपत्र द्वारा संक्षोभ ने त्रिपुरी प्रान्त स्थित कुछ ग्रामों को दान में दिया। इस उल्लेख से स्पष्ट है कि उसके राज्य में आधुनिक जबलपुर जिले का एक बड़ा भाग सम्मिलित था। महाराज संक्षोभ का दूसरा ताम्रपत्र[५] जो खोह से प्राप्त हुआ है, गुप्त संवत् २०९ (५२८-२९ ई०) में उत्कीर्ण किया गया था। इस अभिलेख में महाराज हस्तिन् को भी डाहल प्रदेश तथा अठारह आटविक राज्यों का स्वामी बतलाया गया है। संभवतः इन प्रदेशों पर महाराज हस्तिन् द्वारा ही अपनी प्रभुता का विस्तार कर लिया गया होगा।

महाराज संक्षोभ के बाद इस राजवंश का क्या हुआ इस सम्बन्ध में अभी तक कुछ भी ज्ञात नहीं।

उच्चकल्प के महाराज

परिव्राजक महाराजाओं के पड़ोसी उच्चकल्प के महाराजा थे। उच्चकल्प का आधुनिक नाम ऊँचहरा है। क्योंकि इस राजवंश के सभी ताम्रपत्र उच्चकल्प से प्रचलित किये गये थे, अतः यही इनकी राजधानी प्रतीत होती है। इनके अभिलेखों से ज्ञात होता है कि इन्होंने गुप्त तथा वाकाटक दोनों वंशों का आधिपत्य स्वीकार किया था।

इस वंश का सर्वप्रथम ताम्रपत्र कारीतलाई से प्राप्त महाराज जयनाथ का है, जो गुप्त

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६८७-अ

२. वही, क्रमांक क्रमशः ६८७-आ, ६८८, ६९१

३. वही, क्रमांक ६९०

४. वही, क्रमांक ६८९

५. वही, क्रमांक ६८७-इ

संवत् १७४ (४९३-९४ ई०) में उच्चकल्प से प्रचलित किया गया था।[१] इसमें दी गयी वंशावली के अनुसार इस वंश का सर्वप्रथम राजा ओघदेव था जिसका विवाह कुमारदेवी के साथ हुआ था। ओघदेव का पुत्र कुमारदेव था जिसने जयस्वामिनी से विवाह किया। कुमारदेव का पुत्र जयस्वामिन् हुआ जिसने रामदेवी के साथ विवाह किया। उसका पुत्र व्याघ्र हुआ जिसकी पत्नी का नाम अज्जितादेवी था। व्याघ्र का पुत्र जयनाथ था। व्याघ्रदेव के दो शिलालेख नचने-की-तलाई[२] तथा गंज[३] से प्राप्त हुए हैं जिनमें उसे वाकाटक नृपति पृथ्वीषेण द्वितीय का माण्डलिक कहा गया है। अतः स्पष्ट है कि व्याघ्रदेव ने वाकाटकों के आधिपत्य को स्वीकार किया था। उसके पूर्व सम्भवतः इस वंश के शासकों ने गुप्तों की प्रभुता को स्वीकार किया था। महाराज जयनाथ का दूसरा ताम्रपत्र खोह से प्राप्त हुआ है जिस पर गुप्त संवत् १७७ (४९६-९७ ई०) की तिथि पड़ी है।[४]

खोह से प्राप्त महाराज सर्वनाथ के गुप्त संवत् १९३ के ताम्रपत्र[५] से पता चलता है कि महाराज जयनाथ का पुत्र महाराज सर्वनाथ हुआ। खोह से ही उसके तीन और ताम्रपत्र मिले हैं जिनमें से दो क्रमशः गुप्त संवत् १९७ (५१६-१७ ई०)[६] तथा २१४ (५३३-३४)[७] के हैं तथा एक अपूर्ण होने के कारण उसकी तिथि अज्ञात है।[८] ये सभी अभिलेख उच्चकल्प से प्रचलित किये गये थे तथा सभी में दी गई वंशावली एक ही समान है।

महाराज सर्वनाथ के पश्चात् इस वंश का क्या हुआ इस सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात नहीं।

राजर्षितुल्य कुल

रायपुर जिले में आरंग नामक स्थान से भीमसेन द्वितीय का एक ताम्रपत्र प्राप्त हुआ है[९] जिससे विदित होता है कि ईसवी सन् की पाँचवीं शताब्दी के लगभग दक्षिण कोसल में राजर्षितुल्य कुल नामक कोई राजवंश राज्य करता था। अभिलेख में भीमसेन द्वितीय और उससे पहले की पाँच पीढ़ियों के राजाओं के नाम दिये हैं। इस ताम्रपत्र के अनुसार इस वंश का सर्वप्रथम राजा शूरा था। तत्पश्चात् जो राजा आये वे थे— क्रमशः दयित प्रथम, विभीषण, भीमसेन प्रथम, दयितवर्मा द्वितीय और अन्त में भीमसेन द्वितीय जो इस ताम्रपत्र का

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६९२
२. वही, क्रमांक ६७८
३. वही, क्रमांक ६७४
४. वही, क्रमांक ६९३-अ
५. वही, क्रमांक ६९३-आ
६. वही, क्रमांक ६९३-इ
७. वही, क्रमांक ६९३-ई
८. वही, क्रमांक ६९३-उ
९. वही, क्रमांक ६९५

नायक था । क्योंकि इन राजाओं के बारे में अन्यत्र कोई भी सूचना नहीं मिलती अतः इस वंश के सम्बन्ध में विशेष जानकारी अज्ञात है । इस ताम्रपत्र पर पड़ी तिथि के अनुसार इसे गुप्त संवत् १८२ अथवा २८२[1] में प्रचलित किया गया था जबकि भीमसेन द्वितीय राज्य करता था । अतः ऐसा प्रतीत होता है कि इस वंश की स्थापना ४थी-५वीं शताब्दी ई० में हुई और यह वंश ५वीं-६वीं शताब्दी ई० तक राज्य करता रहा ।

नलवंश

नलवंशी शासक वाकाटकों के समकालीन थे । इनकी शक्ति का मुख्य केन्द्र बस्तर तथा बस्तर के उड़ीसा से लगे सीमा के आस-पास का क्षेत्र था । नलवंश का क्रमबद्ध इतिहास और उनके राज्य-विस्तार के सम्बन्ध में पूरी जानकारी अभी तक उपलब्ध नहीं है । इस वंश के केवल चार उत्कीर्ण लेख और थोड़े से सोने के सिक्कों के आधार पर ही इनके इतिहास का निर्माण करने का प्रयत्न किया गया है ।

नलवंश के प्राप्त चार लेखों में एक लेख महाराष्ट्र में स्थित ऋद्धिपुर नामक स्थान से,[2] दूसरा बस्तर की पूर्वी सीमा से उड़ीसा में ६ मील पर स्थित पोड़ागढ़ से[3], तीसरा उड़ीसा में स्थित केसरिबेढ़ा[4] तथा चौथा रायपुर जिले में स्थित राजिम के राजीवलोचन मन्दिर[5] से प्राप्त हुआ है । नलवंश के सिक्कों की एक निधि बस्तर जिले में स्थित एडेंगा से मिली है ।[6] प्रथम तीन लेखों का तथा सिक्कों का अध्ययन कर ज्ञात हुआ है कि इस वंश का सर्वप्रथम राजा भवदत्तवर्मा था जिसने बस्तर तथा कोसल क्षेत्र में राज्य करते हुए वाकाटकों को पराजित कर अपने साम्राज्य का विस्तार नागपुर तथा बरार तक कर लिया था । परन्तु वाकाटकों द्वारा पुनः शक्ति प्राप्त कर लेने पर नागपुर तथा विदर्भ का क्षेत्र उसके हाथों से छिन गया । किन्तु वह बस्तर तथा दक्षिण कोसल पर बराबर राज्य करता रहा । अभिलेखों में भवदत्तवर्मा के दो उत्तराधिकारियों का नाम स्कन्दवर्मा तथा अर्थपति भट्टारक मिलता है, परन्तु भवदत्तवर्मा के साथ उनका सम्बन्ध क्या था इसकी जानकारी नहीं मिलती । इन अभिलेखों में स्कन्दवर्मा को महान् शक्तिशाली बतलाया गया है क्योंकि उसने अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर अपना खोया हुआ राज्य पुनः प्राप्त कर लिया था । नलवंश का चौथा लेख जो राजीम में स्थित राजीवलोचन मन्दिर के दीवाल में जड़ा हुआ मिला हैं, पृथ्वीराज, उसका पुत्र विरुपाक्ष तथा उसका उत्तराधिकारी विलासतुंग नामक राजाओं का उल्लेख करता है । इस शिलालेख में

---

१. तिथि के पढ़ने में विद्वानों में मतभेद है । स्व० रायबहादुर हीरालाल के अनुसार यह २८२ है, परन्तु महामहोपाध्याय वा० वि० मिराशी के अनुसार यह १८२ है ।
२. ए० इ० भाग १९, पृ० १०२
३. वही, भाग २१, पृ० १५३-५८
४. वही, भाग २८, पृ० १२
५. वही, भाग २६, पृ० ५४ (प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६९६)
६. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २३४३

यद्यपि विलासतुंग और उनके पूर्वजों को पहले के नल राजाओं से सम्बन्धित होने का कोई उल्लेख नहीं मिलता है तथापि इनके वंश का प्रारम्भ नल राजा से होने के उल्लेख के आधार पर इन्हें भी नलवंश का माना जाता है।

इन तथ्यों से स्पष्ट है कि नलवंशी नरेश बस्तर तथा दक्षिण कोसल के भू-भाग पर काफी समय तक राज्य करते रहे। सम्भवतः उनका राज्य पाण्डुवंशियों द्वारा पराजित होने के कारण समाप्त हो गया।

शरभपुरीय वंश

दक्षिण कोसल के शरभपुर नामक स्थान पर ई० सन् की पाँचवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में अथवा छठी शताब्दी के प्रथम भाग में एक प्रमुख राजवंश का उदय हुआ जिसे शरभ-पुरीय वंश कहा गया है। इस वंश की राजधानी शरभपुर कहाँ थी यह अभी तक निश्चित नहीं हो पाया है। शरभपुरीय वंश के नरेश अपने आपको 'परमभागवत्' कहते थे, अर्थात् वे भागवत् धर्म को मानने वाले थे। उनके दानपत्रों की राजमुद्रा पर अंकित गजलक्ष्मी की खड़ी प्रतिमा से भी यह यही जान पड़ता है। उनकी एक और राजधानी श्रीपुर (वर्तमान सिरपुर, रायपुर जिला) में थी।

इस वंश का संस्थापक शरभ नामक राजा था और इसी के नाम पर इनकी राजधानी का नाम शरभपुर पड़ा। एक अन्य शरभराज का उल्लेख एरण से गोपराज के गुप्त संवत् १९१ (५१० ई०) के अभिलेख[1] में मिलता है। इसमें शरभराज को गोपराज का नाना कहा गया है जो गुप्तवंशी राजा भानुगुप्त का सामन्त था और एरण के युद्ध में मारा गया था। ये दोनों शरभराज एक ही व्यक्ति थे अथवा भिन्न इस सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है।

शरभ का उत्तराधिकारी उसका पुत्र नरेन्द्र हुआ जिसके शासन काल के दो ताम्रपत्र लेख अभी तक मिले हैं। पिपरदुला से प्राप्त पहला ताम्रपत्र[2] उसके शासन काल के तीसरे वर्ष में प्रचलित किया गया था। इसमें राहुदेव नामक भोगपति द्वारा ग्रामदान देने और महाराज नरेन्द्र द्वारा उसे अनुमोदित करने की सूचना मिलती है। कुरुद से प्राप्त दूसरा ताम्रपत्र लेख[3] नरेन्द्र के राज्यकाल के चौबीसवें वर्ष में प्रचलित किया गया था। इसमें भी नरेन्द्र द्वारा दिये गये ग्रामदान को अनुमोदित करने की सूचना मिलती है। नरेन्द्र के स्वयं के दान से सम्बन्धित कोई उत्कीर्ण लेख अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है। इस नरेन्द्र का उल्लेख मेकल के पाण्डुवंशी राजा भरतबल के ताम्रपत्र लेख[4] में भी हुआ जान पड़ता है।

नरेन्द्र का उत्तराधिकारी कौन था यह अभी तक अज्ञात है। उसके बाद इस वंश में एक

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६५७-इ
२. वही, क्रमांक ७०२
३. वही, क्रमांक ६९८
४. ए० ई० भाग २७ पृ० १३२

प्रतापी राजा हुआ जिसका नाम प्रसन्नमात्र था। प्रसन्नमात्र ने अपने नाम के सोने के सिक्के चलाये जो पूर्व में कटक से पश्चिम में चाँदा जिले तक और छत्तीसगढ़ के कई स्थानों से मिले हैं।[१] सम्भवतः इस पूरे भू-भाग पर उसके राज्य का विस्तार था। उसने निडिला नदी के तट पर प्रसन्नपुर नामक नगर भी बसाया था।

अभी तक विद्वानों का यह मत था कि प्रसन्नमात्र का उत्तराधिकारी उसका पुत्र जयराज था तथा जयराज का उत्तराधिकारी उसका छोटा भाई मानमात्र था जिसका दूसरा नाम दुर्गराज था। किन्तु नयी खोज के अनुसार अब यह माना जाने लगा है कि जयराज और मानमात्र एक ही व्यक्ति के दो नाम थे, अर्थात् जयराज-मानमात्र-दुर्गराज एक ही व्यक्ति था। इस नरेश के अब तक तीन ताम्रपत्र लेख प्राप्त हो चुके हैं जिनमें एक आरंग से[२] और दो मल्लार से[३] मिले हैं। आरंग का ताम्रपत्र तथा मल्लार से प्राप्त एक ताम्रपत्र उसके राज्यकाल के ५वें वर्ष में उत्कीर्ण किये गये थे। मल्लार से प्राप्त दूसरा ताम्रपत्र उसके नौवें वर्ष में प्रचलित किया गया था।

जयराज के तीन पुत्र थे—सुदेवराज, प्रवरराज और व्याघ्रराज। जयराज का उत्तराधिकारी उसका ज्येष्ठ पुत्र सुदेवराज हुआ जिसके सात ताम्रपत्र-लेख अब तक प्राप्त हो चुके हैं।[४] इन लेखों में रायपुर से प्राप्त ताम्रपत्र उसके राज्यकाल के दसवें वर्ष में प्रचलित किया गया था। अतः यह स्पष्ट है कि उसने कम से कम दस वर्ष तक राज्य किया होगा। उसके अभिलेखों में दो ताम्रपत्र श्रीपुर से प्रचलित किये गये थे तथा शेष शरभपुर से। इससे ऐसा लगता है कि उसके शासन काल में ही शरभपुर के अतिरिक्त श्रीपुर भी राजधानी बन गयी थी।

इस वंश का अन्तिम नरेश सुदेवराज का छोटा भाई प्रवरराज था जिसने अपनी राजाधानी श्रीपुर रखी थी। उसके केवल दो ताम्रपत्र-लेख अभी तक प्राप्त हो सके हैं - एक ठाकुरदिया से तथा दूसरा मल्लार से।[५] ये दोनों लेख उसके राज्यकाल के तीसरे वर्ष में प्रचलित किये गये थे। इससे कुछ विद्वानों ने अनुमान किया है कि उसका राज्य सम्भवतः अल्पायु होने के कारण अल्पकालीन रहा होगा।

सुदेवराज और प्रवरराज का छोटा भाई व्याघ्रराज प्रसन्नपुर में रहता था। वह स्वतन्त्र नहीं, बल्कि प्रवरराज के सामन्त के रूप में राज्य करता था। उसके राज्यकाल के चौथे वर्ष का एक ताम्रपत्र मल्लार से प्राप्त हुआ है जिसमें एक ग्राम-दान दिये जाने का उल्लेख है।[६]

---

१. ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० २१५; प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २३५७, २३५६ आदि

२. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ६९७-अ

३. वही, क्रमांक ७०४ अ-आ

४. वही, क्रमांक ६९७-आ, ६९९, ७००, ७०५, ७०६-अ-आ, ७०७

५. वही, क्रमांक ७०१ तथा ७०४-इ

६. वही, क्रमांक ७०४-ई

लगभग छठीं शताब्दी ईसवी के अन्तिम चरण में पाण्डुवंशियों ने दक्षिण कोसल की विजय कर शरभपुरीय राजवंश को समाप्त किया और श्रीपुर को अपनी राजधानी बनाया।

वलभी का मैत्रक वंश

गुप्त वंश की शक्ति के ह्रास होने का लाभ उठाकर भारत के विभिन्न भागों में जिन राजवंशों का उदय हुआ उनमें वलभी के मैत्रक वंशी शासक भी थे। प्रारम्भ में ये गुप्त शासकों की अधीनता स्वीकार किये हुए थे। छठीं सदी ई० के मध्य में जब गुप्त शासकों की सत्ता का लोप हो गया, इसके पूर्व ही मैत्रकों ने अपने अभिलेखों में गुप्त अधीनता का उल्लेख करना बंद कर दिया, यद्यपि वे गुप्त संवत् का उपयोग अवश्य ही करते रहे। स्वतन्त्र होकर मैत्रक वंशी शासकों ने अपने साम्राज्य का विस्तार करना प्रारम्भ किया।

मैत्रक वंशी शासक महाराज शिलादित्य प्रथम धर्मादित्य ५८० ई० में वलभी में राज्य कर रहा था, ऐसा चीनी यात्री ह्यूयेनत्सांग के वर्णन से पता चलता है। उसने अपने साम्राज्य का विस्तार पश्चिमी मालवा तक कर लिया था। शिलादित्य का शासन काल ६१२ ई० तक चलता रहा। उसका उत्तराधिकारी उसका छोटा भाई खरग्रह हुआ तथा उसके पश्चात् उसका पुत्र धरसेन तृतीय हुआ। धरसेन तृतीय का उत्तराधिकारी उसका छोटा भाई ध्रुवसेन द्वितीय बालादित्य हुआ जो ६२९ ई० के पूर्व वलभी का शासक हुआ। वह चीनी यात्री ह्यूयेनत्सांग का समकालीन था तथा कम-से-कम ६४०-४१ ई० तक राज्य करता रहा। पश्चिमी मालवा क्षेत्र पर उसका प्रभाव बराबर बना रहा। यह रतलाम जिले से प्राप्त दो ताम्रपत्रों से पता चलता है। नोगवा से प्राप्त पहला ताम्रपत्र[१] गुप्त संवत् ३२० का है, जो वलभी से प्रचलित किया गया था तथा जिसमें मालवक भुक्ति (अर्थात् मालवा प्रान्त) में स्थित एक सौ 'भक्ती' भूमि को दान में देने का उल्लेख है। इसी स्थान से प्राप्त दूसरा ताम्रपत्र[२] गुप्त संवत् ३२१ का है, जो वन्दितपल्ली के विजित शिविर से प्रचलित किया गया था तथा जिसमें मालवक भुक्ति में स्थित एक सौ 'भक्ती' भूमि-दान में देने का उल्लेख आया है।

मैत्रकों का राजवंश ७६६ ई० तक बराबर चलता रहा तथा ७६६ से ७८३ के बीच इसका लोप हो गया। पश्चिमी मालवा क्षेत्र पर से इनका आधिपत्य कब समाप्त हुआ यह अज्ञात है।

मौखरी वंश

मौखरी साम्राज्य की स्थापना भी गुप्त वंश की शक्ति के ह्रास होने के कारण हुई। इस वंश के पहले शासक भी गुप्त वंश के अधीन थे। छठी सदी ई० के मध्य में जब गुप्त वंश की शक्ति का लोप हुआ तो मौखरियों ने अपनी राजसत्ता स्थापित की।

मौखरियों की कई शाखाएँ थी, जिनमें कन्नौज की शाखा अधिक शक्तिशाली थी।

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७०८-अ

२. वही, क्रमांक ७०८-आ

इनके शासकों में महाराज हरिवर्मन्, महाराज आदित्यवर्मन्, महाराज ईश्वरवर्मन्, महाराजाधिराज ईशानवर्मन्, महाराजाधिराज सर्ववर्मन्, महाराजाधिराज अवन्तिवर्मन् तथा महाराजाधिराज ग्राहवर्मन् हुए। उनके साम्राज्य का विस्तार लगभग आधुनिक उत्तर प्रदेश के क्षेत्र पर था। मध्यप्रदेश के पूर्व निमाड़ जिले में असीरगढ़ के किले से महाराजाधिराज सर्ववर्मन् का एक ताम्र-मुहर लेख प्राप्त हुआ है।[1] इस लेख की प्राप्ति से कुछ विद्वानों का यह मत है कि मौखरियों के साम्राज्य का पूर्व निमाड़ जिले तक विस्तार था तथा दक्कन की ओर असीरगढ़ का दुर्ग उनके राज्य का एक महत्वपूर्ण दुर्ग था। परन्तु अधिकांश विद्वान् इस मत को स्वीकार नहीं करते। किसी भी प्रमाण के आधार पर मौखरियों के साम्राज्य का मध्यप्रदेश के किसी भाग पर विस्तार का पता नहीं लगता।

वर्धनवंश

छठी शताब्दी ई० के अन्तिम चरण में थानेश्वर के वर्धन वंश का उत्कर्ष हुआ। इस वंश के प्रारम्भिक राजा थे नरवर्धन, राज्यवर्धन, आदित्यवर्धन तथा प्रभाकरवर्धन। प्रभाकरवर्धन की कन्या राज्यश्री का विवाह मौखरी राजा गृहवर्मा के साथ हुआ था। हर्षचरित के अनुसार प्रभाकरवर्धन की मृत्यु के तत्काल बाद जब हर्षवर्धन तथा उसके बड़े भाई राज्यवर्धन एक-दूसरे को राज्य-भार सम्हालने के लिए मना रहे थे तो समाचार प्राप्त हुआ कि मालवा के राजा ने मौखरियों के राज्य पर आक्रमण कर गृहवर्मा का प्राणान्त कर दिया तथा राज्यश्री को कारागार में डाल दिया। मालवराज के दुष्कर्म का समाचार पाते ही राज्यवर्धन ने सन्यास ग्रहण करने का विचार छोड़ दिया तथा अपने बहनोई के हत्यारे को दण्डित करने के निश्चय से युद्ध-क्षेत्र की ओर प्रस्थान किया। वाण के अनुसार उसने बड़ी सरलता से मालवराज को पराजित कर दिया। परन्तु वह मालवराज के मित्र गौड़ नरेश के भुलावे में में आ गया जिससे गौड़ नरेश ने उसे एकाकी पाकर उसकी हत्या कर डाली।

राज्यवर्धन की हत्या के बाद हर्षवर्धन ही थानेश्वर राज्य का एकमात्र उत्तराधिकारी था। अतः १६ वर्ष की आयु में ही उसे राज्य का भार सम्हालना पड़ा। राज्य प्राप्त करते ही उसने अपने भाई के हत्यारे गौड़ नरेश शशांक को दण्ड देने की ठानी और सेना लेकर गौड़ की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में उसे राज्यश्री के कारागार से भागने तथा विन्ध्याचल में पहुँचने का समाचार मिला। उसने तत्काल राज्यश्री को ढूँढ़ निकाल कर उसके प्राणों की रक्षा की। तत्पश्चात् उसने गौड़ राज्य की ओर प्रस्थान किया जिसका परिणाम अज्ञात है।

हर्ष को अपने राज्यकाल में गौड़ों के अतिरिक्त वलभी, चालुक्य तथा सिंध के शासकों के साथ युद्ध करना पड़ा। हर्ष के साम्राज्य का विस्तार कितना था इस सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वान उसे सम्पूर्ण उत्तर भारत का स्वामी मानते हैं, परन्तु यह मत आधुनिक विद्वानों द्वारा असंगत ठहराया गया है। जहाँ तक मध्यप्रदेश के इतिहास से हर्षवर्धन के साम्राज्य का सम्बन्ध है, कुछ विद्वानों के अनुसार विन्ध्य का आटविक क्षेत्र उसके राज्य के अन्तर्गत था।

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७०६

हर्ष द्वारा प्रचलित संवत् उसके साम्राज्य के विभिन्न भागों में लम्बे समय तक चला। खजुराहों से प्राप्त एक मूर्ति पर हर्ष संवत् २१८ की तिथि उत्कीर्ण है।[1]

दक्षिण कोसल का पाण्डववंश

ईसवी सन् की छठी शताब्दी में कोसल के बड़े भू-भाग पर पाण्डव वंशी राजाओं का राज्य था। पाण्डुवंशी राजा सोमवंशी थे तथा वैष्णव धर्मावलम्बी थे। इस वंश का सर्वप्रथम राजा उदयन था जो सम्भवतः ५वीं शताब्दी ई० के अन्तिम चरण में रहा होगा। कालन्जर से प्राप्त एक शिलालेख में सोमवंशी राजा उदयन का उल्लेख है, किन्तु क्या ये दोनों व्यक्ति एक ही थे, इस सम्बन्ध में अनुमान करना कठिन है।

सिरपुर से प्राप्त बालार्जुन के शिलालेख में उदयन का पुत्र इन्द्रबल बतलाया गया है। एक महासामन्त इन्द्रबल का उल्लेख शरभपुरीय राजा सुदेवराज के अभिलेख में भी मिला है[2] जो उसका प्रधान मन्त्री बताया गया है, किन्तु यह कहना कठिन है कि यह इन्द्रबल पाण्डुवंशी इन्द्रबल ही था या कोई अन्य।

भांदक से प्राप्त एक अभिलेख में[3] इन्द्रबल के चार पुत्रों का उल्लेख है। इनमें एक का नाम नन्न था जो पराक्रमी होने के नाते अपने राज्य को दूर तक विस्तार किये था। उसका सबसे छोटा भाई भवदेव (जिसे रणकेसरी तथा चिन्तादुर्ग भी कहा गया है) अपने बड़े भाई नन्न के सामन्त के रूप में चाँदा जिले (आधुनिक महाराष्ट्र) में राज्य करता था। भांदक से प्राप्त उपर्युक्त अभिलेख में उसके द्वारा पूर्वकाल में निर्मित कराये गये किसी बुद्ध मन्दिर के जीर्णोद्धार कराने का उल्लेख है। नन्न का छोटा भाई ईशानदेव था जिसका उल्लेख खरोद (बिलासपुर जिला) के लखनेश्वर मन्दिर में लगे शिलालेख में मिलता है।[4] इस प्रकार यह स्पष्ट है कि नन्न के राज्यकाल में पांडुवंशियों का राज्य दक्षिण कोसल के एक बड़े भाग पर तथा महाराष्ट्र में चाँदा जिला तक विस्तृत हो चुका था।

पाण्डुवंशियों की स्थिति को और भी सुदृढ़ करने का यश महाशिव तीवरदेव को प्राप्त हुआ, जो नन्नराज का पुत्र तथा उत्तराधिकारी था। उसके तीन ताम्रपत्र-लेख अब तक प्राप्त हुए हैं[5] जिनमें बतलाया गया है कि वह परम वैष्णव था (जैसा कि उसके ताम्रपत्रों पर संलग्न मुद्रा पर गरुड़ की प्रतिमा से भी स्पष्ट है) तथा कोसल, उत्कल और अन्य मण्डलों पर अधिकार प्राप्त करने के पश्चात् 'कोसलाधिपति' की उपाधि धारणा की थी। उसके राज्यकाल के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। किन्तु विष्णुकुन्डी राजा माधववर्मा प्रथम

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७१०

२. ए० ई० भाग ३१, पृ० ३१४

३. हीरालाल सूची, क्रमांक १४

४. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७१२

५. वही, क्रमांक ७१३, ७१५, ७१७

(५३५-८५ ई०) तथा मौखरी सूर्यवर्मा (५५३ ई०) के समकालीन होने के कारण उसका काल छटी शताब्दी ई० के तीसरे चरण में निश्चित किया जा सकता है।

महाशिव तीवरदेव का उत्तराधिकारी उसका पुत्र महानन्नराज हुआ। उसका केवल एक ताम्रपत्र अडभार (जिला बिलासपुर) से प्राप्त हुआ है[1] जिसमें उसके द्वारा अष्टद्वार में एक ग्रामदान दिये जाने का उल्लेख है।

सम्भवत महानन्नराज का शासन काल अल्पकालीन था और वह निसन्तान भी था। अत: उसका उत्तराधिकारी उसका चाचा चन्द्रगुप्त हुआ। उसकी उपलब्धियों के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है।

चन्द्रगुप्त का उत्तराधिकारी उसका पुत्र हर्षगुप्त हुआ। हर्षगुप्त ने मगधातिपति सूर्यवर्मा की बेटी वासटा से विवाह किया। हर्षगुप्त वैष्णव धर्म को मानता था और वासटा भी वैष्णव थी। हर्षगुप्त के स्वर्गवासी होने पर वासटा ने अपनी पति की स्मृति में श्रीपुर में हरि (विष्णु) का एक मन्दिर निर्माण करवाया था। हर्षगुप्त और वासटा के पुत्र महाशिवगुप्त बालार्जुन के शासन काल में निर्मित यह मंदिर आज भी लक्ष्मण मंदिर के नाम से सिरपुर में विद्यमान है और प्राचीन भारतीय वास्तुकला का बेजोड़ नमूना है। वासटा का उपर्युक्त स्मृति का अभिलेख इसी मन्दिर के भग्न मण्डप का मलवा साफ करते समय प्राप्त हुआ था।[2]

हर्षगुप्त का उत्तराधिकारी उसका पुत्र महाशिवगुप्त था। वह बालार्जुन भी कहलाता था क्योंकि छोटी अवस्था में ही वह धनुर्विद्या में प्रवीण हो चुका था। उसके अनेक ताम्रपत्र-लेख और शिलालेख बारदुला, लोधिया, मल्लार, सिरपुर आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं,[3] जिससे ज्ञात होता है कि उसके राज्य का विस्तार आधुनिक रायपुर, बिलासपुर, रायगढ़ जिलों को मिला कर छत्तीसगढ़ के एक बड़े भू-भाग पर था। लोधिया से प्रचलित ताम्रपत्र उसके राज्यकाल के ५७वें वर्ष का है, अत: स्पष्ट है कि उसका राज्यकाल लगभग ६० वर्ष का था। महाशिवगुप्त बालार्जुन के माता-पिता वैष्णव धर्मावलम्बी थे, परन्तु वह स्वयं शैव था। उसकी राजमुद्रा पर नन्दी बना हुआ है और लेखों में भी उसे परम-माहेश्वर कहा गया है। परन्तु शैव होने के बाद भी वह परम धर्मसहिष्णुता का पालन करने वाला था। उसके संरक्षण में श्रीपुर तथा साम्राज्य के अन्य स्थानों में शैव, वैष्णव, बौद्ध तथा जैन धर्म का समान रूप से विकास हुआ। चारों धर्मों से सम्बन्धित स्मारकों के अवशेष, जो आज भी विद्यमान हैं, उसकी धर्मसहिष्णुता की नीति की याद दिलाते हैं। महाशिवगुप्त बालार्जुन के शासन काल में उसकी राजधानी श्रीपुर की कीर्ति दूर-दूर तक फैल चुकी थी और वहाँ बौद्ध यात्रियों का आना-जाना लगा रहता था। सिरपुर में किये गये उत्खनन में बौद्ध विहार, विशाल प्रतिमाएँ तथा शिलालेख प्राप्त हुए हैं, जो समकालीन धार्मिक तथा

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७११

२. वही, क्रमांक ७१९

३. वही, क्रमांक ७१४, ७१५-आ, ७१६, ७१८, ७१९ अ- उ

सामाजिक व्यवस्था पर प्रकाश डालते हैं। महाशिवगुप्त बालार्जुन के राज्यकाल को छत्तीसगढ़ के इतिहास का स्वर्णयुग माना जाता है।

बालार्जुन के उत्तराधिकारियों के बारे में अभी तक कुछ भी ज्ञात नहीं। कुछ विद्वानों का विचार है कि वह चालुक्य नरेश पुलकेशी द्वितीय द्वारा ई० सन् ६३४ के पूर्व पराजित किया जा चुका था। इस वंश का अन्त कैसे हुआ तथा कोसल के उत्तरकालीन सोमवंशियों के साथ उनका क्या सम्बन्ध था, यह सब अभी तक अज्ञात है। अभिलेखों के आधार पर कुछ विद्वानों का यह विचार है कि महाशिवगुप्त बालार्जुन के शासन के कुछ ही समय पश्चात् कोसल के नलवंशी राजाओं ने इस वंश को समाप्त कर अपना राज्य स्थापित किया तथा उनका राज्य तब तक चला जब तक वे उत्तरकालीन सोमवंशियों द्वारा पराजित नहीं किये गये।

मेकल का पाण्डव वंश

आधुनिक अमरकण्टक के निकटवर्ती क्षेत्र को प्राचीन काल में मेकल कहा जाता था। सम्भवतः यह नाम इस क्षेत्र के मैकाल पहाड़ियों पर बसे रहने के कारण पड़ा हो। यद्यपि पुराणों में मेकल के राजाओं के सम्बन्ध में उल्लेख आया है, तथापि इस क्षेत्र के प्राचीन इतिहास के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। अभिलेखों के आधार पर ज्ञात होता है कि पाँचवीं शती ईसवी में इस क्षेत्र में पाण्डववंशियों की एक शाखा राज्य करती थी। इस शाखा का दक्षिण कोसल के पाण्डव वंश से क्या प्राचीन सम्बन्ध था, इस सम्बन्ध में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता।

बह्मनी से प्राप्त एक ताम्रपत्र लेख[१], जो यहाँ के नरेश भरतबल के राज्यकाल के दूसरे वर्ष में प्रचलित किया गया था, मेकल के पाण्डववंशी नरेशों के इतिहास पर कुछ प्रकाश डालता है। इस अभिलेख के अनुसार इस वंश में सर्वप्रथम जयबल हुआ। जयबल का पुत्र वत्सराज था जिसकी रानी द्रोणभट्टारिका से महाराज नागबल का जन्म हुआ। महाराज नागबल की रानी इन्द्रभट्टारिका से महाराज भरत अर्थात् भरतबल का जन्म हुआ। भरतबल का अपर नाम इन्द्र था। इन नामों का उल्लेख करते हुए ताम्रपत्र में जयबल और वत्सराज के सम्बन्ध में कोई पदवी प्रयोग नहीं की गयी है। इसके विपरीत नागबल तथा भरतबल का उल्लेख करते हुए उन्हें केवल 'महाराज' की उपाधि से ही नहीं बल्कि 'परम-माहेश्वर, परमब्रह्मण्य तथा परम-गुरु-देवताधिदैवत-विशेषः' की उपाधियों से भी विभूषित किया गया है। इससे विदित होता है कि जयबल और वत्सराज सम्भवतः साधारण सामन्त थे और समकालीन मगध के गुप्त वंश के अधीन थे। बाद में गुप्त वंश की शक्ति क्षीण होने की परिस्थिति का लाभ उठाकर वे स्वतन्त्र राजा बन बैठे।

ब्रह्मनी के अभिलेख के अनुसार भरतबल ने कोसल की राजकुमारी लोकप्रकाशा से विवाह किया था। लोकप्रकाशा दक्षिण कोसल के किस राजवंश की राजकुमारी थी इस सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वानों के अनुसार वह दक्षिण कोसल के

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७२०

पाण्डव वंश की राजकुमारी थी। परन्तु यह असंगत जान पड़ता है क्योंकि भरतबल के राज्य-काल तक दक्षिण कोसल में पाण्डववंशीय नरेशों का आधिपत्य स्थापित नहीं हुआ था। अन्य विद्वानों के मतानुसार लोकप्रकाशा शूरा के वंश में हुई थी, किन्तु इसका भी कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। अधिकांश विद्वान् इस बात को मानते हैं कि वह दक्षिण कोसल के शरभपुरीय वंश की राजकुमारी थी और वह शरभ की बेटी तथा नरेन्द्र की बहिन थी। उसके पति भरतबल के बह्मनी के ताम्रपत्र में प्रच्छन्न रूप से महाराज नरेन्द्र का गुनगान किया गया है। इस ताम्रपत्र-लेख में लोकप्रकाशा को अमरजकुलजा भी कहा गया है जबकि शरभपुरीय व्याघ्रराज के लेख में उस वंश का नाम अमरार्यकुल मिलता है।

भरतबल के बाद मेकल के पाण्डव वंश का क्या हुआ, इस सम्बन्ध में कोई भी जानकारी उपलब्ध नहीं है।

शैल वंश

आठवीं सदी ई० में महाकोशल के पश्चिम भाग में शैल वंश नामक एक राजवंश की स्थापना हुई। इस वंश का ताम्रपत्र बालाघाट जिले में स्थित राघोली से प्राप्त हुआ है जिसमें शैलवंशी नरेशों की वंशावली दी हुई है।[१] इस ताम्रपत्र के अनुसार इस वंश का प्रथम नरेश श्रीवर्धन था। उसका पुत्र पृथुवर्धन हुआ जिसने गुर्जर प्रदेश को जीता। उसका पुत्र सौरवर्धन था जिसके तीन पुत्र हुए। उनमें से एक ने पौंड्र (बंगाल तथा बिहार) के राजा को मारकर उसका देश जीत लिया। तीसरे पुत्र ने काशी के राजा को मारकर काशी को अपने अधीन कर लिया। उसका पुत्र जयवर्धन प्रथम हुआ जिसने विन्ध्य के नरेश को परास्त कर वहाँ पर अपना राज्य स्थापित किया। जयवर्धन का पुत्र श्रीवर्धन द्वितीय हुआ जो विन्ध्य का स्वामी था। उसका पुत्र जयवर्धन द्वितीय हुआ जिसने इस ताम्र-पत्र को श्रीवर्धनपुर से प्रचलित कर सूर्य-मन्दिर के भोगार्थ खड्डिका नामक ग्राम दान में दिया।

राष्ट्रकूट वंश

राष्ट्रकूट वंश की कई शाखायें थीं। इनमें से कम से कम दो शाखाओं का राज्य मध्यप्रदेश के कुछ भाग पर सातवीं सदी ई० से लेकर दसवीं सदी ई० तक रहा।

राष्ट्रकूटों की एक शाखा सातवीं-आठवीं सदी में बैतुल—अमरावती क्षेत्र पर राज्य करती थी। इस वंश के चार ज्ञात राजाओं के नाम हैं—दुर्गराज, गोविन्दराज, स्वामिक-राज तथा नन्नराज युद्धासुर। नन्नराज युद्धासुर का एक ताम्रपत्र बैतूल जिले के तिवरखेड़ नामक स्थान से प्राप्त हुआ है।[२] यह ताम्रपत्र अचलपुर (महाराष्ट्र के अमरावती जिले में स्थित आधुनिक एलिचपुर) से शक संवत् ५५३ में प्रचलित किया गया था। सम्भवतः अचलपुर इस वंश की राजधानी थी। नन्नराज का दूसरा ताम्रपत्र मुलताई

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७२१

२. वही, क्रमांक ७२६

से प्राप्त हुआ है।[१] यह शक संवत् ६३१ (७०९-१० ई०) में प्रचलित किया गया था। इन्द्रगढ़ से प्राप्त एक अन्य शिलालेख में नन्नराज का उल्लेख है।[२] इतिहासज्ञों द्वारा नन्नराज युद्धासुर का काल ६९० ई० से ७३५ ई० के बीच माना गया है। सम्भवतः आठवीं सदी ई० के मध्य में दक्कन के प्रमुख राष्ट्रकूट शाखा के शासक दन्तिदुर्ग द्वारा इस शाखा का पराभव कर इसके राज्य को अपने साम्राज्य के अन्तर्गत सम्मिलित कर लिया गया।

राष्ट्रकूट राजवंश की दूसरी शाखा मान्यखेट से राज्य करती थी। इस शाखा से सम्बन्धित चार अभिलेख मध्यप्रदेश की सीमा के अन्तर्गत प्राप्त हुए हैं। इनसे तथा इस शाखा के शासकों के अन्य अभिलेखों से ज्ञात होता है कि विभिन्न राजाओं के काल में मध्यप्रदेश के एक बड़े भाग पर इस राजवंश का आधिपत्य था।

मान्यखेट के राष्ट्रकूटों का सर्वप्रथम शक्तिशाली राजा दन्तिदुर्ग था जो ७३३ ई० के लगभग राजा बना। समनगढ़ तथा एलोरा से प्राप्त उसके अभिलेखों में उसके विजयों का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि उसने मही, महानदी तथा रेवा (अर्थात् नर्मदा) की तटों पर कई युद्ध किये तथा काँची, कलिंग, कोसल, श्रीशैल, मालव, लाट तथा टंक पर विजय प्राप्त की। एक अन्य अभिलेख में उसके मालवा-विजय के सम्बन्ध में कहा गया है कि उसने उज्जयिनी पर आक्रमण कर वहाँ के गुर्जर शासक को पराजित कर बन्दी बना लिया तथा विजय के उपलक्ष में वहाँ हिरण्यगर्भ दान दिया। इन वर्णनों से पता चलता है कि ७५० ई० के लगभग मध्यप्रदेश का एक बड़ा भाग उसके राज्य के अन्तर्गत हो गया था।

दन्तिदुर्ग के उत्तराधिकारी कृष्ण प्रथम, गोविन्द द्वितीय तथा ध्रुव के शासन काल में मध्यप्रदेश के कुछ भाग पर राष्ट्रकूटों का आधिपत्य यथावत रहा। ध्रुव का उत्तराधिकारी गोविन्द तृतीय अत्यन्त महत्वाकांक्षी शासक था। दक्कन में अपनी सत्ता को सुदृढ़ कर उसने अपना ध्यान उत्तर भारत की ओर किया। कन्नौज पर अधिकार करने के उद्देश्य से वह भोपाल-झांसी होता हुआ आगे बढ़ा। प्रतिहार शासक नागभट द्वितीय ने उसे रोकने का प्रयत्न किया परन्तु युद्ध में पराजित होकर राजपूताना भाग गया। कन्नौज का शासक चक्रायुध तथा बंगाल का पालवंशी शासक धर्मपाल ने आत्मसमर्पण कर अपनी रक्षा की। गोविन्द तृतीय के इस अभियान में उसका अनुज इन्द्र, जिसे मालवा का शासक नियुक्त किया गया था, सेना की एक बड़ी टुकड़ी लेकर मालवा में उसके आवागमन के मार्ग की रक्षा करता रहा। अभिलेखों के वर्णन के अनुसार अभियान करते हुए गोविन्द तृतीय हिमालय तक जा पहुँचा। तत्पश्चात् वह अपनी राजधानी की ओर लौटा और रास्ते में मालव, कोसल, कलिंग, वंग, डाहल तथा ओड्रक देशों को जीता। मालवा क्षेत्र में मन्दसौर जिले के इन्द्रगढ़ नामक स्थान से उसके शासन काल का एक अभिलेख

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७३१

२. वही, क्रमांक ७२२-अ

प्राप्त हुआ है।[१] कोसल में सम्भवतः उसने चन्द्रगुप्त नामक राजा को पराजित किया, जैसा कि संजान से प्राप्त ताम्रपत्र में उल्लिखित है। डाहल पर उसके विजय का कोई वर्णन प्राप्त नहीं है। गोविन्द तृतीय का राज्यकाल ७८३ ई० से ८१४ ई० के बीच माना गया है।

गोविन्द तृतीय का उत्तराधिकारी अमोघवर्ष प्रथम था जिसका शासन काल ८१४ ई० से ८७८ ई० तक था। उसके बाद उसका पुत्र कृष्ण द्वितीय गद्दी पर बैठा। उसने त्रिपुरी के कलचुरि राजा कोकल्ल प्रथम की कन्या से विवाह किया। इस वैवाहिक सम्बन्ध के कारण उसे अपने शत्रुओं के साथ युद्ध करने में कलचुरियों की बहुत सहायता मिली। यह सहायता विशेष रूप से उसके शत्रु पूर्वी-चालुक्य राजा विजयादित्य तृतीय के साथ संघर्ष के समय मिली। पीठापुरम से प्राप्त एक अभिलेख में कहा गया है कि विजयादित्य ने चक्रकूट (आधुनिक बस्तर जिले का मध्य भाग) को जला डाला तथा किरणपुर (आधुनिक बालाघाट जिले में स्थित) पर आक्रमण कर वहाँ निवास कर रहे कृष्ण तथा संकिल (कलचुरि युवराज शंकरगण) को भयभीत किया। मालवा पर अपना अधिकार सुरक्षित रखने के लिए कृष्ण द्वितीय को गुर्जर प्रतिहार शासक भोज के साथ युद्ध करना पड़ा। कृष्ण के पुत्र जगत्तुंग का विवाह त्रिपुरी के शासक शंकरगण की दो कन्यायें लक्ष्मी तथा गोविन्दाम्बा के साथ हुआ। कृष्ण की मृत्यु ९१४ ई० के अन्तिम भाग में हो गयी।

कृष्ण द्वितीय का उत्तराधिकारी उसका पोता इन्द्र तृतीय हुआ। उसका शासन काल ९१४ ई० से ९२२ ई० के बीच माना गया है। उसने भी त्रिपुरी के कलचुरि राजकन्या वैजम्बा से विवाह कर दोनों राजवंशों को और भी निकट लाने का प्रयत्न किया। अपने छोटे से शासन काल में उसने गुर्जर-प्रतिहार शासक महीपाल को पराजित कर तथा उसकी राजधानी कनौज पर अधिकार कर यश प्राप्त किया। इन्द्र तृतीय का एक अभिलेख मन्दसौर जिले में स्थित इन्द्रगढ़ से प्राप्त हुआ है।[२]

इन्द्र तृतीय का उत्तराधिकारी उसका पुत्र अमोघवर्ष द्वितीय हुआ। परन्तु शीघ्र ही उसके छोटे भाई गोविन्द चतुर्थ द्वारा उसकी हत्या कर सिंहासन हथिया लिया गया। गोविन्द चतुर्थ दुष्चरित्र था और इस कारण मंत्रियों द्वारा षड़यन्त्र कर उसके चाचा अमोघवर्ष तृतीय को सिंहासन पर बैठाने का प्रयत्न किया गया। अमोघवर्ष ने अपने सम्बन्धी त्रिपुरी के कलचुरि शासकों से सहायता माँगी। समकालीन कलचुरि शासक युवराजदेव प्रथम ने एक मजबूत सेना भेजकर गोविन्द को पराजित कर अमोघवर्ष को सिंहासन प्राप्त करने में सहायता प्रदान की। अमोघवर्ष का विवाह युवराजदेव की कन्या कन्दकदेवी से हुआ था, अतः कलचुरि शासक ने अपने दामाद को सहायता करने में कोई भी कसर बाकी न रखी।

अमोघवर्ष तृतीय का उत्तराधिकारी उसका पुत्र कृष्ण तृतीय ९३९ ई० के अन्तिम

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७२२-आ

२. वही, क्रमांक ७२२-आ

भाग में सिंहासन पर बैठा। उसके राज्यकाल की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी उसके द्वारा उत्तर भारत पर आक्रमण। उसने बुन्देलखण्ड पर आक्रमण कर उसके एक बड़े भाग पर अधिकार कर लिया। मैहर के निकट जूरा से प्राप्त उसकी प्रशस्ति से युक्त एक शिलालेख से[1] इस बात की पुष्टि होती है। उसका उल्लेख करते हुए दो अन्य अभिलेख छिन्दवाड़ा जिले में स्थित नीलकण्ठी से प्राप्त हुए हैं।[2] कृष्ण तृतीय ने मालवा पर भी आक्रमण किया तथा परमार शासक सीयक को पराजित कर उज्जयिनी पर अधिकार कर लिया। सीयक ने इस पराजय का बदला कृष्ण तृतीय के उत्तराधिकारी खोट्टिग के समय में लिया। उसने राष्ट्रकूट राजधानी मान्यखेट पर आक्रमण कर उसे लूट लिया। इस घटना से हताश होकर खोट्टिग की ९७२ ई० में मृत्यु हो गयी। उसके दो कमजोर उत्तराधिकारी कर्क्क द्वितीय तथा इन्द्र चतुर्थ हुए। ९७५ ई० के लगभग चालुक्य वंशी तैल द्वितीय ने राष्ट्रकूटों के अंतिम नरेश इन्द्र चतुर्थ को पराजित कर राष्ट्रकूट साम्राज्य को अपने साम्राज्य के अन्तर्गत सम्मिलित कर लिया।

राष्ट्रकूट वंशी कुछ सामन्तों के अभिलेख भी मध्यप्रदेश की सीमा के अन्तर्गत प्राप्त हुए हैं। जबलपुर जिले में बहुरीबन्द से राष्ट्रकूट महासामन्ताधिपति गोल्हणदेव का एक अभिलेख जैन मूर्ति पर उत्कीर्ण पाया गया है।[3] इसमें त्रिपुरी के कलचुरि शासक गयाकर्ण के शासन काल में गोल्हणदेव द्वारा शान्तिनाथ के जिनालय के निर्माण का उल्लेख है। इसी प्रकार दमोह जिले के पिपरिया से प्राप्त एक स्तम्भ लेख में, जो विक्रम संवत् ११९८ का है, राष्ट्रकूट महामाण्डलिक राणक जयत्सिंह का हेमसिंह के साथ युद्ध होने का उल्लेख है।[4] एक तीसरा अभिलेख, जो विदिशा जिले में स्थित पठारी से प्राप्त हुआ है, विक्रम संवत् ९१७ का है।[5] इसमें किसी राष्ट्रकूट परबल द्वारा गौरी (विष्णु या कृष्ण) के मंदिर में गरुड़ध्वज के निर्माण का उल्लेख है। निमाड़ जिले में स्थित जेठवई से एक राष्ट्रकूट साम्राज्ञी का शक संवत् ७०८ का एक ताम्रपत्र भी प्राप्त हुआ है।[6]

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मध्यप्रदेश के इतिहास में राष्ट्रकूटों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

उज्जयिनी तथा कान्यकुब्ज का गुर्जर-प्रतिहार वंश

आठवीं सदी ईसवी के प्रथम चरण में उज्जयिनी में एक गुर्जर-प्रतिहार राजवंश की स्थापना हुई। इस वंश का सर्वप्रथम शासक नागभट प्रथम था। उसके पूर्वजों के सम्बन्ध

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७२४
२ वही, क्रमांक ७२७-अ-आ
३. वही, क्रमांक ७३०
४. वही, क्रमांक ७२९
५. वही, क्रमांक ७२८
६. वही, क्रमांक ७२५

में हमें कुछ भी ज्ञात नहीं। उसके राज्यकाल के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। अधिकांश विद्वान उसके राज्यारोहण की तिथि ७३० ई० के लगभग तथा शासन काल ७५६ ई० तक मानते हैं। उसकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि थी अरबों के आक्रमण का प्रतिरोध कर उन्हें खदेड़ देना। इस समय अरबों ने पश्चिम भारत पर आक्रमण कर अनेक राज्यों को जीत लिया था। अरबों पर प्राप्त विजय ने उसकी प्रतिष्ठा को बढ़ाया और उसका प्रभाव नान्दीपुरी के गुजरों तथा जोधपुर के प्रतिहारों पर भी हो गया। भड़ोंच के चाहमान शासक ने भी उसकी प्रभुता को स्वीकार किया। अपने राज्यकाल में नागभट को केवल एक राजा से पराजय स्वीकार करनी पड़ी थी और वह था दक्कन का राष्ट्रकूट वंशी दन्तिदुर्ग। राष्ट्रकूटों के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि दन्तिदुर्ग ने उज्जयिनी पर आक्रमण कर गुर्जर शासक को पराजित किया तथा वहाँ हिरण्यगर्भ दान दिया। यह गुर्जर शासक नागभट प्रथम ही था, ऐसा अधिकांश विद्वानों का मत है। परन्तु दन्तिदुर्ग का यह आक्रमण अस्थायी रहा और वह शीघ्र ही वापस लौट गया।

नागभट प्रथम के दो उत्तराधिकारी उसके भतीजे ककुक्क तथा देवराज थे जिनके विषय में कुछ ज्ञात नहीं। देवराज का उतराधिकारी उसका पुत्र वत्सराज था जो एक महत्वाकांक्षी शासक था। उसका उल्लेख जैन ग्रन्थ कुवलयमाला तथा हरिवंश पुराण में आया है जिनसे ज्ञात होता है कि उसका अधिकार मालवा तथा पूर्वी राजपूताना पर था। राजस्थान से प्राप्त दो अभिलेखों से ज्ञात होता है कि मध्य राजपूताना पर भी उसका अधिकार था। कुछ विद्वानों के अनुसार उसने कन्नौज पर भी अधिकार करने का प्रयत्न किया तथा वहाँ के भंडीवंशी शासक को पराजित किया। राष्ट्रकूटों के अभिलेखों से पता चलता है कि उसने गौड़ पर भी आक्रमण किया तथा वहाँ के राजा को पराजित किया। गौड़ का शासक इस समय संभवतः पालवंशी धर्मपाल था। पालवंशी धर्मपाल भी महत्वाकांक्षी शासक था तथा उसने भी उत्तर भारत पर अपनी प्रभुता कायम करनी चाही। सम्भवतः वत्सराज और धर्मपाल का संघर्ष इसी कारण चल रहा था। इस समय दक्षिण से राष्ट्रकूटों का दूसरा आक्रमण हुआ। राष्ट्रकूट अभिलेखों के अनुसार राष्ट्रकूट शासक ध्रुव ने वत्सराज को पराजित कर उसे मरुभूमि में शरण लेने को विवश किया और इसी प्रकार उसने धर्मपाल को भी पराजित कर कन्नौज पर अधिकार कर लिया। परन्तु ध्रुव की तरह उसका आक्रमण भी अल्पकालीन था और उसके लौटने के पश्चात् कन्नौज पर धर्मपाल ने आक्रमण कर चक्रायुध को गद्दी पर बैठा दिया।

वत्सराज का उत्तराधिकारी नागभट द्वितीय था। उसका राज्यकाल ८०५ ई० से ८३३ ई० तक माना जाता है। अपने पैतृक राज्य को पुनः शक्तिशाली एवं विस्तृत करने के प्रयत्न में वह एक पराक्रमी योद्धा सिद्ध हुआ। राष्ट्रकूट अभिलेखों से ज्ञात होता है कि उसके शासन काल में राष्ट्रकूट नरेश गोविन्द तृतीय ने उत्तर भारत पर आक्रमण किया जिससे वह पराजित हुआ। यह युद्ध ८०६ ई० और ८०८ ई० के बीच हुआ होगा। संजान ताम्रपत्र से ज्ञात होता है कि नागभट के पराजय के पश्चात् कन्नौज नरेश चक्रायुध तथा गौड़ के नरेश धर्मपाल ने स्वयं ही गोविन्द के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। इस प्रकार

गोविन्द तृतीय ने त्रि-राज्य-संघर्ष में राष्ट्रकूटों की महत्ता स्थापित की। परन्तु अपने पूर्वजों की तरह वह भी शीघ्र ही अपने राज्य को वापिस चला गया और अपने घरेलू झमेलों में फँस गया। उत्तर भारत में गोविन्द तृतीय की अनुपस्थिति ने नागभट को फिर से अपनी स्थिति सुधारने का अवसर प्रदान किया। उसने कन्नौज पर आक्रमण कर वहाँ के राजा चक्रायुध को पराजित किया और कन्नौज पर अधिकार कर लिया। इस समय से कन्नौज प्रतिहारों की नयी राजधानी बन गयी। कन्नौज के पतन का समाचार मिलते ही गौड़ नरेश धर्मपाल ने नागभट से मोर्चा लेने का निश्चय किया क्योंकि कन्नौज नरेश चक्रायुध को धर्मपाल का संरक्षण प्राप्त था। परन्तु इस संघर्ष में धर्मपाल की पराजय हुई। इन विजयों के अतिरिक्त मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख के अनुसार उसने आनर्त (उत्तरी काठियावाड़) मालव (मालवा), किरात (हिमालय अंचल का राज्य), तुरुष्क (पश्चिम भारत का मुस्लिम राज्य), वत्स (कौशाम्बी प्रदेश) तथा मत्स्य (पूर्वी राजपूताना) पर आक्रमण कर जबरदस्ती छीन लिया। इस प्रकार नागभट द्वितीय अपने वंश के विप्लुत गौरव को पुनः प्राप्त करने में सफल हो गया।

नागभट द्वितीय का उत्तराधिकारी उसका पुत्र रामभद्र हुआ। उसका राज्यकाल ८३३ ई० से ८३६ ई० के बीच केवल तीन वर्ष का था और अशान्ति, अव्यवस्था और संकटों से पूर्ण था। इस संकटपूर्ण स्थिति का पता बराह तथा दौलपुर अभिलेखों से चलता है जिनमें उसके पिता द्वारा दिये गये दान सक्रम न रह सके और बाद में उसके उत्तराधिकारी मिहिरभोज के समय उनका पुष्टिकरण किया गया। मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख से भी रामभद्र के शासन काल में संकट का अनुमान किया जा सकता है। यथासम्भव यह संकट पाल नरेश के आक्रमण के कारण आया होगा। उसके राज्य के विस्तार के विषय में भी कुछ निश्चित रूप से कहना कठिन है। इतना निश्चित है कि ग्वालियर का प्रदेश उसके अधीन था, क्योंकि वहाँ वाईलभट्ट नामक पदाधिकारी उसकी ओर से शासन कर रहा था। यह तथ्य उसके शासन काल के एक अभिलेख से पता चलता है, जो ग्वालियर से प्राप्त हुआ है।[1]

रामभद्र का उत्तराधिकारी उसका पुत्र मिहिरभोज प्रथम था। उसका शासन काल ८३६ ई० से ८८५ ई० के बीच माना जाता है। मिहिरभोज अपने वंश का पराक्रमी राजा था जिसने अपने पिता के कमजोर शासन काल में छिन्न-भिन्न होने वाले साम्राज्य को फिर से सुसंगठित कर समृद्ध बनाया।

भोज की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी उसके द्वारा बुन्देलखण्ड पर पुनः अधिकार करना। बुन्देलखण्ड प्रतिहारों के अधीन था, परन्तु रामभद्र के कमजोर शासन काल का लाभ उठाकर सम्भवतः चन्देलों ने वहाँ अपनी स्वतन्त्रता घोषित कर दी थी। परन्तु भोज ने कालंजर-मण्डल पर अधिकार कर फिर से बुन्देलखण्ड पर अपनी प्रभुता स्थापित की। यह तथ्य बराह अभिलेख से स्पष्ट हो जाता है। इसी प्रकार भोज ने राजपूताने पर भी

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७३५-इ

अपनी प्रभुता पुन: स्थापित कर ली। रामभद्र के शासन काल में मण्डोर की प्रतिहार शाखा ने इस भू-भाग पर अपनी प्रभुता स्थापित कर ली थी तथा सम्भवत: स्वतन्त्र हो गये थे। भोज के इस भू-भाग पर पुन: अधिकार का पता दौलतपुर तथा प्रतापगढ़ के अभिलेखों से चलता है।

कहला अभिलेख से ज्ञात होता है कि सरयूपार के कलचुरि वंशी गुणाम्बोधिदेव ने भोजदेव से भूमि प्राप्त की थी। अधिकांश विद्वान् इस भोज को प्रतिहार मिहिरभोज मानते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि सरयूपार का तत्कालीन कलचुरिवंश मिहिरभोज के अधीन था।

जयपुर से प्राप्त चाट्सू अभिलेख से पता चलता है कि गुहिल वंशी हर्षराज भोज का सामन्त था तथा उसकी ओर से सम्भवत: उसने गौड़ के राजा से युद्ध किया था। इसी प्रकार ८२२ ई० के पहेवा अभिलेख से सिद्ध होता है कि पंजाब पर, विशेषतया करनाल प्रदेश पर, भोज का अधिकार था। इसी प्रकार काठियावाड़ पर भोज के प्रभाव का पता उना ताम्रपत्र से लगता है जिसमें बलवर्मन् नामक शासक का उल्लेख है। कुछ विद्वानों के अनुसार यह बलवर्मन् भोज के सामन्त के रूप में काठियावाड़ में शासन कर रहा था।

मध्यप्रदेश में भोज के तीन अभिलेख मिले हैं जिनमें से वि० सं० ८३२ तथा ८३३ के दो लेख ग्वालियर से[१] तथा एक लेख ग्वालियर जिले के सागर-ताल नामक स्थान से प्राप्त हुआ है।[२] इन तीनों अभिलेखों से स्पष्ट हो जाता है कि मध्यप्रदेश के ग्वालियर क्षेत्र पर मिहिरभोज का अधिकार था।

मिहिरभोज का संघर्ष दक्कन के राष्ट्रकूटों से भी हुआ। वह राष्ट्रकूट नरेश अमोघवर्ष और उसके पुत्र तथा उत्तराधिकारी कृष्ण द्वितीय क्रमश: दोनों का ही समकालीन था। अमोघवर्ष के निर्बल शासन का लाभ उठाकर भोज ने उज्जैन प्रदेश पर अधिकार करते हुए नर्मदा नदी तक अपना राज्य विस्तार कर लिया। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि अमोघवर्ष के गुजरात के सामन्त ध्रुव द्वितीय ने मिहिरभोज से लोहा लिया तथा उसे पराजित किया। भोज का राष्ट्रकूटों से यह संघर्ष अमोघवर्ष के उत्तराधिकारी कृष्ण द्वितीय के समय में भी चलता रहा और दोनों नरेशों के अभिलेख उज्जयिनी प्रदेश पर अपनी-अपनी विजय का दावा करते हैं। सम्भवत: सफलता कभी राष्ट्रकूटों को मिलती थी तो कभी प्रतिहारों को। अत: मिहिरभोज के शासन काल में यह झगड़ा अनिर्णित रहा।

इसी प्रकार गौड़ के पाल नरेश देवपाल के साथ भी उसका संघर्ष चला जिसमें उसे सफलता भी मिली और असफलता भी।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मिहिरभोज का राज्य उत्तर में हिमालय की तराई तक, पूर्व में पाल राज्य की पश्चिमी सीमा तक, दक्षिण में बुन्देलखण्ड और कौशाम्बी तक और पश्चिम में सौराष्ट्र तक विस्तृत था। इसके अन्तर्गत राजपूताना का अधिकांश भाग

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७३५-अ-आ

२. वही, क्रमांक ७४३

भी सम्मिलित था। अरब यात्री सुलेमान ने अपने वर्णन में जिस जुज्र के राजा का वर्णन किया है, वह मिहिरभोज के सम्बन्ध में ही था। मिहिरभोज की कुछ मुद्रायें भी मिली हैं जिन पर उसे 'आदिवराह' कहा गया है। पहेवा प्रशस्ति से भोज की अन्तिम तिथि ८८४ ई० ज्ञात होती है। अतः ८८५ ई० के लगभग उसकी मृत्यु हुई होगी।

मिहिरभोज का उत्तराधिकारी उसका पुत्र महेन्द्रपाल प्रथम ८८५ ई० के लगभग गद्दी पर बैठा। राजतरंगिणी से ज्ञात होता है कि पश्चिम पंजाब, जो उसके पिता के द्वारा जीता गया था, उसके हाथ से निकल गया था काश्मीर के शासक शंकरवर्मन् द्वारा जीत लिया गया। परन्तु पूर्वी पंजाब निश्चित रूप से उसके अधीन था। केवल पश्चिम पंजाब को छोड़ अपने पिता के द्वारा दिये गये बाकी साम्राज्य को महेन्द्रपाल ने सुरक्षित रखा। उसके राज्य-वर्ष दो और उन्नीस के सात अभिलेख दक्षिण बिहार तथा उत्तरी बंगाल में मिले हैं जिनसे ज्ञात होता है कि उसने पाल शासकों से मगध तथा उत्तरी बंगाल का भाग जीत लिया था। महेन्द्रपाल के अभिलेख काठियावाड़, पूर्वी पंजाब, झांसी जिला तथा अवध से भी मिले हैं जिनके अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उसके साम्राज्य का विस्तार हिमालय से विन्ध्य तक तथा पूर्वी समुद्र से पश्चिमी समुद्र तक विस्तृत था। महेन्द्रपाल विद्या-प्रेमी एवं विद्वानों का आश्रयदाता था। उसकी सभा में संस्कृत का प्रसिद्ध विद्वान् राजशेखर रहता था जिसने अनेक ग्रन्थ लिखे जिनसे तत्कालीन भारत की सांस्कृतिक स्थिति पर प्रचुर प्रकाश पड़ता है।

महेन्द्रपाल की मृत्यु ९१० ई० के लगभग हो गयी और उसके पश्चात् सिंहासन के लिए सम्भवतः उसके दो पुत्र-भोज द्वितीय और महीपाल प्रथम में गृह-युद्ध हुआ। इस युद्ध में प्रारम्भ में भोज की विजय हुई और वह ९१० ई० से ९१३ ई० तक राज्य करता रहा। परन्तु कुछ समय पश्चात् महीपाल ने सिंहासन प्राप्त करने का पुनः प्रयत्न किया और अब उसे चन्देल नरेश हर्षदेव का समर्थन प्राप्त था। इस बार महीपाल भोज को पराजित कर कन्नौज पर अधिकार कर लिया।

विद्वानों ने महीपाल प्रथम का राज्यकाल ९१३ ई० से ९४५ ई० के बीच स्वीकार किया है। उसके तीन अन्य नाम भी मिलते हैं—विनायकपाल, हेरम्बपाल, क्षितिपाल। महीपाल बड़ा प्रतापी राजा सिद्ध हुआ यद्यपि उसे प्रारम्भ से ही अनेकानेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। गृहयुद्ध से छुटकारा पाते ही उसे राष्ट्रकूटों से युद्ध करना पड़ा। काम्बे के ताम्रपत्र के अनुसार राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र तृतीय ने मालवा पर आक्रमण किया, उज्जैन पर अधिकार कर लिया और यमुना को पार कर कन्नौज को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। इस आक्रमण के समय इन्द्र के सामन्त चालुक्य नरेश नरसिंह भी उसके साथ था। महीपाल पराजित होकर भाग गया। परन्तु अपने पूर्वजों की तरह इन्द्र तृतीय शीघ्र ही उत्तर भारत छोड़कर वापस लौट गया। अतः महीपाल ने कन्नौज पर पुनः अधिकार कर लिया तथा व्यवस्था स्थापित कर अपने वंश के प्रतिष्ठा का पुनरुद्धार किया। तत्पश्चात् उसने विजय प्रारम्भ की जिसका उल्लेख राजकवि राजशेखर के ग्रन्थ प्रचण्डपाण्डव में मिलता है। राजशेखर के अनुसार महीपाल ने मुरल (नर्मदा नदी की तटीय जाति), मेखल (अमरकंटक

प्रदेश की जाति), कलिंग (उड़ीसा), केरल (दक्षिण की चेर जाति), कुलूत (कांगड़ा में रहने वाली जाति), कुन्तल (मैसूर में रहने वाली जाति) तथा रमठ (पंजाब की एक जाति) को पराजित कर अपने अधीन कर लिया था। कुछ विद्वानों के अनुसार महीपाल ने राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र तृतीय की मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारियों को पराजित कर अपने प्रारम्भिक पराभव का बदला लिया था। महीपाल का साम्राज्य पूर्व में बिहार की पश्चिमी सीमा तक तथा पश्चिम में सौराष्ट्र तक विस्तृत था। उत्तर-पश्चिम में उसका राज्य पंजाब के कुछ भाग तक तथा दक्षिण में नर्मदा तक अवश्य विस्तृत था। परताबगढ़ (प्रतापगढ़) अभिलेख का साक्ष्य है कि उज्जैन महीपाल के राज्य के अन्तर्गत था। गुना जिले में प्राप्त विनायकपालदेव के वि० स० ९९९ के अभिलेख[1] से विदित होता है कि यह क्षेत्र भी विनायकपाल (महीपाल) के राज्य के अन्तर्गत था। ९४५ ई० के लगभग महीपाल की मृत्यु हो गयी।

महीपाल का उत्तराधिकारी उसका पुत्र महेन्द्रपाल द्वितीय हुआ। उसकी सर्वप्रथम तिथि ९४६ ई० के परताबगढ़ अभिलेख से ज्ञात होती है जिसमें महेन्द्रपाल द्वारा दशपुर (मन्दसौर) में एक ग्राम-दान देने का उल्लेख आया है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि यह प्रदेश महेन्द्रपाल के राज्य के अन्तर्गत था जहाँ उसका महादण्डनायक माधव शासन कर रहा था। महेन्द्रपाल द्वितीय ने लगभग ९४८ ई० तक राज्य किया।

महेन्द्रपाल के पश्चात् अगले १५ वर्षों में चार राजाओं का उल्लेख मिलता है। ये थे देवपाल, विनायकपाल द्वितीय, महीपाल द्वितीय तथा विजयपाल। इनका आपसी सम्बन्ध क्या था यह कहना कठिन है। देवपाल का उल्लेख ९४८ ई० के सियदोनि अभिलेख में हुआ है। विनायकपाल द्वितीय का उल्लेख खजुहारो से प्राप्त ९५४ ई० के एक अभिलेख में मिलता है। महीपाल द्वितीय का उल्लेख बयाना से प्राप्त ९५५ ई० के एक अभिलेख में आया है। इसी प्रकार विजयपाल का नाम रजोर से प्राप्त ९६९ ई० के लेख में आया है। इन चार राजाओं के शासन काल में प्रतिहार सत्ता क्षीण होने लगी थी। प्रतिहार शासकों की कमजोरी का लाभ उठाकर उनके विभिन्न सामन्त विद्रोह घोषित कर स्वतन्त्र हो गये और स्वाधीन राज्य की स्थापना की। इन सामन्तों में प्रमुख थे—गुजरात के चौलुक्य, बुन्देलखण्ड के चन्देल, मालवा के परमार, डाहल के चेदी, शाकम्भरी के चाहमान, राजस्थान के गुहिल तथा पश्चिमोत्तर प्रदेश के शाही शासक। प्रतिहार वंश के अंतिम तीन नरेश राज्यपाल, त्रिलोचनपाल तथा यशःपाल हुए। इनके शासन काल में एक ओर सामन्तों का उत्पात मचा हुआ था तो दूसरी ओर गज़नी के मुस्लिम नरेश भारत पर आक्रमण किये हुए थे। चारों ओर की इन विपत्तियों का सामना न कर सकने के कारण ग्यारहवीं सदी के पूर्वार्ध में प्रतिहार वंश का पतन हो गया।

कन्नौज के प्रतिहारों के पतन के पश्चात् भी प्रतिहारों के तीन गौण शाखाओं के राज्य करने का पता हमें मध्यप्रदेश की सीमा के अन्तर्गत प्राप्त कुछ अभिलेखों से चलता

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७४०

है। पहला वंश गुना जिले में चन्देरी के निकटवर्ती क्षेत्र पर ११वीं सदी ई० के प्रारम्भ से १३वीं सदी के अन्त तक राज्य करता था। इसका पता हमें चन्देरी तथा कदवाहा से प्राप्त अभिलेखों में चलता है।[1] अभिलेखों से प्राप्त वंश-वृक्ष से हमें नीलकण्ठ, हरिराज, भीमदेव, रणपाल, वत्सराज, स्वर्णपाल, कीर्तिपाल, अभयपाल, गोविन्दराज, राजराज, वीरराज, एवं जैत्रवर्मन के नामों का पता चलता है। इनमें से सातवें नरेश कीर्तिपाल ने कीर्तिदुर्ग (वर्तमान चन्देरी गढ़), कीर्ति-नारायण का मन्दिर तथा कीर्तिसागर का निर्माण किया। दूसरे प्रतिहार वंश का पता हमें शिवपुरी जिले में स्थित कुरैठा से प्राप्त मलयवर्मन् के वि० स० १२७७ तथा उसके भाई नरवर्मन् के वि० सं० १३०४ के ताम्रपत्रों से चलता है।[2] इन अभिलेखों से इस वंश के नटुल, प्रतापसिंह, विग्रह, मलयवर्मन तथा नरवर्मन नामक शासकों का पता चलता है। प्रतिहारों के एक तीसरे वश का पता जबलपुर तथा दमोह जिले से प्राप्त उनके लगभग दस अभिलेखों से चलता है। ये अभिलेख वि० सं० १३४४ से १३६६ के बीच के हैं तथा बाघदेव और गर्जसिंह नामक प्रतिहार शासकों से सम्बन्धित हैं[3]। इन वंशों के आपसी सम्बन्ध और तथ्य अज्ञात हैं।

चन्देल राजवंश

प्रतिहार साम्राज्य के पतन के पश्चात् पश्चिम तथा मध्य भारत में कई नये राजवंशों का उदय हुआ। इनमें बुन्देलखण्ड का चन्देल वंश सबसे महत्वपूर्ण था।

चन्देलों के उत्कीर्ण लेख और परम्परा इस विषय में एकमत हैं कि इस वंश का सम्बन्ध पौराणिक चन्द्रवंश से है। इस वंश का सर्वप्रथम राजा नन्नुक था। उसका राज्यकाल ८२५ ई० से ८४० ई० के बीच माना जाता है। खजुराहो उसकी राजधानी थी तथा निकटवर्ती क्षेत्र पर उसका अधिकार था। सम्भवतः वह गुर्जर—प्रतिहारों का सामन्त मात्र था जैसा कि उसके विरुद् 'नृपति' अथवा 'महीपति' से पता चलता है।

नन्नुक का उत्तराधिकारी उसका पुत्र वाक्पति हुआ, जिसका राज्यकाल ८४५ ई० से ८६५ ई० तक माना जाता है। उसका भी विरुद् 'क्षितिप' अथवा 'पृथ्वीपति' से ऊँचा नहीं था जिससे स्पष्ट है कि उसकी स्थिति भी सामन्त की ही थी। उसने विन्ध्य की ओर शक्ति का विस्तार किया था।

वाक्पति के दो पुत्र थे—जयशक्ति और विजयशक्ति। जयशक्ति जिसे जेज्जाक अथवा जेजा भी कहा गया है, अपने पिता का उत्तराधिकारी हुआ। उसी के नाम से चन्देलों द्वारा शासित प्रदेश का नाम जेजाकभुक्ति पड़ा। उसकी एक कन्या का नाम नट्टा था जिसका विवाह त्रिपुरी के कलचुरि शासक कोकल्ल प्रथम के साथ कर दिया गया था।

जयशक्ति का उत्तराधिकारी उसका छोटा भाई विजयशक्ति था जिसे विज्ज अथवा

---

१. प्रस्तुत ग्रंथ, क्रमांक ७३३ अ-इ तथा ७३६ अ-आ

२. वही, क्रमांक ७३४ अ-आ

३. वही, क्रमांक ७३२, ७३७, ७३८, ७३९, ७४१, ७४२, ७४४

विज भी कहा गया है। खजुराहो से प्राप्त एक अभिलेख में कहा गया है कि उसने अपनी विजय-योजना में सुदूर दक्षिण तक आक्रमण किया था। अभिलेख के उल्लेख से डॉ० मजुमदार का मत है कि उसने समकालीन पाल सम्राट देवपाल के सहयोगी के रूप में दक्षिण विजय की थी। किन्तु इतिहासकारों का एक वर्ग इस मत को स्वीकार नहीं करता।

विजयशक्ति का उत्तराधिकारी राहिल हुआ जिसका राज्यकाल ८८५ ई० से ९०५ ई० के बीच माना गया है। उसके शासन काल में कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं घटी।

राहिल की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र हर्षदेव सिंहासन पर बैठा। उसका राज्य-काल ९०५ ई० से ९२५ ई० के बीच माना गया है। वह चन्देल वंश का प्रथम महत्वपूर्ण राजा था। उसने उत्तर भारत की समकालीन राजनीति में भाग लेकर अपने वंश की प्रतिष्ठा में एक नये युग का प्रारम्भ किया। खजुराहो से प्राप्त एक अभिलेख के अनुसार उसने राजा क्षितिपालदेव को सिंहासन पर बैठाया। सम्भवतः यह क्षितिपालदेव कन्नौज का प्रतिहार शासक महीपाल प्रथम था जो दक्कन के राष्ट्रकूटों के आक्रमण के परिणामस्वरूप सिंहासनच्युत हो चुका था। इस उपलब्धि ने चन्देल-प्रतिष्ठा की अभूतपूर्व वृद्धि की। उसने चाहमान कुमारी कंचुका से विवाह किया जिसके परिणामस्वरूप चन्देलों की शक्ति और प्रतिष्ठा में और भी वृद्धि हुई।

हर्ष की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र यशोवर्मन् सिंहासन पर बैठा। उसका शासन काल ९२५ ई० से ९५० ई० के बीच माना जाता है। प्रतिहार साम्राज्य के पतनोन्मुख स्थिति का लाभ उठाकर उसने अपने साम्राज्य का विस्तार किया। उसने कालंजर को जीतकर अपने अधिकार-क्षेत्र का विस्तार यमुना के तट तक कर लिया। बुन्देलखण्ड में अपनी स्थिति मजबूत कर उसने पूर्व तथा पश्चिम की ओर बढ़कर अपने साम्राज्य का विस्तार किया। खजुराहो से प्राप्त ९५४ ई० के अभिलेख के अनुसार उसने गौड़, खष, कोसल, चेदि, कुरु, मिथिला, मालवा, काश्मीर तथा गुर्जरों की विजय की। इस अभिलेख के अनुसार उसने एक भव्य विष्णु मन्दिर का निर्माण कराया जो खजुराहो का वर्तमान लक्ष्मण मन्दिर है। इस मन्दिर में प्रतिष्ठित वैकुण्ठनाथ की प्रतिमा को यशोवर्मन् ने हेरम्बपाल के पुत्र हयपति देवपाल से प्राप्त किया था।

यशोवर्मन् की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र धंग गद्दी पर बैठा जिसका शासन काल ९५० ई० से १००८ ई० तक रहा। खजुराहो में उसके राज्यकाल के वि० सं० १०११ तथा १०५९ के अभिलेख मिले हैं।[1] इनके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश के नन्यौरा से उसके राज्यकाल का वि० सं० १०५५ का अभिलेख मिला है। उसके तथा उसके उत्तराधिकारियों के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि उसके राज्यकाल में चन्देल साम्राज्य और सुदृढ़ तथा विस्तृत हुआ। चन्देल वंश का वह सर्वप्रथम राजा था जिसने क्षीण प्रतिहार सत्ता को अस्वीकार करके स्वाधीनता की घोषणा की। गोपाद्रि (ग्वालियर) जो प्रतिहार सम्राट के अधिकार-क्षेत्र में था, पर आक्रमण कर धंग ने उसे अपने साम्राज्य में मिला लिया। परन्तु

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७४९ आ-३

उसकी ग्वालियर की विजय अस्थायी रही क्योंकि कच्छपघात् वज्रदामन् ने ९७७ ई० के पूर्व ग्वालियर को जीत लिया। धंग के साम्राज्य की सीमा कालिंजर से मालव नदी (अर्थात् बेतवा) तक, मालव नदी से कालिंदी (अर्थात् यमुना) तक, कालिंदी से चेदि राज्य तक तथा चेदि राज्य से गोपाद्रि तक फैली थी। उसने भारत के अन्य भागों पर भी दूर-दूर तक आक्रमण किया। खजुराहो से प्राप्त १२०२ ई० के अभिलेख के अनुसार कोसल, क्रथ, सिंहल तथा कुन्तल के नरेश उसकी आज्ञायें शिरोधार्य करते थे। काँची, आन्ध्र, राढ़ और अंग के शासकों की पत्नियाँ उसकी कारागारों में थीं। निस्सन्देह इस अभिलेख में वर्णित कुछ तथ्य अतिशयोक्तिपूर्ण हैं, परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि धंग चन्देल वंश का प्रतिभाशाली और वीर शासक था। उसके शासन काल में पंजाब के शाही शासक जयपाल के राज्य पर अमीर सुबुक्तगीन द्वारा आक्रमण किया गया। जयपाल ने मुस्लिम आक्रमण का मुकाबला करने के लिए भारतवर्ष के हिन्दू राजाओं का गुट निर्माण किया। मुस्लिम इतिहासज्ञों के अनुसार इस गुट में कालिंजर का शासक भी था, जो यथासम्भव धंग ही था। विजेता के रूप में धंग महान् था, किन्तु कला और स्थापत्य के संरक्षक के रूप वह और भी महान् था। उसके राज्यकाल में खजुराहो के दो श्रेष्ठतम मन्दिरों—पार्श्वनाथ और विश्वनाथ का निर्माण हुआ।

धंग के पश्चात् उसका पुत्र गंड १००८ ई० के लगभग अल्पकाल के लिए सिंहासन पर बैठा। उसका शासन काल शान्तिपूर्ण रहा। खजुराहो के जगदम्बी तथा चित्रगुप्त मन्दिर सम्भवतः उसी के राज्यकाल में निर्मित हुए।

गंड के बाद उसका पुत्र विद्याधर १०१७ ई० के लगभग सिंहासन पर बैठा। उसका राज्यकाल १०२९ तक रहा। उसके राज्यकाल में १०१९ ई० तथा १०२२ ई० में कालंजर पर दो-बार सुलतान महमूद द्वारा आक्रमण किया गया जिसका उसने डटकर मुकाबला किया तथा किले की रक्षा की। इसके पूर्व १०१८ ई० में सुलतान महमूद ने कन्नौज पर आक्रमण किया था। उस समय कन्नौज नरेश राज्यपाल ने छिपकर अपनी प्राणरक्षा की थी। विद्याधर ने राज्यपाल को देश-द्रोही माना और महमूद के लौटते ही, दण्ड-स्वरूप उस पर आक्रमण कर उसे मार डाला। इसके अतिरिक्त विद्याधर ने मालवा के परमार शासक भोज तथा 'कलचुरि चन्द्र' के साथ युद्ध कर विजय प्राप्त किया। उसके पुत्र विजयपाल ने कलचुरि शासक गांगेयदेव को पराजित किया। कुछ विद्वानों का विचार है कि खजुराहो का कंदरिया महादेव मन्दिर उसी के द्वारा निर्मित हुआ होगा।

विद्याधर के पश्चात् उसका पुत्र विजयपाल सिंहासन पर बैठा। उसका राज्यकाल १०३० ई० से १०५० ई० के बीच माना गया है। उसके राज्यकाल का कोई अभिलेख प्राप्त नहीं हुआ है। अन्य प्रमाणों से ज्ञात होता है कि उसके कमजोर शासन काल में चन्देलों को त्रिपुरी के कलचुरि तथा ग्वालियर के कच्छपघातों का पराभव स्वीकार करना पड़ा।

विजयपाल का उत्तराधिकारी उसका छोटा भाई देववर्मन् था जिसका राज्यकाल १०५० ई० से १०६० ई० के बीच माना गया है। उसका एक ताम्रपत्र जो वि० सं०

९

११०७ का है नन्यौरा[1] से तथा दूसरा ताम्रपत्र जो वि० सं० ११०८ का है, चरखारी[2] से प्राप्त हुआ है। उसका राज्यकाल विपत्तियों का समय था, जब त्रिपुरी के कलचुरि शासक कर्ण ने चन्देलों को पराजित कर उन्हें अपनी अधीनता स्वीकार करवायी।

देववर्मन् का उत्तराधिकारी उसका छोटा भाई कीर्तिवर्मन् था जिसका राज्यकाल १०६० ई० से ११०० ई० के बीच माना गया है। उसके राज्यकाल के दो अभिलेख उत्तर प्रदेश में कालिंजर[3] तथा देवगढ़[4] से प्राप्त हुए हैं जो क्रमशः वि० सं० ११४७ तथा ११५४ के है। इन तथा अन्य अभिलेखों से और कृष्णमिश्र द्वारा रचित 'प्रबोधचन्द्रोदय' नामक नाटक से ज्ञात होता है कि उसने अपने शासन काल में चन्देल शक्ति का पुनरुत्थान किया। अपने सामन्त गोपाल की सहायता से उसने कलचुरि राजा कर्ण को पराजित कर अपने राज्य को कलचुरि साम्राज्य के आधिपत्य से मुक्त किया। कुछ विद्वानो के अनुसार १०९० ई० के पूर्व उसने पंजाब के शासक महमूद के कालिंजर पर आक्रमण के समय उसका मुकाबला कर दुर्ग की रक्षा की। उसके एक मन्त्री वत्सराज ने कीर्तिगिरि नामक दुर्ग का निर्माण करवाया। उसने सोने के सिक्के भी प्रचलित किये जो कलचुरि शासक गांगेयदेव के सिक्कों की शैली से मिलते हैं।

कीर्तिवर्मन् के पश्चात् उसका पुत्र सल्लक्षणवर्मन् गद्दी पर बैठा। उसका राज्यकाल ११०० ई० से १११५ ई० के बीच था। उसका कोई अभिलेख अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है, परन्तु अन्य अभिलेखों के वर्णन से ज्ञात होता है कि उसने परमार शासक नरवर्मन् को पराजित कर मालवा को लूटा तथा त्रिपुरी के कलचुरि शासक को भी पराजित किया, जो सम्भवतः कर्ण का उत्तराधिकारी यशःकर्ण रहा होगा। उसने अन्तर्वेदी क्षेत्र (गंगा और यमुना के बीच का भाग) पर भी आक्रमण कर वहाँ पर राज्य कर रहे गाहड़वाल शासक को पराजित कर अपना प्रभाव स्थापित करने का प्रयत्न किया।

जयवर्मन् जो अपने पिता सल्लक्षणवर्मन् के पश्चात् गद्दी पर बैठा, १११५ ई० से ११२० ई० तक राज्य किया। उसका केवल एक अभिलेख जो वि० सं० ११७३ का है खजुराहो से प्राप्त हुआ है। यह अभिलेख धंग के खजुराहो अभिलेख के अन्त में उत्कीर्ण किया गया है।[5] उसके चाँदी तथा ताँबे के सिक्के भी मिले हैं। इस तथा अन्य अभिलेखों और सिक्कों से उसके राज्यकाल की घटनाओं का कोई विवरण नहीं मिलता। सम्भवतः उसे गाहड़वाल शासक गोविन्दचन्द्र के हाथों पराजय स्वीकार करना पड़ा, जिसके कारण उसने राज्य त्याग कर शासन-सूत्र को अपने चाचा पृथ्वीवर्मन् को समर्पित कर दिया।

जयवर्मन् का उत्तराधिकारी पृथ्वीवर्मन् हुआ जिसका शासन काल ११२० ई० से

---

१. इ० ए० भाग १६, पृ० २०१-२, २०४-७

२. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७५२-अ

३. आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९३५-३६, पृ० ९३-९४

४. इ० ए० भाग १८, पृ० २३७-३९

५. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७४९-उ

११२९ ई० के बीच माना जाता है। उसके राज्यकाल की कोई भी महत्वपूर्ण घटना का वर्णन प्राप्त नहीं है। जनरल कनिंघम को उसके कुछ ताँबे सिक्के मिले थे। ये ही इस राजा के इतिहास के एकमात्र साधन हैं।

पृथ्वीवर्मन् का उत्तराधिकारी उसका यशस्वी पुत्र मदनवर्मन् था। उसका राज्य-काल, जो ११२९ ई० से ११६३ ई० के बीच माना जाता है, चन्देलों के इतिहास में युगान्तरकारी सिद्ध हुआ। उसके प्रयत्नों से चन्देल शक्ति का एक बार फिर से उत्थान हुआ। उसके राज्यकाल के लगभग १३ प्राप्त अभिलेखों में छ अभिलेख मध्यप्रदेश के अजयगढ़,[१] छतरपुर,[२] खजुराहो,[३] और पपौरा[४] से प्राप्त हुए हैं तथा शेष उत्तरप्रदेश के कालिंजर, मऊ, औगासी तथा महोबा से मिले हैं। मदनर्मन् के चाँदी के ४८ सिक्कों की एक निधि भी रीवा जिले से प्राप्त हुई है।[५] इसके अतिरिक्त उसके राज्यकाल की घटनाओं का उल्लेख उसके परवर्ती शासक तथा समकालीन अन्य वंशों के शासकों के अभिलेखों में मिलता है। इन सबका अध्ययन कर विद्वानों ने उसके राज्य की सीमा को उत्तर में यमुना से लेकर दक्षिण में नर्मदा तक तथा पूर्व में रीवा से लेकर दक्षिण-पश्चिम में वेतवा नदी तक माना है। उसने मालवा के परमार शासक यशोवर्मन् को पराजित कर विदिशा को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। विदिशा के लिए सम्भवतः उसे गाहड़वाल शासक गोविन्दचन्द्र के साथ भी युद्ध करना पड़ा। उसके द्वारा चेदि शासक को भी पराजित करने का वर्णन मिलता है। यह चेदि शासक यथासम्भव गयाकर्ण था। उसके राज्यकाल में गुजरात के चौलुक्य शासक जयसिंह सिद्धराज ने धार तथा महोबा को जीतने के पश्चात् उसकी राजधानी पर आक्रमण किया जिसे मदनवर्मन् ने युद्ध कर रक्षा की। इस युद्ध के पश्चात् विदिशा का क्षेत्र मदनवर्मन् के हाथों से निकल गया। इन तथ्यों से ज्ञात होता है कि मदनवर्मन् के राज्यकाल में चन्देलों की शक्ति को केवल पुनर्जीवन ही प्राप्त नहीं हुआ बल्कि उसका विस्तार भी हुआ।

मदनवर्मन् का उत्तराधिकारी उसका पोता परमर्दीदेव था जिसका शासन काल ११६५ ई० से १२०२ ई० के बीच माना गया है। कुछ विद्वान् उसके तथा मदनवर्मन् के बीच यशोवर्मन् द्वितीय का शासन काल भी थोड़े समय के लिए मानते हैं। परमर्दीदेव के राज्यकाल के बारह अभिलेख अभी तक प्राप्त हो चुके हैं जिनमें से छः मध्यप्रदेश की सीमा के अन्तर्गत अजयगढ़[६], अहाड़,[७] चरखारी,[८] मदनपुर[९] और

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७४५-अ
२. वही, क्रमांक ७५३
३. वही, क्रमांक ७४९ ऊ-ऐ
४. वही, क्रमांक ७५७
५. वही, क्रमांक २३९१
६. वहीं, क्रमांक ७४५ आ-इ
७. वही, क्रमांक ७४६-आ
८. वही, क्रमांक ७५२-आ
९. वही, क्रमांक ७५९

सेमरा[१] से प्राप्त हुए हैं तथा शेष उत्तर प्रदेश के महोबा, पचार, बटेश्वर, इच्छावर और कालंजर से मिले हैं। इन तथा अन्य अभिलेखों से पता चलता है कि उसने अपने राज्यकाल में चन्देल साम्राज्य को यथावत् सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया। उनने गुजरात के समकालीन चौलुक्य शासक को पराजित कर बिदिशा क्षेत्र को फिर से अपने साम्राज्य के अन्तर्गत कर लिया। यह घटना ११७३ ई० के पश्चात् हुई। ११८२ ई० के लगभग दिल्ली के चौहान नरेश पृथ्वीराज तृतीय ने उसके राज्य पर आक्रमण कर उसे पराजित कर दिया। यद्यपि चन्देल अभिलेखों में इस महत्वपूर्ण घटना का कोई उल्लेख नहीं है, तथापि चन्दबरदाई द्वारा रचित पृथ्वीराजरासो में इसका विषद् वर्णन आया है। सारंगधरपद्धति तथा प्रबन्ध-चिन्तामणि में भी इस संघर्ष का उल्लेख किया गया है। परमर्दीदेव पर एक और संकट १२०२ ई० में आया जब कुतुबुद्दीन ने कालिजर पर आक्रमण किया। परमर्दीदेव ने थोड़े समय तक उसका सामना करने के पश्चात् आत्मसमर्पण कर दिया तथा अपमानजनक संधि कर ली। समकालीन मुस्लिम इतिहासकारों द्वारा वर्णित घटनाओं को आधार बनाकर कुछ विद्वानों का कहना है कि परमर्दीदेव के मंत्री अजयदेव ने इस अपमान-जनक संधि की शर्तों को ठुकरा दिया तथा परमर्दीदेव की हत्या कर प्रतिरोध को पुनः प्रारम्भ कर दिया। परन्तु अन्ततः अजयदेव को भी आत्मसमर्पण करना पड़ा और इस प्रकार कालिजर का पतन हो गया। कालिजर को जीतने के बाद कुतुबुद्दीन महोबा पहुँचा तथा उसे जीत कर अपने राज्य में मिला लिया। परन्तु शीघ्र ही इन इलाकों को परमर्दी-देव के उत्तराधिकारी द्वारा पुनः जीत लिया गया।

परमर्दीदेव का उत्तराधिकारी उसका पुत्र त्रैलोक्यवर्मन् हुआ जिसका शासन काल १२०३ ई० से १२५० ई० के बीच माना गया है। उसके राज्यकाल के आठ अभिलेख मिले हैं, जिनमें मध्यप्रदेश की सीमा के अन्तर्गत पाये जाने वाले सात अभिलेख रीवा[२], अजयगढ़,[३], सागर,[४] गर्रा,[५] से प्राप्त हुए हैं तथा एक ताम्रपत्र सतना के निकट रामबन में संरक्षित है।[६] उत्तरप्रदेश में उसका एक अभिलेख तेरही से प्राप्त हुआ है। इन तथा समकालीन अभिलेखों से ज्ञात होता है कि उसने १२०५ ई० के पूर्व ककड़ादह में तुर्कों को पराजित कर कालंजर को पुनः जीत लिया। अतः उसके द्वारा धारण किया हुआ 'कालंजराधिपति' का विरुद् मिथ्या दम्भ नहीं था। १२३३ ई० के लगभग तुर्कों ने कालंजर को जीतने का फिर से प्रयत्न किया परन्तु वे असफल रहे। त्रैलोक्यवर्मन् ने

१. प्रस्तुत ग्रंथ, क्रमांक ७६३
२. वही, क्रमांक ७६१ अ-इ
३. वही, क्रमांक ७४५-ई
४. वही, क्रमांक ७६२
५. वही, क्रमांक ७५०
६. वही, क्रमांक ७६०

१२११-१२ ई० के लगभग रीवा को जीत कर बघेलखण्ड के एक भाग पर भी अधिकार कर लिया। उसने त्रिपुरी के समकालीन कलचुरि शासक विजयसिंह को भी पराजित कर डाहल मण्डल के एक भाग पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार त्रैलोक्यवर्मन् का राज्य बेतवा नदी के पास ललितपुर के पश्चिम से लेकर पूर्व में सोन नदी के आरम्भिक भाग तक विस्तृत था। उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले में प्राप्त उसके ताँबे सिक्कों से पता चलता है कि उसके साम्राज्य का उत्तर की ओर विस्तार यहाँ तक था। गर्रा से प्राप्त उसके अभिलेख से दक्षिण की ओर उसके साम्राज्य का विस्तार २४° अक्षांश तक प्रमाणित होता है। उसके अभिलेखों से उसके कुछ अधिकारियों के नामों का पता चलता है जिन्होंने संकट काल में शत्रुओं को पराजित कर त्रैलोक्यवर्मन् की प्रभुता को मजबूत किया। उसके राज्य की समुन्नत आर्थिक दशा का अन्दाज उसके द्वारा प्रचलित स्वर्ण द्रम्मों से लगता है।

त्रैलोक्यवर्मन् का उत्तराधिकारी उसका पुत्र वीरवर्मन् हुआ जिसका शासन काल १२५० ई० से १२८६ ई० के बीच माना जाता है। उसके राज्यकाल के दस अभिलेख प्राप्त हुए हैं जिनमें से झाँसी तथा कालिंजर से प्राप्त दो को छोड़ शेष सभी मध्यप्रदेश के सीमान्तर्गत अजयगढ़[१], गुड़हा[२], चरखारी[३], तथा दाहि[४] से प्राप्त हुए हैं। इन अभिलेखों से ज्ञात होता है कि उसने अपने पिता के साम्राज्य को अक्षुन्न रखा। कुछ साधारण संघर्षों को छोड़कर उसका राज्यकाल शान्ति से व्यतीत हुआ। अभिलेखों से उन कर्मचारियों के नामों का पता लगता है जिन्होंने राजा की महत्वपूर्ण सेवा की। दाहि ताम्रपत्र से ज्ञात होता है कि उसका पाने वाला मलय अत्यन्त यशस्वी और महत्वपूर्ण योद्धा था जिसने ग्वालियर के नरेश हरिराज को, नलपुर (नरवर) के नरेश गोपाल को तथा मथुरा के राजा को पराजित किया। उसके अधिकारी राउत् आभी ने दम्युडवर्मन् के विरुद्ध सोंधी में लड़े गये युद्ध में वीरता का प्रदर्शन किया। वीरवर्मन् का एक विशेष प्रकार का सोने का द्रम्म खजुराहो से प्राप्त हुआ है।[५]

वीरवर्मन् का उत्तराधिकारी भोजवर्मन् हुआ। उसका राज्यकाल १२८६ ई० से १२८८ ई० के बीच तीन वर्षों तक रहा। उसके राज्यकाल के तीन अभिलेख अजयगढ़ से[६] तथा एक ईश्वरमऊ[७] से प्राप्त हुए हैं। इन अभिलेखों से उसके राज्यकाल की घटनाओं का कोई पता नहीं चलता।

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७४५-उ-ओ
२. वही, क्रमांक ७५१
३. वही, क्रमांक ७५२-इ
४. वही, क्रमांक ७५५
५. वही, क्रमांक २३९०
६. वही, क्रमांक ७४५-ओ-ख
७. वही, क्रमांक ७४७

भोजवर्मन् का उत्तराधिकारी हम्मीरवर्मन् १२८८ ई० के लगभग गद्दी पर बैठा तथा १३१० ई० तक राज्य करता रहा। उसके राज्यकाल के तीन अभिलेख अजयगढ़,[१] चरखारी[२] तथा बम्हनी[३] से प्राप्त हुए हैं जिससे विद्वानों का अनुमान है कि वह कालिंजर, अजयगढ़ तथा निकटवर्ती क्षेत्र के अतिरिक्त डाहल मण्डल पर भी अधिकार किये हुए था। अलाउद्दीन खिलजी ने १३०९ ई० में दमोह-जबलपुर क्षेत्र पर आक्रमण कर इस क्षेत्र (अर्थात् डाहल मण्डल) को अपने साम्राज्य के अन्तर्गत कर लिया। अतः १३०८-०९ ई० के बीच चन्देलों का आधिपत्य इस क्षेत्र पर से समाप्त हो गया। परन्तु वे अजयगढ़-कालिंजर क्षेत्र पर राज्य करते रहे।

हम्मीरदेव का उत्तराधिकारी वीरवर्मन् द्वितीय था, परन्तु उसके सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात नहीं। उसके बाद चन्देलों की सत्ता का तब दर्शन होता है, जब कालिंजर के राजा कीरतसिंह ने १५४४ ई० में शेरशाह सूरी का सामना किया था। उसकी कन्या दुर्गावती का परिणय गोंडवाना के राजा दलपतसिंह के साथ १५४५ ई० में हुआ। दलपति-सिंह की मृत्यु के पश्चात् वह अपने अल्पवयस्क पुत्र की संरक्षिका के रूप में शासन करती रही। मुगल सम्राट अकबर ने जब १५६४ ई० में गोंडवाना पर आक्रमण किया तो दुर्गावती ने अभूतपूर्व बहादुरी से उसका सामना किया तथा अन्तिम श्वास तक युद्ध को संचालित कर वीरगति को प्राप्त हुई। कालिंजर के चन्देल वंश की वह अन्तिम ज्ञात सन्तान थी जिसने अपने वंश के गौरव के अनुकूल वीरता का उदाहरण रखा।

परमार राजवंश

नवीं सदी ई० के पूर्वार्ध में मालवा में एक नवीन राजवंश का उदय हुआ जो परमार राजवंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस वंश का सर्वप्रथम राजा उपेन्द्र माना जाता है। उसने अपना जीवन राष्ट्रकूट अथवा गुर्जर-प्रतिहारों के सामन्त के रूप में प्रारम्भ किया।

उपेन्द्र का उत्तराधिकारी उसका पुत्र वैरिसिंह प्रथम था। उसके शासन काल की कोई भी घटना ज्ञात नहीं है।

वैरिसिंह का उत्तराधिकारी सीयक प्रथम था। पद्मगुप्त वैरिसिंह और सीयक प्रथम का नामोल्लेख नहीं करता। इससे अनुमान होता है कि ये दोनों साधारण योग्यता के सामन्त शासक थे।

सीयक प्रथम की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र वाक्पति प्रथम राजा हुआ। डॉ० गंगूली के मतानुसार इसने अपने स्वामी राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र तृतीय के साथ प्रतिहार नरेश महीपाल के विरुद्ध युद्ध किया था। उसके राज्यकाल की और कोई घटना ज्ञात नहीं है।

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७४५-घ
२. वही, क्रमांक ७५२-ई
३. वही, क्रमांक ७५८

वाक्‌पति का उत्तराधिकारी उसका पुत्र वैरिसिंह द्वितीय सिंहासन पर बैठा। उसके राज्यकाल में कन्नौज के प्रतिहार शासक महीपाल प्रथम ने अपने सामन्त सरयूपार के कलचुरि वंशी भामानदेव के साथ मिलकर मालवा पर आक्रमण किया तथा उसे जीत कर उज्जयिनी में एक प्रतिहार शासक नियुक्त किया। परन्तु उदयपुर प्रशास्ति से ज्ञात होता है कि कुछ समय पश्चात् ही वैरिसिंह ने मालवा फिर से जीत लिया।

वैरिसिंह द्वितीय के पश्चात् उसका पुत्र सीयक द्वितीय गद्दी पर बैठा। वह बड़ा प्रतापी एवं योग्य राजा सिद्ध हुआ। परमार वंश का यही सर्वप्रथम स्वतन्त्र राजा था, जिसने राष्ट्रकूटों की प्रभुता को अस्वीकार कर अपने वंश को स्वतन्त्र घोषित कर दिया। 'नवसाहसांक-चरित' के अनुसार उसने हूण मण्डल के राजा को पराजित किया। सम्भवतः इसने चालुक्य नरेश अवनिवर्मन् योगिराज द्वितीय से भी युद्ध कर उसे पराजित किया। उसे चन्देल वंश के नरेश यशोवर्मन् के साथ भी युद्ध करना पड़ा जिससे वह पराजित हो गया और चन्देलों का साम्राज्य बेतवा नदी तक विस्तृत हो गया। उसकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि थी—राष्ट्रकूटों के साथ युद्ध कर उन्हें पराजित करना। राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण तृतीय की मृत्यु के पश्चात् सीयक ने राष्ट्रकूटों से सम्बन्ध विच्छेद कर स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। राष्ट्रकूट नरेश खोट्टिग ने उसे दमन करने के लिए उस पर आक्रमण कर दिया। नर्मदा नदी के तट पर दोनों पक्षों द्वारा भयंकर युद्ध लड़ा गया जिसमें सीयक विजयी हुआ। सीयक द्वितीय ने राष्ट्रकूटों की राजधानी मान्यखेट तक खोट्टिग का पीछा किया और उस नगरी को खूब लूटा। इस विजय के परिणामस्वरूप परमार राज्य दक्षिण में ताप्ती नदी तक विस्तृत हो गया।

९७२ ई० के लगभग सीयक द्वितीय की मृत्यु हो गयी और उसके पश्चात् उसका पुत्र मुंज सिंहासन पर बैठा। 'प्रबन्ध-चिन्तामणि' के अनुसार मुंज सीयक का गोद लिया हुआ पुत्र था, जिसके गोद लेने के पश्चात् सीयक के अपने पुत्र सिन्धुराज का जन्म हुआ। परन्तु सीयक ने निर्णय लिया था कि उसकी मृत्यु के बाद मुज ही राजा बने। मुंज बड़ा पराक्रमी राजा सिद्ध हुआ। उसके दो नाम वाक्‌पतिराज (द्वितीय) तथा उत्पलराज काफी प्रचलित थे। अभिलेखों में उसके विरुद् अमोघवर्ष, पृथ्वीवल्लभ तथा श्रीवल्लभ का प्रयोग किया गया है। वि० सं० १०३१ से १०४७ के बीच के उसके छः अभिलेख अभी तक प्राप्त हुए हैं।[१] इन तथा समकालीन अन्य अभिलेखों से उसके राज्यकाल की घटनाओं का पता चलता है।

मुंज को अपने पड़ोसी राज्य त्रिपुरी के कलचुरियों से युद्ध करना पड़ा। समकालीन त्रिपुरी शासक युवराजदेव द्वितीय था जिसे उसने पराजित कर उसकी राजधानी त्रिपुरी पर अधिकार कर लिया। परन्तु वह कलचुरि-राज्य के किसी भाग को अपने राज्य में मिला नहीं सका।

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७६६-अ-इ, ७७५, ७७२

मुंज को मेवाड़ के गुहिल वंशी शासकों से भी युद्ध करना पड़ा। समकालीन गुहिल वंशी शासक शक्तिकुमार था। मुंज ने उसपर आक्रमण कर पराजित किया तथा उसकी राजधानी आघाट को खूब लूटा।

गुहिलों के पड़ोसी चाह्मान थे, जो नड्डुल से राज्य कर रहे थे। समकालीन चाह्मान शासक बलिराज था। मुंज ने उस पर आक्रमण कर आबू पर्वत तथा किराडू तक के प्रदेश पर अधिकार कर लिया। तत्पश्चात् मुंज ने चाह्मानों की राजधानी नड्डुल पर अधिकार करना चाहा परन्तु बलिराज ने उसके आक्रमण को विफल कर दिया।

मुंज को सम्भवतः हूणों से भी युद्ध करना पड़ा, जैसा कि कन्थेरी अभिलेख से ज्ञात होता है।

मुंज ने गुजरात के चालुक्य वंशी शासक मूलराज के राज्य पर भी आक्रमण किया। मूलराज ने उसे रोकने की कोशिश की, परन्तु पराजित होकर सपरिवार मारवाड़ के मरुस्थल में शरण ली।

गुजरात को जीतने के पश्चात् मुंज का ध्यान लाट देश की ओर गया, जो माही और ताप्ती नदियों के बीच में था। इस समय यहाँ दक्षिण के चालुक्य शासक तैलप द्वितीय का सेनापति बारप्प शासन कर रहा था। मुंज ने उसे पराजित कर दिया।

उदयपुर प्रशस्ति के अनुसार मुंज ने चोलों और केरलों को भी पराजित किया। परन्तु अधिकांश विद्वान् इस कथन को सन्देह की दृष्टि से देखते हैं।

मुंज का प्रमुख शत्रु दक्षिण का चालुक्य सम्राट तैलप द्वितीय था। मुंज इसे छः बार पराजित कर चुका था, परन्तु फिर भी उसका पूर्ण रूप से दमन नहीं हुआ था। अतः मुंज ने उसे पूर्णतया दमन करने के उद्देश्य से उस पर शक्तिशाली ढंग से आक्रमण करने की योजना बनायी। मेरुतुंग, जिसने इस युद्ध का वर्णन किया है, के अनुसार मुंज के मंत्री रुद्रादित्य ने इस योजना को क्रियान्वित करने से अपने स्वामी को रोका, परन्तु उसने उसके परामर्श को नहीं माना। परिणामस्वरूप युद्ध के दौरान मुंज तैलप द्वारा बन्दी बना लिया गया तथा उसकी हत्या कर दी गयी। मुंज की मृत्यु ९९३ ई० से ९९८ ई० के बीच मानी जाती है। उसके साम्राज्य का विस्तार पूर्व में विदिशा से लेकर पश्चिम में साबरमती तक और उत्तर में झालावार की दक्षिण सीमा से लेकर ताप्ती नदी तक विस्तृत था।

मुंज की मृत्यु के पश्चात् उसका छोटा भाई सिन्धुराज उत्तराधिकारी हुआ। अपने भाई की हत्या के पश्चात् अपने वंश के राज्य को बनाये रखने के लिए उसे अनेक युद्ध लड़ने पड़े और अधिकांश युद्धों में वह सफल रहा।

उसका पहला आक्रमण चालुक्य नरेश सत्याश्रय, जो तैलप का उत्तराधिकारी था, के राज्य पर था। सिन्धुराज ने सत्याश्रय को पराजित कर अपने राज्य के उस भाग को छीन लिया जिस पर तैलप ने अधिकार कर लिया था। इस प्रकार उसने अपने बड़े भाई के पराभव का बदला लिया।

सिन्धुराज ने लाट पर भी आक्रमण किया तथा समकालीन शासक गोंगिराज को परा-

जित किया। तत्पश्चात् उसने गुजरात पर आक्रमण किया परन्तु उसे वहाँ के राजा चामुण्ड-राज के हाथों पराजय स्वीकार करना पड़ा।

'नवसाहसांक चरित' से हमें ज्ञान होता है कि सिन्धुराज ने बस्तर के नागवंशियों को उनके पड़ोसी वैरागढ़ के नरेश को पराजित करने में सहायता प्रदान की। इसके परिणाम-स्वरूप नागवंशी राजकन्या शशिप्रभा का विवाह सिन्धुराज से कर दिया गया।

लगभग इसी समय सिन्धुराज ने कोसल के सोमवंशी नरेशों का भी दमन किया।

सिन्धुराज को हूणों के साथ भी युद्ध करना पड़ा, जिसमें उसने हूणों को पराजित किया।

मुंज के शासन काल में वागड़ के परमार शासक उसकी अधीनता स्वीकार करते थे परन्तु सिन्धुराज के राज्यकाल में वे विद्रोह घोषित कर स्वतन्त्र हो गये। सिन्धुराज ने उन पर आक्रमण कर उन्हें पराजित कर दिया।

अपरान्त को भी सिन्धुराज ने जीता। १००० ई० के लगभग उसकी मृत्यु हो गई।

सिन्धुराज का उत्तराधिकारी उसका पुत्र भोज प्रथम हुआ। उसकी विजय और सांस्कृतिक कार्यों के कारण उसकी गणना भारतीय इतिहास के महान् शासकों में होती है। उसके राज्यकाल के ग्यारह अभिलेख उज्जैन,[१] देपालपुर[२], धार[३], बेटमा[४], भोजपुर[५] तथा महन्दी[६] से प्राप्त हुए हैं। ये अभिलेख वि० सं० १०७४ तथा १०९१ के बीच के हैं। इन तथा समकालीन अन्य अभिलेख और भोज द्वारा रचित ग्रन्थों से उसके राज्यकाल के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।

भोज महान् विजेता था। उसका पहला आक्रमण परमार वंश के पुराने शत्रु चालुक्यों के राज्य पर हुआ। 'भोजचरित' तथा मेरुतुंग के अनुसार भोज ने चालुक्य राज्य पर आक्रमण कर समकालीन नरेश तैलप को पराजित किया। उसे बन्दी बनाकर बाद में हत्या कर दी। इस प्रकार उसने मुंज के पराभव और वध का बदला लिया। परन्तु अधिकांश विद्वान् इस वर्णन को स्वीकार नहीं करते। बेलगाँव-अभिलेख को आधार बना-कर अधिकांश विद्वानों का यह मत है कि भोज ने चालुक्यों के विरुद्ध कलचुरि नरेश गांगेयदेव और चोल नरेश राजेन्द्र चोल के साथ संधि कर तीन शक्तियों की सम्मिलित सेना द्वारा चालुक्यों के राज्य पर आक्रमण किया। परन्तु अन्त में उन्हें चालुक्यों के हाथों पराजय स्वीकार करना पड़ा।

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७६६-ग-१ ७६६-ई
२. वही, क्रमांक ७७४
३. वही, क्रमांक ७७६-अ, ७७६-इ
४. वही, क्रमांक ७८०
५. वही, क्रमांक ७८१-अ
६. वही, क्रमांक ७८३

१०

उदयपुर प्रशस्ति के अनुसार भोज ने उड़ीसा के शासक इन्द्ररथ के राज्य पर आक्रमण कर उसे पराजित किया।

भोज ने लाट पर भी आक्रमण किया और वहाँ के शासक कीर्तिराज को पराजित किया।

कोंकण नरेश शिलाहार वंशी केशिदेव के राज्य पर भी भोज द्वारा आक्रमण किया गया तथा उसे पराजित कर उसके राज्य पर अधिकार कर लिया गया।

धार प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि भोज ने त्रिपुरी के कलचुरि शासक गांगेयदेव को पराजित किया था।

भोज का चन्देलों से भी युद्ध हुआ। समकालीन चन्देल शासक विद्याधर था। सम्भवतः बुन्देलखण्ड पर अपने राज्य-विस्तार के प्रयत्न में भोज विद्याधर द्वारा पराजित हुआ था।

भोज ने ग्वालियर का क्षेत्र कच्छपघात् शासक से छीनना चाहा। समकालीन कच्छपघात् शासक कीर्तिराज चन्देलों के अधीन था। उसने भोज को पराजित किया और इस प्रकार भोज का प्रयत्न असफल रहा। सम्भवतः इस युद्ध में चन्देल नरेश विद्याधर ने कीर्तिराज की सहायता की होगी।

ऐसा प्रतीत होता है कि भोज ने कन्नौज पर भी एक आक्रमण किया परन्तु यह आक्रमण भी असफल रहा और भोज अपने राज्य का विस्तार कन्नौज तक नहीं कर सका।

भोज ने शाकम्भरी के चाहमान-राज्य पर भी आक्रमण किया और उसके राजा वीर्यराम को पराजित किया।

नड्डुल की चाहमान शाखा पर भी भोज द्वारा आक्रमण किया गया। सुन्धा अभिलेख से ज्ञात होता है कि यह आक्रमण असफल रहा।

चिरवा अभिलेख से पता चलता है कि चित्रकूट का दुर्ग भोज के अधीन था। सम्भवतः वहाँ का गुहिल वंशी शासक भोज के अधीन था।

पंजाब के शाहि-नरेश आनन्दपाल द्वारा महमूद गज़नवी के आक्रमण के विरुद्ध १००८ ई० में जो हिन्दू नरेशों का संघ स्थापित किया गया था, उसमें भोज की भेजी हुई सेना भी सम्मिलित थी। १०४३ ई० में भोज ने अन्यान्य हिन्दू नरेशों से मिलकर मुसलमानों से हाँसी, थानेश्वर और नगरकोट आदि नगर छीन लिये।

भोज का गुजरात के चालुक्य वंशी नरेशों से भी युद्ध हुआ। समकालीन चालुक्य नरेश चामुण्डराज था। वाराणसी की तीर्थयात्रा के लिए जब वह मालवा से गुजरा तो भोज ने उसका बड़ा अपमान किया। चामुण्डराज के उत्तराधिकारी भीम प्रथम ने आबू प्रदेश पर अधिकार कर लिया। इस प्रदेश पर भोज का सहयोगी परमारवंशी धन्धुक राज्य कर रहा था। भीम की शक्ति को क्षीण करने के उद्देश्य से भोज ने उसके राज्य पर आक्रमण किया और राजधानी अण्हिलवाड़ को खूब लूटा।

अपने शासन काल के अन्तिम चरण में भोज को अपने शत्रुओं के एक संघ का सामना करना पड़ा। इस संघ में गुजरात का चालुक्य नरेश भीम प्रथम, कल्याणी का

चालुक्य नरेश सोमेश्वर, लाट नरेश त्रिलोचनपाल तथा त्रिपुरी का कलचुरि नरेश कर्ण सम्मिलित थे। इस संघ की सहायता से भीम और कर्ण ने भोज के राज्य पर आक्रमण किया। युद्ध के दौरान १०५५ ई० के लगभग भोज की एक रोग से मृत्यु हो गयी और मालवा पर कर्ण और भीम का अधिकार हो गया।

अपनी उन्नति की पराकाष्टा पर भोज का राज्य चितौड़, बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, भिलसा, खानदेश, कोंकण और गोदावरी की घाटी के उत्तरी भाग तक विस्तृत था। इस विशाल राज्य की राजधानी धारा नगरी (आधुनिक धार) थी।

भोज प्रगाढ़ पण्डित और विद्या-प्रेमी था। वह ज्योतिष, राजनीति, दर्शन, वास्तु, काव्य, व्याकरण, चिकित्सा-शास्त्र आदि का ज्ञाता था तथा इन विषयों पर उसने दो दर्जन से भी अधिक ग्रन्थ लिखे थे। वह विद्वानों का महान् आश्रयदाता था। वह एक महान् निर्माता भी था। इन्हीं कारणों से वह भारत के महान् शासकों में गिना जाता है।

भोज का उत्तराधिकारी उसका पुत्र जयसिंह प्रथम था। उसने कल्याणी के चालुक्य नरेश सोमेश्वर प्रथम से सन्धि कर ली तथा उसकी सहायता से कलचुरि नरेश कर्ण तथा चालुक्य नरेश भीम को पराजित कर मालवा को मुक्त कर लिया। इस युद्ध में सोमेश्वर के पुत्र विक्रमादित्य ने उसकी बहुत सहायता की। इस घटना से जयसिंह और विक्रमादित्य में बहुत मित्रता हो गयी। जब विक्रमादित्य ने पूर्वी-चालुक्यों की राजधानी वेंगी पर आक्रमण किया तो जयसिंह ने स्वयं सेना सहित उसकी सहायतार्थ जाकर सहायता की। दोनों की संयुक्त सेना ने वेंगी पर अधिकार कर लिया परन्तु कुछ समय पश्चात् पूर्वी-चालुक्य शासक ने चोल नरेश वीरराजेन्द्र की सहायता से आक्रमणकारियों को खदेड़ दिया।

कल्याणी के चालुक्य वंश में सोमेश्वर प्रथम की मृत्यु के पश्चात् सोमेश्वर द्वितीय गद्दी पर बैठा। सिंहासन प्राप्ति के लिए उसे अपने छोटे भाई विक्रमादित्य से युद्ध करना पड़ा जिसमें विक्रमादित्य पराजित हुआ। जयसिंह प्रथम विक्रमादित्य का मित्र था, इस कारण सोमेश्वर द्वितीय ने जयसिंह के राज्य पर आक्रमण किया। इस आक्रमण में गुजरात के चालुक्य नरेश कर्ण ने भी सोमेश्वर की सहायता की। जयसिंह दोनों की सम्मिलित सेना का सामना करता हुआ युद्ध-क्षेत्र में मारा गया और मालवा पर सोमेश्वर द्वितीय तथा गुजरात के चालुक्य नरेश कर्ण ने अधिकार कर लिया। जयसिंह का एक ताम्रपत्र जो धार से वि० सं० १११२ में प्रचलित किया गया था, मान्धाता में प्राप्त हुआ है।[१] इसमें अमरेश्वर मंदिर स्थित पट्टशाला में निवास कर रहे ब्राह्मणों के लिए एक ग्राम देने का उल्लेख है।

जयसिंह का उत्तराधिकारी उदयादित्य था जो सम्भवतः भोज का भाई था। शत्रुओं के हाथ से मालवा का उद्धार करना उसकी सब से बड़ी समस्या थी। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसने शाकम्भरी के चाहमान नरेश विग्रहराज तृतीय से संधि कर ली। दोनों की सम्मिलित सेना ने मालवा पर आक्रमण कर सोमेश्वर द्वितीय और कर्ण को पराजित किया और मालवा पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार उदया-

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७८४-अ

दित्य पुनः मालवा का स्वामी होने में समर्थ हो सका। उसके राज्यकाल के आठ अभिलेख उज्जैन,[१] उदयपुर,[२] ऊन[३], धार[४] तथा भोपाल[५] से प्राप्त हुए हैं। उसके राज्य की सीमा दक्षिण में निमाड़ जिले तक, उत्तर में झालावाड़ तक तथा पूर्व में विदिशा तक थी। उसने विदिशा के निकट उदयपुर में नीलकण्ठेश्वर के मन्दिर का निर्माण किया।

उदयादित्य के पश्चात् उसका पुत्र लक्ष्मदेव राजा हुआ। डॉ० गंगूली के अनुसार उसका दूसरा नाम जगद्देव था। वह पराक्रमी राजा था। अपने राजत्व काल में उसने गौड़, अंग और कलिंग पर आक्रमण किये, परन्तु सम्भवतः इन युद्धों में उसे कोई प्रदेश प्राप्त नहीं हुआ। इसी समय उज्जयिनी पर पंजाब के मुसलमान शासक महमूद ने आक्रमण किया। लक्ष्मदेव ने उसे पराजित कर खदेड़ दिया। कलचुरि नरेश यशःकर्ण तथा चालुक्य नरेश कर्ण भी उसके द्वारा पराजित किये गये। अभिलेखों के कथनानुसार उसने पाण्ड्य देश और लंका को भी जीता। परन्तु यह कथन विश्वास योग्य नहीं है। अभिलेखों के अनुसार उसने बस्तर क्षेत्र में चक्रदुर्ग पर अधिकार कर लिया तथा मलहर और आन्ध्र नरेशों को पराजित किया। उसने द्वारसमुद्र के होयसलों के राज्य पर भी आक्रमण किया। परन्तु होयसल नरेश एरेयंग ने उसके आक्रमण को विफल कर दिया। १०९४ ई० के लगभग उसने सिंहासन को त्याग दिया और उसका उत्तराधिकारी उसका भाई नरवर्मन् हुआ।

नरवर्मन् का शासन काल परमारों के लिए असफलताओं का काल प्रमाणित हुआ। वह शाकम्भरी के चाहमान वंश के नरेश अजयराज तथा चन्देल नरेश सल्लक्षणवर्मन् द्वारा पराजित हुआ। गुजरात के चालुक्य नरेश जयसिंह सिद्धराज के साथ बारह वर्ष तक चले संघर्ष में वह पराजित हुआ तथा बन्दी बना लिया गया। यद्यपि कुछ समय पश्चात् उसने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली, परन्तु इस घटना से परमारों की प्रतिष्ठा को गहरा आघात लगा। उसका राज्यकाल ११३३ तक रहा। उसके शासन काल के पाँच अभिलेख उज्जैन,[६] उदयपुर,[७] धार[८] तथा भोजपुर[९] से प्राप्त हुए हैं।

नरवर्मन् का उत्तराधिकारी यशोवर्मन् ११३३ के लगभग गद्दी पर बैठा। उसके

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७६६-औ
२. वही, क्रमांक ७६७-अ, आ, औ
३. वही, क्रमांक ७६९
४. वही, क्रमांक ७७६-उ
५. वही, क्रमांक ७८२ अ-आ
६. वही, क्रमांक ७६६-ओ, ७६६ ग-५
७. वही, क्रमांक ७६७-औ
८. वही, क्रमांक ७७६-ई
९. वही, क्रमांक ७८१-आ

राज्यकाल का वि० सं० ११९२ का एक ताम्रपत्र उज्जैन से प्राप्त हुआ है ।[१] उसे घोर विपत्तियों का सामना करना पड़ा। चन्देल नरेश मदनवर्मन् ने परमार राज्य के भिलसा क्षेत्र पर अपना अधिकार जमा लिया। मालवा में देवास के निकटवर्ती क्षेत्र पर विजयपाल नामक एक व्यक्ति ने अपने स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की। इसी समय चालुक्य नरेश जयसिंह सिद्धराज ने नाडोल के चाहमान नरेश आशाराज की सहायता से मालवा पर आक्रमण कर यशोवर्मन् को पराजित कर बन्दी बना लिया और सम्पूर्ण मालवा पर अधिकार कर लिया। उसका यह अधिकार कम-से-कम ११३८ ई० तक यथावत् रहा जैसा कि उज्जैन से प्राप्त उसके वि० सं० ११९५ के अभिलेख से ज्ञात होता है ।[२]

यशोवर्मन् के पुत्र जयवर्मन् ने जयसिंह सिद्धराज के अन्तिम दिनों में मालवा पर आक्रमण कर अपने पैत्रिक राज्य पर पुनः अधिकार कर लिया। परन्तु यह अधिकार पुनः अस्थायी प्रमाणित हुआ क्योंकि कल्याणी के चालुक्य नरेश जगदेकमल्ल और द्वारसमुद्र के होयसल नरेश नरसिंह प्रथम ने मालवा पर आक्रमण कर जयवर्मन् को पराजित कर दिया तथा उसके स्थान पर सम्भवतः बल्लाल नामक एक व्यक्ति को गद्दी पर बैठा दिया। परन्तु बल्लाल भी अधिक समय तक मालवा पर राज्य न कर कर सका क्योंकि ११४३ ई० के लगभग गुजरात के चौलुक्य नरेश कुमारपाल ने मालवा पर आक्रमण कर उसे अपने राज्य में मिला लिया। मालवा पर चौलुक्यों का यह अधिकार १२वीं सदी ई० के सप्तम् दशक तक चला, जैसा कि उदयपुर (विदिशा) से प्राप्त कुमारपाल के वि० सं० १२२० और १२२२ के अभिलेख[३] तथा अजयपालदेव के वि० सं० १२२९ के अभिलेख[४] से ज्ञात होता है। इस बीच परमार शासक 'महाकुमार' की उपाधि धारण कर चौलुक्यों के अधीन भोपाल, निमाड़, होशंगाबाद, खानदेश आदि क्षेत्र पर शासन करते रहे। यह तथ्य कई अभिलेखों से ज्ञात होता है। परमार 'महाकुमार' लक्ष्मीवर्मन् का वि० सं० १२०० का एक ताम्रपत्र उज्जैन से प्राप्त हुआ है ।[५] इसी प्रकार पिपलियानगर (उज्जैन) से महाकुमार हरिश्चन्द्र का वि० सं० १२३५ तथा १२३६ के दो ताम्रपत्र मिले हैं ।[६] भोपाल से महाकुमार उदयवर्मन् का वि० सं० १२५६ का ताम्रपत्र प्राप्त हुआ है ।[७] यहाँ से महाकुमार लक्ष्मीवर्मदेव का स्तम्भ-लेख भी मिला है ।[८]

बारहवीं सदी ई० के सप्तम् दशक में जयवर्मन् के पुत्र विन्ध्यवर्मन् ने चौलुक्य

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७६६-उ
२. वही, क्रमांक ८७८
३. वही, क्रमांक ८७९-अ-आ
४. वही, क्रमांक ८७९-इ
५. वही, क्रमांक ७६६-ऊ
६. वही, क्रमांक ७७८-अ
७. वही, क्रमांक ७८२-इ
८. वही, क्रमांक ७८२-ऊ

नरेश मूलराज द्वितीय को पराजित कर मालवा पर फिर से अधिकार कर लिया। परन्तु वह शान्ति से राज्य नहीं कर सका क्योंकि होयसल तथा यादव नरेश मालवा पर लगातार आक्रमण करते रहे। होयसलों का दमन करने के लिए विन्ध्यवर्मन् ने चोलों के साथ मिल कर उनके राज्य पर आक्रमण किया, परन्तु होयसल नरेश बल्लाल द्वितीय ने उन्हें पराजित कर दिया। ११९३ ई० में विन्ध्यवर्मन् की मृत्यु हो गयी। अपनी मृत्यु के पूर्व उसने परमार साम्राज्य को फिर से सुदृढ़ कर दिया था।

विन्ध्यवर्मन् का उत्तराधिकारी सुभटवर्मन् हुआ। उसने गुजरात के चालुक्य वंश से लाट छीन लिया। तत्पश्चात् उसने गुजरात की राजधानी अन्हिलवाड़ पर आक्रमण किया और उस पर अधिकार कर लिया। परन्तु अन्त में गुजरात नरेश भीम द्वितीय के मंत्री लवणप्रसाद ने उसे पराजित कर गुजरात खाली करने के लिए विवश किया। सुभट-वर्मन् को यादवों से भी युद्ध करना पड़ा जिसमें वह यादव नरेश जैतुगि द्वारा पराजित कर दिया गया। सुभटवर्मन् की मृत्यु १२१० ई० के लगभग हो गयी।

सुभटवर्मन् का उत्तराधिकारी अर्जुनवर्मन् प्रथम हुआ। उसे जयसिंह के साथ युद्ध करना पड़ा। युद्ध में जयसिंह पराजित हुआ और उसने अपनी कन्या का विवाह अर्जुन-वर्मन् के साथ कर दिया। इसी घटना को आधार बना कर अर्जुनवर्मन् के राजगुरु मदन द्वारा 'पारिजातमंजरी' नामक नाटिका की रचना की गयी। इस नाटिका के प्रथम दो अध्याय धार के भोजशाला में शिलालेख पर उत्कीर्ण प्राप्त हुए हैं।[१] अर्जुनवर्मन् को यादव नरेश सिंहण के साथ युद्ध करना पड़ा। इस युद्ध में वह पराजित हुआ तथा उसका सामन्त सिन्धुराज मारा गया। अर्जुनवर्मन के राज्यकाल का वि० सं० १२६७ का एक ताम्रपत्र पिपलियानगर (उज्जैन) से[२] तथा दो ताम्रपत्र जो वि०सं० १२७० तथा १२७२ के हैं, भोपाल से[३] प्राप्त हुए हैं।

अर्जुनवर्मन् का उत्तराधिकारी देवपाल था जो १२१५ ई० तथा १२१८ ई० के बीच गद्दी पर बैठा। उज्जैन,[४] उदयपुर,[५] ओखला,[६] कर्णावद,[७] मान्धाता[८] तथा हरसौदा[९] से प्राप्त अभिलेखों से ज्ञात होता है कि ये क्षेत्र उसके राज्य के अन्तर्गत थे। पश्चिम में उसका राज्य भड़ोच तक विस्तृत था। उसके राज्यकाल में यादव नरेश सिंघण ने लाट देश

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक-७७६-आ
२. वही, क्रमांक ७७८-आ
३. वही, क्रमांक ७८२-ई-उ
४. वही, क्रमांक ७६६-ग-२
५. वही, क्रमांक ७६७-इ-ई
६. वही, क्रमांक ७७०
७. वही, क्रमांक ७७१-अ-आ
८. वही, क्रमांक ७८४-आ
९. वही, क्रमांक ७८८

पर आक्रमण कर वहाँ के शासक शंख को, जो देवपाल के अन्तर्गत राज्य कर रहा था, पराजित कर गिरफ्तार कर लिया। तत्पश्चात् देवपाल के साथ सिंघण की सन्धि होने पर उसे छोड़ दिया गया। कुछ समय पश्चात् देवपाल तथा शंख ने सिंघण के साथ मिल कर दक्षिण गुजरात पर आक्रमण किया, परन्तु देवपाल तथा सिंघण में मतभेद होने के कारण यह आक्रमण असफल रहा। शीघ्र ही दक्षिण गुजरात के नरेश वीरधवल ने शंख से भड़ोच का क्षेत्र छीन लिया। देवपाल के राज्यकाल में मालवा पर मुसलमानों का आक्रमण हुआ। १२३३ ई० में इलतुतमिश ने विदिशा जीत लिया तथा उज्जैन को लूटा परन्तु उसकी यह विजय अस्थायी सिद्ध हुई। १२४३ के पूर्व देवपाल का उत्तराधिकारी जैतुगिदेव गद्दी पर बैठा।

जैतुगिदेव के राजत्वकाल में मालवा पर कई आक्रमण हुए। यादव नरेश कृष्ण ने मालवा पर आक्रमण किया। १२५० ई० के लगभग बलबन ने मालवा पर चढ़ाई की और लगभग इसी समय गुजरात का शासक बाघेल वीसलदेव ने धार पर आक्रमण कर उसे लूटा।

१२५६ ई० के पूर्व जैतुगिदेव का उत्तराधिकारी उसका छोटा भाई जयवर्मन् द्वितीय गद्दी पर बैठा। उसके राज्यकाल के तीन अभिलेख गोदरपुरा,[१] मोड़ी[२] तथा राहतगढ़[३] से प्राप्त हुए हैं।

जयवर्मन् द्वितीय के पश्चात् चार और परमार नरेशों का पता चलता है। परन्तु उनके आपसी सम्बन्ध अज्ञात हैं। तिथि के आधार पर ज्ञात होता है कि जयवर्मन् के पश्चात् जयसिंह द्वितीय ने राज्य किया। उसके चार अभिलेख उदयपुर[४], बलीपुर[५] तथा पठारी[६] से प्राप्त हुए हैं। उसके राज्यकाल में रणथम्भोर के चाहमान नरेश जैत्रसिंह ने मालवा पर आक्रमण किया। इस आक्रमण से रक्षार्थ जयसिंह ने मण्डप-दुर्ग (आधुनिक माण्डवगढ़) में शरण ली।

जयसिंह की मृत्यु में पश्चात् गद्दी के लिए अर्जुनवर्मन् द्वितीय तथा उसके मंत्री में संघर्ष हुआ जिसके परिणामस्वरूप दोनों ने मालवा के विभिन्न क्षेत्रों पर राज्य किया। इस समय मालवा पर चाहमान, यादव तथा बघेल नरेशों का आक्रमण हुआ।

परमार वंश का अगला शासक भोज द्वितीय था जो १२८३ ई० के कुछ समय पश्चात् गद्दी पर बैठा। उसके राज्यकाल में चाहमान नरेश तथा मुसलमानों का आक्रमण हुआ।

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७७३
२. वही, क्रमांक ७८५
३. वही, क्रमांक ७८६
४. वही, क्रमांक ७६७-उ-ऊ
५. वही, क्रमांक ७८७
६. वही, क्रमांक ७७७

इस वंश का अन्तिम नरेश महलकदेव था जिसे हम १३०५ ई० में मालवा पर राज्य करता हुआ देखते हैं। उसके शासन काल में अलाउद्दीन खिलजी ने मालवा पर आक्रमण किया। महलकदेव ने मण्डप-दुर्ग में शरण लिया। वहाँ वह अलाउद्दीन के सेनापति आइन-उल-मुल्क द्वारा पराजित कर मार डाला गया। इस प्रकार परमार वंश का अन्त हुआ और मालवा पर मुस्लिम शासन की स्थापना हुई।

कलचुरि राजवंश

मध्यप्रदेश के प्राचीन इतिहास में कलचुरि राजवंश का महत्वपूर्ण स्थान है। अभिलेखों में इस वंश के राजाओं ने अपने को चन्द्र-वंशी माना है तथा कार्तवीर्य सहस्रार्जुन की सन्तान बतलाया है। अभिलेखों में इनका नाम कटच्चुरि, कलत्सुरि, कलचुति, कालचुर्य तथा करचुलि मिलता है। इन शब्दों का अर्थ क्या है, यह न जानने के कारण भण्डारकर आदि कुछ विद्वानों ने इन्हें विदेशी जाति का कहना प्रारम्भ कर दिया था। परन्तु अधिकांश विद्वान् यह तर्क स्वीकार रहीं करते।

माहिष्मती के कलचुरि

कलचुरियों की प्राचीन राजधानी माहिष्मती थी, जहाँ ये लोग छटी शताब्दी ईसवी के पूर्वार्द्ध में शक्तिशाली हुए। इस वंश का संस्थापक कौन था, इस विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं। इनका सर्वप्रथम शासक, जिसका नाम ज्ञात है—कृष्णराज था जिसने ५५० ई० से ५७५ ई० तक राज्य किया। उसके चाँदी के सिक्के बेसनगर, तेवर तथा पट्टन से प्राप्त हुए हैं।[१] तत्पश्चात् शंकरगण (५७५ ई० से ६०० ई०) तथा बुद्धराज आये। बुद्धराज को चालुक्य शासक मंगलेश से युद्ध करना पड़ा जिससे वह पराजित हुआ। परन्तु इसी बीच मंगलेश और पुलकेशी की आपसी लड़ाई से बुद्धराज को लाभ हुआ और वह बीच में कुछ समय के लिए फिर शक्तिशाली हो गया। अन्त में उसके राज्य का एक बड़ा भाग पुलकेशी द्वारा छीन लिया गया। इसके बाद कलचुरि वंश की शक्ति क्षीण हो गयी और उसकी राजनैतिक प्रवृत्तियाँ प्रायः समाप्त हो गयीं।

त्रिपुरी के कलचुरि

चालुक्यों से पराजित होने के पश्चात् बुद्धराज के वंशज माहिष्मती छोड़ कर चेदि देश की ओर भाग आये तथा त्रिपुरी में अपनी राजधानी स्थापित की। अभिलेखों के आधार पर कुछ विद्वानों का मत है कि इस शाखा का संस्थापक वामराजदेव था, जिसने सातवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कालंजर को जीत कर अपनी राजधानी वहाँ स्थापित की। शीघ्र ही उसने बघेलखण्ड को जीत लिया और उत्तर में गोमती नदी से दक्षिण में नर्मदा तक अपने साम्राज्य का विस्तार कर लिया। उसने 'परमभट्टारक महाराजाधिराज' तथा 'परमेश्वर' की उपाधि धारण कर ली और उसी के समय से कलचुरि चैद्य कहलाने लगे।

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २३९६, २४००, २४०५

सम्भवतः उसी के शासन काल में कलचुरियों की राजधानी कालंजर से नर्मदा के तट पर स्थित त्रिपुरी में स्थानान्तरित की गयी। माहिष्मती की तरह त्रिपुरी में भी उन्हें नर्मदा का पुण्य तट प्राप्त हुआ।

वामराज के पश्चात् दो-तीन पीढ़ियों तक के राजाओं के सम्बन्ध में कोई सूचना ज्ञात नहीं। बाद में शंकरगण प्रथम राजा हुआ। उसके शासन काल के केवल दो अभिलेख[1] प्राप्त हुए हैं जिनके आधार पर उसका शासन काल ८वीं शताब्दी ई० के मध्यभाग में अनुमानित किया गया है।

शंकरगण के उत्तराधिकारियों के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती। तत्पश्चात् लक्ष्मणराज प्रथम राजा हुआ। कारीतलाई में प्राप्त उसके शासन काल के कलचुरि संवत् ५९३ के शिलालेख[2] से ज्ञात होता है कि उसने राष्ट्रकूट राजाओं की अधीनता स्वीकार कर ली थी। उसके शासन काल की और कोई घटना ज्ञात नहीं है। उसका शासन काल ४२५ ई० से ४५० ई० के मध्य माना जाता है।

इस शाखा का अगला शासक कोकल्ल प्रथम था। लक्ष्मणराज से उसका क्या सम्बन्ध था यह ज्ञात नहीं है। उसके शासन काल का कोई अभिलेख अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है, परन्तु उसके उत्तराधिकारियों के अभिलेखों से पता चलता है कि वह बहुत ही महत्वाकांक्षी तथा प्रतापी राजा था। उसने समकालीन राजवंशों से अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने के उद्देश्य से चंदेल, राष्ट्रकूट तथा बंगाल के पाल शासकों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये। युवराजदेव द्वितीय के बिलहरी अभिलेख[3] में उल्लेख है कि समस्त पृथ्वी को जीत लेने के बाद कोकल्ल ने अपनी विजय के दो स्तम्भ खड़े किये—दक्षिण में कृष्ण[4] तथा उत्तर में भोजदेव[5]। बनारस से प्राप्त ताम्रपत्र में बतलाया गया है कि कोकल्ल ने भोज, वल्लभराज,[6] चित्रकूट के राजा श्रीहर्ष तथा शंकरगण[7] को अभय वचन दिया था। कलचुरियों के दक्षिण कोशल शाखा के राजा पृथ्वीदेव प्रथम के अमोदा ताम्रपत्र के अनुसार[8] कोकल्ल ने कर्नाट, वंग, गुर्जर, कोंकण, शाकम्भरी, तुरुष्क तथा रघू के एक उतराधिकारी को पराजित किया था। कोकल्ल का शासन काल ८५० ई० से ८९० ई० के मध्य अनुमानित किया जाता है।

कोकल्ल का उत्तराधिकारी उसका बेटा शंकरगण द्वितीय था जिसने प्रसिद्धधवल,

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७९७, ८१२
२. वही, क्रमांक ७९१-अ
३. वही, क्रमांक ८०४-अ
४. राष्ट्रकूट वंश का राजा
५. गुर्जर-प्रतिहार राजा
६. राष्ट्रकूट वंश का राजा
७. सरयूपारी कलचुरि वंश का राजा
८. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ८१५-अ

मुग्धतुंग तथा रणविग्रह के विरुद् धारण किये थे। उक्त बिलहरी तथा बनारस अभिलेखों के अनुसार उसने समुद्र तट पर स्थित राज्यों को जीता तथा दक्षिण कोसल के सोमवंशी राजा से पालि के आस-पास के क्षेत्र को छीना। उसने राष्ट्रकूट कृष्ण द्वितीय को पूर्वी चालुक्यों के विरुद्ध सहायता प्रदान की। राष्ट्रकूटों से उसने वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये। सम्भतः उसका शासनकाल ८९०-९१० ई० के बीच था।

शंकरगण द्वितीय के पश्चात् उसका बेटा बालहर्ष सिंहासन पर बैठा। सम्भवतः उसका राज्य अल्पकालीन (९१०-९१५ ई०) था तथा वह संतानहीन था। अतः उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका छोटा भाई केयूरवर्ष जिसे युवराजदेव प्रथम भी कहा जाता है, ९१५ के लगभग राजा हुआ। युवराजदेव के शासन काल की घटनाओं का उल्लेख उसके उत्तराधिकारियों के अभिलेखों से, उसके राजकवि राजशेखर के ग्रन्थों से तथा अन्य समकालीन अभिलेखों से ज्ञात होता है। युवराजदेव द्वितीय के शासन काल के बिलहरी शिलालेख[१] से ज्ञात होता है कि उसने बंगाल, कर्नाट, गुजरात, काश्मीर तथा उड़ीसा पर आक्रमण किये तथा इन देशों की कन्याओं से विवाह किया। राजशेखर के 'विद्धशालभंजिका' के अनुसार उसने मगध, मालव, पाँचाल, अवन्ति, जालन्धर तथा केरल की राजकुमारियों के साथ विवाह किया था। उसे 'उज्जयिनी-भुजंग' भी कहा गया है, जिससे लगता है कि उसने मालवा पर भी आक्रमण किया था। राष्ट्रकूट तथा चंदेल वंश के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि युवराजदेव का राष्ट्रकूटों तथा चन्देलों से युद्ध हुआ था, जिसका युवराजदेव के राज्य पर कुछ विशेष प्रभाव नहीं पड़ा था। युवराजदेव ने गुजरात के चालुक्य राजा अवनिवर्मा की कन्या नोहला से विवाह किया था तथा अपनी कन्या कन्दकदेवी का विवाह राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष तृतीय से कर दिया था। युवराजदेव तथा उसकी रानी दोनों ही शिव के परम भक्त थे। उन्होंने मधुमती से शैव आचार्य प्रभावशिव को बुला कर गुर्गी के मठ का प्रबन्ध सौंपा था। त्रिपुरी में उन्होंने गोलकी मठ की स्थापना की, जिसके अधिष्ठाता सद्भावशंभू नामक आचार्य को तीन लाख गाँव दान में दिये गये। इसके अतिरिक्त रानी नोहला ने ईश्वरशिव नामक शैव आचार्य को बाहर से बुलवा कर वैद्नाथ तथा नोहलेश्वर नामक मन्दिरों से संलग्न मठों का अधिष्ठाता बनाया था तथा अनेक गाँव दान में दिये थे। सुख्यात कवि और नाटककार कविराज राजशेखर युवराजदेव के आश्रय में रहते थे। त्रिपुरी में रहते हुए उन्होंने 'विद्धशालभंजिका' नामक नाटक तथा 'काव्यमीमांसा' नामक अलंकार-ग्रन्थ लिखे। युवराजदेव का शासन काल ९१५ से ९४५ ई० के बीच माना गया है।

युवराजदेव प्रथम के पश्चात् उसका पुत्र लक्ष्मणराज द्वितीय गद्दी पर बैठा। वह भी अपने पिता के समान महाप्रतापी राजा था। उसके शासन काल का एक अभिलेख कारीतलाई से प्राप्त हुआ है।[२] अभिलेखों से ज्ञात होता है कि उसने वंग, पाण्ड्य, लाट,

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ८०४-अ

२. वही, क्रमांक ७९१-आ

गुर्जर, कश्मीर आदि देशों के राजाओं को पराजित किया तथा दक्षिण कोसल पर चढ़ाई की। उसने उड़ीसा तक आक्रमण कर उस देश के राजा को पराजित किया तथा उससे कालियनाग की रत्नजड़ित स्वर्ण मूर्ति छीन ली। इस मूर्ति को बाद में उसने सौराष्ट्र के सोमनाथ मन्दिर को अर्पित किया। अपने पिता के समान वह भी परम शिव भक्त था तथा मत्तमयूर के शैवाचार्यों को बुला कर सम्मानित किया। उसका शासन काल ९४५ से ९७० ई० के बीच माना जाता है।

लक्ष्मणराज के पश्चात् उसका पुत्र शंकरगण तृतीय गद्दी पर बैठा। उसके राज्य-काल की घटनाओं के सम्बन्ध में विशेष सूचना नहीं मिलती। उसे कन्नौज के प्रतिहार तथा महोबा के चन्देल नरेशों से युद्ध करना पड़ा। सम्भवत: चंदेलों से हुए युद्ध में वह मारा गया। कलचुरि नरेश बहुधा शिवोपासक होते थे, परन्तु शंकरगण तृतीय विष्णुभक्त था। उसका शासन काल ९७० से ९८० ई० के बीच रखा गया है।

इस शंकरगण के उपरान्त उसका छोटा भाई युवराजदेव द्वितीय गद्दी पर बैठा। उसके राज्यकाल का एक अभिलेख बिलहरी से प्राप्त हुआ है।[1] उसके शासनकाल में त्रिपुरी को बुरे दिन देखने पड़े। परमार नरेश वाक्पति मुंज ने त्रिपुरी पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया। परन्तु दक्षिण भारत से चालुक्य नरेश तैलप के मालवा पर आक्रमण होने के कारण मुंज को कलचुरियों से संधि कर अपनी राजधानी को लौटना पड़ा। उसका शासन काल ९८० से ९९० ई० के बीच रखा गया है।

युवराजदेव द्वितीय के पश्चात् उसका पुत्र कोकल्ल द्वितीय गद्दी पर बैठा। उसके राज्यकाल का एक अभिलेख गुर्गी से प्राप्त हुआ है।[2] उसने कलचुरि राज्य को पुन: दृढ़ बनाने का प्रयत्न किया। उसने कन्नौज के प्रतिहार राजा राज्यपाल, गौड़ देश के राजा महीपाल और कुन्तलाधिपति चालुक्य नरेश विक्रमादित्य पंचम पर विजय प्राप्त की। उसका शासन काल ९९०-१०१५ ई० के बीच रखा जाता है।

कोकल्ल द्वितीय के उपरान्त १०१५ ई० के लगभग उसका पुत्र गांगेयदेव राज-सिंहासन पर बैठा। वह बड़ा प्रतापी और महत्वाकांक्षी था। उसके राज्यकाल के दो अभिलेख मकुन्दपुर तथा पिआवन से प्राप्त हुए हैं।[3] अपने राज्य के अल्पकाल में ही उसने कलचुरि वंश की कीर्ति को पुन: उज्ज्वल कर उत्तर भारत के राजाओं में सम्मान का स्थान प्राप्त कर लिया। चन्देलों के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि प्रारम्भ में गांगेयदेव चन्देलों की अधीनता को स्वीकार किये था। परन्तु शीघ्र ही वह स्वतन्त्र हो गया। उसने मालवा के परमार शासक भोज तथा दक्षिण भारत के चोल शासक राजेन्द्र के साथ गुट बना कर कुन्तल के चालुक्य वंशी नृपति जयसिंह के राज्य पर आक्रमण कर दिया तथा विजय प्राप्त की। किन्तु कलचुरि और परमारों की सन्धि अधिक समय तक न चल सकी क्योंकि परमारों

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ८०४-अ

२. वही, क्रमांक ७९४

३. वही, क्रमांक ८००, ८०७

के अभिलेखों और 'पारिजातमंजरी' नाटक से सूचना मिलती है कि भोज परमार ने चेदि पर आक्रमण कर विजय प्राप्त की थी। गांगेयदेव ने दक्षिण कोसल के राजा कमलराज की सहायता से उत्कल के करवंशी राजा को जीत कर पूर्व-समुद्र तक अपना विजय-स्तम्भ खड़ा करवाया। उत्कल विजय के बीच गांगेयदेव का दक्षिण कोसल के सोमवंशी राजा महाशिवगुप्त ययाति से युद्ध होना स्वाभाविक था। यह युद्ध लम्बे समय तक चला परन्तु अन्त में विजय गांगेयदेव की हुई। इस विजय के उपलक्ष में गांगेयदेव ने 'त्रिकलिंगाधिपति' की उपाधि धारण कर ली। इसके बाद से त्रिपुरी में राज्य करने वाले सभी कलचुरि नरेशों ने अपने लेखों में इस पदवी का उल्लेख बड़े गौरव के साथ किया है। उत्तर भारत में भी राज्य विस्तार करने का अवसर गांगेयदेव को मिला। १०२७ ई० के ठीक बाद गांगेयदेव ने गंगा-जमुना दो-आब को आक्रमण कर जीत लिया तथा अपने साम्राज्य का विस्तार करते हुए काँगड़ा तक पहुँच गया। काँगड़ा का नरेश उसके द्वारा बन्दी बना लिया गया तथा काँगड़ा को कलचुरि राज्य में मिला लिया गया। गंगा-जमुना दो-आब प्राप्त कर गांगेयदेव ने प्रयाग को अपनी दूसरी राजधानी बनाया और तत्पश्चात् काशी पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार विस्तृत भू-भाग पर स्वामित्व प्राप्त कर लेने के पश्चात् गांगेयदेव ने 'महाराजाधिराज' और 'परमेश्वर' जैसी उपाधियाँ धारण कर लीं। गांगेयदेव के बढ़ते हुए प्रताप से चन्देल राजा विजयपाल चिंतित हो उठा। दोनों वंशों के बीच युद्ध होना अनिवार्य हो गया। युद्ध के प्रारम्भ में गांगेयदेव को कुछ समय के लिए झुकना पड़ा, परन्तु अन्त में गांगेयदेव की ही विजय हुई। गांगेयदेव ने अपने शासन काल के अन्तिम समय में अंग और मगध पर चढ़ाई की और पाल सेना के विरुद्ध कलचुरि सेना गया तक पहुँच गयी। इस सेना का नेतृत्व युवराज कर्ण कर रहा था। कहा जाता है कि उसने बौद्ध मठों को लूटकर भिक्षुओं और उपासकों की हत्या कर डाली। अन्त में अतिश दीपंकर नामक बौद्ध भिक्षु की मध्यस्थता से कलचुरि और पाल सेनाओं में सन्धि हो गयी। गांगेय शिवभक्त था। उसे प्रयाग के अक्षयवट के समीप निवास करने की बड़ी इच्छा थी। २२, जनवरी १०४१ ई० को इसी स्थल पर उसकी मृत्यु हो गयी। साथ ही उसकी सौ रानियाँ सती हुईं। उसके द्वारा प्रचलित सोने तथा चाँदी के सिक्के इसुरपुर,[१] तेवर,[२] बरेठा,[३] बरेला,[४] मांडु,[५] सागर,[६] सोनसारी[७] तथा त्रिपुरी[८] से प्राप्त हुए हैं।

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २३९४
२. वही, क्रमांक २३९६
३. वही, क्रमांक २४०२
४. वही, क्रमांक २४०३
५. वही, क्रमांक २४०७
६. वही, क्रमांक २४१०
७. वही, क्रमांक २४१२
८. वही, क्रमांक २४१३

गांगेयदेव का उत्तराधिकारी उसका पुत्र कर्ण हुआ। पिता से उत्तराधिकार में प्राप्त साम्राज्य का उसने विस्तार किया और बंगाल पर विजय प्राप्त की। उसके राज्य-काल के सात अभिलेख रीवा,[१] सिमरा,[२] बनारस, पैकोरे, गोहरवा तथा सारनाथ में प्राप्त हुए हैं। रीवा से प्राप्त कलचुरि संवत् ८०० के शिलालेख से ज्ञात होता है कि शासन के प्रथम सात वर्षों के भीतर ही उसने पल्लव, चोल और कुन्तल देशों को जीत लिया था। इसके बाद कर्ण ने गुर्जर देश पर आक्रमण कर वहाँ के राजा भीम को पराजित किया। बाद में उससे सन्धि कर उसकी सहायता से मालवा के परमार शासकों के राज्य पर आक्रमण किया। मालवा का समकालीन परमार शासक भोज था जिसने उसके पिता गांगेयदेव को पराजित किया था। इस पराजय का बदला लेने के लिए कर्ण ने मालवा पर आक्रमण करने की ठानी। आक्रमण दो-तरफा हो सके इसलिये उसने गुर्जर शासक भीम से सन्धि कर ली। मेरुतुंग ने अपने 'प्रबन्धचिन्तामणि' में लिखा है कि संधि की शर्त यह थी कि मालवा विजय के पश्चात् वह प्रदेश कर्ण तथा भीम के बीच बराबर-बराबर बाँटा जायेगा। किन्तु युद्ध में विजय प्राप्त करने के पश्चात् जब कर्ण ने परमारों की राजधानी धारा पर अपना अधिकार कर लिया तो वह अपने वचन से मुकर गया। इससे भीम नाराज हो गया और उसने चेदि देश पर आक्रमण कर दिया। कर्ण ने भीम को तरह-तरह के उपहार तथा लूट में प्राप्त हुए धन और स्वर्ण मण्डपिका आदि दे कर सन्तुष्ट किया।

तदनन्तर कर्ण ने चन्देलों के राज्य पर आक्रमण कर देववर्मा को पराजित किया। इसके बाद उसने मगध और गौड़ देशों के अधिपति विग्रहपाल तृतीय के राज्य पर चढ़ाई की। हेमचन्द्र के 'द्वयाश्रयमहाकाव्य' के अनुसार गौड़ राजा ने अपनी जान बचाने के लिए कर्ण को बहुत सा धन भेंट किया। गौड़-विजय का उल्लेख कलचुरियों के अभिलेखों में भी है। किन्तु उसके विपरीत संध्याकरनन्दी के रामचरित में लिखा है कि विग्रहपाल ने कर्ण को पराजित किया था। लेकिन अधिक सम्भावना यही दिखती है कि विजयश्री कर्ण को ही प्राप्त हुई थी, क्योंकि बंगाल स्थित बीरभूम जिले के पाइकोड़े नामक स्थान पर कर्ण का लेखयुक्त एक स्तम्भ प्राप्त हुआ है, जो कर्ण ने वहाँ की देवी को अर्पित किया था। इसके बाद कर्ण ने विग्रहपाल से अपनी कन्या यौवनश्री का विवाह कर उससे स्थायी मैत्री कर ली।

इस प्रकार ईसवी सन् १०५२ के लगभग कर्ण का ऐश्वर्य अपने शिखर पर पहुँच चुका था। वह चारों ओर के प्रदेश जीत चुका था और तत्कालीन प्रमुख राजवंशों को या तो हरा कर या उनसे सन्धि कर अपने साथ कर चुका था। इस प्रकार उसने चक्रवर्ती का पद प्राप्त कर लिया था। इसकी घोषणा करने के लिए उसने ई० सन् १०५२ में अपना दूसरा राज्याभिषेक कराया।

कर्ण की लगातार सैनिक उपलब्धियों के कारण उसे 'हिन्दू नेपोलियन' कहा जाता है। किन्तु यह भी सत्य है कि नेपोलियन की तरह उसे भी अपने राजत्वकाल के अन्तिम समय में विजयलक्ष्मी की अस्थिरता का परिचय मिला था। कर्ण अपने जीते हुए प्रदेशों

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ८१०-अ-आ

२. वही, क्रमांक ८१३

पर अधिक समय तक अधिकार नहीं रख सका। एक-एक करके वे कर्ण के हाथ से निकलते गये। सबसे पहले मालवा उसके हाथ से निकल गया। मालवा के परमार राजा जयसिंह ने अपने शत्रु चालुक्यों से मित्रता कर ली तथा चालुक्य शासक सोमेश्वर (प्रथम) आहव-मल्ल की सहायता से मालवा पर आक्रमण कर अपना राजसिंहासन वापस ले लिया। उसी प्रकार चन्देल लोग भी स्वतन्त्र हो गये। कर्ण को पराजित कर स्वतन्त्र होने का श्रेय चन्देल शासक कीर्तिवर्मन् को है। कर्ण पर प्राप्त इस महान् विजय के उपलक्ष में कृष्ण-मिश्र द्वारा रचित 'प्रबोधचन्द्रोदय' नामक नाटक खेला गया था। इस नाटक में बताया गया है कि कीर्तिवर्मन् की यह महान् विजय उसके वीर सेनापति गोपाल के पराक्रम के कारण हुई थी।

कर्ण ने अपनी प्रतिष्ठा को फिर से स्थापित करने का प्रयत्न किया तथा इस उद्देश्य से अपने राज्यकाल के अन्तिम दिनों में मालवा पर आक्रमण किया। आक्रमण के पूर्व उसने चालुक्य सम्राट सोमेश्वर द्वितीय से सन्धि कर ली। दक्षिण भारत का गंग नरेश उदयादित्य भी अपने सामन्त एडेंयग के साथ कर्ण से आ मिला। इन तीनों राजाओं की संयुक्त सेना ने मालवा पर आक्रमण किया। मालवा में सर्वत्र हाहाकार मच गया तथा शत्रुओं का सामना करते हुए परमार शासक जयसिंह युद्ध क्षेत्र में मारा गया। इस समय मालव देश की क्या दुर्गति हुई इसका कुछ विवरण परमारों की उदयपुर-प्रशस्ति तथा उनके अन्य उत्कीर्ण लेखों में मिलता है। इस प्रकार कर्ण ने मालवा पर दूसरी बार विजय प्राप्त किया। यह घटना १०७० ई० के लगभग हुई थी। परन्तु मालवा की यह विजय भी कर्ण के लिए अस्थायी सिद्ध हुई। १०७३ ई० के लगभग परमार उदयादित्य ने कर्ण को फिर से पराजित कर दिया तथा मालवा पर परमारों का शासन स्थापित किया। उदयपुर-प्रशस्ति में कहा गया है कि उदयादित्य ने डाहलाधीश अर्थात् कर्ण का संहार किया था। इस प्रकार उत्तर भारत में अपना एक-छत्र राज्य स्थापित करने के कर्ण के सारे प्रयत्न असफल रहे। इससे कर्ण को बड़ी निराशा हुई और उसने राज्य-त्याग कर अपने स्थान पर अपने पुत्र यशःकर्ण का स्वयं राज्याभिषेक किया। इस प्रकार कर्ण का राज्य-काल १०४१ ई० से १०७३ ई० तक रहा।

राज्यारोहण के उपरान्त यशःकर्ण ने शीघ्र ही आन्ध्रदेश पर चढ़ाई कर द्राक्षाराम तक आक्रमण किया और वेंगी के चालुक्य नरेश विजयादित्य सप्तम को पराजित किया। इस चढ़ाई के समय उसे रत्नपुर के कलचुरि नरेश जाजल्लदेव प्रथम की सहायता प्राप्त हुई थी, ऐसा अनुमान किया जाता है। इसके विपरीत उत्तर भारत में यशःकर्ण की प्रतिष्ठा गिरने लगी। यशःकर्ण के दक्षिण भारत में रहने का लाभ उठा कर गहड़वालवंशी चन्द्रदेव ने यशःकर्ण के कब्जे से कन्नौज और उससे लगा हुआ प्रदेश जीत लिया। इसी प्रकार १०९० ई० के पूर्व ही काशी भी कलचुरियों के हाथ से निकल गया तथा वहाँ भी गहड़वालों का आधिपत्य स्थापित हुआ। इतने प्रदेश साम्राज्य के बाहर निकल जाने से यशःकर्ण को राज्य के पुर्नविस्तार की चिन्ता हुई। अतः उसने उत्तर भारत में अपने पूर्व प्रदेशों को फिर से प्राप्त करने के लिए प्रयत्न किये और बिहार में चम्पारण्य

तक चढ़ाई की। उसके ताम्रपट में वर्णित है कि आक्रमण कर उसने चम्पारन नगर को उजाड़ डाला था, परन्तु इसके बाद भी वह अपने राज्य का विस्तार नहीं कर सका। दूसरी ओर उसे परमार, चन्देल और चालुक्य राजाओं से तीन-तरफा हानि उठानी पड़ी। नागपुर की परमार-प्रशस्ति में कहा गया है कि समकालीन परमार नरेश लक्ष्मणदेव ने त्रिपुरी पर हमला कर कलचुरियों को पूरी तरह से पराजित किया और नर्मदा तट पर सेना स्थापित की। इसी प्रकार चन्देलों के लेखों में सल्लक्षणवर्मन् द्वारा यश:कर्ण की श्री को नष्ट कर देने की बात कही गयी है। चालुक्य नरेश विक्रमादित्य षष्ट के साथ हुए युद्ध में भी यश:कर्ण को पराजय मिली। इस प्रकार यश:कर्ण के समय में कलचुरि राज्य के बहुत से प्रदेश निकल गये और कलचुरि साम्राज्य बघेलखण्ड तक सीमित हो कर रह गया। उसके राज्यकाल के दो अभिलेख खैरहा तथा जबलपुर में प्राप्त हुए हैं।[१]

यश:कर्ण के बाद उसका पुत्र गयाकर्ण ११२३ ई० के लगभग राजसिंहासन पर बैठा। उसके राज्यकाल के दो अभिलेख तेवर तथा बहुरिबन्द में मिले हैं।[२] ऐसा लगता है कि चन्देल नरेश मदनवर्मन् के दबाव के कारण गयाकर्ण को बघेलखण्ड का प्रदेश छोड़ देना पड़ा था। इतना ही नहीं, छत्तीसगढ़ के कलचुरि नरेश, जो अब तक त्रिपुरी की मुख्य शाखा के अधीन राज्य करते थे, गयाकर्ण के शासन काल में स्वतन्त्र हो गये। इससे नाराज हो कर गयाकर्ण ने तत्कालीन राजा रत्नदेव को पराजित करने के लिए बड़ी भारी सेना भेजी परन्तु इसमें उलटे गयाकर्ण की ही पराजय हुई। गयाकर्ण ने गुहिलवंशी राजा विजयसिंह की बेटी अल्हणदेवी से विवाह किया था। क्योंकि वह परमार राजा उदयादित्य की बेटी श्यामलदेवी की बेटी थी, अत: इस वैवाहिक सम्बन्ध से परमारों और कलचुरियों के बीच बहुत काल से चले आये बैर-भाव का अन्त हुआ।

गयाकर्ण के दो पुत्र थे, नरसिंह और जयसिंह जो क्रम से गद्दी पर बैठे। नरसिंह के समय की राजनैतिक घटनाओं का विवरण नहीं मिलता। उसके राज्यकाल के तीन अभिलेख अल्हघाट, भेड़ाघाट तथा लालपहाड़ से प्राप्त हुए हैं।[३] उसका राज्यकाल सम्भवत: ११५३ ई० से ११६३ ई० तक रहा होगा।

नरसिंह के बाद उसका छोटा भाई जयसिंह त्रिपुरी का राजा हुआ। उसके शासन काल के पाँच अभिलेख करणबेल, तेवर, जबलपुर तथा रीवा से प्राप्त हुए हैं।[४] उसके अभिलेखों में यह वर्णन मिलता है कि उसके राज्याभिषेक का समाचार सुन कर गुर्जर, तुरुष्क और कुन्तल नरेशों का हृदय धड़क उठा था। परन्तु यह ज्ञात नहीं कि उसने उन राजाओं को वास्तविक पराजित किया ही था। शिवरीनारायण के एक लेख से ज्ञात होता है कि उसने दक्षिण कोसल पर आक्रमण किया था, परन्तु इसमें उसे पराजय स्वीकार

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७९३, ७९८-अ

२. वही, क्रमांक ७९९-आ, ८०२

३. वही, क्रमांक ७८९, ८०६-अ, ८११

४. वही, क्रमांक ७९०-अ, ७९८ अ, इ; ७९९-इ, ८१०-इ

करनी पड़ी। यह घटना ११६५ ई० के लगभग की है। चन्देलों के अभिलेखों से पता चलता है कि चन्देल नरेश परमर्दिदेव ने भी जयसिंह को त्रस्त कर रखा था। जयसिंह की दो रानियाँ थीं—केल्हणदेवी और गोसलदेवी। गोसलदेवी ने गोसलपुर नामक नगर बसाया जो कि गाँव के रूप में आज भी विद्यमान है। जयसिंह का शासन काल ११६३ ई० से ११८८ ई० तक रहा होगा।

जयसिंह का उत्तराधिकारी उसका पुत्र विजयसिंह था। उसके राज्यकाल के अभिलेख करणबेल, तेवर, भेड़ाघाट, कुम्भी तथा रीवा से प्राप्त हुए हैं।[१] उसके शासन काल में उसके एक सामन्त कौरववंशी सलक्षण ने कर्करेडी में विद्रोह घोषित कर दिया, परन्तु उसके मंत्री मलयसिंह ने विद्रोह को कुचल दिया। इसका उल्लेख रीवा से प्राप्त मलयसिंह के ११५३ ई० के अभिलेख में मिलता है। १२१० ई० के लगभग चन्देल नरेश त्रैलोक्यवर्मन् ने कलचुरियों के राज्य पर आक्रमण कर रीवा के आस-पास का प्रदेश जीत लिया। सम्भवतः यादववंशी सिंघण ने भी विजयसिंह को पराजित किया था। इस प्रकार विजयसिंह के समय कलचुरि राज्य की स्थिति डाँवाडोल हो रही थी क्योंकि सागर और दमोह वाला प्रदेश और उसी प्रकार बघेलखण्ड का प्रदेश चन्देलों के हाथ चला गया था। ऐसा लगता है कि विजयसिंह का राज्य केवल जबलपुर जिले तक ही सीमित था और वह भी कलचुरियों के हाथ से निकल गया। विजयसिंह त्रिपुरी के कलचुरि राजवंश का अन्तिम राजा था। उसका शासन काल कब समाप्त हुआ यह ज्ञात नहीं उसके उत्तराधिकारी महाराजकुमार अजयसिंह का उल्लेख उत्कीर्ण लेखों में मिलता है, किन्तु उसे राज्य करने का अवसर मिला या नहीं यह अज्ञात है। दमोह जिले के बटियागढ़ से प्राप्त १३२८ ई० के शिलालेख के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि चौदहवीं शताब्दी ई० के आरम्भ में यह प्रदेश मुसलमानों के अधिकार में पूर्णतः चला गया था।

रत्नपुर के कलचुरि

नवीं शताब्दी ईसवी के अन्त में त्रिपुरी के कलचुरियों ने दक्षिण कोसल में अपनी शाखा स्थापित करने का प्रयत्न किया। अभिलेखों से यह ज्ञात होता है कि कोकल्ल प्रथम के पुत्र शंकरगण द्वितीय अर्थात मुग्धतुंग-प्रसिद्धधवल ने कोसल नरेश से पालि प्रदेश (बिलासपुर जिले के पालि नामक स्थान के आस-पास का क्षेत्र) जीत लिया था। इस समय यहाँ बाणवंशी विक्रमादित्य प्रथम राज्य कर रहा था। इससे अथवा इसके उत्तराधिकारी से शंकरगण ने यह प्रदेश जीता होगा। शंकरगण ने इस प्रदेश पर अपने छोटे भाई की नियुक्ति की। उसका नाम अज्ञात है, परन्तु अभिलेख यह उल्लेख करते हैं कि उसकी राजधानी तुम्माण (बिलासपुर जिले का आधुनिक तुमाण) थी। यहाँ कलचुरियों ने दो-तीन पीढ़ियाँ बिताई होंगी। तदुपरान्त वे स्वर्णपुर (आधुनिक सोनपुर) के सोमवंशी राजा द्वारा पराजित कर दिये गये। अभिलेखों से ज्ञात होता है कि युवराजदेव प्रथम और उसके पुत्र लक्ष्मणराज

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ७६०-आ, ७६२, ७६६-ई, ८०६-आ, ८१०-ई, उ, ऊ

द्वितीय ने दक्षिण कोसल पर चढ़ाई कर वहाँ के राजा को पराजित किया था। सम्भवत: इन चढ़ाइयों का उद्देश्य सोमवंशी राजाओं को पराजित करना था। इनमें त्रिपुरी के राजाओं को विजय भी मिली होगी तो भी यह ज्ञात नहीं होता कि दक्षिण कोसल में कलचुरि शाखा की पुन: प्रतिष्ठापना हुई। परन्तु भविष्य में कोकल्ल द्वितीय के शासन काल में कलिंगराज नामक कलचुरि राजपुत्र ने अपने बाहुबल से दक्षिण कोसल को जीत कर तुम्माण नगर में, जहाँ उसके पूर्वजों ने राज्य किया था, अपनी राजधानी स्थापित की। यह घटना १००० ई० के लगभग हुई होगी। तुम्माण में राज्य करते हुए कलिंगराज ने अपने शत्रुओं का क्षय किया और राजश्री को बढ़ाया। परन्तु पद्मगुप्त रचित 'नवसाहसांकचरित' में कहा गया है कि मालवा के परमार नरेश सिन्धुराज ने कोसल के राजा को पराजित किया था। कुछ समय पश्चात् एक प्रणय प्रसंग के निमित्त सिंधुराज ने दक्षिण में दूसरी बार चढ़ाई की। उस प्रसंग का वर्णन भी इस काव्य में हुआ है।

कलिंगराज का उत्तराधिकारी कमलराज १०२० ई० के लगभग तुम्माण के राजसिंहासन पर बैठा। उसके शासन काल में त्रिपुरी के गांगेयदेव को उड़ीसा पर आक्रमण करने के लिए दक्षिण कोसल हो कर जाना पड़ा। अभिलेखों के अनुसार इस समय कमलराज ने न केवल गांगेयदेव की सहायता की बल्कि उत्कलराज की सम्पत्ति लूट कर उसे समर्पित कर दी। यह उत्कलराज सम्भवत: करवंशी शुभाकर द्वितीय होगा। उत्कल से वापस लौटते समय कमलराज के साथ साहिल्ल नामक एक योद्धा कोसल आया। उसने और सके वंशजों ने कलचुरियों के लिए छत्तीसगढ़ के अनेक राज्य जीत लिये।

कमलराज का उत्तराधिकारी रत्नराज प्रथम १०४५ ई० के लगभग सिंहासन पर बैठा। उसने कोमोमण्डल के अधिपति वज्जूक अथवा वजुवर्मन् की कन्या नोनल्ला से विवाह किया। इस विवाह से छत्तीसगढ़ पर उसका प्रभाव दृढ़ हो गया। रत्नदेव ने तुम्माण में वंकेश्वर, रत्नेश्वर आदि देवालय और अनेक उद्यान बनवा कर तुम्माण नगर को सुन्दर बना दिया। तत्पश्चात् उसने अपने नाम पर रत्नपुर (आधुनिक रतनपुर) नामक नगर बसाया और अपनी राजधानी तुम्माण से स्थानान्तरित कर वहाँ ले गया। कलचुरियों की इस शाखा की भविष्य की राजधानी यही नगरी रही।

रत्नदेव का पुत्र पृथ्वीदेव प्रथम १०६५ ई० के लगभग रत्नपुर के राजसिंहासन पर बैठा। उसके राज्यकाल के तीन अभिलेख अमोदा, रायपुर तथा लाफ़ा से प्राप्त हुए हैं।[1] पृथ्वीदेव के ताम्रपत्रों में उसे 'महामण्डलेश्वर' तथा 'समधिगताशेष पंचमहाशब्द' कहा गया है जिससे स्पष्ट है कि वह त्रिपुरी की मुख्य शाखा के सामन्त के रूप में कोसल में राज्य करता था। इतने पर भी उसने अपने साम्राज्य का विस्तार कर 'सकलकोसलाधिपति' की पदवी धारण कर ली और कोसल के इक्कीस हजार गाँवों का स्वामी बन गया। पृथ्वीदेव की रानी का नाम राजल्ला था। उसके दो मंत्री विग्रहराज और सोढ़देव के नाम

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ८१५-अ, ८३१-अ, ८३२

उत्कीर्ण लेखों में मिलते हैं। उसने तुम्माण में पृथ्वीदेवेश्वर नामक शिवमंदिर का और रत्नपुर में विशाल सरोवर का निर्माण करवाया।

पृथ्वीदेव प्रथम का उत्तराधिकारी जाजल्लदेव प्रथम १०९० ई० के लगभग सिंहासन पर बैठा। उसके राज्यकाल के अभिलेख पालि तथा रतनपुर से प्राप्त हुए हैं।[1] शीघ्र ही उसने अपने राज्य-विस्तार के उद्देश्य से वैरागर (आधुनिक वैरागढ़-चाँदा जिला, महाराष्ट्र), लञ्जिका (बालाघाट जिले में स्थित आधुनिक लाँजी), भाणार (महाराष्ट्र में स्थित आधुनिक भण्डारा) और तलहारि-मण्डल (आधुनिक बिलासपुर जिले का दक्षिण भाग तथा रायपुर जिले का उत्तर भाग) को जीता। उसके बाद बंगाल में दण्डकपुर और आन्ध्र तथा खिमिड़ी पर विजय प्राप्त की। इनके अतिरिक्त नन्दावली और कुक्कुट के राजा भी उससे भयभीत हो कर उसे कर देना स्वीकार कर लिया। उसके सेनापति जगपाल ने उसके लिए मायुरिक और सामन्तों को जीता। रत्नपुर से प्राप्त शिलालेख के अनुसार जाजल्लदेव ने बस्तर के छिंदक नागवंशी राजा सोमेश्वर को पराजित कर उसे उसके मन्त्रियों और रानियों समेत कैद कर लिया परन्तु बाद में उसकी माता के अनुरोध पर उन्हें मुक्त कर दिया। इन विजयों के कारण उसकी कीर्ति इतनी बढ़ गयी कि न केवल त्रिपुरी के राजा यशःकर्ण ने अपितु कान्यकुब्ज के गहड़वाल और जेजाभुक्ति के चन्देल राजाओं ने भी उसे शूर मान कर उसके साथ मित्रता की। जाजल्लदेव ने उड़ीसा पर भी आक्रमण कर सुवर्णपुर के राजा भुजबल को पराजित किया। जाजल्लदेव के समय में रत्नपुर का राज्य काफी समृद्ध हो चुका था, जैसा कि उसके द्वारा प्रचलित किये गये सोने के सिक्कों से अनुमान लगाया जाता है। उसने अपने नाम पर जाजल्लपुर (आधुनिक जांजगीर—बिलासपुर जिला) नामक नगर बसाया तथा उसमें मन्दिर, मठ, सरोवर, आम्रवन आदि को बनवाया। उसी प्रकार पालि के शिवमन्दिर का भी उसने जीर्णोद्धार करवाया। उत्कीर्ण लेखों में जाजल्लदेव की रानी लाच्छल्लदेवी, गुरु रुद्रशिव, सान्धिविग्रहिक विग्रहराज तथा मन्त्री पुरुषोत्तम के नाम मिलते हैं।

जाजल्लदेव प्रथम के बाद उसका पुत्र रत्नदेव द्वितीय ई० सन् ११२० के लगभग रत्नपुर का राजा हुआ। उसके राज्यकाल के पाँच अभिलेख अकलतरा, खरोद, पारगाँव, शिवरीनारायण तथा सरखो से प्राप्त हुए हैं।[2] उसने त्रिपुरी की मुख्य शाखा की अधीनता को स्वीकार करने से इनकार कर दिया, अतः त्रिपुरी के राजा गयाकर्ण ने उसके विरुद्ध एक विशाल सेना भेजी। इस युद्ध में त्रिपुरी की सेना पराजित हुई। रत्नदेव के राज्यकाल की एक अन्य महत्वपूर्ण घटना थी उसके द्वारा गंगवंशी राजा अनन्तवर्मा चोड़गंग को पराजित करना। अनन्तवर्मा चोड़गंग दक्षिण भारत का अत्यन्त बलशाली राजा था तथा महाप्रतापी के रूप में विख्यात था। उसकी तूफानी चढ़ाइयों से अनेक राजाओं को

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ८२४, ८२९-अ

२. वही, क्रमांक ८१४-अ, ८२०, ८२३-अ, ८३३-अ, ८३४।

हार खानी पड़ी थी। उसने जाजल्लदेव द्वारा पदच्युत किये गये उत्कल के अधिपति को फिर से गद्दी पर बैठाया। फिर रत्नदेव के राज्य पर चढ़ाई की। रत्नदेव तथा उसके सामन्त वल्लभराज और सेनापति जगपाल ने तलहारीमण्डल में अनन्तवर्मा के विरुद्ध घोर युद्ध किया तथा पराजित कर उसे अपने राज्य से भगा दिया। इस विजय से रत्नदेव की हिम्मत काफी बढ़ गयी और उसने गौड़ देश पर आक्रमण कर उसके राजा को हरा दिया। तत्पश्चात् उसने भंजराजाओं की राजधानी खिञ्जिग पर आक्रमण कर वहाँ के राजा हरवोहू को मृत्युलोक पहुँचा दिया। रत्नदेव के राज्यकाल में विद्या और कला को उदारतापूर्वक राजाश्रय मिला। उसने तथा उसके मन्त्री पुरुषोत्तम और सामन्त वल्लभराज ने अनेक मन्दिर बनवाये, तालाब खुदवाये और अन्न-सत्र स्थापित किये।

रत्नदेव द्वितीय का पुत्र पृथ्वीदेव द्वितीय ११३५ ई० के लगभग सिंहासन पर बैठा। उसके शासन काल के जो चौदह अभिलेख प्राप्त हुए हैं[1]। उनसे ज्ञात होता है कि उसके जगपाल नामक सेनापति ने सरहरागढ़ (आधुनिक सारंगढ़), मचका सिहवा (आधुनिक सिहावा) के किले जीते तथा भ्रमरवद्र (बस्तर का भाग), कान्तार, कुसुमभोग, कांडा-डोंगर और काकरय (कांकेर) के प्रदेशों पर आक्रमण कर तथा जीत कर पृथ्वीदेव के प्रभुत्व का विस्तार किया। तत्पश्चात् पृथ्वीदेव ने चित्रकूट (बस्तर जिला) पर आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया। इससे गंगवंशी राजा अनन्तवर्मा चोड़गंग इतना डर गया कि उसे समुद्र को पार कर भाग जाना ही अपनी जान बचाने का एकमात्र उपाय दिखा। इसी बीच अनन्तवर्मा की मृत्यु हो गयी और उसका पुत्र जटेश्वर गंगों का शासक हुआ। पृथ्वीदेव द्वितीय ने उसके राज्य पर चढ़ाई कर जटेश्वर को कैद कर लिया। इन युद्ध में पृथ्वीदेव के सामन्त ब्रह्मदेव ने बड़ी वीरता का परिचय दिया। अभिलेखों में उसके तथा उसके अधिकारियों द्वारा दिये गये कई दानों का उल्लेख है।

पृथ्वीदेव द्वितीय के बाद जाजल्लदेव द्वितीय ११६५ ई० के लगभग राजा हुआ। उसके राज्यकाल के तीन अभिलेख अमोदा, मल्लार तथा शिवरीनारायण से प्राप्त हुए हैं।[2] उसका राज्य अल्पकालीन और समस्याओं से पूर्ण था। उसके शासन काल में त्रिपुरी के कलचुरि राजा जयसिंहदेव ने उसके राज्य पर आक्रमण कर दिया क्योंकि वह जाजल्लदेव को अपने अधीन करना चाहता था। इस युद्ध में रतनपुर के छोटी शाखा के शासक उल्हणदेव ने जी-जान से लड़ कर जयसिंह को पराजित किया, परन्तु युद्ध में उल्हणदेव मारा गया तथा उसकी तीन रानियाँ सती हो गयीं। इसके कुछ समय पश्चात् जाजल्लदेव को थीरू नामक ग्राह ने पकड़ लिया था और ऐसा लगता था कि जाजल्लदेव के प्राण बचना बहुत ही कठिन हो गया किन्तु सौभाग्यवश वह ग्राह से मुक्त हो गया। इसकी खुशी में उसने अपने ज्योतिषी राघव और पुरोहित नामदेव को एक ग्राम दान में दिया। अभिलेखों के

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ८१५-आ, इ, ८१६, ८१८, ८२१, ८२२, ८२३-आ, ८२६, ८२८, ८२९-आ, इ, ई, ८३०, ८३१-आ

२. वही, कमांक ८१५-ई, ८२७-अ, ८३३-आ

अनुसार जाजल्लदेव के राज्यकाल में अनेक देवालय बनवाये गये तथा तालाब खुदवाये गये । शिवरीनारायण में चन्द्रचूड़ का मन्दिर इसी समय उक्त उल्हणदेव ने बनवाया था ।

जाजल्लदेव द्वितीय के अन्तिम दिनों में कुछ संकट उपस्थित हुआ था, ऐसा प्रतीत होता है । खरोद से प्राप्त शिलालेख में बताया गया है कि जब जाजल्लदेव का स्वर्गवा हुआ तो चारों ओर अंधकार छा गया और अव्यवस्था फैल गयी । इस परिस्थिति के सम्हालने के लिए जाजल्लदेव द्वितीय का बड़ा भाई जगद्देव पूर्व देश से दौड़ा आया और उसने शान्ति तथा सुराज्य की स्थापना की । बड़े भाई के रहते हुए छोटे भाई का सिंहासन पर बैठ जाना तरह-तरह के अनुमानों का कारण बन गया है । किन्तु खरोद शिलालेख में स्पष्ट संकेत है कि जगद्देव ने अपनी इच्छा से सिंहासन त्याग कर द्वितीय जाजल्लदेव को सिंहासन पर बैठा दिया और स्वयं पूर्व में राज करने वाले गंगवंश के राजा के साथ युद्ध करने के लिए निकल पड़ा था । परन्तु ज्योंही रत्नपुर में अव्यवस्था फैली, वह तुरन्त वापस लौट आया और शासन की बागडोर सम्हाल कर शान्ति और सुव्यवस्था कायम की । उसने ई० सन् ११६८ से ११७८ तक लगभग दस वर्ष तक राज्य किया । उसका उत्तराधिकारी उसकी रानी सोमल्लादेवी से हुआ पुत्र रत्नदेव तृतीय था ।

रत्नदेव तृतीय के राज्यकाल में भी कुछ कारणों से देश में अव्यवस्था बनी रही । इस संकटकाल में उसने गंगाधर नामक विद्वान ब्राह्मण को अपना मन्त्री बनाया । उसने शीघ्र ही शत्रुओं को पराजित कर राज्य में सुव्यवस्था स्थापित की ।

रत्नदेव तृतीय के बाद उसका पुत्र प्रतापमल्ल ११९८ ई० में सिंहासन पर बैठा । इसके दो ताम्रपत्र प्राप्त हुए हैं, जो क्रमशः कलचुरि संवत् ९६५ और ९६९ में दिये गये थे ।[1] इन लेखों से तथा उसके द्वारा चलाये गये ताँबे के सिक्कों[2] से उसके समय की विशेष जानकारी प्राप्त नहीं होती ।

प्रतापमल्ल के बाद कलचुरि इतिहास में लगभग तीन सौ वर्षों तक कोई जानकारी नहीं मिलती । १५वीं शताब्दी के अन्त में वाहरेन्द्र नामक राजा के राज्य करने की सूचना मिलती है । इस बीच के इतिहास के सम्बन्ध में हेमाद्री के 'व्रतखण्ड' में किसी जाजल्ल नामक नरेश का नामोल्लेख आया है । सम्भवतः वह प्रतापमल्ल का उत्तराधिकारी था ।

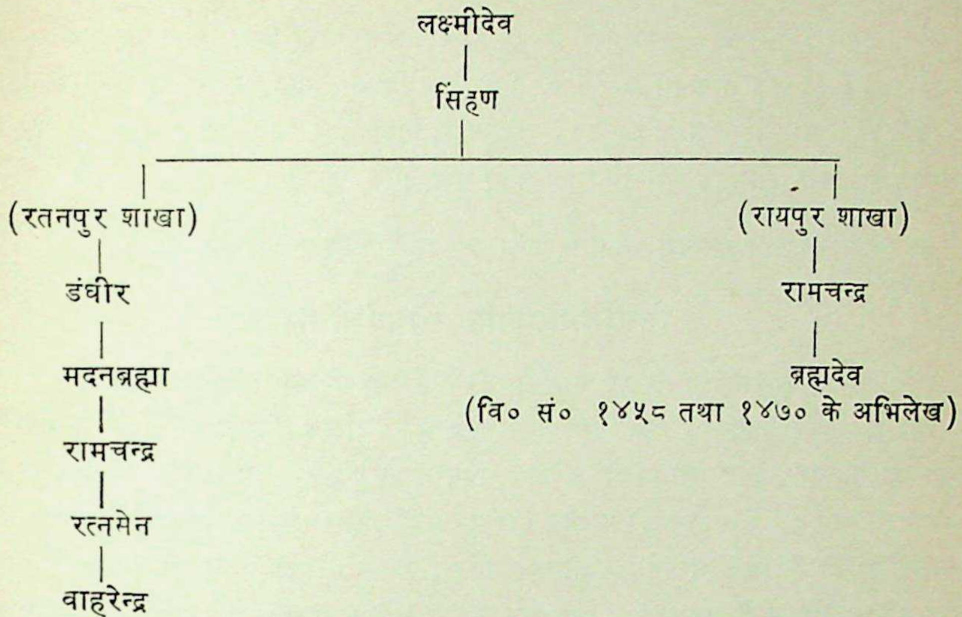
वाहरेन्द्र तथा उसके पूर्वजों के सम्बन्ध में कोसगई तथा रतनपुर से प्राप्त वाहरेन्द्र[3] के तथा रायपुर और खलारी से प्राप्त ब्रह्मदेव के शिलालेखों से सूचना मिलती है । इन शिलालेखों का अध्ययन कर जो वंशवृक्ष तैयार किया जा सकता है उससे रत्नपुर और रायपुर के कलचुरि शाखाओं का आपसी सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है । वह वंशवृक्ष इस प्रकार है—

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ८२५, ८२६-आ

२. वही, क्रमांक २४०४-आ

३. वही, क्रमांक ८१९-अ, आ; ८२९ उ, ऊ



उपर्युक्त वंशवृक्ष से स्पष्ट है कि १४वीं शताब्दी ई० के अन्तिम भाग में रतनपुर की कलचुरि शाखा का दो भागों में विभाजन हो गया। मुख्य शाखा रत्नपुर में राज्य करती रही तथा गौण शाखा ने रायपुर में राज्य स्थापित किया।

अभिलेखों में वाहरेन्द्र के पूर्वजों की उपलब्धियों के सम्बन्ध में कोई भी सूचना नहीं है। कोसगईं से प्राप्त वाहर के शिलालेख में बतलाया गया है कि उसने रत्नपुर से राजधानी को हटा कर कोसंग के किले में स्थापित किया तथा वहाँ से पठानों के विरुद्ध युद्ध संचालित किया। अभिलेख के अनुसार उसके मन्त्री माधव ने पठानों को पराजित किया।

वाहरेन्द्र के उत्तराधिकारियों के सम्बन्ध में कोई भी सूचना प्राप्त नहीं है। स्थानीय किवंदतियों के अनुसार 'बाहर-सहाय' (अर्थात् वाहर) के बारह उत्तराधिकारी थे। इस भू-भाग को नागपुर के भोसलों के सरदार भास्करपन्त द्वारा १७४० ई० में जीत लिया गया और इस प्रकार रत्नपुर के कलचुरि वंश की समाप्ति हुई।

रायपुर के कलचुरि

जैसा कि हम ऊपर देख चुके हैं, रायपुर की कलचुरि शाखा की स्थापना चौदहवीं शताब्दी ईसवी के अन्तिम चरण में हुई। इस शाखा में हुए राजा ब्रह्मदेव के दो शिलालेख अभी तक प्राप्त हुए हैं, जिनमें से एक रायपुर से प्राप्त विक्रम संवत् १४५८ (१४०२ ईसवी) का है और दूसरा खलारी के प्राप्त विक्रम संवत् १४७० (१४१५ ईसवी) का।[1] खलारी अभिलेख से विदित होता है कि ब्रह्मदेव के पूर्वज रामचन्द्र ने फणि (नाग) वंश के राजा भोणिगदेव को पराजित किया था। यह नाग राजा कवर्धा के नागवंश का था अथवा बस्तर का, यह कहना कठिन है। उपर्युक्त लेख से यह भी विदित होता है कि ब्रह्मदेव की राजधानी खल्वाटिका (आधुनिक खलारी, रायपुर जिला) में थी।

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ८३७, ८३८

ब्रह्मदेव के बाद राजाओं के उत्कीर्ण लेख नहीं मिलते। केवल अन्तिम राजा अमरसिंहदेव का एक ताम्रपत्र आरंग में मिला है जिसमें नन्दू ठाकुर को दी गयी छूट का वर्णन है।[१] यह ताम्रपत्र वि० सं० १७९२ में दिया गया था। इसके कुछ ही वर्ष बाद नागपुर के मराठों के हाथ अमरसिंह का पतन हुआ।

इस प्रकार मध्यप्रदेश के इतिहास में कलचुरि राजवंश का अन्त हुआ।

त्रिकलिंगाधिपति सोमवंशी नरेश

श्रीपुर से राज्य करते हुए प्राचीन सोमवंशी नरेशों का इतिहास (ये नरेश अपने को पाण्डव वंशी भी कहते थे) हम ऊपर देख चुके हैं। दक्षिण कोसल पर ई० सन् की १०वीं शताब्दी में एक और सोमवंशी नरेश राज्य करते हुए पाये जाते हैं। इस वंश के नरेश सोमवंशी होते हुए भी अपने को पाण्डव वंश का नहीं बताते। इनकी राजधानी भी आधुनिक मध्यप्रदेश की सीमा के अन्तर्गत न हो कर उड़ीसा में थी। वहीं से अपना साम्राज्य-विस्तार कर दक्षिण कोसल के एक बड़े भू-भाग पर उन्होंने अधिकार कर रखा था। ये नरेश अपने को 'त्रिकलिंगाधिपति' (अर्थात् कोसल, कलिंग और उत्कल के स्वामी) की उपाधि से विभूषित किये हुए थे। ताम्रपत्रों की राजमुद्राओं में भी इन नरेशों ने पाण्डव वंशियों के विपरीत तथा शरभपुरियों और कलचुरियों के समान गजलक्ष्मी की प्रतिमा का उपयोग किया। इस सोमवंशी नरेशों का पाण्डुकुल के सोमवंशियों से क्या सम्बन्ध था, इस सम्बन्ध में अभी तक कोई भी तथ्य ज्ञात नहीं।

इस सोमवंश का संस्थापक शिवगुप्त था जिसका शासन काल दसवीं सदी ई० के पूर्वार्ध में रखा गया है। यद्यपि उसका कोई अभिलेख अब तक प्राप्त नहीं हुआ है, तथापि उसके उत्तराधिकारी महाभवगुप्त के लेख में उसे 'परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर' की उपाधि से विभूषित बताया गया है। उसके शासन काल में सम्भवतः त्रिपुरी के कलचुरि नरेश मुग्धतुंग ने दक्षिण कोसल पर आक्रमण कर पालि (आधुनिक बिलासपुर जिले में स्थित) को छीन लिया।

शिवगुप्त का उत्तराधिकारी उसका पुत्र जनमेजय प्रथम महाभवगुप्त सिंहासन पर बैठा। अपनी राजधानी सुवर्णपुर (उड़ीसा) से उसने अनेक ताम्रपत्र लेख प्रचलित किये; सुवर्णपुर के अतिरिक्त मुरसीमा तथा आराम से भी उसके ताम्रपत्र प्रचलित किये गये। इन राजाज्ञाओं से पता चलता है कि उसका राज्यकाल लगभग पैंतीस वर्ष का था। ताम्रपत्रों में उसे कोसल का अधिपति भी बताया गया है परन्तु इसमें कितनी सचाई है इसका निर्णय करना कठिन है क्योंकि सम्भवतः उसके शासन काल में त्रिपुरी के कलचुरि नरेश लक्ष्मणराज का दक्षिण कोसल पर आक्रमण हुआ जिसमें कलचुरि अभिलेखों के अनुसार, कोसलाधिपति को पराजित होना पड़ा।

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ८३६

जनमेजय महाभवगुप्त (प्रथम) का उत्तराधिकारी उसका पुत्र ययाति प्रथम महाशिवगुप्त हुआ जिसका शासन काल ई० सन् ९७० से १००० के बीच माना जाता है। अपने शासन काल में उसने भी अनेक दानपत्र प्रचलित किये जिनमें प्रारम्भिक दानपत्र विनीतपुर (उड़ीसा) से तथा राज्यकाल के अन्तिम भाग के दानपत्र ययातिनगर से जारी किये गये थे। सम्भवत: ययातिनगर नामक नये नगर को बसा कर उसने अपनी राजधानी वहाँ स्थापित की हो। उसके दानपत्रों में दक्षिण कोसल के ग्रामों के दान करने का उल्लेख मिलता है। इससे स्पष्ट है कि कोसल के भू-भाग पर उसका अवश्य ही स्वामित्व रहा होगा।

ययाति महाशिवगुप्त का उत्तराधिकारी उसका पुत्र भीमरथ महाभवगुप्त द्वितीय था जिसका शासन काल ई० सन् १००० से १०१५ के बीच माना जाता है। उसका सामन्त माठरवंशी राणक पुंज था जिसकी राजधानी सम्भवत: वामण्डापाटि थी। पुंज का एक ताम्रपत्र लेख रायपुर संग्राहलय में संरक्षित है।

भीमरथ का उराधिकारी उसका पुत्र धर्मरथ था जिसका शासन काल ई० सन् १०१५ से १०२० तक माना जाता है। वह राजमल्ल तथा महाशिवगुप्त द्वितीय भी कहलाता था। उसका राज्यकाल अल्पकाल का था और वह निस्संतान मरा।

धर्मरथ का उत्तराधिकारी उसका भाई नहुष था जो महाभवगुप्त तृतीय भी कहलाता था। उसका शासन कठिनाइयों से पूर्ण था। शत्रुओं के आक्रमण के कारण उसके राज्य के कुछ भागों पर शत्रुओं का अधिकार हो गया था। ऐसी परिस्थिति में ययाती चण्डीहर महाशिवगुप्त तृतीय राजा बना।

ययाती चण्डीहर प्रतापी राजा था। उसने राज्य शासन को सम्हाल कर कोसल तथा उत्कल प्रदेशों को शत्रुओं से मुक्त कर लिया। सम्भवत: कलचुरियों द्वारा उसके अधिकृत दक्षिण कोसल के कुछ भाग को छीन लिया गया था जिसे उसने वापस ले लिया।

चण्डीहर के बाद उसका पुत्र उद्योतकेसरी महाभवगुप्त चतुर्थ १०५५ ई० में राजा हुआ। वह इस वंश का अन्तिम महान सम्राट था। उसका राज्यकाल २५ वर्ष का था। सम्भवत: उसका युद्ध कलचुरियों के साथ हुआ। कलचुरियों ने इस समय तक रत्नपुर में अपनी शाखा स्थापित कर ली थी। कलचुरियों की इस शाखा द्वारा दक्षिण कोसल का वह भाग सदा के लिए छीन लिया गया जो अभी तक सोमवंशियों के राज्य का एक भाग था।

चक्रकोट के छिंदक नाग

बस्तर जिले से प्राप्त कुछ अभिलेखों से ज्ञात होता है कि ग्यारहवीं सदी ई० के प्रारम्भ में बस्तर में नागवंशी राजाओं ने अपने राज्य की स्थापना की। उस समय बस्तर क्षेत्र को चक्रकोट कहा जाता था। अत: ये राजा चक्रकोट के राजा कहलाते थे। चक्रकोट के नागवंशी नरेश अपने को काश्यप गोत्रीय और छिंदक कुल के मानते थे तथा उन्होंने भोगावती-पुरवरेश्वर की उपाधि धारण की थी।

छिंदकों के प्रथम राजा नृपतिभूषण का उल्लेख एर्राकोट से प्राप्त शक संवत् ९४५ (१०२३ ई०) के खण्डित शिलालेख[1] में मिलता है। उसकी उपलब्धियों के सम्बन्ध में और कोई उल्लेख नहीं मिलता।

छिंदक नागों का दूसरा राजा धारावर्ष जगदेकभूषण था जिसके शासन काल का शक संवत् ९८३ (१०६० ई०) का एक शिलालेख बारसूर में प्राप्त हुआ है।[2] इस अभिलेख से विदित होता है कि जगदेकभूषण के शासन काल में उसके एक सामन्त महामण्डलेश्वर चन्द्रादित्य द्वारा बारसूर में चन्द्रादित्य समुद्र नामक तालाब खुदवाया गया था तथा उसके तट पर चन्द्रादित्येश्वर नामक शिव मन्दिर का निर्माण करवाया गया था। मन्दिर की प्रतिष्ठापना के समय जगदेकभूषण को स्वयं उपस्थित रहते हुए बतलाया गया है। अभिलेख में चन्द्रादित्य को अम्मग्राम का स्वामी बतलाया गया है।

छिंदक नागों का तीसरा राजा मधुरान्तकदेव हुआ। यद्यपि वह छिंदक कुल का और नागवंशी ही था, किन्तु जगदेकभूषण से उसका क्या सम्बन्ध था यह ज्ञात नहीं है। मधुरान्तकदेव के राजपुर से प्राप्त शक संवत् ९८७ (१०६५ ई०) के ताम्रपत्र[3] से ज्ञात होता है कि उसने भ्रमरकोट्य मण्डल में स्थित राजपुर नामक ग्राम दान में दिया। मधुरान्तकदेव अधिक समय तक राज्य नहीं कर सका क्योंकि उसका वध धारावर्ष जगदेकभूषण के पुत्र सोमेश्वर प्रथम के द्वारा कर दिया गया। इस प्रकार सोमेश्वर प्रथम ने अपने पैतृक राज्य को प्राप्त किया।

सोमेश्वर प्रथम के शासन काल के कई अभिलेख प्राप्त हुए हैं जिनमें सर्वप्रथम कुरुसपाल से प्राप्त शक-संवत् ९९१ (१०६९ ई०) का है[4] तथा अन्तिम वहीं से प्राप्त शक संवत् १०१९ (१०९७ ई०) का है।[5] अतः स्पष्ट है कि उसका राज्यकाल लगभग तीस वर्ष का था। सोमेश्वर प्रथम का सबसे महत्वपूर्ण लेख कुरुसपाल से प्राप्त एक खण्डित शिलालेख है[6] जिसमें उसकी उपलब्धियों का वर्णन है। इस शिलालेख के अनुसार सोमेश्वर को चक्रकूट का राज्य विंध्यवासिनी देवी के प्रसाद से प्राप्त हुआ था और उसने मधुरान्तक का वध किया था। अभिलेख में उल्लेख आया है कि उसने वेंगी को जला डाला था तथा भद्रपट्टन और वज्र को जीत लिया था एवं दक्षिण कोसल के ६ लाख ९६ गाँवों पर अपना अधिकार कर लिया था। ऐसा लगता है कि उसने दक्षिण कोसल के बहुत बड़े भाग पर अपना अधिकार कर लिया था। इन्ही विजय-यात्राओं के समय उसका संघर्ष रतनपुर के कलचुरि राजाओं के साथ हुआ होगा। रतनपुर के कलचुरि नरेश जाजल्लदेव प्रथम के कलचुरि संवत ८६६

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ८५३
२. वही, क्रमांक ८६१-अ
३ वही, क्रमांक ८६३
४. वही, क्रमांक ८५४-आ
५. वही, क्रमांक ८५४-अ
६. वही, क्रमांक ८५४-ई

के शिलालेख[१] से विदित होता है कि जाजल्ल ने युद्ध में सोमेश्वर को मन्त्रियों और रानियों समेत कैद कर लिया था परन्तु बाद में उसकी माता के अनुरोध पर छोड़ दिया था। यह युद्ध ११११ ई० के पूर्व हुआ था, क्योंकि सोमेश्वर की माता गुण्डमहादेवी के नारायनपाल शिलालेख[२] से ज्ञात होता है कि ११११ ई० में सोमेश्वर प्रथम का पुत्र तथा उत्तराधिकारी कन्हर राज्य कर रहा था।

बारसूर से गंगमहादेवी का शक संवत् ११३० (१२०८ ई०) का एक शिलालेख[३] प्राप्त हुआ है जिसमें राजभूषण सोमेश्वर का उल्लेख है। गंगमहादेवी उसकी रानी थी। कुछ विद्वान् इस सोमेश्वर को सोमेश्वर द्वितीय मानते हैं, परन्तु स्व० रायबहादुर हीरालाल आदि का मत है कि इस शिलालेख में पड़ी हुई तिथि गलत है और वह शक संवत् ११३० के स्थान पर १०३० होना चाहिये। यहाँ उल्लेखनीय है कि गढ़िया से प्राप्त एक अन्य तिथि-रहित शिलालेख[४] में भी राजभूषण महाराज का उल्लेख आया है।

इसी प्रकार बारसूर से प्राप्त एक अन्य शिलालेख में[५] में कन्नरदेव नामक राजा का उल्लेख आया है जिसे कुछ विद्वान् कन्हर द्वितीय मानते हैं।

जटनपाल से प्राप्त शक संवत् ११४० (१२१८ ई०) के शिलालेख[६] में तथा दन्तेवाड़ा से प्राप्त शक संवत् ११४७ के स्तम्भ-लेख में[७] जगदेकभूषण महाराज नरसिंहदेव का उल्लेख आया है। इसी प्रकार भैरमगढ़ के एक तेलगु शिलालेख में महाराज जगदेकभूषण को माणिक्य देवी का भक्त बताया गया है। जगदेकभूषण नरसिंह के समय से ही छिंदक नागवंश का क्रमबद्ध इतिहास नहीं मिलता।

सुनारपाल से प्राप्त एक तिथि-रहित शिलालेख में[८] जयसिंहदेव का वर्णन मिलता है। इस जयसिंहदेव का जगदेकभूषण नरसिंह से क्या सम्बन्ध रहा होगा यह अज्ञात है। इसके पश्चात् टेमरा से प्राप्त शक संवत् १२४६ के सती प्रस्तर-लेख[९] में एक अन्य राजा हरिश्चन्द्र का नाम मिलता है जो चक्रकोट में राज्य करता था। यद्यपि अभिलेख में हरिश्चन्द्र के वंश का नामोल्लेख नहीं किया गया है, फिर भी अनुमान किया जाता है कि वह नागवंशी राजा था।

---

१. का० इं० इं० भाग ४, खण्ड २, पृ० ४०६, ४१७
२. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ८५६
३. वही, क्रमांक ८६१-आ
४. वही, क्रमांक ८५५-आ
५. हीरालाल सूची, क्रमांक २९२
६. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ८५६
७. वही, क्रमांक ८५८-आ
८. वही, क्रमांक ८६४
९. वही, क्रमांक ८५७

कवर्धा का नागवंश

कवर्धा के नागवंश की स्थापना लगभग ९वीं सदी ई० के प्रारम्भ में हुई थी। इस फणि (नाग) वंश का विवरण कवर्धा से लगभग १६ किलोमीटर दूर चौरा नामक ग्राम के निकट जंगल में स्थित मड़ुवा महल नामक मन्दिर के निकट पड़े एक शिलालेख में मिलता है। यह शिलालेख फणि (नाग) वंशी राजा रामचन्द्र द्वारा शिवमन्दिर-निर्माण के उपलक्ष में विक्रम संवत् १४०६ (१३४९ ई०) में उत्कीर्ण किया गया था।[१] अभिलेख में इस नागवंश की उत्पत्ति से ले कर रामचन्द्र तक हुए सभी राजाओं की वंशावली दी है।

इस अभिलेख में दी गयी वंशावली के अनुसार इस वंश का पहला राजा अहिराज था। उसके बाद क्रमशः राजल्ल, धरणीधर, महिमदेव, सर्ववंदन (शक्तिचन्द्र ?), गोपालदेव, नलदेव और भुवनपाल हुए। भुवनपाल के बाद उसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र कीर्तिपाल हुआ। परन्तु उसके कोई सन्तान न होने के कारण उसका छोटा भाई जयत्रपाल राजा हुआ। जयत्रपाल के उत्तराधिकारी थे क्रमशः—महिपाल, विषमपाल, जन्हु, जनपाल (अथवा विजनपाल अथवा जुवपाल), यशोराज, कन्हडदेव (अथवा वल्लभदेव) और लक्ष्मवर्मा। लक्ष्मवर्मा का उत्तराधिकारी उसका ज्येष्ठ पुत्र खड्गदेव हुआ और उसकी परम्परा में क्रमशः भुवनैकमल्ल, अर्जुन, भीम और भोज हुए। किन्तु भोज के बाद लक्ष्मीवर्मा के दूसरे पुत्र तथा खड्गदेव के लघु भ्राता चन्दन का प्रपौत्र लक्ष्मण राजा हुआ। लक्ष्मण का पुत्र रामचन्द्र था जिसने इस प्रशस्ति की रचना की। वह १३४९ ई० में राज्य करता था।

कवर्धा के नागवंशी राजा रत्नपुर के कलचुरि वंश का प्रभुत्व स्वीकार करते थे। इस वंश के राजाओं में सर्ववंदन के पुत्र गोपालदेव का उल्लेख कवर्धा से १२ किलोमीटर दूर स्थित बोरमदेव के मन्दिर में प्राप्त कलचुरि संवत् ८४० के अभिलेख में आया है।[२] इसी प्रकार जनपाल के पुत्र यशोराज का कलचुरि संवत् ९३४ का एक शिलालेख चौरा से लगभग ३० किलोमीटर दूर साहसपुर से प्राप्त हुआ है।[३]

कांकेर का सोमवंश

बस्तर जिले में स्थित कांकेर से प्राप्त कुछ अभिलेखों से यहाँ राज्य करते हुए सोमवंशी राजाओं का पता चलता है, जो रत्नपुर के कलचुरि राजाओं का प्रभुत्व मानते थे। यहाँ से प्राप्त भानुदेव के शासनकालीन शक संवत् १२४२ (१३२० ई०) के अभिलेख[४] में भानुदेव के पूर्वजों की वंशावली दी है। तदनुसार इस सोमवंश का सर्वप्रथम राजा सिंहराज था। उसके पश्चात् जो राजा हुए वे थे—सिंहराज का पुत्र व्याघ्रराज, व्याघ्रराज

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ८६६
२. वही, क्रमांक ८६७-अ
३. वही, क्रमांक ८७०
४. वही, क्रमांक ८७१-अ

का पुत्र बोपदेव, बोपदेव का पुत्र कृष्ण, कृष्ण का पुत्र जैतराज तथा जैतराज का पुत्र सोमचन्द्र जो भानुदेव का पिता था।

तहनकापर से इसी वंश के पम्पराजदेव नामक राजा के कलचुरि संवत् ९६५ तथा ९६६ में उत्कीर्ण दो और ताम्रपत्र-लेख प्राप्त हुए हैं।[1] कलचुरि संवत् ९६६ के ताम्रपत्र में पम्पराजदेव के पिता सोमराज तथा सोमराज के पिता बोपदेव का नामोल्लेख है। इस अभिलेख से विदित होता है कि बोपदेव के समय कांकेर के सोमवंशी राज्य की दो शाखाएँ हो गयी थीं जिसमें से एक में पम्पराज हुआ और दूसरी शाखा में चार-पाँच पीढ़ियों बाद भानुदेव हुआ। इनके बाद के राजाओं के बारे में कुछ भी सूचना नहीं मिलती।

देवगिरि का यादव वंश

ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी ई० के मध्य देवगिरि (औरंगाबाद जिले में स्थित आधुनिक दौलताबाद) के यादव शासकों ने अपने साम्राज्य का विस्तार कर विदर्भ के अधिकांश भाग पर आधिपत्य स्थापित कर लिया। इस वंश के प्रथम तीन शासक-भिल्लम जैतुगि तथा सिंघण ने मालवा पर आक्रमण कर समकालीन परमार शासकों को पराजित किया। बालाघाट जिले से प्राप्त एक अभिलेख[2] के अध्ययन से कुछ विद्वानों का विश्वास है कि सिंघण का साम्राज्य यहाँ तक फैला हुआ था। यादव वंश के चतुर्थ शासक कृष्ण तथा पंचम शासक महादेव के समय में भी मालवा पर आक्रमण किया गया। रामचन्द्र के राजत्व-काल में यादव-साम्राज्य का काफी विस्तार हुआ। बालाघाट जिले में स्थित लांजी से प्राप्त उसके एक अभिलेख[3] से ज्ञात होता है कि उसके राज्य की सीमा मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले तक विस्तृत हो गयी थी। रामचन्द्र इस वंश का अन्तिम स्वतन्त्र शासक था। अपने राज्यकाल के अन्तिम भाग में उसे दिल्ली के शासक अलाउद्दीन खिलजी की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी थी।

मन्दसौर का गुहिल राजवंश

मन्दसौर जिले के जीरण नामक स्थान के पंचदेवरा मन्दिर तथा छत्री (छतरी) पर उत्कीर्ण छः अभिलेखों से यहाँ पर १०वीं सदी ई० में राज्य करते हुए एक गुहिलवंश का पता चलता है। इन छः अभिलेखों में एक वि० सं० १०५३ का[4] है तथा शेष वि० सं० १०६५ के हैं।[5] इन अभिलेखों में विग्रहपाल, बच्छराज, वैरिसिंह, लक्ष्मण आदि के नाम आये हैं। चाहमान वंश के श्री अशोय्य का भी उलेल्ख है। गुप्तवंश के वसंत की पुत्री सर्वदेवी द्वारा स्तम्भ-निर्माण का भी उल्लेख है। इस गुहिल वंश का पूर्व तथा परवर्ती इतिहास क्या है तथा मेवाड़ के गुहिल वंश से उनका क्या सम्बन्ध था, इस सम्बन्ध में इतिहास मौन है।

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ८७३ अ-आ
२. वही, क्रमांक ८७६
३. वही, क्रमांक ८७७
४. वही, क्रमांक ८८०-अ
५. वही, क्रमांक ८८० आ-ऊ

कच्छपघात् राजवंश

दसवीं सदी ई० के मध्य से १२वीं सदी ई० के पूर्वार्ध तक ग्वालियर तथा उसके आस-पास के क्षेत्र पर कच्छपघात् राजवंश का राज्य था। अभिलेखों से इस वंश के तीन शाखाओं का पता चलता है, जो क्रमशः ग्वालियर, दुबकुण्ड तथा नरवर से राज्य कर रहे थे। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

ग्वालियर शाखा

ग्वालियर (प्राचीन गोपाद्री) के कच्छपघात् शाखा का सर्वप्रथम नरेश लक्ष्मण था। उसके राज्य की सीमा क्या थी यह हमें ज्ञात नहीं। दसवीं सदी के उत्तरार्ध में ग्वालियर पर चन्देल नरेश धंग का राज्य था। धंग इस समय कन्नौज के प्रतिहार नरेश विनायकपाल का सामन्त मात्र था। ९७७ ई० के लगभग कच्छपघात् लक्ष्मण के पुत्र महाराजाधिराज वज्रदामन् ने गाधिनगर (कन्नौज) के नरेश को पराजित कर ग्वालियर पर अपना राज्य स्थापित कर लिया। इस समय कन्नौज का प्रतिहार नरेश विजयपाल था। वज्रदामन् का उत्तराधिकारी मंगलराज था। मंगलराज के पश्चात् कीर्तिराज राजा हुआ। कीर्तिराज ने मालव नरेश के आक्रमण का सामना कर अपने राज्य की रक्षा की। यह मालव नरेश सम्भवतः परमार शासक भोज प्रथम रहा होगा। १०२१ ई० में ग्वालियर पर गज़नी के महमूद का आक्रमण हुआ जिसमें ग्वालियर नरेश ने आत्मसमर्पण कर दिया। यह नरेश सम्भवतः कीर्तिराज ही था। कीर्तिराज के उत्तराधिकारी थे क्रमशः—मूलदेव, देवपाल तथा पद्मपाल। सम्भवतः पद्मपाल का कोई पुत्र नहीं था। अतः उसका चचेरा भाई सूर्य-पाल का पुत्र महीपाल गद्दी पर बैठा। महीपाल के उत्तराधिकारी थे क्रमशः—भुवनपाल तथा मधुसूदन। मधुसूसन के पश्चात् इस वंश के इतिहास का कुछ भी पता नहीं। ११९६ ई० में ग्वालियर को मुसलमानों द्वारा जीत लिया गया।

कच्छपघात् वंश के पूरे इतिहास का पता केवल तीन अभिलेखों से चलता है, जिनमें इसके नरेशों की वंशावली दी हुई है तथा उनकी उपलब्धियों का वर्णन है। पहला अभिलेख वज्रदामन् के राजत्व काल का वि० सं० १०३४ का है जो ग्वालियर से प्राप्त एक जैन प्रतिमा पर उत्कीर्ण है[1]। दूसरा अभिलेख महीपाल के शासन काल का वि० सं० ११५० का है जो ग्वालियर के सास-बहू मन्दिर में दो प्रस्तरों पर उत्कीर्ण है।[2] ग्वालियर से प्राप्त तीसरा खण्डित अभिलेख वि० सं० ११६१ का है जिसमें महीपाल के उत्तराधिकारी भुवन-पाल तथा मधुसूदन का उल्लेख है।[3]

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ८८३-अ
२. वही, क्रमांक ८८३-आ
३. वही, क्रमांक ८८३-इ

दुबकुण्ड शाखा

कच्छपघात् राजवंश की एक शाखा ग्वालियर से ७६ मील दक्षिण-पश्चिम में स्थित दुबकुण्ड (प्राचीन चडोभ) में राज्य करती थी। इस वंश के अन्तिम नरेश विक्रमसिंह का वि० सं० ११४५ का एक अभिलेख दुबकुण्ड के एक विशाल जैन मन्दिर के खण्डहरों में पड़े एक बड़े शिलालेख पर उत्कीर्ण मिला है।[१] इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि इस वंश का सर्वप्रथम नरेश अर्जुन था जिसके पिता का नाम युवराज था। अर्जुन चन्देल नरेश विद्याधर के सामन्त के रूप में यहाँ राज्य करता था। उसने कन्नौज के नरेश प्रतिहार राज्यपाल को मारा था। अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु था, जो परमार नरेश भोज का समकालीन था। अभिमन्यु का पुत्र विजयपाल था तथा विजयपाल का पुत्र विक्रमसिंह था।

नरवर शाखा

कच्छपघात् राजवंश की एक तीसरी शाखा नरवर (प्राचीन नलपुर) में राज्य करती थी। इस वंश के अन्तिम नरेश वीरसिंह का एक ताम्रपत्र, जो वि० सं० ११७७ में प्रचलित किया गया था, नरवर से प्राप्त हुआ है।[२] इसमें दिये गये वर्णन के अनुसार इस वंश का सर्वप्रथम शासक गगनसिंह था। गगनसिंह का उत्तराधिकारी शरदसिंह हुआ। शरदसिंह का उत्तराधिकारी वीरसिंह था, जिसने उपरोक्त ताम्रपत्र प्रचलित किया।

नरवर का यज्वपाल राजवंश

तेरहवीं सदी ई० के उत्तरार्ध में नरवर (प्राचीन नलपुर) में यज्वपाल राजवंश का उदय हुआ। इस वंश के प्रारम्भिक राजाओं ने रणथम्भोर के चाहमानों के सामन्तों के रूप में राज्य प्रारम्भ किया। बाद में वे स्वतन्त्र हो कर नलपुर में अपनी राजधानी स्थापित कर राज्य करने लगे।

इस वंश का प्रथम राजा चाहड़ था। वह सम्भवतः चौहानवंशी पृथ्वीराज तृतीय का वंशज था। परन्तु पृथ्वीराज से उसका क्या सम्बन्ध था, यह ज्ञात नहीं। चाहड़ के नामयुक्त वि० सं० १३०० का एक अभिलेख विदिशा जिले में उदयपुर में स्थित उदयेश्वर मन्दिर की पूर्वी महराब पर उत्कीर्ण मिला है।[३] उसका उल्लेख करते हुए, एक दूसरा अभिलेख जो वि० सं० १३०४ का है, गुना जिले में भक्तर में स्थित एक सती-स्तम्भ पर उत्कीर्ण मिला है।[४] उसने सिक्के भी प्रचलित किये, जो १२३७ ई० से १२५४ ई० से बीच के हैं।[५] इन अभिलेखों तथा सिक्कों से उसके राज्यकाल की विशेष घटनाओं का

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ८८५
२. वही, क्रमांक ८८६
३. वही, क्रमांक ८८७
४. वही, क्रमांक ८९९
५. वही, क्रमांक २४१९

ज्ञान नहीं होता। उसके पोते आसल्लदेव के एक अभिलेख के वर्णन से अवश्य ही ज्ञात होता है कि उसने परमारों को पराजित किया था।

चाहड़ की मृत्यु सम्भवतः १२५४ ई० में हुई। उसी वर्ष से सम्बन्धित सिक्के उसके पोते आसल्लदेव द्वारा प्रचलित किये गये।[१] इससे विद्वानों द्वारा अनुमान लगाया गया है कि आसल्लदेव के गद्दी पर बैठने के पूर्व ही उसके पिता नृवर्मन् का देहान्त हो गया था। सम्भवतः वह किसी युद्ध में मारा गया था।

आसल्लदेव के राज्य काल के चार अभिलेख नरवर,[२] बड़ौदी,[३] भीमपूर[४] तथा बूढ़ी-राई[५] से प्राप्त हुए हैं। उसके अनेक सिक्के भी मिले हैं जो १२५४ ई० से १२७९ ई० के बीच के हैं।[६] परन्तु इन सिक्कों तथा अभिलेखों से उसके राज्यकाल के इतिहास पर कोई विशेष प्रकाश नहीं पड़ता। अभिलेखों में उसकी रानी लावण्यदेवी, प्रधानमंत्री देवधर तथा अधिकारी जैत्रसिंह के नामों का उल्लेख है।

आसल्लदेव का उत्तराधिकारी उसका पुत्र गोपालदेव था जिसका राज्यकाल १२७९ ई० से १२९० ई० के बीच माना जाता है। उसके राज्यकाल के तेरह अभिलेख नरवर,[७] बंगला,[८] बलारपुर,[९] पचरई[१०] तथा बढ़ोतर[११] से प्राप्त हुए हैं जो वि० सं० १३३८ तथा १३४५ के बीच के हैं। इन अभिलेखों से उसके राज्यकाल में बुन्देलखण्ड के चन्देल नरेश वीरवर्मन् द्वारा नरवर पर किये गये आक्रमण का पता चलता है। वि० सं० १३३८ का उसका नरवर-अभिलेख उल्लेख करता है कि इस युद्ध में गोपालदेव ने चन्देल नरेश को पराजित किया। इसके विपरीत वीरवर्मन् के दाहि से प्राप्त अभिलेख में उसके द्वारा यज्व-पालों पर प्राप्त विजय का उल्लेख है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह युद्ध अनिर्णायक रह कर किसी के भी पक्ष में नहीं गया। यह युद्ध नरवर के पास ही लगभग ५ मील पूर्व की ओर आधुनिक बंगला नामक स्थान पर लड़ा गया था। बंगला में आज भी अनेक स्मारक-स्तम्भ खड़े हैं जिनपर गोपालदेव की ओर से लड़ते हुए आहत अधिकारियों तथा वीरों का वर्णन हैं। अधिकारियों में मन्त्री गंगदेव, सामन्त हंसराज तथा उसका पुत्र

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २४१९
२. वही, क्रमांक ८९०-इ
३. वही, क्रमांक ८९६
४. वही, क्रमांक ९००
५. वही, क्रमांक ९०३
६. वही, क्रमांक २४१९
७. वही, क्रमांक ८९०-अ-आ, ८९२
८. वही, क्रमांक ८९५-अ-ए
९. वही, क्रमांक ८९८
१०. वहीं, क्रमांक ८९३
११. वही, क्रमांक ८९७

वल्हदेव के नाम उल्लेखनीय हैं। गोपालदेव के समय भवन-निर्माण कार्य अधिक हुए। उसके काल के अधिकांश लेख कूप, वापी आदि के निर्माण के ही हैं।

इस वंश का अन्तिम नरेश गोपालदेव का पुत्र गणपति हुआ। वह १२९० ई० के लगभग गद्दी पर बैठा। उसके राज्यकाल के ग्यारह अभिलेख तिलोरी,[1] नरवर,[2] पहाड़ो,[3] बलारपुर,[4] भेसरवास,[5] सुरवाया[6] तथा मुखवासा[7] से प्राप्त हुए हैं। उसकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि थी चन्देलों को पराजित कर कीर्तिदुर्ग पर अधिकार करना। इसका उल्लेख नरवर से प्राप्त उसके वि० सं० १३५५ के अभिलेख में आया है। सम्भवतः इस युद्ध में उसके सामन्त अधिगदेव ने भी उसकी सहायता की हो।

कीर्तिदुर्ग तथा नरवर पर गणपति का शासन कब तक स्थायी रहा यह कहना कठिन है। हमें ज्ञात है कि १२९४ ई० में मुस्लिम शासक अलाउद्दीन ने दक्कन की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में सम्भवतः उसने गणपति को पराजित कर उसके राज्य को छीन लिया। गणपति तथा उसके उत्तराधिकारियों का क्या हुआ इस सम्बन्ध में हमें कुछ भी ज्ञात नहीं।

तोमर राजवंश

चौदहवीं सदी ई० के उत्तरार्ध में भारत पर तैमूर के आक्रमण तथा उसके परिणाम-स्वरूप मुस्लिम सत्ता के डांवाडोल होने की परिस्थिति का लाभ उठा कर ग्वालिगर में तोमर वंश की स्थापना हुई। ग्वालियर पर इस वंश का प्रभुत्व सोलहवीं सदी ई० के पूर्वार्ध तक रहा।

तोमर वंश का संस्थापक वीरसिंहदेव था। वीरसिंहदेव के उत्तराधिकारी क्रमशः उद्धरणदेव तथा विक्रमदेव हुए। विक्रमदेव के राज्यकाल में १४०२ ई० में नासिरुद्दीन मोहम्मद तुगलक के सेनापति मल्लु इकवाल खाँ ने ग्वालियर पर आक्रमण कर किले को जीतना चाहा, परन्तु उसका प्रयत्न असफल रहा। अगले वर्ष उसने फिर से आक्रमण किया तथा विक्रमदेव को धोलपुर के निकट पराजित किया। १४०४-५ ई० में इकबाल खाँ को विक्रमदेव के नेतृत्व में राजपूतों की सेना का सामना करना पड़ा जिसमें राजपूतों की पराजय हुई। १४१६ ई० में खिज्र खाँ ने विक्रमदेव से कर वसूल करने के लिए अपने वज़ीर मालिक ताज़-उल-मुल्क को भेजा।

विक्रमदेव का उत्तराधिकारी डुंगरेन्द्रसिंह १४२४ ई० में गद्दी पर बैठा। अपने

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ८८९
२. वही, क्रमांक ८९१
३. वही, क्रमाक ८९४
४. वही, क्रमांक ८९८-आ-इ
५. वही, क्रमांक ९०१
६. वही, क्रमांक ९०४-अ-ई
७. वही, क्रमांक ९०२

राज्यकाल के प्रारम्भ से ही उसे मुसलमानों से लोहा लेना पड़ा। उसके राज्यकाल के प्रथम वर्ष में मालवा के शासक हुशंगशाह ने ग्वालियर किले की घेराबन्दी की। हुशंगशाह से पीछा छुड़ाने के लिए डुंगरेन्द्रसिंह को जौनपुर के शासक मुबारक शाह की सहायता लेनी पड़ी और उसे कर भी देना पड़ा, परन्तु उसने अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बराबर बनाये रखा। दिल्ली के सुलतान ने उससे कर वसूल करने के उद्देश्य से उसके विरुद्ध १४२७, १४२८, १४२९ तथा १४३२ ई० में सेना भेजी, परन्तु इन सभी प्रयत्नों को उसने विफल कर दिया।

१४३८ ई० में डुंगरेन्द्रसिंह ने नरवर के गढ़ को घेर लिया जो कुछ समय से मालवा के सुलतान के अधीन हो गया था। यद्यपि इस प्रयास में डुंगरेन्द्रसिंह असफल रहा, परन्तु भविष्य में नरवर तोमरों के अधीन अवश्य हो गया।

डुंगरेन्द्रसिंह के समय में राजनीतिक रूप से तोमर बहुत प्रबल हो गये थे। उत्तर भारत में उनकी धाक थी। दिल्ली, जौनपुर और मालवा के मुस्लिम राज्यों के बीच में स्थित इस हिन्दू-राज्य से सब सहायता भी माँगते थे और समय पा कर उसे हड़पना भी चाहते थे। डुंगरेन्द्रसिंह का राज्यकाल उसके द्वारा जैन धर्म को दिये गए प्रश्रय के लिए प्रसिद्ध है। ग्वालियर के किले की दीवारों पर उत्कीर्ण जैन प्रतिमाएँ तथा उनकी चरण-चौकियों पर उसके राज्यकाल में लिखे गये लेख इस बात की साक्षी हैं। ये लेख वि० सं० १४९० से १५२७ के बीच के हैं।[१]

१४५५ ई० के लगभग डुंगरेन्द्रसिंह का उत्तराधिकारी कीर्तिसिंह गद्दी पर बैठा। अपने २५ वर्ष के राज्यकाल में इन्हें अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए कभी जौनपुर और कभी दिल्ली के मुस्लिम शासक को मित्र बनाना पड़ा। इनके राज्यकाल में भी जैन-मूर्तियाँ बनीं, जैसा कि मूर्तियों की चरण-चौकियों पर उत्कीर्ण दस अभिलेखों से ज्ञात होता है जो वि० सं० १५२२ तथा १५३१ के बीच की हैं।[२] इनके अतिरिक्त पढ़ावली, पनिहार, बघेर तथा बरई से वि० सं० १५२८,[३] १५२९,[४] तथा १५३२[५] के अभिलेख प्राप्त हुए हैं।

कीर्तिसिंह का उत्तराधिकारी कल्याणमल था। उसके राज्यकाल की कोई घटना उल्लेखनीय नहीं है।

कल्याणमल का उत्तराधिकारी उसका पुत्र मानसिंह था जो इस वंश का सबसे प्रतापी राजा था। १४८६ ई० से १५१७ ई० तक के उसके राज्यकाल में राजनीतिक तथा सांस्कृतिक दोनों क्षेत्रों में अनेक उपलब्धियाँ हुईं।

अपने राज्यकाल में मानसिंह को दिल्ली के लोदी शासक बहलोल लोदी, सिकन्दर लोदी तथा इब्राहीम लोदी से टक्कर लेनी पड़ी। १४९१ ई० में जब बहलोल लोदी

---

१. प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक ९०५-अ, आ, इ, ई, उ, घ, च

२. वही, क्रमांक ९०५-ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, क, ख, ग, ङ, छ

३. वही, क्रमांक ९०६

४. वही, क्रमांक ९०७, ९०९

५. वही, क्रमांक ९०८

ग्वालियर की सीमा के निकट से गुजरा तो मानसिंह ने उसे ८० लाख टंकों का उपहार भेजा। अगले वर्ष बहलोल लोदी का उत्तराधिकारी सिकन्दर लोदी जब ग्वालियर आया तो उसने मानसिंह को खिल्लत प्रदान किया। १५०० ई० के लगभग मानसिंह ने निहालसिंह नामक प्रतिनिधि को सिकन्दर लोदी के दरबार में भेजा। उसके अनुचित व्यवहार के कारण मानसिंह तथा सिकन्दर लोदी के आपसी सम्बन्ध बिगड़ गये तथा इसके पश्चात् सिकन्दर लोदी ने कई बार ग्वालियर पर आक्रमण किया। ग्वालियर पर सिकन्दर लोदी का पहला आक्रमण १५०१ ई० में हुआ जब मानसिंह ने उसे धन दे कर तथा अपने पुत्र विक्रमादित्य को भेज कर उससे सन्धि कर ली। १५०५ ई० में सिकन्दर लोदी ने ग्वालियर पर फिर से आक्रमण किया। इस बार मानसिंह ने अच्छी तरह उसके दांत खट्टे किये। उसकी रसद काट दी गयी और वह बड़ी दुर्व्यवस्था के साथ भाग गया। १५१७ ई० तक मानसिंह को शान्ति से शासन करने का अवसर प्राप्त हुआ। १५१७ ई० में सिकन्दर लोदी ने पूर्ण संकल्प के साथ ग्वालियर पर आक्रमण करने की तैयारी की। इसी बीच उसकी मृत्यु हो गयी। सिकन्दर लोदी का उत्तराधिकारी इब्राहीम लोदी ने राज्य सम्भालते ही ग्वालियर पर आक्रमण करने का निश्चय किया। अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ उसने ग्वालियर के किले पर आक्रमण किया तथा उसे घेर लिया। किला जब घिरा हुआ था, उसी समय मानसिंह की आकस्मिक मृत्यु हो गयी। मानसिंह के पुत्र विक्रमादित्य ने किले को बचाने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु वह असफल रहा और उसने आत्मसमर्पण कर दिया। इस प्रकार ग्वालियर का किला इब्राहीम लोदी द्वारा जीत लिया गया और तोमर शासक अपनी स्वतन्त्रता को खो कर लोदियों के अधीन हो गये।

मानसिंह जितना बड़ा योद्धा और राजनीतिज्ञ था, उतना ही बड़ा कला का पोषक था। उसने सिंचाई के लिए अनेक झीलें बनवाईं। उसके द्वारा रचित 'मानकौतूहल' संगीत का प्रमुख ग्रन्थ माना जाता है। मानसिंह द्वारा निर्मित मानमन्दिर तथा गुजरी-महल हिन्दू स्थापत्य कला के अप्रतिम उदाहरण हैं।

● ●

द्वितीय अध्याय

प्रागैतिहासिक तथा आद्य-ऐतिहासिक पुरातत्त्व

अ—पूर्व-पाषाणयुगीन स्थल

१. अकावरी (सीधी)

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

२. अग्नि नदी घाटी

नर्मदा की सहायक अग्नि नदी घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

३. अनूपपुर (शहडोल)

पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

४. अमरमऊ (सागर)

(अ) बजरी के जुड़े हुए टुकड़े, एक हस्तकुठार तथा प्राकृतिक गुफाएँ। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६९।

(आ) स्फटिक के बने पूर्व-पाषाण युगीन हस्तकुठार तथा विदारणी। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० ४-३।

५. अम्बाला (पूर्व निमाड़)

नर्मदा की घाटी के अन्वेषण में प्राप्त 'सीरीज़—१' के औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

६. अलवी महादेव (मन्दसौर)

'सीरीज़—१' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

७. आष्टा (सीहोर)

पार्वती नदी के तट पर प्राप्त एक 'मद्रासी हस्तकुठार' संस्कृति का स्थल। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० २६।

८. इताली (मन्दसौर)

पूर्व-पाषाण कालीन स्थल जहाँ से 'सीरीज़—१' के औज़ार प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० और चित्र ४, पृ० ९।

९. इन्दौर (इन्दौर)

'सुख-निवास' महल के पास से प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार जिनमें विदारणी, चक्रिक उपकरण, खुरचनी और हस्तकुठार शामिल थे। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

१०. इन्द्रगढ़ (मन्दसौर)

चम्बल-घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

११. ईसरवाड़ा (सागर)

बेतवा की सहायक बीना नदी की तह से प्राप्त 'सीरीज—१' के औज़ार जो स्फटिक के बने हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

१२. कटनी (जबलपुर)

कटनी नदी के उत्तरी तट पर स्थित हनुमान टेकरी के पास से प्राप्त ऐश्यूली हस्तकुठार। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ७९।

१३. कदवाहा (गुना)

हस्तकुठार, विदारणी और गडांसों आदि सहित प्राप्त पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९।

१४. कस्तरा (जबलपुर)

'सीरीज़—१' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

१५. कानीखेड़ी (सागर)

स्फटिक के बने हस्तकुठार एवं विदारणी सहित प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन अन्य औज़ार। इ० आ० रि० १९६४-६५ (सा० रि०), पृ० ४-३।

१६. कालीपुर (बस्तर)

इन्द्रावती के तट पर स्थित इस स्थान से प्राप्त पूर्व-पाषाण कालीन उपकरण। **म० प्र० स० पुरातत्त्व विशेषांक (जून ३१, १६७०), पृ० १०।**

१७. किरवई (विदिशा)

बेतवा नदी घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—१' के औज़ार। इ० आ० रि० १६५६-६०, पृ० २२।

१८. केडलारी (सागर)

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार, जो 'इण्डियन म्यूज़ियम' कलकत्ता में संरक्षित हैं। **म० पु० रू०, पृ० ३७।**

१९. कुण्डम (जबलपुर)

'सीरीज़—१' के औज़ार। इ० आ० रि० १६५८-५६, पृ० २७।

२०. कुण्डाला नदी की घाटी

नर्मदा की सहायक नदी कुण्डाला की घाटी की खोज में उसकी तह से प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १६५६-६०, पृ० ६६।

२१. केथुरी (विदिशा)

बेतवा नदी-घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ारों का स्थल। इ० आ० रि० १६५८-५६, पृ० २१ तथा चित्र ११, पृ० २२।

२२. केदारेश्वर (मन्दसौर)

चम्बल-घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १६५८-५६, पृ० २७।

२३. कोजीखेड़ी (दमोह)

हस्तकुठार, विदारणी आदि पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १६५७-५८, पृ० २६।

२४. कोटड़ा (राजगढ़)

पार्वती नदी के तट पर प्राप्त 'मद्रासी हस्तकुठार' संस्कृति का स्थल। इ० आ० रि० १६५७-५८, पृ० २६।

२५. कोठा (विदिशा)

बेतवा नदी—घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—१' के औज़ार। इ० आ० रि० १६५६-६०, पृ० २२।

२६. कोरवई (विदिशा)

बेतवा नदी-घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ारों का स्थल। इ० आ० रि० १६५८-५६, पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२।

२७. **कोहला (मन्दसौर)**

हस्तकुठार तथा विदारणी सहित प्राप्त पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० ४४।

२८. **कंठार (मन्दसौर)**

पूर्व-पाषाण युगीन स्थल जहाँ से 'सीरीज़—१' के औज़ार प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

२९. **करियाखेड़ा (दमोह)**

कुसमी-नाला की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९।

३०. **खुताली (सीधी)**

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

३१. **खेजुरी (विदिशा)**

बेतवा नदी-घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ारों का स्थल। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२।

३२. **खैरपुर (सीधी)**

पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

३३. **खैरा (सीधी)**

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

३४. **गढ़ाकोटा (सागर)**

सोनार नदी के तट पर पूर्व-पाषाण कालीन औज़ारों सहित बजरी। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ७२।

३५. **गमाकर (विदिशा)**

बेतवा नदी-घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ारों का स्थल। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२।

३६. **गारबर्डो (पूर्व निमाड़)**

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

३७. **ग्यारसपुर (विदिशा)**

(अ) पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८९।

(आ) नाले से प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ७१।

३८. **गैसाबाद**

ब्यारमा नदी-घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२।

३९. **गोड़बासा (विदिशा)**

बेतवा नदी-घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ारों का स्थल। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२।

४०. **गोमतपुर (सागर)**

(अ) बिला नदी घाटी की खोज में प्राप्त स्फटिक के बने पूर्व-पाषाण कालीन हस्तकुठार, विदारणी, अंडिल तथा खुरचनियाँ। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

(आ) स्फटिक के बने पूर्व-पाषाण कालीन उपकरण। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८-८९।

४१. **गौर नदी की घाटी**

(अ) गौर तथा गांगों नदियों की घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—१' तथा 'सीरीज़—२' के औज़ारों सहित घोंघे। ये जबलपुर जिले के जामगाँव, रामपुरिया कलां, अमेरा तथा कस्तरा में प्राप्त हुए। इ० आ रि० १९५८-५९, पृ० २७।

(आ) नर्मदा की सहायक नदी गौर की घाटी की खोज में प्राप्त अनेक स्थल, जिनमें 'सीरीज़—१' के औज़ार मिले। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

४२ **घितोरा (सीधी)**

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

४३. **चनेरा (पूर्व निमाड़)**

पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

४४. **चन्देरा (सागर)**

बीना नदी के तट पर प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

४५. **चन्देरी (गुना)**

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। **केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग के श्री सी० बी० त्रिवेदी द्वारा सूचना प्राप्त।**

४६. **चन्द्रेहा (सीधी)**

पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

४७. **चन्दोली (शहडोल)**

पूर्व-पाषाण कालीन स्थल। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १००।

४८. चम्बल नदी की घाटी

(अ) चम्बल नदी का घाटी की खोज में प्राप्त सौ से अधिक पूर्व-पाषाण कालीन स्थल। **इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ७२।**

(आ) पिछले वर्ष के खोज-कार्य के क्रम में चम्बल और उसकी सहायक नदियों की घाटी के सभी स्थलों में खोज जो चम्बल बाँध में विलीन हो गये। घाटी में 'आवरा' और 'मनोटी' के उत्खननों में संस्कृतियों की एक पूर्ण श्रृंखला मिली, जो पूर्व-पाषाण युग से लेकर पूर्व-ऐतिहासिक युग तक का प्रतिनिधित्व करती है। **इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० २२-२५, चित्र ९।**

४९. चांदगढ़ (पूर्व निमाड़)

नर्मदा की घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—१' के औज़ार। **इ० अ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।**

५०. चिकला (मन्दसौर)

'सीरीज़—१' के औज़ार प्राप्त होने वाला एक स्थल। **इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।**

५१. छान (सागर)

(अ) विला नदी की घाटी की खोज में प्राप्त स्फटिक के बने हस्तकुठार, विदारणी, अंडिल तथा क्षुरक। **इ०आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।**

(आ) पूर्व-पाषाण कालीन स्फटिक के बने औज़ार। **इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८-८९।**

५२. छिदगाँव (होशंगाबाद)

नर्मदा की सहायक गंजई नदी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। **इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९।**

५३. जतकारा (छतरपुर)

हस्तकुठार और गड़ांसों सहित पाये गये पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। **इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० ४०।**

५४. जबलपुर (जबलपुर)

मदनमहल पहाड़ियों के उत्तरी और दक्षिणी ढालों पर प्राप्त स्फटिक पत्थर के हस्ताकुठार और एक अच्छा चक्राकार उपकरण। इनके साथ ही बहुत से पहलूदार औज़ार और शल्क भी प्राप्त हुए। **इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ७८-७९।**

५५. जलोद (मन्दसौर)

चम्बल घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। **इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।**

५६. जमगांव (जबलपुर)

'सीरीज़—१' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

५७. जामाधड़ (पूर्व निमाड़)

पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६६।

५८. टीला (विदिशा)

पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८९।

५९. डिन्डोरी (मंडला)

नर्मदा-घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२४।

६०. डुलचीपुर (सागर)

बिला नदी की घाटी की खोज में प्राप्त स्फटिक के बने हस्तकुठार, विदारणी, अंडिल तथा खुरचनियाँ। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

६१. डोंगरवारा (होशंगाबाद)

(अ) नर्मदा के दाहिने तट के स्तर से प्राप्त हस्तकुठार, विदारणी तथा शल्क। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० १५।

(आ) नर्मदा के दाहिने तट के स्तर से प्राप्त एक बड़ी संख्या में हस्तकुठार, विदारणी, गडांसे तथा खुरचनियाँ। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ५९।

६२. ढिकोला (मन्दसौर)

पूर्व-पाषाण युगीन स्थल से प्राप्त 'सीरीज़—१' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

६३. तारदेही

ब्यारमा नदी घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२।

६४. दमोह (दमोह)

(अ) पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार जो 'नेशनल म्यूज़ियम' कलकत्ता में संरक्षित किये गये। म० पु० रू० पृ० ३७।

(आ) पूर्व-पाषाण कालीन स्थलों की खोज। ए० आई० क्रमांक १७ (१९६१), पृ० ५-३६।

६५. दरगढ़ (जबलपुर)

'सीरीज़—१' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

६६. दूहर-नाला (सागर)

(अ) पूर्व-पाषाण युगीन पत्थरों के औज़ार। प्रो० ए० सो० ब० १८६७, पृ० १४२-४८।

(आ) पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार जो सागर विश्वविद्यालय संग्रहालय में संरक्षित किये गये। म० पु० रू० पृ० ३७।

६७. देवकछार (नरसिंहपुर)

शिल्प उपकरण और स्तन-धारी पशुओं के जीवाश्म जो मिट्टी और बजरी में प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९६०-६१ पृ० १५।

६८. देवरी (सागर)

(अ) सुखचैन नाले में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। प्रो० ए० सो० ब० १८६७, पृ० १४२-४८।

(आ) पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार जो 'इण्डियन म्यूज़ियम' कलकत्ता तथा सागर विश्वविद्यालय संग्रहालय में संरक्षित किये गये। म० पृ० रू० पृ० ३७।

६९. देवलोंध (रीवा)

रीवा—अमरकण्टक मार्ग पर देवलोंध पुल के समीप सोन नदी की तह से प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १००।

७०. धबावली (सीधी)

पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३ पृ० ११।

७१. धमासा (होशंगाबाद)

पूर्व-पाषाण कालीन स्थल से प्राप्त हस्तकुठार, विदारणी, चक्राकार क्रोड तथा शल्क। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० २२।

७२. नर्मदा की घाटी

(अ) ऊपरी नर्मदा के अमरकण्टक से हरदा के बीच के क्षेत्र में की गई खोज, जिसमें ३५ जीवाश्म तथा उपकरण युक्त स्थल मिले। इन स्थलों से १००० से अधिक पूर्व-पाषाण युगीन पत्थरों के औज़ार तथा २०० स्तनधारी पशुओं के जीवाश्म एकत्रित किये गये। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६-२७।

(आ) गत वर्ष की खोज के क्रम में (देखिये इ० आ० रि० १९५८-५९ पृ० २७) नरसिंहपुर जिले में बरमानघाट से झाँसीघाट के बीच में की गई खोज। नर्मदा की सहायक नदियों विशेषतः शेर, ऊमर और शक्कर की भी दूर तक जाँच की गई। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० २२।

(इ) अमरकण्टक तथा होशंगाबाद के बीच लगभग ६४० किलोमीटर के फैलाव में नर्मदा की घाटी का किया गया खोज। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० १४-१७।

(ई) नर्मदा की घाटी और नर्मदा की सहायक बंजर नदी की खोज । इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६० ।

(उ) नर्मदा की घाटी और उसकी सहायक सनेर नदी का खोज । इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६० ।

(ऊ) नर्मदा की घाटी और उसकी सहायक नदियाँ; छोटा-तवा, सामदेनी, रूपरेल और घोड़ापछार का घाटियों की खोज । इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१ ।

(ए) महेश्वर तथा जबलपुर के मध्य स्थित सम्पूर्ण नर्मदा घाटी की खोज । इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० १० ।

(ऐ) होशंगाबाद और नरसिंहपुर जिलों में नर्मदा और उसकी सहायक नदियों की घाटियों की खोज । इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११ ।

७३. **नरसिंहगढ़ (नरसिंहगढ़)**

सोनार नदी-घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार । इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२ ।

७४. **नरसिंहपुर (नरसिंहपुर)**

नरसिंहपुर और होशंगाबाद के बीच नर्मदा और उसकी सहायक नदियों की खोज में प्राप्त हुए पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार । इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० १४ ।

७५. **नाकझूर (सीधी)**

पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार । इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११ ।

७६. **नावडाटोली (पश्चिम निमाड़)**

नर्मदा की घाटी में स्थित 'सीरीज़—१' के औज़ारों सहित एक स्थल । इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० और चित्र ४, पृ० ९ ।

७७. **नाहरगढ़ (मन्दसौर)**

'सीरीज़—१' के औज़ारों वाला एक स्थल । इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० और चित्र ४ पृ० ९ ।

७८. **नीमच (मन्दसौर)**

रेतम-घाटी में प्राप्त हुए ऐश्यूली विदारणी तथा चक्राकार उपकरण । इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ७८ ।

७९. **नेगई (जबलपुर)**

'सीरीज़—१' के औज़ार । इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७ ।

८०. **पगनेसर (विदिशा)**

बजरी में प्राप्त पुरा-पाषाण युगीन हस्तकुठार, विदारणी इत्यादि । इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६ ।

८१. पड़राजपुर (सागर)

स्फटिक पत्थर के बने 'सीरीज़—१' के औज़ार, जो बेतवा की सहायक नदी बीना की तह में पाये गये। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

८२. परियट नदी की घाटी (जबलपुर)

नर्मदा की सहायक परियट नदी की घाटी की खोज, जिसमें 'सीरीज़—१' के औज़ारों सहित अनेक स्थल प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

८३. पाटाजन (पूर्व निमाड़)

नर्मदा-घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—१' के औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

८४. पारखी

नर्मदा-घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२४।

८५. पिरथीपुर (सागर)

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १०० तथा चित्र १४४ बी—२।

८६. पिपरी (जबलपुर)

'सीरीज़—१' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

८७. पीलूखेड़ी (राजगढ़)

पार्वती नदी के तट पर प्राप्त 'मद्रास हस्तकुठार' संस्कृति का एक स्थल। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० २६।

८८. बड़केश्वर (पूर्व निमाड़)

नर्मदा घाटी के अन्वेषण में प्राप्त 'सीरीज़—१' के औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

८९. बड़ाकुण्ड (पूर्व निमाड़)

'सीरीज़—१' के औज़ार जो नर्मदा-घाटी के अन्वेषण में उपलब्ध हुए। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

९०. बड़ोह पठारी (विदिशा)

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग के श्री सी० बी० त्रिवेदी से सूचना प्राप्त।

९१. बन्डोल (सिवनी)

बैनगंगा नदी की घाटी के अन्वेषण में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन 'सीरीज़—१' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० २५।

९२. बबोआरी (सीधी)

पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

९३. बरगमा (सीधी)

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

९४. बरडी (सीधी)

(अ) हस्तकुठार तथा अन्य पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० २४।

(आ) पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

९५. बरमानघाट (नरसिंहपुर)

बजरी तथा मिट्टी से प्राप्त स्तनधारी पशुओं के जीवाश्म तथा शिल्प-उपकरण। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० १५।

९६. बरहई (सीधी)

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

९७. बरहा (ग्वालियर)

एक पुरा-पाषाण युगीन स्थल। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ७२।

९८. बरियारपुर (पन्ना)

'मद्रासी हस्तकुठार' संस्कृति के विकसित द्विमुखी औज़ार। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० २६।

९९. बसई (मन्दसौर)

चम्बल नदी की घाटी में 'सीरीज़—१' के औज़ारों सहित एक स्थल। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० और चित्र ४, पृ० ९।

१००. बाघ गुफ़ाएं (धार)

वाघ नदी की घाटी में 'सीरीज़—१' के औज़ारों वाला स्थल। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

१०१. बिलगवां (सागर)

(अ) बिला नदी की घाटी की खोज में प्राप्त स्फटिक के बने हस्तकुठार, विदारणी, अंडिल तथा क्षुरक। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

(आ) पूर्व-पाषाण कालीन स्फटिक के बने औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८-८९।

१०२. बिला नदी की घाटी

धसान की सहायक नदी बिला की घाटी की खोज में प्राप्त अनेक पूर्व-पाषाण युगीन स्थल। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

१०३. **बीची (सीधी)**

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

१०४. **बीजलपुर (पूर्व निमाड़)**

नर्मदा-घाटी की खोज से प्राप्त 'सीरीज़--१' के औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

१०५. **बीना नदी की घाटी**

बेतवा की सहायक बीना नदी की घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़---१' के औज़ारों वाले अनेक स्थल। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

१०६. **बुरखेड़ा (सागर)**

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार जो 'नेशनल म्यूज़ियम' कलकत्ता में संरक्षित किये गये। म० पु० रू० पृ० ३७।

१०७. **बुरधाना (सागर)**

(अ) पूर्व-पाषाण युगीन उपकरण। ब्रा० के०, चित्र ४-७।

(आ) पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार जो 'इंडियन म्यूज़ियम' कलकत्ता में संरक्षित हैं। म० पु० रू० पृ० ३७।

१०८. **बेतवा नदी की घाटी**

चम्बल और उसकी सहायक नदियों की घाटियों की खोज के क्रम में (देखिये इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ११) विदिशा और गुना जिले में बेतवा नदी की घाटी की खोज। इ० आ० रि० १९५९-६० पृ० २१।

१०९. **बेड़िया (पश्चिम निमाड़)**

पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० ४-४।

११०. **भनवार सेन (रीवा)**

पूर्व-पाषाण युग के घिसे हुए औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० २४।

१११. **भापसोन (सागर)**

बीना नदी के तट पर प्राप्त पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

११२. **भुतरा (होशंगाबाद)**

(अ) पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। रि० जि० स० इ०, भाग ६ (१८७९); ब्रा० के० चित्र ४, ६, ६-ए।

(आ) पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार जो अब 'इण्डियन म्यूज़ियम' कलकत्ता में संरक्षित हैं। म० पु० रू० पृ० ३७।

११३. भेड़ाघाट (जबलपुर)

(अ) पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार जो 'गार्डन-संग्रह' में संरक्षित किये गये। म० पु० रू० पृ० ३७।

(आ) पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार तथा जीवाश्म। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० १५।

(इ) नर्मदा के तट पर बजरी और मिट्टी के निम्न स्तरों से प्राप्त हस्तकुठार, विदारणी, टोका, जीवाश्म तथा ऊपरी स्तरों से प्राप्त शल्क औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६०।

(ई) होशंगाबाद तथा भेड़ाघाट के बीच नर्मदा के तट पर किये गये खोज में प्राप्त जीवाश्म तथा पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इस खोज में लगभग एक सौ जीवाश्म प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० २२, चित्र ४८।

११४. भोपाल (भोपाल)

(अ) हेव्ही-इलेक्ट्रिकल्स-लिमिटेड के समीप गोविन्दपुरा में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८९।

(आ) विभिन्न स्थानों से प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन स्फटिक पत्थर के बने औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० ४-३।

(इ) श्यामला पहाड़ी के ऊपर पाए गए पूर्व-पाषाणकालीन औज़ार जिनमें विदारणी तथा हस्तकुठार शामिल हैं। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-५५, पृ० ४-३।

(ई) भोपाल के पश्चिम में ३७ किलोमीटर की दूरी पर 'गौ-खो' नामक नाले की तह से प्राप्त पूर्व-पाषाण कालीन लगभग आधी दर्जन से अधिक औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० ४-३।

११५. मचिकुन्दा नदी की घाटी

नर्मदा की सहायक नदी मचिकुन्दा की घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

११६. मण्डलेश्वर (पश्चिम निमाड़)

नर्मदा-घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—१' के औज़ारों वाला स्थल। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० और चित्र ४, पृ० ९।

११७. मन्दसौर (मन्दसौर)

(अ) खोज में प्राप्त सौ से अधिक पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९५५-५६, पृ० ६८।

(आ) शिवना नदी के तट पर स्थित महादेव-घाट तथा स्मशान-घाट से एकत्रित किये गये 'सीरीज़—१' के पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० और चित्र ४, पृ० ९।

(इ) नगर की उत्तरी सीमा पर पाया गया पूर्व-पाषाण युगीन एक स्थल। इ० आ० रि० १९६१-६२ पृ० २२।

११८. मन्दसौर जिला

चम्बल की सहायक नदी अन्सेर के तट पर प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन पत्थरों के औज़ार जिनमें हस्तकुठार, विदारणी, चक्रिक उपकरण आदि शामिल हैं। इनमें से बहुत से औज़ार घिसे हुए प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० २६।

११९. महलखेड़ी (पूर्व निमाड़)

नर्मदा घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—१' के औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

१२०. महादेव पिपरिया (नरसिंहपुर)

(अ) नर्मदा की तह के काटे हुए भाग से प्राप्त क्रोड तथा शल्क। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

(आ) उत्खनन में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२६-२७।

१२१. महानदी की घाटी

महानदी की घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ारों वाले स्थल। इ०आ०रि० १९६२-६३, पृ० ११।

१२२. महेश्वर (पश्चिम निमाड़)

नर्मदा की घाटी में स्थित 'सीरीज़—१' के औज़ारों का स्थल। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० और चित्र ४, पृ० ९।

१२३. महुआ (गुना)

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार जिसमें हस्तकुठार, विदारणी, गडांसे आदि प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९।

१२४. मार्कण्डेय (शहडोल)

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

१२५. मातुपुर (पूर्व निमाड़)

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

१२६. मुलतानपुरा (मन्दसौर)

'सीरीज—१' के औज़ारों वाला स्थल। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० और चित्र ४, पृ० ९।

१२७. मोजवाड़ी (पूर्व निमाड़)

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

१२८. मोड़ी (मन्दसौर)

पूर्व-पाषाण युगीन पत्थरों के औज़ार, जो चम्बल नदी की घाटी की खोज में प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

१२९. मोर (सागर)

पूर्व-पाषाण युगीन पत्थरों के उपकरण। प्रो० ए० सो० ब० १८६७, पृ० १४२-४८।

१३०. मोहार (छतरपुर)

संरक्षित वन क्षेत्र में बिला नदी की बजरी में प्राप्त 'सीरीज़—१' के औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ५९।

१३१. रतिकरार (नरसिंहपुर)

मिट्टी और सीमेन्ट की बजरी में प्राप्त शिल्प-उपकरण तथा स्तनधारी प्राणियों के जीवाश्म। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० १५।

१३२. रेहली (सागर)

सुनार नदी की तह से प्राप्त पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९५-५९, पृ० ७२।

१३३. राजघाट (सीधी)

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

१३४. रायबोर (होशंगाबाद)

नर्मदा की सहायक गंजई नदी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९।

१३५. रायसेन (रायसेन)

मध्यकालीन किले के समीप पाया गया पूर्व-पाषाण युगीन पत्थरों के औज़ारों का एक उद्योग-स्थल। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ७०।

१३६. रामपुर (सीधी)

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

१३७. रामपुरा (मन्दसौर)

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० ४-४।

१३८. रामनगर (सीधी)

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

१३६. रावेरखेड़ी (पश्चिम निमाड़)

(अ) पूर्व-पाषाण युगीन पत्थरों के औज़ार तथा लघु-पाषाणास्त्र। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ६८।

(आ) पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० ४-४।

१४०. रूहानिया (शहडोल)

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

१४१. रेता (सागर)

बीना नदी के तट पर प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

१४२. लेखनिया पहाड़ी (रीवा)

पूर्व-पाषाण युगीन उपकरण। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ३९।

१४३. लौवार (सीधी)

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

१४४. वैनगंगा नदी की घाटी

सिवनी जिले में वैनगंगा नदी के उद्गम-संभाग की खोज में प्राप्त पाषाण-कालीन अनेक स्थल। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० २५।

१४५. शहडोल (शहडोल)

सोन की सहायक मुर्ना नदी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० १-४२-४३।

१४६. शाहगढ़ (सागर)

स्फटिक पत्थर पर बने हस्तकुठार, विदारणी आदि पूर्व-पाषाणयुगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० ४-३।

१४७. शिकारगंज (शहडोल)

(अ) सोन नदी की सहायक बनास और मोहन नदियों के बीच के नालों में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ रि० १९६१-६२, पृ० २४।

(आ) पूर्व-पाषाण युगीन एक स्थल। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १००।

१४८. शंखुधर (मन्दसौर)

चम्बल घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन पत्थरों के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

१४९. सगौनाघाट (नरसिंहपुर)

नर्मदा की सतह से प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

१६

१५०. सधुवा (पन्ना)

सधुवा पुल के निकट नाले की तह से प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १०० ।

१५१. सागर (सागर)

सागर से पश्चिम की ओर लगभग १० कि० मी० की दूरी पर स्थित पूर्व-पाषाण युगीन पत्थरों के औज़ारों वाला एक स्थल। यहाँ से प्राप्त औज़ारों में प्रमुखतः हस्तकुठार, विदारणी तथा चक्राकार उपकरण है। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२ ।

१५२. सिंगरोली (शहडोल)

पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११ ।

१५३. सिंग्रामपुर (दमोह)

(अ) पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार जो 'इण्डियन म्यूज़ियम' कलकत्ता में संरक्षित किये गये। म० पु० रू० पृ० ३७ ।

(आ) पूर्व-पाषाण युगीन पत्थरों के औज़ार। प्रो० ए० सो० ब० १८६७, पृ० १४२-४८ ।

१५४. सिंघपुर (सागर)

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १०० तथा चित्र १४४-४,५ ।

१५५. सिंघनपुर (रायगढ़)

(अ) शिलश्रयों के निकट प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। म्नि० आ० स० इ० क्रमांक २४, चित्र १२ ।

(आ) पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार जो 'इण्डियन म्यूज़ियम' कलकत्ता में संरक्षित किये गये। म० पु० रू० पृ० ३७ ।

१५६. सिहावल (सीधी)

पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११ ।

१५७. सोंधा

नर्मदा-घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२४ ।

१५८. सोन नदी की घाटी

सोन नदी की घाटी की खोज में प्राप्त अनेक पूर्व-पाषाण युगीन स्थल। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११ ।

१५९. सोनिता (मन्दसौर)

चम्बल नदी के तट पर प्राप्त पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९५५-५६, पृ० ६८।

१६०. हरहा (शहडोल)

पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

१६१. हिंगलाजगढ़ (मन्दसौर)

चम्बल नदी की घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

१६२. हिनोती (सीधी)

पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

१६३. हिरन नदी की घाटी

(अ) नर्मदा की सहायक हिरन नदी की घाटी की खोज में प्राप्त अनेक स्थल जिनमें 'सीरीज़—१' के औज़ार मिले। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

(आ) हिरन नदी-घाटी की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन स्थल। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

१६४. होशंगाबाद (होशंगाबाद)

(अ) येल तथा केम्ब्रिज विश्वविद्यालयों द्वारा किये गये खोज में तेरह स्थलों से प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। स्ट० आ० ए० पृ० ३१३-३२६।

(आ) पूर्व-पाषाण कालीन औज़ार जो केम्ब्रिज और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के संग्रहालयों में संरक्षित किये गये। म० पु० रू० पृ० ३७।

(इ) पूर्व-पाषाण काल के चौदह उपकरण। मि० आ० स० इ० क्रमांक २४, पृ० १३-ए।

(ई) होशंगाबाद और नरसिंहपुर के बीच में नर्मदा और उसकी सहायक नदियों की खोज में प्राप्त पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० १४।

आ—मध्य-पाषाण युगीन स्थल

१६५. अकावरी (सीधी)

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

१६६. अखड़ार (शहडोल)

छोटी-महानदी की तह में पाए गए मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६९।

१६७. अनूपपुर (शहडोल)

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

१६८. अलोनिया (सिवनी)

वैनगंगा नदी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० २५।

१६९. असलाना

सोनार नदी-घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२।

१७०. इतर-पहाड़ (रीवा)

(अ) यहाँ के शिलाश्रय क्रमांक १ तथा ३ के बीच स्थित मध्य-पाषाण युगीन औज़ारों वाला एक उद्योग-स्थल। प्राप्त औज़ारों में दूसरे औज़ारों की मात्रा में फलक तथा फलकों के नोक अधिक मात्रा में उपलब्ध हुए। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० २४।

(आ) उपरोक्त शिलाश्रय क्रमांक १, २ तथा १० से प्राप्त मध्य-पाषाण युग के औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १०० तथा चित्र १४६-ए।

१७१. ईसरवा (सागर)

बेतवा की सहायक बीना नदी की तह से प्राप्त स्फटिक पत्थर के बने 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

१७२. कलां (जबलपुर)

'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

१७३. कन्हीवाड़ा (सिवनी)

'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

१७४. कालीपुर (बस्तर)

इन्द्रावती के तट पर स्थित इस स्थल से प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन उपकरण। **म० प्र० स० पुरातत्व विशेषांक (जून १३, १९७०)**, पृ० १०।

१७५. कुण्डम (जबलपुर)

'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

१७६. कुलोन (जबलपुर)

नर्मदा और उसकी सहायक सनेर नदी का घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६०।

१७७. केवलारी (जबलपुर)

'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

१७८. कोहका (मंडला)

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८।

१७९. कजरवारा (जबलपुर)

'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

१८०. खजुराहो (छतरपुर)

मध्य-पाषाण युगीन औज़ारों का एक स्थल। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९८।

१८१. खड़की-माता (मन्दसौर)

'सीरीज़—२' के औज़ार बनाने का एक उद्योग-स्थल। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ११-१२ तथा चित्र ४, पृ० ९।

१८२. खड़कघाट (बस्तर)

इन्द्रावती के तट पर स्थित स्थल से प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन उपकरण। म० प्र० स० पुरातत्त्व विशेषांक (जून १३, १९७०), पृ० १०।

१८३. खानपुरा (मन्दसौर)

'सीरीज़—२' के औज़ारों का एक स्थल। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १०-११ तथा चित्र ४, पृ० ९।

१८४. खूताली (सीधी)

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

१८५. खैरपुर (सीधी)

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

१८६. खैरा (सीधी)

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२- ६३, पृ० ११।

१८७ खोजाखेड़ी

'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६।

१८८. गढ़बोघरा (बस्तर)

नारंगी के तट पर स्थित स्थल से प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन उपकरण। म० प्र० स० पुरातत्त्व विशेषांक (जून १३, १९७०), पृ० १०।

१८९. गढ़चन्देला (बस्तर)

इन्द्रावती के तट पर स्थित स्थल से प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन उपकरण। म० प्र० स० पुरातत्त्व विशेषांक (जून १३, १९७०), पृ० १०।

१९०. गढ़ाकोटा (सागर)

सोनार नदी-घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२।

१९१. ग्यारसपुर (विदिशा)

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार । इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८९ ।

१९२. ग्वारीघाट (जबलपुर)

'सीरीज़—२' के औज़ार । इ० आ० रि० १९५८-५९ पृ० ७२ ।

१९३. गीधा

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार । इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२४ ।

१९४. गैसाबाद

ब्यारमा नदी-घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार । इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२ ।

१९५. गोमतपुर (सागर)

मध्य-पाषाण युगीन स्फटिक पत्थर के बने औज़ार । इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८-८९ ।

१९६. गोन्ची (गुना)

बेतवा नदी की घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार । यहाँ बेतवा ने अपने बाएँ तट के एक भाग को काट दिया है जिसमें औज़ारों सहित बजरी, जिस पर १२ फुट मिट्टी की सतह जमी हुई है, प्राप्त हुई । इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० २२ ।

१९७. गौर नदी की घाटी

नर्मदा की सहायक गौर नदी की घाटी की खोज में प्राप्त स्थल, जिनमें 'सीरीज़—२' के औज़ार प्राप्त हुए । इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९ ।

१९८. गौरैया (जबलपुर)

'सीरीज़—२' के औज़ार । इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९ ।

१९९. गाताखेरा (जबलपुर)

लघु-पाषाण औज़ार । इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६० ।

२०० . घाटखेरी (पूर्व निमाड़)

मध्य-पाषाण युगीन कुछ औज़ार । इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९ ।

२०१. घाटलोहांगा (बस्तर)

मध्य-पाषाण युगीन उपकरण । **म० प्र० स० पुरातत्त्व विशेषांक (जून १३, १९७०), पृ० १० ।**

२०२. घितोरा (सीधी)

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार । इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११ ।

२०३. **घोगरा**

'सीरीज़—२' के औज़ार जो सोनार नदी-घाटी की खोज में प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६।

२०४. **चन्द्रेहा (सीधी)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

२०५. **चण्डीगढ़ (पूर्व निमाड़)**

शिलाश्रय के समीप पाये गये कुछ मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९।

२०६. **चोली**

नर्मदा घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ारों का एक स्थल। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

२०७. **चौरई-कलां (जबलपुर)**

'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

२०८. **चौरई-खुर्द (जबलपुर)**

'सीरीज़—२ के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

२०९. **छपारा (सिवनी)**

'सीरीज—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० २५।

२१०. **छान (सागर)**

स्फटिक के बने मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८-८९।

२११. **छिदगाँव (होशंगाबाद)**

नर्मदा की सहायक नदी गंजई की खोज में प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९।

२१२. **छीरपानी (जबलपुर)**

'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

२१३. **छोटी-महानदी**

छोटी-महानदी (नर्मदा की सहायक) की घाटी की खोज में प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० १०।

२१४. **जतकारा (छतरपुर)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार जिनमें फलक तथा विभिन्न प्रकार की खुरचनियाँ शामिल हैं। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० १-४०।

२१५. **जमोई (शहडोल)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १००।

२१६. **टीला (विदिशा)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८९।

२१७. **डांड-बिछिया (मंडला)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८।

२१८. **डिन्डोरी (जबलपुर)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार बनाने का एक स्थल। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२४।

२१९. **डिन्डोरी (मंडला)**

(अ) अमरकंटक और मंडला के बीच नर्मदा के ऊपरी संभाग के सर्वेक्षण में बारह स्थल पाये गये जिनमें से पाँच मध्य-पाषाण युग के हैं जो डिन्डोरी के ८ कि० मी० के घेरे में स्थित हैं। प्राप्त औज़ारों में खुरचनी, वेधनी, फलक आदि हैं जो चर्ट पत्थर के बने हैं। लकड़ी के फ़ासिल के भी कुछ नमूने प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० २२।

(आ) नर्मदा-घाटी की खोज में प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२४।

२२०. **डुड़वारा (जबलपुर)**

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६०।

२२१. **डुन्डा (जबलपुर)**

(अ) 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

(आ) 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

२२२. **डोली (जबलपुर)**

'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

२२३. **ढीमरखेड़ा (जबलपुर)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार जिनमें से अधिकांश चर्ट और जास्पर पत्थर के हैं। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० १०।

२२४. **तारदेही**

ब्यारमा नदी-घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२।

२२५. **तिंसी (सागर)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। **इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८६।**

२२६. **तिलमन (जबलपुर)**

मध्य-पाषाण युगीन स्थल जहाँ अधिकांश चर्ट और जास्पर पत्थर के बने औज़ार मिले। **इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० १०।**

२२७. **तुरक-खेड़ा (जबलपुर)**

लघु-पाषाण औज़ार। **इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६०।**

२२८. **दरगढ़ (जबलपुर)**

'सीरीज़--२' के औज़ार। **इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।**

२२९. **दिवरी-सिवनी (जबलपुर)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार, जिनमें अधिकांश जास्पर और चर्ट पत्थर के हैं। **इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० १०।**

२३०. **देउरगाँव (बस्तर)**

इन्द्रावती के तट पर स्थित स्थल से प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन उपकरण। **म० प्र० स० पुरातत्व विशेषांक (जून १३, १९७०), पृ० १०।**

२३१. **देवलोंध (रीवा)**

रीवा-अमरकण्टक मार्ग पर स्थित देवलोंध पुल के समीप, सोन नदी की तह से प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। **इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १००।**

२३२. **देवरी (जबलपुर)**

(अ) 'सीरीज़—२' के औज़ार। **इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।**

(आ) मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। **इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८।**

२३३. **देवरी-सुनवारा (जबलपुर)**

नर्मदा और उसकी सहायक नदी सनेर की घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार। **इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६०।**

२३४. **धबावली (सीधी)**

मध्य-पाषाण युगान औज़ार। **इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।**

२३५. **नर्मदा नदी की घाटी**

अमरकण्टक और जबलपुर के मध्य में स्थित नदी की घाटी की खोज में प्राप्त अनेक मध्य-पाषाण युगीन स्थल। **इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२४।**

१७

२३६. नरसिंगा

चम्बल नदी घाटी की खोज में प्राप्त स्थल जहाँ से 'सीरीज़—२' के औज़ार मिले। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

२३७. नरसिंहगढ़ (नरसिंहगढ़)

सोनार नदी-घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२।

२३८. नरसिंहपुर (नरसिंहपुर)

नरसिंहपुर और होशंगाबाद के बीच नर्मदा तथा उसकी सहायक नदियों की खोज में प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० १४।

२३९ नाकझूर (सीधी)

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

२४०. नीमखेड़ा (जबलपुर)

'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

२४१. नेमावर (देवास)

नर्मदा के उत्तरी तट पर प्राप्त मध्य-पाषाण कालीन औज़ार तथा लघु-पाषाण अस्त्र। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८।

२४२. नोनघाटी (रीवा)

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १००।

२४३. पड़राजपुर (सागर)

बेतवा की सहायक बीना नदी की तह से प्राप्त स्फटिक पत्थर पर बने 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

२४४. परियट नदी की घाटी

नर्मदा की सहायक परियट की घाटी की खोज में प्राप्त स्थल जिनमें 'सीरीज़—२' के औज़ार प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

२४५. पड़रिया (जबलपुर)

मध्य-पाषाण युगीन औज़ारों का उद्योग-स्थल। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२४।

२४६. पाटवान-जोर (रीवा)

मध्य-पाषाण युगीन स्थल। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ३९।

२४७. **पारखी**

नर्मदा नदी की घाटी की खोज में प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२४।

२४८. **पिपरिया (जबलपुर)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८।

२४९. **पिपरिया**

कोपरा नदी-घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२।

२५०. **पिपरिया-मढ़िया**

कोपरा नदी-घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२।

२५१. **पीपल्या-बावली (पूर्व निमाड़)**

चर्ट पत्थर से बने 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१ तथा चित्र ६९-ए।

२५२. **बगरई (जबलपुर)**

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६०।

२५३. **बंजरटोला**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२४।

२५४. **बंडा (सागर)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८९।

२५५. **बटई (जबलपुर)**

'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

२५६. **बबोआरी (सीधी)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

२५७. **बड़वानी (पश्चिम निमाड़)**

'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९ पृ० ७२।

२५८. **बड़ाकुण्ड (पूर्व निमाड़)**

नर्मदा घाटी की खोज में प्राप्त चर्ट पर बने 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१ तथा चित्र ६९-ए।

२५९. **बम्हनी (जबलपुर)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ारों के उद्योग का एक स्थल। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२४।

२६०. **बम्हनी (मण्डला)**

नर्मदा की सहायक बन्जर नदी के तट पर प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन औज़ारों का स्थल। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६०।

२६१. **बरगमा (सीधी)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

२६२. **बरगांव (मंडला)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८।

२६३. **बरहई (सीधी)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

२६४. **बरडी (सीधी)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

२६५. **बसई (मन्दसौर)**

'सीरीज़—२' के औज़ारों का एक स्थल। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० और चित्र ४, पृ० ९।

२६६. **बसई (मन्दसौर)**

चम्बल नदी से प्राप्त हुए मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० १-४२।

२६७. **बानगाँव**

कोपरा नदी-घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९ पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२।

२६८. **बासा**

कोपरा नदी-घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२।

२६९. **बिंता (बस्तर)**

इन्द्रावती के तट पर स्थित स्थल से प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन उपकरण। म० प्र० स० पुरातत्त्व विशेषांक (जून १३, १९७०), पृ० १०।

२७० **बिरहौला-खेड़ा (जबलपुर)**

'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

२७१. **बिरसिंहपुर**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२४।

२७२. **बिलगवां (सागर)**

स्फटिक के बने मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८-८९।

२७३. **बिसनपुरा (जबलपुर)**

'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

२७४. **बीची (सीधी)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

२७५. **बीजलपुर (पूर्व निमाड़)**

नर्मदा घाटी की खोज में प्राप्त हुए चर्ट पत्थर से बने 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१ तथा चित्र ६९-ए।

२७६. **बीना नदी की घाटी**

(अ) बीना नदी-घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार जो सागर जिले में प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ७०।

(आ) बेतवा की सहायक बीना नदी-घाटी की खोज में प्राप्त अनेक स्थान जहाँ 'सीरीज़—२' के औज़ार प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

२७७. **बेतवा नदी की घाटी**

बेतवा और उसकी सहायक बीना तथा धसान नदियों की घाटियों की खोज में प्राप्त औज़ार जो 'सीरीज़—२' के औज़ारों से मिलते-जुलते हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० १३।

२७८. **बोरखेड़ी (मन्दसौर)**

'सीरीज़—२' के औज़ारों का एक स्थल। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र-४, पृ० ९।

२७९. **भाटेवाड़ा (बस्तर)**

इन्द्रावती के तट पर स्थित स्थल से प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन उपकरण। म० प्र० स० पुरातत्त्व विशेषांक (जून १३, १९७०) पृ० १०।

२८०. **भीकमपुर (जबलपुर)**

नर्मदा और उसकी सहायक सनेर नदी-घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६०।

२८१. **भीटा (जबलपुर)**

नर्मदा और उसकी सहायक नदी सनेर की घाटी की खजो में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६०।

२८२. **भेड़ाघाट (जबलपुर)**

(अ) 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ७२।

(आ) मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२४।

२८३. **भैंसिया-गाँव (मंडला)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८।

२८४. **भोजपुर**

कोपरा नदी-घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२।

२८५. **भोपाल (भोपाल)**

(अ) लघु-पाषाण औज़ार जो भोपाल के निकट धरमपुरी के शिलाश्रयों से प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९५९-६० पृ० ७०।

(आ) 'सीरीज़—२' के औज़ार जो गौहरगंज के निकट प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

(इ) विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए मध्य-पाषाण युगीन औज़ार जो सभी स्फटिक पत्थर के हैं। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० ४-३।

२८६. **मढ़ियादो**

सोनार नदी-घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२।

२८७. **महल-कलां (होशंगाबाद)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार, जो नर्मदा की सहायक सियानी नदी के तट पर प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९।

२८८. **महलखेड़ी (पूर्व निमाड़)**

चर्ट से बने 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१ तथा चित्र ६९-ए।

२८९. **महादेव-पिपरिया (नरसिंहपुर)**

उत्खनन में प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२६-२७।

२९०. महानदी की घाटी

महानदी की घाटी की खोज में प्राप्त अनेक मध्य-पाषाण युगीन स्थल । इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११ ।

२९१. महेश्वर (पश्चिम निमाड़)

नर्मदा नदी के तट पर बजरीयों के स्तर क्रमांक १, २ तथा ३ से प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार । इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ७८ ।

२९२. मनोट

वजरीयाँ जिनमें से खुरचनियाँ प्राप्त हुई हैं । इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० १४ ।

२९३. मार्कण्डेय (शहडोल)

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार । इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११ ।

२९४. मेधी (मंडला)

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार । इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९ तथा चित्र १४६-ए ।

२९५. मोहगाँव-कलां (छिन्दवाड़ा)

'सीरीज़—२' के औज़ार । यह स्थान वृक्ष-फ़ॉसिल के लिए प्रसिद्ध है । इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९ ।

२९६. मौरी-नदी

नर्मदा की सहायक मौरी नदी की खोज में प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन औज़ार । इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० १० ।

२९७. रमखिरिया (जबलपुर)

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार । इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८ ।

२९८. राजघाट (सीधी)

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार । इ० आ० रि० १९६२-६३ पृ० ११ ।

२९९. राजपुर (बस्तर)

नारंगी के तट पर स्थित स्थल से प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन उपकरण । म० प्र० स० पुरातत्त्व विशेषांक (जून १३, १९७०), पृ० १० ।

३००. राजनगर (छतरपुर)

मध्य-पाषाण युगीन औज़ारों का एक स्थल । इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९८ ।

३०१. रामनगर (सीधी)

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार । इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११ ।

३०२. **रामपुर (सीधी)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

३०३. **राजेन्द्रग्राम (शहडोल)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ारों का एक स्थल। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १००।

३०४ **रायबोर (होशंगाबाद)**

नर्मदा की सहायक गंजई नदी की खोज में प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९।

३०५. **रूहानियां (शहडोल)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

३०६. **रेहली (सागर)**

सोनार नदी की घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६।

३०७. **रोशिनी (पूर्व निमाड़)**

नर्मदा-घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१ तथा चित्र ६९-ए।

३०८. **लखनवारा (जबलपुर)**

'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

३०९. **लमेटाघाट (जबलपुर)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२४।

३१०. **लालपुर (शहडोल)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

३११. **लुटगाँव (मंडला)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८।

३१२. **लौवार (सीधी)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

३१३. **शहडोल (शहडोल)**

सोन की सहायक मुर्ना नदी की खोज में प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९५५-५६, पृ० १-४२-४३।

३१४. **शहपुरा (मंडला)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८।

३१५. **सरोली (जबलपुर)**

'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९ पृ० २७।

३१६. **सगौनाघाट (नरसिंहपुर)**

नर्मदा के किनारे स्थित तीन नदी-उत्तल जिनमें दूसरे उत्तल से मध्य-पाषाण कालीन औज़ार प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

३१७. **संजेत (मन्दसौर)**

रेतम नदी-घाटी की खोज में मिले स्थल जिसमें 'सीरीज़—२' के औज़ार प्राप्त हुए हैं। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

३१८. **सन्दिया**

'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६-२७।

३१९. **सागौना (जबलपुर)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८।

३२०. **सारंगपुर (जबलपुर)**

'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

३२१. **सालीढाना (पूर्व निमाड़)**

नर्मदा-घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१ तथा चित्र ६९-ए।

३२२. **सालीवाड़ा (जबलपुर)**

'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

३२३. **सिंगरौली (शहडोल)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

३२४. **सिवनी (सिवनी)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १०० तथा चित्र १४४-ए।

३२५. **सिन्दुरसी (जबलपुर)**

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६०।

३२६. **सिहावल (सीधी)**

मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

३२७. **सीतानगर**

सोनार नदी-घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि०

१९५८-५९, पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२।

३२८. सीतामऊ (मन्दसौर)
चर्ट और जास्पर पत्थर के बने मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८।

३२९. सुआरा (मन्दसौर)
'सीरीज़—२' के औज़ारों का एक स्थल। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

३३०. सुआखेड़ा (सिवनी)
'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० २५।

३३१. सुपावारा (जबलपुर)
'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

३३२. सोनकछ (उज्जैन)
काली-सिन्ध (बड़ी) नदी की घाटी की खोज में प्राप्त स्थल जिनमें 'सीरीज़—२' के औज़ार मिले। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

३३३. सोन नदी की घाटी
सोन नदी-घाटी की खोज में प्राप्त अनेक मध्य-पाषाण युगीन स्थल। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

३३४. सोनारी (सागर)
'सीरीज़—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२ तथा चित्र ६९-ए।

३३५. सोंधा
नर्मदा नदी-घाटी की खोज में प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२४।

३३६. हरहा (शहडोल)
मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

३३७. हराट
सोनार-नदी घाटी की खोज में प्राप्त 'सीरीज—२' के औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६ तथा चित्र ११, पृ० २२।

३३८. हिनोती (सीधी)
मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

३३९. हिरन नदी की घाटी
(अ) नर्मदा की सहायक हिरन नदी की घाटी की खोज में मिले स्थल जिनमें 'सीरीज़—२' के औज़ार प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।
(आ) हिरन नदी की घाटी की खोज में प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन औज़ारों का एक प्रमुख स्थल। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

३४०. **होशंगाबाद (होशंगाबाद)**
होशंगाबाद और नरसिंहपुर के बीच नर्मदा और उसकी सहायक नदियों की खोज में प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० १४।

इ––उत्तर-पाषाण युगीन स्थल

३४१. **अग्नि नदी घाटी**
नर्मदा की सहायक अग्नि नदी-घाटी की खोज में प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

३४२. **अटूट (पूर्व निमाड़)**
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८।

३४३. **अटूट-खास (पूर्व निमाड़)**
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी, पहलूदार क्रोड आदि शामिल हैं। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

३४४. **अमरकंटक (शहडोल)**
सोन नदी के उद्गम के निकट प्राप्त उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १००।

३४५. **अम्बाला (पूर्व निमाड़)**
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी, पहलूदार क्रोड आदि शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

३४६. **अलवी महादेव (मन्दसौर)**
लघु-पाषाण औज़ारों का एक स्थल। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

३४७. **अहमदाबाद (भोपाल)**
चित्रित शिलाश्रयों से प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार तथा पहलूदार क्रोड। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८९।

३४८. **आदमगढ़ (होशंगाबाद)**
(अ) शिलाश्रयों से प्राप्त लगभग दो हज़ार से अधिक लघु-पाषाण औज़ार जिनमें से लगभग ४० प्रतिशत अर्धचन्द्र, समलम्ब, त्रिभुज आदि ज्यामितिक आकार के हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ५९।
(आ) शिला-चित्रों की जाँच करते समय प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार एवं अन्य उपकरण। इ० आ० रि० १९५३-५४, पृ० ३७।
(इ) शिलाश्रयों के निकट से एकत्रित बहु संख्या में लघु-पाषाण औज़ार जिनमें अधिकांश त्रिभुज, अर्धचन्द्र आदि ज्यामितिक आकार के हैं। इ० आ० रि० १९५४-५५, पृ० ५९।

३४९. **आवरा (मन्दसौर)**
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ६८।

३५०. इतर पहाड़ (रीवा)

(अ) स्थानीय शिलाश्रय क्रमांक १० तथा ११ के निकट प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १००।

(आ) स्थानीय गुफा क्रमांक १ तथा ३ के बीच स्थित उत्तर-पाषाण युगीन उद्योग-स्थल। प्राप्त औज़ारों में समानान्तर धार वाले फलक, अर्धचन्द्राकार अस्त्र, आड़े कटे बेधनी तथा पहलूदार क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० २४।

३५१. इतवा (पूर्व निमाड़)

लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, अर्धचन्द्राकार औज़ार, खुरचनी तथा पहलूदार क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

३५२. उज्जैन (उज्जैन)

बंजारा टीले पर स्थित उत्तर-पाषाण युगीन स्थल जहाँ से कैल्सेडोनी के बने पहलूदार क्रोड प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ७९।

३५३. उमरिया (जबलपुर)

निवार-नाला की खोज में प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९ तथा चित्र क्रमांक १४५-ए, १०, १८, १९, २०, २३।

३५४. ऊन (पश्चिम निमाड़)

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ७२।

३५५. कटरिया (जबलपुर)

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८।

३५६. कनवारा (जबलपुर)

लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, अर्ध चन्द्राकार औज़ार, खुरचनी तथा क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

३५७. कस्तरा (जबलपुर)

उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० १५।

३५८. करोली (पूर्व निमाड़)

लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, अर्धचन्द्राकार औज़ार, खुरचनी तथा पहलूदार क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

३५९. कबरा-पहाड़ (रायगढ़)

(अ) चित्रित शिलाश्रयों से प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार जिनमें लम्बे फलक, अर्ध-चन्द्राकार औज़ार तथा कैल्सेडोनी, जास्पर तथा गोमेद के बने क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १९५५-५६, पृ० ६९।

(आ) चित्रित शिलाश्रयों के निकट प्राप्त लघु-पाषाण उपकरण। सा० क० भाग ५, क्रमांक ५, चित्र ५।

३६०. कामरी (पूर्व निमाड़)

खोज में प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २८।

३६१. **कालूजी-का-बाड़ा (उज्जैन)**
लघु-पाषाण औज़ारों के उद्योग का एक स्थल जहाँ स्फटिक पत्थर के बिखरे हुए शल्क पाये गये। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ७९।

३६२. **कालीकुन्ड**
लघु-पाषाण औज़ारों का एक स्थल। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

३६३. **किरगाँव (पूर्व निमाड़)**
खोज में प्राप्त लघु-पाषाण औजार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २८।

३६४. **किशनपुर (पूर्व निमाड़)**
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फ क, अर्ध चन्द्राकार औज़ार, खुरचनी तथा पहलूदार क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

३६५. **कीर्तिनगर (सीहोर)**
उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा०रि०) १९६४-६५, पृ० १-२३।

३६६. **कुण्डाला नदी की घाटी**
नर्मदा की सहायक कुण्डाला नदी-घाटी की खोज में उसकी तह से प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

३६७. **केवड़ेश्वर (इन्दौर)**
मृदभांड रहित लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

३६८. **कोड़ी (निमाड़)**
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ६८।

३६९. **कोरिया (रीवा)**
उत्तर-पाषाण युगीन औज़ारों का स्थल। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ३९।

३७०. **कोहका (मंडला)**
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८।

३७१. **खजुराहो (छतरपुर)**
(अ) उत्तर-पाषाण युगीन शिल्प-उपकरण। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० १-४०।
(आ) उत्तर-पाषाण युगीन औज़ारों का स्थल। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९८।

३७२. **खेरनी (जबलपुर)**
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें समानान्तर धार युक्त फलक, वेधनी तथा क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० १०।

३७३. **गढ़चन्देला (बस्तर)**
इन्द्रावती के तट पर स्थित स्थल से प्राप्त उत्तर-पाषाण युगीन उपकरण। म० प्र० स० पुरातत्त्व विशेषांक (जून १३, १९७०), पृ० १०।

३७४. गाड़ाघाट (जबलपुर)
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

३७५. गम्भीर (पूर्व निवाड़)
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, अर्धचन्द्राकार औज़ार, खुरचनी तथा पहलूदार क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

३७६. गाडावाड़ी (पूर्व निमाड़)
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, अर्धचन्द्राकार औज़ार, खुरचनी और पहलूदार क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

३७७. गारवर्डी (पूर्व निमाड़)
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

३७८. ग्यारसपुर (विदिशा)
उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८९।

३७९. गुपनसर (बस्तर)
भूमिगत चूने के पत्थरों की खदानों के प्रवेश-द्वार के निकट प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ५९।

३८०. गुबरा-कलां (जबलपुर)
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

३८१. गोबिन्दगढ़ (रीवा)
तालाब के किनारे से प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० २६।

३८२. घंदवा (पूर्व निमाड़)
खोज में प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २८।

३८३. घाट लोहांगा (बस्तर)
उत्तर-पाषाण युगीन उपकरण। म० प्र० स० पुरातत्त्व विशेषांक (जून १३, १९७०), पृ० १०।

३८४. गाताखेरी (पूर्व निमाड़)
कुछ उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९।

३८५. घुघरा (जबलपुर)
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८।

३८६ घुघरी (जबलपुर)
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

३८७. चचाई प्रपात (रीवा)
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० २६।

३८८. चनेरा (पूर्व निमाड़)
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

३८९. **चन्देरा (सागर)**
बीना नदी के तट पर प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

३९०. **चण्डीगढ़ (पूर्व निमाड़)**
शिलाश्रयों के समीप से प्राप्त उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९।

३९१. **चंदला-भाटा (सागर)**
बड़ी संख्या में एकत्रित लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ७२।

३९२. **चम्बल नदी की घाटी**
चम्बल नदी-घाटी की खोज में प्राप्त सौ से अधिक लघु-पाषाण औज़ारों के स्थल। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ७२।

३९३. **चलापा-खुर्द (पूर्व निमाड़)**
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, अर्धचन्द्राकार औज़ार, खुरचनी तथा पहलूदार क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

३९४. **चान्चोड़ा (गुना)**
उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२३।

३९५. **चित्रकूट (बस्तर)**
(अ) इन्द्रावती के तट पर स्थित स्थल से प्राप्त उत्तर-पाषाण युगीन उपकरण। म० प्र० स० पुरातत्त्व विशेषांक (जून १३, १९७०), पृ० १०।
(आ) लघु-पाषाण औज़ार। म० पु० रू० पृ० ३९।

३९६. **चोरल (इन्दौर)**
(अ) मृद्भांड रहित लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।
(आ) लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ६७।

३९७. **चोरहट (पन्ना)**
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० २६।

३९८. **छिन्दवाड़ा (छिन्दवाड़ा)**
स्थानीय ट्रायबल रिसर्च इन्स्टीट्यूट के निकट एक स्थल से प्राप्त बड़ी मात्रा में लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

३९९. **छीता-कुदरी (जबलपुर)**
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, अर्धचन्द्राकार औज़ार, खुरचनी तथा अन्य उपकरण शामिल हैं। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

४००. **जतकारा (छतरपुर)**
अनेकों उत्तर-पाषाण युगीन शिल्प-उपकरण। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० १-४०।

४०१. जबलपुर (जबलपुर)

'बड़ा-शिमला' पहाड़ी के निकट प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। ए० आई० क्रमांक ६, पृ० ७१।

४०२. जमोई (शहडोल)

उत्तर-पाषाण युगीन स्थल। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १००।

४०३. जानापावा (इन्दौर)

मृद्भांड रहित लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

४०४. जामाधड (पूर्व निमाड़)

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

४०५. जामुनी पहाड़ी (पन्ना)

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० २६।

४०६. जावरा (रतलाम)

दो लघु-पाषाण औज़ार वाले स्थल जहाँ से पहलूदार क्रोड तथा फलक मिले हैं। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ७९।

४०७. झीलपिपरिया (होशंगाबाद)

कुछ शल्क और फलक औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० १५।

४०८. झोंझ (जबलपुर)

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

४०९. टिंछा (इन्दौर)

लघु-पाषाण औज़ार जो मृद्भांड रहित प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

४१०. टीला (विदिशा)

उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८९।

४११. टोसनिया (पूर्व निमाड़)

लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी तथा पहलूदार क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

४१२. डांड-विछिया (मंडला)

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८।

४१३. डिन्डोरी

नर्मदा नदी-घाटी की खोज में प्राप्त उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२४।

४१४. डोंगरिया (जबलपुर)

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ६७।

४१५. **तमेर (जबलपुर)**
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी, क्रोड आदि शामिल हैं। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

४१६. **दबकिया (जबलपुर)**
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ६७।

४१७. **दूभा-खेड़ा**
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

४१८. **देलचा (उज्जैन)**
आबादी का एक स्थल जहाँ से लघु-पाषाण औज़ार तथा ऐतिहासिक अवशेष प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ७९।

४१९. **देवगुरिया**
लघु-पाषाण औज़ारों का एक स्थल। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

४२०. **देवलोंध (रीवा)**
रीवा-अमरकंटक मार्ग पर देवलोंध पुल के निकट सोन नदी की तह से प्राप्त उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १००।

४२१. **देहगाँव (पूर्व निमाड़)**
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, अर्धचन्द्राकार औज़ार, खुरचनी तथा पहलूदार क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

४२२. **धनपुर (बिलासपुर)**
उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६४-६५ (सा० रि०), पृ० १-२३।

४२३. **नर्मदा नदी की घाटी**
अमरकंटक और जबलपुर के मध्य में स्थित नदी-घाटी की खोज में प्राप्त अनेक उत्तर-पाषाण युगीन स्थल। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२४।

४२४. **नवला (पूर्व निमाड़)**
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी, पहलूदार क्रोड तथा अर्धचन्द्राकार औज़ार शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

४२५. **नान्दखेड़ा (पूर्व निमाड़)**
खोज में प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २८।

४२६. **निगुडिया (पूर्व निमाड़)**
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी, पहलूदार क्रोड तथा अर्धचन्द्राकार औज़ार शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

४२७. **नीमखेड़ा (जबलपुर)**
उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० १५।

४२८. नेर (निमाड़)
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ६८।

४२९. नेवरी-गुफा (सीहोर)
स्थानीय चित्रित शिलाश्रयों से एकत्रित किये गये लघु-पाषाण औज़ार तथा पहलूदार क्रोड। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८९।

४३०. नोनघाटी (रीवा)
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १००।

४३१. पचमढ़ी (होशंगाबाद)
'डोरोथी डीप' गुफ़ा के समीप प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। ना० यु० ज० (१९३५-३६), पृ० २८, १२७।

४३२. पड़रिया (जबलपुर)
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें समानान्तर धार युक्त फलक, वेधनी तथा क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० १०।

४३३. परमार-खेड़ी
चम्बल नदी-घाटी की खोज में प्राप्त लघु-पाषाण औज़ारों का एक स्थल। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

४३४. परसेल (जबलपुर)
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें सामानान्तर धार युक्त फलक, वेधनी तथा क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० १०।

४३५. पहरुवा (जबलपुर)
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें समानान्तर धार युक्त फलक, वेधनी तथा क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० १०।

४३६. पाटाजन (पूर्व निमाड़)
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी, पहलूदार क्रोड तथा अर्धचन्द्राकार औज़ार शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

४३७. पातलपानी (इन्दौर)
(अ) अ-ज्यामितिक आकार के लघु-पाषाण औज़ार जिनके साथ मृद्भांड प्राप्त नहीं हुए। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८।
(आ) लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ६७।
(इ) लघु-पाषाण औज़ारों का एक स्थल। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

४३८. पारखी
नर्मदा नदी-घाटी की खोज में प्राप्त उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६४-६५, पृ० १-२४।

४३९. **पिपल्या-बावली (पूर्व निमाड़)**

लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी, पहलूदार क्रोड तथा अर्धचन्द्राकार औज़ार शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

४४०. **पूनाघाट-कलां (पूर्व निमाड़)**

लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी पहलूदार क्रोड तथा अर्धचन्द्राकार औज़ार शामिल हैं। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

४४१. **पौड़ी-खुर्द (जबलपुर)**

लघु-पाषाण औज़ार जिनमें समानान्तर धार युक्त फलक, वेधनी तथा क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० १०।

४४२. **बड़ाकुण्ड (पूर्व निमाड़)**

लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी, पहलूदार क्रोड तथा अर्धचन्द्राकार औज़ार शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

४४३. **बाघ (धार)**

स्थानीय गुफाओं के निकट से प्राप्त उत्तर-पाषाण युगीन क्रोड, शल्क, लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि०१९६३-६४, पृ० ८७।

४४४. **बासन (जबलपुर)**

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

४४५. **बिचौली टेकरी (इन्दौर)**

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ६७।

४४६. **बुड़बुड़ी (जबलपुर)**

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

४४७. **बेनीगंज (छतरपुर)**

उत्तर-पाषाण युगीन शिल्प-उपकरण। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० १–४०।

४४८. **बोरखेड़ा-खुर्द (पूर्व निमाड़)**

लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी, अर्धचन्द्राकार औज़ार तथा पहलूदार क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

४४९. **भान-की-टेकरी (सीहोर)**

चित्रित शिलाश्रयों से एकत्रित किये गये लघु-पाषाण औज़ार तथा पहलूदार क्रोड। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८९।

४५०. **भापसोन (सागर)**

बीना नदी के तट पर प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

४५१. भेड़ाघाट (जबलपुर)

लघु-पाषाण औज़ार जो 'गार्डन-संग्रह' में संरक्षित हैं। म० पु० रू० पृ० ३६।

४५२. मैंसिया-गाँव (मंडला)

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८।

४५३. भोपार (जबलपुर)

लघु-पाषाण औज़ार जिनमें समानान्तर धार युक्त फलक, वेधनी तथा क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० १०।

४५४. भोपाल (भोपाल)

(अ) भोपाल की बाहरी सीमा पर स्थित बैरागढ़ के निकट रेतीली पहाड़ी के पश्चिमी ढाल पर शिलाश्रयों में प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार जिनमें अर्धचन्द्राकार, समलम्ब, पहलूदार क्रोड, शल्क आदि शामिल हैं। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ७६।

(आ) भोपाल से ३७ कि० मी० पश्चिम की ओर 'गौ–खो' नामक नाले से प्राप्त उत्तर-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६ पृ० ४-३।

(इ) उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १–२३।

(ई) भोपाल की बाहरी सीमा पर दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित सेज़-करद पहाड़ियों के शिलाश्रयों से प्राप्त बड़ी संख्या में लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

४५५. मकरोनिया (सागर)

एक बड़ी संख्या में प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार जिसमें खुरचनी, वाणाग्र आदि शामिल हैं। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ७०।

४५६. मचिकुन्दा नदी की घाटी

नर्मदा की सहायक मचिकुन्दा नदी की खोज में उसकी तह से प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६६।

४५७. मझोली (जबलपुर)

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९ तथा चित्र क्रमांक १४४-ए, १५, २२, २३, २५, २६।

४५८. मन्दसौर (मन्दसौर)

शिवना नदी-तट पर स्थित रामघाट में लघु-पाषाण औज़ारों का स्थल। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

४५९. मनुआ (सीहोर)

चित्रित शिलाश्रयों से एकत्रित किये गये लघु-पाषाण औज़ार तथा पहलूदार क्रोड। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८९।

४६०. **मड़ईकलां (जबलपुर)**
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी, क्रोड तथा अर्धचन्द्रकार औज़ार शामिल हैं। इ० आ० रि० १६५८-५६, पृ० २७।

४६१. **मड़ईखुर्द (जबलपुर)**
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी, क्रोड, अर्धचन्द्राकार औज़ार आदि शामिल हैं। इ० आ० रि० १६५८-५६, पृ० २७।

४६२. **महल-कलां (होशंगाबाद)**
नर्मदा की सहायक सियानी के तट पर प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १६६१-६२, पृ० ६६।

४६३. **महलखेड़ी (पूर्व निमाड़)**
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, चन्द्राकार औज़ार, खुरचनी तथा पहलूदार क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १६६०-६१, पृ० ६१।

४६४. **महानदी की घाटी**
महानदी-घाटी की खोज में बहुसंख्या में पाये गये उत्तर-पाषाण युगीन स्थल। इ० आ० रि० १६६२-६३, पृ० ११।

४६५. **मातामार (जबलपुर)**
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १६५६-६०, पृ० ६६।

४६६. **मातुपुर (पूर्व निमाड़)**
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १६५६-६०, पृ० ६६।

४६७. **मुन्डी (पूर्व निमाड़)**
खोज में प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १६५८-५६, पृ० २८।

४६८. **मोजवाड़ी (पूर्व निमाड़)**
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १६५६-६०, पृ० ६६।

४६९. **मोसई (पूर्व निमाड़)**
खोज में प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १६५८-५६, पृ० २८।

४७०. **रतनपुर (पूर्व निमाड़)**
खोज में प्राप्त लघु-पाषाण औजार। इ० आ० रि० १६५८-५६, पृ० २८।

४७१. **रनहई (पूर्व निमाड़)**
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी, पहलूदार तथा अर्धचन्द्राकार औज़ार शामिल हैं। इ० आ० रि० १६६०-६१, पृ० ६१।

४७२. **राजनगर (छतरपुर)**
उत्तर-पाषाण युगीन औज़ारों का स्थल। इ० आ० रि० १६६१-६२, पृ० ६८।

४७३. **राजेन्द्रग्राम (शहडोल)**
उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १६६१-६२, पृ० १००।

४७४. **रामजीपुर (पूर्व निमाड़)**
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी, पहलूदार क्रोड तथा अर्धचन्द्राकार औज़ार शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

४७५. **रिचपाल (पूर्व निमाड़)**
खोज में प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २८।

४७६. **रेता (सागर)**
बीना नदी के तट पर प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

४७७. **रैना (जबलपुर)**
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी क्रोड आदि शामिल हैं। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

४७८. **रोशिनी (पूर्व निमाड़)**
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी, पहलूदार क्रोड, अर्धचन्द्राकार औज़ार आदि शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

४७९. **लक्कनगांव (पूर्व निमाड़)**
खोज में प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २८।

४८०. **लखारी (जबलपुर)**
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

४८१. **लालपुर (शहडोल)**
उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

४८२. **लीलखेड़ा (जबलपुर)**
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

४८३. **लुटगाँव (मंडला)**
लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ८८।

४८४. **विदिशा (विदिशा)**
वेस नदी के तट पर उदयगिरि की गुफाओं से लगे हुए खेतों से प्राप्त उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६५-६६ (सा० रि०), पृ० १-४३।

४८५. **शहडोल (शहडोल)**
सोन की सहायक मुर्ना नदी की खोज में प्राप्त उत्तर-पाषाण कालीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० १-४२, ४३।

४८६. **सकरा (जबलपुर)**
लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी क्रोड आदि शामिल हैं। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

४८७. सकरी (जबलपुर)

(अ) लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी, क्रोड आदि शामिल हैं। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

(आ) उत्तर-पाषाण युगीन उपकरण। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० १५।

४८८. सकेरा (छतरपुर)

उत्तर-पाषाण युगीन शिल्प-उपकरण। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० ४०।

४८९. सन्दिया (होशंगाबाद)

एकत्रित किये गये कुछ शल्क और फलक औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० १५।

४९०. सहजपुरी (जबलपुर)

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ६७।

४९१. सगवां (जबलपुर)

लघु-पाषाण औज़ार जिनमें समानान्तर धार युक्त फलक, बेधनी क्रोड आदि शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० १०।

४९२. सागर (सागर)

(अ) शहर के समीप से एकत्रित किये गये लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ७२।

(आ) विश्वविद्यालय के निकट से प्राप्त किये गये लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ७०।

४९३. सालीवाड़ा (जबलपुर)

उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० १५।

४९४. सालीढाना (पूर्व निमाड़)

लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, खुरचनी, पहलूदार क्रोड आदि शामिल हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

४९५. सिंघनपुर (रायगढ़)

चित्रित शैल गुफाओं के निकट से प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। मि० आ० स० इ० —२४।

४९६. सिलपुरा (जबलपुर)

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

४९७. सिवनी (होशंगाबाद)

कुछ शल्क और फलक औज़ार। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० १५।

४९८. सुकरी (जबलपुर)

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

४९९. सोनपुर (जबलपुर)

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

५००. सोन नदी की घाटी

सोन नदी-घाटी की खोज में प्राप्त अनेक उत्तर-पाषाण युगीन स्थल। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

५०१. सोंधा

नर्मदा नदी-घाटी की खोज में प्राप्त उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२४।

५०२. हत्यारा-कोह (इन्दौर)

मृद्‌भांड रहित लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

५०३. हर्दी (पूर्व निमाड़)

खोज में प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २८।

५०४. हनतला (जबलपुर)

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ६७।

५०५. हंसापुर (जबलपुर)

लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

५०६. हिंगवानिया (इन्दौर)

मृद्‌भांड रहित लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

५०७. हिरन नदी की घाटी

हिरन नदी-घाटी की खोज में प्राप्त उत्तर-पाषाण युगीन स्थल। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ११।

५०८. हुतिया (पूर्व निमाड़)

लघु-पाषाण औज़ार जिनमें फलक, अर्धचन्द्राकार औज़ार, खुरचनी तथा पहलूदार क्रोड शामिल हैं। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

५०९. **होशंगाबाद (होशंगाबाद)**

नर्मदा के तट पर प्राप्त अनेकों स्थल जिनमें लघु-पाषाण अस्त्र मिले। स्ट० आ० ए० चित्र ३२-ए।

५१०. **त्रिपुरी (जबलपुर)**

उत्खनन में प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। दीक्षित मो० ग० "त्रिपुरी १९५२।"

ई—नवपाषाण युगीन स्थल

५११. **अर्जुनी (दुर्ग)**

नवपाषाण उपकरण (छिद्रित घन) जो अब 'इण्डियन म्यूज़ियम' कलकत्ता में संरक्षित हैं। म० पु० रू० पृ० ३९।

५१२. **एरण (सागर)**

नवपाषाण उपकरण। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२, चित्र ७२-ए।

५१३. **कुण्डम (जबलपुर)**

नवपाषाण उपकरण जो अब 'इण्डियन म्यूज़ियम' कलकत्ता में संरक्षित हैं। म० पु० रू०, पृ० ३८।

५१४. **गढ़ीमोरीला (सागर)**

नवपाषाण उपकरण जो अब 'इण्डियन म्यूज़ियम' कलकत्ता में संरक्षित हैं। म० पु० रू० पृ० ३९।

५१५. **जतकारा (छतरपुर)**

नवपाषाण युगीन कुल्हाड़ियाँ। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० १-४०।

५१६. **जबलपुर (जबलपुर)**

नवपाषाण उपकरण जो अब 'इण्डियन म्यूज़ियम' कलकत्ता में संरक्षित हैं। म० पु० रू०, पृ० ३८।

५१७. **दमोह (दमोह)**

नवपाषाण उपकरण जो अब 'इण्डियन म्यूज़ियम' कलकत्ता में संरक्षित हैं। म० पु० रू०, पृ० ३८-३९।

५१८. **नांदगाँव (दुर्ग)**

नवपाषाण उपकरण (छिद्रित घन) जो अब 'इण्डियन म्यूज़ियम' कलकत्ता में संरक्षित हैं। म० पु० रू०, पृ० ३९।

२०

५१६. बहूतराई

नवपाषाण उपकरण जो अब 'इण्डियन म्यूज़ियम' कलकत्ता में संरक्षित हैं। म० पु० रू०, पृ० ३८।

५२०. बुरचेंका (जबलपुर)

नवपाषाण उपकरण जो अब 'इण्डियन म्यूज़ियम' कलकत्ता में संरक्षित हैं। म० पु० रू०, पृ० ३८।

५२१. मुनई (जबलपुर)

नवपाषाण उपकरण जो अब 'इण्डियन म्यूज़ियम' कलकत्ता में संरक्षित हैं। म० पु० रू०, पृ० ३८।

५२२. सागर (सागर)

नवपाषाण उपकरण जो अब 'इण्डियन म्यूज़ियम' कलकत्ता में संरक्षित हैं। म० पु० रू०, पृ० ३९।

५२३. हटा (दामोह)

नवपाषाण उपकरण जो अब 'इण्डियन म्यूज़ियम' कलकत्ता में संरक्षित हैं। म० पु० रू०, पृ० ३९।

५२४. होशंगाबाद (होशंगाबाद)

नवपाषाण उपकरण जो अब 'इण्डियन म्यूज़ियम' कलकत्ता में संरक्षित हैं। म० पु० रू०, पृ० ३९।

उ—ताम्रपाषाण युगीन स्थल

५२५. आवरा (मन्दसौर)

उत्खनन में प्राप्त ताम्रपाषाण युगीन अवशेष। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ६८; वही, १९५९-६०, पृ० २४-२५; ज० म० प्र० इ० प० अंक ४ (१९६२), पृ० १३-४०।

५२६. आष्टा (सीहोर)

(अ) चित्रित मृद्भाण्ड जो सम्भवतः ताम्रपाषाण युगीन हैं। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

(आ) चम्बल की सहायक पार्वती नदी की खोज में प्राप्त एक टीले से ताम्रपाषाण युगीन मृद्भाण्ड तथा ऐतिहासिक कालीन अन्य अवशेष। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ८०।

५२७. उन्डेल (इन्दौर)

मृद्भाण्डों के साथ प्राप्त लघुपाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

५२८. एरण (सागर)

उत्खनन में प्राप्त ताम्रपाषाण युगीन सभ्यता के अवशेष। इ० आ० रि० १९६०-६१ से १९६४-६५; ज० म० प्र० इ० प० अंक ४ और ५; बुलेटिन एनशियन्ट इण्डियन हिस्ट्री, सागर विश्वविद्यालय अंक १, पृ० २३-३८।

५२९. कनरिया (इन्दौर)

मृद्भाण्डों के साथ प्राप्त लघुपाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

५३०. कसरावद (निमाड़)

चित्रित मृद्भाण्ड प्राप्त होने वाला एक स्थल, जो सम्भवतः ताम्रपाषाण कालीन है। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० और चित्र ४, पृ० ९।

५३१. कानवन (धार)

(अ) चित्रित मृद्भाण्डों के साथ प्राप्त लघुपाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ६७।

(आ) चित्रित मृद्भाण्ड प्राप्त होने वाला एक स्थल, जो सम्भवतः ताम्रपाषाण युगीन है। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

५३२. कायथा (उज्जैन)

उत्खनन में प्राप्त ताम्रपाषाण युगीन सभ्यता के अवशेष। दी विक्रम-कायथा एस्कवेशन नम्बर, १९६७; इ० आ० रि० १९६४-६५, पृ० १६-१७; वही, १९६७-६८।

५३३. केसूर (धार)

चित्रित मृद्भाण्डों सहित प्राप्त लघुपाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ६७।

५३४. खगरिया (इन्दौर)

मृद्भाण्डों सहित प्राप्त लघुपाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

५३५. खेड़ा

चित्रित मृद्भाण्ड प्राप्त होने वाला एक स्थल, जो सम्भवतः ताम्रपाषाण युगीन है। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

५३६. घाटा-बिलोद

चित्रित मृद्भाण्ड प्राप्त होने वाला एक स्थल, जो सम्भवतः ताम्रपाषाण युगीन है। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

५३७. टकरियादा (उज्जैन)

नागदा से लगभग ३ मील दक्षिण में स्थित ताम्रपाषाण युगीन एक स्थल । यहाँ से ताम्रपाषाण कालीन मृद्भाण्ड, लघुपाषाण औज़ार, पहलूदार क्रोड तथा समानान्तर धार युक्त फलक प्राप्त हुए । इ० आ० रि० १९५५-५६, पृ० ७० ।

५३८. टकरौदा

चित्रित मृद्भाण्ड प्राप्त होने वाला स्थल जो सम्भवत: ताम्रपाषाण कालीन है । इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९ ।

५३९. तुंगनी

चित्रित मृद्भाण्ड प्राप्त होने वाला स्थल जो सम्भवत: ताम्रपाषाण कालीन है । इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९ ।

५४०. धार (धार)

चित्रित मृद्भाण्ड जो सम्भवत: ताम्रपाषाण युगीन है । इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९ ।

५४१. धोढर

चित्रित मृद्भाण्ड प्राप्त होने वाला एक स्थल जो सम्भवत: ताम्रपाषाण युगीन है । इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९ ।

५४२. नागदा (उज्जैन)

चित्रित मृद्भाण्ड प्राप्त होने वाला एक स्थल जो सम्भवत: ताम्रपाषाण युगीन है । इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९ ।

५४३. नावडाटोली (पश्चिमी निमाड़)

उत्खनन में प्राप्त ताम्रपाषाण युगीन सभ्यता के अवशेष । ए० मा० ना०; इ० आ० रि० १९५२-५३, पृ० ८, १९५७-५८, पृ० ३०-३१, १९५८-५९, पृ० ३०-३१ ।

५४४. निरंदपुर (जबलपुर)

लघुपाषाण औज़ार तथा 'काले और लाल' बर्तन । इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९ ।

५४५. परमार-खेड़ी

चित्रित मृद्भाण्ड प्राप्त होने वाला एक स्थल जो सम्भवत: ताम्रपाषाण युगीन है । इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९ ।

५४६. पसेवा (पेवा)

चित्रित मृद्भाण्ड प्राप्त होने वाला एक स्थल, जो सम्भवत: ताम्रपाषाण युगीन है । इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९ ।

५४७. **पाटन (जबलपुर)**

लघुपाषाण औज़ार जिनके साथ 'काले और लाल' भाण्ड तथा 'काले-ओपदार उत्तरी भाण्ड' प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

५४८. **बदनावर (धार)**

ताम्रपाषाण कालीन चित्रित मृद्भाण्ड प्राप्त होने वाला एक स्थल। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

५४९. **बिलावली (देवास)**

(अ) ताम्रपाषाण युगीन चित्रित मृद्भाण्ड तथा मृणमूर्तियाँ। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ११ तथा चित्र-ए, बी, सी।

(आ) उत्खनन में प्राप्त ताम्रपाषाण युगीन अवशेष। इ० आ० रि० १९६२-६३ पृ० १०, चित्र २८-२९।

५५०. **बेटनिया**

ताम्रपाषाण कालीन चित्रित मृद्भाण्ड प्राप्त होने वाला एक स्थल। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

५५१. **बेसनगर (विदिशा)**

उत्खनन में प्राप्त ताम्रपाषाण युगीन सभ्यता के अवशेष। इ० आ० रि० १९६३-६४ से १९६५-६६।

५५२. **भिलसुरा**

नागदा के लगभग ६ मील दक्षिण में स्थित ताम्रपाषाण युगीन एक स्थल। यहाँ से ताम्रपाषाण कालीन मृद्भाण्ड, लघुपाषाण औज़ार, पहलूदार क्रोड तथा समानान्तर धार युक्त फलक प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९५५-५६, पृ० ७०।

५५३. **भीटा (जबलपुर)**

ताम्रपाषाण युगीन 'लाल-पर-काले' मृद्भाण्ड और लघुपाषाण औज़ार। इसके अतिरिक्त 'काले-आपेदार-उत्तरी-भाण्ड' भी प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

५५४. **मन्दसौर (मन्दसौर)**

(अ) शिवना नदी के तट पर प्राप्त मध्यभारतीय ताम्रपाषाण युग के काले रंग से चित्रित लाल भाण्ड। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० १-४२।

(आ) स्थानीय किले के टीले के पूर्वी भाग से प्राप्त ताम्रपाषाण युगीन मृद्भाण्ड। 'लाल-पर-काले' भाण्डों के अतिरिक्त कुछ क्रोड तथा शल्क भी प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ८०।

५५५. मनोटी (मन्दसौर)

(अ) ताम्रपाषाण कालीन एक स्थल। यहाँ तीन वलय-कूप भी देखे गये। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

(आ) उत्खनन में प्राप्त ताम्रपाषाण युगीन सभ्यता के अवशेष। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० २५।

५५६. मरोद (इन्दौर)

मृद्‌भाण्डों के साथ प्राप्त लघुपाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७।

५५७. मेतवास

चित्रित मृद्‌भाण्ड प्राप्त होने वाला एक स्थल, जो सम्भवतः ताम्रपाषाण युगीन है। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

५५८. मोड़ी (मन्दसौर)

चित्रित मृद्‌भाण्ड प्राप्त होने वाला एक स्थल, जो सम्भवतः ताम्रपाषाण कालीन है। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

५५९. राजोटा (उज्जैन)

राजोटा के ३ मील उत्तर की ओर चम्बल नदी के तट पर स्थित ताम्रपाषाण कालीन स्थल जहाँ से चित्रित मृद्‌भाण्ड प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ७१।

५६०. रूर (भिण्ड)

मृद्‌भाण्डों के साथ प्राप्त लघुपाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २६।

५६१. लोहारी

चित्रित मृद्‌भाण्ड प्राप्त होने वाला एक स्थल जो सम्भवतः ताम्रपाषाण युगीन है। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० १० तथा चित्र ४, पृ० ९।

५६२. सारंगपुर (शाजापुर)

पार्वती नदी के दक्षिण-पूर्व तट पर स्थित ताम्रपाषाण युगीन स्थल जहाँ से 'मालवा-भाण्ड' तथा सफेद रंग से चित्रित 'काले-और-लाल' भाण्ड प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

५६३. सिंगवाड़ा (शाजापुर)

चम्बल की सहायक नदी गंभीर के तट पर स्थित ताम्रपाषाण युगीन स्थल जहाँ से

'मालवा-भाण्ड' तथा सफेद रङ्ग से चित्रित 'काले-और-लाल' भाण्ड प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १६६०-६१, पृ० ६२।

५६४. **हाटोड (इन्दौर)**

मृद्भाण्डों के साथ प्राप्त लघु-पाषाण औज़ार। इ० आ० रि० १६५८-५६, पृ० २७।

५६५. **त्रिपुरी (जबलपुर)**

उत्खनन में प्राप्त ताम्रपाषाण युगीन सभ्यता के अवशेष। दीक्षित मो० ग० : 'त्रिपुरी १६५२,' पृ० १३-१४; इ० आ० रि० १६५५-५६ से १६६८-६६।

श्री वी० श्री वाकणकर ने 'पुरातत्त्व,' अंक २, पृ० ६५-६६ पर मालवा में स्थित ५२ ताम्रपाषाण युगीन स्थलों की सूची दी है जिनकी खोज पिछले बीस वर्षों में की गई है। इस सूची में कई ऐसे स्थलों का उल्लेख है जिनका वर्णन अपेक्षित विवरण के अभाव में ऊपर नहीं किया गया है।

ऊ—ताम्र-निधि प्राप्त होने वाले स्थल

५६६. **गुंगेरिया (बालाघाट)**

१८७० में प्राप्त ताम्र-युगीन ४२४ उपकरणों की एक निधि जिसमें कुल्हाड़ी आदि शामिल हैं। ब्रा० के० पृ० १४६-५१; स्मिथ, 'दी कापर एण्ड प्रि-हिस्टारिक ब्रान्ज इम्प्लीमेण्ट्स आफ़ इण्डिया' इ० ए०, भाग ३४ (१६०५), पृ० २२६-४४।

५६७. **जबलपुर (जबलपुर)**

१८६६ में प्राप्त एक कांस्य-कुल्हाड़ी। प्रो० ए० सो० ब० १८६६, पृ० ६०; इ० ए० १६०५, पृ० २४०।

५६८. **दबकिया (जबलपुर)**

एक ताम्र-कुल्हाड़ी। इ० आ० रि० १६६१-६२, पृ० ६६ तथा चित्र १४५-ए।

५६६. **रामजीपुरा (पूर्व निमाड़)**

एक ताम्र-कुल्हाड़ी जिसके छोर मुड़े हुए तथा किनारे प्रायः समानान्तर हैं। इ० आ० रि० १६६१-६२, पृ० ६६; इतिहास अनुशीलन (भोपाल) भाग १, अंक १, पृ० १२६।

ए—शिलाश्रय प्राप्त होने वाले स्थल

५७०. **आदमगढ़ (होशंगाबाद)**

चित्रित शिलाश्रयों का एक समूह। मि० आ० स० इ० क्रमांक २४, अध्याय ५, पृ० २१-२२, चित्र ५ और १३, 'होशंगाबाद पेन्टिंग्ज़'-इलस्ट्रेटेड लंडन न्यूज़, सितम्बर

२१, १६३५; 'राक-पेंटिंग्ज आफ़ होशंगाबाद'-नागपुर म्यूज़ियम बुलेटिन क्रमांक २: 'आन द फ़िगर आफ़ जिराफ़—होशंगाबाद ज० ब० हि० यु० भाग ६, पृ० २५-३२।

५७१. आबचन्द (सागर)

एक दर्जन चित्रित शिलाश्रय जिनमें लाल, बादामी तथा श्वेत रङ्गों की चित्रकला है। इ० आ० रि० १६५६-६०, पृ० ७०।

५७२. इतर पहाड़ (रीवा)

(अ) रीवा से सीतापुर तथा मऊगंज जाने वाले मार्ग पर ५ कि० मी० के घेरे में स्थित चित्रकला सहित दस शिलाश्रय। इ० आ० रि० १६६१-६२, पृ० २२-२४।

(आ) एक शिलाश्रय। इ० आ० रि० १६६१-६२, पृ० १००।

५७३. इन्द्रगढ़ (मन्दसौर)

(अ) चित्रित शिलाश्रय। इ० आ रि० १६५८-५६, पृ० २७।

(आ) चित्रकला युक्त शिलाश्रय। इ० आ० रि०, १६५८-५६, पृ० ७२।

५७४. कटनी (जबलपुर)

एक शिलाश्रय जिसमें सफेद रङ्ग से की गई चित्रकला तथा एक लेख है। इ० आ० रि० १६५६-५७, पृ० ७६ तथा चित्र १८, पृ० ८०।

५७५. कबरा पहाड़ (रायगढ़)

चित्रित शिलाश्रयों का एक समूह। सा० क० भाग ५, क्रमांक ५, पृ० २६६-७०।

५७६. केदारेश्वर (मन्दसौर)

(अ) चित्रकला युक्त शिलाश्रय। इ० आ० रि० १६५८-५६, पृ० ७२।

(आ) चित्रित शिलाश्रय। इ० आ० रि० १६५८-५६, पृ० २७।

५७७. केसलपुरा (सीहोर)

चित्रित शिलाश्रय। इ० आ० रि० १६६०-६१, पृ० ६२, चित्र १२ (४)।

५७८. खरवई (रायसेन)

रायसेन दुर्ग के दक्षिण में १० कि० मी० की दूरी पर लगभग साठ चित्रित शिलाश्रय। एक शिलाश्रय के फर्श पर अशोक कालीन ब्राह्मी-लिपि में तीन अक्षरों का एक लेख है। दूसरी गुफा 'महादेव-की-गुफा' के नाम से जानी जाती है, जिसमें ६ वीं-१०वीं सदी ईसवी की चित्रकला है। इ० आ० रि० १६६०-६१, पृ० ६१ तथा चित्र १२।

५७९. **खुसियार-घाट की पहाड़ी (रीवा)**

चित्रित शिलाश्रय। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ३९।

५८०. **गाताखेरा (जबलपुर)**

एक चित्रित शिलाश्रय। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९।

५८१. **ग्वालियर (ग्वालियर)**

ग्वालियर पहाड़ी की बाहरी भाग पर स्थित एक चित्रित शिलाश्रय। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ७९ तथा चित्र १८, पृ० ८०।

५८२. **गाताखेरी (पूर्व निमाड़)**

एक शिलाश्रय। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९।

५८३. **चण्डीगढ़ (पूर्व निमाड़)**

एक शिलाश्रय। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९।

५८४. **चम्बल नदी की घाटी**

चम्बल नदी घाटी की खोज में प्राप्त सौ से अधिक चित्रित शिलाश्रय। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ७२।

५८५. **चोरपुरा (शिवपुरी)**

चित्र-कला तथा चित्रित लिखावट सहित दस से अधिक शिलाश्रय, जो प्रथम, द्वितीय तथा चौदहवीं शताब्दी की हैं। इनमें लाल गेरू से की गई चित्रकला है। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ७९।

५८६. **छिब्बर-नाला (मन्दसौर)**

चित्रित शिलाश्रय जिनमें लाल तथा गहरे लाल रंग की गेरू से की गई चित्रकला है। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० २६, चित्र १४।

५८७. **झलई (होशंगाबाद)**

चित्रित शिलाश्रय। म० पु० रू०, पृ० ४०।

५८८. **तक्षकेश्वर (मन्दसौर)**

चित्रकला सहित शिलाश्रय। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ७२।

५८९. **तामिया (छिन्दवाड़ा)**

चित्रित शिलाश्रय। म० पु० रू०, पृ० ४०।

५६०. देवरा (छतरपुर)

दो शिलाश्रय जो 'पौर-का-दाता' तथा 'पुतली-की-दाता' के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनमें बनी चित्रकला अधिकतर लाल गेरू से तथा कहीं-कहीं पीले रंग से है। चित्रों में अस्त्र लिए एक मनुष्याकृति के साथ अनेकों पशु-चित्र दर्शाये गये हैं। इ० आ० रि० १९५५-५६, पृ० ६६।

५६१. नयागांव और भोटिया काफ़

चित्रित शिलाश्रयों का एक समूह। प्र० पु० रू० पृ० ४१।

५६२. नयापुरा (सीहोर)

कुछ चित्रित शिलाश्रय जिनके छतों पर शंखलिपि में लेख उत्कीर्ण हैं। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ७०।

५६३. नरियावली (सागर)

चित्रित शिलाश्रय के दो समूह जिनमें लाल गेरू से चित्रित घरेलू तथा युद्ध के दृश्य अंकित किये गये हैं। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ७२।

५६४. पचमढ़ी (होशंगाबाद)

(अ) पचमढ़ी के चारों ओर ३० मील के क्षेत्र में फैली हुई अनेक चित्रित तथा शैल-गुहाएँ। इनमें से महत्वपूर्ण हैं—'डोरोथी-डीप', 'जम्बूदीप', 'बीदाम', 'बोरी', 'बनिया बोरी', 'मेभ्रू-पीप', 'छोटा महादेव' तथा 'बड़ा महादेव'। सा० क० भाग ५, अंक ६, पृ० ३२२-२७; वही अंक ७, पृ० ३८७-९२; वही अंक १०, पृ० ५७८-८४, 'इण्डियन आर्ट एण्ड लेटर्स—भाग १० (१९३५), पृ० ३५-४१; केव्हज़ आफ़ पचमढ़ी हिल्स : गार्डन (अप्रकाशित)।

(आ) १९३६ में डोरोथी-डीप नाम गुफा का हण्टर द्वारा उत्खनन किया गया। ना० यु० ज० (१९३५-३६), पृ० २८, १२७।

(इ) तामिया तथा पचमढ़ी के बीच पहाड़ी क्षेत्र में स्थित लाल तथा सफेद रंग की चित्र-कला सहित शिलाश्रयों का एक समूह। इनमें दर्शाए गए विषय वैसे ही हैं जैसे कि आदमगढ़ तथा पचमढ़ी शैलगुफाओं में चित्रित हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६०।

५६५. पुतलीकरार (रायसेन)

लगभग एक सौ चित्रित शिलाश्रय। पे० रा० श० म०, पृ० १००-१०९।

५९६. फतेहपुर (दमोह)

चित्रित शिलाश्रय। द० दी० पृ० ८९।

५९७. बरखेड़ी (रायसेन)

अनेक चित्रित शिलाश्रय। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० ४-५।

५९८. बरोदा (सागर)

सोलह चित्रित शिलाश्रयों का समूह। पे० रा० श० म०, पृ० ९३-बी।

५९९. बृजपुर (पन्ना)

चित्रित शिलाश्रयों का समूह जो कि पन्ना से उत्तर-पूर्व में लगभग ४० कि० मी० की दूरी पर बाघन नदी के तट पर स्थित है और जो बृहस्पति-कुण्ड के नाम से जानी जाती है। चित्रकला में शिकार, नृत्य और राजकीय जुलूस आदि के दृश्य हैं। इनमें मानवीय तथा पशुओं दोनों के चित्र दिखाए गए हैं। पशुओं में जिराफ़ विशेष उल्लेखनीय है। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९, चित्र क्रमांक १४३।

६००. बिजोरी (नरसिंहपुर)

'मच्छा' नदी के बाएँ तट पर स्थित एक शिलाश्रय जिसमें लाल गेरू से साण्ड, हाथी, मुर्गा आदि चित्रित किये गये हैं। उनके ऊपर सफेद रंग में शिकार, घुड़सवारी, युद्ध, नृत्य, संगीत, पलायन आदि के दृश्य हैं। साथ ही सिंह पर सवारी किए हुए एक नारी का चित्र भी है। पास ही चर्ट और जास्पर पत्थरों के फलक प्राप्त हुए हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६० तथा चित्र क्रमांक ७०।

६०१. भापेल (सागर)

चार चित्रित शिलाश्रय। पे० रा० श० म०, पृ० ८०-८२।

६०२. भैन्यपुरा (सीहोर)

(अ) लगभग ५० शिलाश्रयों का समूह जो 'भीम-बेटका' के नाम से जानी जाती है तथा जिनमें विविध चित्रकलाएँ हैं। इनमें ब्राह्मी, शंख तथा गुप्त लिपियों में लेख उत्कीर्ण हैं। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ७०।

(आ) दस चित्रित शिलाश्रयों का समूह। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२, चित्र १२।

६०३. भोजपुर (सीहोर)

बेतवा नदी के किनारे मिले सात चित्रित शिलाश्रय। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

६०४. **भोपाल (भोपाल)**

(अ) भोपाल की बाहरी सीमा पर स्थित बैरागढ़ के समीप रेतीली पहाड़ी के पश्चिमी ढाल पर अनेकों चित्रित शिलाश्रय। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ७९ और चित्र १८, पृ० ८०।

(आ) श्यामला पहाड़ी पर स्थित सात चित्रित शिलाश्रय। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२, चित्र १२ (३)।

(इ) बड़े तालाब के निकट तथा चतुर्दिक अनेक चित्रित शिलाश्रय जो (१) मनुआभाण्ड की टेकरी, (२) गुफा मंदिर, (३) टी० बी० अस्पताल, (४) शिमला-कोठी, (५) धरमपुरी, (६) शहदकराड तथा (७) भदभदा के निकट स्थित है। पे० रा० श० स०, पृ० १२०-१३५।

६०५. **मोड़ी (मन्दसौर)**

तीस शिलाश्रय जिनमें लाल गेरू से की गई चित्रकला है। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० २६।

६०६. **रामछज्जा (रायसेन)**

'रीछन नाला' के दाहिने तट पर स्थित चार चित्रित शिलाश्रय। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० १४।

६०७. **रायसेन (रायसेन)**

ओबेदुल्लागंज के निकट 'भीम बैठका' में लगभग ई० पू० दूसरी सदी के ब्राह्मी लेख सहित चित्रित शिलाश्रय। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० ४-५।

६०८. **शहदाद-कराड (सीहोर)**

कुछ शिलाश्रय जिनमें महत्वपूर्ण चित्रकला है। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ७०।

६०९. **सागर (सागर)**

(अ) सागर के पश्चिम में लगभग १० कि० मी० की दूरी पर स्थित दस शिलाश्रय। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

(आ) सागर से लगभग २४ कि० मी० पूर्व की ओर रेहली मार्ग पर बरोदा वन-भाग में स्थित सात शिलाश्रय। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० २७-२८।

६१०. **सिंघनपुर (रायगढ़)**

चित्रित शिलाश्रयों का एक समूह। मि० आ० स० इ०, २४, पृ० ९-१४, चित्र

२-४, १२-ब; सा० क० भाग ५, अंक ३, पृ० १४२-४७; ज० बि० ओ० रि० सो० १९१८, पृ० २९८-३०६ ।

६११. **सीताखेड़ी (मन्दसौर)**

चित्रित शिलाश्रय जिनमें लाल और गहरे लाल रंग की चित्रकला है । इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० २६ चित्र १४; वही १९५८-५९, पृ० २७, चित्र ३१ ।

६१२. **हिंगलाजगढ़ (मन्दसौर)**

चित्रित शिलाश्रय । इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २७ ।

ऐ—महापाषाणीय स्मारक प्राप्त होने वाले स्थल

६१३. **कन्ही भण्डार (दुर्ग)**

पाषाण-घेरा । आ० सा० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९३०-३४, चित्र ७७-बी, सी, डी ।

६१४. **काबराहाट (दुर्ग)**

पाषाण-घेरा, जो दुर्ग गज़ेटियर के अनुसार खुदवाये गये थे और उनमें लोहे के औज़ार तथा मृद्भाण्ड प्राप्त हुए थे । आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९३०-३४ चित्र ७७-बी, सी, डी ।

६१५. **चचाई प्रपात (रीवा)**

रीवा-चचाई मार्ग पर स्थित महापाषाणीय स्मारक । इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० ३९ ।

६१६. **चिरचोरी (दुर्ग)**

पाषाण-घेरा । आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९३०-३४, चित्र ७७-बी, सी, डी ।

६१७. **धनोरा (दुर्ग)**

यहाँ लगभग ५०० महापाषाणीय स्मारक स्थित हैं जिन्हें चार वर्गों में विभाजित किया गया है । १९५६-५७ में यहाँ प्रथम वर्ग के तीन तथा दूसरे वर्ग के एक स्मारक का उत्खनन किया गया । उत्खनन से प्राप्त प्रमाण अपूर्ण रहे । इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ३५, चित्र ५१-५२ ।

६१८. **मजगहान (दुर्ग)**

पाषाण-घेरा । आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९३०-४४, चित्र ७७-बी, सी, डी ।

६१९. सरेखा (सिवनी)

बैनगंगा-हिर्री के संगम पर स्थित पाषाण-घेरा । म० पु० रू० पृ० ४२ ।

६२०. सोनाभीर

महापाषाणीय स्मारक । क० लि० ए० रि० ।

६२१. सोरार (दुर्ग)

पाषाण-घेरा । आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९३०-३४, चित्र ७७-बी, सी, डी ।



तृतीय अध्याय

अभिलेख

अ—मौर्यकालीन अभिलेख

२२. आरंग (रायपुर)

खण्डित तथा अस्पष्ट ब्राह्मी अभिलेख। क० प्र० रि० १९०४ पृ० ५०; हीरालाल सूची, क्रमांक १८३; पन्ड्याः ज० आ० हि० रि० सो० भाग ५ (१९३०-३१), पृ० ४६-४८।

६२३. कसरावद (पश्चिम निमाड़)

उत्खनन में प्राप्त मिट्टी के बरतन तथा पत्थर के टुकड़ों पर उत्कीर्ण ब्राह्मी लिपि में लेख। इ० हि० क्वा० भाग २५, पृ० १; रि० अ० हो० स्टे० १९३६, पृ० ७६; वही, १९३७, पृ० ८६; वही, १९३८, पृ० १३५; वही, १९४१, पृ० १३७।

६२४. कारीतलाई (जबलपुर)

शिलाहार गुफा में ब्राह्मी लेख। हीरालाल सूची, क्रमांक ४५, पाद-टिप्पणी—१।

६२५. खरवई (रायसेन)

शिलाश्रय में प्राप्त तीन अक्षरों का अशोक कालीन ब्राह्मी लिपि में लेख। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।

६२६. गुजर्रा (दतिया)

अशोक का शिलालेख, जिसमें अशोक का व्यक्तिगत नाम उल्लिखित है। इ० आ० रि० १९५४-५५, पृ० २७; ए० इ० भाग ३१, पृ० २०५-२१०।

६२७. **भैन्यपुरा (सीहोर)**

शिलाश्रय में ब्राह्मी शिलालेख। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६०।

६२८. **रामगढ़ (सरगुजा)**

ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण गुफा-लेख, जिसमें देवदासी सुतनुका का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ३१; ज० ए० सो० ब० भाग १७, खण्ड १, पृ० ६६; वही, भाग ३४, खण्ड २, पृ० २३; इ० ए० भाग ३४, पृ० १९७; वही, भाग ४८, पृ० १३१; ज० बि० ओ० रि० सो० भाग ९, पृ० २७३; स० अ० ई० ओ० का० इलाहाबाद, १९२६, पृ० ७० तथा ७१; स्टेटिस्टिकल अकाउन्ट आफ बंगाल, भाग १७, पृ० २३६; हीरालाल सूची, क्रमांक ३१२।

६२९. **रूपनाथ (जबलपुर)**

अशोक का शिलोत्कीर्ण धर्मादेश। इ० ए० भाग ६, पृ० १५६; वही, भाग ४१, पृ० १७०; कनिंघम : क० इ० इ० भाग १, पृ० २१, २५ तथा १३१; हुल्जः क० इ० इ० भाग १, पृ० ६६ तथा २२८; ज० र० ए० सो० १९०८, पृ० ८११; वही, १९०९, पृ० १०१५; वही, १९१०, पृ० १४२, १३०८; वही, १९११, पृ० १०१९, ११०१, १११४; वही, १९१२, पृ० ४७७, १०५३; वही, १९१३, पृ० ६५१; ज० ए० १९१०, पृ० ५०७; वही, १९११, पृ० ११९; ज० ए० सो० ब० भाग ३, पृ० ४; हीरालाल सूची, क्रमांक ३०।

६३०. **साँची (रायसेन)**

(अ) स्तूप क्रमांक १ के दक्षिण द्वार के निकट खण्डित स्तम्भ पर उत्कीर्ण अशोक का धर्मादेश। प्रिंसेप: ज० ए० सो० ब० भाग ७ (पुराना), पृ० ५६५; वही, भाग २३, पृ० ४६; क० इ० इ० भाग १, पृ० ११६; ए० इ० भाग २, पृ० ३६७; ज० र० ए० सो० १९११, पृ० १६७-१६९; कनिंघम : भि० टो० पृ० २६।

(आ) संग्राहालय में सुरक्षित ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण अनेक प्राकृत लेख, जो स्तूपों के विभिन्न अंगों से प्राप्त हुए थे। के० म्यू० आ० सा० पृ० ७-१३।

आ—तीसरी शताब्दी ईसवी पूर्व से तीसरी शताब्दी ईसवी तक के अभिलेख

६३१. **अन्धेर (विदिशा)**

स्तूपों के खण्डहरों से प्राप्त दूसरी शताब्दी ईसवी पूर्व के लेख। भि० टो० पृ० २२१-२६।

६३२. **अंकलेश्वर (मन्दसौर)**

दूसरी-तीसरी शताब्दी ई० पू० का ब्राह्मी-लेख जो अष्टकोणाकार स्तम्भ पर उत्कीर्ण है। इसमें पोग वंश के राजा कलिवर का उल्लेख है। स० अ० इ० ओ० का०—२६ (उज्जैन), १९७२, पृ० २२४।

६३३. **उज्जैन (उज्जैन)**
क्षत्रप शासनकाल का एक अभिलेख जिसमें "दमस्य रैन" उत्कीर्ण है। **पुरातत्त्व भाग २, पृ० ६५।**

६३४. **कसरावद (पश्चिम निमाड़)**
१९३६-३९ के उत्खनन में स्तूप क्रमांक २ के निकट से प्राप्त तीसरी-दूसरी शताब्दी ई० पू० का अस्पष्ट शिलालेख जिसमें केवल कुछ अक्षर पढ़े जा सकते हैं। आठ पंक्तियों का यह शिलालेख प्राकृत भाषा में है। **इ० हि० क्वा० भाग २५, अंक १८, १९४९, पृ० १-१८।**

६३५. **किरारी (बिलासपुर)**
लगभग दूसरी शताब्दी ई० का खण्डित काष्ट-स्तम्भ लेख, जो ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है तथा जिसमें अनेक उच्चाधिकारियों के पदनाम पढ़े गये हैं। **हीरानन्द शास्त्री--ए० इ० भाग १८, पृ० १५२; हीरालाल सूची, क्रमांक २१४; एनशियन्ट इन्डिया, अंक ६, पृ० १७-२०।**

६३६. **केवटी-कुंड (रीवा)**
लगभग दूसरी-तीसरी शताब्दी ईसवी का शिलालेख। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ११६।**

६३७. **गुंजी (बिलासपुर)**
लगभग प्रथम शताब्दी ईसवी का कुमारवरदत्त का शिलालेख। **मिराशी—ए० इ० भाग २७, पृ० ४८; क० प्र० रि० १९०४, पृ० ५४; हीरालाल सूची, क्रमांक ३०९।**

६३८. **चोरपुरा (शिवपुरी)**
शिलाश्रय में उत्कीर्ण ब्राह्मी लिपि में अभिलेख, जो लगभग पहली-दूसरी शताब्दी ईसवी का है। **इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० २९।**

६३९. **तोरन्धेर (रायसेन)**
लगभग दूसरी शताब्दी ई० पू० का प्राकृत भाषा में उत्कीर्ण शिलालेख। **इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ५७।**

६४०. **दुर्ग (दुर्ग)**
लगभग दूसरी शताब्दी ईसवी के दो खण्डित ब्राह्मी अभिलेख। **हीरालाल सूची, क्रमांक २३९; इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० २-३।**

६४१. **पवाया (ग्वालियर)**
ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण प्रतिमा-लेख। **ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७१, क्रमांक २।**

६४२. **बघोरा (जबलपुर)**
शिवघोष का लगभग दूसरी शताब्दी ईसवी का शिलालेख। **म० पु० रू० पृ० ४६, चित्र ८; इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० २-५-६; ज० ओ० इ० भाग २०, पृ० ४४२।**

६४३. बालोद (दुर्ग)

लगभग दूसरी शताब्दी ईसवी का स्तम्भ-लेख। क० आ० स० इ० रि०, भाग ७, पृ० १३७; हीरालाल सूची, क्रमांक २३३।

६४४. बुढ़िखार (बिलासपुर)

लगभग दूसरी शताब्दी ईसवी का वैष्णव-मूर्ति लेख, जिसमें प्रजावती नामक स्त्री द्वारा दिये गये दान का उल्लेख है। म० पु० रू० पृ० ४६।

६४५. बेसनगर (विदिशा)

(अ) खामबाबा स्तम्भ-लेख जिसमें भागभद्र के शासनकाल में यवन शासक अन्तलिकित के राजदूत हेलियोदोर द्वारा गरूड-ध्वज की स्थापना का उल्लेख है। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग ८, पृ० १२७; वही, भाग १३, पृ० १८६; वही, भाग २३, पृ० ६६; वही, भाग २४, पृ० १२८; ज० र० ए० सो०, १६०६, पृ० १०५३; इ० हि० क्वा० भाग ८, पृ० ६१०; इ० ए० भाग १०, लूडर्स की सूची, सं० ६६६, ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७४, क्रमांक ६६; जर्नल ऑफ़ ओरियन्टल रिसर्च मद्रास, भाग १५ (१९४५-४६), पृ० १३५-३७।

(आ) स्तम्भ-लेख, जिसमें गौतमीपुत्र भागवत द्वारा वासुदेव के मन्दिर में महाराज भागवत के बारहवें वर्ष में गरुड-ध्वज बनवाने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७४, क्रमांक ७० तथा सम्वत् १९८४, क्रमांक ११८; इ० ए० भाग १०, कीलहार्न की सूची, क्रमांक ६१६; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, सन १९१३-१४, पृ० १९०; भाग २३, पृ० १४४।

(इ) बौद्ध-स्तूप की वेदिका के उष्णीष-प्रस्तर पर ब्राह्मी अभिलेख जिसकी भाषा प्राकृत है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८४, क्रमांक १२० तथा १९७४, क्रमांक ७२; ए० ई० भाग ५।

(ई) बौद्ध-स्तूप की वेदिका-स्तम्भ पर ब्राह्मी अभिलेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८४, क्रमांक १२२ तथा सम्वत् १९७४, क्रमांक ७४; लूडर्स सूची क्रमांक ६७३; क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ३९।

(उ) बौद्ध-स्तूप की वेदिका की सूची पर ब्राह्मी अभिलेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८४, क्रमांक १२३ तथा सम्वत् १९७४, क्रमांक ७५।

(ऊ) बौद्ध-स्तूप की वेदिका पर ब्राह्मी अभिलेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८४, क्रमांक १२४ तथा १९७४, क्रमांक ७६; लूडर्स सूची, क्रमांक ६७४; क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ३९।

(ए) बौद्ध-स्तूप की वेदिका की सूची पर ब्राह्मी अभिलेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८४, क्रमांक १२१।

(ऐ) बौद्ध-स्तूप की वेदिका के खण्ड पर ब्राह्मी अभिलेख। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ३८।

(ओ) बौद्ध-स्तूप की वेदिका के स्तम्भ पर ब्राह्मी लेख जिसमें अजामित्र के दान का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ३६; **लूडर्स सूची, क्रमांक ६७१, ६७२।**

६४६. **भरहुत (सतना)**

(अ) ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण अनेक शिलालेख। **बरुआ बी० एम० तथा सिन्हा जी०–'भरहुत इन्सक्रिपशन्स' (१९२६); कनिंगघम : 'दी स्तूप आफ भरहुत' (१८७९), पृ० १२७-४३।**

(आ) रामवन (सतना) में सुरक्षित भरहुत स्तूप के अनेक खण्डों पर उत्कीर्ण ब्राह्मी लेख। **कृ० द० बाजपेयी — मध्यभारती (सागर विश्वविद्यालय शोध पत्रिका), वर्ष ३, अंक ३ (१९६०), पृ० १–५; ज० म० प्र० इ० प० भाग ५ (१९६७), पृ० १–७; ज० इ० न्यू० भाग १७-२० (१९६१-६४), पृ० ३४-३७।**

(इ) शुंग-कालीन तीन संकलिपत लेख, जिनमें दान-दाताओं का उल्लेख है। **इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ८१।**

६४७. **भेड़ाघाट (जबलपुर)**

कुषाण-कालीन दो मूर्ति-लेख जो धुआंधार के निकट प्राप्त हुए थे, जिनमें भूमक अथवा भूवक की कन्या द्वारा मूर्तियों की स्थापना का उल्लेख है। **हीरालाल—'जबलपुर ज्योति', पृ० १९२; डायरेक्टर जनरल आफ आर्केयलजी रिपोर्ट १९१८-१९, पृ० ३३; हीरालाल सूची, क्रमांक ४५।**

६४८. **भोजपुर (विदिशा)**

स्तूप के खण्डहरों से प्राप्त अभिलेख। **भि० टो०, पृ० २११-२०।**

६४९. **भोपाल (भोपाल)**

बैरागढ़ के निकट शिलाश्रय में उत्कीर्ण शंख-लिपि में लेख। **इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ७९।**

६५०. **मल्लार (बिलासपुर)**

लगभग दूसरी शताब्दी ई० पू० का ब्राह्मी-लेख जो 'चतुर्भुज भगवान' की मूर्ति पर उत्कीर्ण है। **इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ५९; दि० च० सरकार, सेलेक्ट इन्सक्रिपशन्स, भाग १ (द्वितीय संस्करण), पृ० ५२९-३०।**

६५१. **शिलाहर**

लगभग दूसरी शताब्दी ईसवी का गुफा लेख। **भण्डारकर : ए० इ० भाग २२, पृ० ३०-३२।**

६५२. **सतधारा (रायसेन)**

स्तूप के अवशेषों से प्राप्त शिलालेख। **भि० टो०, पृ० २०७-१०।**

६५३. **सेमरसाल (बिलासपुर)**

लगभग दूसरी शताब्दी ईसवी का खण्डित शिलालेख। **आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९३०-३४, चित्र क्रमांक ७६-अ।**

६५४. सोनारी (रायसेन)

स्तूप के अवशेषों से प्राप्त शिलालेख। भि० टो०, पृ० १९९-२०६।

६५५. साँची (रायसेन)

(अ) स्तूप क्रमांक १, २, ३ तथा मन्दिर क्रमांक ४० से प्राप्त लगभग दूसरी-प्रथम शताब्दी ईसवी पूर्व के संकल्पित लेख। म० सा०, पृ० ३०१-३८३, लेख क्रमांक १५-८२७।

(आ) लगभग दूसरी-प्रथम शताब्दी ईसवी पूर्व के अवशेष-मंजूषाओं पर उत्कीर्ण ब्राह्मी लेख। म० सा०, पृ० २८९-९६, लेख क्रमांक १-१४।

(इ) कुषाण कालीन शिलालेख, जो वासश्क के शासन काल के २८वें वर्ष में उत्कीर्ण किया गया था। म० सा० लेख क्रमांक ८२८, पृ० ३८५-८६; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९१०-११, पृ० ४२; के० म्यू० आ० सा० पृ० ३०।

(ई) कुषाण कालीन बुद्ध-प्रतिमा लेख जो वस्कुशाण के शासन काल के २२वें वर्ष में उत्कीर्ण किया गया था। म० सा० पृ० ३८६, लेख क्रमांक ८२९।

(उ) कुषाण कालीन बोधिसत्व-प्रतिमा लेख। म० सा०, पृ० ३८७, लेख क्रमांक ८३०।

इ—गुप्त शासकों के अभिलेख

६५६. उदयगिरि (विदिशा)

(अ) चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल का गुप्त सम्वत् ८२ का गुफा-लेख, जिसमें सनकानिक वंश के चन्द्रगुप्त द्वितीय के सामन्त छगलग के पौत्र विष्णुदास के पुत्र के दान का उल्लेख है। भि० टो० पृ० १५०;–विल्सन—'प्रिन्सिप्स एसेज', भाग १, पृ० २४६; क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ५०; फ्लीट—क० इ० इ० भाग ३, पृ० २१-२५; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२६०।

(आ) गुप्त सम्वत् १०६ का जैन गुफा-लेख, जिसमें गुप्त सम्राट (कुमारगुप्त) के शासन काल में शंकर द्वारा पार्श्वनाथ की मूर्ति की प्रतिष्ठा का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ५३; हुल्ज : इ० ए० भाग ११, पृ० ३०९; फ्लीट–क० इ० इ० भाग ३, पृ० २५८; ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७४, क्रमांक ८०; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२६५।

(इ) अमृत-गुहा में वि० सं० १०९३ का स्तम्भ-लेख जिसमें चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का उल्लेख है। अभिलेख में कान्हा द्वारा विष्णु मन्दिर के पुनर्निर्माण का उल्लेख है जो मूलतः चन्द्रगुप्त के शासन काल में निर्मित किया गया होगा। फ्लीट–इ० ए० भाग १३, पृ० १८५ तथा भाग १४, पृ० ३५२; भण्डारकर—प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९१४-१५, पृ० ६५; ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७४, क्रमांक ८१; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२२।

(ई) चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल का गुहा-लेख, जिसमें शाब वीरसेन द्वारा शिव गुहा के निर्माण का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ५१; इ० ए० भाग ११, पृ० ३१२; फ्लीट—क० इ० इ० भाग ३, पृ० ३४-३६; वीयना ओरियन्टल जर्नल, भाग ५, पृ० २२६; ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७४, क्रमांक ७९; भण्डारकर सूची, क्रमांक १५४१।**

(उ) गुफा क्रमांक १ की छत पर उत्कीर्ण गुप्त लिपि में अभिलेख। **ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८८, क्रमांक ५।**

(ऊ) गुहा क्रमांक ६ की छत पर गुप्त लिपि में अभिलेख, जिसमें कारीगर का नाम है। शेष अस्पष्ट है। **ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८८, क्रमांक ६।**

६५७. एरण (सागर)

(अ) गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त का खण्डित शिलालेख जिसमें स्वभोगनगर ऐरिकिण में सम्भवत: विष्णु के मन्दिर के स्थापना का उल्लेख है। **फ्लीट--क० इ० इ० भाग ३, पृ० १८-२१; क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ८९; ज० इ० हि० भाग १९ (१९४०), पृ० २७-२९; भण्डारकर सूची, क्रमांक १५३९; हीरालाल सूची, क्रमांक ७९।**

(आ) गुप्त सम्राट बुधगुप्त के शासन काल का गुप्त सम्वत् १६५ का स्तम्भ-लेख जिममें महाराज मातृविष्णु तथा उसके छोटे भाई धन्यविष्णु द्वारा भगवान विष्णु के 'ध्वज-स्तम्भ' के स्थापना का उल्लेख है। **फ्लीट--क० इ० इ० भाग ३, पृ० ८८-९०; ज० ए० सो० ब० भाग ७, पृ० ६३३; वही, भाग ३०, पृ० १७; वही, भाग ३१, पृ० १२७; क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ८२; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२८७; हीरालाल सूची, क्रमांक ८०।**

(इ) गुप्त सम्राट भानुगुप्त का गुप्त सम्वत् १९१ का स्तम्भ-लेख, जिसमें गोपराज के युद्ध में मारे जाने का तथा उसकी पत्नी द्वारा सती होने का उल्लेख है। **फ्लीट--क० इ० इ० भाग ३, पृ० ९१-९३; क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ८९; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२९०; हीरालाल सूची, क्रमांक ८३।**

(ई) लगभग ५वीं शताब्दी ईसवी का वराह-मूर्ति लेख, जिसमें महेशदत्त तथा वराहदत्त के नाम उत्कीर्ण हैं। **क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ९७; हीरालाल सूची, क्रमांक ८२।**

६५८. घनिया (जबलपुर)

गुप्त-लिपि में उत्कीर्ण एक खण्डित शिलालेख। **हीरालाल सूची, क्रमांक ७३।**

६५९. तुमेन (गुना)

कुमारगुप्त प्रथम के शासन काल का गुप्त सम्वत् ११६ का शिलालेख, जिसमें तुम्बवन के शासक घटोत्कचगुप्त का उल्लेख है। **गर्दे—इ० ए० भाग ४९, पृ० ११४; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट भाग १८, खण्ड १, पृ० २१; ए० इ० भाग २६, पृ० ११५; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२६९।**

६६०. धरमपुरी (सिहोर)
शिलाश्रय में चार पंक्तियों का गुप्त कालीन अभिलेख। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ६०।

६६१. पढ़ावली (मोरेना)
(अ) गुप्त-लिपि में अस्पष्ट स्मारक-स्तम्भ लेख। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ३३।
(आ) गुप्त-लिपि में उत्कीर्ण स्तम्भ-लेख। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ०३३।

६६२. पवाया (ग्वालियर)
(अ) गुप्त-लिपि में उत्कीर्ण ईंट पर लेख, जिसमें गंगादत्त के पुत्र सोमदत्त का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९७, क्रमांक २।
(आ) गुप्त-लिपि में उत्कीर्ण मूर्ति-लेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७९, क्रमांक ३१-३२।

६६३. बड़ोह (विदिशा)
गुप्त-लिपि में खण्डित शिलालेख जिसमें महाराज जयत्सेन का उल्लेख है। ए० इ० भाग २६, पृ० ११७, पाद-टिप्पणी २; क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ७४; प्रो० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १३, पृ० २२।

६६४. बिहार (राजगढ़)
मालव सम्वत् ४७४ का नरवर्मन् के शासन काल का अभिलेख। प्रो० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग २०, पृ० ११०, ए० इ० भाग २६, पृ० १३०।

६६५. बेसनगर (विदिशा)
बौद्ध-स्तूप की वेदिका के उष्णीष-प्रस्तर पर उत्कीर्ण गुप्त-लिपि में अभिलेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८४, क्रमांक ११९ तथा सम्वत् १९७४, क्रमांक ७।

६६६. मन्दसौर (मन्दसौर)
(अ) मालव सम्वत् ४६१ का खण्डित प्रस्तर-लेख, जिसमें जयवर्मन् के पौत्र, सिंहवर्मन् के पुत्र नरवर्मन् और दशपुर नगर का उल्लेख है। सम्भवत: नरवर्मन् चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के अधीन सामन्त था। प्रो० रि० आ० स० इ० वे० स० १९१२-१३, पृ० ५४; इ० ए० भाग ४२, पृ० १६१, १९९, २१७; ए० इ० भाग १२, पृ० ३२०; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९२२-२३, पृ० १८७; ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७०, क्रमांक १३; भण्डारकर सूची, क्रमांक ३।
(आ) नरवर्मन् के शासन काल का वि० सं० ४७६ का शिलालेख। ए० इ० भाग २६, पृ० १३०; ज० बि० ओ० रि० सो० भाग २९, पृ० १२७।
(इ) मालव सम्वत् ४९३ का बन्धुवर्मन् का शिलालेख जिसमें कुमारगुप्त के शासन काल में लाट के बुनकरों द्वारा दशपुर में आकर सूर्य मन्दिर निर्माण करने का उल्लेख है। ज० ब० ब्रा० र० ए० सो०, भाग १६, पृ० ३८२; वही, भाग १७, खण्ड २, पृ० ९४; इ० ए० भाग १५, पृ० १९६ तथा भाग १८, पृ० २२७; फ्लीट : क० इ० इ० भाग ३, 'गुप्ता इन्सक्रिप्सन्स', पृ० ८१, चित्र क्रमांक ११; इ० क० भाग ५ (१९३८-३९), पृ० ३३; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६।

(ई) मालव सम्वत् ५२४ का प्रस्तर-लेख जिसमें चन्द्रगुप्त द्वितीय, उसके पुत्र गोविन्दगुप्त तथा स्थानीय शासक प्रभाकर का उल्लेख है। **गर्दे आ० स० इ०, वार्षिक रिपोर्ट १९२२-२३, पृ० १८७; ए० इ० भाग २७ (१९४७) (१), पृ० १२-१८; ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७९, क्रमांक २७; भण्डारकर सूची, क्रमांक ७।**

(उ) महाराज गौरी का खण्डित शिलालेख।
चौबे—'दशपुर जनपद संस्कृति' (१९६२) पृ० १६; सरकार दि० च०—ए० इ० भाग ३०, खण्ड ४; मिराशी—इ० हि० क्वा० भाग ३३, पृ० ३१४।

६६७. **विठ्ठलपुर (मन्दसौर)**
गुप्त-लिपि में लेख, जिसमें यात्री का उल्लेख है। **प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १९, पृ० ९७।**

६६८. **विदिशा (विदिशा)**

(अ) तीन तीर्थंकर प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लगभग ४थी शताब्दी ईसवी के ब्राह्मी लिपि के लेख, जिनमें महाराजाधिराज रामगुप्त के शासन काल में प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा का उल्लेख है। रामगुप्त गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय का भाई था। **ज० ओ० इ० भाग १८, अंक ३, पृ० २४७-५२; २५२-५३; २५४; म० पु० पृ० १४।**

(आ) गुप्त-लिपि में उत्कीर्ण शिलालेख, जिसमें किसी तालाब का वर्णन है, जो अनेक वृक्षराजि से सुशोभित था। **ग्वा० पु० रि० सम्वत् २०००, क्रमांक १।**

६६९. **सुपिया (रीवा)**
गुप्त सम्राट स्कन्दगुप्त के शासन काल का गुप्त सम्वत् १४१ का स्मारक-स्तम्भ लेख। **इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ५७; ए० इ० भाग ३३, पृ० ३०६।**

६७०. **सेसई (शिवपुरी)**

(अ) गुप्त-लिपि में उत्कीर्ण स्मारक-स्तम्भ लेख, जिसमें कुछ ब्राह्मण युवकों का किसी युद्ध में मारे जाने का तथा उनकी माता द्वारा दुःख में जल मरने का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८६, क्रमांक ३७।**

(आ) लगभग ६वीं शताब्दी ईसवी का स्मारक-स्तम्भ लेख। **ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० २६, ६३।**

६७१. **सांची (रायसेन)**

(अ) गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय के काल का गुप्त संवत् ९३ का शिलालेख, जिसमें आम्रकार्दव नामक अधिकारी द्वारा काकनादबोट (अर्थात साँची) के महाविहार के आर्यसंघ को दो दान देने का उल्लेख है। **प्रिंसेप—ज० ए० सो० ब० भाग ३, पृ० ४८८ तथा भाग ६, पृ० ४५१; फ्लीट - क० इ० इ० भाग ३, पृ० २९-३४; म० सा० पृ० ३८३-८४; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२६२।**

(आ) गुप्त सम्वत् १३१ का शिलालेख, जिसमें काकनादबोट के महाविहार के आर्यसंघ को दान देने का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ५९; प्रिन्सेप—**

ज० ए० सो० ब० भाग ६, पृ० ४५१; फ्लीट—क० इ० इ० भाग ३, पृ० २६०; म० सा० पृ० ३८९-९०; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२७४।

(इ) लगभग ५वीं शताब्दी ईसवी का स्तम्भ-लेख, जिसमें विहारस्वामिन् रुद्र का उल्लेख है। म० सा० पृ० ३९१; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८६८।

(ई) लगभग ६वीं शताब्दी ईसवी का शिलालेख। म० सा० पृ० ३९२।

(उ) लगभग ६वीं शताब्दी ईसवी का मूर्ति-लेख। म० सा० पृ० ३९२।

(ऊ) लगभग ६वीं शताब्दी ईसवी का बुद्ध-मूर्ति लेख। म० सा० पृ० ३९४।

(ए) मठ क्रमांक ४३ से प्राप्त लगभग ७वीं शताब्दी ईसवी का खण्डित शिलालेख। म० सा० पृ० ३९४-९६।

(ऐ) स्तूप क्रमांक १ के आंगन में स्थित स्तम्भ-लेख। म० सा० पृ० ३९१।

६७२. हासलपुर (मोरेना)

(अ) लगभग ५वीं शताब्दी ईसवी का अभिलेख, जिसमें सामन्त महाराज नरवर्मन् का उल्लेख है। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग १६, खण्ड १, पृ० २०।

(आ) नागवर्मन् के शासन काल का गुप्त-लिपि में उत्कीर्ण स्तम्भ-लेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७३, क्रमांक २१।

ई—वाकाटक शासकों के अभिलेख

६७३. इन्दौर (इन्दौर)

प्रवरसेन द्वितीय के शासन काल के २३वें वर्ष का ताम्रपत्र। बसु एस० के०—ए० इ० भाग २४, पृ० ५२-५६; वा० रा० इ० अ० पृ० १७४-७९।

६७४. गंज

पृथ्वीषेण तथा उसके सामन्त व्याघ्रदेव का शिलालेख जिसमें दान देने का उल्लेख है। बैनर्जी—प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९१८-१९, पृ० ४५; ए० इ० भाग १७, पृ० १३; ज० आ० हि० रि० सो० भाग १ (१९२६-२७), पृ० २२८-३३; वा० रा० इ० अ०, पृ० २४०-४१; भण्डारकर सूची, क्रमांक १७१०।

६७५. तिरोड़ी (बालाघाट)

प्रवरसेन द्वितीय के शासन काल के २३वें वर्ष का ताम्रपत्र, जिसमें बेनाकट अपरपट्ट में कोसम्बखण्ड नामक ग्राम को दान में देने का उल्लेख है। मिराशी—ए० इ० भाग २२, पृ० १६७-७६; वा० रा० इ० अ० पृ० १८५-९०।

६७६. दुर्ग (दुर्ग)

पद्मपुर के प्रचलित सम्भवतः नरेन्द्रसेन का अपूर्ण ताम्रपत्र। मिराशी—ए० इ० भाग २२, पृ० २०७; वा० रा० इ० अ०, पृ० २२०-२३।

६७७. दुडिया (छिन्दवाड़ा)

प्रवरपुर से प्रचलित प्रवरसेन द्वितीय के शासन काल के २३वें वर्ष का ताम्रपत्र, जिसमें चन्द्रपुर संगमिका (चन्द्रभागा और सरस्वती नदियों के संगम) पर स्थित

दर्भमलक ग्राम तथा हिरण्यपुर 'भाग' में से, जो आरम्भी विभाग में स्थित था, कर्मकार नामक ग्राम को दान में देने का उल्लेख है। **कीलहार्न--ए० इ० भाग ३, पृ० २६०; वा० रा० इ० अ०, पृ० १८०-८४; भण्डारकर सूची, क्रमांक १७०७; हीरालाल सूची, क्रमांक १६८।**

६७८. **नचने-की-तलाई**

पृथ्वीषेण तथा उसका सामन्त व्याघ्रदेव का शिलालेख। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ९७-९८; फ्लीट--क० इ० इ० भाग ३, पृ० २३३; वा० रा० इ० अ० पृ० २३६-३९; भण्डारकर सूची, क्रमांक १७०९।**

६७९. **पण्डुर्ना (छिन्दवाड़ा)**

प्रवरसेन द्वितीय के शासन काल के २९वें वर्ष का ताम्रपत्र। **वा० रा० इ० अ० पृ० २०४-११।**

६८०. **पट्टण (बैतूल)**

प्रवरपुर से प्रचलित प्रवरसेन द्वितीय के शासन काल के २७वें वर्ष का ताम्रपत्र, जिसमें अश्वत्थखेटक नामक ग्राम में से, महापुरुष विष्णु की पादुका के देवालय में आयोजित सत्र के लिए भूमि दान देने का उल्लेख है। **मिराशी—ए० इ० भाग २३, पृ० ८१; वा० रा० इ० अ०, पृ० १९७-२०३।**

६८१. **बालाघाट (बालाघाट)**

(अ) वेम्बार से प्रचलित पृथ्वीषेण द्वितीय का अपूर्ण ताम्रपत्र, जिसमें वाकाटक वंश को अवनत दशा से उत्कर्षपूर्ण स्थिति में लाने का उल्लेख किया गया है। **कीलहार्न— ए० इ० भाग ९, पृ० २७०; वा० रा० इ० अ० पृ० २२४-२७; भण्डारकर सूची, क्रमांक १७०८; हीरालाल सूची, क्रमांक २६।**

(आ) प्रवरसेन द्वितीय का ताम्रपत्र जिसमें ग्रामदान देने का उल्लेख है। **ज० बि० ओ० रि० सो० भाग १४, पृ० ४७२; मिराशी– ना० यु० ज० भाग २ (१९३६), पृ० ५०; वा० रा० इ० अ० पृ० २१२-१५।**

६८२. **सिवनी (सिवनी)**

प्रवरसेन द्वितीय के शासन काल के १८वें वर्ष का ताम्रपत्र, जिसमें वेनाकट कर्पर भाग में से करंजविरक भाग के ब्रह्मपुरक ग्राम को दान में देने का उल्लेख है। **प्रिन्सेप—ज० ए० सो० ब० भाग ५, पृ० ७२६; मिराशी— ना० यु० ज० भाग १ (१९३५), पृ० ३; वा० रा० इ० अ०, पृ० १६२-६६; भण्डारकर सूची, क्रमांक १७०५; हीरालाल सूची, क्रमांक १२६।**

उ—हूण शासकों के अभिलेख

६८३. **एरण (सागर)**

विशालकाय वराह-मूर्ति पर उत्कीर्ण हूण शासक तोरमाण के शासन काल के प्रथम वर्ष का अभिलेख, जिसमें एक मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। **फ्लीट—क० इ० इ०**

भाग ३, पृ० १५८; ज० ए० सो० ब० भाग ७, पृ० ६३१; वही, भाग ३०, पृ० २०; हीरालाल सूची, क्रमांक ८१; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८७७।

६८४. ग्वालियर (दुर्ग) (ग्वालियर)

हूण शासक मिहिरकुल के १५वें वर्ष का शिलालेख जिसमें गोप-पर्वत पर सूर्य-मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। मित्रा—ज० ए० सो० ब० भाग ३०, पृ० २६७ तथा भाग ३१, खण्ड १, क्रमांक १; फ्लीट—क० इ० इ० भाग ३, पृ० १६२; ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८६, क्रमांक ४३; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८६८ तथा २१०९।

ऊ—दशपुर के औलिकरवंशी शासकों के अभिलेख

६८५. मन्दसौर (मन्दसौर)

मालव सं० ५८९ का शिलालेख, जिसमें औलिकर वंश के महाराजाधिराज परमेश्वर यशोधर्मन् विष्णुवर्धन् का उल्लेख है। फ्लीट—इ० ए० भाग १५, पृ० २२४ तथा क० इ० इ० भाग ३, पृ० १५०; कीलहार्न—इ० ए० भाग १८, पृ० २२० तथा भाग २०, पृ० १८८; भण्डारकर—ज० ब० ब्रा० र० ए० सो० भाग २०, पृ० ३९२; हार्नले—ज० ए० सो० ब० भाग ५८ (१) पृ० ९६; ज० र० ए० सो० १९०३, पृ० ५५०; ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८६, क्रमांक ८१; भण्डारकर सूची, क्रमांक ९।

६८६. सोंधनी (मन्दसौर)

(अ) यशोधर्मन् का स्तम्भ-लेख जिसमें उसकी विजयों का वर्णन तथा हूण शासक मिहिरकुल द्वारा उसके पादपद्म अर्चित करने का उल्लेख है। फ्लीट—इ० ए० भाग १५, पृ० २५६; फ्लीट—क० इ० इ० भाग ३, पृ० १४२; ज० ब० ब्रा० र० ए० सो० भाग २२, पृ० ९६; इ० ए० भाग १८, पृ० २१९ तथा भाग २०, पृ० १८८; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९२२-२३, पृ० १८५ तथा १८७; ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७९, क्रमांक २८; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८७०।

(आ) ऊपर के अभिलेख युक्त एक दूसरा स्तम्भ जो खण्डित है। इ० ए० भाग १५, पृ० २५८; फ्लीट—क० इ० इ० भाग ३, पृ० १४९; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, क्रमांक २९।

(इ) यशोधर्मन् के खम्भे पर एक पंक्ति का गुप्त-लिपि में उत्कीर्ण लेख जिसमें एक दान देने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७१, क्रमांक ३०।

ए—परिव्राजक राजवंश के अभिलेख

६८७. खोह (पन्ना)

(अ) परिव्राजक शासक महाराज हस्तिन् का गुप्त सम्वत् १५६ का ताम्रपत्र। थामस तथा विल्सन—'प्रिंसेप्स एसेज,' भाग १, पृ० २५१; हाल—ज० ए० सो० ब० भाग ३०, पृ० ६; क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ११, क्रमांक १; फ्लीट—क० इ० इ० भाग ३, पृ० ९३-१००; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२८२।

(आ) महाराज हस्तिन् का गुप्त सम्वत् १६३ का ताम्रपत्र। फ्लीट—क० इ० इ० भाग ३, पृ० १०२; थामस तथा बिल्सन—'प्रिन्सेप्स एसेज', भाग १, पृ० २५१; ज० ए० सो० ब० भाग ३०, पृ० १०; क० आ० स० इ० रि० भाग ६, पृ० ११; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२८५।

(इ) महाराज संक्षोभ का गुप्त सम्वत् २०९ का ताम्रपत्र। क० आ० स० इ० रि० भाग ६, पृ० १५, क्रमांक ७; फ्लीट—क० इ० इ० भाग ३, पृ० ११२-१७; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२९८।

६८८. जबलपुर (जबलपुर)

परिव्राजक शासक महाराज हस्तिन् का गुप्त सम्वत् १७० का ताम्रपत्र। पाण्डेय रा० ब०—ए० इ० भाग २८ (६), १९५०, पृ० २६४-६७।

६८९. बैतूल (बैतूल)

परिव्राजक महाराज संक्षोभ का गुप्त सम्वत् १९९ का ताम्रपत्र, जिसमें त्रिपुरी प्रान्त में स्थित प्रस्तरवाटक तथा द्वारवाटिका ग्रामों के कुछ भाग को एक ब्राह्मण को दान देने का उल्लेख है। हीरालाल—ए० इ० भाग ८, पृ० २८४; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२९२; हीरालाल सूची, क्रमांक १६०।

६९०. भूमरा (पन्ना)

(अ) परिव्राजक महाराज हस्तिन् तथा उच्चकल्प महाराज शर्वनाथ का स्तम्भ-लेख। क० आ० स० इ० रि०, भाग ९, पृ० ८, १६, चित्र ४; फ्लीट—क० इ० इ० भाग ३, पृ० १११; भण्डारकर सूची, क्रमांक १६६१।

(आ) गुप्त कालीन स्तम्भ-लेख। गांगुली डी० सी०—इ० हि० क्वा० भाग २१, पृ० १३७।

६९१. मझगवाँ (जबलपुर)

परिव्राजक शासक महाराज हस्तिन् का गुप्त सम्वत् १९१ का ताम्रपत्र। फ्लीट—क० इ० इ० भाग ३, पृ० १०६-१०९; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९२२-२३, पृ० १७१; क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ७, १३; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२९१।

ऐ—उच्चकल्प के शासकों के अभिलेख

६९२. कारीतलाई (जबलपुर)

उच्चकल्प शासक महाराज जयनाथ का गुप्त सम्वत् १७४ का ताम्रपत्र जिसमें छन्दापल्लिका नामक ग्राम को दान में देने का उल्लेख है। फ्लीट—क० इ० इ० भाग ३, पृ० ११७-२०; क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० १२; भण्डारकर सूची, क्रमांक ११९४; हीरालाल सूची, क्रमांक ३२।

६९३ खोह (पन्ना)

(अ) उच्चकल्प शासक महाराज जयनाथ का गुप्त सम्वत् १७७ का ताम्रपत्र। क० आ०

स० इ० रि० भाग ६, पृ० १३, क्रमांक ४; फ्लीट—क० इ० इ० भाग ३, पृ० १२१-२५, भण्डारकर सूची, क्रमांक ११६५।

(आ) उच्चकल्प शासक महराज शर्वनाथ का गुप्त संवत् १९३ का ताम्रपत्र। फ्लीट—क० इ० इ० भाग ३, पृ० १२५; भण्डारकर सूची, क्रमांक ११९७।

(इ) उच्चकल्प शासक महाराज शर्वनाथ का गप्त सम्वत् १९७ का ताम्रपत्र। क० आ० स० इ० रि० भाग ६, पृ० १४, क्रमांक ६; फ्लीट—क० इ० इ० भाग ३, पृ० १३२; भण्डारकर सूची, क्रमांक ११९८।

(ई) महाराज शर्वनाथ का गुप्त सम्वत् २१४ का ताम्रपत्र। क० आ० स० इ० रि०, भाग ६, पृ० १४, १६, क्रमांक ६, ८; फ्लीट—क० इ० इ० भाग ३, पृ० १३५; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२०१।

(उ) उच्चकल्प शासक महाराज शर्वनाथ का ताम्रपत्र। फ्लीट—क० इ० इ० भाग ३, पृ० १२९; क० आ० स० इ० रि० भाग ६, पृ० १५, क्रमांक ८; भण्डारकर सूची, क्रमांक १७०२।

६६४. सोहावल

उच्चकल्प शासक महाराज शर्वनाथ का कलचुरि सम्वत् १९१ का ताम्रपत्र। ओझा जी० एस०—'एनुअल रिपोर्ट, राजपूताना म्यूजियम,' अजमेर, १९२३-२४, पृ० २; ए० इ० भाग १९, पृ० १२९; भण्डारकर सूची, क्रमांक ११९६।

ओ—राजर्षितुल्य कुल के शासकों के अभिलेख

६६५. आरंग (रायपुर)

सुवर्ण नदी से प्रचलित भीमसेन द्वितीय का गुप्त सम्वत् २८२ का ताम्रपत्र, जिसमें वटपल्लिका नामक ग्राम को दो ब्राह्मणों को दान देने का उल्लेख है। ए० इ० भाग ९, पृ० ३४४; भण्डारकर सूची, क्रमांक १३२९; हीरालाल सूची, क्रमांक १७०।

औ—नलवंशी शासकों के अभिलेख

६६६. राजिम (रायपुर)

नलवंशी विलासतुंग का शिलालेख, जिसमें विष्णु मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। मिराशी—ए० इ० भाग २६, पृ० ४९-५८।

क—शरभपुरीय शासकों के अभिलेख

६६७. आरंग (रायपुर)

(अ) शरभपुर से प्रचलित महाजयराज के शासन काल के ५वें वर्ष का ताम्रपत्र, जिसमें पूर्वराष्ट्र में स्थित पम्वा नामक ग्राम दान करने का उल्लेख है। क० इ० इ० भाग ३, पृ० १९१-९५; क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ५५; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८७८; हीरालाल सूची, क्रमांक १७५।

(आ) शरभपुर से प्रचलित महासुदेवराज के शासन काल के ८वें वर्ष का ताम्रपत्र, जिसमें तृसद्धभूक्ति में स्थित शिवलिंगक नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख है। **पाण्डेय लो० प्र०—ए० इ० भाग २३, पृ० १८; हीरालाल सूची, क्रमांक १७७-क।**

६९८. **कुरुद (रायपुर)**
शरभपुरीय शासक नरेन्द्र के शासन काल के २४वें वर्ष का ताम्रपत्र, जिसमें अपने पिता के द्वारा दिये गये दान की सम्पुष्टि है। **इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ५७; ए० इ० भाग ३१ पृ० २६३-२६६, २६७।**

६९९. **कौआताल**
महासुदेवराज के शासन काल के ७वें वर्ष का ताम्रपत्र, जो श्रीपुर से प्रचलित किया गया था। **ए० इ० भाग ३२, पृ० ३१४-१५।**

७००. **खरियार (रायपुर)**
शरभपुर से प्रचलित महासुदेवराज के शासनकाल के दूसरे वर्ष का ताम्रपत्र, जिसमें क्षितिमण्डहार में स्थित तथा शाम्बिलक के समीप नवण्णक नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख है। **स्टेन कोनो—ए० इ० भाग ९, पृ० १७०-७२; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८७९; हीरालाल सूची, क्रमांक १७७।**

७०१. **ठाकुरदिया**
श्रीपुर से प्रचलित महाप्रवरराज के शासन काल के तीसरे वर्ष का ताम्रपत्र, जिसमें तुण्डराष्ट्र में स्थित आषाढक नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख है। **मिराशी—ए० इ० भाग २२, पृ० १५-२३; पाण्डेय लो० प्र०—ज० आ० हि० रि० सो० १९३८-३९, पृ० २९-३२।**

७०२. **पिपरदुला (रायगढ़)**
शरभपुर से प्रचलित महाराज शरभ के पुत्र महाराजा नरेन्द्र के शासन काल के तीसरे वर्ष का ताम्रपत्र, जिसमें राहुदेव की प्रार्थना पर नन्दपुर भोग में शर्करापद्र नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख है। **सरकार दि० च०—इ० हि० क्वा० भाग १९, पृ० १३८-४६; चतुर्वेदी—वही, पृ० ३५८।**

७०३. **मलगा (बिलासपुर)**
इन्द्रराज का ताम्रपत्र, जो उसके शासन काल के ११वें वर्ष में प्रचलित किया गया था। **इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ५६।**

७०४. **मल्लार (बिलासपुर)**

(अ) महाजयराज के शासन काल के ५वें वर्ष का ताम्रपत्र, जिसमें एक ग्राम के दान करने का उल्लेख है। **इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ५७; ए० इ० भाग ३३, पृ० १५५।**

(आ) महाजयराज के शासन काल के ९वें वर्ष का ताम्रपत्र, जो उसके अधिकारी वत्स

द्वारा प्रचलित किया गया था, तथा जिसमें एक ग्राम के दान देने का उल्लेख है। **इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ६०; ए० इ० भाग ३४, पृ० २८।**

(इ) प्रवरराज के शासन काल के तीसरे वर्ष का ताम्रपत्र जो श्रीपुर से प्रचलित किया गया था तथा जिसमें शंखचक्रा भोग में स्थित मित्रग्राम के दान में देने का उल्लेख है। **इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ६०; ए० इ० भाग ३४, पृ० ५१।**

(ई) प्रसन्नपुर से प्रचलित व्याघ्रराज का ताम्रपत्र, जिसमें एक ग्राम के दान करने का उल्लख है। **इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ६०; ए० इ० भाग ३४, पृ० ४५।**

७०५. **रायपुर (रायपुर)**

शरभपुर से प्रचलित महासुदेवराज के शासन काल के १०वें वर्ष का ताम्रपत्र जिसमें पूर्वराष्ट्र में स्थित श्रीसाहिका नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ५५; फ्लीट— क० इ० इ० भाग ३, पृ० १९६; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८८०; हीरालाल सूची, क्रमांक १७६।**

७०६. **सारंगढ़ (रायगढ़)**

(अ) श्रीपुर से प्रचलित महासुदेवराज के शासन काल के ७वें वर्ष का ताम्रपत्र, जिसमें धकरीभोग में सुणिका नामक ग्राम-दान करने का उल्लेख है। **पाण्डेय लो० प्र०— इ० हि० क्वा०, भाग २१, पृ० २९४-९५।**

(आ) शरभपुर से प्रचलित महासुदेवराज का ताम्रपत्र, जिसमें तुण्डरक भुक्ति में स्थित चुल्लण्डर्क नामक ग्रामदान करने का उल्लेख है। **मित्रा रा० ला०—ज० ए० सो० ब० भाग ३५, पृ० १९५; हीरालाल—ए० इ० भाग ९, पृ० २८३; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८८१; हीरालाल सूची, क्र० ३१०।**

७०७. **सिरपुर (रायपुर)**

महासुदेवराज का खण्डित ताम्रपत्र। **ए० इ० भाग ३१, पृ० १०३-१०८; हीरालाल सूची, क्रमांक १७६।**

ख—वलभी के मैत्रकवंशी शासकों के अभिलेख

७०८. **नोगवा (रतलाम)**

(अ) मैत्रक शासक ध्रुवसेन द्वितीय बालादित्य का गुप्त सम्वत् ३२० का ताम्रपत्र, जो वलभी से प्रचलित किया गया था तथा जिसमें एक सौ 'भक्ती' भूमि को, जो मालवक भुक्ति में थी, दान देने का उल्लेख है। **हुल्त्ज—ए० इ० भाग १८, पृ० १९०; भण्डारकर सूची, क्रमांक १३४६।**

(आ) मैत्रक शासक ध्रुवसेन द्वितीय बालादित्य का गुप्त सम्वत् ३२१ का ताम्रपत्र, जो वन्दितपल्ली के विजित शिविर से प्रचलित किया गया था तथा जिसमें मालवक भुक्ति में स्थित एक सौ 'भक्ती' भूमि दान देने का उल्लेख है। **हुल्त्ज—आ० स० इ०**

वार्षिक रिपोर्ट १९०२-३, खण्ड २, पृ० २३५; ए० इ० भाग ८, पृ० १६६; भण्ड-राकर सूची, क्रमांक १३४७।

ग—मौखरी शासकों के अभिलेख

७०९. असीरगढ़ (पूर्व-निमाड़)

मौखरी शासक शर्ववर्मन् का ताम्र-मुहर लेख। प्रिन्सेप—ज० ए० सो० ब० भाग ५, पृ० ४८२; विल्सन—ज० र० ए० सो० (नयी) भाग ३, पृ० ३७७; फ्लीट—क० इ० इ० भाग ३, पृ० २१९; भण्डारकर सूची, क्रमांक १६०२; हीरालाल सूची, क्रमांक १४१।

घ—हर्ष-सम्वत् के अभिलेख

७१०. खजुराहो (छतरपुर)

हर्ष-सम्वत् २१८ का मूर्ति-लेख। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, चित्र ६-१; वही, भाग २१, चित्र १६-अ; कीलहार्न—इ० ए०, भाग २६, पृ० ३१; भण्डारकर सूची, क्रमांक १४०८।

ङ—दक्षिण कोसल के पाण्डववंशी शासकों के अभिलेख

७११. अडभार (बिलासपुर)

महानन्नराज का ताम्रपत्र जिसमें एक ग्रामदान देने का उल्लेख है। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ३९; ए० इ० भाग ३१, पृ० २१९।

७१२. खरोद (बिलासपुर)

लखनेश्वर मन्दिर का खण्डित तथा अस्पष्ट शिलालेख जिसमें पाण्डववंशी इन्द्रबल तथा उसके पुत्र ईशानदेव का उल्लेख है। भण्डारकर—प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९०३-४, पृ० ५४; क० प्र० रि० १९०४, पृ० ५४; भण्डारकर सूची, क्रमांक १६५१; हीरालाल सूची, क्रमांक २०८।

७१३. बलोदा (रायपुर)

तीवरदेव के शासन काल के ९वें वर्ष का ताम्रपत्र। ए० इ० भाग ७, पृ० १०६; हीरालाल सूची, क्रमांक १७१।

७१४. बारदुला (रायगढ़)

महाशिवगुप्त के शासन काल के ९वें वर्ष का ताम्रपत्र, जिसमें केशरीनन्दनपुर विषय में वटपद्रक नामक ग्राम दान देने का उल्लेख है। देसाई पी० बी०—ए० ई० भाग २७, पृ० २८७-९१।

७१५. बोंडा (बिलासपुर)

(अ) महाशिव तीवरदेव के शासन काल के ५वें वर्ष का ताम्रपत्र, जिनमें दो ग्रामों के दान देने का उल्लेख है। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ५७।

(आ) महाशिवगुप्त के शासन काल के २२वें वर्ष का ताम्रपत्र, जिसमें एक ग्राम दान देने का उल्लेख है। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ५७।

७१६. **मल्लार (बिलासपुर)**

महाशिवगुप्त का ताम्रपत्र, जिसमें तरडंशक भोग में कैलाशपुर नामक ग्राम बौद्ध भिक्षुओं के 'विहारिका' मठ के लिए दान में देने का उल्लेख है। **मिराशी तथा पाण्डेय—ए० इ० भाग २३, पृ० ११३।**

७१७. **राजिम (रायपुर)**

श्रीपुर से प्रचलित तीवरदेव के शासन काल के ७वें वर्ष का ताम्रपत्र, जिसमें पेन्ठम भुक्ति में स्थित पिंपरीपद्रक नामक ग्रामदान करने का उल्लेख है। ए० रि० भाग ५, पृ० ४९९; क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० १७; फ्लीट—क० इ० इ० भाग ३, पृ० २९१; कीलहार्न—इ० ए० भाग १८, पृ० २९०; मिराशी—ना० यु० ज० भाग २ (१९३६) पृ० ४८; भण्डारकर सूची, क्रमांक १६५२; हीरालाल सूची, क्रमांक १७२।

७१८. **लोधिया (रायगढ़)**

महाशिवगुप्त के शासन काल के ५७वें वर्ष का ताम्रपत्र, जिसमें ओगि-भोग में वैद्द-पद्रक नामक ग्राम के दान देने का उल्लेख है। **पाण्डेय लो० प्र०—ए० इ० भाग २८, पृ० ३१९-२५।**

७१९. **सिरपुर (रायपुर)**

(अ) महाशिवगुप्त का लक्ष्मण-मन्दिर शिलालेख, जिसमें महाशिवगुप्त की माता वासटा के द्वारा हरि (विष्णु) के मन्दिर को निर्माण करने का उल्लेख तथा मन्दिर के लिए ६ ग्रामों के दान देने का उल्लेख है। **हीरालाल—ए० इ० भाग ११, पृ० १९०; भण्डारकर सूची, क्रमांक १६५४; हीरालाल सूची, क्रमांक १७४।**

(आ) सुरंग नामक टीले पर प्राप्त अत्यन्त क्षतिग्रस्त शिलालेख जिसमें महाशिवगुप्त का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० २७; क० प्र० रि० १९०४, पृ० ४८; **हीरालाल सूची, क्रमांक १८६।**

(इ) नदी के घाट पर देवालय के द्वार के समीप संरक्षित महाशिवगुप्त के समय का शिलालेख। **हीरालाल सूची, क्रमांक १८७।**

(ई) उत्खनन में प्राप्त एक चौदह पंक्तियों का उत्कीर्ण लेख जिसमें आनन्दप्रभ नामक एक भिक्षु द्वारा महाशिवगुप्त के शासन काल में एक बौद्ध मठ बनवाने का उल्लेख है। राजा ने मठ में निवास करने वाले भिक्षुकों को भोजन आदि के लिए एक सत्र की व्यवस्था की थी। **शु० अ० ग्र० पृ० १८६-१८९; ए० इ० भाग ३१, पृ० १९७-१९८।**

(उ) गंधेश्वर मन्दिर का शिवगुप्त बालार्जुन के शासन काल का शिलालेख, जिसमें गंधर्वेश्वर देवालय के लिए माला इत्यादि देने का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० २५; कीलहार्न—इ० ए० भाग १८, पृ० १७६; भण्डारकर सूची, क्रमांक १६५५; हीरालाल सूची, क्रमांक १७३।

७१६/१. सेनकपाट (रायपुर)

सिरपुर के निकटवर्ती इस ग्राम से प्राप्त शिवगुप्त बालार्जुन का अभिलेख। ए० इ० भाग ३१, पृ० ३१-३६।

च—मेकल के पाण्डववंशी शासकों के अभिलेख

७२०. बह्मनी (रीवा)

भरतबल के राज्यकाल के दूसरे वर्ष का ताम्रपत्र। छाबड़ा बी० सी०—ए० इ० भाग २७, पृ० १३२-१४५।

छ—शैलवंशी शासकों के अभिलेख

७२१. राघोली (बालाघाट)

श्रीवर्धनपुर से प्रचलित शैलवंशी शासक जयवर्धन् द्वितीय के शासन काल के तीसरे वर्ष का ताम्रपत्र जिसमें जयवर्धन् द्वारा सूर्यदेव को कटेरक विषय में खड्डिका नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख है। इस लेख में शैलवंशी शासकों की वंशावली दी हुई है। हीरालाल—ए० इ० भाग ९, पृ० ४१; हीरालाल सूची, क्रमांक २७।

ज—राष्ट्रकूट शासकों के अभिलेख

७२२. इन्द्रगढ़ (मन्दसौर)

(अ) लगभग ८वीं शताब्दी ईसवी का शिलालेख, जिसमें राष्ट्रकूट नन्नराज का उल्लेख है। इ० आ० रि० १९५३-५४, पृ० १४।

(आ) राष्ट्रकूट नन्नप, गोविन्द तृतीय तथा इन्द्र तृतीय के तीन अभिलेख। इ० आ० रि० १९५४-५५, पृ० २८; ज० बि० ओ० रि० सो० भाग ४१, खण्ड ३, १९५५।

७२३. उण्डिकवाटिका (होशंगाबाद)

राष्ट्रकूट अभिमन्यु का ताम्रपत्र, जिसमें दक्षिण-शिव मन्दिर को ग्रामदान देने का उल्लेख है। ए० इ० भाग ८, पृ० १६३; इ० ए० भाग ३०, पृ० ५०९; ज० ब० ब्रा० र० ए० सो० भाग १६, पृ० ८८; भण्डारकर सूची, क्रमांक १६६९; हीरालाल सूची, क्रमांक १२९।

७२४. जूरा (रीवा)

लगभग ९६३-६४ ईसवी का कृष्ण तृतीय का कन्नड़ भाषा में शिलालेख। राव ल० ना०—ए० इ० भाग १९, पृ० २८९।

७२५. जेठवई (निमाड़)

एक राष्ट्रकूट सम्राज्ञी का शक सम्वत् ७०८ का ताम्रपत्र। ए० इ० भाग २२, पृ० ९८।

७२६. तिवरखेड़ (बैतूल)

राष्ट्रकूट नन्नराज द्वारा शक सम्वत् ५५३ में अचलपुर से प्रचलित ताम्रपत्र जिसमें तिवेरेखेटक तथा घुईखेटक नामक ग्रामों के दान देने का उल्लेख है। उसके दो अधिकारियों द्वारा सारसवाहला तथा दर्भवाहला नदियों के तट पर करंजमलय नामक क्षेत्र के दान का उल्लेख है। काल का उल्लेख तथा लिपि इत्यादि के असंगतियों के आधार पर यह ताम्रपत्र बनावटी माना जाता है। **हीरालाल—ए० इ० भाग ११, पृ० २७९; भण्डारकर सूची, क्रमांक १०८२; हीरालाल सूची, क्रमांक १६१।**

७२७. नीलकंठी (छिन्दवाड़ा)

(अ) खण्डित स्तम्भ-लेख जिसमें राष्ट्रकूट कृष्ण तृतीय का नाम पाया जाता है। **हीरालाल सूची, क्रमांक १६९; छिन्दवाड़ा गज़ेटियर (पुराना), पृ० २२२।**

(आ) खण्डित शिलालेख जिसमें राष्ट्रकूट कृष्ण का नाम आया है। यह ठीक तरह से नहीं पढ़ा जा सकता। **हीरालाल सूची, क्रमांक १६९; छिन्दवाड़ा गज़ेटियर (पुराना), पृ० २२३।**

७२८. पठारी (विदिशा)

वि० सं० ९१७ का प्रस्तर-स्तम्भ लेख, जिसमें राष्ट्रकूट परवल द्वारा गौरी (विष्णु या कृष्ण) के मन्दिर में गरुड-ध्वज के निर्माण का उल्लेख है। क० आ० स० इ० **रि० भाग १०, पृ० ७०; ज० ए० सो० ब० भाग १७(१), पृ० ३०५; कीलहार्न—ए० इ० भाग ९, पृ० २५२; भण्डारकर—इ० ए० भाग ४०, पृ० २३९; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग १८, पृ० ११६; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १८, पृ० २२; ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८०, क्रमांक ७; भण्डारकर सूची, क्रमांक २९।**

७२९. पिपरिया (दमोह)

वि० सं० ११९८ का राष्ट्रकूट शासक महामाण्डलिक राणक जयत्सिंह का स्तम्भ-लेख, जिसमें जयत्सिंह का हेमसिंह के साथ युद्ध होने का उल्लेख है। युद्ध का दृश्य स्तम्भ पर चित्रित किया गया है। **हीरालाल - 'दमोह दीपक', पृ० ११; हीरालाल सूची, क्रमांक ९८।**

७३०. बहुरीबन्द (जबलपुर)

राष्ट्रकूट महासामन्ताधिपति गोल्हणदेव का जैन-मूर्ति लेख, जिसमें त्रिपुरी के कल-चुरि शासक गयाकर्ण के शासन काल में शान्तिनाथ के जिनालय के निर्माण का उल्लेख है। क० आ० स० इ० **रि० भाग १०, पृ० ४०; क० प्र० रि० १९०३-४, पृ० ५४; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० ३०९; भण्डारकर सूची, क्रमांक १५८०; हीरालाल सूची, क्रमांक ४७।**

७३१. मुलताई (बैतूल)

नन्नराज युद्धासुर द्वारा प्रचलित शक सम्वत् ६३१ का ताम्रपत्र जिसमें गलोकुट्टे नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख है। **प्रिन्सेप—ज० ए० सो० ब० भाग ६, पृ० ८६९; फ्लीट—इ० ए० भाग १८, पृ० २३४; भण्डारकर सूची, क्रमांक १०८३; हीरालाल सूची, क्रमांक १६२।**

झ—गुर्जर-प्रतिहार शासकों के अभिलेख

७३२. ईश्वरमऊ (दमोह)

वि० सं० १३४४ का वाघदेव के शासन काल का शिलालेख। **हीरालाल सूची, क्रमांक ६६।**

७३३. कदवाहा (गुना)

(अ) शिवमन्दिर पर उत्कीर्ण शिलालेख जिसमें किसी राजा गोपाल के अतिरिक्त जयन्त-वर्मन् (जिसे जैत्रवर्मन् प्रतिहार भी लिखा है) का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९६, क्रमांक ३२।**

(आ) तिथिरहित शिलालेख जिसमें प्रतिहार रणपाल, वत्सराज, स्वर्णपाल, कीर्तिराज तथा उसके भाई उत्तम का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९६, क्रमांक ३१।**

(इ) लगभग ११वीं शताब्दी का शिलालेख जिसमें प्रतिहार वंश के महाराज हरिराज तथा गुरु धर्मशिव का उल्लेख है। **ए० इ० भाग ३७, पृ० ११७-१२५; ग्वा० पु० रि० वि० सं० १९९८-२०००, पृ० २३-२४।**

७३४. कुरैठा (शिवपुरी)

(अ) प्रतिहार मलयवर्मन् का वि० सं० १२७७ का ताम्रपत्र, जिसमें सूर्यग्रहण के अवसर पर कुदवठ (कुरैठा) ग्राम दान देने का उल्लेख है। इस लेख में प्रतिहार वंशावली दी हुई है। **भण्डारकर—प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९१५-१६, पृ० ५९; ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७२, क्रमांक ६४; भण्डारकर सूची, क्रमांक ४७५; ए० इ० भाग ३०, पृ० १४४।**

(आ) वि० सं० १३०४ का ताम्रपत्र जिसमें प्रतिहार मलयवर्मन् के भाई नरवर्मन् द्वारा वत्स नामक गौड़ ब्राह्मण को जुढ्हा नामक ग्राम दान देने का उल्लेख है। **भण्डारकर-प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९१५-१६, पृ० ५०; ए० इ०, भाग २६, पृ० २८०; वही, भाग ३०, पृ० १५०; ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७२, क्रमांक ६५; भण्डारकर सूची, क्रमांक ५४१।**

७३५. ग्वालियर (ग्वालियर)

(अ) वि० सं० ९३२ का शिलालेख, जिसमें कन्नौज के प्रतिहार रामदेव के पुत्र आदि-वराह (भोजदेव) का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३५६; ए०**

इ० भाग १, पृ० १५६; ग्वा० पु० रि० सम्वत् १६८४, क्रमांक २; भण्डारकर सूची, क्रमांक ३५ ।

(आ) वि० सं० ६३३ का शिलालेख, जिसमें प्रतिहार परमेश्वर भोजदेव के उल्लेख के अतिरिक्त रुद्रा, पूर्णाशा आदि नवदुर्गाओं को तथा वाइल्लभट्टस्वामिन् नामक विष्णु के मन्दिर को दान देने का उल्लेख है। इस शिलालेख में अनेक पद तथा पदाधिकारियों का उल्लेख है। **मित्रा—ज० ए० सो० ब० भाग ३१, पृ० ४०७; ए० इ० भाग १, पृ० १५६; ग्वा० पु० रि० सम्वत् १६८४, क्रमांक ३; भण्डारकर सूची, क्रमांक ३६ ।**

(इ) प्रतिहार रामदेव का तिथि रहित शिलालेख जिसमें विशाख (स्वामी कार्तिकेय) के मन्दिर तथा आनन्दपुर के वाइलभट्ट का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १६८०, क्रमांक ४३ तथा ४४ ।**

७३६. चन्देरी (गुना)

(अ) प्रतिहार वंश का शिलालेख, जिसमें हरिराज से लेकर जैत्रवर्मन् तक प्रतिहार वंशावली दी हुई है। कुछ स्मारकों के निर्माण का भी उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० सम्वत् २१०७। गाइड टू चन्देरी, पृ० ८; भण्डारकर सूची, क्रमांक २१०७।**

(आ) प्रतिहार वंश का शिलालेख जिसमें महाराज हरिराज से लेकर अभयपाल तक प्रतिहार राजाओं का वंश-वृक्ष दिया हुआ है। **ग्वा० पु० रि० सम्वत् १६६७, क्रमांक ३ ।**

७३७. पाटन (जबलपुर)

वि० सं० १३६१ का सती-प्रस्तर लेख, जिसमें प्रतिहार राजपुत्र वाघदेव का उल्लेख आया है। **हीरालाल—ए० इ० भाग २६, पृ० ११; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६५५; हीरालाल सूची, क्रमांक ७८ ।**

७३८. बह्मनी (दमोह)

वि० सं० १३६५ अथवा १३०८ का वाघदेव का सती-प्रस्तर लेख। **ए० इ० भाग १६, पृ० १०; प्रो० अ० इ० ओ० का०—४था सत्र, इलाहाबाद, भाग १; हीरालाल—'दमोह दीपक', पृ० ६५-६६; हीरालाल सूची, क्रमांक १०० ।**

७३९. बरतरा (जबलपुर)

वि० सं० १३५७ का वाघदेव के शासन काल का सती-प्रस्तर लेख। **हीरालाल सूची, क्रमांक ७८ ।**

७४०. रखेतरा (गुना)

वि० सं० ६६६ का चट्टान पर अंकित शिलालेख जिसमें विनायकपालदेव द्वारा जल सिंचाई के प्रबन्ध का उल्लेख है। विनायकपालदेव का अस्तित्व सन्देहपूर्ण है। वि० सं० १००० की दो अन्य तिथियों का भी उल्लेख है। **गर्दे—आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १६२४-२५, पृ० १६८; ग्वा० पु० रि० सम्वत्, १६८१, क्रमांक ३२; भण्डारकर सूची, क्रमांक २११० ।**

७४१. **रोण्ड (दमोह)**

वि० सं० १३५९ का वाघदेव के शासन काल का शिलालेख, जो सून नदी के तट पर प्राप्त हुआ था। **हीरालाल सूची, क्रमांक ११८।**

७४२. **सलैया (दमोह)**

वि० सं० १३६२ का महाराजपुत्र वाघदेव के शासन काल का सती-प्रस्तर लेख। **हीरालाल—ए० इ० भाग १६, पृ० ११; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६५६; हीरालाल सूची, क्रमांक १०१।**

७४३. **सागर-ताल (ग्वालियर)**

प्रतिहार मिहिरभोज का शिलालेख जिसमें नरकद्विष (विष्णु) के अन्तःपुर के निर्माण का उल्लेख है। **आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९०३-४, पृ० २८०; मजुमदार आर० सी०—ए० इ० भाग १८, पृ० १०७; भण्डारकर सूची, क्रमांक १६६३।**

७४४. **सिंगोरगढ़ (दमोह)**

वि० सं० १३६४ का प्रतिहार शासक राजसिंह का स्तम्भ-लेख, जिसमें स्थानीय दुर्ग को गर्जसिंह-दुर्ग के नाम से पुकारा गया है। तीन सती-प्रस्तर लेख भी यहाँ से उपलब्ध हुए हैं, जिनमें वि० सं० १३५७, १३६३ तथा १३६६ की तिथि पड़ी है तथा वाघदेव के शासन काल का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ४९-५०; हीरालाल—'दमोह दीपक', पृ० ११२; रसल—दमोह गज़ेटियर (पुराना), पृ० २०९; हीरालाल सूची, क्रमांक ९७।**

ञ—चन्देल शासकों के अभिलेख

७४५. **अजयगढ़ (पन्ना)**

(अ) वि० सं० १२०८ का मदनवर्मन् के शासन काल का शिलालेख। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ४९; भण्डारकर सूची, क्रमांक २८२।**

(आ) वि० सं० १२३७ का परमर्दिदेव के शासन काल का शिलालेख। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ४९-५०।**

(इ) वि० सं० १२४३ का परमर्दिदेव के शासन काल का शिलालेख। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ५०; भण्डारकर सूची, क्रमांक ४०८।**

(ई) वि० सं० १२६९ का चन्देल त्रैलोक्यवर्मदेव के शासन काल का शिलालेख। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ५०; भण्डारकर सूची, क्रमांक ४५९।**

(उ) वि० सं० १३१७ का वीरवर्मदेव के शासनकाल का शिलालेख जिसमें महाराज्ञी कल्याणदेवी द्वारा एक कूप निर्माण का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ५१; कीलहार्न—ए० इ० भाग १, पृ० ३२५-३०।**

(ऊ) वि० सं० १३२५ का वीरवर्मदेव के शासनकाल का शिलालेख, जिसमें अश्व-वैद्य ठक्कुर भोजक के पुत्र अभयदेव द्वारा भगवान के पूजन का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ५१।**

(ए) वि० सं० १३३१ का वीरवर्मदेव के शासनकाल का जैन-मूर्ति लेख, जिसमें मूल-संघ के आचार्यों द्वारा मूर्ति की स्थापना का उल्लेख है। च० जे० टा० परिशिष्ट—अ, क्रमांक ५४।

(ऐ) वि० सं० १३३५ का वीरवर्मदेव के शासनकाल का जैन-मूर्ति लेख जिसमें जयपुर-दुर्ग निवासी सोढल द्वारा मूर्ति की स्थापना का उल्लेख है। चक्रवर्ती—आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९३५-३६, पृ० ९१-९२; हीरालाल—'माधुरी', भाग ५, खण्ड २, क्रमांक २।

(ओ) वि० सं० १३३७ का वीरवर्मन् के शासनकाल का शिलालेख, जिसमें गणपति की मूर्ति स्थापना का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ५२; चक्रवर्ती—आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९३५-३६, पृ० ९१; हीरालाल—'माधुरी', भाग ५, खण्ड २, क्रमांक २; ए० इ० भाग ५, परिशिष्ट ३४; भण्डारकर सूची, क्रमांक ५९९।

(औ) वि० सं० १३४५ का भोजवर्मन् के शासनकाल का शिलालेख, जिसमें नान नामक एक अधिकारी द्वारा विष्णु की प्रतिमा स्थापना का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ५२; प्रिन्सेप—ज० ए० सो० ब० भाग ६, पृ० ८८२; कील-हार्न—ए० इ० भाग १, पृ० ३३२; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६२०।

(क) वि० सं० १३४६ का भोजवर्मन् के काल का एक अस्पष्ट शिलालेख। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १५३; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९३५-३६, पृ० ९३; ए० इ० भाग २०, पृ० १३५; माधुरी, भाग ५, खण्ड २, क्रमांक २।

(ख) किले की दीवाल पर उत्कीर्ण भोजवर्मन् के शासनकाल का वि० सं० १३४६ का शिलालेख। च० जे० टा० परिशिष्ट-ब, क्रमांक १८।

(ग) वि० सं० १३४९ का सती-प्रस्तर लेख। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ५३।

(घ) वि० सं० १३६८ का हम्मीरवर्मदेव के शासन काल का सती-प्रस्तर लेख। हीरा-लाल-ए० इ० भाग २०, पृ० १३४; माधुरी, भाग ५, खण्ड २, क्रमांक २।

(ङ) मन्दिर के द्वार-पक्ष पर उत्कीर्ण वि० सं० १३७१ का शिलालेख। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ५३।

(च) भोजवर्मन् के शासनकाल का एक तिथि रहित शिलालेख, जिसमें एक मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। कीलहार्न—ए० इ० भाग १, पृ० ३३०-३८; क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ४७, ५३, ८८; चक्रवर्ती – आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९३५-३६, पृ० ९३।

(छ) सुहदेव का तिथि-रहित शिलालेख। च० जे० टा० परिशिष्ट-ब, क्रमांक २२।

(ज) तिथि-रहित एक अन्य शिलालेख, जिसमें कई व्यक्तियों द्वारा चण्डिका की पूजा का उल्लेख है। वही, क्रमांक २३।

७४६. अहाड़ (टीकमगढ़)

(अ) वि० सं० ११२३ तथा १८६६ के बीच के अनेक जैन-मूर्ति लेख। **'अनेकान्त', भाग ९ तथा १०।**

(आ) वि० सं० १२३७ का परमर्दिदेव के शासन काल का जैन-मूर्ति लेख, जिसमें श्रेष्ठिन् गोल्हन द्वारा मूर्ति-स्थापना का उल्लेख है। **प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ६२४-२६; नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग १७, पृ० १५-१६।**

७४७ इश्वरमऊ (दमोह)

भोजवर्मदेव तथा उसके सामन्त वाघदेव का वि० सं० १३४४ का शिलालेख। **हीरालाल सूची, क्रमांक ६६।**

७४८ कुण्डेश्वर (टीकमगढ़)

वि० सं० १२०१ का नन्दी-मूर्ति लेख। **च० जे० टा० परिशिष्ट-ब, क्रमांक ४।**

७४९. खजुराहो (छतरपुर)

(अ) हर्षदेव के शासनकाल का तिथि रहित अस्पष्ट तथा खण्डित शिलालेख। **ए० इ० भाग १, पृ० १२१-२२।**

(आ) वि० सं० १०११ का धंग के शासन काल का शिलालेख, जिसमें यशोवर्मन् द्वारा एक मंदिर निर्माण का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ४२५-२६; वही, भाग २१, पृ० ६५-८४; ए० इ० भाग १, पृ० १२२-३५।**

(इ) वि० सं० १०११ का धंगदेव के शासन काल का जैन-मंदिर लेख, जिसमें पाहिल्ल द्वारा कई दानों का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ४३३; वही, भाग २१, पृ० ६७; ज० ए० सो० ब० भाग ३२, पृ० २७९; कीलहार्न—ए० इ० भाग १, पृ० १३६; भण्डारकर सूची, क्रमांक ९६।**

(ई) वि० सं० १०५८ का ग्रहपति कोकल्ल का शिलालेख, जिसमें शिव-मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ६६; कीलहार्न—ए० इ० भाग १, पृ० १४७-५२; भण्डारकर सूची, क्रमांक ९९।**

(उ) वि० सं० १०५९ का धंगदेव का शिलालेख, जिसे वि० सं० ११७३ में जयवर्मदेव द्वारा फिर से प्रचलित किया गया। इसमें एक शिव-मन्दिर निर्माण का उल्लेख है जिसमें दो शिव-लिंग थे। कुछ और यानों का भी उल्लेख किया गया है। **सदरलैण्ड—ज० ए० सो० ब० भाग ८, पृ० १५९; क० आ० स० इ० रि० भाग २१, चित्र १८; कीलहार्न—ए० इ० भाग १, पृ० १४०; भण्डारकर सूची, क्रमांक १००।**

(ऊ) मदनवर्मन् के शासन काल का वि० सं० १२०५ का जैन-मूर्ति लेख जिसमें ग्रहपति वंश के कुछ सदस्यों द्वारा मूर्ति-स्थापना का उल्लेख है। **कीलहार्न—ए० इ० भाग १, पृ० १५३।**

(ए) वि० सं० १२१२ का वीरनाथ-मूर्ति लेख। **क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ४४८।**

(ऐ) वि० सं० १२१५ का मदनवर्मन् के शासन काल का जैन-मूर्ति लेख जिसमें ग्रहपति साधु साल्हे द्वारा मूर्ति-स्थापना का उल्लेख है। **कीलहार्न—ए० इ० भाग १, पृ० १५३।**

७५०. गर्रा (छतरपुर)

वडवाड से प्रचलित वि० सं० १२६१ का त्रैलोक्यवर्मन् का ताम्रपत्र, जिसमें राउत सामन्त को ग्राम दान करने का उल्लेख है। **दीक्षित—ए० इ० भाग १६, पृ० २७२-७७; भण्डारकार सूची, क्रमांक ४४८।**

७५१. गुड़हा

वि० सं० १३४२ का वीरवर्मदेव के शासन काल का शिलालेख। **होर्नले—ए० इ० भाग ५, परिशिष्ट, पृ० ३५, क्रमांक २४२; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६०८।**

७५२. चरखारी

(अ) वि० सं० ११०८ का देववर्मदेव के शासन काल का ताम्रपत्र, जिसमें चन्द्रग्रहण के समय एक ब्राह्मण को ग्राम दान करने का उल्लेख है। **ए० इ० भाग २०, पृ० १२५-२८; भण्डारकर सूची, क्रमांक १९१०।**

(आ) वि० सं० १२३६ का परमर्दिदेव के शासन काल का ताम्रपत्र, जिसमें चार ब्राह्मणों को ग्राम दान करने का उल्लेख है। **हीरालाल—ए० इ० भाग २०, पृ० १२८-३१; भण्डारकर सूची, क्रमांक १९१३।**

(इ) विलासपुर से प्रचलित वि० सं० १३११ का वीरवर्मदेव का ताम्रपत्र, जिसमें सोन्धी के युद्ध में दभ्युहडवर्मन् के विरुद्ध विजयी होने के उपलक्ष में राउत अभि को उसकी वीरता प्रदर्शित करने के कारण ग्राम दान देने का उल्लेख है। **हीरालाल—ए० इ० भाग २०, पृ० १३२-३४; भण्डारकर सूची, क्रमांक १९१४।**

(ई) वि० सं० १३४६ का हम्मीरवर्मदेव का ताम्रपत्र, जिसमें दो ब्राह्मणों को ग्राम दान करने का उल्लेख है। **हीरालाल—ए० इ० भाग २०, पृ० १३४-३६; भण्डारकर सूची, क्रमांक १९१६।**

७५३. छतरपुर (छतरपुर)

वि० सं० १२०३ का मदनवर्मन् के शासन काल का जैन-मूर्ति लेख, जिसमें मूर्ति की स्थापना का उल्लेख है। **आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९३५-३६, पृ० ९४।**

७५४. टीकमगढ़ (टीकमगढ़)

वि० सं० १२१६ के दो जैन-मूर्ति लेख। **च० जे० टा० परिशिष्ट—ब क्रमांक १०।**

७५५. दाहि

विo संo १३३७ का वीरवर्मदेव का ताम्रपत्र, जिसमें एक अधिकारी को वीरता प्रदर्शित करने के कारण ग्राम दान करने का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ७४; कीलहार्न—ए० इ० भाग ५, परिशिष्ट, पृ० ३४, क्रमांक २४०; कनिंघम—'क्वायन्स आफ़ मेडिवल इण्डिया'; गर्दे—इ० ए० १९१८, पृ० २४१; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६००।

७५६. पन्ना (पन्ना)

संवत् १३६६ का चन्देल अभिलेख। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९३५-३६, पृ० ९४।

७५७. पपौरा (टीकमगढ़)

विo संo १२०२ का मदनवर्मन् के शासन काल का जैन-मूर्ति लेख, जिसमें साहु गोपाल द्वारा मूर्ति-स्थापना का उल्लेख है। 'पपौरा', पृ० २०।

७५८. बम्हनी (दमोह)

विo संo १३६५ का हम्मीरवर्मदेव तथा उसके सामन्त महाराजपुत्र वाघदेव का सती—स्तम्भ लेख। हीरालाल—ए० इ० भाग १६, पृ० १०; वही, भाग २०, पृ० १३५; प्रो० अ० इ० ओ० का० इलाहाबाद, भाग १; हीरालाल 'दमोह दीपक' पृ० ९५-९६; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६६०।

७५९. मदनपुर

विo संo १२३९ का अभिलेख, जिसमें चौहान पृथ्वीराज तृतीय द्वारा चन्देल परमर्दिदेव को युद्ध में हराने का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ९८; वही, भाग २१, पृ० १७३-७४; भण्डारकार—प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९०३-०४, पृ० ५५, क्रमांक २०५०; भण्डारकर सूची, क्रमांक ३९८।

७६०. रामबन (सतना)

विo संo १२८३ का त्रैलोक्यवर्मन् के शासन काल का ताम्रपत्र, जिसमें ब्राह्मणों को ग्राम दान करने का उल्लेख है। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० २-४।

७६१. रीवा (रीवा)

(अ) कलचुरि संवत् ९६३ का त्रैलोक्यमल्लदेव के शासन काल का ताम्रपत्र जो शैवाचार्य शान्तिशिव द्वारा राणक धारेक को दिये गये विलेख-बन्धक सम्बन्धी है। चक्रवर्ती—आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९३५-३६, पृ० ९०-९१; ए० इ० भाग २५, पृ० १-६; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० ३६९।

(आ) विo संo १२९७ का त्रैलोक्यवर्मदेव के शासन काल का ताम्रपत्र, जिसमें कर्करेडी के

२५

महाराणक कुमारपालदेव द्वारा ग्रामदान करने का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० **भाग २१, पृ० १४५-४८; कीलहार्न—इ० ए० भाग १७, पृ० २२४, २३०-३४।**

(इ) वि० सं० १२९८ का त्रैलोक्यवर्मन् का ताम्रपत्र, जिसमें कर्करेडी के महाराणक हरि-राज द्वारा ५ ब्राह्मणों को ग्राम दान करने का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १४८; कीलहार्न—इ० ए० भाग १७, पृ० २१४, २३४-३६।**

७६२. सागर (सागर)

वि० सं० १२६४ का त्रैलोक्यवर्मदेव का ताम्रपत्र। **बरुआ—ज० ब० ब्रा० र० ए० सो० (नया) १९४७, भाग २३, पृ० ४७-४८।**

७६३. सेमरा

सोनसर से प्रचलित वि० सं० १२२३ का परमर्दिदेव के शासन काल का ताम्रपत्र, जिसमें मदनवर्मन् द्वारा वि० सं० १२१९ में दिये गये दान का पुटिष्करण है। **कार्टेलियरी—ए० इ० भाग ४, पृ० १५३-७४; भण्डारकर सूची, क्रमांक ३२५।**

ट—परमार शासकों के अभिलेख

७६४. अमेरा (विदिशा)

एक पुराने तालाब के किनारे से प्राप्त वि० सं० ११५१ का शिलालेख, जिसमें पर-मार शासक नरवर्मन् के काल में विक्रम नामक ब्राह्मण द्वारा उस तालाब के निर्माण का उल्लेख है। **आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९२३-२४, पृ० १३५; ग्वा० पु० रि० संवत् १९८०, क्रमांक १; भण्डारकर सूची, क्रमांक १५९।**

७६५. इन्दौर (इन्दौर)

इन्दौर के प्रमुख चिकित्सक डा० नागू के निजी संग्रह में संरक्षित परमार नरवर्मन् का ताम्रपत्र जो अभी तक अप्रकाशित है। **(डा० नागू द्वारा सूचना प्राप्त)।**

७६६. उज्जैन (उज्जैन)

(अ) परमार वापक्पतराजदेव उपनाम अमोघवर्ष का वि० सं० १०३६ का ताम्रपात्र जो भगवत्पुर से प्रचलित किया गया था। **मित्रा—ज० ए० सो० ब० भाग १९, पृ० ४७५; कीलहार्न—इ० ए० भाग १५, पृ० १६०; कीलहार्न सूची, क्रमांक ४९; भण्डारकर सूची, क्रमांक ८७।**

(आ) वि० सं० १०३८ का ताम्रपत्र, जिसमें परमार वाक्पपतिराज (द्वितीय) का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९८७, क्रमांक ९।**

(इ) वि० सं० १०४७ का ताम्रपत्र जिसमें परमार वाक्पतिराज (द्वितीय) का उल्लेख है। इस दानपत्र में एक ग्राम दान करने का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९८७, क्रमांक १०।**

(ई) परमार भोजदेव के उल्लेख युक्त वि० सं० १०७८ के दो ताम्रपत्र जिसमें गोविन्दभट्ट के पुत्र धनपतिभट्ट को वीराणक नामक ग्राम दान में दिये जाने का उल्लेख है। **इ० ए० भाग ६, पृ० ५३; भण्डारकर सूची, क्रमांक १११।**

(उ) परमार महाराज यशोवर्मदेव का वि० सं० ११६२ का ताम्रपत्र, जिसमें दो ग्रामों के दान देने का तथा तीसरे ग्राम का उल्लेख है। यह दान मोमलादेवी की अन्त्येष्टि के समय दिया गया। **कीलहार्न—इ० ए० भाग १६, पृ० ३४६; भण्डारकर सूची, क्रमांक २३४।**

(ऊ) परमार महाकुमार लक्ष्मीवर्मदेव का वि० सं० १२०० का ताम्रपत्र, जिसमें अपने पिता यशोवर्मदेव द्वारा दिये गये एक दान की लक्ष्मीवर्मदेव द्वारा पुष्टि का उल्लेख है। **इ० ए० भाग १६, पृ० ३५२; भण्डारकर सूची, क्रमांक २५७।**

(ए) महाकाल मन्दिर के निकट प्राप्त अभिलेख, जिसमें एक परमार शासक का अयोध्या पर अधिकार करने का उल्लेख है। **इ० आ० रि० १६५८-५६, पृ० ६०।**

(ऐ) तिथि रहित स्तम्भ-लेख, जिसमें केवल परमार पढ़ा जाता है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १६६२, क्रमांक ५६।**

(ओ) निर्वाण नारायण (परमार नरवर्मदेव की उपाधि) का तिथि रहित शिलालेख, जिसमें अयोध्या की वाटिका, सरयू नदी, हिमालय तथा मलयपर्वत आदि के विजयों का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १६६२, क्रमांक ५२; नागरी प्रचारिणी पत्रिका (नवीन संस्करण), भाग १६, पृ० ८७-८८।**

(औ) परमार उदयादित्य का तिथि रहित शिलालेख, जिसमें महाकाल एवं उदयादित्य की प्रशंसा है। इसमें नागरी वर्णमाला तथा व्याकरण सम्बन्धी नियम दिये हुए हैं। **ग्वा० पु० रि० संवत् १६७४, क्रमांक २०।**

(क) परमार शासक जयवर्मदेव प्रथम द्वारा वर्धमानपुर से प्रचलित ताम्रपत्र, जिसमें एक ग्राम दान करने का उल्लेख है। यह तिथि रहित अभिलेख है। **कीलहार्न— इ० ए० भाग १६, पृ० ३५०; कीलहार्न सूची, क्रमांक ५२; भण्डारकर सूची, क्रमांक १६५६।**

(ख) परमार विजयसिंह का शिलालेख। **'पुरातत्व', भाग २, पृ० ६५।**

(ग) विक्रम विश्वविद्यालय के विक्रम कीर्ति मन्दिर संग्रहालय में निम्नलिखित परमार अभिलेख संग्रहीत हैं, जो अप्रकाशित हैं :—

(१) परमार भोज का अभिलेख जिसमें साकेत विजय का उल्लेख है।

(२) परमार देवपालदेव का अभिलेख जिसमें 'तुरक्का' को पराजित करने का उल्लेख है।

(३) विज्जसिह अरिशंकू का अभिलेख जिसमें खुरासानी खरों को पराजित करने का उल्लेख है।

(४) भोज का अभिलेख जिसमें खर्जुरवाहक को पराजित करने का उल्लेख है।

(५) नरवर्मन् का अभिलेख जिसमें नरवर्मन् द्वारा अपने बड़े भाई लक्ष्मदेव के स्मरण में अखण्ड दीप जलाने के लिये भूमिदान दिये जाने का उल्लेख है। प्रारम्भ में ही उदयादित्य का उल्लेख आया है। **(श्री वी० श्री० वाकणकर द्वारा सूचना प्राप्त)।**

७६७ **उदयपुर (विदिशा)**

(अ) परमार उदयादित्य का वि० सं० १११६ का शिलालेख, जिसमें शिव-मन्दिर बनाने का उल्लेख है। **ज० ए० सो० ब० भाग ९, पृ० ५४९; ज० अ० ओ० सो० भाग ७, पृ० ३५; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९१३-१४, पृ० ६६; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक १२६; भण्डारकर सूची, क्रमांक १३४।**

(आ) परमार उदयादित्य का वि० सं० ११३७ का अभिलेख, जिसमें मन्दिर पर ध्वज लगाये जाने का उल्लेख है। **कीलहार्न—इ० ए० भाग २०, पृ० ८३; क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० १०९; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक १०५; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९१४, पृ० ६६; भण्डारकर सूची, क्रमांक १४७।**

(इ) वि० सं० १२८६ का उदयेश्वर मन्दिर स्तम्भ-लेख, जिसमें परमार देवपालदेव के राज्यकाल में दान देने का उल्लेख है। **कीलहार्न—इ० ए० भाग २०, पृ० ८३; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक १२१; भण्डारकर सूची, क्रमांक ४८३।**

(ई) वि० सं० १२८९ का उदयेश्वर मन्दिर में स्तम्भ-लेख, जिसमें धार के परमार महाराज देवपालदेव का उल्लेख है। **ब्यूलर—इ० ए० भाग २०, पृ० ८३; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक १२०; भण्डारकर सूची, क्रमांक ५०८।**

(उ) उदयेश्वर मन्दिर की पूर्वी दीवाल में उत्कीर्ण परमार जयसिंह का वि० सं० १३११ का अभिलेख। **कीलहार्न—इ० ए० भाग २०, पृ० ८४ तथा भाग १८, पृ० ३४१; ग्वा० पु० रि० संवत् १९८०, क्रमांक ८; भण्डारकर सूची, क्रमांक ५५०।**

(ऊ) वि० सं० १३६६ का परमार जयसिंहदेव का शिलालेख। **कीलहार्न—इ० ए० भाग २०, पृ० ८४; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक ११६; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६६१।**

(ए) परमार उदयादित्य का उदयेश्वर मन्दिर स्तम्भ-लेख, जिसमें उदयादित्य द्वारा उदयपुर नगर की स्थापना तथा उदयेश्वर मन्दिर एवं उदयसमुद्र झील के निर्माण का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१, क्रमांक १११।**

(ऐ) परमार उदयादित्य के काल का शिलालेख जिसमें, विष्णु मन्दिर के निर्माण के उल्लेख के साथ मालवा के परमारों की विस्तृत वंशावली, उपेन्द्र से भोज तक, दी

हुई है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक १०३; ए० इ० भाग १, पृ० २२२; भण्डारकर सूची, क्रमांक १६५७।

(ओ) परमार उदयादित्य के शासनकाल का अभिलेख, जिसमें परमार वंश की वंशावली दी हुई है। उदयादित्य द्वारा चेदि के राजा (डाहलाधीश) के संहार का उल्लेख है तथा नेमक वंश के दामोदर द्वारा मन्दिर बनाने का वर्णन है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८२, क्रमांक १६।

(औ) बीजा-मण्डल मस्जिद का स्तम्भ-लेख जिसमें चर्चिकादेवी तथा परमार नरवर्मदेव उपनाम निर्वाण-नारायण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक ५९; प्रो० रि० आ० स० इ० वे० स०, १९१३-१४, पृ० ५९; आ० ग्वा० पृ० ६५; भण्डारकर सूची, क्रमांक १६५८।

(अं) परमार उदयादित्य का वि० सं० ११४० का अभिलेख। स० अ० इ० ओ० का० २६ (उज्जैन, १९७२), पृ० २५।

७६८. उन्दासा (उज्जैन)

लगभग ११वीं शताब्दी का अस्पष्ट स्तम्भ-लेख, जिसके प्रथम पंक्ति में सम्भवतः परमारों का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० १९३५-३६, पृ० ३९।

७६९. ऊन (पश्चिम निमाड़)

तिथि रहित उदयादित्य का शिलालेख। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग १८, खण्ड १, पृ० १७ तथा भाग २५, पृ० २८; प्र० रि० आ० स० इ० वे० भाग १८, पृ० ४६।

७७०. ओखला (पश्चिम निमाड़)

वि० सं० १२८२ का देवपालदेव (?) का शिलालेख जिसमें एक बावड़ी निर्माण का उल्लेख है। यह केन्द्रीय पुरातत्त्व संग्रहालय इन्दौर में संरक्षित है। देखिये 'केन्द्रीय संग्रालय, इन्दौर में संरक्षित उत्कीर्ण-लेख एवं हस्तलिखित ग्रन्थ की विवरणात्मक सूची', भाग १ (१९६२), पृ० ७।

७७१. कर्णावद (उज्जैन)

(अ) परमार देवपाल के उल्लेख सहित वि० सं० १२१५ का अभिलेख। भण्डकार सूची, क्रमांक १९१२।

(आ) कर्णेश्वर मन्दिर का वि० सं० १२७५ का प्रस्तर-स्तम्भ लेख जिसमें देवपाल के शासन काल में एक दान देने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक ३४।

७७२. गाँवरी (उज्जैन)

वि० सं० १०३८ तथा १०४३ के वाक्पति मुंज के ताम्रपत्र, जिसमें देश के विभिन्न भागों से मालव देश में ब्राह्मणों के आगमन का वर्णन है। ए० इ० भाग २३, पृ० १०१।

७७३. **गोदरपुरा (पूर्व निमाड़)**

मण्डपदुर्ग से प्रचलित वि० सं० १३१७ का जयवर्मन् द्वितीय का ताम्रपत्र, जिसमें कुछ ग्रामों के दान देने का उल्लेख है। लेले— **'रिपोर्ट आफ़ दी प्रोग्रेस आफ़ आर्कयलजिकल वर्क इन दी धार स्टेट'** (१९०४); कीलहार्न—**ए० इ० भाग ९, पृ० १२०; भण्डारकर सूची**, क्रमांक ५५९।

७७४. **देपालपुर** (इन्दौर)

वि० सं० १०७९ का भोज का ताम्रपत्र जिसमें मान्यखेट से आये हुए श्री वच्छल नामक ब्राह्मण को भूमि दान किए जाने का उल्लेख है। रि० अ० हो० स्टे०, १९३१, पृ० ९७ तथा १९३२, पृ० ९५; इ० हि० क्वा० भाग ८, पृ० ३०५।

७७५. **धरमपुरी** (धार)

उज्जयिनी से प्रचलित परमार वाक्पतिराजदेव का वि० सं० १०३१ ताम्रपत्र जिसमें एक ब्राह्मण दार्शनिक को ग्राम दान देने का उल्लेख है। हाल—**ज० ए० सो० ब० भाग ३०, पृ० १९५; इ० ए० भाग ६, पृ० ५१; भण्डारकर सूची, क्रमांक ८४।**

७७६. **धार (धार)**

(अ) वि० सं० १०९१ का भोज का सरस्वती-मूर्ति लेख, जो ब्रिटिश म्यूज़ियम में रखा है। **ए० इ० भाग १८, पृ० ३२०, क्रमांक ३; रूपम, १९२४, पृ० २; भण्डारकार सूची, क्रमांक १२०।**

(आ) भोजशाला में परमार अर्जुनवर्मन् का शिलालेख, जिसमें राजगुरु मदन द्वारा रचित नाटिका 'पारिजातमंजरी' के प्रथम दो अध्याय उत्कीर्ण हैं। हुल्ज़्—**ए० इ० भाग ८, पृ० १०१; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट भाग १७, खण्ड १, पृ० ३१।**

(इ) दो शिलालेख, जिसमें प्राकृत कवितायें हैं। इन्हें 'कूर्म-शतक', कहा गया है तथा स्वयं भोज इनके रचयिता कहे गये हैं। **पिश्चेल—ए० इ० भाग ८, पृ० २४३; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग १७, खण्ड १, पृ० ३१; भण्डारकर सूची, क्रमांक १६५६।**

(ई) भोजशाला में नरवर्मन् के काल का तिथि रहित शिलालेख। **ज० ब० ब्रा० र० ए० सो० भाग २१, पृ० ३५१।**

(उ) भोजशाला के स्तम्भ पर उत्कीर्ण उदयादित्य का तिथि रहित स्तम्भ-लेख। **ज० ब० ब्रा० र० ए० सो० भाग २१, पृ० ३५७।**

(ऊ) दो सर्पबन्ध शिलालेख, जिनमें नागरी की वर्णमाला तथा व्याकरण सम्बन्धी नियम दिये गये हैं। **आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग १८, खण्ड १, पृ० २५; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १७, पृ० ३६।**

७७७. **पठारी (विदिशा)**

परमार जयसिंहदेव का वि० सं० १३२६ का अभिलेख। **ए० इ० भाग ५, पृ० ३३; कीलहार्न सूची, क्रमांक २३२; भण्डारकर सूची, क्रमांक ५७५।**

७७८. **पिपिलिया नगर (उज्जैन)**

(अ) वि० सं० १२३५ तथा १२३६ का ताम्रपत्र जिसमें परमार महाकुमार हरिश्चन्द्रदेव द्वारा नर्मदा तीर्थ पर दिये गये दान का उल्लेख है। इसमें परमार शासकों की वंशावली दी गयी है। **विल्किन्सन—ज० ए० सो० ब० भाग ७, पृ० ७३६; भण्डारकर सूची, क्रमांक ३८३।**

(आ) वि० सं० १२६७ का ताम्रपत्र जिसमें मंडपदुर्ग में दिये गये परमार महाराज अर्जुनवर्मदेव के दान का उल्लेख है। **विल्किन्सन—ज० ए० सो० ब० भाग ५, पृ० ३७८; भण्डारकर सूची, क्रमांक ४५७।**

७७९. **बाघ (धार)**

वि० सं० १२१० का ब्रह्मा की मूर्ति पर उत्कीर्ण लेख, जिसमें परमार श्री यशोधवल की बहिन श्री भामिनि द्वारा मूर्तिनिर्माण का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८३, क्रमांक ३५।**

७८०. **बेटमा (इन्दौर)**

परमार शासक भोजदेव के शासन काल के वि० सं० १०७७ का ताम्रपत्र, जिसमें कोंकण विजय के उपलक्ष में एक ब्राह्मण को ग्राम दान देने का उल्लेख है। **दिसकालकर—एनुअल रिपोर्ट, वाटसन म्युजियम (राजकोट), १९२२-२३, पृ० १३; ए० इ० भाग १८, पृ० ३२०-२५; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग १८, पृ० १४२; भण्डारकर सूची, क्रमांक ११०।**

७८१. **भोजपुर (रायसेन)**

(अ) भोजदेव के शासन काल का खण्डित जैन-मूर्ति लेख। **इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ५७।**

(आ) नरवर्मन् के शासन काल का पार्श्वनाथ-मूर्ति-लेख, जिसमें दो जैन मूर्तियों की स्थापना का उल्लेख है। **इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ५७।**

७८२. **भोपाल (भोपाल)**

(अ) शक सम्वत् ११०८ का उदयादित्य के शासन काल का शिलालेख, जिसमें परमार शासकों की वंशावली दी हुई है। **ज० अ० ओ० सो०, भाग ७, पृ० ३५।**

(आ) वि० सं० १२४१ का उदयादित्य के शासन काल का शिलालेख, जिसमें परमार शासकों की वंशावली दी हुई है। **ज० अ० ओ० सो०, भाग ७, पृ० ३५।**

(इ) रेवा तट पर स्थित गुवाडाघट्ट से प्रचलित महाकुमार उदयवर्मदेव का वि० सं० १२५६ का ताम्रपत्र, जिसमें परमार शासकों की वंशावली दी हुई है। **इ० ए० भाग १६, पृ० २५२; भण्डारकर सूची, क्रमांक ४३९।**

(ई) भृगुकच्छ से प्रचलित वि० सं० १२७० का परमार अर्जुनवर्मन् का ताम्रपत्र, जिसमें ग्राम दान देने का उल्लेख है। **हाल—ज० अ० ओ० सो० भाग ७, पृ० ३२; भण्डारकर सूची, क्रमांक ४६०।**

(उ) रेवा तथा कपिला नदियों के संगम पर स्थित अमरेश्वर तीर्थ से प्रचलित वि० सं० १२७२ का अर्जुनवर्मन् का ताम्रपत्र, जिसमें ग्राम दान देने का उल्लेख है। **हाल—ज० अ० ओ० सो० भाग ७, पृ० २५; भण्डारकर सूची, क्रमांक ४६६।**

(ऊ) महाकुमार लक्ष्मीवर्मदेव का स्तम्भ-लेख। **ज० म० प्र० इ० प० अंक २, पृ० ३-८।**

७८३. **महन्दी (सीहोर)**

संवत् १०७४ के दो ताम्रपत्र, जिनमें परमार भोज द्वारा ग्राम दान देने का उल्लेख है। **इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ४१।**

७८४. **मान्धाता (पूर्व-निमाड़)**

(अ) धार से प्रचलित वि० सं० १११२ का जयसिंहदेव प्रथम का ताम्रपत्र, जिसमें अमरेश्वर मन्दिर स्थित पट्टशाला में निवास कर रहे ब्राह्मणों के लिए भीम नामक ग्राम दान करने का उल्लेख है। **कीलहार्न—ए० इ० भाग ३, पृ० ४८; भण्डाकर सूची, क्रमांक १३२; हीरालाल सूची, क्रमांक १३७।**

(आ) माहिष्मती से प्रचलित वि० सं० १२८२ का परमार देवपाल का ताम्रपत्र, जिसमें सताजुना नामक ग्राम को ब्राह्मणों को दान करने के उल्लेख हैं। **कीलहार्न – ए० इ० भाग ९, पृ० १०३; भण्डारकर सूची, क्रमांक ४८०; हीरालाल सूची, क्रमांक १३८।**

७८५. **मोड़ी (मन्दसौर)**

वि० सं० १३१४ का जयवर्मन् द्वितीय का शिलालेख, जिसमें मंडी नामक जिले का उल्लेख है। **भण्डारकर—प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९१२-१३, पृ० ५६; भण्डारकर सूची, क्रमांक ५५२।**

७८६. **राहतगढ़ (सागर)**

वि० सं० १३१२ का जयवर्मन् द्वितीय के शासनकाल का ताम्रपत्र, जो उपरहाड़ मण्डल के उसके सामन्त उकलेवदन द्वारा प्रचलित किया गया था। **कीलहार्न—इ० ए० भाग २०, पृ० ८४; क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ३१; भण्डारकर सूची, क्रमांक ५५१; हीरालाल सूची, क्रमांक ८५।**

७८७. **वलीपुर (धार)**

वि० सं० १३२४ का स्मारक-स्तम्भ लेख, जिसमें मण्डपदुर्ग के राजा परमार जयसिंह का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७३।**

७८८. **हरसौदा (निमाड़)**

वि० सं० १२७५ का देवपाल के शासन काल का शिलालेख, जिममें हर्षपुर नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख है। **हाल—ज० ए० सो० ब० भाग २८, पृ० १; प्र० रि० आ० स० वे० इ० क्रमांक १०, पृ० १११;** हाल – **ज० अ० ओ० सो० भाग ६, पृ० ५३६; कीलहार्न—इ० ए० भाग २०, पृ० ३११; भण्डारकर सूची, क्रमांक ४७२; हीरालाल सूची, क्रमांक १४०।**

ठ–कलचुरि शासकों के अभिलेख

१. त्रिपुरी के कलचुरि

७८९. आल्हाघाट (रीवा)

वि० सं० १२१६ का नरसिंहदेव के शासनकाल का शिलालेख जिसमें पिपलाम दुर्ग के महाराणक जल्हण के पुत्र राणक श्रीच्छीहुल द्वारा षटषडिकाघाट तथा अम्बिका देवी के मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ११५; कीलहार्न–इ० ए० भाग १७, पृ० २१८ तथा भाग १८, पृ० २१३; मिराशी–क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० ३२२-२४; भण्डारकर सूची, क्रमांक ३०८।

७९०. करणबेल (जबलपुर)

(अ) जयसिंहदेव के शासन काल का अपूर्ण शिलालेख, जिसमें कलचुरि शासकों की वंशावली दी है। इसका आशय अस्पष्ट है। क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ९९; कीलहार्न—इ० ए० भाग १८, पृ० २१४; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ६३६-४४; भण्डारकर सूची, क्रमांक १५८१; हीरालाल सूची, क्रमांक ३६।

(आ) विजयसिंहदेव के शासनकाल का शिलालेख जिसमें ब्राह्मण हरिगण के द्वारा विष्णु के मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। हाल—ज० ए० सो० ब० भाग ३१, पृ० ११३; क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ९९; कीलहार्न—इ० ए० भाग १८, पृ० २१८; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ६५२; भण्डारकर सूची, क्रमांक १५८२; हीरालाल सूची, क्रमांक ३९।

७९१. कारीतलाई (जबलपुर)

(अ) (कलचुरि) सम्वत् ५९३ का लक्ष्मणराज प्रथम का खण्डित शिलालेख, जिसमें नागभट के पराजय का तथा अमोघवर्ष का उल्लेख आया है। मिराशी—ए० इ० भाग २३, पृ० २५६-६० तथा क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० १७८-८२; हीरालाल सूची, क्रमांक ७५।

(आ) लक्ष्मणराज द्वितीय के शासन काल का शिलालेख, जिसमें प्रधानमन्त्री सोमेश्वर द्वारा निर्मित विष्णु मन्दिर के लिए लक्ष्मणराज, महारानी राहडा, राजकुमार शंकरगण तथा अन्य उच्च-पदस्थ अधिकारियों द्वारा दिये गये विभिन्न दानों का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ८१; कीलहार्न—ए० इ० भाग २, पृ० १७४; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० १८६-९५; भण्डारकर सूची, क्रमांक १५७५, हीरालाल सूची, क्रमांक ४०।

(इ) उपरोक्त सोमेश्वर द्वारा सोमस्वामिपुर (कारीतलाई) में कुआ खुदवाने के उल्लेख सहित एक अन्य अभिलेख। सोमेश्वर के पिता का नाम भामिश्र दिया गया है। ए० इ० भाग ३३, पृ० १८६-१८८।

७९२. कुम्भी (जबलपुर)

(कलचुरि) सम्वत् ९३२ का विजयसिंहदेव के शासनकाल का ताम्रपत्र जिसमें विजय-

सिंहदेव की माता गोसलदेवी द्वारा सम्बला-पत्तला में स्थित चोरलायी नामक ग्राम को ब्राह्मण सोढ़शर्मण को दान में देने का उल्लेख है। ज० ए० सो० ब० भाग ८, पृ० ४८१; हाल—ज० ए० सो० ब० भाग २१, पृ० १११; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ६४५-५२; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२४८; हीरालाल सूची, क्रमांक ४२।

७९३. खैरहा (शहडोल)

वाराणसी से प्रचलित (कलचुरि) सम्वत् ८२३ का यशःकर्णदेव के शासनकाल का ताम्रपत्र जिसमें देउलापंचेल नामक ग्राम को ब्राह्मण गंगाधर को दान में देने का उल्लेख है। हीरालाल—ए० इ० भाग १२, पृ० २०५; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० २८९-२९९।

७९४. गुर्गी (रीवा)

कोकल्लदेव द्वितीय के शासनकाल का शिलालेख, जिसमें सम्राट केयूरवर्ष द्वारा शिव मन्दिर तथा उसमें निवास करने वाले शैवाचार्यों के सहायतार्थ कुछ ग्राम दान करने का उल्लेख है। बनर्जी—प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९२०-२१, पृ० ५१; बनर्जी—हे० त्रि० मा० पृ० १२२; ए० इ० भाग २२, पृ० १२७; मिराशी क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० २२४।

७९५. गोपालपुर (रीवा)

युवराजदेव प्रथम के शासनकाल का शिलालेख, जिसमें युवराजदेव के अमात्य गोल्लाक द्वारा हलधर की मूर्ति को प्रस्तर पर उत्कीर्ण करने का उल्लेख है। मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० १८५-८६।

७९६. चन्द्रेह (सीधी)

(कलचुरि) सम्वत् ७२४ का प्रबोधशिव का शिलालेख जिसमें मत्तमयूर शाखा के शैव आचार्यों की वंशावली दी है तथा उनके द्वारा किये गये विभिन्न कार्यकलापों का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ६ तथा भाग १९, पृ० ९०; कीलहार्न—इ० ए० भाग २०, पृ० ८५; ए० इ० भाग १, पृ० ३५४; बनर्जी—हे० त्रि० मा० पृ० ११०; बनर्जी—ए० इ० भाग २१, पृ० १४८; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० १९८-२०४।

७९७. छोटी-देवरी (जबलपुर)

शंकरगण प्रथम के शासन काल का स्तम्भ-लेख, जिसमें कंकदकुटु विषय के अधिकारी चुटुनागक के द्वारा दान देने का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १०० तथा १५९; भण्डारकर—प्र० रि० आ० स० वे० इ० १९०३-४, पृ० ५४; मिराशी—ए० इ० भाग २७, पृ० १७; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० १७६-७८; भण्डारकर सूची, क्रमांक १५७६; हीरालाल सूची, क्रमांक ४६।

७९८. जबलपुर (जबलपुर)

(अ) यशःकर्णदेव के शासन काल का (कलचुरि) सम्वत् ५२९ (?) का ताम्रपत्र जिसमें जाउली पत्तन स्थित करंजा ग्राम को ब्राह्मण हरिशर्मण को दान करने का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ८७; कीलहार्न—ए० इ० भाग २, पृ० १; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० २९९-३०५ तथा खण्ड २, पृ० ६३३-३६।

(आ) (कलचुरि) सम्वत् ९१८ का जयसिंहदेव का ताम्रपत्र, जिसमें अखरौद के समीप स्थित ऊगरा ग्राम को ब्राह्मण देल्हण को दान करने का उल्लेख है। हीरालाल—ए० इ० भाग २१, पृ० ९१; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० ३२४-३१; भण्डारकर सूची, क्रमांक २११३; हीरालाल सूची, क्रमांक ३७।

(इ) (कलचुरि) सम्वत् ९२६ का जयसिंहदेव के शासन काल का शिलालेख, जिसमें जयसिंहदेव के राजगुरु विमलशिव द्वारा शिव मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। इस मन्दिर के सहायतार्थ जयसिंहदेव ने तीन ग्रामों का दान किया। हाल—ज० अ० ओ० सो० भाग ६, पृ० ५३३; कीलहार्न—इ० ए० भाग १८, पृ० २१० तथा ए० इ० भाग ५, परिशिष्ट १, पृ० १०; मिराशी—ए० इ० भाग २५, पृ० ३०९ तथा क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० ३३१-३३९; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२४५; हीरालाल सूची, क्रमांक ६१।

७९९. तेवर (जबलपुर)

(अ) (कलचुरि) सम्वत् ९०० का जैन-मूर्ति लेख, जिसमें जयदेव जसधवल द्वारा मूर्ति-स्थापना का उल्लेख है। म० पु० रू०, पृ० ७०।

(आ) चेदि सम्वत् ९०२ का गयाकर्णदेव के शासन काल का शिलालेख, जिसमें पाशुपताचार्य भावब्रह्मण द्वारा एक शिव मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। कीलहार्न—इ० ए० भाग १८, पृ० २०९; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० ३०५-३०८; हीरालाल सूची, क्रमांक ३८, भण्डारकर सूची, क्रमांक १२३५।

(इ) (कलचुरि) सम्वत् ९२८ का जयसिंहदेव के शासन काल का शिलालेख, जिसमें नायक केशव द्वारा ईश्वर (शिव) के मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। हाल–ज० अ० ओ० सो० भाग ६, पृ० ५१२; बर्जेस—'इन्सक्रिपशन्स फ्राम दी केव टेम्पलस् ऑफ़ वेस्टर्न इण्डिया' पृ० ११०; क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ९५; कीलहार्न—ए० इ० भाग २, पृ० १७-१९; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० ३४४-४६; हीरालाल सूची, क्रमांक ४३; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२४७।

(ई) (कलचुरि) सम्वत् ९४३ का शिलालेख, जिसमें विजयसिंहदेव के शासन काल में एक मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। म० पु० रू० पृ० ७२।

८००. पिआवन (रीवा)

(कलचुरि) सम्वत् ७८९ का गांगेयदेव के शासन काल का खण्डित शिलालेख,

जिसमें सम्भवतः शिवलिंग की प्रार्थना की गयी है । क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ११३; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ६३२-३३ ।

८०१. **बरगाँव (जबलपुर)**

बलाधिकृत शबर का लगभग १०वीं शताब्दी का शिलालेख जिसमें ब्रह्मस्तम्भ के मन्दिर में निवास करने वाले किसी ब्राह्मण को श्री शंकरनारायण के उपयोग के लिए खलभिक्षा के दान करने का उल्लेख है । मिराशी—ए० इ० भाग २५, पृ० २७८; मिराशी–क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० १९५-९८; हीरालाल सूची, क्रमांक ६३ ।

८०२. **बहुरीबन्द (जबलपुर)**

गयाकर्ण के शासन काल का जैन-मूर्ति लेख । देखिये–राष्ट्रकूट शासकों के अभिलेख ।

८०३. **बान्धोगढ़ (रीवा)**

(अ) युवराजदेव प्रथम के शासन काल का शिलालेख, जिसमें युवराजदेव के अमात्य गोल्लाक द्वारा विष्णु के मत्स्य, वराह तथा कुर्म अवतारों के शिला पर उत्कीर्ण करवाने का उल्लेख है । मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० १८२-८३ ।

(आ) युवराजदेव प्रथम के शासन काल का दूसरा शिलालेख, जिसमें उक्त गोल्लाक द्वारा विष्णु के मत्स्य, कुर्म, आदिवराह तथा परशुराम अवतारों के शिला पर उत्कीर्ण करवाने का उल्लेख है । मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० १८३-८५ ।

(इ) युवराजदेव प्रथम के शासन काल का तीसरा अस्पष्ट शिलालेख, जिसमें उक्त गोल्लाक द्वारा सम्भवतः वराह की मूर्ति निर्माण का उल्लेख है । किसी युद्ध का वर्णन भी किया गया है । मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० १८४-८५ ।

८०४. **बिलहरी (जबलपुर)**

(अ) युवराजदेव द्वितीय के शासन काल का लम्बा शिलालेख । इसके प्रथम ४५ श्लोकों में केयूरवर्ष की वंशावली दी है । इसके पश्चात् श्लोक क्रमांक ४६ से ७६ तक लक्ष्मणराज द्वितीय की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है । ७७वें श्लोक से ८१वें श्लोक तक बिलहरीनगर में महाराज्ञी नोहला द्वारा निर्मित नौहलेश्वर मठ के लिए निवासियों द्वारा दिये जाने वाले विभिन्न करों का उल्लेख है । अभिलेख के अन्त में कवि राजशेखर का उल्लेख किया गया है । हाल—ज० ए० सो० ब० भाग ३०, पृ० ३१७-३४; क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ८० तथा १०२-५; कील-हार्न—ए० इ० भाग १, पृ० २५१-७०; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, पृ० २०४-२२४; भण्डारकर सूची, क्रमांक १५७७; हीरालाल सूची क्रमांक ३३ ।

(आ) विष्णु-वराह मन्दिर से प्राप्त खण्डित शिलालेख । हीरालाल सूची, क्रमांक ५७ ।

८०५. **बेसानी**

(कलचुरि) सम्वत् ९५८ का शिलालेख, जिसमें कुछ व्यक्तियों से दान में द्रम्म लिए जाने का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १०१-३; कीलहार्न— इ० ए० भाग १७, पृ० २१८-२१९; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० ३६८-६९।**

८०६. **भेड़ाघाट (जबलपुर)**

(अ) नरसिंहदेव के शासन काल का (कलचुरि) सम्वत् ९०७ का शिलालेख जिसमें नरसिंहदेव की माता तथा गयाकर्णदेव की विधवा महारानी अल्हणदेवी द्वारा वैद्यनाथ शिव का मन्दिर, एक मठ तथा अध्ययन के लिए भवन निर्माण का उल्लेख है। इनके सहायतार्थ नामउण्डी तथा मकरपाटक नामक दो ग्रामों के दान देने का उल्लेख है। हाल—ज० अ० ओ० सो० भाग ६, पृ० ४८९; **बर्जेस—मेमोरेन्डा, आर्कैयलाजिकल सर्वे ऑफ वेस्टर्न इण्डिया, क्रमांक १०, पृ० १०७-०९; क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ९१-९४; कीलहार्न—ए० इ० भाग २, पृ० ७; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० ३१२-२१; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२३७; हीरालाल सूची, क्रमांक ३५।**

(आ) चौसठ-योगिनी मन्दिर के मध्य में स्थित गौरीशंकर मन्दिर का विजयसिंहदेव के शासन काल का शिलालेख, जिसमें महाराज्ञी गोसलदेवी, सम्राट विजयसिंहदेव तथा राजकुमार अजयसिंहदेव द्वारा मन्दिर में स्थित देव की प्रार्थना की गयी है। **ब्लाक—आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, इस्टर्न सर्कल, १९०७-०८, पृ० १५; बनर्जी—है० त्रि० मा० पृ० १४२; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० ३६३-६४।**

(इ) कलचुरि सम्वत् ९२८ का शिलालेख। **क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० १११; कीलहार्न—इ० ए० भाग १७, पृ० २१७; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२४६।**

(ई) चौसठ-योगिनी मन्दिर में स्थित मूर्तियों पर उत्कीर्ण लेख। **ब्लाक—कंजरवेशन नोट्स; क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ६०; बनर्जी—है० त्रि० मा०, पृ० ७९; हीरालाल सूची, क्रमांक ४४।**

८०७. **मकुन्दपुर (रीवा)**

(कलचुरि) सम्वत् ७७२ का गांगेयदेव के शासनकाल का शिलालेख जिसमें श्रेष्ठि दामोदर द्वारा जलशयन (विष्णु) के मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ५; कीलहार्न—इ० ए० भाग ९, पृ० ८५ तथा ए० इ० भाग १, पृ० ३५४; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० २३४-३५।**

८०८. **मुड़िया**

अस्पष्ट तथा खण्डित शिलालेख, जिसमें शंकरगण का उल्लेख है। **मिराशी—प्रो० अ० इ० ओ० क० (१९५३)।**

८०९. **रणोद (गुना)**

खोखई मठ से प्राप्त शिलालेख, जिसमें मत्तमयूर शाखा के शैवाचार्य, जो त्रिपुरी के कलचुरि शासकों के राजगुरु थे, की वंशावली दी है। **कीलहार्न—ए० इ० भाग १, पृ० ३५४; क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३०५; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग २१, पृ० ४२; वही, भाग २२, पृ० १८४; वही, भाग २३, पृ० १३२; मिराशी—ज० म० प्र० इ० प० भाग ४, पृ० १; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८७२।**

८१०. **रीवा (रीवा)**

(अ) (कलचुरि) संवत् ८०० का कर्णदेव के शासन काल का शिलालेख, जिसमें कर्ण के एक कायस्थ मन्त्री द्वारा शिव के मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। **मिराशी— ए० इ० भाग २४, पृ० १०१; मिराशी—क० इ०इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० २६३-२७५; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९३५-३६, पृ० ८९।**

(आ) (कलचुरि) संवत् ८१२ का कर्णदेव के शासन काल का खण्डित शिलालेख, जिसमें कर्ण के सैनिक अधिकारी वप्पुल्ल के द्वारा घोटक-विग्रह तथा पीतपर्वत के युद्ध में भाग लेने तथा विष्णु और शिव मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। **बनर्जी—प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९२०-२१, पृ० ५३; ह० त्रि० मा०, पृ० १३०; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० २७८-८४; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२२६।**

(इ) (कलचुरि) संवत् ९२६ का जयसिंहदेव के शासन काल का ताम्रपत्र जिसमें जयसिंहदेव के सामन्त महाराणक कीर्तिवर्मन् द्वारा अपने पिता के पिंडदान देने के उपलक्ष में खण्डगहापत्तला में स्थित अहडापाड नामक ग्राम को दो ब्राह्मणों को दान देने का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १४५; कीलहार्न—इ० ए० भाग १७, पृ० २२४; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० ३४०-४४; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२४४।**

(ई) विजयसिंहदेव के शासन काल का (कलचुरि) संवत् ९४४ का शिलालेख, जिसमें विजयसिंहदेव के सामन्त मलयसिंह द्वारा एक तालाब निर्माण का उल्लेख है। इसमें मलयसिंह के पूर्वजों की वंशावली दी है। **बनर्जी—प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९२०-२१, पृ० ५२; ह० त्रि० मा० पृ० १३३; ए० इ० भाग १९, पृ० २९५; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० ३४६; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२५१।**

(उ) वि० संवत् १२५३ का विजयसिंहदेव के शासन काल का ताम्रपत्र जिसमें सामन्त सलक्षणवर्मन् द्वारा कूयीसम्बपालिस पत्तला में स्थित छिडौडा नामक ग्राम को ब्राह्मणों को दान देने का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १४६; कीलहार्न**

—इ० ए० भाग १७, पृ० २२७; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० ३५८-६३; भण्डारकर सूची, क्रमांक ४३२।

(ऊ) विजयसिंहदेव के शासन काल का (कलचुरि) संवत् ९६ (?) का खण्डित शिलालेख जिसमें विजयसिंह द्वारा रेवा-पत्तला में स्थित धोट्टवाड नामक ग्राम दान देने का उल्लेख है। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९३५-३६, पृ० ८९-९०; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० ३६५-६७।

८११. लाल-पहाड़ (सतना)

(कलचुरि) संवत् ९०९ का नरसिंहदेव के शासन काल का शिलालेख, जिसमें कयवादित्य के पुत्र वल्लालदेवक द्वारा एक 'वट्ट' निर्माण का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ९७; कीलहार्न—इ० ए० भाग १८, पृ० २११-१३; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० ३२१-२२; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२३८।

८१२. सागर (सागर)

शंकरगण प्रथम के शासन काल का शिलालेख, जिसमें कृष्णादेवी नामक महिला द्वारा अपने माता-पिता के पुण्यार्थ कुछ धार्मिक कृत्य करने का उल्लेख है। मिराशी—ए० इ० भाग २७, पृ० १६३ तथा क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० १७४-७६; हीरालाल सूची, क्रमांक ८४।

८१३. सिमरा (जबलपुर)

कर्णदेव के शासन काल का शिलालेख, जो कुछ व्यक्तियों के पुण्यलोक जाने की स्मृति में उत्कीर्ण किया गया था। मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० २८८-८९; हीरालाल सूची, क्रमांक ६४।

२—रत्नपुर के कलचुरि

८१४. अकलतरा (बिलासपुर)

(अ) रत्नदेव द्वितीय के शासन काल का शिलालेख जिसमें, रत्नदेव के सामन्त वल्लभराज द्वारा कोटगढ़ में रेवन्त के मन्दिर तथा तालाब के निर्माण का उल्लेख है। भण्डारकर—प्र० रि० आ० स० वे० इ० १९०३-०४, पृ० ५१-५२; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ४३०-३६; हीरालाल सूची, क्रमांक २०२; भण्डारकर सूची, क्रमांक १५८४।

(आ) कोटगढ़ से प्राप्त एक खण्डित शिलालेख। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २११; इ० ए० भाग २०, पृ० ८४-८५; क० प्र० रि० १९०४, पृ० ५२; हीरालाल सूची, क्रमांक २०४।

८१५. अमोदा (बिलासपुर)

(अ) पृथ्वीदेव प्रथम के शासनकाल का (कलचुरि) संवत् ८३१ का ताम्रपत्र, जिसमें तुम्माण के वंकेश्वर मन्दिर के चतुष्किका निर्माण के उपलक्ष में अपरमण्डल में स्थित वसहा ग्राम को केशव नामक ब्राह्मण को दान में देने का उल्लेख है। **हीरालाल-ए० इ० भाग १९, पृ० ७५; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ४०१-४०६; भण्डारकर सूची, क्रमांक २०३१; हीरालाल सूची, क्रमांक १९९।**

(आ) पृथ्वीदेव द्वितीय का (कलचुरि) संवत् ९०० का (पहला) ताम्रपत्र, जिसमें चन्द्रग्रहण के उपलक्ष में पृथ्वीदेव द्वारा ब्राह्मण सीलण को मध्यमण्डल में स्थित अवला नामक ग्राम दान में देने का उल्लेख है। **हीरालाल—इ० हि० क्वा० भाग १, पृ० ४०५; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ४७४-४७८; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२३४; हीरालाल सूची, क्रमांक २००।**

(इ) पृथ्वीदेव द्वितीय का (कलचुरि) संवत् ९०५ का (दूसरा) ताम्रपत्र, जिसमें पृथ्वीदेव द्वारा मध्यमण्डल में स्थित बुडुबुडू नामक ग्राम को तीन ब्राह्मणों को दान में देने का उल्लेख है। **हीरालाल—इ० हि० क्वा० भाग १, पृ० ४०५; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ४९१-९५; हीरालाल सूची, क्रमांक २००; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२३६।**

(ई) जाजल्लदेव द्वितीय का (कलचुरि) संवत् ९१ (९) का ताम्रपत्र, जिसमें जाजल्लदेव द्वारा राघव तथा नामदेव नामक दो ब्राह्मणों को बुन्देरा नामक ग्राम दान में देने का उल्लेख है। **हीरालाल—ए० इ० भाग १९, पृ० २०९; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५२८-५३३; भण्डारकर सूची, क्रमांक २०३१; हीरालाल सूची, क्रमांक २०१।**

८१६. कुगदा (बिलासपुर)

पृथ्वीदेव द्वितीय के शासन काल का कलचुरि संवत् ८९३ का खण्डित शिलालेख, जिसमें रत्नदेव द्वितीय तथा वल्लभराज का नाम पढ़ा जा सकता है। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २११; कीलहार्न—इ० ए० भाग २०, पृ० ८४; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ४४६-४४९; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२३१; हीरालाल सूची, क्रमांक २१९।**

८१७. कोठारी (बिलासपुर)

अस्पष्ट तथा खण्डित शिलालेख जिसमें सम्भवतः रतनपुर के कलचुरि राजाओं का उल्लेख है। **हीरालाल सूची, क्रमांक २२१।**

८१८. कोनी (बिलासपुर)

पृथ्वीदेव द्वितीय के शासन काल का (कलचुरि) संवत ९०० का शिलालेख, जिसमें

पृथ्वीदेव के सर्वाधिकारिन् पुरुषोत्तम द्वारा शिवपंचायतन मन्दिर निर्माण तथा मन्दिर को कुछ भूमि दान करने का उल्लेख है। **मिराशी—ए० इ० भाग २७, पृ० २७६; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ४६३-४७३।**

८१९ कोसगईं (बिलासपुर)

(अ) वाहर का तिथि रहित शिलालेख, जिसमें युद्ध में पठानों को पराजित करने का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २१४; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५५७-५६३; हीरालाल सूची, क्रमांक २१०।**

(आ) वाहर के शासन काल का (विक्रम) संवत् १५७० का शिलालेख जिसे वाहर के सामन्त घाटम द्वारा अपने श्वसुर यश के युद्ध में मृत्यु को प्राप्त होने की स्मृति में उत्कीर्ण किया गया था। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २१४; मिराशी— क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५६३-५६८; हीरालाल सूची, क्रमांक २१०।**

८२०. खरोद (बिलासपुर)

रत्नदेव द्वितीय के शासन काल का चेदि संवत् ९३३ का शिलालेख जिसमें रत्नदेव के प्रधानमन्त्री गंगाधर द्वारा दिये गये विभिन्न दानों का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २०१ तथा भाग १७, पृ० ४३; कीलहार्न—इ० ए० भाग २२, पृ० ८२; भण्डारकर—प्र० रि० आ० स० वे० इ० १९०३-०४, पृ० ५३; चक्रवर्ती—ए० इ० भाग २१, पृ० १५९; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५३३-४३; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२४९; हीरालाल सूची, क्रमांक १९८।**

८२१. घोटिया (रायपुर)

पृथ्वीदेव द्वितीय का (कलचुरि) संवत् १००० (?) (९००) का ताम्रपत्र, जिसमें संक्रान्ति के अवसर पर ब्राह्मण गोपाल को सागत्त मंडल में स्थित गोठदा नामक ग्राम दान करने का उल्लेख है। **हीरालाल—इ० ए० भाग ५६, पृ० ४१; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ४७८-८३; हीरालाल सूची, क्रमांक १९५।**

८२२. डैकोनी (बिलासपुर)

पृथ्वीदेव द्वितीय का (कलचुरि) संवत् ८९० का ताम्रपत्र जिसमें पृथ्वीदेव द्वारा चन्द्र-ग्रहण के अवसर पर ब्राह्मण विष्णु को मध्यमण्डल में स्थित बुदुकुनी नामक ग्राम दान करने का उल्लेख है। **मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ४४३-४४६।**

८२३. पारगाँव (रायपुर)

(अ) रत्नदेव द्वितीय का कलचुरि संवत् ८८५ का ताम्रपत्र, जिसमें रत्नदेव द्वारा सूर्य ग्रहण के अवसर पर पद्मनाभ नामक ब्राह्मण को वोडला नामक ग्राम दान करने का उल्लेख किया गया है। **मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ६२३-६२६।**

(आ) पृथ्वीदेव द्वितीय का (कलचुरि) संवत् ८९७ का ताम्रपत्र, जिसमें पृथ्वीदेव द्वारा अपने

पिता के श्राद्ध करने के अवसर पर कोशल में स्थित वडदा नामक ग्राम ब्राह्मण पद्मनाभ को दान करने का उल्लेख है। **मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५४३।**

८२४. पालि (बिलासपुर)

जाजल्लदेव प्रथम के चार लेख। ये प्रत्येक लेख एक-एक पंक्ति के हैं तथा इनमें जाजल्लदेव द्वारा किये हुए किसी कीर्ति का उल्लेख है। **भण्डारकर—प्र० रि० आ० स० वे० इ० १६०३-०४, पृ० ५२; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ४१७-१८; हीरालाल सूची, क्रमांक २०७।**

८२५. पेन्ड्राबन्ध (रायपुर)

प्रतापमल्ल का (कलचुरि) संवत् ६६५ का ताम्रपत्र, जिसमें प्रतापमल्ल द्वारा मकर-संक्रान्ति के अवसर पर ब्राह्मण सत्यसाधार को अनर्घमण्डल में स्थित कायठा नामक ग्राम दान करने का उल्लेख है। **मिराशी—ए० इ० भाग २३, पृ० १; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५४३-५४६।**

८२६. बिलैगढ़ (रायपुर)

(अ) पृथ्वीदेव द्वितीय का (कलचुरि) संवत् ८६६ का ताम्रपत्र, जिसमें पृथ्वीदेव द्वारा सूर्य-ग्रहण के उपलक्ष में एवडिमण्डल में स्थित पंडरतलाई नामक ग्राम को देल्हूक नामक ब्राह्मण को दान में देने का उल्लेख है। **मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ४५८-६२।**

(आ) प्रतापमल्ल का (कलचुरि) संवत् ६६६ का ताम्रपत्र, जिसमें प्रतापमल्ल द्वारा चन्द्र-ग्रहण उपलक्ष में ब्राह्मण हरिदास को सिरला नामक ग्राम दान में देने का उल्लेख है। **मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५४६-५५४।**

८२७. मल्लार (बिलासपुर)

(अ) जाजल्लदेव द्वितीय के शासन काल का (कलचुरि) संवत् ६१६ का शिलालेख, जिसमें ब्राह्मण सोमराज द्वारा शिवमन्दिर निर्माण का उल्लेख है। **कीलहार्न—ए० इ० भाग १, पृ० ३६; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५१२-१८; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२४१; हीरालाल सूची, क्रमांक २०६।**

(आ) अष्पष्ट शिलालेख, जिसमें चेदि देश, मल्लाल तथा कल्हण का नाम पढ़ा जा सकता है। **हीरालाल सूची, क्रमांक २२०; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८६६।**

८२८. महामदपुर (बिलासपुर)

पृथ्वीदेव द्वितीय के शासन काल का शिलालेख, जिसमें उसके भाई अकालदेव का

उल्लेख किया गया है । **कीलहार्न—इ० ए० भाग २०, पृ० ८४; भण्डारकर सूची, क्रमांक १५८०; हीरालाल सूची, क्रमांक २०५ ।**

८२९. **रतनपुर (बिलासपुर)**

(अ) जाजल्लदेव प्रथम का (कलचुरि) संवत् ८६६ का शिलालेख, जिसमें जाजल्लदेव द्वारा संस्थापित जाजल्लपुर नगर में मठ, उद्यान तथा तालाब निर्माण का उल्लेख है । इस नगर में निर्मित एक मन्दिर को जाजल्लदेव द्वारा सिरूली, अर्जुनकोणसरण तथा कुछ अन्य ग्राम तथा मठ को कुछ पाटल वृक्ष दान करने का उल्लेख है । **कीलहार्न—ए० इ० भाग १, पृ० ३३; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ४०९-४१७; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२३०; हीरालाल सूची, क्रमांक १९६ ।**

(आ) पृथ्वीदेव द्वितीय के शासन काल का कलचुरि संवत् ९१० का खण्डित शिलालेख, जिसमें पृथ्वीदेव के सामन्त वल्लभराज द्वारा विभिन्न समय तथा स्थानों पर किये गये धार्मिक कार्यों का उल्लेख । **क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ७६; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ४९५-५०१; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२३९; हीरालाल सूची, क्रमांक २२५ ।**

(इ) पृथ्वीदेव द्वितीय के शासन काल का (कलचुरि) संवत् ९१५ का शिलालेख, जिसमें पृथ्वीदेव के सामन्त ब्रह्मदेव द्वारा विभिन्न स्थानों में किये गये पुण्य कार्यों का उल्लेख है । **जेन्किन्स—ए० रि० भाग १५, पृ० ५०४-०५; कीलहार्न—ए० इ० भाग १, पृ० ३३ तथा भाग ५, परिशिष्ट ६०; मिराशी—ए० इ० भाग २६, पृ० २५५ तथा क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५०१-५११; हीरालाल सूची, क्रमांक २११; भण्डारकर सूची, क्रमांक १.२३० ।**

(ई) पृथ्वीदेव द्वितीय के शासन काल का (विक्रम) संवत् १२०७ का शिलालेख, जिसमें देवगण द्वारा सांबा नामक स्थान पर शिवमन्दिर निर्माण का उल्लेख है । **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २१५; मित्रा—ज० ए० सो० ब० भाग ३२, पृ० २७७-८७; कीलहार्न—ए० इ० भाग १, पृ० ४५; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ४८३-४९०; भण्डारकर सूची, क्रमांक ४२१; हीरालाल सूची, क्रमांक १९७ ।**

(उ) वाहरेन्द्र के शासन काल का (विक्रम) संवत् १५५२ का शिलालेख, जिसमें कोकास वंश के सूत्रधार छितकु की प्रशंसा की गई है : **जेन्किन्स—ए० रि० भाग १५, पृ० ५०५; क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २१६; भण्डारकर—प्र० रि० आ० स० वे० इ० १९०३-०४, पृ० ५२; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५५४-५७; हीरालाल सूची, क्रमांक २०९ ।**

(ऊ) वाहरेन्द्र का तिथि रहित शिलालेख, जिसमें रत्नपुर में एक हजार अश्व तथा साठ हस्ति युक्त सेना के रहने का उल्लेख है । **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २१६;**

भण्डारकर—प्र० रि० आ० स० वे० इ० १९०३-०४, पृ० ५२; **मिराशी**— क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५५४-५७; **हीरालाल सूची**, क्रमांक २०९।

८३०. **राजिम (रायपुर)**

पृथ्वीदेव द्वितीय के शासन काल का कलचुरि संवत् ८९६ का शिलालेख, जिसमें पृथ्वीदेव के सामन्त जगपाल द्वारा एक राम के मन्दिर का निर्माण तथा देवता के नैवेद्य के सहायतार्थ शल्मलीय नामक ग्राम दान करने का उल्लेख है। **विल्सन**—ए० रि० भाग १५, पृ० ५१२; क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० ५१२ तथा भाग १७, पृ० १८; **कीलहार्न**—इ० ए० भाग १७, पृ० १३५; **मिराशी**—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ४५०-४५७; **भण्डारकर सूची**, क्रमांक १२३२; **हीरालाल सूची**, क्रमांक १७८।

८३१. **रायपुर (रायपुर)**

(अ) पृथ्वीदेव प्रथम का (कलचुरि) संवत् ८२१ का ताम्रपत्र, जिसमें उत्तरायण संक्रान्ति के अवसर पर पृथ्वीदेव द्वारा अपरमण्डल में स्थित असौठा नामक ग्राम ब्राह्मण जोगूक को दान करने का उल्लेख है। **मिराशी**—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ३९८-४०१।

(आ) पृथ्वीदेव द्वितीय के शासन काल का खण्डित शिलालेख, जिसमें पृथ्वीराज के सामन्त वल्लभराज द्वारा एक शिव मन्दिर निर्माण का उल्लेख तथा मन्दिर के लिये कुछ अन्य दान करने का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २११; **कीलहार्न**—इ० ए० भाग २०, पृ० ८४; **भण्डारकर**—प्र० रि० आ० स० वे० इ० १९०३-०४, पृ० ५२; **मिराशी**—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ४३६-४२; **भण्डारकर सूची**, क्रमांक १५८५; **हीरालाल सूची**, क्रमांक २०४।

८३२. **लाफ़ा (बिलासपुर)**

पृथ्वीदेव प्रथम का संवत् ८०६ का नकली ताम्रपत्र, जिसमें लुंगा नामक व्यक्ति को लंफा दुर्ग के १२० ग्रामों को दान करने का उल्लेख है। **हीरालाल**—ए० इ० भाग ९, पृ० २९५; **भण्डारकर सूची**, क्रमांक ११२४; **हीरालाल सूची क्रमांक** २२३।

८३३. **शिवरीनारायण (बिलासपुर)**

(अ) रत्नदेव द्वितीय का (कलचुरि) संवत् ८७८ का ताम्रपत्र, जिसमें रत्नदेव द्वारा ब्राह्मण नारायणशर्मण को चन्द्रग्रहण के अवसर पर अनर्घवल्ली विषय में स्थित तिणेरी नामक ग्राम दान करने का उल्लेख है। **पाण्डेय लो० प्र०**—इ० हि० क्वा० भाग ४, पृ० ३१-३४; **मिराशी**—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ४१९-२२; **हीरालाल सूची**, क्रमांक २१२।

(आ) जाजल्लदेव द्वितीय के शासन काल का चेदि संवत् ९१९ का शिलालेख, जिसमें आमणदेव द्वारा चन्द्रचूड़ा (शिव) के मन्दिर के सहायतार्थ चिंचेली नामक ग्राम दान

करने का उल्लेख है। इस मन्दिर के सम्मुख विकन्नदेव द्वारा दुर्गा के मन्दिर के निर्माण का भी उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग १७, चित्र २०; भण्डारकर—प्र० रि० आ० स० वे० इ० १६०३-०४, पृ० ५२-५३; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५१६-५२७; हीरालाल सूची, क्रमांक २०३।**

८३४. **सरखो (बिलासपुर)**

रत्नदेव द्वितीय का (कलचुरि) संवत् ८८० का ताम्रपत्र, जिसमें चन्द्रग्रहण के अवसर पर ब्राह्मण पद्मनाभ को अनर्घवल्ली मण्डल में स्थित चिंचातलाई नामक ग्राम दान करने का उल्लेख है। **पाण्डेय लो० प्र०—'माधुरी' भाग ५, पृ० ३१७-२२; मिराशी—ए० इ० भाग २२, पृ० १५६; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ४२३-२६; हीरालाल सूची, क्रमांक २१३।**

८३५. **हरचौका (सरगुजा)**

यात्रियों के दो स्तम्भ-लेख, जो कलचुरियों के शासन काल में उत्कीर्ण किये गये थे। **हीरालाल सूची, क्रमांक ३१३; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८६२।**

३—रायपुर के कलचुरि

८३६. **आरंग (रायपुर)**

कलचुरियों के रायपुर शाखा के अन्तिम शासक अमरसिंहदेव का वि० सं० १७९२ का ताम्रपत्र, जिसमें ठाकुर नन्दु तथा घासीराय को कर देने से छूट प्रदान करने का उल्लेख है। **नेलसन—रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (पुराना), पृ० ५६; भण्डारकर सूची, क्रमांक १०३४; हीरालाल सूची, क्रमांक १८१।**

८३७. **खलारी (रायपुर)**

हरिब्रह्मदेव के शासन काल का (वि०) सं० १४७० का शिलालेख, जिसमें देवपाल नामक मोची द्वारा खल्वाटिका में नारायण के मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १५७; कीलहार्न—ए० इ० भाग २, पृ० २२८; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५७५-५७९; हीरालाल सूची, क्रमांक १७९।**

८३८. **रायपुर (रायपुर)**

ब्रह्मदेव के शासन काल का (वि०) संवत् १४५८ का शिलालेख, जिसमें नायक हरिराज द्वारा रायपुर में हाटकेश्वर (शिव) के मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। **जेन्किन्स—ए० रि० भाग १५, पृ० ५०५; क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ७७; कीलहार्न—इ० ए० भाग १९, पृ० २६; वही, भाग २२, पृ० ८३; ए० इ० भाग २, पृ० २३०; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५६९; हीरालाल सूची, क्रमांक १८०।**

४—कलचुरि शासकों के सामंतों के अभिलेख तथा कलचुरि संवत् में उत्कीर्ण अन्य लेख

८३९. **अमरकंटक (शहडोल)**

(कलचुरि) संवत् ९२२ का मूर्ति-लेख, जिसमें मूर्ति को रत्नपुर के लेखनाध्यक्ष माधवाक्ष का होना बतलाया गया है। जेन्किन्स— ए० रि० भाग १५, पृ० ५०६; **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २३३; बनर्जी**—प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९२०-२१, पृ० ५५; **मिराशी**—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५८६-८७।

८४०. **इन्दौर (इन्दौर)**

(अ) वल्ख से प्रचलित महाराज स्वामिदास का (कलचुरि) संवत् ६७ का ताम्रपत्र, जिसमें स्वामिदास द्वारा ब्राह्मण मुण्ड को नगरिकापथक में स्थित दक्षिणवल्मिकतल्लवाटक नामक ग्राम में भूमि दान करने का उल्लेख है। **मिराशी**— ए० भ० ओ० रि० सो० भाग २५, पृ० १५९; **मिराशी**—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० ५-८; **भण्डारकर सूची** क्रमांक १२५९; **मजुमदार** र० च० ए० इ० भाग १५, पृ० २८९।

(आ) वल्ख से प्रचलित महाराज भुलुण्ड का (कलचुरि) संवत् १०७ का ताम्रपत्र, जिसमे ब्राह्मण कुसारक को दान में दी गई भूमि को स्वीकृति प्रदान करने का उल्लेख है। **मजुमदार** र० च०—ए० इ० भाग १५ पृ० २८९; **मिराशी**—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० ८-१०; **भण्डारकर सूची**, क्रमांक १२६६।

८४१. **उमरिया-पान (जबलपुर)**

कलचुरि संवत् ८२१ का अस्पष्ट शिलालेख। **हीरालाल सूची**, क्रमांक ७०।

८४२ **एरण (सागर)**

सेनापति श्रीधरवर्मन् का अभिलेख। **मिराशी**— प्रो० अ० इ० ओ० का० जयपुर; भा० इ० स० स०, वर्ष ३३, पृ० ३२—३८; **मिराशी**—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ६०५।

८४३. **कानाखेरा (विदिशा)**

महादण्डनायक शक श्रीधरवर्मन् का (कलचुरि) संवत् १०२ का शिलालेख, जिसमें श्रीधरवर्मन् द्वारा पुण्यार्थ एक कूप निर्माण का उल्लेख है। **बनर्जी**—प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९१७-१८, पृ० ३७; ए० इ० भाग १६, पृ० २३०; **मजुमदार** न० गो०—ज० ए० सो० ब० (नया), भाग १९ (१९२३), पृ० ३३७; म० सा० भाग १, पृ० ३९२; **मिराशी**— क० इ० इ० भाग ४, खण्ड-१, पृ० १३-१६।

८४४. **छपरी (रायपुर)**

वीरमदेव के मन्दिर में रखे विशाल मूर्ति पर उत्कीर्ण चार लेख। प्रथम लेख में जोगी

कान्हो का नाम उत्कीर्ण है। दूसरे लेख में राजा लक्ष्मणदेव, उसकी महाराज्ञी, राजकुमार तथा राजकुमारी का उल्लेख है। तीसरे लेख में मूर्ति का राणक गोपालदेव के शासन काल के (कलचुरि) संवत् ८४० में स्थापित होने का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ लेख में उमा-महेश्वर की मूर्ति के निर्माण का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ३४; मिराशी— क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५८०-८२; हीरालाल सूची, क्रमांक ३०४।**

८४५ **टोला (जबलपुर)**

कलचुरि संवत् ६०७ का अस्पष्ट मूर्ति-लेख। **हीरालाल सूची, क्रमांक ७०।**

८४६ **तेवर (जबलपुर)**

(अ) ऋणभदेव की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख जिसमें कलचुरि संवत् ९५१ की तिथि पड़ी है। **ख० वैं० पृ० १७५-७६।**

(आ) जैन-मूर्ति लेख, जिसमें कलचुरि संवत् की अस्पष्ट तिथि पड़ी है। **हीरालाल सूची, क्रमांक ५४।**

८४७. **पुजारीपाली (रायगढ़)**

गोपालदेव के शासन काल का शिलालेख, जिसमें गोपालदेव द्वारा किये गये विभिन्न धार्मिक कार्यों का उल्लेख है। **भण्डारकर— प्र० रि० आ० स० वे० इ० १९०३-०४, पृ० ४८; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५८८-५९४; हीरालाल सूची, क्रमांक ३११।**

८४८. **बड़वानी (धार)**

माहिष्मती से प्रचलित महाराज सुबन्धु का (कलचुरि) संवत् १६७ का ताम्रपत्र, जिसमें भूमि दान करने का उल्लेख है। **ओझा—एनुअल रिपोर्ट, राजपूताना म्यूजियम, अजमेर, १९२४-२५. पृ० २; हालदार—ए० इ० भाग १९, पृ० २६१; मिराशी— इ० हि० क्वा० भाग २१, पृ० ७९; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० १७-१९।**

८४९ **बाघ (धार)**

महाराज सुबन्धु का तिथि रहित ताम्रपत्र, जो माहिष्मती से प्रचलित किया गया था। इसमें कलायन विहार के आर्थिक प्रबन्ध के लिये दासिलकपल्ली नामक ग्राम के दान देने का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, क्रमांक १; मिराशी—इ० हि० क्वा० भाग २१, पृ० ७९; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, पृ० १९; विक्रम स्मृति ग्रन्थ, पृ० ६४९।**

८५०. **बोरिया (रायपुर)**

(अ) महाराणक जसराजदेव के शासन काल का (कलचुरि) संवत् ९१० का मूर्ति-लेख,

जिसमें महामात्य ठाकुर माल्तु द्वारा मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ४४; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५८५-८६; हीरालाल सूची, क्रमांक ३०६।

(आ) जसराजदेव के शासन काल का मूर्ति-लेख, जिसमें मूर्ति को जागु के होने का उल्लेख किया गया है। क० आ० स० इ० रि० भाग १७ पृ० ४४; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५८५-८६; हीरालाल सूची, क्रमांक ३०६।

८५१. शिवरीनारायण (बिलासपुर)

(कलचुरि) संवत् ८९८ का मूर्ति-लेख, जिसमें मूर्ति को संग्रामसिंह के होने का उल्लेख है। जेन्किन्स—ए० रि० भाग १५, पृ० ५०५-६; क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ८६ तथा १११; वही, भाग १७, पृ० ७१; 'इण्डियन एराज़' पृ० ६१; इ० ए० भाग १७, पृ० २१६; ए० इ० भाग ९, पृ० १३०; भण्डारकर—प्र० रि० आ० स० वे० इ० १९०३-०४, पृ० ५३; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५८२-८४; हीरालाल सूची, क्रमांक २१८।

८५२. साहसपुर (दुर्ग)

(कलचुरि) संवत् ९३४ का सामन्त यशोराज का मूर्ति-लेख, जिसमें यशोराज तथा उसके परिवार के सदस्यों का उल्लेख है। जेन्किस—ए० रि० भाग १५, पृ० ५०६; क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ४२-४४; कीलहार्न—इ० ए० भाग १७, पृ० २१७; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५९५-९६; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२५०।

ङ—चक्रकोट (बस्तर) के छिंदक नाग वंश के शासकों के अभिलेख

८५३. एर्राकोट (बस्तर)

शक संवत् ९४५ का नागवंशी शासक नृपतिभूषण का अपूर्ण तेलगु शिलालेख। भण्डारकर सूची, क्रमांक १०८९; हीरालाल सूची क्रमांक २८५।

८५४ कुरुसपाल (बस्तर)

(अ) शक संवत् १०१९ का नागवंशी शासक सोमेश्वरदेव के शासन काल का शिलालेख जिसमें स्थानीय प्रजा द्वारा भगवान लोकेश्वर को दीपदान करने के लिये ११ गद्याणक के चन्दा करने का उल्लेख है। हीरालाल—ए० इ० भाग १०, पृ० ३८; भण्डारकर सूची, क्रमांक ११०१; हीरालाल सूची, क्रमांक २७४।

(आ) नागवंशी महाराज सोमेश्वरदेव के शासन काल का शिलालेख, जिसमें सोमेश्वरदेव की द्वितीय रानी धारणमहादेवी द्वारा कलम्ब ग्राम के निकट स्थित भूमि को भगवान कामेश्वर (शिव) को दान करने का उल्लेख है। हीरालाल—ए० इ० भाग ९, पृ०

१६३ तथा भाग १०, पृ० ३१; भण्डारकर सूची, क्रमांक १६०७; हीरालाल सूची, क्रमांक २७५।

(इ) महाराज सोमेश्वरदेव की रानी धारणमहादेवी द्वारा भगवान कामेश्वरदेव को भूमि दान करने का उल्लेख करते हुए एक अन्य शिलालेख, जो खण्डित है। **हीरालाल—ए० इ० भाग १०, पृ० ३५; भण्डारकर सूची, क्रमांक १६०७; हीरालाल सूची, क्रमांक २७६।**

(ई) सोमेश्वरदेव के शासन काल का खण्डित शिलालेख, जिसमें नागवंशी शासकों की वंशावली दी हुई है तथा सोमेश्वरदेव की उपलब्धियों का वर्णन है। **हीरालाल—ए० इ० भाग १०, पृ० २५ तथा भाग ९, पृ० २८; हीरालाल सूची, क्रमांक २७३; भण्डारकर सूची, क्रमांक १६०८।**

८५५. गढ़िया (बस्तर)

(अ) शक संवत् १०१९ का नागवंशी शासक सोमेश्वरदेव का तेलगु शिलालेख जो अस्पष्ट है। सम्भवत: इसमें किसी मन्दिर को कुछ दान देने का उल्खेख है। **हीरालाल सूची, क्रमांक २७७।**

(आ) नागवंशी राजभूषण सोमेश्वरदेव का खण्डित तथा अस्पष्ट तेलगु शिलालेख। **हीरालाल सूची, क्रमांक २९३।**

८५६. जटनपाल (बस्तर)

शक संवत् ११४० का महाराज नरसिंहदेव के शासन काल का शिलालेख, जिसमें नायक कामा द्वारा भूमि दान करने का उल्लेख है। **हीरालाल—ए० इ० भाग १०, पृ० ४२; भण्डारकर सूची, क्रमांक ११११; हीरालाल सूची, क्रमांक २८०।**

८५७. टेमरा (बस्तर)

शक संवत् १२४६ का महाराज हरिश्चन्द्रदेव के शासन काल का सती-प्रस्तर लेख, जिसमें उसके एक अधिकारी की पत्नी द्वारा सती ग्रहण करने का उल्लेख है। **ए० इ० भाग ९, पृ० ३९-४०; भण्डारकर सूची, क्रमांक १११८; हीरालाल सूची, क्रमांक २८२।**

८५८. दन्तेवाड़ा (बस्तर)

(अ) शक संवत् ९८४ का तेलगु शिलालेख जिसमें नागवंशी राजा (जिसका नाम लेख में पढ़ा नहीं जा सकता) द्वारा बोरिगाम नामक ग्राम भैरव के मन्दिर के लिये दान करने का उल्लेख है। **भण्डारकर सूची, क्रमांक १०९६; हीरालाल सूची, क्रमांक २८३।**

(आ) शक संवत् ११४७ का जगदेकभूषण महाराज नरसिंहदेव का खण्डित तेलुगु स्तम्भ-लेख। **हीरालाल—ए० इ० भाग १०, पृ० ४०; भण्डारकर सूची, क्रमांक १११३; हीरालाल सूची, क्रमांक २७९।**

(इ) छिन्दकनाग वंश के श्रीराजभूषण महाराज की कनिष्ठ बहिन मासकदेवी द्वारा प्रजा के लिये प्रचलित अधिसूचना, जो प्रस्तर-स्तम्भ पर उत्कीर्ण है तथा जिसमें स्थानीय कर वसूल करने की प्रणाली का उल्लेख किया गया है। **हीरालाल सूची, क्रमांक २८४।**

८५९. **नारायनपाल (बस्तर)**

शक संवत् १०३३ का नागवंशी गुण्डमहादेवी का शिलालेख, जिसमें भगवान नारायण को नारायणपुर नामक ग्राम तथा भगवान लोकेश्वर को कुछ भूमि दान करने का उल्लेख है। **हीरालाल— ए० इ० भाग ९, पृ० ३११, १६१, १६२; हीरालाल सूची, क्रमांक २७२।**

८६०. **पोटिनार (बस्तर)**

शक संवत् ९८३ का महाराज धारावर्ष जगदेकभूषण के शासन काल का तेलुगु भाषा का शिलालेख, जिसमें अम्मग्राम के शासक सामन्त महाराज चन्द्रादित्य द्वारा एक मन्दिर तथा तालाब बनाने का उल्लेख है तथा उनके लिये मट्टिनाडु नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख है। **हीरालाल सूची, क्रमांक २७०।**

८६१. **बारसूर (बस्तर)**

(अ) शक संवत् ९८३ का छिन्दक नाग वंश के शासक महाराज धारावर्ष जगदेकभूषण के शासन काल का तेलुगु भाषा का शिलालेख, जिसमें अम्मगाम के सामन्त महाराज चन्द्रादित्य द्वारा चन्द्रादित्य-समुद्र नामक तालाब के तट पर शिवमन्दिर निर्माण तथा उसके लिये गोवर्धनाण्डु नामक ग्राम दान करने का उल्लेख है। **एनुवल रिपोर्ट आन एपिग्राफी १९०८-०९, पृ० १११; भण्डारकर सूची, क्रमांक १०९४; हीरालाल सूची, क्रमांक २६९।**

(आ) शक संवत् ११३० (१०३०) का नागवंश के सोमेश्वरदेव के शासन काल का तेलुगु शिलालेख, जिसमें उसकी महारानी गंगमहादेवी द्वारा निर्मित दो शिव मन्दिरों के लिए केरमरूक नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख है। **ग्लासफर्ड – 'रिपोर्ट आन दी डिपेन्डेन्सि आफ़ बस्तर' (१८६२), पृ० ६२; कृष्ण शास्त्री—ए० इ० भाग ३, पृ० ३१६; हीरालाल—ए० इ० भाग ९, पृ० १६२; मद्रास रिपोर्ट आन एपिग्राफी (१९०८-०९), पृ० १११; भण्डारकर सूची, क्रमांक २७१।**

८६२. **भैरमगढ़ (बस्तर)**

नागवंशी महाराज जगदेकभूषण का अपूर्ण तेलुगु शिलालेख, जिसमें उसके सामन्त रंगयादेव का उल्लेख है। **भण्डारकर सूची, क्रमांक १८८९; हीरालाल सूची, क्रमांक २८९।**

८६३. **राजापुर (बस्तर)**

शक संवत् ९८७ का छिन्दक नागवंश के मधुरांतकदेव का ताम्रपत्र, जिसमें भ्रमर-

कोट्यमण्डल में स्थित राजपुर ग्राम को दान करने का उल्लेख है। **हीरालाल—ए० इ० भाग ९, पृ० १७९; भण्डारकर सूची, क्रमांक १०९७; हीरालाल सूची, क्रमांक २७८।**

८६४. **सुनारपाल (बस्तर)**

तिथिरहित शिलालेख, जिसमें नागवंशी जयसिंहदेव की साम्राज्ञी द्वारा अधकाड नामक ग्राम के दान करने का उल्लेख है। हीरालाल—**ए० इ० भाग ९, पृ० १६३; वही, भाग १०, पृ० ३५; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८८८; हीरालाल सूची, क्रमांक २८१।**

ढ—कवर्धा के नागवंशी शासकों के अभिलेख

८६५. **कवर्धा (दुर्ग)**

स्थानीय राम मन्दिर में लगे दो स्तम्भों पर उत्कीर्ण सं० १४१४ तथा १४२२ के सती-स्तम्भ लेख। **हीरालाल सूची, क्रमांक ३०७।**

८६६. **चौरा (दुर्ग)**

मड़वा नामक मन्दिर के निकट पड़ा वि० सं० १४०६ का विशाल शिलालेख जिसमें तत्कालीन राजा रामचन्द्र द्वारा शिव-मन्दिर निर्माण करने का तथा उसमें गाँव लगा देने का उल्लेख है। राजा रामचन्द्र ने हैहयवंश की राजकुमारी अम्बिकादेवी से विवाह किया था, जिससे उसके अर्जुन तथा हरिपाल नामक पुत्र हुए। इस शिलालेख में नाग-वंश की उत्पत्ति के बारे में बतलाया गया तथा नागवंशी राजाओं की पूर्ण वंशावली दी है। **भण्डारकर सूची, क्रमांक ७०७; हीरालाल सूची क्रमांक ३०५।**

८६७. **छपरी (दुर्ग)**

(अ) बोरमदेव के मन्दिर में एक विशालकाय मूर्ति पर उत्कीर्ण चार लेख जिनमें—(१) जोगी कान्हो का नाम है जिसकी वह मूर्ति कही गयी है। (२) राजा लक्ष्मणदेव, उसके पुत्र तथा कन्या का उल्लेख है। (३) राणक गोपालदेव के शासन काल में कलचुरि संवत् ८४० का उल्लेख है तथा (४) उमा-महेश्वर के मूर्ति के निर्माण का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ३४; मिराशी क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५८०; हीरालाल सूची, क्रमांक ३०४।**

(आ) वि० सं० १४३० तथा १४४५ के दो सती-स्तम्भ लेख। **क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ४१; हीरालाल सूची, क्रमांक ३०८।**

८६८. **पुजारीपाली (रायगढ़)**

गोपालदेव के शासनकाल का शिलालेख जिसमें वाराहीदेवी की स्तुति की गयी है तथा गोपाल द्वारा विभिन्न दान देने का उल्लेख है। **भण्डारकर—प्र० रि० आ० स०**

वे० इ० १९०३-०४, पृ० ४८; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५८८; हीरालाल सूची, क्रमांक ३११।

८६९. बोरिया (दुर्ग)

(अ) कलचुरि संवत् ९१० का महाराणक जसराजदेव के शासन काल का मूर्ति-लेख जिसमें प्रधानमन्त्री माल्तु द्वारा मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग १८, पृ० ४४; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५८५-८६; हीरालाल सूची, क्रमांक ३०६।

(आ) जसराजदेव के शासन काल का मूर्ति-लेख जिसमें मूर्ति को एक सैनिक अधिकारी जागु के होने का उल्लेख किया गया है। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ४४; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५८५-८६ हीरालाल सूची, क्रमांक ३०६।

(इ) लगभग १४वीं शताब्दी ईसवी के दो अस्पष्ट सती-स्तम्भ लेख। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ४१; हीरालाल सूची, क्रमांक ३०८।

८७०. साहसपुर (दुर्ग)

कलचुरि संवत् ९३४ का यशोराज के शासन काल का मूर्ति-लेख जिसमें उसकी, साम्राज्ञी, दो राजकुमार तथा राजकुमारी का उल्लेख है। ए० रि० भाग १५, पृ० ५०६; क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ४२-४४; कीलहार्न—इ० ए० भाग १७, पृ० २१७; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५९५; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२५०।

ण—कांकेर के सोमवंशी शासकों के अभिलेख

८७१. कांकेर (बस्तर)

(अ) शक संवत् १२४२ का भानुदेव के शासन काल का शिलालेख, जिसमें नायक वासुदेव द्वारा तीन मन्दिर, एक भवन तथा दो तालाब बनाने का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १४७; ए० रि० भाग १५, पृ० ५०५; ए० इ० भाग ९, पृ० १२३; हीरालाल सूची, क्रमांक २९९।

(आ) चन्द्रसेनदेव का शिलालेख जिसमें जोगीकसा नामक ग्राम दान करने का उल्लेख है। भण्डारकर सची, क्रमांक १८९३; हीरालाल सूची, क्रमांक ३०२।

८७२. गुरूर (दुर्ग)

काकरय के सोमवंशी शासक राणक वाघराज के शासन काल का स्तम्भ-लेख, जिसमें एक नायक द्वारा काल-भैरव के मन्दिर के नाम कुछ भूमि दान करने का उल्लेख है। इ० ए०, १९२६, पृ० ४४; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८९१; हीरालाल सूची, क्रमांक २३५।

८७३. **तहनकापार (बस्तर)**

(अ) काकैर से प्रचलित कलचुरि संवत् ९६५ का सोमवंशी शासक महामाण्डलिक पम्पराजदेव का ताम्रपत्र, जिसमें जैपरा तथा चिखली नामक दो ग्रामों को ब्राह्मण लक्ष्मीधर को दान करने का उल्लेख है। **ए० इ० भाग ६, पृ० १६६; मिराशी— क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५९६-५९९; हीरालाल सूची, क्रमांक ३००।**

(आ) पाड़ी से प्रचलित कलचुरि संवत् ९६६ का सोमवंशी शासक महमांडलिक परम्पराजदेव का ताम्रपत्र जिसमें पम्पराज द्वारा कोंगरा तथा राजकुमार बोपदेव द्वारा आण्डलि ग्रामों को गैता लक्ष्मीधर को दान करने का उल्लेख है। **ए० इ० भाग ९, पृ० १६६; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५९९; हीरालाल सूची, क्रमांक ३०१।**

८७४. **देवकूट (रायपुर)**

लगभग १२वीं-१३वीं शताब्दी ईसवी का वाघराज का शिलालेख। **रायपुर गजेटियर (पुराना), पृ० २८०; ए० इ० भाग ९, पृ० १८५; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८९०; हीरालाल सूची, क्रमांक १९१।**

८७५. **सिहावा (रायपुर)**

काकैर के कर्णराज का शक संवत् १११४ का शिलालेख, जिसमें देवह्रद नामक स्थान पर ६ मन्दिरों के निर्माण का उल्लेख है। **ए० इ० भाग ९, पृ० १८२; क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० १८५; ए० रि० भाग १५, पृ० ५०५; हीरालाल सूची, क्रमांक १८२।**

त—देवगिरि के यादव शासकों के अभिलेख

८७६. **मंझारी (बालाघाट)**

यादव शासक जैतुगि द्वितीय (?) के शासन काल का शक संवत् ११८१ (?) का **ताम्रपत्र। हीरालाल सूची, क्रमांक २९।**

८७७. **लांजी (बालाघाट)**

यादव रामनायक का स्तम्भ-लेख। सम्भवत: यह देवगिरि के शासक रामचन्द्र का लेख है। **हीरालाल सूची, क्रमांक २८।**

थ—अणहिलपाटक के चौलुक्य शासकों के अभिलेख

८७८. **उज्जैन (उज्जैन)**

अणहिलपाटक के चौलुक्य जयसिंह का वि० सं० ११९५ का अभिलेख। **भण्डारकर —प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९१२-१३, पृ० ५५; इ० ए० भाग ४२, पृ० २५८; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक १६ तथा १९७९ क्रमांक ३३; भण्डारकर सूची, क्रमांक २४०।**

८७९. उदयपुर (विदिशा)

(अ) उदयेश्वर मन्दिर की महराब पर उत्कीर्ण अणहिलपाटक के चौलुक्य महाराज कुमारपालदेव का वि० सं० १२२० का अभिलेख जिसमें 'ऊदलेश्वर देव' के मन्दिर में दिये गये दान का उल्लेख है। कीलहार्न—इ० ए० भाग १८, पृ० ३४३; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक १०९; भण्डारकर सूची, क्रमांक ३१५।

(आ) उदयेश्वर मन्दिर की पूर्वी महराब पर उत्कीर्ण वि० सं० १२२२ का अभिलेख जिसमें ठक्कुर श्री चाहड़ (सम्भवतः कुमारपालदेव का सेनापति) द्वारा सागंभट्ट ग्राम के आधे भाग के दान का उल्लेख है। इ० ए० भाग १८, पृ० ३४४; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक १०८ तथा संवत १९८० क्रमांक ९; भण्डारकर सूची, क्रमांक ३२२।

(इ) वि० सं० १२२९ का चौलुक्य अजयपालदेव का उदयेश्वर मन्दिर अभिलेख जिसमें उमरथा नामक ग्राम देने का उल्लेख है। ज० ए० सो० ब० भाग ३१, पृ० १२५; इ० ए० भाग १८, पृ० ३४७; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक १०४; भण्डारकर सूची, क्रमांक ३५५।

८७९/१ बिलपाक (रतलाम)

जयसिंह सिद्धराज का वि० सं० ११९६ का अभिलेख। स० अ० इ० ओ० का० २६ (उज्जैन-१९७२) पृ० १४४।

द—मन्दसौर के गुहिल शासकों के अभिलेख

८८०. जीरण (मन्दसौर)

(अ) वि० सं० १०५३ का स्तम्भ-लेख जिसमें गुहिल वंश के विग्रहपाल का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, क्रमांक २५।

(आ) वि० सं० १०६५ का स्तम्भ-लेख जिसमें विग्रहपाल की पत्नी तथा चाहमान वंश के श्री अशोय्य का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सवत् १९७०, क्रमांक २९।

(इ) वि० सं० १०६५ का स्तम्भ-लेख, जिसमें विग्रहपाल, श्री देव, श्री वच्छराज, नागह्रद, भरुकच्छ आदि का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, क्रमांक २३।

(ई) वि० सं० १०६५, का स्तम्भ-लेख जिसमें विग्रहपाल, वैरिसिंह तथा श्री चाहिल का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, क्रमांक २६।

(उ) वि० सं० १०६५ का स्तम्भ-लेख जिसमें विग्रहपाल आदि का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, क्रमांक २८।

(ऊ) वि० सं० १०६५ का मन्दिर के सामने छत्री पर उत्कीर्ण लेख, जिसमें विग्रहपाल की पत्नी तथा लक्ष्मण का उल्लेख है। वही, क्रमांक २४।

घ–कच्छपघात् शासकों के अभिलेख

८८१. इंगणोद (इन्दौर)

(कच्छपघात्) शासक विजयपालदेव का वि० सं ११९० का अभिलेख। इ० ए० भाग ६, पृ० ५५; ज० ब० ब्रा० र० ए० सो० (नया) भाग २, पृ० १८२; भण्डारकर सूची, क्रमांक २२९।

८८२. कुलवर (गुना)

वि० सं० १३२९ का सती-स्तम्भ लेख जिसमें कच्छपघात् सिंहदेव की रानी कुवलयदेवी तथा कुन्तादेवी के सती होने का उल्लेख है। मृत व्यक्ति के भाई देवपालदेव ने स्तम्भ बनवाया था। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, क्रमांक ४१।

८८३. ग्वालियर (ग्वालियर)

(अ) वि० सं० १०३४ का जैन-मूर्ति लेख जिसमें कच्छपघात् शासक महाराजाधिराज श्री वज्रदामन का उल्लेख है। हाल—ज० ए० सो० ब० भाग ३०, पृ० ३८३; मित्रा—ज० ए० सो० ब० भाग ३१, पृ० ३९३; पूर्णचन्द्र नाहर—जैन लेख क्रमांक १४३१; भण्डारकर सूची, क्रमांक ८६।

(आ) सास-बहू के मन्दिर में दो प्रस्तरों पर उत्कीर्ण कच्छपघात् महिपालदेव का वि० सं० ११५० का अभिलेख जिसमें पद्मनाभ (विष्णु) के मन्दिर का निर्माण तथा दान आदि का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३५७; कीलहार्न – इ० ए० भाग १५, पृ० ३६; प्राचीन लेखमाला, भाग १, पृ० ८१; पूर्णचन्द्र नाहर—जैन अभिलेख, क्रमांक १४२६; आ० ग्वा० पृ० ८०; ग्वा० पु० रि० संवत १९८४, क्रमांक १२ तथा १३; भण्डारकर सूची, क्रमांक १५६।

(इ) कच्छपघात् महिपालदेव के उत्तराधिकारियों का वि० सं० ११६१ का खण्डित अभिलेख। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३५४; मित्रा – ज० ए० सो० ब० भाग ३१, पृ० ४१८; इ० ए० भाग १५, पृ० २०२; भण्डारकर सूची, क्रमांक १६९।

८८४. तिलोरी (ग्वालियर)

लगभग ११वीं शताब्दी के कई स्तम्भ-लेख जिन पर कछवाहा तथा चौहान राजाओं की वंशावली दी हुई है। ग्वा० पु० रि० १९१७-१८।

८८५. दुबकुण्ड (शिवपुरी)

विशाल जैन मन्दिर के खण्डहरों से प्राप्त एक बड़े शिलाखण्ड पर उत्कीर्ण वि० सं० ११४५ का अभिलेख जिसमें कच्छपघात् महाराज विक्रमसिंह का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग २०, पृ० ९९; ज० र० ए० सो० ब० भाग १० पृ० २४१; कीलहार्न—ए० इ० भाग २, पृ० २३७; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३ क्रमांक ५९; भण्डारकर सूची, क्रमांक १५१।

८८६. **नरवर (शिवपुरी)**

कच्छपघात् वीरसिंहदेव का वि० सं० ११७७ का ताम्रपत्र । **ज० अ० ओ० सो० भाग ६, पृ० ५४२; भण्डारकर सूची, क्रमांक २०६ ।**

न—नरवर के यज्वपाल शासकों के अभिलेख

८८७. **उदयपुर (विदिशा)**

उदयेश्वर मन्दिर के पूर्वी मेहराब पर उत्कीर्ण वि० सं० १३०० का अभिलेख, जिसमें चाहड़ के दान का उल्लेख है । **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक ११४ ।**

८८८. **कदवाहा (गुना)**

वि० सं० १४५१ का जैन मन्दिर प्रस्तर-लेख जिसमें नरवर के यज्वपाल चाहड़ के वंश का वर्णन है । **ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१, क्रमांक ६ ।**

८८९. **तिलोरी (मोरेना)**

वि० सं० १४(०२) का सती-प्रस्तर लेख जिसमें यज्वपाल श्री गणपतिदेव तथा तिलोरी ग्राम का उल्लेख है । **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक ७ ।**

८९०. **नरवर (शिवपुरी)**

(अ) वि० सं० १३३८ का शिलालेख जिसमें चाहड़ के वंशज नलपुर के शासक यज्वपाल गोपालदेव के शासन काल में आशादित्य कायस्थ द्वारा एक बावड़ी के निर्माण एवं वृक्षारोपण का उल्लेख है । **ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, क्रमांक ९८ ।**

(आ) वि० सं० १३४१ का कूप-लेख, जिसमें सेवायिक ग्राम निवासी राम द्वारा जज्वपेल्ल महाराज गोपाल के शासन काल में बावड़ी के निर्माण का उल्लेख है । **ग्वा० पु० रि० संवत् १९९४, क्रमांक १५ ।**

(इ) जज्वपेल्लवंशीआसल्लदे का अधूरा शिलालेख, जिसमें आसल्लदेव तक इस वंश की वंशावली दी हुई है । **ग्वा० पु० रि० संवत् १९८२, क्रमांक १ ।**

(ई) एक अपूर्ण यज्वपाल अभिलेख । अस्पष्ट । **आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग २५, पृ० १९३ ।**

(उ) एक खण्डित अभिलेख जिसमें यज्वपाल राजाओं की वंशावली दी हुई है । **ए० इ० भाग ३३, पृ० ६५-७० ।**

८९१. **नरवरगढ़ (शिवपुरी)**

वि० सं० १३५५ का शिलालेख, जिसमें नलपुर के यज्वपाल गणपति के शासन काल तथा उनके पूर्वजों का उल्लेख है । पाल्हदेव कायस्थ द्वारा शिव मन्दिर, तालाब, वाटिका आदि निर्माण का उल्लेख है । **क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३१५; कीलहार्न—इ० ए० भाग २२, पृ० ८१ तथा भाग ४७, पृ० २४१; ग्वा० पु० रि० सवत् १९७१, क्रमांक ८; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६४२ ।**

८९२. **नरवरगढ़ कचेरी (शिवपुरी)**

वि० सं० १३३९ का शिलालेख, जिसमें यज्वपेल्ल गोपालदेव के शासन काल में गांगदेव द्वारा निर्मित कूप का उल्लेख है। जयपाल नामक वीर का उल्लेख है, जिसे जज्वपेल्ल भी कहा गया है। इसके नाम से इस वंश का नाम यज्वपाल पड़ा। नरवर का नाम नलगिरि दिया हुआ है। **गर्दे—इ० ए० भाग ४७, पृ० २४२; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१, क्रमांक ९; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६०३।**

८९३. **पचरई (शिवपुरी)**

वि० सं० १३४५ का सती-स्तम्भ लेख। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१, क्रमांक २९।**

८९४. **पहाड़ो (शिवपुरी)**

वि० सं० १३५० का महादेव मन्दिर शिलालेख, जिसमें यज्वपाल गणपतिदेव का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक १०२।**

८९५. **बंगला (शिवपुरी)**

(अ) वि० सं० १३३८ का स्मारक-स्तम्भ लेख, जिसमें नरवर के यज्वपाल गोपालदेव तथा जेजाकभुक्ति के चन्देल राजा वीरवर्मन् के बीच बलुआ (वरुआ) नदी के किनारे युद्ध होने का उल्लेख है। इस स्मारक-स्तम्भ पर गोपालदेव की ओर से लड़ने वाले रौत-भोजदेव के पौत्र, रौतदेव के पुत्र वन्दनो की वीरगति का उल्लेख है। **इ० आ० रि० १९५५-५६, पृ० ३०; ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१, क्रमांक ७।**

(आ) वि० सं० १३३८ का स्मारक-स्तम्भ लेख जिसमें ऊपर लिखे हुए युद्ध में हत एक योद्धा का उल्लेख है। इसमें गोपालदेव के प्रधानमन्त्री ब्रह्मदेव का भी उल्लेख है। **वही, क्रमांक ९।**

(इ) वि० सं० १३३८ का स्मारक-स्तम्भ लेख जिसमें ऊपर लिखे हुए युद्ध में हत एक अन्य योद्धा का उल्लेख है। **वही, क्रमांक १०।**

(ई) वि० सं० १३३८ का स्मारक-स्तम्भ लेख जिसमें युद्ध में हत एक अन्य योद्धा का उल्लेख है। **वही, क्रमांक ११।**

(उ) वि० सं १३३८ का स्मारक-स्तम्भ लेख जो भग्न तथा अस्पष्ट है। **वही, क्रमांक १२।**

(ऊ) वि० सं० १३३८ का स्मारक-स्तम्भ लेख जो भग्न तथा अस्पष्ट है। **वही, क्रमांक १३।**

(ए) वि० सं० १३३८ का स्मारक-स्तम्भ लेख जिसमें गोपालदेव या उनके प्रधानमंत्री के शासन काल में हुए उक्त युद्ध का उल्लेख है। **वही, क्रमांक ८।**

८९६. **बड़ौदी (शिवपुरी)**

वि० सं० १३३६ का कूप-लेख, जिसमें नरवर के शासक यज्वपाल आसल्लदेव के पुत्र गोपालदेव के समय बावड़ी के निर्माण का उल्लेख है। इसमें नरवर के जज्वपेल्ल

राजाओं का वंश-वृक्ष दर्शाया गया है। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९२२-२३, पृ० १८७; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, क्रमांक ३६; भण्डारकर सूची, क्रमांक ५९७।

८९७. बढ़ोतर (शिवपुरी)

वि० सं० १३४ (-) का सती-स्तम्भ लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक ९३।

८९८. बलारपुर (शिवपुरी)

(अ) वि० सं० १३४२ का सती-प्रस्तर लेख, जिसमें यज्वपाल गोपालदेव के शासनकाल में अर्जुन के युद्ध में मारे जाने तथा उसकी तीन पत्नियों के सती होने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१, क्रमांक २१।

(आ) वि० सं० १३५६ का सती-प्रस्तर लेख जिसमें नलपुर के गणपतिदेव का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, क्रमांक २२।

(इ) वि० सं० १३५७ का सती-प्रस्तर लेख जिसमें नलपुर के गणपतिदेव तथा पलासई ग्राम में सती का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, क्रमांक ३३।

८९९. भक्तर (गुना)

वि० सं० १३०४ का सती-स्तम्भ लेख जिसमें चाहड़ का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक ११३।

९००. भीमपुर (शिवपुरी)

वि० सं० १३१९ का जैन-मन्दिर अभिलेख, जिसमें नरवर के जज्वपेल्ल आसलदेव के एक पदाधिकारी जैत्रसिंह द्वारा एक जैन मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। नागदेव द्वारा मूर्ति की प्रतिष्ठा का भी उल्लेख है। गर्दे-- इ० ए० भाग ४७, पृ० २४२; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१, क्रमांक १५; भण्डारकर सूची, क्रमांक ५६२।

९०१. भेसरवास (गुना)

वि० सं० १३५२ का सती-प्रस्तर लेख जिसमें नलपुर के गणपतिदेव का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, क्रमांक १८।

९०२. मुखवासा (शिवपुरी)

वि० सं० १३५६ का सती-स्तम्भ लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७९, क्रमांक १३।

९०३. राई (बूढ़ी) (शिवपुरी)

वि० सं० १३२७ का सती-प्रस्तर लेख, जिसमें यज्वपाल आसलदेव का उल्लेख है। गर्दे—इ० ए० भाग ४७, पृ० २४१; कनिंघम—'क्वाइन्स आफ मेडीवल इण्डिया', पृ० ९०; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक ७९; भण्डारकर सूची, क्रमांक ५७६।

९०४. सुरवाया (शिवपुरी)

(अ) यज्वपाल गणपति के शासन काल का वि० सं० १३४१ का शिलालेख। गा० सु० पृ० २५; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६०७।

(आ) वि० सं० १३४८ का शिलालेख, जिसमें यज्वपाल गोपाल के पुत्र गणपति के शासन काल में, ठक्कुर वामन द्वारा एक वाटिका के निर्माण का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३१६; कीलाहर्न—इ० ए० भाग २२, पृ० ८२, तथा गर्दे—वही, भाग ४७, पृ० २४१; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६२८।**

(इ) वि० सं० १३५० का शिलालेख जिसमें गणपति के भृत्य राणा अधिगदेव द्वारा तालाब, बाग आदि के निर्माण का उल्लेख है। **शास्त्री—आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९०३-४, भाग २, पृ० २८६; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६३६।**

(ई) वि० सं० १३५० का अभिलेख जिसमें कुमार साहसमल तथा उसकी माता सलषण-देवी का उल्लेख है। **गर्दे—'गाइड टू सुरवाया', पृ० २८; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६३७।**

प—तोमर शासकों के अभिलेख

९०५. ग्वालियर दुर्ग (ग्वालियर)

(अ) वि० सं० १४९० का जैन-मूर्ति लेख, जिसमें तोमर शासक महाराजाधिराज श्री डूंगरेन्द्रदेव तथा गोपाचल दुर्ग का उल्लेख है। **ज० ए० सो० ब० भाग ३१, पृ० ४२२; पूर्णचन्द्र नाहर, जैन अभिलेख, क्रमांक १४२७; भण्डारकर सूची, क्रमांक ७८५।**

(आ) वि० सं० १५१० का जैन-प्रतिमा लेख जिसमें तोमर शासक डूंगरेन्द्रदेव के शासन काल में कर्मसिंह द्वारा चन्द्रप्रभ की मूर्ति प्रतिष्ठा का उल्लेख है। **ज० ए० सो० ब० भाग ३१, पृ० ४२३; ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, क्रमांक २१; पूर्णचन्द्र नाहर, जैन अभिलेख, भाग २, क्रमांक १४२८; कीलहार्न सूची, क्रमांक २९४; भण्डारकर सूची, क्रमांक ८१४।**

(इ) वि० सं० १५१० का जैन-प्रतिमा लेख, जिसमें तोमर डूंगरसिंह के शासन काल में मूर्ति प्रतिष्ठा का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० सवत् १९८४, क्रमांक ३२।**

(ई) वि० सं० १५१४ का जैन प्रतिमा लेख जिसमें डूंगरसिंह के शासन काल में गुहा मन्दिर बनाने का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, क्रमांक २५।**

(उ) टकसाली दरवाजे के पास वि० सं० १५१६ का शिलालेख जिसमें डूंगरसिंह का उल्लेख है। **वही, क्रमांक १।**

(ऊ) उरवाही द्वार की ओर स्थित जैन प्रतिमा पर उत्कीर्ण वि० सं० १५२२ का लेख, जिसमें तोमर शासक कीर्तिसिंह का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, क्रमांक २३।**

(ए) वि० सं० १५२५ का जैन-प्रतिमा लेख, जिसमें तोमर कीर्तिसिंहदेव के शासन काल में शान्तिनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठा का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, क्रमांक २८।**

(ऐ) वि० सं० १५२५ का जैन-प्रतिमा लेख, जिसमें कीर्तिसिंह के शासन काल में संघाधिपति हेमराज द्वारा युगादिनाथ की प्रतिमा की प्रतिष्ठा तथा अनेक जैन आचार्यों का उल्लेख है। **वही, क्रमांक २६।**

(ओ) वि० सं० १५२५ का जैन-प्रतिमा लेख जिसमें कीर्तिसिंह के शासनकाल में पार्श्वनाथ की प्रतिमा की प्रतिष्ठा का उल्लेख है। **वही, क्रमांक ३४।**

(औ) वि० सं० १५२५ का जैन-प्रतिमा लेख जिसमें कीर्तिसिंहदेव के शासनकाल में एक जैन-प्रतिमा की स्थापना तथा कुछ जैन आचार्यों का उल्लेख है। **वही, क्रमांक ३०।**

(क) वि० सं० १५२५ का जैन-प्रतिमा लेख, जिसमें गोपाचल दुर्ग के डूंगरेन्द्रदेव तोमर के पुत्र कीर्तिसिंह के शासन का उल्लेख है। **वही, क्रमांक ३२।**

(ख) वि० सं० १५२५ का जैन-प्रतिमा लेख जिसमें कीर्तिसिंहदेव तथा उसके अधिकारी गुणभद्रदेव का उल्लेख है। **वही, क्रमांक ३३।**

(ग) वि० सं० १५२५ का जैन-प्रतिमा लेख जिसमें कीर्तिसिंह के शासनकाल में कुशलराज की पत्नी द्वारा पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित करने का उल्लेख है। **वही, क्रमांक ३९।**

(घ) वि० सं० १५२७ का जैन-प्रतिमा लेख जिसमें डूंगरसिंह का नामोल्लेख है तथा प्रतिमा प्रतिष्ठा का उल्लेख है। **वही, क्रमांक ४०।**

(ङ) वि० सं० १५३१ का जैन-प्रतिमा लेख जिसमें कीर्तिसिंह के शासनकाल में चम्पा नामक स्त्री द्वारा मूर्ति प्रतिष्ठा का उल्लेख है। **वही, क्रमांक ४१, ४२।**

(च) उरवाही द्वार पर तोमर डूंगरसिंह का जैन-मूर्ति लेख। **ग्वा० पु० रि० संवत १९८४, क्रमांक २०।**

(छ) जैन-मूर्ति लेख, जिन पर तोमर शासक डूंगरसिंह तथा कीर्तिसिंह का उल्लेख है। **डा० फो० ग्वा० स्टे० पृ० ५४, ५७; क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३५६।**

(ज) तिथि रहित शिलालेख, जिसमें एक तोमर योद्धा का उल्लेख है। **ग्वा० पृ० रि० संवत् १९८४, क्रमांक ९।**

९०६ पढ़ावली (मोरेना)

वि० सं० १५२८ का शिलालेख, जिसमें तोमर कीर्तिसिंहदेव का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७२, क्रमांक ३०।**

९०७. पनिहार (ग्वालियर)

वि० सं० १५२९ का जैन-प्रतिमा लेख जिसमें कीर्तिसिंहदेव तथा अनेक जैन साधुओं का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९९७, क्रमांक १।**

९०८. बघेर (शिवपुरी)

वि० सं० १५३२ का शिलालेख, जिसमें तोमर शासक महाराजाधिराज कीर्तिसिंह,

हरिचन्द्र तथा कुछ साधुओं के नामों का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९८८, क्रमांक १२।**

९०९. **बरई (ग्वालियर)**

वि० सं० १५२९ का जैन-प्रतिमा लेख, जिमेंमें तोमर कीर्तिसिंहदेव का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, क्रमांक २।**

९१०. **बरनगर**

वि० सं० ९३३ का सम्भवतः तोमरों का अभिलेख। **क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ७४।**

फ—अन्य अभिलेख

९११. **अकेता (गुना)**

वि० सं १३६ (९) का सती-प्रस्तर लेख, जिसमें अंकित (अकेता) ग्राम में एक सती का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, क्रमांक ७।**

९१२. **अंघोरा (गुना)**

शैव मन्दिर में वि० सं० ११५७ का फर्श पर उत्कीर्ण लेख। **ग्वा० पु० रि० १९२७-२८, पृ० ९।**

९१३. **अडभार (बिलासपुर)**

खण्डित शिलालेख जिसमें महाश्रवण तथा केसरी का उल्लेख है। **हीरालाल सूची, क्रमांक २३०।**

९१४. **अर्दोनी (मोरेना)**

सती-स्तम्भ पर उत्कीर्ण वि० सं० १४४२ का लेख। **ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ३१।**

९१५. **अफजलपुर (मन्दसौर)**

वि० सं० १५७० का राम मन्दिर स्तम्भ-लेख। अस्पष्ट। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, क्रमांक १७।**

९१६. **अमरौल (ग्वालियर)**

सती-स्तम्भ लेख, जिसमें वल्लनदेव का नाम पढ़ा जा सकता है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९९९, क्रमांक ५।**

९१७. **अमेरा (विदिशा)**

लगभग १२वीं शताब्दी का अस्पष्ट शिलालेख। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९८०, क्रमांक २।**

९१८. आरंग (रायपुर)

(अ) महामायी मन्दिर का अस्पष्ट शिलालेख जिसकी तेरहवीं पंक्ति में रणकेसरी का उल्लेख है। ज० आ० हि० रि० सो० भाग ४, पृ० ४६-४८; क० प्र० रि० १९०४, पृ० ५०; हीरालाल सूची, क्रमांक १८३।

(आ) लगभग ४थी शताब्दी ईसवी का खण्डित शिलालेख। क० आ० स० इ० रि० भाग १८, पृ० २१।

९१९. आष्टा (सिवनी)

हेमाडपन्ति मन्दिर में एक अस्पष्ट शिलालेख। हीरालाल सूची, क्र० १२८।

९२०. आंदलखेड़ा (राजगढ़)

सती-स्तम्भ लेख, जिसमें सबसे प्राचीन वि० सं० ९४४ का है। से० इ० स्टे० ग० पृ० १६२।

९२१. इन्दोख (उज्जैन)

तिथि रहित शिलालेख। रि० अ० हो० स्टे० १९३२, पृ० ९५।

९२२. इन्दौर (गुना)

(अ) वि० सं० ९०२ का स्मारक-स्तम्भ लेख। ग्वा० पु० रि० सं० १९९३, क्र० ६।

(आ) वि० सं० ९२० का स्मारक-स्तम्भ लेख। ग्वा० पु० रि० सं० १९९३, क्रमांक ५।

(इ) वि० सं० ११७७ का स्मारक-स्तम्भ लेख, जिसमें अजयपाल नामक योद्धा के शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर युद्धक्षेत्र में हत होने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९३, क्रमांक ४।

(ई) वि० सं० १३४५ का स्तम्भ-लेख, जो अस्पष्ट है। ग्वा० पु० रि० सं० १९८०, क्रमांक ९।

(उ) नदी के तट पर स्थापित स्मृति-स्तम्भ, जिन पर लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी के अभिलेख उत्कीर्ण हैं। ग्वा० पु० रि० १९३६-३७, पृ० ९।

९२३. ईन्धर (शिवपुरी)

वि० सं० १३४५ का अस्पष्ट स्तम्भ-लेख। ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० २०, २४।

९२४. ईश्वरमऊ (दमोह)

शिलालेख, जिसमें 'मगरध्वज जोगी ७००' उत्कीर्ण है। हीरालाल—'दमोह दीपक' पृ० ११९; हीरालाल सूची, क्रमांक ११७।

९२५. उज्जैन (उज्जैन)

(अ) लगभग दसवीं शताब्दी ई० का शिलालेख जिसमें महाकाल एवं राजा नारायण तथा एक सन्यासी का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९५, क्रमांक १।

(आ) लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का अभिलेख जिसमें प्राकृत नाटक का एक भाग उत्कीर्ण है। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ६०।

(इ) लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का अभिलेख, जिसमें रणरंगमल्ल के द्वारा युद्ध में भाग लेने का उल्लेख है। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ६०।

(ई) भतृहरि गुफा में वि० सं० १४७५ का अभिलेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८३, क्रमांक १३।

(उ) भतृहरि गुफा में वि० सं० १४९३ का शिलालेख। ग्वा० पु० रि० १९२६-२७, पृ० ८।

(ऊ) वि० सं० १५१० का शिलालेख जो अभिशाप सम्बन्धी है। इसमें शक १३७४ का भी उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९१, क्रमांक २८।

(ए) वि० सं० १५४१ का शिलालेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८३, क्रमांक १९।

(ऐ) वि० सं० १५४७ का शिलालेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक १३।

(ओ) एक सर्प-बन्ध लेख, जिसमें नागरी की वर्णमाला तथा व्याकरण सम्बन्धी नियम दिये हैं। प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १२, पृ० ५४।

(औ) दो खण्डित शिलालेख जिनके आशय स्पष्ट नहीं है। प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १२, पृ० ५४; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग २४, पृ० १६८।

(क) शिलालेख, जो किसी बड़े लेख का खण्ड है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९२, क्रमांक ५३; नागरी प्रचारिणी पत्रिका (नवीन संस्करण) भाग १९, पृ० ८७-८९।

(ख) शिलालेख, जो किसी बहुत बड़े लेख का खण्ड है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१, क्रमांक ४७ तथा संवत् १९९२ क्रमांक ५४; नागरी प्रचारिणी पत्रिका (नवीन-संस्करण), भाग १९, पृ० ८७-८९।

९२६. उदयगिरि (विदिशा)

(अ) अमृत-गुहा का स्तम्भ-लेख, जिसमें महासामन्त सोमपाल का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक ८३।

(आ) अमृत-गुहा का स्तम्भ-लेख, जिसमें दामोदर जयदेव राजपुत्र का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक ८५।

९२७. उदयपुर विदिशा)

(अ) लगभग ११वीं शताब्दी का बीजामण्डल शिलालेख, जिसमें सूर्य की भावात्मक प्रशंसा है। ग्वा० पु० रि० सं० १९७७, क्रमांक ४।

(आ) मस्जिद पर उत्कीर्ण लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी के चार अभिलेख। **आ० ग्वा० पृ० १३८।**

(इ) वि० सं० १२२२ का स्तम्भ-लेख। **इ० ए० भाग १८, पृ० ३४४; भण्डारकर सूची, क्रमांक ३२२।**

(ई) वि० सं० १२८८ का उदयेश्वर मन्दिर स्तम्भ-लेख जिसमें नलपुर के एक यात्री का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत १९७४, क्रमांक ११७।**

(उ) उदयेश्वर मन्दिर की मेहराब पर उत्कीर्ण वि० सं० १३० (०) का अभिलेख, जिसमें एक यात्री का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक ११३।**

(ऊ) वि० सं० १३६० का उदयेश्वर मन्दिर में शिलालेख, जिसमें हरिराजदेव का उल्लेख है। **कीलहार्न—इ० ए० भाग २०, पृ० ८४; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक १०७; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६५४।**

(ए) वि० सं० १३८० का शिलालेख, जिसमें एक यात्री का उल्लेख है। **कीलहार्न—ए० इ० भाग ५, सूची क्रमांक २५७; इ० ए० भाग ९, पृ० २८, क्रमांक २८; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक ११५।**

(ऐ) वि० सं० १३९४ के दो अभिलेख, जिनमें श्री उदलेश्वर देवता की यात्रा का उल्लेख है। **कीलहार्न—ए० इ० भाग ५, कीलहार्न सूची क्रमांक २६४; इ० ए० भाग १९, पृ० ३५५, क्रमांक १५४; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६९८।**

(ओ) उदयेश्वर मन्दिर में वि० सं० १४०३ का स्तम्भ-लेख। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक १३५।**

(औ) उदयेश्वर मन्दिर में वि० सं० १४३४ का शिलालेख जिसमें यात्री का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक १२४।**

(क) उदयेश्वर मन्दिर में वि० सं० १४ (३) ५ तथा १४३७ के अभिलेख जिनमें यात्रियों का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९०४, क्रमांक १३० तथा १२७।**

(ख) वि० सं० १४५० का उदयेश्वर मन्दिर में स्तम्भ-लेख जिसमें यात्री का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक १३३।**

(ग) वि० सं० १४ (६) ५ का स्तम्भ-लेख जिसमें यात्री का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक १३२।**

(घ) वि० सं० १५०३ का उदयेश्वर मन्दिर में शिलालेख, जिसमें यात्री का उल्लेख है। **कीलहार्न सूची, कमांक २९३; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक १२५; भण्डारकर सूची, क्रमांक ७९३।**

(ङ) वि० सं० १५६२ अथवा शक संवत् १४२७ का शिलालेख, जिसमें शिव-मूर्ति की स्थापना का उल्लेख है। **आ० स० इ० रि० भाग २३, पृ० ११४।**

(च) एक अभिलेख जिसमें उदयपुर को 'भिल्लस्वामी महाद्वादशक' (भिलसा जिला) में स्थित होने का उल्लेख किया गया है। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग १३ खण्ड १, पृ० २९।

(छ) तिथि रहित शिलालेख, जिसमें रामेश्वर चण्डी, (से)वादित्य तथा वैरिसिंह का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८०, क्रमांक १०।

(ज) उदयेश्वर मन्दिर का शिलालेख, जिसमें किसी दान का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, क्रमांक १०।

(झ) बीजामण्डल मस्जिद का शिलालेख, जिसमें गंडवंशी शासक देवराज का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, क्रमांक २।

(ट) बीजामण्डल मस्जिद का स्तम्भ-लेख, जिसमें राजा श्री भर्तृसिंह का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, क्रमांक ४।

(ठ) बीजामण्डल मस्जिद का स्तम्भ-लेख, जिसमें राजा सूर्यसेन तथा ठाकुर श्री माधव तथा चन्द्रिकादेवी का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, क्रमांक १।

९२८. उन्दासा (उज्जैन)

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का स्तम्भ-लेख। ग्वा० पु० रि० १९३५-३६, पृ० ३९।

९२९. उमरधा (होशंगाबाद)

अस्पष्ट सती-लेख। हीरालाल सूची, क्रमांक १३५।

९३०. ऊन (पश्चिम निमाड़)

(अ) लगभग १२वीं-१३वीं शताब्दी के तीन संकल्पित लेख। प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १८, पृ० ६२-६३; इ० ए० भाग १९, पृ० ३५२; इ० स्टे० ग० भाग २, पृ० ६८, ७१।

(आ) सर्पबन्ध अभिलेख, जिसमें व्याकरण सम्बन्धी नियम दिये हैं। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग १८, खण्ड १, पृ० १७; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १८, पृ० ४६।

(इ) एक अभिलेख जिसमें व्याकरण सम्बन्धी नियम दिये हैं। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट भाग ३१, पृ० २८; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १८, पृ० ४६।

९३१. एरण (सागर)

शंख-लिपि में उत्कीर्ण अभिलेख। ए० रि० इ० ए० १९४६-४७, क्रमांक १६६, १७०-७२।

३०

६३२. कंजरदा (मन्दसौर)

तिथि रहित शिलालेख । प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १६, पृ० २५ ।

६३३. कदवाहा (गुना)

(अ) शिलालेख, जिसमें पतंगेश नामक साधु द्वारा शिव मन्दिर निर्माण का उल्लेख है तथा श्री कदम्बगुहा निवासी मुनियों की प्रशंसा है। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १६०३-०४, पृ० २८७ ।

(आ) लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी का अभिलेख, जिसमें यात्री का उल्लेख है । क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १७७ ।

(इ) वि० सं० ११२० का सती-प्रस्तर लेख । ग्वा० पु० रि० १६२७-२८, पृ० ३६ ।

(ई) मन्दिर क्रमांक ६ में वि० सं० ११३४ का शिलालेख । ग्वा० पु० रि० संवत् १६८४, क्रमांक ७२ ।

(उ) एक हिन्दू मठ के खण्डहर से प्राप्त वि० सं० ११३८ का शिलालेख । वही, संवत् १६६६, क्रमांक १० ।

(ऊ) मन्दिर क्रमांक ३ में एक चौकी पर उत्कीर्ण वि० सं० ११६२ का लेख । वही, संवत् १६८४, क्रमांक ६४ ।

(ए) मन्दिर क्रमांक ३ में वि० सं० १३८१ का शिलालेख जिममें माधव, केशव आदि कुछ नाम अंकित हैं । वही, संवत् १६८४, क्रमांक ६२ ।

(ऐ) वि० सं० १३८४ का हिन्दू मठ से प्राप्त शिलालेख जिसका भाव स्पष्ट नहीं है । वही, संवत् १६६६, क्रमांक ३ ।

(ओ) वि० सं० १४०३ का शिलालेख जिसमें रन्नोद तथा कदवाहा परगने के गुमाश्ता का नाम अंकित है । वही, संवत् १६८४, क्रमांक ६३ ।

(औ) वि० सं० १४५० का शिलालेख, जिसमें ब्राह्मण को दान देने का उल्लेख है । वही, संवत् १६७४, क्रमांक ६६ ।

(क) वि० सं० १४६६ का गढ़ी से प्राप्त शिलालेख, जिसमें रतनसिंह के पुत्र थिरवाल का उल्लेख है । वही, संवत् १६८४, क्रमांक ५६ ।

(ख) वि० सं० १४६६ का शिलालेख, जिसमें यात्रियों का उल्लेख है । वही, संवत् १६६६, क्रमांक २५ ।

(ग) वि० सं० १४६८ का शिलालेख, जिसमें तीन यात्रियों का उल्लेख है । इस अभिलेख में दो तिथियाँ १४७३ तथा १५०४ भी दी गई हैं । वही, संवत् १६६६, क्रमांक २७ ।

(घ) वि० सं० १४६८ का मन्दिर क्रमांक ३ में शिलालेख। वही, संवत् १९८४, क्रमांक ७०।

(ङ) वि० सं० १४७५ का गढ़ी से प्राप्त शिलालेख, जिसमें धनराज तथा उसके पुत्र रतन का नाम अंकित है। वही, संवत् १९८४, क्रमांक ५५।

(च) वि० सं० १४७६ का सती-प्रस्तर लेख। वही, संवत् १९८४, क्रमांक ५९।

(छ) वि० सं० १४८७ का प्रस्तर-लेख, जिसमें यात्रियों का उल्लेख है। वही, संवत् १९९६, क्रमांक २६।

(ज) वि० सं० १४८७ का गढ़ी से प्राप्त शिलालेख, जिसमें हरिहर, गंगादास आदि का उल्लेख है। वही, संवत् १९८४, क्रमांक ५१।

(झ) वि० सं० १४९९ का गढ़ी से प्राप्त शिलालेख। वही, संवत् १९८४, क्रमांक ४८।

(ञ) वि० सं० १४९९ का हिन्दू मठ से प्राप्त शिलालेख, जो अस्पष्ट है। वही, संवत् १९९६, क्रमांक २३।

(ट) वि० सं० १४९९ का गढ़ी से प्राप्त शिलालेख, जिसमें सोनपाल, जयराज तथा अर्जुन के नाम उल्लेख हैं। वही, संवत् १९८४, क्रमांक ५०।

(ठ) वि० सं० १५०४ का शिलालेख, जिसमें रतनसिंहदेव का उल्लेख है। वही, संवत् १९९४, क्रमांक १४।

(ड) वि० सं० १५०४ का शिलालेख, जिसमें दो यात्रियों का उल्लेख है। वि० सं० १४७९ का भी उल्लेख है। वही, संवत् १९९६, क्रमांक २४।

(ढ) वि० सं० १५०४ का शिलालेख। वही, संवत् १९८४, क्रमांक ५७।

(ण) वि० सं० १५०४ का गढ़ी से प्राप्त शिलालेख। वही, संवत् १९८४, कमांक ४९।

(त) वि० सं० १५०४ का शिलालेख। वही, संवत् १९९६, क्रमांक २१।

(थ) वि० सं० १५२७ का शिलालेख। वही, संवत् १९९६, क्रमांक ९।

(द) वि० सं० १५४० का शिलालेख जिसमें तीन यात्रियों का उल्लेख है। वही, संवत् १९९६, क्रमांक ६।

(ध) वि० सं० १५५० का शिलालेख। वही, कमांक ७।

(न) वि० सं० १५६२ का मन्दिर क्रमांक ३ में शिलालेख। वही, संवत् १९८४, क्रमांक ६०।

(प) वि० सं० १५८ (?) का मन्दिर क्रमांक ३ में शिलालेख। वही, संवत् १९८४, क्रमांक ६९।

(फ) शिलालेख, जिसमें शिवभक्त यात्री मंजुदेव का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९९६, क्रमांक १८।**

(ब) खण्डित शिलालेख, जो किसी बड़े अभिलेख का अंश है। इसमें कदवाहा तथा चन्देरी का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९९६, क्रमांक ५।**

(भ) हिन्दू मठ से प्राप्त तिथि रहित शिलालेख, जिसमें शैव साधुओं की परम्परा दी हुई है तथा 'ईश्वरशिव' का नाम है। भीम भूप का भी उल्लेख है जो सम्भवतः प्रतिहार वंश का था। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९९६, क्रमांक ३०।**

९३४. कनोदा बड़ी (दमोह)

(अ) संवत् १३४२, १३५० तथा १३६० के तीन उत्कीर्ण स्मृति-प्रस्तर लेख। **हीरालाल सूची, क्रमांक ११५।**

(आ) शिव मन्दिर में रखी मूर्ति पर उत्कीर्ण लेख। **हीरालाल सूची, क्रमांक १२०।**

९३५. कागपुर (विदिशा)

देवी के मन्दिर में वि० सं० १३०६ का अभिलेख, जिसमें मंगलादेवी की प्रतिमा की स्थापना का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९८८ क्रमांक ३।**

९३६. कानवन (धार)

तिथि रहित स्तम्भ-लेख। **से० इ० ग० सी० पृ० ५१४।**

९३७. कान्दाडोंगर (रायपुर)

निकटस्थ पहाड़ी पर जोगीमठ में उत्कीर्ण ५ अस्पष्ट शिलालेख। **हीरालाल सूची, क्रमांक १९२।**

९३८. कारीतलाई (जबलपुर)

(अ) शंख-लिपि में उत्कीर्ण लेख। **हीरालाल सूची, क्रमांक ७४।**

(आ) वि० सं० १४१२ का उचहड़ानगर के महाराज वीरवर्मदेव का शिलालेख। **क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ११३; हीरालाल सूची, क्रमांक ४८।**

(इ) पाँच जैन-मूर्ति लेख, जिनमें दान कर्त्ताओं के नाम देवभद्र, यशोमति, जैनचन्द्र, सत्यचन्द्र तथा यशोधरा उल्लेख किया गया है। **हीरालाल सूची, क्रमांक ७१।**

९३९. किती (भिण्ड)

वि० सं० १५५३ का शिलालेख। अस्पष्ट। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९९६, क्रमांक १।**

९४०. **कुगवां (जबलपुर)**

लगभग आठवीं शताब्दी ईसवी का शिलालेख, जिसमें कान्यकुब्ज के उम्मडदेव का उल्लेख है। **हीरालाल सूची, क्रमांक ६५।**

९४१. **कुरुसपाल (बस्तर)**

दो खण्डित शिलालेख जिनमें एक पर किसी नायक का उल्लेख है। **हीरालाल सूची, क्रमांक २९६।**

९४२. **कूँड़ा (जबलपुर)**

तिथि रहित स्मृति-शिला लेख। **हीरालाल सूची, कमांक ७७।**

९४३. **केरबन पिपरिया (जबलपुर)**

वि० सं० १३०९ का स्मृति-शिला लेख। **हीरालाल सूची, कमांक ७७।**

९४४. **केवटी-कुण्ड (रीवा)**

(अ) वि० सं० १३९० का स्तम्भ-लेख। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १४३; भण्डारकर सूची, कमांक ६९२।**

(आ) वि० सं० १३९७ के तीन स्तम्भ-लेख, जिनमें लूकस्थान के महाराज हमीरदेव तथा कठीलीस्थान के महाराज देव्व (?) क का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १४३; भण्डारकर सूची, क्रमांक ७०२।**

९४५. **कोड़ (धार)**

मन्दिर से प्राप्त अभिलेख। **से० इ० ग० सी०, पृ० ५१४।**

९४६. **कोतवाल (मोरेना)**

वि० सं० १३३९ का स्तम्भ-लेख, जो भग्न तथा अवाच्य है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७२, क्रमांक २४।**

९४७. **कोरबा (बिलासपुर)**

सीतामढ़ी गुफा-लेख, जिसमें **वैद्यपुत्र श्रीवर्धन्** के अष्टद्वार में रहने का उल्लेख है। **हीरालाल सूची, क्रमांक २२२।**

९४८. **कोलारस (शिवपुरी)**

वि० सं० १३४८ का सती-प्रस्तर लेख। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक ८२; क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३०२ तथा भाग ७, पृ० ९४।**

९४९. **कोसगइँ (बिलासपुर)**

दुर्ग के मन्दिरों से प्राप्त मूर्तियों पर लेख, जिनमें सहदेव, अर्जुनदेव, भीमसेनदेव तथा

नकुल के नाम उत्कीर्ण हैं। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० १५६; हीरालाल सूची, क्रमांक २२६।

६५०. खजुराहो (छतरपुर)

(अ) लगभग ६वीं शताब्दी ईसवी का बुद्ध-मूर्ति लेख। भण्डारकर प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १६०३-४ पृ० ४७; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८७१।

(आ) जैन-मन्दिर अभिलेख जिसमें भाटपुत्र देवशर्मन् का उल्लेख है। भण्डारकर डी० आर०—प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १६०३-४, क्रमांक १६६२; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८७४।

(इ) जैन-मन्दिर अभिलेख, जिसमें भाटपुत्र गोलूल का उल्लेख है। भण्डारकर डी० आर०—प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १६०३-०४, पृ० ४८, क्रमांक १६६४; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८७५।

६५१. खजुरी (जबलपुर)

वि० सं० १३५४ का स्मृति-शिलालेख जिसमें बनाफ़र होलजू के खजुरी वीरक्षेत्र में देहान्त होने का उल्लेख है। हीरालाल सूची, क्रमांक ५८।

६५२. खण्डवा (पूर्व निमाड़)

पद्मकुण्ड तालाब के तट पर ६ शिलालेख, जिनमें ४ वि० सं० ११८५ के हैं। इनमें पद्मनाभ तथा सोढ़देव का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग ६, पृ० ११३-१४; हीरालाल सूची, क्रमांक १५४।

६५३. खमरिया (जबलपुर)

खण्डित शिलालेख, जिसमें 'पिनाकपाणि' (शिव) की स्तुति है। हीरालाल सूची, क्रमांक ६०।

६५४. खरोद (बिलासपुर)

लखनेश्वर मन्दिर का मूर्ति-लेख जिसमें मूर्ति को पण्डित दामोदर का होना बतलाया गया है। प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १६०३-४, पृ० ५४, कमांक २०३६; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८८४।

६५५. खलारी (जबलपुर)

महाराजाधिराज भूमिरण का मूर्ति-लेख। हीरालाल—'जबलपुर ज्योती' पृ० १४४; हीरालाल सूची, क्रमांक ६८।

६५६. खुजवा (धार)

वि० सं० १२७३ का शिलालेख। से० इ० ग० सी०, पृ० ५१४।

९५७. खेरला दुर्ग (बैतूल)

शक संवत् १२८५ का हरदेव का शिलालेख, जिसमें हरदेव द्वारा खेटकपुर में उत्तर दिशा की ओर 'वापी' निर्माण का उल्लेख है। **भण्डारकर सूची, क्रमांक ११२०; हीरालाल सूची, कमांक १६३।**

९५८. खोड़ (मन्दसौर)

(अ) वि० सं० ११५३ का प्रस्तर-स्तम्भ लेख जिसमें जेपट या जयपट द्वारा कूप निर्माण का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक ४०।**

(आ) वि० सं० ११६४ का शिलालेख। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक ४१।**

९५९. गढ़ेला (शिवपुरी)

वि० सं० १३५३ का स्मारक-स्तम्भ लेख, जिसमें किसी भट्टारक कुमारदेव तथा किसी दूसरे जैन का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, क्रमांक ५६।**

९६०. गन्धावल (उज्जैन)

वि० सं० १३४० का स्मारक-स्तम्भ लेख, जिसका अर्थ स्पष्ट नहीं है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक ४०।**

९६१. ग्यारसपुर (विदिशा)

(अ) लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी का अस्पष्ट स्तम्भ-लेख। **ग्वा० पु० रि० १९३१-३२, पृ० ४।**

(आ) मालव संवत् ९३६ का शिलालेख, जिसमें गोवर्द्धन द्वारा विष्णु मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। महाकुमार (युवराज) त्रैलोक्यवर्मन् के दान का भी उल्लेख है तथा हर्षपुर नगर में चामुण्डस्वामी द्वारा बनाये गये मन्दिर का भी उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ३३; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक ९४ तथा ५; भण्डारकर सूची, क्र० ३७।**

(इ) वि० सं० १०३९ का स्तम्भ-लेख। **प्रो० रि० आ० स० इ० वे० स० १९१३-१४, पृ० ६१; आ० ग्वा० पृ० ९१-९२; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक ८६; भण्डारकर सूची, क्रमांक ८९।**

(ई) वि० सं० १०६७ का शिलालेख जिसमें एक मठ के निर्माण का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९८९, क्रमांक ४; क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ३४।**

(उ) वि० सं० १५५१ का स्तम्भ-लेख जिसमें ब्रह्मचारी धर्मदास का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक ९३।**

(ऊ) बुद्ध-मूर्ति लेख, जिसमें तथागत बुद्ध का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९९२, क्रमांक ३५।**

(ए) हिण्डोला तोरण के निकट उत्खनन में प्राप्त शिलालेख जिसमें शिवगण, चामुण्डराज, महेन्द्र या महेन्द्रपाल का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, क्रमांक १।

(ऐ) हिण्डोला तोरण के निकट उत्खनन में प्राप्त चामुण्डराज का शिलालेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, क्र० २।

९६२. ग्वालियर दुर्ग (ग्वालियर)

(अ) कक्कुक (?) के समय का वि० सं० १०३८ का अभिलेख, जिसमें मन्दिर बनाने का उल्लेख है। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९०३-४, पृ० २८७; भण्डारकर सूची, क्रमांक ८८।

(आ) वि० संवत् ११६५ का जैन मन्दिर लेख। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३६२-६३।

(इ) वि० सं० १४६७ का अभिलेख जिसमें महाराज वीरंग (वीरम) देव का उल्लेख है। ज० ए० सो० ब० भाग ३१, पृ० ४२२; भण्डारकर सूची, क्रमांक ७४५।

(ई) तिकोनिया तालाब पर वि० सं० १४८८ का शिलालेख जो अस्पष्ट है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, क्रमांक ८।

(उ) वि० सं० १४९७ का जैन-मूर्ति लेख, जिसमें आदिनाथ की मूर्ति निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, क्रमांक १९।

(ऊ) वि० सं० १४९७ का उरवाही द्वार की ओर की जैन-मूर्ति पर लेख, जिसमें देवसेन, यशकीर्ति, जयकीर्ति आदि जैन आचार्यों के नाम का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, क्रमांक १८।

(ए) वि० सं० १५२२ का तेली के मन्दिर में उत्कीर्ण शिलालेख, जिसमें केवल तिथि अंकित है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, क्रमांक १५।

(ऐ) वि० सं० १५२२ का शिलालेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, क्रमांक १६।

(ओ) वि० सं० १५२५ का अभिलेख। विकृत। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, क्रमांक २७।

(औ) वि० सं० १५२५ के तीन जैन-प्रतिमा लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, क्रमांक ३५, ३७ तथा ३८।

(क) वि० सं० १५५२ का जैन-अभिलेख, जिसमें गोपाचल के महाराज मल्लसिंहदेव के राज्यकाल का उल्लेख है। पूर्णचन्द्र नाहर, जैन अभिलेख, भाग २, क्रमांक १४२९।

(ख) तेली के मन्दिर का वि० सं० १५७३ का शिलालेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८४, क्रमांक १४।

(ग) वि० सं० १५८० का जैन-प्रतिमा लेख । अस्पष्ट । ग्वा० पु० रि० संवत् १६८४, क्रमांक ३१ ।

(घ) सास-बहू मन्दिर के सामने स्तम्भ-लेख । ग्वा० पु० रि० संवत् १६८४, क्रमांक ११ ।

(ङ) श्रीचन्द्र का जैन-मूर्ति लेख । ग्वा० पु० रि० संवत् १६८४, क्रमांक ६ ।

(च) तेली के मन्दिर का शिलालेख, जिसमें केवल राय सबलसिंह का नाम पढ़ा जा सकता है । ग्वा० पु० रि० संवत् १६८४, क्रमांक १७ ।

(छ) लक्ष्मण-द्वार तथा चतुर्भुज मन्दिर के मध्य स्थित शिलालेख, जिसमें गणेश की स्तुति है । ग्वा० पु० रि० संवत् १६८४, क्रमांक ४ ।

६६३. ग्वालियर गुजरी महल संग्रहालय (ग्वालियर)

(अ) वि० सं० १३४६ का शिलालेख जिसमें चाहमान हम्मीरदेव के शासनकाल में लोधा-कुल उत्पन्न महता जैतसिंह द्वारा छिभाड़ा ग्राम में तालाब बनाने का उल्लेख है । आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १६०३-४, भाग २, पृ० २८६ ।

(आ) अस्पष्ट शिलालेख, जिसमें केवल विष्णु मन्दिर के निर्माण तथा कुछ वणिकों का उल्लेख पढ़ा जा सकता है । ग्वा० पु० रि० संवत् १६६४, क्रमांक १ ।

६६४. गुड़ार (शिवपुरी)

(अ) वि० सं० १२०६ का जैन-मूर्ति लेख, जिसमें शान्तिनाथ, कुंथनाथ तथा अरनाथ की मूर्तियों की स्थापना का उल्लेख है । ग्वा० पु० रि० संवत् १६८६, क्रमांक २८ ।

(आ) वि० सं० १३६० के तीन जैन-मूर्ति लेख । ग्वा० पु० रि० १६२६-३०, पृ० २३ ।

६६५. गुरिल का पहाड़ (गुना)

जैन मन्दिर की दीवार पर उत्कीर्ण वि० सं० १३०७ का अभिलेख । ग्वा० पु० रि० १६२४-२५, पृ० १३ ।

६६६. गोपालपुर (जबलपुर)

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के तीन बौद्ध-मूर्तिलेख । ए० इ० भाग १८, पृ० ७३-७४; हीरालाल—'जबलपुर ज्योति', पृ० १४१; भण्डारकर सूची, क्रमांक १६०३; हीरालाल सूची, क्रमांक ५२ ।

६६७. घुसई मन्दसौर)

(अ) वि० सं० १३१३ का जैन-मन्दिर अभिलेख, जिसमें जैनाचार्यों के नामों का उल्लेख है । ग्वा० पु० रि० संवत् १६७३, क्रमांक ११० ।

(आ) वि० सं० १३२३ का जैन-स्तम्भ लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, क्रमांक १०९।

(इ) वि० सं० १३३४ का सती-स्तम्भ लेख, जिसमें राजा गयासिहदेव के राज्यकाल में कन्त के पुत्र दल्हा की पत्नी के सती होने का उल्लेख है तथा घुसई का प्राचीन नाम घोषवती दिया गया है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, क्रमांक ११३।

९६८. चन्दनखेड़ा (जबलपुर)

(अ) मुधिगदेव का शिलालेख। हीरालाल सूची, क्रमांक ६७।

(आ) सती-प्रस्तर लेख। हीरालाल सूची, क्रमांक ७८।

९६९. चन्देरी (गुना)

(अ) वि० सं० १२८३ का जैन-मूर्ति अभिलेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७१, क्रमांक ४१।

(आ) वि० सं० १२ (९) ३ का जैन-मूर्ति अभिलेख। वही, संवत् १९७२, क्रमांक ४२।

(इ) टप्पा बावड़ी से प्राप्त वि० सं० १४८४ का शिलालेख। गा० च० पृ० २८।

(ई) लगभग १३वीं शताब्दी के जैन-मूर्ति लेख। गा० च०, पृ० ३०।

९७०. चपका (बस्तर)

छः सती-प्रस्तर लेख। ए० इ० भाग ९, पृ० १६६; हीरालाल सूची, क्रमांक २९७।

९७१. चितारा (शिवपुरी)

वि० सं० १११८ का प्रस्तर-स्तम्भ लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, क्रमांक ५५।

९७२. चितावली (ग्वालियर)

तिथि रहित शिलालेख। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३७८।

९७३. चिरमिढ़ी (सरगुजा)

शक संवत् १२७२ का गोविन्द चूड़देव का शिलालेख जिसमें 'स्वयंभू' के मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। हीरालाल सूची, क्रमांक ३१४।

९७४. चैंत (ग्वालियर)

(अ) वि० सं० ११८२ तथा ११८३ के जैन-स्तम्भ लेख, जिनमें कुछ जैन पण्डितों के अवाच्य नाम उत्कीर्ण हैं। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९०, क्रमांक ३ तथा ४।

(आ) स्तम्भ-लेख जिसमें पद्मसेन, वृषभसेन, कनकसेन तथा विजयसेन के नामों का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९०, क्रमांक ५।

९७५. चैनपुर (मन्दसौर)

विशालकाय जैन-मूर्ति पर उत्कीर्ण लेख । प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १६, पृ० ८७; इ० स्टे० ग०, भाग २, पृ० ११ ।

९७६. चोखबाड़ा (झाबुआ)

वि० सं० १०४८ (?) तथा १४१५ के ताम्रपत्र । से० इ० ग० सी०, पृ० ५४७ ।

९७७. चोपडा पटी (चण्डी चोपड़ा) (दमोह)

वि० सं० १३१३ का नरसिंहदेव के शासन काल का मूर्ति-लेख । हीरालाल सूची, क्रमांक १०२ ।

७८. चोली (पश्चिम निमाड़)

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी का अभिलेख । रि० अ० हो० स्टे० १९३५, पृ० ७० ।

९७९. जरवौदा (ग्वालियर)

वि० सं० १४७५ का सती-स्तम्भ लेख । ग्वा० पु० रि० संवत् १९६८, क्रमांक १६ ।

९८०. झरदा (उज्जैन)

वि० सं० १२२९ का शिलालेख । प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १९, पृ० १००; रि० अ० हो० स्टे० १९३२, पृ० ९५ ।

९८१. टकनेरी (गुना)

वि० सं० १५ (–) का स्तम्भ-लेख । अस्पष्ट । ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक ५९ ।

९८२. टिकटोली दुमदार (मोरेना)

वि० सं० १५४२ का जैन-प्रतिमा लेख, जिसमें मूर्ति स्थापना का उल्लेख है । ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, क्रमांक ८ ।

९८३. टिमरनी (होशंगाबाद)

तीन मूर्ति लेख—

(अ) लक्ष्मी-नारायण की मूर्ति पर उत्कीर्ण वि० सं० १२०३ का लेख ।

(आ) जैन-मूर्ति पर उत्कीर्ण १२६५ का लेख ।

(इ) तिथि रहित शिवमूर्ति लेख । इसमें सोढ़देव के पुत्र लजिलाल का उल्लेख है । हीरालाल सूची, क्रमांक १३० ।

९८४. टोंगरा (शिवपुरी)

नृसिह मूर्ति पर वि० सं० १०८२ का लेख जिसमें हरि के मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८५, क्रमांक ६०।

९८५. डांडे-की-खिड़क (ग्वालियर)

(अ) वि० सं० १४५४ का सती-स्तम्भ लेख। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० १५-१६।

(आ) वि० सं० १५६४ का सती-प्रस्तर लेख। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, क्रमांक १५।

९८६. ढोनाकोना (शिवपुरी)

जैन मन्दिर के अवशेषों में स्थित जैन प्रतिमाओं पर लगभग ११वीं-१४वीं शताब्दी ईसवी के लेख। ग्वा० पु० रि० १९३५-३६, पृ० १३।

९८७. तिगवां (जबलपुर)

लगभग ८वीं शताब्दी ईसवी का कान्यकुब्ज के उमादेव का स्तम्भ-लेख जो लगभग ५वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर में लगा है। क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ४६; क० प्र० रि० १९०४, पृ० ३४, ३५, ५५; हीरालाल सूची, कमांक ३१।

९८८ तिलवाराघाट (जबलपुर)

तारा की मूर्ति पर उत्कीर्ण लेख। हीरालाल सूची, क्रमांक ५१।

९८९ तिलोरी (ग्वालियर)

(अ) वि० सं० (१) ३४ (३) का स्तम्भ-लेख जो अपूर्ण है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक ४।

(आ) वि० सं० १४(१) ९ का सती-प्रस्तर लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक ६।

(इ) वि० सं० १५२१ का स्तम्भ-लेख, जिसमें महाराजाधिराज कीर्तिपालदेव का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक १२।

(ई) वि० सं० १५२७ का सती-प्रस्तर लेख। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक ८।

(उ) वि० सं० १५२७ का मन्दिर-स्तम्भ लेख जिसमें यात्री का उल्लेख है। वही, क्रमांक ११।

(ऊ) वि० सं० १५४५ का सती-प्रस्तर लेख। वही, क्रमांक ९।

(ए) कीर्तिपालदेव के दो स्तम्भ-लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक २ तथा ३।

९९० तुरतुरिया (रायपुर)

बुद्ध-मूर्तियों पर उत्कीर्ण लेख। रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (पुराना) पृ० ३५१; हीरालाल सूची, क्रमांक १८५।

९९१ तेरही (शिवपुरी)

(अ) महासामन्ताधिपति गुणराज तथा उन्दभट्ट के उल्लेखयुक्त वि० सं० ९६० का स्मारक-स्तम्भ लेख। कीलहार्न–इ० ए० भाग १७, पृ० २०२; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक १०५; भण्डारकर सूची, क्रमांक ४३; कीलहार्न सूची, क्रमांक १९।

(आ) वि० सं० ९ (?) ० का शिलालेख जिसका अर्थ अस्पष्ट है। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १७६; ग्वा पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक १०६।

९९२. तेवर (जबलपुर)

(अ) वज्रपाणि की मूर्ति पर उत्कीर्ण लेख। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ५८; हीरालाल सूची, क्रमांक ४९।

(आ) खण्डित शिलालेख, जिसमें भीमपाल, त्रिपुरी तथा सिंहपुरी का उल्लेख है। इ० ए० भाग २०, पृ० ८५; भण्डारकर सूची, कमांक १९०१; हीरालाल सूची, कमांक ५३।

(इ) बालसागर तालाब के मध्य स्थित खण्डित मूर्ति पर उत्कीर्ण लेख, जिसमें वीरनन्दि तथा सोमा का उल्लेख है। हीरालाल सूची, क्रमांक ५५।

(ई) बावली की सीढ़ी पर उत्कीर्ण लेख जिसमें किसी व्यक्ति का नाम उल्लेख है। हीरालाल सूची, क्रमांक ५६।

९९३. दमोह (दमोह)

(अ) वि० सं० १३३६ तथा १३४१ के सती-स्तम्भ लेख। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १६८।

(आ) वि० सं० १३४४ का ब्रह्म-यज्ञ-स्मृति लेख। हीरालाल सूची, क्रमांक ११४।

९९४. दुर्ग (दुर्ग)

एक शिला पर उत्कीर्ण दो लेख। प्रथम लेख में शिवदेव तथा विष्णु मन्दिर का उल्लेख है। द्वितीय लेख में शिवपुर तथा शिवदुर्ग का उल्लेख किया गया है। क० प्र० रि० १९०८, पृ० ४८; क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ३-४; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८९४; हीरालाल सूची, क्रमांक २३२।

९९५. दुबकुण्ड (शिवपुरी)

वि० सं० ११५२ का अभिलेख, जो जैन मन्दिर में पदचिन्हों के नीचे है। इसमें काष्टसंघ महाचार्यवर्य श्री देवसेन की पादुका युगल का उल्लेख है। क० आ० स०

इ० रि० भाग २०, पृ० १०२; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, क्रमांक ४८; भण्डारकर सूची, क्रमांक १६१।

९९६. देवकर (दुर्ग)

अस्पष्ट शिलालेख। हीरालाल सूची, क्रमांक २४०।

९९७. देवगवां (छतरपुर)

भट्टारकप्रभ महाराज वंगेश्वर जांगत का वर्ष ८० का शिवलिंग पर उत्कीर्ण लेख जिसमें जांगत द्वारा शिवलिंग स्थापना का उल्लेख है। गा० स्टे० म्यू० बु०, पृ० २।

९९८. देवरगांव (दुर्ग)

विशालकाय लिंग पर उत्कीर्ण 'मगरधज जोगी' लेख। हीरालाल सूची, क्रमांक ३०३।

९९९. देहता (जबलपुर)

वि० सं० १२९९ का स्मृति-शिला लेख। हीरालाल सूची, क्रमांक ७७।

१०००. दैमापुर (जबलपुर)

वि० सं० १२८८ का सती-लेख। हीरालाल सूची, क्रमांक ७८।

१००१. धनंच (शिवपुरी)

(अ) वि० सं० १३५१ का स्तम्भ-लेख, जिसमें महाराजकुमार श्री सुरहाईदेव, महाराज श्री हमीरदेव तथा विजयपालदेव का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८८, क्रमांक १७।

(आ) वि० सं० १३९० के पन्द्रह जैन-मूर्ति लेख जिनमें से अधिकांश अस्पष्ट हैं। केवल एक लेख में चन्द्रदेव और श्री विजय का उल्लेख है तथा दूसरे लेख में कीर्तिदेव का नाम पढ़ा जा सकता है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, कमांक ६३, ७०, ७१, ७२, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८४, ८५, ८७, ८८ तथा वही, संवत् १९८६, कमांक ६८।

१००२. धमतरी (रायपुर)

एक अस्पष्ट मूर्ति-लेख। हीरालाल सूची, क्रमांक १९४।

१००३. धमनार (मन्दसौर)

वि० सं० १३६३ का स्तम्भ-लेख। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० २७९।

१००४. नचना (पन्ना)

वि० सं० १४१४ का शिलालेख, जो कुठरगढ़ दुर्ग से प्राप्त हुआ था। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ५१।

१००५. नड़ेरी (गुना)

(अ) वि० सं० १५७७ का शिलालेख, जिसमें कूप के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० १९२४-२५, पृ० २५।

(आ) सती-लेख, जिसमें सती होने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८१, क्रमांक २५।

१००६. नन्हावारा (जबलपुर)

राजा शुभसिंहदेव का शिलालेख। हीरालाल सूची, क्रमांक ६६।

१००७. नयी सोयन (शिवपुरी)

वि० सं० १२२९ का गणेश-मूर्ति लेख। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, क्रमांक ३३।

१००८. नरवर (शिवपुरी)

(अ) वि० सं० १३१६ का जैन-प्रतिमा लेख जिसमें प्रतिमा प्रतिष्ठा का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८२, क्रमांक ४।

(आ) वि० सं० १३४० का जैन-प्रतिमा लेख, जिसमें प्रतिमा की स्थापना का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८२, क्रमांक ५।

(इ) वि० सं० १३४० का जैन-प्रतिमा लेख जिसमें प्रतिमा की स्थापना का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८२, क्रमांक ६।

(ई) वि० सं० १३४० का शिलालेख जो अस्पष्ट है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९९४, क्रमांक १३।

१००९. नरवर दुर्ग (शिवपरी)

(अ) वि० सं० १२१३ का तीर्थंकर-मूर्ति लेख, जिसमें प्रतिमा की प्रतिष्ठा का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८२, क्रमांक ३।

(आ) वि० सं० १५३९ का शिलालेख। ग्वा० पु० रि० १९८१, क्रमांक ३९।

१०१०. नरेसर (मोरेना)

(अ) शिव मन्दिर में लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी का अभिलेख। ग्वा० पु० रि० १९४७-४८।

(आ) जल-मन्दिर की दीवाल पर उत्कीर्ण वि० सं० १२०२ का शिलालेख, जिसमें महेश्वर के लड़के राउक के दान देने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक २१।

(इ) वि० सं० १२४५ का मूर्ति-लेख जिसमें रावल वामदेव का उल्लेख है। ग्वा०पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक ३८।

(ई) वि० सं० १२४९ का मूर्ति-लेख जिसमें अजपाल तथा वामदेव का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक २३।

(उ) वि० सं० १३१६ का शिलालेख, जिसमें वस्तुपालदेव तथा नलेश्वर का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक १७।

(ऊ) मूर्तियों पर उत्कीर्ण बारह अभिलेख, जिनमें पहले रावल का नाम तथा फिर 'वामदेव प्रणमति' लिखा है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५ क्रमांक २५ से ३३ तथा ३५ और ३६।

१०११. नान्दुर–खुर्द (रायगढ़)

लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी की लिपि में उत्कीर्ण बोधिसत्व की प्रतिमा पर लेख। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ७२।

१०१२. नारायनपाल (बस्तर)

खण्डित शिलालेख, जिसमें रुद्रेश्वर (शिव) के मन्दिर का उल्लेख है। हीरालाल सूची, क्रमांक २९५।

१०१३. निमथूर (मन्दसौर)

(अ) महाराजाधिराज श्री चामुण्डराज कालीन वि० सं० १०२ (८) का शिलालेख जो पंचमुखी महादेव मन्दिर के द्वार पर उत्कीर्ण है। क० आ० स० इ० रि० भाग २३, पृ० १२५; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक ५; कीलहार्न सूची, क्रमांक ४३; भण्डारकर सूची, क्रमांक ८१।

(आ) विष्णु-मन्दिर अभिलेख। ग्वा० पु० रि० १९१७-१८।

१०१४. निमाड़ जिला

वि० सं० ११४९ का मूर्ति-लेख। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ८१।

१०१५. नेमावर (देवास)

वि० सं० १२५३ तथा १२८१ के दो अभिलेख जिनमें यात्रियों का उल्लेख है। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग २०, खण्ड १, पृ० ३२; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग २० पृ० २२, ५५; रि० अ० हो० स्टे० १९३१ पृ० ९५; भण्डारकर सूची, क्रमांक ४७९।

१०१६. पचमढ़ी (होशंगाबाद)

अस्पष्ट गुफा तथा स्तम्भ-लेख। हीरालाल सूची, क्रमांक १३२।

१०१७. पचरई (शिवपुरी)

(अ) शान्तिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण वि० सं० ११२२ (?) का लेख, जिसमें हरिराज तथा उसके पुत्र रणमल आदि का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७१, क्रमांक ३०।

(आ) वि० सं० ११३२ का जैन-मन्दिर स्तम्भ-लेख। वही, क्रमांक ३२।

(इ) वि० सं० १२१० का जैन-मन्दिर लेख, जिसमें जैनाचार्यों का उल्लेख है। वही, क्रमांक ३१।

(ई) वि० सं० १२१० का जैन-मूर्ति लेख जिसमें जैन आचार्यों के नाम दिए हुए हैं। वही, क्रमांक ३४।

(उ) वि० सं० १२१३ का जैन-मूर्ति लेख। वही, क्रमांक ३५।

(ऊ) वि० सं० १२२२ का जैन-मन्दिर लेख जिसमें १२२२, १२३१ तथा १२११ संवतों का उल्लेख है। वही, क्रमांक ३६।

(ए) वि० सं० १३१९ का सती-स्तम्भ लेख। वही, सम्वत् १९८६, क्रमांक ३३।

(ऐ) वि० सं० १३३९ का भग्न सती-प्रस्तर लेख, जिसमें चन्देरी देश का उल्लेख है। वही, क्रमांक ३४।

(ओ) वि० सं० १३४५ का सती-प्रस्तर लेख, जिसमें राजा गोपालदेव तथा उसके अधीनस्त कच्छा रानेजू के पुत्र हंसराज तथा वल्हदेव का उल्लेख है। वही, सम्वत् १९७१, क्रमांक २९।

(औ) वि० सं० १३५० का जैन-लेख। वही, सम्वत् १९७१, क्रमांक ३३।

(क) वि० सं० १३६२ का भग्न सती-प्रस्तर लेख। वही, सम्वत् १९८६, क्रमांक ३०।

(ख) वि० सं० १३७४ का सती-प्रस्तर लेख। वही, क्रमांक ३१।

(ग) वि० सं० १३७५ के दो सती-प्रस्तर लेख। वही, सम्वत् १९८४, क्रमांक ८६ तथा ९२।

(घ) वि० सं० १३७७ का सती-प्रस्तर लेख। वही, सम्वत् १९८४, क्रमांक ८५।

(ङ) वि० सं० १३८३ का सती-प्रस्तर लेख। वही, सम्वत् १९८६, क्रमांक ३२।

(च) वि० सं० १३८८ का सती-प्रस्तर लेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८६, क्रमांक ३२।

१०१८. पठारी (विदिशा)

सप्त मातृकाओं की मूर्ति के पास लेख जिसमें जयत्सेन का नामोल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८२, क्रमांक १५।

१०१९. पढ़ावली (मोरेना)

(अ) मन्दिर के प्रवेश द्वार पर वि० सं० ११०७ का लेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७२, क्रमांक ४२।

(आ) वि० सं० १३३२ का अभिलेख, जिसमें विक्रमदेव के शासन काल में एक मण्डप के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७२, क्रमांक ३२।

(इ) वि० सं० १५६० का स्तम्भ-लेख, जिसमें किसी नारायण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९०२, क्रमांक ३५।

(ई) वि० सं० १५६६ का स्तम्भ-लेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७२, क्रमांक ३३।

१०२०. पदमपुर (बिलासपुर)

वि० सं० १४०३ का सती-प्रस्तर लेख। हीरालाल सूची, क्रमांक २३१।

१०२१. पवाया (ग्वालियर)

लगभग प्रथम शताब्दी ईसवी का शिलालेख जो शिवनन्दी के शासन काल के चौथे वर्ष में स्थापित मणिभद्र यक्ष की प्रतिमा के अधोभाग पर उत्कीर्ण है। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट सन् १९१५-१६, पृ० १०५; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १५, पृ० ६८।

१०२२. पाटन (राजगढ़)

कुछ सती-स्तम्भ लेख। से० इ० ग० सी०, पृ० १६९।

१०२३. पारगढ़ (शिवपुरी)

वि० सं० १३०० का अभिलेख जो शेषशायी विष्णु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७५, क्रमांक ८१।

१०२४. पारडा (मन्दसौर)

एक अभिलेख। रि० अ० हो० स्टे० १९३२, पृ० ९५।

१०२५. पारोली (मोरेना)

एक तिथि रहित शिलालेख। क० आ० स० इ० रि० भाग २०, पृ० १०९; ग्वा० पु० रि० १९१५-१६।

१०२६. पालि (सागर)

महादेव के मन्दिर में एक शिला पर उत्कीर्ण वि० सं० ११६२ की तिथि। क० प्र० रि० १९०४, पृ० ५४; हीरालाल सूची, क्रमांक ९४।

१०२७. पिठोरिया (सागर)

(अ) एक अस्पष्ट शिलालेख, जिसमें वि० सं० ८८३ का उल्लेख है। क० प्र० रि० १९०४, पृ० ५४; भण्डारकर सूची, क्रमांक १९०२; हीरालाल सूची, क्रमांक ९४।

(आ) वि० सं० ९९३ का ५ पंक्तियों का शिलालेख, जिसमें शिव की प्रार्थना की गयी है। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ५७।

१०२८. विपरसेवा (मोरेना)

वि० सं० १५२१ का स्तम्भ-लेख। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७२, क्रमांक ४३।

१०२९. पीपलरावन (उज्जैन)

वि० सं० १३४० का शिलालेख, जिसमें महाराज विजय का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७४, क्रमांक ४४।

१०३०. पीपला (उज्जैन)

वि० सं० १३९५ का स्तम्भ-लेख जिसमें स्थान का नाम पिपलू दिया है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७४, क्रमांक ५४।

१०३१. पुरा गिलाना (मन्दसौर)

दो तिथि रहित मूर्ति-लेख। प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १९, पृ० २५, ८१।

१०३२. फिंगेश्वर (रायपुर)

मध्यकालीन मन्दिर के मण्डप के स्तम्भ पर उत्कीर्ण दो पंक्ति का अभिलेख। इ० आ० रि० १९६९-७०।

१०३३. फोपनार-कलां (पूर्व निमाड़)

काँसे की बनी बौद्ध प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लगभग ६वीं शताब्दी ईसवी के दक्षिण भारतीय लिपि में लेख। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० २-३।

१०३४. बजरंगढ़ (गुना)

(अ) लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी का शिलालेख, जिसमें ईश्वर नामक व्यक्ति द्वारा विष्णु-मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७५, क्रमांक ६६।

(आ) वि० सं० १२३६ का जैन-मन्दिर लेख, जिसमें मूर्ति की स्थापना का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० १९७५, क्रमांक ६४।

१०३५. बडोह (विदिशा)

(अ) वि० सं० (११) १३ का जैन मन्दिर शिलालेख, जिसमें एक यात्री का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८०, क्रमांक ३।

(आ) जैन मन्दिर के दरवाजे पर उत्कीर्ण वि० सं० ११३४ का शिलालेख जिसमें देव-चन्द्र नामक यात्री का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८०, क्रमांक ४।

१०३६. बडोखर (मोरेना)

(अ) वि० सं० १४५४ का शिलालेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९२, क्रमांक ५१।

(आ) वि० सं० १५४ (३) का शिलालेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९२, क्रमांक ४८।

(इ) वि० सं० १५४८ का सती-स्तम्भ लेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९२, क्रमांक ४७।

(ई) वि० सं० १५९८ का स्तम्भ-लेख। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९२, क्रमांक ४६।

१०३७. बदनावर (धार)

(अ) वि० सं० १२१६ का शिलालेख। एनुअल रिपोर्ट, राजपुताना म्यूजियम, १९२०-२१, पृ० २; भण्डारकर सूची, क्रमांक ३०६।

(आ) लगभग १२वीं-१३वीं शताब्दी का मूर्तिलेख। से० इ० ग० सी०, पृ० ४९४ तथा ५१३; इ० क० भाग ११, पृ० १६६।

१०३८. बदरेठा (मोरेना)

वि० सं० १५०५ का शिलालेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७३, क्रमांक १३।

१०३९. बनाड्या (इन्दौर)

वि० सं० १५४८ का जैन-मन्दिर लेख। हे० म० इ०।

१०४०. बरई (ग्वालियर)

(अ) वि० सं० १४४६ का जैन-मूर्ति लेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७३, क्रमांक १।

(आ) वि० सं० १५२९ का जैन-प्रतिमा लेख। ग्वा० डि० ग०, पृ० ३५८।

१०४१. बरमावल (रतलाम)

वि० सं० ११५१ का मन्दिर-शिलालेख। से० इ० ग० सी०, पृ० ३८७।

१०४२. बरहटा (नरसिंहपुर)

शिलालेख जिसमें 'मगरध्वज जोगी ७००' उत्कीर्ण है। हीरालाल सूची, क्रमांक १३६।

१०४३. बलारपुर (शिवपुरी)

दो स्मृति-स्तम्भ जिनमें एक पर वि० सं० ९५७ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९१८-१९।

१०४४. बलेह (सागर)

शिलालेख जिसमें पालवन (अथवा यालवन) 'पत्तल' का उल्लेख है। हीरालाल सूची, क्रमांक ९३।

१०४५. बामौर (शिवपुरी)

(अ) वि० सं० ९५७ का स्तम्भ-लेख, जो किसी की मृत्यु की स्मृति में है। इसका पूर्ण अर्थ अस्पष्ट है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७५, क्रमांक ९७।

(आ) मुरायत मन्दिर के द्वार पर उत्कीर्ण वि० सं० १२८९ का अभिलेख जिसमें भायल-

स्वामी की सज्जा करने वाले एक यात्री का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७५, क्रमांक १००।

(इ) वि० सं० १३५० का शिलालेख, जिसमें एक यात्री का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७५, क्रमांक १०१।

१०४६. बारसूर (बस्तर)

दो पंक्तियों का तेलुगु में अस्पष्ट शिलालेख। हीरालाल सूची, क्रमांक २९८।

१०४७. बारा (शिवपुरी)

(अ) वि० सं० १०९८ का शिलालेख, जो किसी प्रशस्ति का अन्तिम भाग है। इसमें विष्णु मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८२, क्रमांक ८।

(आ) वि० सं० १५३९ का सती-स्तम्भ लेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८१, क्रमांक ३९।

१०४८. बारा (भिण्ड)

वि० सं० १४८७ का सती-प्रस्तर लेख। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ८।

१०४९. बारोद (बूढ़ी) (शिवपुरी)

लगभग १०वीं सदी ईसवी का स्मृति-स्तम्भ लेख। ग्वा० पु० रि० १९२२-२३।

१०५०. विजयराघोगढ़ (जबलपुर)

वि० सं० ११५४ का महाराज मगधदेव का स्तम्भ लेख। हीरालाल सूची, क्रमांक ७२।

१०५१. बिजरी (शिवपुरी)

वि० सं० १५०२ का शिलालेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९०५, क्रमांक ९५।

१०५२. बिजवाड़ (देवास)

वि० सं० १२३४ का अभिलेख। प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग २०, पृ० १०६; इ० स्टे० ग० भाग २. पृ० ९; रि० अ० हो० स्टे० १९३२, पृ० ९५।

१०५३. बिलहरा (नरसिंहपुर)

वि० सं० १३७४ का अस्पष्ट शिलालेख। हीरालाल सूची, क्रमांक १३६।

१०५४. बिलाव (शिवपुरी)

वि० सं० १३९० का सती-स्तम्भ लेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७१ क्रमांक ३३।

१०५५. बुढेरा (शिवपुरी)

वि० सं० १३५१ का स्तम्भ-लेख, जो बुरी तरह लिखा गया है। इसमें कीर्तिदुर्ग, पद्मराज, उदयसिंह, हरिराज के नाम तथा चन्देरी और बुन्देला राजाओं का उल्लेख पढ़ा जा सकता है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८८, क्रमाक २३।

१०५६. बूढ़ी राई (शिवपुरी)

विo संo १५४५ का सती-प्रस्तर लेख । ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७५, क्रमांक ८० ।

१०५७. बेसनगर (विदिशा)

लगभग ४थी शताब्दी का मुद्रालेख, जिसमें महाराज श्री विश्वामित्र स्वामिन् का उल्लेख है। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९१४-१५, पृ० ८१, क्रमांक १। वहीं से प्राप्त अन्य मुद्रालेखों के लिए देखिये, आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग १४, पृ० ८० ।

१०५८. बोरतालाब (दुर्ग)

ऋषभदेव की प्रतिमा पर उत्कीर्ण वि० सं० १५४८ का जीवरा का लेख । ख० वैं० पृ० १४८ ।

१०५९. भवतर (गुना)

(अ) वि० सं० ९(७०) का महादेव मन्दिर शिलालेख, जिसमें एक उच्चवंशीय यात्री का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० १९७५, क्रमांक १०८ ।

(आ) वि० सं० १३८४ का सती-स्तम्भ लेख । ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७५, क्रमांक ११२ ।

१०६०. भगोर (झाबुआ)

सम्वत् १३३१ का शिलालेख । से० इ० ग० सी०, पृ० ५६४ ।

१०६१. भदेरा (शिवपुरी)

वि० सं० १४९५, १५३५ तथा १५६५ के सती-स्तम्भ लेख । ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८५, क्रमांक ४६, ४५, ४४ ।

१०६२. भरावली (मोरेना)

वि० सं० १४३६, १५३६ तथा १५६४ के सती-प्रस्तर लेख । ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ३२ ।

१०६३. भिलसा (विदिशा)

(अ) लगभग १०वीं शताब्दी का शिलालेख, जिसमें भाइल्ल स्वामी जिसके नाम पर भिलसा का नाम पड़ा, की प्रशंसा है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७९, क्रमांक २५; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग २२, पृ० १८७ तथा भाग १३, खण्ड १, पृ० २९ और ३१; ए० इ० भाग ३०, पृ० २१५-२१९ ।

(आ) मूर्ति-लेख जिसमें श्री बलदेव द्वारा मूर्ति निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८५, क्रमांक २ ।

(इ) बीजामण्डल स्तम्भ-लेख, जिसमें रत्नसिंह नामक यात्री का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७४, क्रमांक ६१, ६२ ।

(ई) बीजामण्डल स्तम्भ-लेख, जिसमें देवपति नामक यात्री का उल्लेख है । वही, क्रमांक ६३ ।

(उ) वि० सं० ११३२ का जैन-प्रतिमा लेख, जिसमें राजा विजयपाल तथा कुछ दान-दाताओं का उल्लेख है । ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८०, क्रमांक ४ ।

(ऊ) वि० सं० ११५४ (?) का खण्डित-मूर्ति लेख, जिसमें लक्ष्मण के पुत्र कुमारसी का उल्लेख है तथा प्रारम्भ में बुद्ध का अभिवादन किया गया है । ग्वा० पु० रि० सम्वत् २०००, क्रमांक ४ ।

(ए) बीजामण्डल मस्जिद के स्तम्भ पर उत्कीर्ण वि० सं० १२१६ का अभिलेख । ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७०, क्रमांक ३ ।

(ऐ) बीजामण्डल मस्जिद के स्तम्भ पर उत्कीर्ण वि० सं० १२१६ का अभिलेख । प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९१३-१४, पृ० ५९; ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७४, क्रमांक ६५; भण्डारकर सूची, क्रमांक ३० ।

(ओ) बीजमण्डल मस्जिद के स्तम्भ पर उत्कीर्ण वि० सं० १२१६ का अभिलेख । ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७४, क्रमांक ६४ ।

(औ) वि० सं० १२३६ का शिलालेख, जिसमें दामोदर नामक व्यक्ति द्वारा छोटे भाई बाल्हन के स्मारक स्थापन करने का उल्लेख है । ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९३, क्रमांक १ ।

(क) वि० सं० १२४२ का मूर्ति-लेख, जिसमें विष्णु-मूर्ति के निर्माण का उल्लेख है । मूर्ति अब गुजरी महल संग्रहालय, ग्वालियर में है ।

१०६४. भेड़ाघाट (जबलपुर)

चौसठ-योगिनी के गौरीशंकर मन्दिर के बौद्ध देवी 'तारा' की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख । हीरालाल सूची, क्रमांक ५० ।

१०६५. भेसरवास (गुना)

वि० सं० १३५२ का सती-प्रस्तर लेख । ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७९, क्रमांक ७९ ।

१०६६. भैरमगढ़ (बस्तर)

शिलालेख जिसमें 'मगरधज जोगी ७००' उत्कीर्ण है । हीरालाल सूची, क्रमांक २९१ ।

१०६७. भौंरासा (विदिशा)

(अ) भवनाथ के मन्दिर में उत्कीर्ण वि० सं० १० (७३?) का शिलालेख । ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७४, क्रमांक २१ ।

(आ) वि० सं० १५६४ का सती स्तम्भ लेख, जिसमें सती-दाह का उल्लेख है । ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९८, क्रमांक ८ ।

१०६८. मझगवाँ (जबलपुर)

(अ) वि० सं० १२४६ तथा १२६० के दो सती-लेख। हीरालाल सूची, क्रमांक ७८।

(आ) शिलालेख, जिसमें किसी पाशुपताचार्य का उल्लेख है। हीरालाल सूची, क्रमांक ६६।

१०६९. मदनपुर (सागर)

(अ) वि० सं० १२३५ का 'त्रिकौर-पथक' के शासक महाराजपुत्र आल्हणदेव का अभिलेख। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १७४; भण्डारकर डी० आर०—प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९०३-४, पृ० ५५, क्रमांक २०४८; भण्डारकर सूची, क्रमांक ३८२।

(आ) वि० सं० १३८५ का मन्दिर-स्तम्भ लेख। भण्डारकर—प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९०३-४, पृ० ५५, क्रमांक २०४६; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६८४।

१०७०. मन्दसौर (मन्दसौर)

(अ) वि० सं० १२८३ का स्तम्भ-लेख। ग्वा० पु० रि सम्वत् १९७५, क्रमांक ४३।

(आ) वि० सं० १३२१ का अभिलेख, जिसमें दशपुर की एक बावड़ी का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७०, क्रमांक ६ तथा सम्वत् १९७४, क्रमांक ७।

(इ) वि० सं० १५०५ का शिलालेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९४, क्रमांक ११।

(ई) वि० सं० १५५५ का शिलालेख। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७०, क्रमांक १२।

(उ) वि० सं० १५५७ का शिलालेख, जिसमें ठाकुर रामदास का उल्लेख है। वही, क्रमांक १०।

(ऊ) वि० सं० १५५७ का शिलालेख, जिसमें ठाकुर रामदास का नाम तथा एक शपथ ग्रहण करने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७४, क्रमांक ८।

१०७१. मयाना (गुना)

वि० सं० १२९७ का अभिलेख जिसमें किसी यात्री का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३०२।

१०७२. मरफा

वि० सं० १४०४ का सिधितुंग (?) के शासन काल का अभिलेख। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १९; भण्डारकर सूची, क्रमांक ७०४।

१०७३. मल्लार (बिलासपुर)

लगभग ६वीं शताब्दी के सिद्धमातृका लिपि में उत्कीर्ण स्तम्भ-लेख, जिसमें रणक्षोभ, जो सम्भवतः शैलोद्भव वंश का था, का उल्लेख है। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० २-५।

१०७४. महलघाट (विदिशा)

वि० सं० ६३५ का शिलालेख, जो अत्यन्त भग्न तथा अस्पष्ट है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १६७०, क्रमांक ८।

१०७५. महिदपुर (उज्जैन)

वि० सं० १३४४ का विष्णु-मन्दिर लेख। हे० म० इ०।

१०७६. महुआ (शिवपुरी)

लगभग सातवीं शताब्दी का उदित के पुत्र वत्सराज का अभिलेख, जिसमें शिव मन्दिर बनाने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १६७१, क्रमांक २८; भण्डारकर सूची, क्रमांक २१०८।

१०७७. महुवन (गुना)

वि० सं० १४४३ का सती-स्तम्भ लेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १६८२, क्रमांक १०।

१०७८. महोरी (रीवा)

वि० सं० १४२१ का सती-स्तम्भ लेख। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ३।

१०७९. माकनगंज (मन्दसौर)

लगभग ७-८वीं शताब्दी का शिलालेख, जिसमें दत्तसिंह तथा उसके पुत्र गोपसिंह के नाम सहित मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १६८६, क्रमांक २०।

१०८०. मान्धाता (पूर्व-निमाड़)

(अ) वि० सं० ११२० तथा १६१६ के अमरेश्वर मन्दिर लेख। भण्डारकर सूची, क्रमांक १३८; हीरालाल सूची, क्रमांक १५१।

(आ) चौबीस-अवतार मन्दिर मूर्ति-लेख, जिसमें ६ मूर्तियों पर विष्णु के विभिन्न अवतारों के नामों का उल्लेख है। हीरालाल सूची, क्रमांक १५२।

(इ) सिद्धनाथ मन्दिर का स्तम्भ-लेख, जिनमें 'मगरध्वज जोगी ७००' उत्कीर्ण है। हीरालाल सूची, क्रमांक १५३।

(ई) सिद्धनाथ मन्दिर की फर्श पर उत्कीर्ण यात्रियों के कई अभिलेख। वही।

(उ) सिद्धनाथ मन्दिर के द्वार पर उत्कीर्ण चन्देरी के महाराज नरसिंहदेव का वि० सं० १७६५ का अभिलेख। वही।

१०८१. मामोन (गुना)

वि० सं० १३५१ का स्मारक-स्तम्भ लेख, जो अस्पष्ट है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १६८२, क्रमांक १४।

३३

१०८२. मासेर (विदिशा)

शुल्की वंश के शासक नरसिंह का शिलालेख जिसमें इस वंश की वंशावली दी हुई है। इसमें कलचुरि राज, लाटराज तथा कछवाहा राजा के हारे जाने का उल्लेख मिलता है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८७, क्रमांक १ तथा २।

१०८३. माहोली (गुना)

वि० सं० १५२६ का सती-स्तम्भ लेख। ग्वा० पु० रि० स० १९७९, क्रमांक ४०।

१०८४. नितावली (मोरेना)

(अ) वि० सं० १३८० का शिव-मन्दिर शिलालेख जिसमें महाराज देवपालदेव तथा मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९८, क्रमांक १५।

(आ) वि० सं० १५६० का मूर्ति-लेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९८, क्रमांक १२।

(इ) शिलालेख, जिसमें वत्सराज का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७२, क्रमांक ५७।

(ई) स्तम्भ-लेख, जिसमें सूर्यस्तोत्र का एक पद तथा महाराज रामसिंह का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सं० १९९०, क्रमांक १४।

(उ) शिलालेख जिसमें महाराज कीर्तिसिंहदेव तथा रामसिंह का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९८, क्रमांक ११।

(ऊ) शिलालेख जिसमें पृथ्वीसिंह चौहान की प्रशंसा है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७२, क्रमांक ५०।

(ए) गोल-मन्दिर अभिलेख जिसमें थानसिंह चौहान का उल्लेख है। वही, क्रमांक ४७।

(ऐ) शिलालेख जिसमें हम्मीरदेव चौहान का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९८, क्रमांक ७।

१०८५. मियाना (गुना)

(अ) वि० सं० १५५१ का अभिलेख, जिसमें कूप-निर्माण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७५, क्रमांक ५२।

(आ) वि० सं० १५५१ का कूप-लेख, जिसमें लक्ष्मण द्वारा कूप तथा वाटिका निर्माण का उल्लेख है। वही, क्रमांक ५१।

(इ) वि० सं० १५५१ का कूप-लेख, जिसमें राजपूत सरदार लक्ष्मण दुर्गपाल द्वारा कूप-निर्माण का उल्लेख है। वही, क्रमांक ५०।

(ई) वि० सं० १५६३ का सती-प्रस्तर लेख। अस्पष्ट। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७५, क्रमांक ५८।

(उ) वि० सं० १५६४ का शिलालेख, जिसमें सती का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७५, क्रमांक ५३।

१०८६. मुखवासा (शिवपुरी)

वि० सं० १३५६ का सती-प्रस्तर लेख जिसमें पल्हण के पुत्र कल्हण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्बत् १९७९, क्रमांक १३।

१०८७. मुरमुरा (रायपुर)

'आदित्य वराह' का शिलालेख। हीरालाल सूची, क्रमांक १९४।

१०८८. मुहास (दमोह)

कुटिल-लिपि में उत्कीर्ण शिलालेख। हीरालाल सूची, क्रमांक १२१।

१०८९. मैहर (सतना)

लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी का शारदादेवी मन्दिर का शिलालेख, जिसमें ब्राह्मण देवधर द्वारा अपने स्वर्गवासी पुत्र की पुण्य स्मृति में सरस्वती के मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ५७; क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ३३-३४।

१०९०. मोहना (ग्वालियर)

वि० सं० १४६२ का सती-स्तम्भ लेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८०, क्रमांक ११।

१०९१. मोहेन्द्रा (पन्ना)

तीन शिलालेख जिनमें एक पर वि० सं० १३६६ की तिथि है। इसमें स्थान को 'महुन्द्रा' नाम से पुकारा गया है। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ४५।

१०९२. रतनगढ़ (मन्दसौर)

वि० सं० ११४२ का सती-स्तम्भ लेख, जिसमें गंगा नामक स्त्री के सती होने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १७८९, क्रमांक ४१।

१०९३. रतनपुर (बिलासपुर)

(अ) रामटेकड़ी तथा कण्ठिदेवल मन्दिर के अस्पष्ट शिलालेख। हीरालाल सूची, क्रमांक २२६।

(आ) लक्ष्मीटेकड़ि का अस्पष्ट शिलालेख। हीरालाल सूची, क्रमांक २२८।

१०९४. रदेव (शिवपुरी)

(अ) वि० सं० (१०) ७८ का शान्तिनाथ की मूर्ति पर उत्कीर्ण लेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९२, क्रमांक ३९।

(आ) वि० सं० १४९७ का सती-स्तम्भ लेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९२, क्रमांक ३८।

१०९५. रणोद (गुना)

मत्तमयूरवंशी शैव आचार्यों का अभिलेख, जिसमें उनका वंश-वृक्ष दिया हुआ है। कोलहार्न —ए० इ० भाग १, पृ० ३५४; क० आ० स० इ० रि० भाग २,

पृ० ३०५; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग २१, पृ० ४२; वही, भाग २२, पृ० १८४; वही, भाग २३, पृ० १३२; मिराशी—ज० म० प्र० इ० प० भाग ४, पृ० १; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८७२।

१०९६. राजिम (रायपुर)

(अ) राजीवलोचन मन्दिर का लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ई० का कुटिल-लिपि में उत्कीर्ण लेख जिसमें विष्णु मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० १८; क० प्र० रि० १९०४, पृ० ४८; हीरालाल सूची, क्रमांक १८८।

(आ) राजीवलोचन मन्दिर के स्तम्भों पर उत्कीर्ण लगभग ९वीं शताब्दी ई० की लिपि में कई लेख, जिनमें तीर्थयात्रियों के नामों का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० १९-२०; क० प्र० रि० १९०४, पृ० ४८-४९; हीरालाल सूची, क्रमांक १८९।

(इ) लगभग ९वीं शताब्दी ई० का कुलेश्वर मन्दिर का अस्पष्ट शिलालेख। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० १५; क० प्र० रि० १९०४, पृ० ४८-४९; हीरालाल सूची, क्रमांक १३०।

१०९७. रामपुर

महाराज वीरराजदेव (?) की रानियों का वि० सं० १४०४ का सती-स्तम्भ लेख। क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ३४; भण्डारकर सूची, क्रमांक ७०५।

१०९८. रायपुर (रायपुर)

महामाया मन्दिर का शिलालेख, जिसमें कोई ऐतिहासिक तथ्य का उल्लेख नहीं है। हीरालाल सूची, क्रमांक १९३।

१०९९. रायरु (ग्वालियर)

वि० सं० १५५२ का सती-स्तम्भ लेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७९, क्रमांक १।

११००. रासिन

एक स्थानीय शासक महीपति परमर्दिन् का वि० सं० १४६६ का अभिलेख। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १८; भण्डारकर सूची, क्रमांक ७४३; इ० ए० भाग १९, पृ० ३५५, क्रमांक १५६।

११०१. रीवा (रीवा)

बौद्ध प्रतिमा पर उत्कीर्ण लगभग १०वी शताब्दी का लेख। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १४४।

११०२. लखनादोन (सिवनी)

लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी का जैन-मन्दिर लेख जिसमें त्रिविक्रमसेन तथा उनके गुरु अमृतसेन का उल्लेख है। हीरालाल सूची, क्रमांक १२७।

११०३. लखारी (गुना)

(अ) शिव मन्दिर के दासे पर उत्कीर्ण वि० सं० १०० (?) का शिलालेख । ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८१, क्रमांक २३ ।

(आ) वि० सं० ११२४ का शिलालेख, जिसमें महाराजाधिराज अभयदेव (?), राजकुमार चन्द्रादित्य तथा जाल्हनदेव का उल्लेख है । ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८१, क्रमांक २२ ।

११०४. विदिशा (विदिशा)

(अ) ईसवी सम्वत् ८७८ का अभिलेख जिसमें एक सूर्य-मन्दिर निर्माण का उल्लेख है । इ० आ० रि० १९५३-५४, पृ० १४ ।

(आ) शेषशायी की मूर्ति पर उत्कीर्ण लेख, जिसमें गौड़ान्वय श्री लाभदेव का उल्लेख है । ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८६, क्रमांक ३ ।

(इ) खण्डित शिलालेख, जिसमें दण्डनायक श्रीचन्द्र का उल्लेख है । ग्वा० पु० रि० सम्वत् २०००, क्रमांक २ । लिपि लगभग १२वीं शताब्दी ई० की है ।

११०५. वँखेड़ा (मन्दसौर)

लगभग १२वीं शताब्दी ई० के मन्दिर में उत्कीर्ण दो लेख । प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १९, पृ० १०२, १०३ ।

११०६. सकर्रा (गुना)

(अ) वि० सं० ११२० (?) का सती-प्रस्तर लेख । ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८४, क्रमांक ७३ ।

(आ) वि० सं० १२८ (१) तथा १२८२ के सती-प्रस्तर लेख । वही, सम्वत् १९८४, क्रमांक ८२ तथा ८३ ।

(इ) वि० सं० १३०४ का सती-प्रस्तर लेख । वही, सम्वत् १९७४, क्रमांक ७८ ।

(ई) वि० सं० १३०४ का सती-प्रस्तर लेख । वही, सम्वत् १९८४, क्रमांक ७९ ।

(उ) वि० सं० १३०४ का सती-प्रस्तर लेख, जिसमें कुंअरसिंह का नाम अंकित है । वही, क्रमांक ८४ ।

(ऊ) वि० सं० १३०४ का सती-प्रस्तर लेख । वही, क्रमांक ८० ।

(ए) वि० सं० १३४१ का सती-प्रस्तर लेख, जिसमें रामदेव के शासन काल का उल्लेख है । वही, क्रमांक ८७ ।

(ऐ) वि० सं० १३४२ का सती-प्रस्तर लेख, जिसमें रामदेव का उल्लेख है । वही, क्रमांक ८१ ।

(ओ) वि० सं० १३४२ का सती-प्रस्तर लेख । वही, क्रमांक ९० ।

(औ) वि० सं० १३७५ का सती-प्रस्तर लेख । वही, क्रमांक ६२ ।

(क) वि० सं० १३७७ का सती-प्रस्तर लेख । वही, क्रमांक ८५ ।

(ख) वि० सं० १३६७ का सती-स्तम्भ लेख । वही, क्रमांक ६१ ।

(ग) वि० सं० १५५४ का सती-स्तम्भ लेख । वही, क्रमांक ७५ ।

११०७. सकौर (दमोह)

गुप्त-कालीन मन्दिर के छत पर उत्कीर्ण वि० सं० १३६१ का शिलालेख । हीरालाल—'दमोह दीपक' पृ० १०७-१०८; हीरालाल सूची, क्रमांक ११६ ।

११०८. सतनवाड़ा (ग्वालियर)

(अ) वि० सं० १०१६ का सती-प्रस्तर लेख । क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० ६४ ।

(आ) वि० सं० १५२१ का सती-प्रस्तर लेख । ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८०, क्रमांक १५ ।

११०९. सन्दोर (गुना)

वि० सं० १०७२ का स्मारक-स्तम्भ लेख । ग्वा० पु० रि० क्रमांक ७० ।

१११०. साँची (रायसेन)

(अ) लगभग ४थी शताब्दी ई० का संकल्प-पट्ट लेख । म० सा० पृ० ३८६, क्रमांक ८३१ ।

(आ) लगभग ५वीं शताब्दी ई० का मूर्ति लेख । म० सा० पृ० ३८७, क्रमांक ८३२ ।

(इ) लगभग ६वीं शताब्दी ई० का बौद्ध-मूर्ति लेख । म० सा० पृ० ३६४ ।

११११. सिनावल (दतिया)

सिद्धमातृका लिपि में उत्कीर्ण लगभग ८वीं शताब्दी ईसवी का पार्वती-मूर्ति लेख, जो सोनागिर पहाड़ी पर स्थित मन्दिर क्रमांक ७६ में रखा है । इसमें सिंहदेव के पुत्र वडक के द्वारा मूर्ति स्थापना का उल्लेख है । इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ५० ।

१११२. सिमरा (जबलपुर)

वि० सं० १३५५ का सती-लेख । क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १०१; हीरालाल सूची, क्रमांक ७८ ।

१११३. सिरपट (बिलासपुर)

वि० सं० १४०१ का सती-प्रस्तर लेख, जिसमें ग्राम का नाम 'श्रीपद' उल्लिखित है । हीरालाल सूची, क्रमांक २३१ ।

१११४. सिरपुर (रायपुर)

(अ) भूमिस्पर्शमुद्रा में बुद्ध की धातुप्रतिमा पर लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी की लिपि में उत्कीर्ण बौद्धों का बीजमंत्र 'ये धर्मा हेतुप्रभवा हेतुं तेषां तथागतो ह्यवद्त्तेषाञ्च यो निरोध एवंवादी महाश्रमण', तथा चौकी पर उत्कीर्ण द्रोणादित्य का नाम। ज० इ० म्यू० १९५२, पृ० १०९; रायपुर संग्रहालय स्मृति भेंट पृ० ७; बु० प्रि० म्यू० अंक ५ (१९५५-५७) पृ० ३; भारतीय कला प्रदर्शिनी विल्ला ह्यगेल, जर्मनी, १९५९, सूचीपत्र क्रमांक २३५; महत घासीदास स्मारक सग्रहालय सूचीपत्र, भाग ३, धातु प्रतिमाएँ पृ० १-२।

(आ) वज्रपाणि की धातुप्रतिमा के प्रभावली के पीठ पर उत्कीर्ण बौद्धों का बीजमंत्र 'ये धर्मा हेतुप्रभवा—इत्यादि' तथा चौकी पर उत्कीर्ण द्रोणादित्य का नाम। लिपि लगभग ८वी-९वीं शताब्दी ईसवी। ज० इ० म्यू० भाग ८, पृ० १०९; बु० प्रि० म्यू० अंक ५, पृ० ६; भारतीय कला प्रदर्शिनी, विल्ला ह्यूगेल, जर्मनी १९५९, सूचीपत्र क्रमांक २३३; महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय सूचीपत्र भाग ३, धातु प्रतिमाएँ, पृ० ५-६।

(इ) मंजुश्री की धातुप्रतिमा की चौकी पर उत्कीर्ण द्रोणादित्य का नाम। 'रेवा', नागपुर, सम्वत् २०१३, चित्र ४; बु० प्रि० म्यू० अंक ५, पृ० ६; म० घा० स्मारक संग्रहालय सूचीपत्र, भाग ३, पृ० ७।

(ई) तारा की धातुप्रतिमा की प्रभावली के पीठ पर उत्कीर्ण बौद्ध बीजमन्त्र 'ये धर्मा हेतुप्रभवा—इत्यादि'। बु० प्रि० म्यू० अंक ५, पृ० ८; म० घा० स्मारक संग्रहालय सूचीपत्र, भाग ३, पृ० ८।

(उ) १९५५ के सिरपुर उत्खनन में प्राप्त खण्डित धातुप्रतिमा की चौकी पर उत्कीर्ण बौद्ध बीजमन्त्र तथा लेख जिससे ज्ञात होता है कि चौकी पर जो प्रतिमा स्थापित थी, उसे बौद्धभिक्षु सुगतभाव ने अपने माता-पिता के पुण्य के लिए बनवा कर दान किया था। म० घा० स्मारक संग्रहालय सूचीपत्र, भाग ३, पृ० १२-१३।

(ऊ) केन्द्रीय संग्रहालय नागपुर के संग्रह में सिरपुर से प्राप्त प्रतिभाविहीन धातु चौकी जिसपर 'ओं कुमारदेवस्य' उत्कीर्ण है। म० घा० स्मारक संग्रहालय सूचीपत्र, भाग ३, पृ० १३।

(ए) गन्धेश्वर मन्दिर के बुद्ध-मूर्ति पर उत्कीर्ण लेख जो लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी का है। हीरालाल सूची, क्रमांक १८४।

१११५. सुनज (शिवपुरी)

वि० सं० १३१३ का सती-स्तम्भ लेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७९, क्रमांक ३९।

१११६. सुनहरा (जबलपुर)

वि० सं० १३६३ का जैन-मूर्ति लेख, जिसमें महाराजाधिराज मुद्रिगदेव का उल्लेख है। हीरालाल सूची, क्रमांक ५६।

१११७. सुन्दरसी (उज्जैन)

(अ) महाकाल मन्दिर के स्तम्भ पर उत्कीर्ण वि० सं० १२२४ का अभिलेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १६७४, क्रमांक ५०।

(आ) वि० सं० १६०० का सती-स्तम्भ लेख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १६७४, क्रमांक ४८।

१११८. सुरवाया (शिवपुरी)

वि० सं० १३४१ का कूप-लेख, जिसमें सरस्वतीपत्तन (सुरवाया) के सारस्वत ब्राह्मण ईश्वर द्वारा कूप-निर्माण का उल्लेख है। 'गाइड टू सुरवाया', पृ० २५ तथा चित्र; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६०७।

१११९. सुहानिया (मोरेना)

(अ) महेन्द्रचन्द्र के उल्लेख युक्त वि० सं० १०१३ का शिलालेख। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ४०१; लूअर्ड सूची, पृ० ८६; पूर्णचन्द्र नाहर, जैन लेख क्रमांक १४३०।

(आ) विशालकाय जैन प्रतिमा पर उत्कीर्ण वि० सं० १४६७ का लेख। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ४०१।

११२०. सेसई (शिवपुरी)

वि० सं० १३४ (१) का सती-प्रस्तर लेख जिसमें मलयदेव की मृत्यु तथा सती का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १६७१, क्रमांक २१।

११२१. सोरर (दुर्ग)

अस्पष्ट स्तम्भ-लेख जिसमें सम्भवतः ग्राम दान करने का उल्लेख है। हीरालाल सूची, क्रमांक २३६।

११२२. सोहागपुर (होशंगाबाद)

अस्पष्ट सती-लेख। हीरालाल सूची, क्रमांक १३५।

११२३. हटा (दमोह)

जटाशंकर किले (जो हटा से प्रायः ८ मील दूर है) से प्राप्त विजयसिंह का खण्डित शिलालेख। नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग ६, पृ० ५; हीरालाल—'दमोह दीपक', पृ० ११-१२; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८८६; हीरालाल सूची, क्रमांक ६६।

११२४. हासलपुर (शिवपुरी)

वि० सं० १५०७ का सती-स्तम्भ लख। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८४, क्रमांक १०३।

११२४/१. होशंगाबाद (होशंगाबाद)

स्तम्भ पर उत्कीर्ण श्री महाकुमार हरिश्चन्द्र का लेख। स० अ० इ० ओ० का० २६ (उज्जैन—१९७२), पृ० १३२।

● ●

चतुर्थ अध्याय

•

स्मारक तथा प्रतिमाएँ

अ—बौद्ध स्मारक तथा प्रतिमाएँ

११२५. अकाहा (सतना)

भरहुत के निकट इस ग्राम में प्राप्त बौद्ध प्रतिमाएँ। **क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० १।**

११२६. अन्धर (विदिशा)

बौद्ध-स्तूप के अवशेष। **भि० टो० पृ० २२१-२६।**

११२७. आरंग (रायपुर)

भूमिस्पर्श मुद्रा में बैठे बुद्ध की प्रतिमा जो लगभग ९वीं शताब्दी ईसवी की है। **इ० आ० रि० १९६८-६९।**

११२८. इन्द्रगढ़ (मन्दसौर)

पद्मपाणि अवलोकितेश्वर, ध्यानी बुद्ध, पद्मासन में बैठे बुद्ध आदि प्रतिमाएँ। **इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० १-४२।**

११२९. उज्जैन (उज्जैन)

(अ) १९३८-३९ में वैश्या-टेकरी के उत्खनन में प्राप्त मौर्यकालीन स्तूप जो ३५० फुट चौड़ा तथा १०० फुट ऊँचा था। अभी तक प्राप्त स्तूपों के अवशेषों में यह सबसे बड़ा स्तूप प्रमाणित हुआ है। सम्भवतः इसे मौर्य शासक अशोक ने बनवाया था। **ग्वा० पु० रि० १९३८-३९, पृ० १३।**

(आ) वैश्या-टेकरी के निकट एक अन्य टेकरी के उत्खनन में प्राप्त एक छोटे स्तूप के अवशेष। **वही, पृ० १४।**

(इ) पल्लेवाली-टेकरी अथवा कांकर-टेकरी के उत्खनन में प्राप्त एक अन्य स्तूप के अवशेष। **वही, पृ० १४।**

११३०. उदयगिरि (विदिशा)

(अ) बौद्ध-स्तूप के अवशेष । **क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ५५ ।**

(आ) सिंहशीर्ष सहित एक स्तम्भ जिस पर मौर्यकालीन पालिश (ओप) है । **वही ।**

११३१. ऊँचेहरा (सतना)

भरहुत स्तूप के भग्नावशेष जो भारत कला भवन, वाराणसी, में संरक्षित हैं । इन पर जातकों के दृश्य तथा ब्राह्मी लिपि में लेख उत्कीर्ण हैं । **ज० म० प्र० इ० प० भाग ५, पृ० ६-७ ।**

११३२. कसरावद (पश्चिम निमाड़)

उत्खनन में प्राप्त लगभग पहली-दूसरी शताब्दी ई० पू० के स्तूपों के भग्नावशेष । **इ० हि० क्वा० भाग २५, पृ० १ ।**

११३३. खिरकी (होशंगाबाद)

बौद्ध प्रतिमाएँ । **इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८ ।**

११३४. खेजड़िया-भोप (मन्दसौर)

(अ) लगभग ९वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी के बौद्ध-मठ के अवशेष जिसमें २८ शैलकृत कोठरियाँ थीं । **आ० ग्वा० पृ० ९७-९८ ।**

(आ) लगभग ९वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी का शैलकृत्त बौद्ध-स्तूप । **वही ।**

११३५. ग्यारसपुर (विदिशा)

(अ) लगभग ९वीं शताब्दी ईसवी के बौद्ध-स्तूप के भग्नावशेष । **आ० ग्वा० पृ० ९२ ।**

(आ) बुद्ध-प्रतिमा जिसपर उत्कीर्ण लेख में तथागत बुद्ध का उल्लेख है । **ग्वा० पु० रि० १९९२, क्रमांक ३५ ।**

११३६. ग्वारीघाट (जबलपुर)

बुद्ध तथा बोधिसत्व की नीले पत्थर की बनी गान्धार शैली की प्रतिमाएँ । **इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६९ ।**

११३७. गोपालपुर (जबलपुर)

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की ५ बौद्ध-प्रतिमाएँ, जिनमें तीन पर लेख उत्कीर्ण हैं । **ए० इ० भाग १८, पृ० ७३-७४; हीरालाल—'जबलपुर ज्योति', पृ० १४१; भण्डारकर सूची, क्रमांक १९०३; हीरालाल सूची, क्रमांक ५२ ।**

११३८. तिलवाराघाट (जबलपुर)

तारा की प्रतिमा, जिसपर लेख उत्कीर्ण है । **हीरालाल सूची, क्रमांक ५१ ।**

११३९. तुरतुरिया (रायपुर)

बौद्ध प्रतिमाएँ तथा अन्य बौद्ध अवशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० १४६-४८; ख० वै०, पृ० २९८-९९।

११४०. तेवर (जबलपुर)

तेवर ग्राम में संरक्षित निम्नलिखित प्रतिमाएँ—

(अ) बालसागर के सम्मुख स्थित एक वृक्ष के नीचे संग्रहीत बुद्ध प्रतिमा का मस्तक। व्य० सू०।

(आ) प्राचीन बावड़ी के निकट संग्रहीत प्रतिमाओं में रखी बुद्ध प्रतिमा का मस्तक। वही।

(इ) एक पीपल-वृक्ष के नीचे संग्रहीत प्रतिमाओं में रखी बुद्ध प्रतिमा का मस्तक। वही।

(ई) बुद्ध की प्रवचन-मुद्रा की एक महत्त्वपूर्ण प्रतिमा जो इण्डियन म्यूज़ियम, कलकत्ता में संरक्षित है। ख० वै०, पृ० ३०१।

(उ) अवलोकितेश्वर की प्रतिमा जो लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी की है। ख० वै० पृ० ३०१-३०२।

(ऊ) भूमि-स्पर्श मुद्रा में बुद्ध की प्रतिमा जो लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी की है। ख० वै०, पृ० ३०३-३०८।

(ए) कलचुरि कालीन बोधिसत्व की प्रतिमा। है० त्रि० मा०, पृ० ९३-९४; क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ५८।

(ऐ) वज्रपाणि की प्रतिमा, जिस पर लेख उत्कीर्ण है। क० आ स० इ० रि० भाग १०, पृ० ५८; हीरालाल सूची, क्रमांक ४९।

११४१. दुर्ग (दुर्ग)

खण्डित बौद्ध प्रतिमाएँ। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ३; क० लि० ए० रि० पृ० ५०, दु० डि० ग० पृ० १६५।

११४२. धमनार (मन्दसौर)

लगभग ७वीं-९वीं शताब्दी ईसवी की चौदह शैलकृत्त बौद्ध-गुफाएँ। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० २७०-७६; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९०५-६, पृ० ११०; फर्गुसन—'राक-कट टेम्पल्स आफ इण्डिया'।

११४३. नान्दुर-खुर्द (रायगढ़)

बोधिसत्व की प्रतिमा जिसपर लगभग ८वीं-९वी शताब्दी ईसवी की लिपि में उत्कीर्ण लेख हैं। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ७२।

११४४. नावडाटोली (पश्चिम निमाड़)

उत्खनन में प्राप्त बौद्ध-स्तूप के भग्नावशेष जो लगभग तीसरी शताब्दी ईसवी पूर्व के हैं। **ए० भा० न० पृ० २९-३०; वे० नि० डि० ग० पृ० ४५४।**

११४५. पतौरा (सतना)

भरहुत स्तूप के भग्नावशेष जिनपर जातकों के दृश्य तथा ब्राह्मी लिपि में लेख उत्कीर्ण हैं। **ज० म० प्र० इ० प० भाग ५, पृ० ६।**

११४६. पोलाडोंगर (मन्दसौर)

लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी की शैलकृत्त बौद्ध गुफाएँ जिनमें एक चैत्य तथा शेष विहार है। **इ० स्टे० ग० पृ० ५६।**

११४७. कोपनार-कलाँ (पूर्व निमाड़)

काँसे की बनी चार बौद्ध-प्रतिमाएँ जिनपर, लगभग ६वीं शताब्दी ईसवी की दक्षिण भारतीय लिपि में उत्कीर्ण लेख हैं। **इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० २-३।**

११४८. बगरोल (होशंगाबाद)

बौद्ध प्रतिमाओं के भग्नावशेष। **इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८।**

११४९. बाघ (धार)

नर्मदा की सहायक नदी बाघ के किनारे विन्ध्य श्रेणी के रेतीले पत्थर की पर्वत-शृंखला में बनी शैलकृत्त नौ बौद्ध गुफाएँ जो लगभग ४थी-६वीं शताब्दी की हैं। गुफाओं के क्रमांक तथा नाम निम्न प्रकार हैं:—

गुफा क्रमांक १—गृह-गुफा
गुफा क्रमांक २—पाण्डव गुफा
गुफा क्रमांक ३—हाथीखाना
गुफा क्रमांक ४—रंगमहल
गुफा क्रमांक ५, ६, ७, ८, ९।

गुफा क्रमांक २ में महाराज सुबन्धु का ताम्रपत्र प्राप्त हुआ था, जो माहिष्मती से प्रचलित किया गया था तथा जिसमें 'कलायन विहार' के आर्थिक प्रबन्ध के लिए दसिलकपल्ली नामक ग्राम के दान देने का उल्लेख है। गुफाओं में बुद्ध, बोधिसत्व, कुबेर, नागराज, मकरवाहिनी स्त्री आदि की प्रतिमाएँ बनी हैं। गुफाओं में चित्र बने थे जिनमें अधिकांश अब नष्ट हो गये हैं तथा जो शेष बचे हैं, वे गुफा क्रमांक ३, ४ तथा ५ में हैं और उनके रंग धुंधले पड़ गये हैं। **'मार्शल'—'बाघ केव्स'; ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८५, क्रमांक १; मिराशी-इ० हि० क्वा० भाग २१, पृ० ७९; क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० १९; विक्रम स्मृति ग्रन्थ पृ० ६४९; मार्ग, भाग २५ अंक ३, जून १९७२ (बाघ विशेषांक)**

११५०. बिगान (विदिशा)

(अ) दो बौद्ध स्तूपों के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९१४-२३।

(आ) एक बौद्ध-मठ के अवशेष। ग्वा० पु० रि० १९१४-२३।

११५१. बेसनगर (विदिशा)

(अ) स्थानीय 'खेड़ा' नामक टीले के उत्खनन में प्राप्त बौद्ध-स्तूप के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ४५।

(आ) कल्पवृक्ष युक्त स्तम्भ-शीर्ष जो राष्ट्रीय संग्रहालय, कलकत्ता में संग्रहीत हैं। म० पु०, पृ० १३।

(इ) एक बौद्ध स्तूप के भग्नावशेष जो लगभग तीसरी शताब्दी ई० पू० के हैं। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ३४-३९।

११५२. भरहुत (सतना)

(अ) बौद्ध स्तूप के भग्नावशेष, जिसके खण्डित भाग इण्डियन म्यूज़ियम, कलकत्ता, म्यूनिसिपल म्यूज़ियम, इलाहाबाद; भारत कला भवन, वाराणसी; प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूज़ियम, बम्बई; रामवन म्यूज़ियम जिला सतना में तथा सागर विश्वविद्यालय संग्रहालय में संग्रहीत हैं। कनिंघम—'दी सूप ऑफ भरहुत' (१८७९); हुल्ज़—'जातकास एट भरहुत' : ज० र० ए० सो० १९१२, पृ० ३९९; काला स० च०–'भरहुत स्कल्पचर्स'—इत्यादि; ज० यू० पी० हि० सो० भाग १८, पृ० ८१; क० आ० स० इ० रि० भाग ९ पृ० २-३; काला स० च० –'भरहुत वेदिका' (१९५१); बरुआ तथा सिन्हा : भरहुत इन्सक्रिपशन्स (१९२६); गाइड टू इण्डियन म्यूज़ियम, कलकत्ता।

(आ) बौद्ध प्रतिमाएँ। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग ६, पृ० १४७-१४८; वही, भाग ८, पृ० १३९, १४४।

११५३. भटनवारा (सतना)

भरहुत-स्तूप के संरक्षित भग्नावशेष जिनपर जातकों के दृश्य तथा ब्राह्मी लिपि में लेख उत्कीर्ण हैं। ज० म० प्र० इ० प० भाग ५ (१९६७) पृ० ३।

११५४. भेड़ाघाट (जबलपुर)

चौंसठ-योगिनी के गौरीशंकर-मन्दिर में रखी बौद्ध-देवी 'तारा' की प्रतिमा जिस पर लेख उत्कीर्ण हैं। हीरालाल सूची, क्रमांक ५०।

११५५. भोजपुर (रायसेन)

बौद्ध स्तूप के भग्नावशेष। भि० टो० पृ० २११-२०।

११५६. मल्लार (बिलासपुर)

स्थानीय मालगुजार के मकान के दीवार पर लगी बुद्ध की ध्यानमुद्रा में प्रतिमा जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। ना० सू०।

११५७. मांडा (सीधी)

बुद्ध की प्राचीन प्रतिमा जो स्थानीय विश्रामगृह में संरक्षित है। **म० प्र० स० (५ सितम्बर, १९७०), पृ० १२-१५।**

११५८. राजापुर (शिवपुरी)

लगभग ९वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी का ईंटों से बना स्तूप। **आ० ग्वा० पृ० ११७।**

११५९. रीवा (रीवा)

बौद्ध प्रतिमाएँ जिनमें एक पर लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी का लेख उत्कीर्ण है। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १४४।**

११६०. विदिशा (विदिशा)

शुंगकालीन बौद्ध-स्तूप की वेदिका के कुछ खण्ड। **म० पु० पृ० १३; क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ३८।**

११६१. शिवरीनारायण (बिलासपुर)

कलचुरि कालीन मन्दिर में बौद्ध प्रतिमा। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १९०-९८।**

११६२. शंकरगढ़

भरहुत से मिलते-जुलते प्रस्तर स्तम्भ। **क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ४-५।**

११६३. सतधारा (रायसेन)

बौद्ध-स्तूप के भग्नावशेष। **भि० टो० पृ० २०७-१०।**

११६४. साँची (रायसेन)

(अ) विस्तृत क्षेत्र में फैले कई बौद्ध-स्तूप तथा मठों के भग्नावशेष जिनमें स्तूप क्रमांक १, २, ३; मठ क्रमांक ३६, ३७, ३८, ४५, ४६, ४७, ५१; भवन क्रमांक ८, ३२, ४३, ४४, ४९, ५०; मन्दिर क्रमांक ४०, ४५ तथा स्तम्भ और घेरे प्रमुख हैं। **मार्शल—म० सा०; वही—'ए गाइड टू साँची;' कनिंघम—भि० टो०; बर्जेस—'दी ग्रेट स्तूप एट साँची'—कानाखेड़ा : ज० र० ए० सो० १९०२, पृ० २९-४५; मार्शल—के० म्यू० आ० सा०; मैसी—'सांची एण्ड इट्स रिमेन्स' (१८९२); हमीद—'एस्कवेशन ऑफ मौर्य मोनेस्टरी एट साँची, भोपाल स्टेट'—एनुवल बिबलियोग्राफी ऑफ इण्डियन आर्कयालाजी फार दी इयर १९३७, भाग १२, पृ० २५, २८; वहीं, आ० सा० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९३६-३७, पृ० ८४, ८७।**

(आ) स्थानीय संग्रहालय में संरक्षित बौद्ध प्रतिमाएँ तथा अन्य बौद्ध अवशेष। **के० म्यू० आ० सा० पृ० १-७, १७-१८ इत्यादि।**

११६५. सिरपुर (रायपुर)

(अ) लगभग ५वीं-६वीं शताब्दी ईसवी की एक बौद्ध-प्रतिमा । **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० ३१ ।**

(आ) गन्धेश्वर मन्दिर की बुद्ध-प्रतिमा, जिसपर ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी का लेख उत्कीर्ण है । **हीरालाल सूची, क्रमांक १८४ ।**

(इ) १९५५ के उत्खनन में प्राप्त दो बौद्ध-मठों के भग्नावशेष । **शु० अ० ग्र० पृ० १८९ ।**

(ई) उपरोक्त उत्खनन में प्राप्त बुद्ध की विशाल प्रतिमा । **वही ।**

११६६. सोनारी (रायसेन)

बौद्ध-स्तूपों के भग्नावशेष । **भि० टो० पृ० १९९-२०६ ।**

११६७. सोहागपुर (शहडोल)

एक बीस-भुजी स्त्री-प्रतिमा के ऊपरी भाग पर बनी बुद्ध तथा दो बोधिसत्वों की प्रतिमाएँ । **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २४५ ।**

११६८. हीरापुर (होशंगाबाद)

बौद्ध प्रतिमाएँ । **इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८ ।**

आ—जैन स्मारक तथा प्रतिमाएँ

११६९. अजयगढ़ (पन्ना)

(अ) चन्देल कालीन जैन-प्रतिमा, जिसपर वीरवर्मदेव के शासन काल का वि० सं० १३३१ का लेख उत्कीर्ण है । **च० जे० टा० परिशिष्ट—अ, क्रमांक ५४ ।**

(आ) चन्देल कालीन जैन-प्रतिमा, जिस पर वीरवर्मदेव के शासन काल का १३३५ का लेख उत्कीर्ण है । **चक्रवर्ती – आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९३५-३६, पृ० ९१-९२; हीरालाल—माधुरी, भाग ५, खण्ड २, क्रमांक २ ।**

(इ) किले में शैलकृत्त जैन-प्रतिमाएँ । **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ४७ ।**

११७०. अड़भार (बिलासपुर)

(अ) तीर्थंकर प्रतिमा । **बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९१०), पृ० २५५ ।**

(आ) खण्डित देवालय के निकट एक कोठरी में रखी पार्श्वनाथ की प्रतिमा जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है । **ना० सू० ।**

११७१. अमरोल (ग्वालियर)

'बेहमाता' के मन्दिर के निकट जैन-प्रतिमाएँ । **ग्वा० पु० रि० १९४०-४१, पृ० २१ ।**

११७२. अहाड़ (टीकमगढ़)

(अ) चन्देल कालीन अनेक जैन-प्रतिमाएँ जिन पर वि० सं० ११२३ तथा ११६६ के बीच के लेख उत्कीर्ण हैं। 'अनेकान्त', भाग ६ तथा १०।

(आ) जैन-प्रतिमा जिस पर चन्देल परमर्दिदेव के शासन काल का वि० सं० १२३७ का लेख उत्कीर्ण है। 'प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ', पृ० ६२४-२६; नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग १७, पृ० १५-१६।

११७३. आरंग (रायपुर)

(अ) एक जैन मन्दिर जो स्थानीय 'भाण्ड-देवल' के नाम से प्रसिद्ध है। लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी के इस मन्दिर को हैहय शासकों द्वारा बनाया गया था, ऐसी मान्यता है। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १६१-६२; ख० वं० पृ० १५०, १६२; क० लि० ए० रि० पृ० ४८-४६।

(आ) जैन प्रतिमाएँ। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १६४; वही, भाग १७, पृ० २०-२१।

११७४. आशापुरी (रायसेन)

शान्तिनाथ की प्राचीन प्रतिमा। म० प्र० स० पुरातत्त्व विशेषांक, १३ जून १६७०, पृ० ५१।

११७५. इन्धर (शिवपुरी)

ग्राम के उत्तर तथा पूर्व की ओर स्थित लगभग ८वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी के जैन मन्दिरों के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १६२५-२६, पृ० ८।

११७६. इंदौर (गुना)

एक प्राचीन जैन मन्दिर के भाग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १६१४-१५।

११७७. उदयगिरि (विदिशा)

(अ) शैलकृत्त जैन-गुफा (गुफा क्रमांक १) जो लगभग ४थी शताब्दी ईसवी की है। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ४७; म० उ० हि०।

(आ) शैलकृत्त जैन गुफा जिसमें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की दो प्रतिमाएँ खुदी हैं। गुफा में गुप्त शासक कुमारगुप्त के शासन काल का लेख उत्कीर्ण है जिसमें कुमारगुप्त के शासन काल में गुफा को बनाये जाने का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ५३-५५; म० उ० हि०।

११७८. उन्हेल (उज्जैन)

प्राचीन जैन-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १६१७-१८।

११७९. उरवाहा (शिवपुरी)

प्राचीन जैन-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १६२२-२३।

११८०. ऊँचेहरा (सतना)

जैन प्रतिमाएँ। क० आ० स० इ० रि० भाग ६, पृ० ५-६; ख० वें० पृ० २६४-६५।

११८१. ऊन (पश्चिम निमाड़)

(अ) लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी के जैन-मन्दिर के भग्नावशेष जिसे मालवा के परमार शासकों के काल में निर्माण किया गया था। ए० रि० आ० स० इ० वे० स० १९१८-१९, पृ० १७; इ० स्टे० ग० पृ० ८६; गांगुली – 'दि परमारज् ऑफ़ मालवा' पृ० २६५।

(आ) जैन-मन्दिर जिसे स्थानीय ग्वालेश्वर मन्दिर कहा जाता है। यह परमार शासन काल में निर्मित हुआ था। वही।

(इ) 'चौबारा-डेरा' का लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी में बना मन्दिर जिसमें जैन प्रतिमाएँ रखी हैं। प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९१८-१९, पृ० १७; इ० स्टे० ग० पृ० ६८; गागुली दि० च०—'दि परमारज् ऑफ़ मालवा' पृ० २६३।

११८२. कटनी (जबलपुर)

जैन-मन्दिर का तोरण। ख० वें० पृ० १७३-७५।

११८३. करेरा (शिवपुरी)

प्राचीन जैन-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९२७-२८, पृ० १३।

११८४. कलां (रीवा)

पूर्व-मध्यकालीन जैन-मन्दिर। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

११८५. कारीतलाई (जबलपुर)

पाँच जैन-प्रतिमाएँ, जिन पर दानकर्त्ताओं के नाम देवभद्र, यशोमति, जैनचन्द्र, सत्यचन्द्र तथा यशोधरा उल्लेख किया गया है। हीरालाल सूची, क्रमांक ७१।

११८६. कुकड़ेश्वर (मन्दसौर)

लगभग १३वीं-१४वीं शताब्दी ईसवी का पार्श्वनाथ का मन्दिर, जिसमें वि० सं० १५२८, १५३७, १६१६, १६२१ तथा १६७६ के शिलालेख हैं। इ० स्टे० ग० पृ० ३७; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग १९, खण्ड १, पृ० ४४; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १९, पृ० ९५।

११८७. कुकरमठ (मण्डला)

मध्ययुगीन जैन (?) मन्दिर। म० डि० ग० पृ० ४०, २४०।

११८८. कुर्रा (रायपुर)

प्राचीन जैन मन्दिर के भग्नावशेष। रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०९), पृ० ३०४।

११८९. कुलान (जबलपुर)

कलचुरि कालीन जैन-प्रतिमाएँ । आ० क० त्रि० पृ० ५१ ।

११९०. केथुली (मन्दसौर)

एक प्राचीन जैन-मन्दिर । इ० स्टे० ग० पृ० २८ ।

११९१. कोटा-उधमड़े (शिवपुरी)

लगभग ८वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी के जैन-मन्दिरों का समूह । ग्वा० पु० रि० १९२२-२३ ।

११९२. कोठड़ी (मन्दसौर)

लगभग १३वीं-१४वीं शताब्दी ईसवी का जैन-मन्दिर । इ० स्टे० ग० पृ० ३६; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १९, पृ० ८१ ।

११९३. कोतवाल (मोरेना)

एक प्राचीन जैन-मन्दिर । ग्वा०पु० रि० १९१४-२३ ।

११९४. कोनी (कलां) (जबलपुर)

दिगम्बर जैन-मन्दिरों का समूह । दिगम्बर जैन मतावलम्बी इसे एक 'अतिशय-तीर्थ' के रूप में स्वीकार करते हैं । ज० डि० ग० पृ० ६८५-८६ ।

११९५. कोलादित (पूर्व निमाड़)

प्राचीन जैन-मन्दिर के भग्नावशेष । इ० नि० ग० पृ० ४६८ ।

११९६. कोहला (कवलां) (मन्दसौर)

(अ) लगभग १३वीं-१४वीं शताब्दी ईसवी का पार्श्वनाथ का मन्दिर जिसमें वि० सं० १६५७ का शिलालेख है । इ० स्टे० ग० पृ० ७० ।

(आ) लगभग १३वीं-१४वीं शताब्दी ईसवी का वर्धमान महावीर का मन्दिर । इ० स्टे० ग० पृ० ७० ।

११९७. खजुराहो (छतरपुर)

(अ) पार्श्वनाथ का जैन-मन्दिर जो यहाँ के मन्दिरों में विशालतम है । चन्देल नृपति धंग के शासन काल का एक अभिलेख यहाँ से प्राप्त हुआ था । इसके अतिरिक्त इस मन्दिर में अनेक तीर्थयात्रीयों के लेख उत्कीर्ण हैं । इसका निर्माण धंग के शासन काल में हुआ था । मूलतः इसमें आदिनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित थी, परन्तु बाद में पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई । ख० धा० पृ० १३-३५; ख० कृ० पृ० ५१-६०; ख० दे० प्र० पृ० १२-२२; ख० स्क० सि० पृ० १०-१८; ख० जे० पृ० ८७-१६०; ए० आइ० क्रमांक १५ ।

(आ) पार्श्वनाथ मन्दिर के उत्तर में स्थित आदिनाथ का मन्दिर । यह एक निराधार प्रासाद

है जिसका शिखर-युक्त गर्भगृह और अन्तराल मात्र अवशिष्ट है। सामान्य योजना, निर्माण शैली तथा मूर्ति-कला की दृष्टि से यह वामन के अति निकट है तथा उसके एक या दो दशक पश्चात् निर्मित हुआ प्रतीत होता है। वही।

(इ) घण्टई का जैन-मन्दिर जिसके स्तम्भों पर घण्टा तथा जन्जीर के अलंकरण उत्कीर्ण हैं, जिससे इसका नाम घण्टई पड़ा है। मूलतः इसमें अर्धमण्डप, महामण्डप, अन्तराल तथा गर्भगृह थे और प्रदक्षिणापथ भी था। अब केवल अर्धमण्डप और महामण्डप ही शेष रह गये हैं, जिनमें चार-चार स्तम्भों पर सपाट किन्तु अलंकृत वितान हैं। स्थापत्य, मूर्ति-कला तथा स्तम्भों पर उत्कीर्ण लिपि सम्बन्धी साक्ष्य के आधार पर इसे दसवीं शताब्दी ईसवी के अन्त में बना माना जाता है। वही।

(ई) पार्श्वनाथ मन्दिर के दक्षिण में स्थित शान्तिनाथ का आधुनिक मन्दिर, जिसमें आदिनाथ की विशाल प्रतिमा प्रतिष्ठित है। इस पर वि० सं० १०८५ का लेख उत्कीर्ण है। ख० स्क० सि० पृ० १५, क्रमांक १७।

(उ) जैन-प्रतिमाएँ, जिनके प्राप्ति-स्थान निम्नलिखित हैं—

तीर्थंकर प्रतिमाएँ—

(१) आदिनाथ—

पिसनारी-की-मढ़िया के निकट छोटे मन्दिर में स्थित

(२) अजितनाथ

(अ) पार्श्वनाथ मन्दिर

(आ) खजुराहो संग्रहालय

(३) सम्भवनाथ

पिसनारी-की-मढ़िया के निकट छोटे से मन्दिर में स्थित

(४) अभिनन्दनाथ

पिसनहारी की मढ़िया के निकट छोटे से मन्दिर में स्थित

(५) पद्मनाभ

खजुराहो संग्रहालय

(६) शान्तिनाथ

शान्ति-मन्दिर

(७) महावीर

शान्तिनाथ मन्दिर

यक्ष तथा यक्षिणी प्रतिमाएँ—

(१) यक्ष

पार्श्वनाथ

खजुराहो संग्रहालय

(२) यक्षिणी

पार्श्वनाथ मन्दिर

बाहुबली-स्वामी प्रतिमा—

पार्श्वनाथ मन्दिर

अम्बिका—

(१) शान्तिनाथ मन्दिर

(२) आदिनाथ मन्दिर

जैन देवी-प्रतिमाएँ—

(१) कन्दर्पा अथवा मानसी प्रतिमा

खजुराहो संग्रहालय

(२) अष्टभुजी-देवी (?)

आदिनाथ मन्दिर

(३) अष्टभुजी-सिंहवाहिनी

आदिनाथ मन्दिर

जैन दिक्पाल प्रतिमाएँ—

अग्नि

पार्श्वनाथ मन्दिर

कुछ नग्न प्रतिमाएँ जिन्हें आयुध तथा वाहन के अभाव में पहचाना नहीं जा सकता।

(१) विशानाथ मन्दिर

(२) जगदम्बी मन्दिर

(३) शान्तिनाथ मन्दिर

गोमेध युगल

शान्तिनाथ मन्दिर

ख० स्क० सि० पृ० १०७-११०।

११९८. खण्डवा (पूर्व निमाड़)

जैन-मन्दिरों के भग्नावशेष जो लगभग १२वीं-१३वीं शताब्दी ईसवी के हैं। **क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ११४; क० लि० ए० रि० पृ० ४०।**

११९९ खुतियानी बेहड (मोरेना)

टीले पर बिखरी हिन्दू तथा जैन-प्रतिमाएँ। **ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।**

१२००. गन्धावल (उज्जैन)

दो जैन-मन्दिरों के भग्नावशेष, जो लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के हैं। इनमें तीर्थंकर की बड़ी प्रतिमाएँ हैं। **ग्वा० पु० रि० १९४२-४६, पृ० २२-२३।**

१२०१. ग्वालियर दुर्ग (ग्वालियर)

(अ) उरवाही द्वार के निकट शैलकृत्त तीन विशाल जैन-प्रतिमाएँ जिन पर तोमर शासक डूंगरसिंह तथा कीर्तिसिंह का उल्लेख करते हुए लेख उत्कीर्ण हैं। **डा० फो० ग्वा० स्टे० पृ० ५४; क० आ० स० इ० रि भाग २, पृ० ३५६।**

(आ) उरवाही द्वारा से थोड़ी दूर पर चढ़ाई पर कई शैलकृत्त जैन-प्रतिमाएँ, जिनमें एक ५७ फुट ऊँची है। इन पर उत्कीर्ण लेखों में तोमर शासक डूंगरसिंह तथा कीर्तिसिंह का उल्लेख है। **वही।**

(इ) पहाड़ी के उत्तर की ओर कई शैलकृत्त जैन-प्रतिमाएँ जिन पर उत्कीर्ण अभिलेखों में तोमर शासक डूंगरसिंह तथा कीर्तिसिंह का उल्लेख है। **डा० फो० ग्वा० स्टे० पृ० ५७।**

(ई) पहाड़ी के उत्तर-पश्चिम तथा दक्षिण-पश्चिम की ओर शैलकृत्त जैन-प्रतिमाएँ। **वही।**

(उ) पहाड़ी के दक्षिण-पूर्व की ओर मरीमाता के निकट शैलकृत्त जैन प्रतिमाएँ, जिन पर उत्कीर्ण अभिलेखों में तोमर शासक कीर्तिसिंह का उल्लेख है। **वही।**

(ऊ) जैन-मन्दिर के भग्नावशेष। **डा० फो० ग्वा० स्टे० पृ० ५०।**

(ए) जैन-मन्दिर, जिसमें संवत् ११६५ का शिलालेख है। **क० आ० स० इ० रि भाग २, पृ० ३६२-६३।**

१२०२. ग्यारसपुर (विदिशा)

ग्राम के १ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर पहाड़ी पर स्थित मालादेवी के मन्दिर में रखी तीर्थंकर प्रतिमाएँ जो लगभग ९वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी की हैं। **आ० ग्वा० पृ० ९१-९२; क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० ९०-९३; वही, भाग १०, पृ० ३१-३४।**

१२०३. गुजर्रा (रीवा)

पूर्व मध्यकालीन जैन-मन्दिर। **इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।**

१२०४. गुरिल का पहाड़ (गुना)

(अ) लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का दिगम्बर मतावलम्बी जैन-मन्दिर, जो पहाड़ी पर स्थित है। इसमें २६ तीर्थंकर की प्रतिमाएँ हैं। दीवार पर उत्कीर्ण वि० सं० १३०७ का शिलालेख। **ग्वा० पु० रि० १९२४-२५, पृ० १३। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट भाग २४, पृ० १६७।**

(आ) पहाड़ी पर स्थित दिगम्बर मतावलम्बी लगभग १४वीं शताब्दी ईसवी के जैन-मन्दिर,

जिनमें लगभग १२ फुट ऊँची शान्तिनाथ की प्रतिमा स्थापित है। **ग्वा० पु० रि० १६२४-२५, पृ० १३; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग २४, पृ० १६७।**

१२०५. **गुड़ार (शिवपुरी)**

(अ) तीन विशालकाय जैन-प्रतिमाएँ जिनमें एक पर वि० सं० १२०६ का लेख उत्कीर्ण है। लेख में शान्तिनाथ, कुन्थनाथ तथा अरनाथ की मूर्तियों की स्थापना का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० १६२६-३०, पृ० २३, ६१।**

(आ) उक्त जैन-प्रतिमाओं के लगभग २ फर्लांग उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित जैन-मन्दिर के भग्नावशेष जिसमें तीर्थंकर की सवा ७ फुट ऊँची प्रतिमा तथा एक चौमुख है। **वही, पृ० २४।**

(इ) वि० सं० १८१२ में निर्मित जैन-मन्दिर जिसमें ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की प्रतिमाएँ तथा स्तम्भ लगाये गये हैं। इनमें से तीन प्रतिमाओं पर वि० सं० १३६० का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० १६२६-३०, पृ० २३।**

१२०६. **गंगली (धार)**

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के तीन जैन-मन्दिरों के भग्वावशेष। **ग्वा० पु० रि० १६१६-१७।**

१२०७ **घन्सोर (सिवनी)**

एक दुर्लभ जैन-प्रतिमा। **क० लि० ए० रि० पृ० ३८।**

१२०८. **घुसई (मन्दसौर)**

(अ) जैन-मन्दिर के खण्डहर, जिसमें वि० सं० १३१३ का शिलालेख प्राप्त पुआ। **ग्वा० पु० रि० १६१६-१७।**

(आ) दो जैन स्मृति-स्तम्भ, जिनमें एक पर वि० सं० १३२३ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० १६१६-१७।**

१२०६. **चितारा (शिवपुरी)**

एक प्राचीन जैन-मन्दिर। **ग्वा० पु० रि० १६१६-१७।**

१२१०. **चैत (ग्वालियर)**

(अ) गाँव के दक्षिण-पश्चिम की ओर पहाड़ी की ढलान पर स्थित लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का जैन-मन्दिर जिसमें गर्भगृह तथा सभामण्डप है। इसका शिखर ग्वालियर किले के साह-बहू मन्दिर से मिलता-जुलता है। **ग्वा पु० रि० १६३३-३४, पृ० ११-१२।**

(आ) गाँव के दक्षिण-पश्चिम की ओर पहाड़ी पर स्थित जैन मन्दिरों के भग्नावशेष जो लगभग ११वीं-१२वीं शदाब्दी ईसवी के हैं। यहाँ अनेक जैन-प्रतिमाएँ भी उपलब्ध हैं। **वही।**

(इ) जैन-मन्दिरों के भग्नावशेषों में पड़े स्मारक-स्तम्भ जिन पर वि० सं० ११८२ तथा ११८३ के लेख उत्कीर्ण हैं। इन लेखों में जैन पंडितों तथा उनके शिष्यों के उल्लेख हैं। **वही**।

(ई) दो विशालकाय जैन प्रतिमाएँ जो लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी की हैं। **वही**।

१२११. चैनपुर (मन्दसौर)

विशालकाय जैन-मूर्ति जिस पर लेख उत्कीर्ण है। **प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १९, पृ० ८७; इ० स्टे० ग० भाग २, पृ० ११**।

१२१२. चोली (पश्चिम निमाड़)

प्राचीन जैन-मन्दिरों के भग्नावशेष। **वे० नि० डि० ग० पृ० ४४०**।

१२१३. जखौदा (गुना)

प्राचीन जैन-मन्दिर के भग्नावशेष। **ग्वा० पु० रि० १९१४-२३**।

१२१४. जबलपुर (जबलपुर)

(अ) स्थानीय हनुमानताल के दिगम्बर जैन-मन्दिर में संरक्षित प्राचीन प्रतिमाएँ। **ख० वै० पृ० १३२-३५**।

(आ) एक महत्वपूर्ण जैन-प्रतिमा जो लगभग कलचुरि शासन काल की है। **है० त्रि० मा० पृ० १०६, चित्र ४८-ब**।

(इ) स्थानीय कर्सेतजी एण्ड कम्पनी के बंगले में देखी गयी जैन-प्रतिमाएँ। **क० लि० ए० रि० पृ० २७**।

१२१५. जसो (सतना)

बहुसंख्यक जैन-प्रतिमाएँ, जिनमें कुछ महत्वपूर्ण आदिनाथ, पार्श्वनाथ, नेमिनाथ, शान्तिनाथ, मल्लिनाथ, ऋषभदेव, अम्बिका आदि की हैं। **ख० वै० पृ० २५८-६४**।

१२१६. जूरा (रीवा)

एक खण्डित जैन-प्रतिमा। **है० त्रि० मा० पृ० १०६-७**।

१२१७. टिकटोली-दुमदार (मोरेना)

शैलकृत्त जैन-प्रतिमा जिस पर वि० सं० १५४२ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० १९१६-१७**।

१२१८. टिमरनी (होशंगाबाद)

जैन-प्रतिमा जिस पर वि० सं० १२६५ का लेख उत्कीर्ण है। **हीरालाल सूची, क्रमांक १३०**।

१२१९. टीकमगढ़ (टीकमगढ़)

जैन-प्रतिमा जिस पर वि० सं० १२१६ का लेख उत्कीर्ण है। **च० जे० टा० परिशिष्ट—ब, क्रमांक १०**।

१२२०. **टोला (जबलपुर)**

जैन-प्रतिमाएँ। **ज० डि० ग० पृ० ६७७।**

१२२१. **डोंगरगढ़ (दुर्ग)**

(अ) ऋषभदेव की प्रतिमा। **ख० वै० पृ० १४२-४४।**

(आ) पार्श्वनाथ की प्रतिमा। **वही, पृ० १४५।**

१२२२. **तिगवाँ (जबलपुर)**

पार्श्वनाथ की प्रतिमा। **हीरालाल 'जबलपुर ज्योति', पृ० १४०; ख० वै० पृ० १३७।**

१२२३. **तुमेन (गुना)**

एक विशालकाय बैठी हुई जैन-प्रतिमा जो लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की है। इसे स्थानीय 'बैठादेव' कहा जाता है। **ग्वा० पु० रि० १९१८-१९।**

१२२४. **तेरही (शिवपुरी)**

प्राचीन जैन चौमुखी। **म० प्र० स० पुरातत्व विशेषांक, १३ जून, १९७०, पृ० ३४।**

१२२५. **तेवर (जबलपुर)**

तेवर ग्राम में संरक्षित निम्नलिखित जैन प्रतिमाएँ —

(अ) बालसागर के तट पर स्थित मन्दिर के उत्तरी दीवार में लगी जैन-तीर्थंकर प्रतिमा। **व्य० सू०।**

(आ) बालसागर के सम्मुख स्थित वृक्ष के नीचे संग्रहीत प्रतिमाओं में एक तीर्थंकर प्रतिमा। **वही।**

(इ) प्राचीन बावड़ी के निकट संग्रहीत प्रतिमाएँ—
(१) तीर्थंकर प्रतिमा (ते-६८)। **वही।**
(२) तीर्थंकर प्रतिमा (ते-८८)। **वही।**

(ई) त्रिपुरेश्वर मन्दिर के भग्नावशेषों में पीपल-वृक्ष के नीचे संग्रहीत प्रतिमाएँ—
(१) कायोत्सर्ग-मुद्रा में तीर्थंकर प्रतिमा (ते-१२३)। **वही।**
(२) एक अन्य तीर्थंकर प्रतिमा। **वही।**
(३) कायोत्सर्ग मुद्रा में तीर्थंकर प्रतिमा (ते-१२२)। **वही।**

(उ) बालसागर सरोवर तट पर बने मन्दिर तथा बीच में जैन-प्रतिमाएँ। **ख० वै० पृ० १३५-३६; क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ५४-६६।**

(ऊ) जैन-मन्दिर के तोरण का खण्ड। **ख० वै० पृ० १७१-७३, चित्र पृ० ४२९।**

(ए) ऋषमदेव की जैन-प्रतिमा जिस पर कलचुरि संवत् ९५१ की तिथि पड़ी है। **वही, पृ० १७५-७६।**

(ऐ) अम्बिका की प्रतिमा । वही, पृ० १७७-७८ ।

(ओ) नेमिनाथ की प्रतिमा । वही, पृ० १७६ ।

(औ) जैन-मूर्ति जिस पर कलचुरि संवत् ६०० का लेख उत्कीर्ण है । लेख में जयदेव जसधवल द्वारा मूर्ति-स्थापना का उल्लेख है । म० पु० रू० पृ० ७० ।

१२२६. थोबन (गुना)

(अ) जैन-मन्दिरों के चार समूह । प्रथम समूह में पाँच, दूसरे समूह में बारह, तीसरे समूह में आठ तथा चौथे समूह में तेरह मन्दिर हैं । ग्वा० पु० रि० १६१४-१५ ।

(आ) जैन-मन्दिर के भग्नावशेष । वही ।

१२२७. दुंडापुरा (ग्वालियर)

प्राचीन जैन-मन्दिर जिसमें वि० सं० १५६८ (?) का लेख उत्कीर्ण है । ग्वा० पु० रि० १६२६-३०, पृ० १५ ।

१२२८. दुबकुण्ड (शिवपुरी)

(अ) विशाल जैन-मन्दिर के भग्नावशेष जिसमें पड़े एक बड़े शिलाखण्ड पर कच्छपघात् विक्रमसिंह का वि० सं० ११४५ का लेख प्राप्त हुआ था । ग्वा० पु० रि० १६१५-१६; क० आ० स० इ० रि० भाग २०, पृ० ६६ ।

(आ) जैन-मन्दिर में पद चिह्नों के नीचे उत्कीर्ण वि० सं० ११५२ का अभिलेख । क० आ० स० इ० रि० भाग २०, पृ० १०२; ग्वा० पु० रि० संवत् १६७३, क्रमांक ४८; भण्डारकर सूची, क्रमांक १६१ ।

१२२६. देवरी (सागर)

मध्यकालीन जैन-प्रतिमाएँ । इ० आ० रि० (सा० रि०) १६६४-६५, पृ० ४-३ ।

१२३०. ढोनाकोना (शिवपुरी)

(अ) जैन-मन्दिर के अवशेष जिसके विभिन्न देवगृहों में तीर्थंकर की प्रतिमाएँ रखी हैं । मुख्य देवगृह में सुपार्श्वनाथ की लगभग १० फुट ऊँची प्रतिमा है । इन प्रतिमाओं पर लगभग ११वीं-१४वीं शताब्दी के लेख उत्कीर्ण हैं । ग्वा० पु० रि० १६३५-३६, पृ० १३ ।

(आ) तीर्थंकर की विशालकाय दुर्लभ जैन प्रतिमा जो लगभग १३वीं-१४वीं शताब्दी ईसवी की है । ग्वा० पु० रि० १६३५-३६, पृ० १३ ।

१२३१. धनपुर (बिलासपुर)

(अ) लगभग ६वीं शताब्दी ईसवी के चार जैन-मन्दिरों के समूह के अवशेष । क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २३७; क० लि० ए० रि० पृ० ६०; बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१६१०), पृ० २६५ ।

(आ) स्थानीय शोभनाथ तालाब के तट पर स्थित जैन प्रतिमाएँ । वही ।

(इ) तालाब के निकट एक वृक्ष के नीचे जैन-प्रतिमाओं के भग्नावशेष, जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी के हैं। ना० सू०।

१२३२. धनाचा (मोरेना)

नाले के निकट विशालकाय अपूर्ण जैन-प्रतिमा। ग्वा० पु० रि० १६१६-१७।

१२३३ धनच (शिवपुरी)

वि० सं० १३६० के पन्द्रह जैन-मूर्ति-लेख, जिनमें अधिकांश अस्पष्ट हैं। ग्वा० पु० रि० १६७३, क्रमांक ६३, ७०, ७१, ७२, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७६, ८४, ८५, ८७, ८८ तथा वही, संवत् १६८६, क्रमांक ६८।

१२३४. नगपुरा (दुर्ग)

कलचुरि कालीन जैन (? शिव)-मन्दिर। दु० डि० ग० पृ० १८२।

१२३५. नड़ेरी (गुना)

प्राचीन जैन-मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १६२४-२५, पृ० २५।

१२३६. नरवर (शिवपुरी)

लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की १६० जैन-प्रतिमाएँ, जो जमीन के नीचे निर्मित तलघर में संरक्षित मिलीं। ग्वा० पु० रि० १६१४-१५; अनेकान्त, भाग १६, क्रमांक १-२ (अप्रैल-जून १६६६), पृ० ८१-८३।

१२३७. नरवर (दुर्ग) (शिवपुरी)

लगभग १७वीं-१८वीं शताब्दी ईसवी में निर्मित जैन-मन्दिर में पाँच प्राचीन तीर्थंकर प्रतिमाएँ जिन पर वि० सं० १२१३, १३१६, १३४० तथा १३४८ की तिथियाँ उत्कीर्ण हैं। ग्वा० पु० रि० १६२५-२६ पृ० ७।

१२३८. निमथूर (मन्दसौर)

(अ) पहाड़ी पर स्थित प्राचीन जैन-मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १६१७-१८।

(आ) ग्राम में प्राचीन जैन-मन्दिर के खण्डहर। वही।

१२३६. नोहटा (दमोह)

अनेक जैन-मन्दिरों के भग्नावशेष। क० लि० ए० रि० पृ० ३२।

१२४०. पतौरा (सतना)

गुप्तकालीन एक जैन-मन्दिर। अनेकान्त, भाग १६, अंक ६, फरवरी १६६७, पृ० ३४०-४६।

१२४१. पनागर (जबलपुर)

जैन-मन्दिर में अनेक प्राचीन जन-प्रतिमाएँ। ख० बै० पृ० १३८।

१२४२. पनागर (होशंगाबाद)

कलचुरि कालीन जैन-मन्दिर के भग्नावशेष। गु० अ० ग्र० पृ० २०७-८।

१२४३. पनिहार (ग्वालियर)

जैन-प्रतिमा, जिस पर वि० सं० १५२९ का लेख उत्कीर्ण है। लेख में कीर्तिसिंहदेव तथा अनेक जैन साधुओं का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९९७, क्रमांक १।**

१२४४. पचरई (शिवपुरी)

जैन-मन्दिरों का बड़ा समूह जिनमें प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण वि० सं० ११२२ (?) १२१०, १२१३, १२२२, १२३१ के लेख हैं। स्तम्भों पर उत्कीर्ण वि० सं० ११३२, तथा १२१० के लेख हैं। **ग्वा० पु० रि० १९१४-१५।**

१२४५. पढ़ावली (मोरेना)

(अ) लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के दो जैन-मन्दिरों का समूह। **ग्वा० पु० रि० १९१५-१६।**

(आ) लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के जैन-मन्दिरों का समूह जो स्थानीय 'गुफा' कहलाता है। **ग्वा० पु० रि० १९२२-२३।**

(इ) लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का शान्तिनाथ का मन्दिर। **ग्वा० पु० रि० १९१५-१६।**

(ई) बटेश्वर घाटी में स्थित लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के दो जैन-मन्दिरों के समूह के खण्डहर। **ग्वा० पु० रि० १९१५-१६।**

१२४६. पपौरा (टीकमगढ़)

चन्देल कालीन जैन-प्रतिमा जिस पर मदनवर्मन् के शासन काल का वि० सं० १२०२ का लेख उत्कीर्ण है। **'पपौरा'** पृ० २०।

१२४७. पालि (शिवपुरी)

प्राचीन जैन-मन्दिर के खण्डहर, जिनमें तीर्थंकर की प्रतिमाएँ हैं। **ग्वा० पु० रि० १९३९-४०, पृ० १७।**

१२४८. पीपलरावन (उज्जैन)

प्राचीन जैन-मन्दिर। **ग्वा० पु० रि० १९१७-१८।**

१२४९. पुजारीपाली (रायगढ़)

एक प्राचीन जैन-मन्दिर के भग्नावशेष। **क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० १४४।**

१२५०. पेन्ड्रा (बिलासपुर)

राजमहल से प्राप्त पार्श्वनाथ की प्रतिमा जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। **ना० सू०।**

१२५१. पैंठा (मोरेना)

प्राचीन जैन-मन्दिर के खण्डहर। **ग्वा० पु० रि० १६४०-४१ पृ० २३।**

१२५२. बघेर (शिवपुरी)

एक जैन-मन्दिर जिसमें वि० सं० १५३२ का शिलालेख है। शिलालेख में महाराज कीर्तिसिंह तथा उसके मन्त्री हरिश्चन्द्र द्वारा मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। **ग्वा पु० रि० १६३५-३६, पृ० १२।**

१२५३. बडोह (विदिशा)

लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी का जैन-मन्दिर, जिसमें निवास के लिये एक चौकोर आंगन के चारों ओर २५ कोठरियाँ बनी हैं। दरवाजे के चौखट पर वि० सं० ११३४ तथा १११३ के यात्रियों के लेख उत्कीर्ण हैं। **ग्वा० पु० रि० १६२३-२४, पृ० ८-१०; आ० ग्वा० पृ० ५८-५६।**

१२५४. बजरंगढ़ (गुना)

दो जैन-मन्दिर जिनमें एक में रखी प्रतिमा पर वि० सं० १२३६ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० १६२६-३०।**

१२५५. बनाड्या (इन्दौर)

जैन-मन्दिर जिसमें वि० सं० १५४८ तथा १६५६ के लेख उत्कीर्ण हैं। **है० म० इ०।**

१२५६. बरई (ग्वालियर)

(अ) गाँव के उत्तर की ओर स्थित दो जैन-मन्दिरों के समूह, जो लगभग १५वीं शताब्दी ईसवी के हैं। एक मन्दिर में तीर्थंकर की विशाल प्रतिमा है। **ग्वा० पु० रि० १६४०-४१, पृ० २२-२३।**

(आ) गाँव के दक्षिण की ओर स्थित लगभग १५वीं शताब्दी ईसवी के चार जैन-मन्दिरों का समूह जो एक पंक्ति में बनाये गये हैं। इनमें तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हैं। **वही।**

१२५७. बरगाँव (रीवा)

जैन-तीर्थंकर-प्रतिमा जो कलचुरि कालीन है। **आ० क० त्रि० पृ० २२६।**

१२५८. बरहटा (होशंगाबाद)

(अ) जैन-मानस्तम्भ के भग्नावशेष तथा अन्य जैन-स्मारक। **शु० अ० ग्र० पृ० २०६-२०७।**

(आ) विशालकाय ऋषभदेव की प्रतिमा। **वही, पृ० २०८।**

(इ) पार्श्वनाथ जिन की प्रतिमा। **वही, पृ० २०८।**

(ई) जैन-सरस्वती की दुर्लभ प्रतिमा। **शु० अ० ग्र० पृ० २१०।**

१२५९. बरहटा (नरसिंहपुर)

जैन तीर्थंकर की छः प्रतिमाएँ। नरसिंहपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०६), पृ० २०६।

१२६०. बलारपुर (शिवपुरी)

एक प्राचीन जैन-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१४-१५।

१२६१. बहुरीबंद (जबलपुर)

कलचुरि शासक गयाकर्ण के शासनकाल की विशालकाय शान्तिनाथ की प्रतिमा, जिस पर राष्ट्रकूट गोल्हण का लेख उत्कीर्ण है। क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ३९-४०; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९०३-४, पृ० ५४; है० त्रि० मा० पृ० १०७, चित्र ५२-ब; ख० वैं० पृ० १३७; क० लि० ए० रि० पृ० २७।

१२६२. बारो अथवा बरनगर (विदिशा)

(अ) लगभग ८वीं-१०वीं शताब्दी का जैन-मन्दिर जो स्थानीय 'गडरमल' के नाम से प्रसिद्ध है। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ७३।

(आ) गडरमल मन्दिर के उत्तर-पश्चिम की ओर कुछ जैन-मन्दिरों के अवशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० ७८।

१२६३. बालाघाट (बालाघाट)

जैन-प्रतिमाएँ। ख० वैं० पृ० १४१।

१२६४. बावनगजा (पश्चिम निमाड़)

बड़वानी से ८ किलोमीटर दक्षिण में पहाड़ी पर स्थित विशालकाय जैन-तीर्थंकर ऋषभनाथ की प्रतिमा जो ७२ फुट ऊँची है। जैन धर्म-मतावलम्बी इसे एक निर्वाण-क्षेत्र के रूप में पवित्र मानते हैं। निकटस्थ जैन-मन्दिर प्राचीन जैन-मन्दिर के भग्नावशेषों से बना है। वे० नि० डि० ग० पृ० ४३५; म० भा० पु० रि० १९४९-५०।

१२६५. बिजवाड़ (देवास)

(अ) लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी का बहुत बड़ा जैन-मन्दिर, जिसके केवल अवशेष मात्र रह गये हैं। प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग २०, पृ० १०६; इ० स्टे० ग० भाग २, पृ० ९; रि० अ० हो० स्टे० १९३२, पृ० ९५।

(आ) एक समकालीन अन्य जैन मन्दिर के अवशेष। वही।

१२६६. बिठाला (गुना)

लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी का जैन-मन्दिर, जिसमें तीर्थंकर की एक बड़ी प्रतिमा तथा चार अन्य प्रतिमाएँ हैं। निकटस्थ कुछ अन्य अवशेष। ग्वा० पु० रि० १९२४-२५, पृ० १४-१५; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग २४, पृ० १६६।

१२६७. **विदिशा (विदिशा)**

डुंगरपुरा से प्राप्त तीन खण्डित तीर्थंकर प्रतिमाएँ जिन पर 'महाराजाधिराज' उपाधि सहित गुप्त सम्राट रामगुप्त के शासन काल के लेख उत्कीर्ण हैं। **ज० ओ० इ० भाग १८, अंक ३ (मार्च १६६६), पृ० २४७-५१, २५२-५३, २५४; म० पु० पृ० १४।**

१२६८. **बिलहरी (जबलपुर)**

(अ) लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की जैन-प्रतिमा। **ख० वैं० पृ० १६६-७१।**

(आ) एक तीर्थंकर-प्रतिमा। ख० वैं० पृ० १८२-८३।

१२६९. **बूढ़िखार (बिलासपुर)**

स्थानीय खण्डित देवालय में वृहदाकार तीर्थंकर-प्रतिमा, जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। **ना० सू०।**

१२७०. **बूढ़ि-चन्देरी (गुना)**

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के पाँच जैन मन्दिरों का समूह, जिनके अवशेष प्राप्त हैं। **आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग २४, पृ० १६६; क० आ स० इ० रि० भाग २, पृ० ४०३; गा० च० पृ० ४।**

१२७१. **बूढ़ि-राई (शिवपुरी)**

एक प्राचीन जैन-मन्दिर। **ग्वा० पु० रि० १६१४-२३।**

१२७२. **बेरड (शिवपुरी)**

लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के एक जैन-मन्दिर के अवशेष, जिनमें तीर्थंकर की एक पूर्ण तथा दो खण्डित प्रतिमाएँ हैं। **ग्वा० पु० रि० १६२८-२६, पृ० १३।**

१२७३. **बैजनाथ (रीवा)**

पूर्व-मध्यकालीन जैन-मन्दिर। **इ० आ० रि० १६६०-६१, पृ० ६२।**

१२७४, **बोरतालाब (दुर्ग)**

मस्तक-विहीन ऋषभदेव की प्रतिमा, जिसपर वि० सं० १५४८ का लेख उत्कीर्ण है। **ख० वैं० पृ० १४८।**

१२७५. **बण्डा (सागर)**

प्राचीन जैन-मन्दिर। **सा० डि० ग० पृ० ५२२।**

१२७६. **भिलसा (विदिशा)**

जैन-प्रतिमा, जिस पर वि० सं० ११३२ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १६८०, क्रमांक ४।**

१२७७. **भीमपुर (शिवपुरी)**

एक जैन-मन्दिर जिसमें वि० सं० १३१६ का शिलालेख है। इस लेख में नरवर के

शासक जज्वपेल्ल आसल्लदेव के एक पदाधिकारी जैत्रसिंह द्वारा जैन-मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। नागदेव द्वारा मूर्ति की प्रतिष्ठा का भी उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० १६१४-१५।**

१२७८. भुरवदा (शिवपुरी)

पुरानाखेड़ा में स्थित लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के एक जैन-मन्दिर के अवशेष। **ग्वा० पु० रि० १६३५-३६, पृ० १२।**

१२७६. भोजपुर (रायसेन)

(अ) परमार शासन कालीन जैन-मन्दिर जिसका निर्माण सम्भवत: भोजदेव के शासन-काल में किया गया था। **म० प्र० स० पुरातत्त्व विशेषांक १३ जून, १६७०, पृ० १।**

(आ) प्राचीन जैन-मन्दिर में स्थित तीर्थंकर-प्रतिमा, जिस पर परमार भोज के शासन-काल का लेख है। **इ० आ० रि० १६५६-६०, पृ० ५७।**

(इ) पार्श्वनाथ की प्रतिमा, जिस पर परमार नरवर्मन् के शासन काल का लेख है। **इ० आ० रि० १६५६-६०, पृ० ५७।**

१२८०. मगरोनी (शिवपुरी)

प्राचीन जैन-मन्दिर, जिसमें पार्श्वनाथ की प्रतिमा रखी है। **ग्वा० पु० रि० १६१४-१५।**

१२८१. मचलपुर (मन्दसौर)

दो प्राचीन जैन-मन्दिर। **है० म० इ०।**

१२८२. मझोली (जबलपुर)

प्राचीन जैन-प्रतिमाएँ। **ज० डि० ग० पृ० ६८८।**

१२८३. मदनपुर (सागर)

जैन-मन्दिर के भग्नावशेष। **क० लि० ए० रि० पृ० ३५।**

१२८४. मल्लार (बिलासपुर)

(अ) लगभग ८वीं शताब्दी ईसवी की महावीर की प्रतिमा। **इ० आ० रि० १६६०-६१, पृ० ५६।**

(आ) पातालेश्वर मन्दिर के निकट एक घर में संग्रहीत पार्श्वनाथ की प्रतिमा जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। **ना० सू०।**

(इ) आधुनिक मन्दिर में स्थित २४ तीर्थंकरों की समकालीन प्रतिमाएँ। **वही।**

(ई) मालगुजार के मकान की दीवार पर लगी तीर्थंकर प्रतिमाएँ। **वही।**

(उ) पातालेश्वर मन्दिर के निकट घर में संग्रहीत आदिनाथ की प्रतिमा जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। **वही।**

१२८५. मल्हारगढ़ (गुना)

प्राचीन जैन-मन्दिर । **ग्वा पु० रि० १९१४-१५ ।**

१२८६. माकशी (उज्जैन)

प्राचीन जैन-मन्दिर । **ग्वा० पु० रि० १९३४, पृ० २३-२९ ।**

१२८७. मान्धाता (पूर्व निमाड़)

प्राचीन जैन-मन्दिरों के भग्नावशेष । **इ० नि० ग० पृ० ४७१ ।**

१२८८. मामोन (गुना)

लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के ६-७ जैन-मन्दिरों के तीन समूहों के खण्डहर । इनमें से एक मन्दिर में तीर्थंकर की विशाल प्रतिमा है । **ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० १०; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग २५, पृ० १९१ ।**

१२८९. मेहसाना (रीवा)

पूर्व-मध्यकालीन जैन-मन्दिर । **इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२ ।**

१२९०. मैहर (सतना)

अनेक जैन प्रतिमाएँ । **ख० वै० पृ० २६५-६६ ।**

१२९१. मोहनपुर (गुना)

लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के प्राचीन जैन-मन्दिर के भग्नावशेष । **ग्वा० पु० रि० १९२४-२५, पृ० १३ ।**

१२९२. रखेतरा (गुना)

(आ) उर्र नदी के पश्चिम तट पर स्थित पर्वतमाला में खुदी आदिनाथ की विशालकाय प्रतिमा, जिसके निचले भाग पर वि० सं० १६७५ का लेख उत्कीर्ण है । **ग्वा० पु० रि० १९२४-२५, पृ० ३५-३६ ।**

(आ) आदिनाथ की शैलकृत्त-प्रतिमा के निकट बना पदचिह्न तथा वि० सं० १५५५ का उत्कीर्ण लेख । **ग्वा० पु० रि० १९२४-२५, पृ० १५,३८ ।**

(इ) आदिनाथ की विशालकाय प्रतिमा के निकट शैलकृत्त गुफा । **वही ।**

१२९३. रतनपुर (बिलासपुर)

कठीदेवल मन्दिर में संग्रहीत दो जैन तीर्थंकर-प्रतिमाएँ जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की हैं । **ना० सू० ।**

१२९४. रवेब (शिवपुरी)

लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का मन्दिर जो मूलरूप में जैन-मन्दिर रहा होगा परन्तु आज गर्भगृह में शिवलिङ्ग रखा है । शान्तिनाथ की खण्डित प्रतिमा जो बाहर पड़ी है,

उस पर वि० सं० (१०)७८ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९३५-३६, पृ० १३।

१२९५. राई (बूढ़ी) (शिवपुरी)

प्राचीन जैन-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

१२९६. रामवन (सतना)

शारदा प्रसादजी के संग्रह में संरक्षित अनेक जैन-प्रतिमाएँ जिनमें मुख्य निम्न-लिखित हैं—

(अ) पार्श्वनाथ की प्रतिमा,

(आ) मल्लिनाथ का प्रतिबिम्ब,

(इ) शिला पर खोदी गई बारह खड्गासनस्थ प्रतिमाएँ। ख० वै० पृ० २५६-५८।

१२९७. लखनादौन (सिवनी)

(अ) जैन-मन्दिरों के खण्डहर। क० लि० ए० रि०; ख० वै० पृ० १३९।

(आ) अनेक जैन-प्रतिमाएँ। क० लि० ए० रि०; ख० वै० पृ० १३९।

१२९८. लखारी (गुना)

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के जैन-मन्दिर के खण्डहर। ग्वा० पु० रि० १९२४-२५, पृ० १४।

१२९९. विदिशा (विदिशा)

(अ) चन्द्रप्रभ की प्रतिमा जिसकी चरण-चौकी पर गुप्तलिपि में महाराजाधिराज रामगुप्त का लेख उत्कीर्ण है। म० पु० पृ० १४; ज० ओ० इ० भाग १८, अंक ३, पृ० २४७-५२,२५२-५३, २५४।

(आ) पुष्पदन्त की प्रतिमा जिसकी चरण-चौकी पर गुप्तलिपि में महाराजाधिराज रामगुप्त का लेख उत्कीर्ण है। वही।

(इ) चन्द्रप्रभ की द्वितीय प्रतिमा जिसकी चरण-चौकी पर गुप्तलिपि में महाराजाधिराज रामगुप्त का लेख उत्कीर्ण है। वही।

(ई) तीर्थंकर प्रतिमा का मस्तक तथा अन्य जैन प्रतिमाएँ जो लगभग परमार शासन-काल की हैं। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० ४-३।

१३००. शहडोल (शहडोल)

जैन-तीर्थंकर प्रतिमा, जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० २२६।

१३०१. सक्ती (रायगढ़)

जंगल में एक विशालकाय जैन-प्रतिमा। ख० वै० पृ० १५१।

१३०२. सारंगपुर (रायगढ़)

जैन-देवी तथा अन्य प्रतिमाएँ जो लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी की हैं। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० ४-३।

१३०३. सिद्धावरकूट (पूर्व निमाड़)

(अ) आठ जैन-मन्दिर, जिनमें प्राचीन जैन-मन्दिरों के भग्नावशेष लगे हैं। इ० नि० ग० पृ० ४७४।

(आ) तीर्थंकर चन्द्रप्रभ की प्रतिमा जिसकी चौकी पर १३वीं शताब्दी ईसवी का लेख उत्कीर्ण है। वही।

१३०४. सन्दोर (गुना)

एक प्राचीन जैन-मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १६१८-१६।

१३०५. सन्धारा (मन्दसौर)

(अ) लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का जैन-मन्दिर, जिसे 'ताम्बोली का मन्दिर' कहा जाता है। इ० स्टे० ग० पृ० ६०।

(आ) आदिनाथ के दो प्राचीन मन्दिर जो लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के हैं। वही।

१३०६. सहाजई (शिवपुरी)

प्राचीन जैन-मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १६२२-२३।

१३०७. सिरपुर (रायपुर)

(अ) गंधेश्वर-मन्दिर के निकट एक प्राचीन जैन-मन्दिर के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १७०।

(आ) आदिनाथ की कांस्य प्रतिमा जो लगभग ६वीं शताब्दी ईसवी की है। ख० वै० पृ० १५३-५४।

१३०८. सिरोहा (शिवपुरी)

लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के जैन-मन्दिर के अवशेष। ग्वा० पु० रि० १६२५-२६, पृ० ८।

१३०६. स्लिमनाबाद (जबलपुर)

(अ) नवग्रह युक्त एक जैन-प्रतिमा जो लगभग १३वीं शताब्दी ईसवी की है। ख० वै० पृ० १८१, चित्र पृ० ४२८; गु० अ० प्र० पृ० २११।

(आ) अनेक जैन-प्रतिमाएँ। ख० वै० पृ० १३६।

१३१०. सुनहरा (जबलपुर)

जैन-प्रतिमा जिस पर वि सं० १३६३ का लेख उत्कीर्ण है। लेख में महाराजाधिराज मुद्रिगदेव का उल्लेख है। हीरालाल सूची, क्रमांक ५६।

१३११. सुहानिया (मोरेना)

(अ) गांव के पूर्व की ओर पहाड़ी पर जैन-मन्दिरों के समूह के भग्नावशेष जो लगभग १०वीं

शताब्दी ईसवी के हैं। इन खण्डहरों में आदिनाथ, पार्श्वनाथ तथा अन्य तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ हैं। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० १६।

(आ) एक अन्य मन्दिर के भग्नावशेष, जिसमें तीर्थंकर की प्रतिमाएँ हैं। ये लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी की हैं। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० १७।

(इ) लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी का जैन-स्तम्भ। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० १६।

(ई) नेमिनाथ का जैन-मन्दिर, जो लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का है। ग्वा० पु० रि० १९३६-३७, पृ० २३।

(उ) नाले के निकट दो जैन मन्दिरों के समूह के भग्नावशेष, जिनमें तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ हैं। ये लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी की हैं। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० १७।

(ऊ) तीन विशालकाय जैन-प्रतिमाएँ, जिनमें एक पर वि० सं० १४६७ की तिथि पड़ी है। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ४०१।

१३१२. सेसई (शिवपुरी)

गाँव के दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के जैन-मन्दिर के अवशेष। ग्वा० पु० रि० १९१४-१५।

१३१३. सोहागपुर (शहडोल)

(अ) तीर्थंकर तथा शासनदेवी की जैन-प्रतिमाएँ, जो कलचुरि शासन काल की हैं। इन्हें स्थानीय ठाकुर के महल में संरक्षित किया गया है। है० त्रि० मा० पृ० १००, चित्र ४१-ब, ४१-अ; क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २४०।

(आ) दो प्राचीन जैन-मन्दिरों के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २४४।

१३१४. सिंघना (धार)

प्राचीन जैन-मन्दिर। है० म० इ०।

१३१५. सिंघपुर (शहडोल)

(अ) जैन-तीर्थंकर प्रतिमा, जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० २२६।

(आ) जैन-देवी प्रतिमा जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० २२७।

इ—वैष्णव स्मारक तथा प्रतिमाएँ

१३१६. अचेरा (मन्दसौर)

प्राचीन वैष्णव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ०, १८।

१३१७. अफज़लपुर (मन्दसौर)

दो प्राचीन वैष्णव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१४-२२।

१३१८. अमझेरा (धार)

(अ) चतुर्भुजनाथ का प्राचीन वष्णव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

(आ) लक्ष्मीनारायण का प्राचीन वैष्णव-मन्दिर। **वही।**

१३१९. अमरकण्टक (शहडोल)

(अ) कलचुरि कालीन विष्णु-मन्दिर, जो केशवनारायण का मन्दिर कहलाता है। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २३०; है० त्रि० मा० पृ० ५७-५८, चित्र १५; क० लि० ए० रि० पृ० ५८।**

(आ) कलचुरि कालीन मन्दिर के भग्नावशेष। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २३१; है० त्रि० मा० पृ० ५९।**

(इ) कलचुरि कालीन वासुदेव विष्णु की प्रतिमा। **आ० क० त्रि० पृ० २१६।**

१३२०. आगर (उज्जैन)

वराह-मन्दिर जिसमें लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी की वराह-प्रतिमा प्रतिष्ठित है। **ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० २८।**

१३२१. आरंग (रायपुर)

नारायण ताल के तट पर विशालकाय विष्णु प्रतिमाएँ। **रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, (१९०९) पृ० २५८-५९।**

१३२२. आशापुरी (रायसेन)

प्राचीन वैष्णव-मन्दिर तथा वराह की प्रतिमा। **म० प्र० स० पुरातत्त्व विशेषांक, १३ जून १९७०, पृ० ५१।**

१३२३. ईश्वरपुर (सागर)

लक्ष्मीनारायण तथा वराह की प्रतिमाएँ। **इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १००।**

१३२४. इन्दौर (गुना)

लगभग ९वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी का वैष्णव-मन्दिर, जिसके भग्नावशेषों में विष्णु, लक्ष्मी आदि की प्रतिमाएँ प्राप्त हैं। **ग्वा० पु० रि० १९३६-३८, पृ० ९।**

१३२५. उज्जैन (उज्जैन)

गोमती-कुण्ड के निकट वैष्णव-मन्दिरों का समूह, जो लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी के हैं। **ग्वा० पु० रि० १९१७-१८।**

१३२६. उदयगिरि (विदिशा)

(अ) वराह प्रतिमा-युक्त शैलकृत्त 'वाराह गुफा' (गुफा क्रमांक ५) जो लगभग ४थी शताब्दी ईसवी की है। **क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ४८-४९; म० उ० हि०।**

(आ) ग्यारह शैलकृत्त गुफाएँ (गुफा क्रमांक ८-१८) जो लगभग ४थी-५वीं शताब्दी ईसवी की हैं। कुछ गुफाओं में विष्णु की शैलकृत्त प्रतिमा है। गुफा क्रमांक १३ में शेषशायी

विष्णु की विशाल प्रतिमा शैलकृत्त है। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ५२; म० उ० हि०।

१३२७. उमरिया (जबलपुर)

लक्ष्मी तथा गरुड़ की प्रतिमाएँ। ज० डि० ग० पृ० ६६६।

१३२८. एरण (सागर)

(अ) गुप्तकालीन वराह मन्दिर, जो धन्यविष्णु द्वारा स्थापित किया गया था। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ८२-८३।

(आ) गुप्तकालीन विष्णु-मन्दिर, जिसमें विशाल प्रतिमा स्थापित है। वही, पृ० ८५-८७।

(इ) उक्त विष्णु मन्दिर के उत्तर की ओर स्थित एक छोटा वैष्णव-मन्दिर। वही, पृ० ८७।

(ई) उक्त वैष्णव-मन्दिर के निकट स्थित विष्णु के नरसिंह अवतार का मन्दिर। वही, पृ० ८८-८९।

(उ) गुप्तकालीन विष्णु की प्रतिमा, जिस पर लेख उत्कीर्ण है। वही, पृ० ८७।

(ऊ) गुप्तकालीन अनेक वैष्णव-प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ७०।

(ए) विशालकाय वराह प्रतिमा, जिस पर हूण शासक तोरमाण का लेख उत्कीर्ण है। क० आ० स० इ० रि भाग ७, पृ० ८९; वही, भाग १०, पृ० ८३-८४।

(ऐ) वराह मन्दिर के सम्मुख गुप्तकालीन तोरण। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ८३-८४; क० लि० ए० रि० पृ० ३४-३५।

(ओ) गुप्त शासक बुधगुप्त के शासन-काल में मातृविष्णु तथा धन्यविष्णु द्वारा स्थापित स्तम्भ, जिस पर लेख उत्कीर्ण है। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ८१; वही, भाग ७, पृ० ८८; क० लि० ए० रि० पृ० ३४-३५।

(औ) कुछ शिला-पट्ट जिन पर कृष्ण-लीला के अनेक दुर्लभ दृश्य उत्कीर्ण हैं। म० भा० वर्ष ३, अंक ३ (१९६०) पृ० १-५।

(क) गुप्तकालीन गजलक्ष्मी की कलापूर्ण प्रतिमा। म० भा० वर्ष ३, अंक ३ (१९६०) पृ० ५।

१३२९. कचरोद (उज्जैन)

(अ) एक प्राचीन वैष्णव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१७-१८।

(आ) प्राचीन नृसिंह-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१७-१८।

१३३०. कंजरदा (मन्दसौर)

आधुनिक वैष्णव-मन्दिर, जो लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी के वैष्णव-मन्दिर के भग्नावशेषों से बनाया गया। हे० म० इ०।

१३३१. कटनी (जबलपुर)

दशावतारी-विष्णु-प्रतिमा। ख० वै० पृ० ३६९-३७४।

१३३२. **करनपुरा (जबलपुर)**

विशाल वराह प्रतिमा । क० लि० ए० रि० पृ० २८ ।

१३३३. **कवर्धा (दुर्ग)**

आधुनिक राम के मन्दिर में लगी प्राचीन वैष्णव-प्रतिमाएँ । क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ३४ ।

१३३४. **कागपुर (विदिशा)**

वैष्णव-मन्दिर के भग्नावशेष, जो लगभग ८वीं शताब्दी ईसवी के हैं । ग्वा० पु० रि० १९३१-३२, पृ० ६ ।

१३३५. **कांवली (मन्दसौर)**

प्राचीन वैष्णव-मन्दिर । हे० म० इ० ।

१३३६. **कारीतलाई (जबलपुर)**

(अ) प्राचीन वैष्णव-मन्दिर के भग्नावशेष, वाराह तथा अन्य प्रतिमाएँ । म० पु० रू० पृ० ८३; क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ७-८ ।

(आ) वैष्णव-प्रतिमाएँ । ख० वै० पृ० ३२९ ।

(इ) प्राचीन वैष्णव-मन्दिर, जिसमें सम्भवतः वराह-प्रतिमा स्थापित थी । इसके भग्नावशेषों से कलचुरि शासक लक्ष्मणराज द्वितीय का शिलालेख प्राप्त हुआ था । क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० १७८, १८६ ।

१३३७. **कालामध (शिवपुरी)**

लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी के वैष्णव-मन्दिर के भग्नावशेष । शैली में यह टोंगरा के मन्दिर के समान है । ग्वा० पु० रि० १९२८-२९, पृ० १३ ।

१३३८. **कुकड़ेश्वर (मन्दसौर)**

लगभग १३वीं-१४वीं शताब्दी ईसवी का विष्णु-मन्दिर, जिसे आधुनिक काल में सुधारा गया । इ० स्टे० ग० पृ० ३७ ।

१३३९. **केथलि (मन्दसौर)**

लगभग १३वीं-१४वीं शताब्दी ईसवी के वैष्णव मन्दिर में शेषशायी प्रतिमा । इ० स्टे० ग० पृ० २८ ।

१३४०. **कोनी (बिलासपुर)**

कलचुरि कालीन मन्दिर के भग्नावशेषों में विष्णु तथा गणेश-प्रतिमाएँ । ए० इ० भाग २७, पृ० २७६ ।

१३४१. **कोहला (कवलां) (मन्दसौर)**

लगभग १३वीं-१४वीं शताब्दी ईसवी के वराह, लक्ष्मीनारायण तथा चतुर्भुज-मन्दिर । इ० स्टे० ग० पृ० ३० ।

१३४२. खजुराहो (छतरपुर)

(अ) खजुराहो-सागर के तट पर बना ब्रह्मा-मन्दिर, जो वैष्णव-मन्दिर है। इसकी तिथि लगभग ९०० ई० निर्धारित की जा सकती है। **ख० धा० पृ० १३-३५; ख० क्रू० पृ० ५१-६०; ख० दे० प्र० पृ० १२-२२; ख० स्क० सि० पृ० १०-१८; ख० जे० पृ० ८७-१६०; ए० आइ० क्रमांक १५।**

(आ) लक्ष्मण-मन्दिर के निकट स्थित वराह-मन्दिर जिसके मध्य में विशालकाय वाराह मूर्ति स्थापित है। वराह के शरीर पर ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य, सरस्वती, वीरभद्र तथा गणेश के साथ सप्तमातृकाओं, नवग्रहों, अष्टदिक्पालों, अष्टवसुओं, नागों, गणों, जल-देवी-देवताओं और भक्तों आदि की प्रतिमाएँ अंकित हैं। इसे ९००-९२५ ई० में बना माना गया है। **वही।**

(इ) लक्ष्मण-मन्दिर, जो पंचायतन शैली का है। मन्दिर की जगती के चारों कोनों पर चार गौण मन्दिर बने हैं। गर्भगृह में विष्णु के वैकुण्ठ रूप की मूर्ति अलंकृत तोरण के मध्य स्थित है। मन्दिर के मण्डप में लगे वि० सं० १०११ के एक शिलालेख से ज्ञात होता है कि यह मन्दिर चन्देल नृपति यशोवर्मन् द्वारा निर्मित हुआ था। यह मन्दिर ९३० और ९५० ई० के मध्य बना होगा। लक्ष्मण-मन्दिर के ठीक सामने गरुड़ के उद्देश्य से बना पाँचवाँ मन्दिर जिसमें गरुड़-प्रतिमा लुप्त हो गई है और अब इसे देवी-मन्दिर कहते हैं। **वही।**

(ई) वामन-मन्दिर जिसमें विष्णु के वामन अवतार की ४ फुट ८ इंच ऊँची प्रतिमा प्रतिष्ठित है। इस निराधार प्रासाद में गर्भगृह, अन्तराल, महामण्डप तथा अर्धमण्डप हैं। सप्तरथ शिखर-युक्त यह निराधार प्रासाद प्रायः आदिनाथ के सदृश है। विशेषतः अन्तर्भाग की सामान्य योजना एवं निर्माण-शैली की दृष्टि से यह जगदम्बी तथा चित्रगुप्त मन्दिरों के समरूप है। इसकी निर्माण तिथि १०५०-१०७५ ई० मानी जाती है। **वही।**

(उ) जवारी-मन्दिर जिसमें गर्भगृह, अन्तराल, मण्डप तथा अर्धमण्डप मात्र अवशिष्ट हैं। गर्भगृह में चतुर्भुज विष्णु-प्रतिमा प्रतिष्ठित है। अपने अलंकृत मकरतोरण और मनोहर शिखर के कारण यह मन्दिर विशेष दर्शनीय है। इसे १०७५ तथा ११०० ई० के बीच निर्मित हुआ माना जाता है। **वही।**

(ऊ) चतुर्भुज-मन्दिर, जो एक निराधार प्रासाद है, जिसमें गर्भगृह, संकीर्ण अन्तराल, मण्डप तथा खण्डित अर्धमण्डप है। यह योजना में सप्तरथ है तथा इसका शिखर भारी है और जैन शिखर नहीं है। खजुराहो में यही एक मन्दिर है जिसमें मिथुन-चित्रण का अभाव है। इसमें प्रतिष्ठित ९ फुट ऊँची महाकाय विष्णु-प्रतिमा विलक्षण है, जिसमें शैव विशेषताएँ अधिक दृष्टिगोचर होती हैं। मन्दिर के बहिर्भाग में, उत्तर की ओर उत्कीर्ण नारसिंही की एक दुर्लभ प्रतिमा दार्शनीय है। इसकी निर्माण तिथि ११०० ई० मानी गई है। **वही।**

(ए) वामन-मन्दिर के पूर्व की ओर स्थित एक ध्वस्त-वैष्णव-मन्दिर के भग्नावशेष जिसे खखा-मठ कहा जाता है। अब मन्दिर के गर्भगृह का प्रवेशद्वार तथा चार स्तम्भ मात्र शेष रह गये हैं। वही।

(ऐ) विष्णु की स्थानक प्रतिमाएँ जिनके प्राप्ति-स्थान निम्नलिखित हैं—

(१) लक्ष्मण मन्दिर
(२) जगदम्बी मन्दिर
(३) खजुराहो संग्रहालय
(४) मातंगेश्वर मन्दिर
(५) चतुर्भुज मन्दिर
(६) जवारी मन्दिर
(७) विश्वनाथ मन्दिर
(८) धुबेला संग्रहालय
(९) चित्रगुप्त मन्दिर
(१०) प्रतापेश्वर मन्दिर
(११) वामन मन्दिर
(१२) पार्श्वनाथ मन्दिर
(१३) कन्दरिया मन्दिर।

ख० दे० प्र० पृ० १५०-५१, क्रमांक १-८६; वही, पृ० ५७-१४६।

(ओ) विष्णु की आसन मूर्तियाँ जिनके प्राप्ति-स्थान निम्नलिखित हैं—

(१) लक्ष्मण मन्दिर
(२) खजुराहो संग्रहालय
(३) ब्रह्मा मन्दिर
(४) वामन मन्दिर
(५) विश्वनाथ मन्दिर
(६) कन्दरिया मन्दिर
(७) प्रतापेश्वर मन्दिर
(८) दूलादेव मन्दिर
(९) चतुर्भुज मन्दिर
(१०) जवारी मन्दिर
(११) महादेव मन्दिर
(१२) जगदम्बी मन्दिर
(१३) पार्वती मन्दिर

ख० दे० प्र० पृ० १५२, क्रमांक ८७-१२४; वही, पृ० ५७-१४६।

(औ) विष्णु की शयन-मूर्तियाँ जिनके प्राप्ति-स्थान निम्नलिखित हैं—

(१) खजुराहो संग्रहालय
(२) धुबेला संग्रहालय
(३) लक्ष्मण मन्दिर
(४) ब्रह्मा मन्दिर
(५) वामन मन्दिर
(६) विश्वनाथ मन्दिर
(७) प्रतापेश्वर मन्दिर
(८) कन्दरिया मन्दिर
(९) दूलादेव मन्दिर
(१०) चतुर्भुज मन्दिर
(११) जवारी मन्दिर
(१२) महादेव मन्दिर

(क) विष्णु की दशावतार-मूर्तियाँ जिनके प्राप्ति-स्थान निम्नलिखित हैं—

(१) लक्ष्मण मन्दिर
(२) वराह मन्दिर
(३) जगदम्बी मन्दिर
(४) चित्रगुप्त मन्दिर
(५) खजुराहो संग्रहालय
(६) वामन मन्दिर
(७) जवारी मन्दिर
(८) विश्वनाथ मन्दिर
(९) कन्दरिया मन्दिर
(१०) चित्रगुप्त मन्दिर
(११) पार्श्वनाथ मन्दिर
(१२) हनुमान मन्दिर

ख० दे० प्र० पृ० १५४-५६, क्रमांक १२९-२०३; वही, पृ० ५७-१४९ ।

(ख) विष्णु के अन्य अवतार एवं रूप की प्रतिमाएँ जिनके प्राप्ति-स्थान निम्नलिखित हैं—

(१) खजुराहो संग्रहालय
(२) लक्ष्मण मन्दिर
(३) कन्दरिया मन्दिर
(४) विश्वनाथ मन्दिर
(५) पार्श्वनाथ मन्दिर
(६) चित्रगुप्त मन्दिर
(७) जगदम्बी मन्दिर

(८) वामन मन्दिर
(६) कन्दरिया मन्दिर
(१०) जवारी मन्दिर
(११) दूलादेव मन्दिर

ख० दे० प्र० पृ० १५६-१५७, क्रमांक २०४-२४७; वही, पृ० ५७-१४६।

(ग) गरुड एवं आयुध-पुरुष की प्रतिमाएँ जिनके प्राप्ति-स्थान निम्नलिखित हैं—

(१) खजुराहो संग्रहालय
(२) लक्ष्मण मन्दिर
(३) पार्श्वनाथ मन्दिर
(४) विश्वनाथ मन्दिर

ख० दे० प्र० पृ० १५७-१५८, क्रमांक २४८-२७१; वही, पृ० ५७-१४६।

१३४३. **खमरिया-बाकल (जबलपुर,**

कलचुरि कालीन विष्णु-प्रतिमा। **आ० क० त्रि० पृ० १४।**

१३४४. **खड़ावदा (मन्दसौर)**

प्राचीन वैष्णव मन्दिर जो चतुर्भुज मन्दिर कहलाता है। **हे० म० इ०।**

१३४५. **खोह (पन्ना)**

दुर्लभ वाराह-प्रतिमा। **प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १६२०, चित्र २६।**

१३४६. **ग्यारसपुर (विदिशा)**

(अ) गाँव के दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित वैष्णव-मन्दिर, जिसे बज्रमठ कहा जाता है। यह लगभग ६वीं शताब्दी ईसवी का है। इसमें तीन देवगृह हैं, जिसमें मूल रूप में शिव, विष्णु तथा सूर्य की प्रतिमाएँ स्थापित की गई थीं। अब इनमें जैन-प्रतिमाएँ स्थापित हैं। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० ६०-६३; वही, भाग १०, पृ० ३१-३४; आ० ग्वा० पृ० ६१-६२।**

(आ) गाँव के पूर्व की ओर स्थित लगभग ६वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी का वैष्णव-मन्दिर जिसका केवल तोरण छोड़कर अन्य भाग भग्नावशेष के रूप में प्राप्त है। तोरण पर उत्कृष्ट आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं तथा इसे हिंडोला-तोरण कहा जाता है। भग्नावशेषों से प्राप्त दो अभिलेखों पर चामुण्डराज तथा महेन्द्रपालदेव का उल्लेख है। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० ६०-६३; वही, भाग १०, पृ० ३१-३४; आ० ग्वा० पृ० ६४-६५; ग्वा० पु० रि० १६३२-३३, पृ० २०।**

१३४७. **ग्वालियर दुर्ग (ग्वालियर)**

(अ) तेली का मन्दिर, जो दक्षिण भारतीय शैली में बना लगभग ८वीं-१०वीं शताब्दी

ईसवी का है। इसके द्वार पर गंगा तथा यमुना की दुर्लभ प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३५७; आ० ग्वा०।

(आ) शैलकृत्त वैष्णव मन्दिर जो चतुर्भुज मन्दिर कहलाता है। इसमें वि० सं० ९३२ तथा ९३३ के लेख उत्कीर्ण हैं। प्रथम लेख में इस मन्दिर का निर्माण प्रतिहार-शासक आदिवाराह भोजदेव के शासनकाल में ऊल्ल द्वारा किये जाने का उल्लेख है। द्वितीय लेख में एक अन्य मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३५६; ए० इ० भाग १, पृ० १५६।

(इ) सास-बहू का बड़ा मन्दिर जिसमें वि० सं० ११५० का शिलालेख उत्कीर्ण है। शिलालेख में कच्छपघात् शासकों की वंशावली दी है तथा महिपाल द्वारा इस मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३५७; आ० ग्वा० पृ० ८०।

(ई) सास-बहू का छोटा मन्दिर जिसकी बनावट बड़े मन्दिर के समान है। वही।

१३४८. गुड़ार (शिवपुरी)

(अ) वैष्णव-मन्दिर के भग्नावशेष, जिसमें विशालकाय विष्णु-प्रतिमा स्थापित है। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० २४।

(आ) हनुमान-खो में स्थित हनुमान की तथा अन्य प्राचीन वैष्णव प्रतिमाएँ। वही।

(इ) विशालकाय देवी की प्रतिमा। वही, पृ० २३।

१३४९. गुरह (रीवा)

स्थानीय स्कूल के भवन में संरक्षित वैष्णव-प्रतिमाएँ। आ० क० त्रि० पृ० २०।

१३५०. गोपालपुर (रीवा)

शेषशायी विष्णु-प्रतिमा जिसके पृष्ठ भाग पर उत्कीर्ण कलचुरि शासक युवराजदेव प्रथम के शासन काल का लेख है। क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० १८५।

१३५१. घुसई (मन्दसौर)

प्राचीन वैष्णव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

१३५२. छपरी (दुर्ग)

गोंडकालीन विष्णु-मन्दिर, जिसे बोरमदेव का मन्दिर कहते हैं। इसमें रखे विशालकाय मूर्ति पर चार लेख उत्कीर्ण हैं। एक लेख में राणक गोपालदेव तथा कलचुरि संवत् ८४० का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ३४; मिराशी—क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५८०; हीरालाल सूची, पृ० १७४।

१३५३. जांजगीर (बिलासपुर)

(अ) लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी का अपूर्ण विष्णु-मन्दिर। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २०९-११; क० लि० ए० रि० पृ० ६०।

(आ) लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के दो वैष्णव-मन्दिर। **वही**, पृ० २०४-२०६; **प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १६०४, पृ० २६।**

(इ) वैष्णव-प्रतिमाएँ। वही, **पृ०** २०४-५।

१३५४. **जीरण (मन्दसौर)**

चतुर्भुज विष्णु, लक्ष्मी-नारायण तथा नरसिंह की प्रतिमाएँ। **इ०आ० रि० (सा० रि०) १६६५-६६, पृ० ४-५।**

१३५५. **टिमरनी (होशंगाबाद)**

लक्ष्मी-नारायण की मूर्ति, जिस पर वि० सं० १२०३ का लेख उत्कीर्ण है। **हीरालाल सूची, क्रमांक १३०।**

१३५६. **टोंगरा (शिवपुरी)**

(अ) लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी के चार वैष्णव-मन्दिर जिनकी बनावट स्थानीय सूर्य-मन्दिर के समान है। **ग्वा० पु० रि० १६२८-२६, पृ० ११-१२।**

(आ) नृसिंह प्रतिमा, जिस पर वि० सं० १०८२ का लेख उत्कीर्ण है जिसमें हरि के मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १६८५, क्रमांक ६०।**

१३५७. **डोंगर (बस्तर)**

विष्णु की तथा अन्य देवों की प्रतिमाएँ। **इ० आ० रि० १६६८-६६।**

१३५८. **तालापानी (सरगुजा)**

वैष्णव-प्रतिमाएँ। **क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ६३।**

१३५६ **तिगवाँ (जबलपुर)**

गुप्तकालीन मन्दिर में रखी नृसिंहावतार प्रतिमा तथा अन्य वैष्णव प्रतिमाएँ। **ज० डि० ग० पृ० ६६८।**

१३६०. **तुरतुरिया (रायपुर)**

वैष्णव-प्रतिमाएँ। **क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० १४८-५२; ख० वै० पृ० २६८-६६।**

१३६१. **तेवर (जबलपुर)**

तेवर ग्राम में संरक्षित निम्नलिखित वैष्णव-प्रतिमाएँ :—

(अ) बालसागर के तट पर स्थित मन्दिर में संग्रहीत गरुड सहित लक्ष्मी-नारायण प्रतिमा। **ना० सू०।**

(आ) बालसागर के सम्मुख दो वृक्षों के नीचे संग्रहीत चतुर्भुज विष्णु की छोटी प्रतिमा। **वही।**

(इ) प्राचीन बावड़ी के निकट संग्रहीत प्रतिमाओं में रखी दशावतारी विष्णु-प्रतिमा का खण्ड (ते-७०)। **वही।**

(ई) त्रिपुरेश्वर मन्दिर के भग्नावशेषों में पीपल-वृक्ष के नीचे रखी नरसिंह-प्रतिमा (ते-१२०)। **वही।**

(उ) चतुर्भुज-विष्णु प्रतिमा। **इ० आ० रि० (सा० रि) १९६५-६६, पृ० ४-४।**

(ऊ) खैरमाई (बड़ी) के स्थान पर ध्यानी-विष्णु प्रतिमा। **ख० वैं० पृ० ३२०, चित्र पृ० ४३६।**

१३६२. थोबन (गुना)

एक प्राचीन विष्णु-मन्दिर के भग्नावशेष। **ग्वा० पु० रि० १९१४-१५।**

१३६३. दुधिया (रीवा)

(अ) कलचुरि कालीन विष्णु-प्रतिमा। **है० त्रि० मा० पृ० १०८, चित्र ५०-अ।**

(आ) कलचुरि कालीन केशवनारायण के मन्दिर में एक विष्णु-प्रतिमा। **है० त्रि० मा० पृ० १०८, चित्र ४९-ब।**

१३६४. देवकानी (गुना)

गढ़ी के निकट लगभग १२वीं-१३वीं शताब्दी ईसवी के वैष्णव-मन्दिर के भग्नावशेष। **ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० ९।**

१३६५. देव-बलोदा (दुर्ग)

(अ) शिवमन्दिर की दीवार में लगी विष्णु की वराह-अवतार प्रतिमा, जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। **ना० सू०।**

(आ) उक्त मन्दिर की दीवार में लगी विष्णु की नरसिंहावतार की समकालीन प्रतिमा। **वही।**

१३६६. देवरी (सागर)

मध्यकालीन वैष्णव-प्रतिमा। **इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ७०।**

१३६७. देवला (धार)

नरसिंह का प्राचीन मन्दिर। **ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।**

१३६८. धरमपुरी (धार)

विष्णु, नरसिंह तथा बलराम (?) की विशाल प्रतिमाएँ। **म० भा० पु० रि० १९४९-५०।**

१३६९. धरहर (शहडोल)

कलचुरि कालीन लक्ष्मी का मन्दिर। **आ० क० त्रि० पृ० २४०-४१।**

१३७०. धुंडेरी (उज्जैन)

प्राचीन वैष्णव-मन्दिर । **इ० स्टे० ग० पृ० २२ ।**

१३७१. नचना (पन्ना)

(अ) गुप्त तथा कलचुरि-चन्देल कालीन वैष्णव-प्रतिमाएँ । **इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६९ ।**

(आ) गुप्तकालीन लगभग आधी दर्जन नामिकाएँ जिन पर रामायण के दृश्य उत्कीर्ण हैं । **इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१ ।**

१३७२. नड़ेरी (गुना)

जैन मन्दिर में लगी विष्णु की वामन तथा राम-अवतारों की प्रतिमाएँ । **ग्वा० पु० रि० १९२४-२५, पृ० २५ ।**

१३७३. नरसिंहा (बालाघाट)

नरसिंह का प्राचीन मन्दिर । **क० लि० ए० रि० पृ० २६ ।**

१३७४. नारायनपाल (बस्तर)

कलचुरि कालीन वैष्णव (? शैव) मन्दिर । **हि० क० ब० पृ० ७३८-४१ ।**

१३७५. निमथूर (मन्दसौर)

(अ) लक्ष्मी-नारायण का प्राचीन मन्दिर, जिसमें शिलालेख है । **ग्वा० पु० रि० १९१७-१८ ।**

(आ) उक्त मन्दिर के सम्मुख बावड़ी जिसमें वाराह, त्रिमूर्ति आदि की प्रतिमाएँ लगी हैं । **वही ।**

१३७६. पठारी (विदिशा)

(अ) प्रस्तर-स्तम्भ जिस पर उत्कीर्ण वि० सं० ९१७ के लेख में राष्ट्रकूट परबल द्वारा शौरि (विष्णु अथवा कृष्ण) के मन्दिर के सम्मुख गरुडध्वज के निर्माण का उल्लेख है । **क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ७०; ज० ए० सो० ब० भाग १७, खण्ड १, पृ० ३०५; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग १०, पृ० ७०; ए० इ० भाग ९, पृ० २५२ तथा चित्र; इ० ए० भाग ४०, पृ० २३९; ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, क्रमांक ७; भण्डारकर सूची, क्रमांक २९ ।**

(आ) गाँव के पूर्व की ओर स्थित वाराह की विशाल अपूर्ण प्रतिमा । **ग्वा० पु० रि० १९२३-२४, पृ० १० ।**

१३७७. पढ़ावली (मोरेना)

(अ) बटेश्वर घाटी में लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के विष्णु-मन्दिर के भग्नावशेष । **ग्वा० पु० रि० १९१५-१६ ।**

(आ) बटेश्वर घाटी में लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के दो विष्णु-मन्दिर के समूह के भग्नावशेष । वही ।

(इ) बटेश्वर घाटी में भगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के विष्णु-मन्दिर के भग्नावशेष, जिसमें त्रिमूर्ति स्थापित है । वही ।

१३७८. पनागर (जबलपुर)

(अ) अनेक वैष्णव प्रतिमाएँ । ख० वै० पृ० ३२७, ३६६ ।

(आ) लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की तीन विष्णु प्रतिमाएँ । वही, पृ० ३६६ ।

(इ) वाराह की एक विशाल प्रतिमा । म० पु० रू० पृ० ८३ ।

१३७९. पनिहार (ग्वालियर)

एक प्राचीन वैष्णव-मन्दिर । ग्वा० पु० रि० १९३३-३४, पृ० १३ ।

१३८०. परैनी (रीवा)

कलचुरि कालीन एक वैष्णव-मन्दिर के भग्नावशेष तथा वराह-प्रतिमा । क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १५८ ।

१३८१. पलनागर (देवास)

लगभग १३वीं-१४वीं शताब्दी ईसवी के वैष्णव-मन्दिर जिसमें प्राचीन मूर्तियाँ रखी हैं । म० भा० पु० रि० १९४९-५० ।

१३८२. पवाया (ग्वालियर)

उत्खनन में प्राप्त लगभग ३री-५वीं शताब्दी ईसवी के वैष्णव-मदिर के भग्नावशेष । ग्वा० पु० रि० १९४०-४१, पृ० १७-२० । पवाया को आधुनिक विद्वानगण प्राचीन पद्मावती मानते हैं, जो नागों की एक राजधानी थी । देखिये-गर्दे—'पद्मावती' (ग्वालियर, १९५२); ह० नि० द्विवेदी—'मध्यभारत का इतिहास' पृ० ६००; म० प्र० डिस्ट्रिक्ट गजेटियर—ग्वालियर (भोपाल, १९६५), पृ० ३७३-७४; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९१५-१६, पृ० १०१-१०९ चित्र ५५-५८ ।

१३८३. पानविहार (उज्जैन)

(अ) शेषशायी विष्णु की तथां अन्य प्रतिमाएँ जो द्वार में लगी हैं । ग्वा० पु० रि० १९१७-१८ ।

(आ) एक प्राचीन वैष्णव-मन्दिर । वही ।

१३८४. पारगढ़ (शिवपुरी)

शेषशायी विष्णु की शैलकृत्त-प्रतिमा जिस पर वि० सं० १३०० का लेख उत्कीर्ण है । ग्वा० पु० रि० १९१५-१६ ।

१३८५. पिपलोदा (धार)

नर्मदा में प्राप्त शैलकृत्त वैष्णव-प्रतिमाएँ । इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ७२ ।

१३८६. पिपरिया (सतना)

सागर विश्वविद्यालय द्वारा गुप्तकालीन मन्दिर के निकट किये गये उत्खनन में प्राप्त वैष्णव प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० १९६८-६९।

१३८७. पीपलरावन (उज्जैन)

दो प्राचीन वैष्णव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१७-१८।

१३८८. पेपरोल (सरगुजा)

एक प्राचीन वष्णव-मन्दिर। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ६४-६५।

१३८९. बबई (नरसिंहपुर)

प्राचीन किले में रखी चतुर्भुज विष्णु-प्रतिमा। नरसिंहपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०६), पृ० २०५।

१३९०. बडोह (विदिशा)

लगभग ९वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी के वैष्णव-मन्दिर के समूह के भग्नावशेष। आ० ग्वा० पृ० ५७-५९।

१३९१. बड़ा-कलाँ (भिण्ड)

ईंटों का बना प्राचीन वैष्णव-मन्दिर के भग्नावशेष जो लगभग ७वीं-८वीं शताब्दी ईसवी का है। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ८।

१३९२. बढेर (विदिशा)

लगभग ९वीं-१२वी शताब्दी ईसवी के दो वैष्णव-मन्दिरों के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९४०-४१, पृ० २३।

१३९३. बमोरा (सागर)

प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष, जिसमें वराह की प्रतिमा उपलब्ध है। सा० डि० ग० पृ० ५२२।

१३९४. बरमानघाट (नरसिंहपुर)

राम-लक्ष्मण मन्दिर। नरसिंहपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०६) पृ० २०८।

१३९५. बरहटा (होशंगाबाद)

विष्णु की दुर्लभ प्रतिमा, जिसमें भगवान् विष्णु का मस्तक खुला है तथा जिन मूर्तियों के समान वे घुँघराले केशयुक्त हैं। शु० अ० ग्र० पृ० २१२।

१३९६. बलारपुर (शिवपुरी)

एक प्राचीन वैष्णव-मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९१८-१९।

१३९७. बहुरीबन्द (जबलपुर)

चतुर्भुज विष्णु, शेषशायी नारायण तथा नरसिंह की गुप्तकालीन शैलकृत्त प्रतिमाए

जो उदयगिरि (विदिशा) की प्रतिमाओं से मिलती-जुलती हैं। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८।

१३९८. बान्धोगढ़ (रीवा)

(अ) स्थानीय दुर्ग में प्राचीन वैष्णव-मन्दिर जिसमें कलचुरि शासक युवराजदेव प्रथम का लेख उत्कीर्ण है। क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० १८२।

(आ) आदिवराह की विशालकाय मूर्ति जिसके पश्चिम की ओर कलचुरि शासक युवराज-देव प्रथम के शासन काल का लेख उत्कीर्ण है। क० इ० इ० भाग ४, पृ० १८३।

१३९९. बारो अथवा बरनगर (विदिशा)

आठ छोटे वैष्णव-मन्दिरों का समूह। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ७४-७५।

१४००. बिलहरी (जबलपुर)

(अ) कलचुरि कालीन लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी का विष्णु-वाराह का मन्दिर। क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ३५-३८; ख० वै० पृ० ३२१।

(आ) विष्णु-वाराह के मन्दिर में रखी वराह की उत्कृष्ट प्रतिमा। है० त्रि० मा० पृ० ९४, चित्र ३७-ब।

(इ) अनेक वैष्णव-प्रतिमाएँ। ख० वै० पृ० ३३८-४०।

१४०१. बिलौनी (शिवपुरी)

एक प्राचीन वैष्णव-मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९१५-१६।

१४०२. बूढ़ीखार (बिलासपुर)

लगभग दूसरी शताब्दी ईसवी की वैष्णव-प्रतिमा जिस पर उत्कीर्ण लेख में प्रजावती नामक स्त्री द्वारा दिये गये दान का उल्लेख है। म० पु० रू० पृ० ४६।

१४०३. बेसनगर (विदिशा)

(अ) हेलियोदोर का गरुड़ध्वज, जो स्थानीय खामबाबा के नाम से प्रसिद्ध है। स्तम्भ पर उत्कीर्ण ब्राह्मी लेख से ज्ञात होता है कि इसे भागभद्र के शासन काल में यवन शासक अन्तलिकित के राजदूत हेलियोदोर द्वारा स्थापित किया गया था। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ४१-४३; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग ८, पृ० १२७; वही, भाग १३, पृ० १८६; वही, भाग २३, पृ० ९९; वही, भाग २४, पृ० १२८; ज० र० ए० सो० १९०९, पृ० १०५३; इ० हि० क्वा० भाग ८, पृ० ६१०; ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७४, क्रमांक ६६; जर्नल ऑफ ओरियण्टल रिसर्च, मद्रास, भाग १५ (१९४५-४६), पृ० १३५-३७।

(आ) खामबाबा के निकट से प्राप्त खण्डित विष्णु-प्रतिमा। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९१५-१६, पृ० १९५-१९६; म० भा० इ० पृ० ६२३।

(इ) किसी स्तम्भशीर्ष के दो खण्ड, जिनमें एक मकर है। म० भा० इ० पृ० ६२४-२५।

(ई) गरुड की मूर्तियुक्त एक स्तम्भ की चौकी। वही।

१४०४. भिलसा (विदिशा)

वैष्णव प्रतिमा जिस पर उत्कीर्ण वि० सं० १२४२ के लेख में विष्णु-मूर्ति निर्माण का उल्लेख है।

१४०५. भीटा (जबलपुर)

(अ) कलचुरि कला शैली की लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की प्रतिमा। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

(आ) वाराह की विशाल प्रतिमा। वही।

१४०६. भेड़ाघाट (जबलपुर)

चौंसठ योगिनी के गौरी-शंकर मन्दिर में विष्णु-लक्ष्मी प्रतिमा। है० त्रि० मा० पृ० ९१।

१४०७. मझोली (जबलपुर)

(अ) वाराह-प्रतिमा। क आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ४८।

(आ) अन्य वैष्णव-मन्दिरों के भग्नावशेष। क० ल० ए० रि० पृ० २९।

१४०८. मदनखेड़ी (गुना)

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का विष्णु-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१८-१९।

१४०९. मदनपुर (सागर)

विशालकाय वाराह-प्रतिमा तथा दो सती-प्रस्तर, जिन पर लेख उत्कीर्ण हैं। क० लि० ए० रि० पृ० ३५।

१४१०. मरई (रीवा)

कलचुरि कालीन शेषशायी विष्णु-प्रतिमा। है० त्रि० मा० पृ० ९४, चित्र ४५-ब।

१४११. मल्लार (बिलासपुर)

(अ) एक दुर्लभ विष्णु-प्रतिमा, जिस पर लगभग दूसरी शताब्दी ई० पू० का लेख उत्कीर्ण है। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ५९।

(आ) पातालेश्वर मन्दिर के निकट एक घर में संग्रहीत विष्णु, केशव, माधव दामोदर तथा गोविन्द की प्रतिमाएँ जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की हैं। ना० सू०।

१४१२. **महिदपुर (उज्जैन)**
चतुर्भुज विष्णु का मन्दिर, जिसमें वि० सं० १३४४ का शिलालेख है। हे० म० इ०।

१४१३. **माकुंदपुर (रीवा)**
कलचुरि कालीन मन्दिर के भग्नावशेष जो सम्भवतः वैष्णव-मन्दिर रहा होगा। इसमें गांगेयदेव के शासन काल का कलचुरि सम्वत् ७७२ का शिलालेख प्राप्त हुआ था। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ४-५।

१४१४. **मान्धाता (पूर्व निमाड़)**
चौबीस-अवतारों का वैष्णव मन्दिर, जिसमें विष्णु के अवतारों की खण्डित प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं। इ० नि० ग० पृ० ४७१।

१४१५. **मितावली (मोरेना)**
महादेव-मन्दिर के पूर्व में पहाड़ी पर स्थित लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का वैष्णव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१८-१९; वही, १९४२-४६, पृ० ६७।

१४१६. **मैहर (सतना)**
पहाड़ी पर नरसिंह प्रतिमा। है० त्रि० मा० पृ० ७७-७८।

१४१७. **मोहनपुर (गुना)**
लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का नृसिंह-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९२४-२५, पृ० १३।

१४१८. **मोहेन्द्रा (पन्ना)**
एक मध्यकालीन मन्दिर, जिसमें दुर्लभ प्रतिमाएँ हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१, चित्र ७३-अ।

१४१९. **राजिम (रायपुर)**

(अ) राजीव-लोचन का विष्णु-मन्दिर जो लगभग ५वीं शताब्दी ईसवी का है। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ९-१२; वही, भाग ७, पृ० १५१-५३; क० लि० ए० रि० पृ० ५३; ख० वैं० पृ० ३५७।

(आ) राजीव-लोचन मन्दिर के पूर्व में स्थित जगन्नाथ का मन्दिर जिसमें विष्णु को जगन्नाथ के रूप में पूजा जाता है। वही।

(इ) रामचन्द्र का मन्दिर जिसमें लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी का यात्री-लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० १४; क० लि० ए० रि० पृ० ५४।

१४२०. रामगढ़ पहाड़ी (सरगुजा)
वैष्णव-मन्दिर के भग्नावशेष । क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ३६-३७ ।

१४२१. रीठी (जबलपुर)
बाराह की प्राचीन प्रतिमा । ज० डि० ग० पृ० ६६० ।

१४२२. रीवा (रीवा)
(अ) स्थानीय दुर्ग में कलचुरि कालीन शेषशायी नारायण की प्रतिमा । आ० क० त्रि० पृ० २१५ ।
(आ) लोकपाल विष्णु की कलचुरि कालीन प्रतिमा । वही, पृ० २१८ ।
(इ) एक विष्णु-प्रतिमा । क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १४४ ।

१४२३. रेहली (सागर)
मध्यकालीन वैष्णव-प्रतिमाएँ । इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ७० ।

१४२४. विदिशा (विदिशा)
(अ) शेषशायी प्रतिमा जिस पर गौडान्वय श्री लाभदेव का लेख उत्कीर्ण है । ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८६, क्रमांक ३ ।
(आ) गुप्तकालीन एक विष्णु-प्रतिमा का मस्तक तथा सुर-सुन्दरी की अपूर्ण प्रतिमा । इ० आ० रि० १९६२-६३ पृ० ६९ ।
(इ) हेलियोदोर स्तम्भ के निकट टीले से प्राप्त हरिहर की प्रतिमा । इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० ४-५ ।

१४२५. शम्साबाद (विदिशा)
मध्यकालीन वैष्णव-प्रतिमाएँ । इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ७१ ।

१४२६. शिवरीनारायण (बिलासपुर)
(अ) लगभग ९वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी का नारायण का ईंटों का बना मन्दिर जिसकी बनावट गोलाकार है । क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १९९-२०१; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९०४, पृ० ३०-३१; क० लि० ए० रि० पृ० ६२ ।
(आ) नारायण मन्दिर में विष्णु की द्विभुजी स्थानक प्रतिमा, जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है । ना० सू० ।

१४२७. श्योपुर (मन्दसौर)
लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी की विष्णु-प्रतिमा । इ० आ० रि० १९५४-५५, पृ० ६२ ।

१४२८. **सकरी (गुना)**

लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी में बने मन्दिर की दीवार पर लगी वैष्णव प्रतिमाएँ। ग्वा० पु० रि० १९२७-२८, पृ० १०।

१४२९. **सतनवाड़ा (शिवपुरी)**

गाँव के पूर्व की ओर स्थित लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी में बने वैष्णव-मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२३-२४, पृ० १४।

१४३०. **सन्धारा (मन्दसौर)**

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी का चतुर्भुज विष्णु-मन्दिर। इ० स्टे० ग० पृ० ६०।

१४३१. **सिंहपुर (शहडोल)**

(अ) कलचुरि कालीन विष्णु-मन्दिर का तोरण। आ० क० त्रि० पृ० २४२।

(आ) वासुदेव-विष्णु की प्रतिमा जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० २१६।

(इ) गरुड की कलचुरि कालीन प्रतिमा। आ० क० त्रि० पृ० २२४।

१४३२. **सिन्दुरसी (जबलपुर)**

बहुरीबन्द विश्राम-गृह के निकट स्थित पहाड़ी में शैलकृत्त अनन्तशायी विष्णु, महिषासुर-मर्दिनी, विष्णु तथा नरसिंह की प्रतिमाएँ जो लगभग गुप्त कालीन हैं। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६०।

१४३३. **सिरपुर (रायपुर)**

(अ) ईंटों का बना लक्ष्मण-मन्दिर जो लगभग ६ठी शताब्दी ईसवी का है। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १८६-९२; वही, भाग १७, पृ० २७; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९०४, पृ० २०-२३; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९०९-१०, पृ० ११-१८, चित्र १-३; क० लि० ए० रि० पृ० ५५; ख० वें० पृ० २५३-५५; ज० म० प्र० इ० प० भाग २, पृ० ३५-४२।

(आ) दो अन्य ईंटों के बने मन्दिर। वही।

(इ) लगभग ५वीं-६ठी शताब्दी ईसवी के वैष्णव-मन्दिर के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १७४।

(ई) उक्त मन्दिर के निकट स्थित एक समकालीन वैष्णव (?) मन्दिर। वही।

(उ) एक बड़े वैष्णव-मन्दिर के भग्नावशेष। वही, पृ० १७५।

(ऊ) एक अन्य वैष्णव-मन्दिर के भग्नावशेष। वही, पृ० १७९।

(ए) एक वैष्णव-मन्दिर के भग्नावशेष। वही, पृ० १८०।

(ऐ) टीले के रूप में स्थित एक विशाल विष्णु-मन्दिर में भग्नावशेष जो 'सुरंग' कहलाता है। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १८२-८५; वही, भाग १७, पृ० २९-३०।

(ओ) एक मन्दिर के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ०, १७४।

(औ) उक्त मन्दिर के निकट एक अन्य मन्दिर के भग्नावशेष। वही।

(क) एक छोटे मन्दिर के भग्नावशेष। वही, पृ० १७७।

(ख) राम का मन्दिर। वही, पृ० १८५-८६; ख० वै० पृ० २५५।

१४३४. **सिलचट (रीवा)**

कलचुरि कालीन नरसिंह की प्रतिमा। आ० क० त्रि० पृ० २१८-१९।

१४३५. **सुनारी (विदिशा)**

एक प्राचीन विष्णु-मन्दिर के भग्नावशेष जिसमें विष्णु के बुद्ध अवतार तथा लक्ष्मी-नारायण की प्रतिमा प्राप्त हुई। ग्वा० पु० रि० १९२३-२४, पृ० ८।

१४३६. **सुवासरा (मन्दसौर)**

पूर्व-मध्यकालीन वैष्णव-प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० ४-५।

१४३७. **सुहानिया (मोरेना)**

लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का वैष्णव-मन्दिर। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ४०१; ग्वा० पु० रि० १९१४-२३।

१४३८. **सोहागपुर (शहडोल)**

(अ) दो वैष्णव-मदिरों के समूह के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २४४।

(आ) नाले के तट पर स्थित दो वैष्णव-मन्दिर के समूहों के भग्नावशेष। वही।

(इ) ठाकुर के महल में संरक्षित कलचुरि कालीन विष्णु, शेष पर लेटे नारायण तथा गरुड की प्रतिमाएँ। है० त्रि० मा० पृ० ९९-१००, चित्र ४०-ब, ४२-अ तथा ४०-अ।

(ई) शेषशायी नारायण की प्रतिमा, जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० २१५।

(उ) कलचुरि कालीन वासुदेव विष्णु की प्रतिमा। वही, पृ० २१७-१८।

(ऊ) गरुड की कलचुरि कालीन प्रतिमा। आ० क० त्रि० पृ० २२४।

१४३९. **होशंगाबाद (होशंगाबाद)**

मध्यकालीन वैष्णव प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० ४-२।

ई—शैव स्मारक तथा प्रतिमाएँ

१४४०. अंघोरा (गुना)

(अ) लगभग ९वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी का शैव मन्दिर जिसमें मूलरूप में महिष-मर्दिनी की प्रतिमा स्थापित थी। इसमें वि० सं० ११५७ का शिलालेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९२७-२८, पृ० ९।

(आ) गाँव के उत्तर-पश्चिम की ओर दो मील की दूरी पर जंगल में प्राचीन शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९२७-२८, पृ० २६।

१४४१. अचाना (धार)

प्राचीन शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

१४४२. अडभार (बिलासपुर)

(अ) कलचुरि कालीन शैव-मन्दिर। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० १४५; क० लि० ए० रि० पृ० ६३; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९०४, पृ० ३२-३३।

(आ) खण्डित देवालय के चबूतरे पर रखी उमा-महेश्वर की प्रतिमा जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। ना० सू०।

१४४३. अन्तरा (शहडोल)

(अ) शिव की दो भिक्षाटन प्रतिमाएँ जो कलचुरि कालीन हैं। आ० क० त्रि० पृ० १८५।

(आ) एक दुर्लभ शिव प्रतिमा जो कलचुरि कालीन है। वही, पृ० १८६।

१४४४. अफजलपुर (मन्दसौर)

एक प्राचीन शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१४-२२।

१४४५. अमझेरा (धार)

प्राचीन शैव मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

१४४६. अमरकण्टक (शहडोल)

(अ) एक विशाल शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २३१; क० लि० ए० रि० पृ० ५८; है० त्रि० मा० पृ० ५७।

(आ) उक्त मन्दिर से मिलता-जुलता एक अन्य शैव-मन्दिर। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २३२।

(इ) 'करन-मन्दिर' जो कलचुरि शासक कर्ण द्वारा बनवाया गया था। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २२७-२९; क० लि० ए० रि० पृ० ५७; है० त्रि० मा० पृ० ५४-५७, चित्र १३।

(ई) 'करन-मन्दिर' के निकट स्थित तीन छोटे शैव-मन्दिर। क० आ० स० रि० भाग ७, पृ० २३०; क० लि० ए० रि० पृ० ५७; है० त्रि० मा० पृ० ५७।

(उ) कलचुरि शासन कालीन 'मच्छेन्द्रनाथ-मन्दिर'। है० त्रि० मा० पृ० ५८, चित्र १६-ब।

(ऊ) कलचुरि शासन कालीन 'पातालेश्वर-मन्दिर'। है० त्रि० मा० पृ० ५९-६०, चित्र १६-अ।

(ए) गुप्तकालीन कार्तिकेय की प्रतिमा। इ० आ० रि० १९६८-६९।

१४४७. अमरपाटन (रीवा)
कलचुरि कालीन नृत्य-गणपति की प्रतिमा। है० त्रि० मा० पृ० ९४-९५, चित्र ४७-ब।

१४४८. अमरोल (ग्वालियर)

(अ) 'रामेश्वर-महादेव' का मन्दिर जो लगभग ७वीं-८वीं शताब्दी ईसवी का है। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७, पृ० १३।

(आ) 'गणेश-पहाड़ी' नामक टीला जो लगभग ९वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेषों से बना है। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० १३।

(इ) 'धाने-बाबा-की-मढ़ी' नामक शैव-मन्दिर जो लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का है। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७, पृ० १३।

(ई) 'माता-की-मढ़ी' नामक शैव-मन्दिर जो लगभग ११वीं १२वीं शताब्दी ईसवी का है। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० १३।

१४४९. अमलेढा (मोरेना)
लगभग ११वी-१२वीं (?) शताब्दी ईसवी के शैव-मन्दिरों के भग्नावशेष। इनमें से एक मन्दिर भूमि में आधा गड़ा है तथा अन्य अपेक्षाकृत सुरक्षित हैं। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ३०-३१।

१४५०. आरंग (रायपुर)
'बाघ देवल' नामक शैव-मन्दिर जो लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का है। सम्भवतः मूल रूप में यह जैन-मन्दिर रहा होगा। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १६२-६४।

१४५१. आमुखेड़ी (धार)
प्राचीन शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९२०-२१।

१४५२. इन्दौर (गुना)
लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी का तारिकाकार शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९३६-३८, पृ० ९।

४०

१४५३. उज्जैन (उज्जैन)

(अ) महाकालेश्वर का मन्दिर जिसे १२३५ ई० में अल्तमश द्वारा खण्डित किया गया था। आधुनिक मन्दिर का निर्माण पेशवा के दीवान रामचन्द्र द्वारा १७४५ ई० में किया गया था। ग्वालियर गजेटियर (१६०८-६) पृ० ३००।

(आ) 'पुष्पदन्तेश्वर महादेव' का प्राचीन मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १६२६-२७, पृ० १७।

(इ) 'रूपेश्वर महादेव' का प्राचीन मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १६२६-२७, पृ० १७।

(ई) 'किलकिलेश्वर महादेव का प्राचीन मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १६२२-२३, पृ० १७।

(उ) महाकालेश्वर मन्दिर से मिलता-जुलता एक प्राचीन शैव-मन्दिर। इ० आ० रि० १६६७-६८, पृ० ६७।

१४५४. उदयगिरि (विदिशा)

(अ) लगभग ४थी शताब्दी ईसवी में बनी तीन (क्रमांक २, ३, ४) शैलकृत्त गुफाएँ। गुफा क्रमांक २ में स्कन्द की शैलकृत्त प्रतिमा तथा गुफा क्रमांक ४ में मुखलिंग, द्वारपाल विष्णु, गणेश तथा सप्तमातृकाओं की शैलकृत्त प्रतिमाएँ हैं। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ५२; म० उ० हि०।

(आ) गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल में वीरसेन द्वारा बनायी गयी शैलकृत्त गुफा जिसमें द्वारपाल, विष्णु, गणेश तथा सप्तमातृकाओं की प्रतिमाएँ हैं। क० आ स० इ० रि० भाग १०, पृ० ४६-५०; म० उ० हि०।

(इ) शैलकृत्त-'तवा-गुफा' (गुफा क्रमांक ७) जिसमें द्वारपाल, विष्णु आदि की प्रतिमाएं हैं। इसमें उत्कीर्ण शिलालेख में चन्द्रगुप्त द्वितीय तथा सनकानिकों का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ५१; म० उ० हि०।

(ई) शैलकृत्त 'अमृत गुफा' (गुफा क्रमांक १६) जिसके द्वार पर अमृत-मन्थन का दृश्य अंकित है। गुफा में प्राप्त लगभग ४थीं-५वीं शताब्दी ईसवी का यात्री-लेख है। का० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ५२-५३; म० उ० हि०।

१४५५. उदयपुर (विदिशा)

'नीलकण्ठेश्वर महादेव' का मन्दिर जिसमें प्राप्त अभिलेख में परमार शासक उदयादित्य द्वारा वि० सं० १११६ में मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० ८३-८८; वही भाग १०, पृ० ६८-६६; ग्वा० पु० रि० १६१७-१८; वही, १६२३-२४, पृ० ५; आ० ग्वा० पृ० १३३।

१४५६. ऊन (पश्चिम निमाड़)

(अ) 'महाकालेश्वर मन्दिर' जो लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी में परमारों के शासन काल में बनाया गया था। इ० स्टे० ग० पृ० ६८; ऐ० रि० आ० स० इ० वे०

स० १९१८-१९, पृ० १७; गांगुली दि० च०—'दी परमारज ऑफ मालवा' पृ० २६४।

(आ) 'गुप्तेश्वर महादेव' का मन्दिर जो परमारों के शासनकाल में बनाया गया था। वही।

(इ) 'बल्लालेश्वर महादेव' का मन्दिर जो परमारों के शासनकाल में बनाया गया था। वही।

(ई) 'नीलकण्ठेश्वर महादेव' का मन्दिर जो परमारों के शासनकाल में बनाया गया था। वही।

(उ) गाँव के पूर्व की ओर नाले के तट पर बने 'महाकालेश्वर मन्दिर' के भग्नावशेष जो परमार शासनकालीन हैं। वही।

१४५७. एकलबारा (धार)
'बैजनाथ महादेव' का प्राचीन मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१५-१६।

१४५८. एरण (सागर)
गुप्तकालीन लिंग जिस पर माधव तथा भानुगुप्त का सम्वत् १९१ का लेख उत्कीर्ण है। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ८९-९०।

१४५९. कंजरदा (मन्दसौर)
प्राचीन शैव-मन्दिर। हे० म० इ०।

१४६०. कर्णावद (उज्जैन)
'कर्णेश्वर महादेव' का मन्दिर जिसमें वि० सं० १२७५ का परमार शासक देवपाल के शासन काल का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९१७-१८।

१४६१. कदवाहा (गुना)

(अ) गढ़ी के निकट लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मन्दिर जिसमें उत्कीर्ण शिलालेख में जयन्तवर्मन् तथा गोपाल का उल्लेख है। आ० ग्वा० पृ० ९६; ग्वा० पु० रि० १९३९-४०, पृ० २०।

(आ) गाँव के १ मील उत्तर की ओर स्थित लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी का शैव मन्दिर जो स्थानीय 'चण्डाल मठ' कहलाता है। ग्वा० पु० रि० १९१४-२३।

(इ) नदी के तट पर स्थित १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी के शैव-मन्दिरों का समूह जो 'मुरायत' कहलाते हैं। आ० ग्वा० पृ० ९६।

(ई) गाँव के पूर्व की ओर स्थित लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी के शैव-मन्दिरों का समूह। ग्वा० पु० रि०१९१४-२३।

(उ) गाँव के उत्तर की ओर स्थित लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी के शैव-मन्दिरों का समूह। वही।

(ऊ) गाँव के पश्चिम की ओर स्थित लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी के शैव-मन्दिरों का समूह। **वही।**

(ए) गढ़ी में बना लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी का दो मंजिला शैव-मठ जो मत्तमयूर शाखा के शैवाचार्यों के लिए बनाया गया था। भग्नावशेषों से प्राप्त तीन शिलालेखों में मत्तमयूर के शैवाचार्यों की वंशावली दी है। **आ० ग्वा० पृ० ६६; ग्वा० पु० रि० १९३९-४०, पृ० १४; वही, १९४२-४३, पृ० २३।**

१४६२. **कनोदा बड़ी (दमोह)**
मध्यकालीन शिवमन्दिर जिसमें रखी प्रतिमा पर लेख उत्कीर्ण है। **हीरालाल सूची, क्रमांक १२०।**

१४६३. **कसरी-अहमदपुर (शिवपुरी)**
लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी का भग्न शैव-मन्दिर। **ग्वा० पु० रि० १९२८-२९, पृ० ११।**

१४६४. **करेरा (शिवपुरी)**
त्रिम्बकेश्वर महादेव का प्राचीन शैव-मन्दिर। **डा० फो० ग्वा० स्टे० पृ० ६६; ग्वा० पु० रि० १९२७-२८, पृ० १३।**

१४६५. **काकरशीशा (रीवा)**
लगभग बारह शैव-मन्दिरों के भग्नावशेष। **क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० १९-२०।**

१४६६. **कागपुर (विदिशा)**

(अ) गाँव के उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित लगभग ८वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी के शैव मन्दिर के भग्नावशेष। इसमें मुख्य देवालय के चारों ओर चार अथवा छः छोटे देवालय थे जिनमें से केवल दो के खण्डहर अवशेष हैं। एक में लिंग स्थापित है तथा सूर्य, गणेश तथा पार्वती की प्रतिमाएँ हैं। दूसरे में गणेश स्थापित रहा होगा। **ग्वा० पु० रि० १९३१-३२, पृ० ६।**

(आ) आधुनिक 'माता-की-मढ़ी' नामक मन्दिर में लगी शैव, वैष्णव तथा जैन प्रतिमाएँ जो लगभग ८वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी की हैं। **ग्वा० पु० रि० १९३१-३२, पृ० ६।**

१४६७. **कारीतलाई (जबलपुर)**
शिव-पार्वती की प्रतिमाएँ। **ज० डि० ग० पृ० ६८३।**

१४६८. **कारोहन (उज्जैन)**
प्राचीन शैव-मन्दिर। तीर्थयात्रियों के लिए यह मन्दिर उन ८४ मन्दिरों में से एक है जिसे उज्जयिनी की प्रदक्षिणा करने के लिए भ्रमण करना आवश्यक है।

निकट ही कूप में लगी एक वराह प्रतिमा है जो लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी की है। ग्वा० पु० रि० १९३४-३५, पृ० ११।

१४६९. कालामध (शिवपुरी)
गाँव के तीन फर्लांग उत्तर की ओर स्थित शैव-मन्दिर के भग्नावशेष जो लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी के हैं। ग्वा० पु० रि० ११२८-२९, पृ० १३।

१४७०. कुकड़ेश्वर (मन्दसौर)
लगभग १३वीं-१४वीं शताब्दी ईसवी का 'सहस्त्रमुखेश्वर मन्दिर' जिसे आधुनिक काल में सुधारा गया। इ० स्टे० ग० पृ० ३७।

१४७१. कुण्डलपुर (शिवपुरी)

(अ) दो मंजिला शैव-मठ जिसमें एक बड़े कमरे को केन्द्रित कर छोटे कमरे बने हैं। स्थानीय किंवदन्तियों के अनुसार वहाँ कृष्ण तथा रुक्मिनी का विवाह हुआ था। इसकी बनावट सुरवाया के मठ के समान है। ग्वा पु० रि० १९२२-२३।

(आ) लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के शैव-मन्दिरों के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२२-२३।

१४७२. कुण्डेश्वर (टीकमगढ़)
नन्दी-मूर्ति जिस पर वि० सं० १२०१ का लेख उत्कीर्ण है। च० जे० टा० परिशिष्ट-ब, क्रमांक ४।

१४७३. कुर्रा (रायपुर)
प्राचीन शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०९), पृ० ३०४।

१४७४. कुलवर (गुना)
शैव-मन्दिर के भग्नावशेष तथा गणेश, लिंग, विष्णु आदि की प्रतिमाएँ। ग्वा० पु० रि० १९३०-३१, पृ० ९।

१४७५. कुलान (जबलपुर)
एक दुर्लभ भैरव-प्रतिमा जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० १५, १८६।

१४७६. कूणा (मन्दसौर)
८वीं-१०वीं शताब्दी ई० के विशाल शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। गा० पु० पृ० ७।

१४७७. केलधार (शिवपुरी)

(अ) लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२७-२८, पृ० १२।

(आ) लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के भग्न शैव-मन्दिर में स्थापित लिंग तथा लकुलीश, कौमारी, यम आदि की प्रतिमाएँ। **वही।**

१४७८. **खजुराहो (छतरपुर)**

(अ) लालगुहां-महादेव का मन्दिर जो चौंसठ योगिनी मन्दिर के लगभग आधे मील पश्चिम की ओर है। इसकी तिथि लगभग ९०० ई० निर्धारित की जा सकती है। **ख० धा० पृ० १३-३५; ख० कृ० पृ० ५१-६०; ख० दे० प्र० पृ० १२-२२; ख० स्क० सि० पृ० १०-१८; ख० जे० पृ० ८७-१६०; ए० आइ क्रमांक १५।**

(आ) मातंगेश्वर का सर्वाधिक सादा शैव-मन्दिर जिसमें विशालकाय शिवलिंग स्थापित है। सम्पूर्ण मन्दिर अनलंकृत है तथा उसके किसी भी भाग पर कोई चित्रण नहीं है। इसकी तिथि ९००-९२५ ई० की मानी जा सकती है। **वही।**

(इ) विश्वनाथ का शिव-मन्दिर जो पंचायत शैली का सान्धार प्रासाद है। कोनों पर बने चार गौण मन्दिरों में से उत्तर-पूर्वी और दक्षिण-पश्चिमी कोनों पर स्थित मात्र दो मन्दिर शेष बचे हैं। विकसित खजुराहो-शैली के सर्वोत्तम मन्दिरों में विश्वनाथ एक है जो वास्तुकला की दृष्टि से लक्ष्मण और कन्दरिया के बीच की कड़ी है। मण्डप के दीवार में लगे दो शिलालेखों में बड़ा लेख इसी मन्दिर में मिला था। इस लेख में धंग द्वारा वि० सं० १०५९ में शम्भु मरकतेश्वर के मन्दिर निर्माण तथा दो लिंगों की स्थापना का उल्लेख है। दूसरा अभिलेख वि० सं० १०५८ का है जो मूलतः वैद्यनाथ मन्दिर का था जो अब लुप्त हो गया है। **वही।**

(ई) विश्वनाथ के ठीक सामने नन्दी मन्दिर स्थित है जिसमें विशालकाय नन्दी की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। यह विश्वनाथ मन्दिर का समकालीन है। **वही।**

(उ) चौंसठ योगिनी मन्दिर के उत्तर में स्थित कन्दरिया-महादेव का मन्दिर जो खजुराहो का विशालतम मन्दिर है। इसमें खजुराहो मन्दिर के पूर्ण विकसित अंगों—अर्धमण्डप, मण्डप, महामण्डप, अन्तराल, गर्भगृह तथा प्रदक्षिणापथ का समन्वय समस्त वास्तु के एकीकरण के चारुरूप से प्रतिबिम्बित है। इसी एकमात्र मन्दिर के जगती में दोनों पार्श्वों में और पीछे की ओर भद्र है। इस मन्दिर का अधिष्ठान भी अन्य मन्दिरों के अधिष्ठानों से ऊँचा है। इस मन्दिर के विभिन्न भागों में लगायी गयी मूर्तियाँ खजुराहो शिल्प की अत्यन्त मनोरम कृतियाँ हैं। इसे चन्देल नृपति विद्याधर के शासन के उत्तरार्ध अथवा १०२५-५० ई० में निर्मित माना गया है। निर्माण तिथि को इस मन्दिर के महामण्डप में प्राप्त एक संक्षिप्त अभिलेख से पुष्टि मिलती है जिसमें विरिन्द नामक एक राजा का उल्लेख है। **वही।**

(ऊ) दूलादेव का शैव-मन्दिर जो एक निराधार प्रासाद है। इसमें गर्भगृह, अन्तराल, महामण्डप तथा अर्धमण्डप हैं। इसके शिखर के चारों ओर उरःशृंगों और कर्ण-शृंगों की तीन पंक्तियाँ हैं। इसके महामण्डप तथा देव प्रतिमाओं की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं। स्थापत्य तथा मूर्तिकला की विशिष्टताओं के आधार पर इसे ११००-११५० ई० का माना जाता है। **वही।**

(ए) महादेव मन्दिर जो कन्दरिया मन्दिर की जगती पर कन्दरिया और जगदम्बी मन्दिरों के बीच खण्डित अवस्था में छोटा-सा मन्दिर है। इसका गर्भगृह नष्ट हो चुका है, किन्तु अर्धमण्डप अवशिष्ट है। **वही।**

(ऐ) पार्वती मन्दिर के सम्मुख निर्मित प्रतापेश्वर का आधुनिक मन्दिर जिसमें प्राचीन प्रतिमाएँ लगी हैं। **ख० स्क० सि० पृ० १७।**

(क) शिव की चतुर्भुजी शान्ति-प्रतिमाएँ जिनके प्राप्ति स्थान निम्नलिखित हैं —

(१) विश्वनाथ मन्दिर
(२) जगदम्बी मन्दिर
(३) कन्दरिया मन्दिर
(४) चित्रगुप्त मन्दिर
(५) लक्ष्मण मन्दिर
(६) पार्श्वनाथ मन्दिर
(७) नन्दी मन्दिर
(८) जवारी मन्दिर
(९) वामन मन्दिर
(१०) शान्तिनाथ मन्दिर
(११) प्रतापेश्वर मन्दिर तथा
(१२) खजुराहो संग्रहालय। **ख० स्क० सि० पृ० ४५-५१।**

(ख) शिव की नटराज प्रतिमाएँ जिनके प्राप्ति-स्थान निम्नलिखित हैं—

(१) दूलादेव मन्दिर तथा
(२) खजुराहो संग्रहालय। **वही, पृ० ५१-५३।**

(ग) शिव-पार्वती विवाह दर्शाती प्रतिमाएँ जिनके प्राप्ति-स्थान निम्नलिखित हैं—

(१) खजुराहो संग्रहालय
(२) वामन मन्दिर तथा
(३) चित्रगुप्त मन्दिर। **वही, पृ० ५३।**

(घ) आलिंगन मुद्रा में शिव की प्रतिमा—चित्रगुप्त मन्दिर। **वही, पृ० ५२।**

(च) शिव की संहार-मूर्ति जिनके प्राप्ति-स्थान निम्नलिखित हैं—

(१) नीलकण्ठ प्रतिमाएँ—

(अ) कन्दरिया मन्दिर
(आ) चित्रगुप्त मन्दिर
(इ) खजुराहो संग्रहालय
(ई) जगदम्बी मन्दिर तथा
(उ) पार्श्वनाथ मन्दिर । वहीं, पृ० ५३ ।

(२) अघोर मूर्ति--

(अ) जगदम्बी मन्दिर
(आ) पार्श्वनाथ मन्दिर
(इ) कन्दरिया मन्दिर
(ई) विश्वनाथ मन्दिर
(उ) दूलादेव मन्दिर तथा
(ऊ) जगदम्बी मन्दिर । वही, पृ० ५४ ।

(३) गजसंहार मूर्ति—

(अ) कन्दरिया मन्दिर
(आ) विश्वनाथ मन्दिर
(इ) दूलादेव मन्दिर तथा
(ई) खजुराहो संग्रहालय । वही, पृ० ५४-५५ ।

(४) भैरवी सहित भैरव मूर्ति—पार्श्वनाथ मन्दिर । वही, पृ० ५५ ।

(५) त्रिपुरान्तक-शिव—पार्श्वनाथ मन्दिर । वही, पृ० ५५ ।

(६) भैरव प्रतिमाएँ—

(अ) कन्दरिया मन्दिर
(आ) वामन मन्दिर
(इ) खजुराहो संग्रहालय
(ई) चतुर्भुज मन्दिर
(उ) जगदम्बी मन्दिर
(ऊ) चित्रगुप्त मन्दिर
(क) लक्ष्मण मन्दिर
(ख) विश्वनाथ मन्दिर
(ग) आदिनाथ मन्दिर तथा
(घ) दूलादेव मन्दिर । वही, पृ० ५६-५७ ।

(छ) गणेश प्रतिमाएँ जिनके प्राप्ति-स्थान निम्नलिखित हैं—

(१) लक्ष्मण मन्दिर
(२) जगदम्बी मन्दिर
(३) खजुराहो संग्रहालय
(४) मातंगेश्वर मन्दिर
(५) पार्वती मन्दिर
(६) दूलादेव मन्दिर
(७) जवारी मन्दिर
(८) कन्दरिया मन्दिर
(९) विश्वनाथ मन्दिर
(१०) लक्ष्मण मन्दिर तथा
(११) चित्रगुप्त मन्दिर। ख० दे० प्र० पृ० ५२-५३, क्रमांक १-३९; वही, पृ० ३१-५१।

(ज) सप्तमातृकाओं के साथ चित्रित गणेश प्रतिमाएँ जिनके प्राप्ति-स्थान निम्नलिखित हैं—

(१) लक्ष्मण मन्दिर
(२) खजुराहो संग्रहालय तथा
(३) दूलादेव मन्दिर। ख० दे० प्र० पृ० ५३, क्रमांक ४०-४३; वही, पृ०, ३१-५१।

(झ) पार्वती-मूर्तियों में अंकित गणेश प्रतिमाएँ जिनके प्राप्ति-स्थान निम्नलिखित हैं—

(१) लक्ष्मण मन्दिर तथा
(२) खजुराहो संग्रहालय। ख० दे० प्र० पृ० ५३, क्रमांक ४४-४९; वही, पृ० ३१-५१।

(ट) उमा-महेश्वर मूर्तियों में प्रदर्शित गणेश-प्रतिमाएँ जिनके प्राप्ति-स्थान निम्नलिखित हैं—

(१) लक्ष्मण मन्दिर
(२) जगदम्बी मन्दिर
(३) चित्रगुप्त मन्दिर तथा
(४) खजुराहो संग्रहालय। ख० दे० प्र० पृ० ५३, क्रमांक ५०-५५; वही, पृ० ३१-५१।

(ठ) स्कन्द अथवा कार्तिकेय प्रतिमाएँ जो कन्दरिया महादेव के मन्दिर में तथा खजुराहो संग्रहालय में प्राप्त है। ख० स्क० सि० पृ० ८६-८७।

४१

१४७९. खजुहा (रीवा)

(अ) कलचुरि कालीन शैव-मन्दिर। आ० क० त्रि० पृ० २७६।

(आ) कलचुरि कालीन शैव-मन्दिर तथा मन्दिर से संलग्न मठ के अवशेष। आ० क० त्रि० पृ० २४०।

(इ) शिव की स्थानक प्रतिमा जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० १८४।

(ई) शिव की दुर्लभ उमा सहित सुखासन प्रतिमा जिसमें शिव तथा पार्वती को चौपड़ खेलते बतलाया गया है। यह कलचुरि कालीन है। वही, पृ० १८७।

(उ) शिव की सुखासन प्रतिमा जो कलचुरि कालीन है। वही, पृ० १८७।

(ऊ) गणपति की स्थानक प्रतिमा जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० २२१।

(ए) कार्तिकेय की कलचुरि कालीन प्रतिमा। वही।

१४८०. खण्डवा (पूर्व निमाड़)

शैव-प्रतिमाएँ। क० लि० ए० रि० पृ० ४०।

१४८१. खतामा (होशंगाबाद)

प्राचीन शैव-गुफा। क० लि० ए० रि० पृ० ४२।

१४८२. खमरिया-बाकल (जबलपुर)

कलचुरि कालीन उमा-महेश्वर की प्रतिमा। आ० क० त्रि० पृ० १४।

१४८३. खरोद (बिलासपुर)

(अ) कलचुरि कालीन ईंटों का बना 'लखनेश्वर मन्दिर'। मन्दिर की दीवाल में रत्नदेव तृतीय का चेदि सम्वत् ९३३ का शिलालेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २०२; क० लि० ए० रि० पृ० ६०-६१; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९०४, पृ० ३१-३२; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९०९-१०, पृ० ११-१८, चित्र ४।

(आ) मन्दिर में संग्रहीत शिव प्रतिमा जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। ना० सू०।

(इ) मन्दिर में संग्रहीत गणेश-प्रतिमा जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। ना० सू०।

१४८४. खलारी (रायपुर)

(अ) कलचुरि कालीन शैव-मन्दिर के भग्नावशेष जिसमें ब्रह्मदेव का वि० सं० १४७० का अभिलेख प्राप्त हुआ था। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १५६-५८; क० लि० ए० रि० पृ० ५०-५१।

(आ) दो अन्य मन्दिरों के भग्नावशेष जिनमें एक शैव था। वही।

१४८५. खिलचीपुरा (मन्दसौर)
गुप्तकालीन रुद्र-शिव की प्रतिमा। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० १-४२।

१४८६. खेड़ा (मोरेना)
लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के शैव-मन्दिर के भग्नावशेष जिसमें शिव, गणेश, सूर्य तथा महिषमर्दिनी आदि की प्रतिमाएँ प्राप्त हुईं। ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० ९।

१४८७. खेरात (भिण्ड)
लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी का ईंटों का बना शैव-मन्दिर, जो गाँव के दक्षिण-पूर्व की ओर चम्बल के बीहड़ों में है। ग्वा० पु० रि० १९३०-३१, पृ० ३।

१४८८. खोह (पन्ना)
गुप्तकालीन एक-मुख लिंग। प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९२०, पृ० १०६-७, चित्र २९; मिमायर ऑफ दि आर्कयलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, क्रमांक १६, पृ० ५।

१४८९. गण्डई (दुर्ग)
कलचुरि कालीन शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। हि० क० द० पृ० ७५०-५१।

१४९०. ग्वालियर दुर्ग (ग्वालियर)
लक्ष्मण-दरवाजा तथा चतुर्भुज मन्दिर के मध्य स्थित शैलकृत्त शैव-प्रतिमाएँ। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३३६।

१४९१. गुर्गी (रीवा)
(अ) गुर्गज टीले पर कलचुरि कालीन शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। कलचुरि शासक कोकल्लदेव द्वितीय के शासन-काल का शिलालेख भी यहाँ से प्राप्त हुआ था। क० आ० स० इ० रि० भाग १९, पृ० १५१-५२; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९२०-२१, पृ० ५१; है० त्रि० मा० पृ० ४३-४४।

(आ) उक्त टीले से प्राप्त शिव-दुर्गा की प्रतिमा। है० त्रि० मा० पृ० ७६-७७, चित्र २७-ब।

(इ) कलचुरि कालीन गौरी-शंकर मन्दिर। आ० क० त्रि० पृ० २७३।

१४९२. गुड़ार (शिवपुरी)
(अ) गाँव के पूर्व की ओर स्थित तीन शैव-मन्दिरों का समूह जिनमें गणेश, ब्रह्मा, लक्ष्मी, विष्णु आदि की प्रतिमाएँ हैं। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० २३।

(आ) लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मन्दिर जिसमें लकुलीश की प्रतिमा है। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० २५।

१४९३. **गुरह (रीवा)**

स्थानीय स्कूल के भवन में संरक्षित शैव-प्रतिमाएँ। आ० क्र० त्रि० पृ० २०।

१४९४. **गरूर (दुर्ग)**

(अ) प्राचीन शैव-मन्दिर (?) जिसकी बनावट तारिकाकार है। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १३९; क० लि० ए० रि० पृ० ५०।

(आ) उक्त मन्दिर के उत्तर की ओर एक बड़े मन्दिर के भग्नावशेष जो सम्भवत: शैव रहा होगा। वही।

(इ) गाँव के पूर्व की ओर स्थित एक मन्दिर के अवशेष जो सम्भवत: शैव रहा होगा। वही, पृ० १४०-४१।

(ई) विशालकाय गणेश प्रतिमा। दु० डि० ग० पृ० १७५।

१४९५. **घुसई (मन्दसौर)**

अमरेश्वर महादेव तथा भैरवजी के तीन प्राचीन शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

१४९६. **चन्द्रेह (सीधी)**

कलचुरि कालीन शैव मन्दिर के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ६-९; है० त्रि० मा० पृ० ३२-३५, चित्र १, अ-ब।

१४९७. **चंचोड़ा (गुना)**

बागेश्वर महादेव का मन्दिर जिसमें प्राचीन प्रतिमाएँ रखी हैं। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० १०।

१९९८. **चंचोल (मोरेना)**

प्राचीन शैव-मन्दिर जो स्थानीय 'महादेव की मढ़ी' कहलाता है। ग्वा० पु० रि० १९१५-१६।

१४९९. **चम्पाभर (रायपुर)**

चम्पकेश्वर महादेव का प्राचीन मन्दिर। रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०९), पृ० २७९।

१५००. **चुर्ली (ग्वालियर)**

गाँव के पूर्व की ओर स्थित लगभग ८वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी के शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० १४।

१५०१. **चिकलदा (धार)**
प्राचीन शैव-मन्दिर । हे० म० इ० ।

१५०२ **चिरमोलिया (मन्दसौर)**
जगन्नाथ महादेव का प्राचीन मन्दिर । ग्वा० पु० रि० १९१४-२३ ।

१५०३. **चोरपुरा (शिवपुरी)**
लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मन्दिर । ग्वा० पु० रि० १९१४-२३ ।

१५०४. **चोली (पश्चिम निमाड़)**
सोमनाथ, गणेश तथा एक अन्य शैव मन्दिर । हे० म० इ०; वे० नि० डि० ग० पृ० ४४० ।

१५०५. **चौरा (दुर्ग)**
मडुवा महल नामक शैव-मन्दिर जो गोंडकालीन है । इसमें लगे वि० सं० १४०६ के विशाल शिलालेख में तात्कालीन राजा रामचन्द्र द्वारा शिव-मन्दिर निर्माण का उल्लेख है । क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ३९-४२; हीरालाल सूची, पृ० १७४-१७७; भण्डारकर सूची, क्रमांक ७०७ ।

१५०६. **छाड़े (मोरेना)**
लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी इसवी का शैव-मन्दिर । ग्वा० पु० रि० १९१६-१७ ।

१५०७. **छितारा (शिवपुरी)**
प्राचीन शैव-मन्दिर । ग्वा० पु० रि० १९१६-१७ ।

१५०८. **छोटी देवरी (जबलपुर)**
शैव-मन्दिर का स्तम्भ जिस पर कलचुरि शासक शंकरगण प्रथम का लेख उत्कीर्ण है । क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १००; क० लि० ए० रि० पृ० २८; है० त्रि० मा० पृ० ७७ ।

१५०९. **जखोदा (ग्वालियर)**
गाँव के उत्तर की ओर स्थित प्राचीन शैव-मन्दिर के भग्नावशेष । ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० १६ ।

१५१०. **जसो (सतना)**
शैव तथा अन्य प्रतिमाएँ । इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२; चित्र ७१-ब ।

१५११. **जामली (धार)**
(अ) लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मन्दिर । ग्वा० पु० रि० १९४०-४१, पृ० १३-१४ ।

(आ) उक्त मन्दिर में बना समकालीन कूप। ग्वा० पु० रि० १९१४-२३।

१५१२. जिलहरीघाट (जबलपुर)
गोंड शासन काल का शिवलिंग जिस पर लगभग १४वीं शताब्दी ईसवी का संग्रामशाह के शासन काल का लेख उत्कीर्ण है। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० २-६।

१५१३. जीरण (मन्दसौर)
चतुर्मुख शैव-प्रतिमा जो लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी की है। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० ४-५।

१५१४. जोबा (सरगुजा)
प्राचीन शैव-प्रतिमाएँ। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ६३।

१५१५. झरदा (उज्जैन)
लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मन्दिर। इ० स्टे० ग० पृ० २५।

१५१६. टिमरनी (होशंगाबाद)
शिव प्रतिमा जिस पर तिथिरहित लेख उत्कीर्ण है। **हीरालाल सूची, क्रमांक १३०।**

१५१७. ठकुराई (मन्दसौर)
गाँव के पश्चिम की ओर लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० २१-२२।

१५१८. डंगरवा (उज्जैन)
एक प्राचीन शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

१५१९. तेरही (शिवपुरी)

(अ) गाँव के पूर्व की ओर लगभग १ मील पर एक प्राचीन शैव मन्दिर के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १७७; ग्वा० पु० रि० १९१४-१५।

(आ) गाँव के दक्षिण की ओर वन में एक विशाल शिव-लिंग जिसपर आठ मुख उत्कीर्ण किये गये हैं। म० प्र० स० **पुरातत्त्व विशेषांक**, १३ जून १९७०, पृ० ३४।

(इ) उक्त शिव-लिंग के निकट विशाल गणेश प्रतिमा। **वही।**

१५२०. तेवर (जबलपुर)
तेवर ग्राम में संरक्षित निम्नलिखित शव-प्रतिमाएँ—

(अ) बालसागर के तट पर स्थित मन्दिर में संग्रहीत प्रतिमाएँ–
(१) खण्डित शैव प्रतिमा का निम्न भाग (ते-१६)। व्य० सू०।

(२) खण्डित गणपति प्रतिमा का निम्नभाग (ते-१९)। वही।
(३) लिंग (ते-३०)। वही।
(४) लिंग (ते-?)। वही।
(५) चामुण्डा प्रतिमा (ते-११)। वही।
(६) मन्दिर के उत्तरी दीवार में लगी शिव-पार्वती प्रतिमा। वही।
(७) मन्दिर के पश्चिमी दीवार में लगी नन्दी प्रतिमा। वही।
(८) मन्दिर के दक्षिण दीवार में लगी शिव-पार्वती प्रतिमा। वही।
(९) मन्दिर के उत्तरी दीवार में लगी कार्तिकेय प्रतिमा। वही।

(आ) बालसागर के सम्मुख दो वृक्षों के नीचे संग्रहीत प्रतिमाएँ--

(१) चतुर्भुज शिव की खण्डित प्रतिमा। व्य० सू०।
(२) गणपति की दो प्रतिमाएँ। वही।
(३) चामुण्डा प्रतिमा का मस्तक। वही।

(इ) कूप के निकट स्थित मन्दिर में संग्रहीत प्रतिमाएँ—

(१) चतुर्भुज शिव-पार्वती की प्रतिमा का ऊपरी भाग। वही।
(२) गणपति प्रतिमा। वही।
(३) लिंग। वही।

(ई) प्राचीन बावड़ी के निकट संग्रहीत प्रतिमाएँ—

(१) खण्डित शिव प्रतिमा का ऊपरी भाग (ते-७२)। वही।
(२) नृत्य-गणपति प्रतिमा (ते-८५)। वही।
(३) शिव-पार्वती प्रतिमा (ते-८७) वही।
(४) गणपति प्रतिमा (ते-९१) वही।
(५) द्वादशभुजी कार्तिकेय प्रतिमा (ते-७३)। है० त्रि० मा० पृ० ९२-९३, चित्र ३५-बी।
(६) पट्ट पर उत्कीर्ण अन्धकासुर-वध का दृश्य। है० त्रि० मा० पृ० ९३, चित्र ३५-ए।

(उ) त्रिपुरेश्वर मन्दिर के भग्नावशेषों में पीपल-वृक्ष के नीचे संग्रहीत प्रतिमाएँ--

(१) शिव प्रतिमा का मस्तक (ते-११५)। वही।
(२) नृत्य-गणपति प्रतिमा (ते-११८)। वही।
(३) नृत्य-गणपति प्रतिमा (ते-११०)। वही।
(४) शिव-पार्वती प्रतिमा (ते-१०८)। वही।
(५) उमा-महेश्वर प्रतिमा (ते-१३५)। वही।

(ऊ) एक अन्य पीपल-वृक्ष के नीचे संग्रहीत प्रतिमाओं में रखी शिव की प्रतिमा (ते-६३)। वही।

(ए) एक निकटवर्ती स्थान में संग्रहीत प्रतिमाओं में रखी गणेश प्रतिमा। वही।

(ऐ) एक पीपल-वृक्ष के नीचे रखी विशालकाय शिव-पार्वती प्रतिमा। वही।

(ओ) गणेश-प्रतिमाएँ। ख० वं० पृ० ३७७-७८।

(औ) शिव-पार्वती की प्रतिमा। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० ४-४।

(क) अनेक शैव प्रतिमाएँ। ख० वं० पृ० ३७४-७०।

(ख) त्रिपुरी उत्खनन में प्राप्त गणेश की प्रतिमा। इ० आ० रि० १९६८-६९।

१५२१. **दसई (धार)**

(अ) मुक्तेश्वर महादेव का प्राचीन मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

(आ) एक अन्य शैव-मन्दिर। वही।

१५२२. **दिगथान (धार)**

मुक्तेश्वर महादेव का प्राचीन मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

१५२३. **देवकानी (गुना)**

(अ) लगभग १२वीं-१३वीं शताब्दी ईसवी के शिव-मन्दिरों के समूह के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० ९।

(आ) लगभग १२वी-१३वी शताब्दी ईसवी का गणेश-मन्दिर। वही।

१५२४. **देवगवाँ (छतरपुर)**

शिवलिंग जिसपर भट्टारक महाराज वंगेश्वर जांगत का वर्ष ८० का लेख उत्कीर्ण है। गा० स्टे० म्यू० धु० पृ० २।

१५२५. **देवडुंगरी (उज्जैन)**

प्राचीन शैव-मन्दिर के स्थान पर निर्मित आधुनिक देवधर्मराज का मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० ११।

१५२६. **देवतलाव (रीवा)**

कलचुरि कालीन सोमनाथ तथा भैरव के मन्दिर। है० त्रि० मा० पृ० ७०-७१, चित्र २४ अ, ब; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९२१, पृ० ७५-७६।

१५२७. **देवदह (रीवा)**

स्थानीय 'भैरव बाबा' नामक पहाड़ी पर स्थित कलचुरि कालीन विशालकाय शिव प्रतिमा। आ० क० त्रि० पृ० २०।

१५२८. **देव-बलोदा (दुर्ग)**

कलचुरि कालीन शैव-मन्दिर। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ४-६; क०

लि० ए० रि० पृ० ४६; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९०४, पृ० २७; डु० डि० ग० पृ० १५३।

१५२९. **देवरगाँव (डुर्ग)**
विशालकाय लिंग जिस पर 'मगरधज जोगी' का नाम उत्कीर्ण है। हीरालाल सूची, क्रमांक ३०३।

१५३०. **देपालपुर (इन्दौर)**
लगभग १३वीं शताब्दी ईसवी का 'मंगलेश्वर महादेव' का मन्दिर। इ० स्टे० ग० पृ० १३।

१५३१. **देहरी (धार)**
एक प्राचीन शैव-मन्दिर। हे० म० इ०।

१५३२. **दुण्डापुरा (ग्वालियर)**
प्राचीन शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० १५।

१५३३. **दुधिया (रीवा)**
कलचुरि कालीन शैव-प्रतिमाएँ। प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९२१, पृ० ७६; है० त्रि० मा० पृ० १०८, चित्र ५०-ब।

१५३४. **दुल्हागाँव (भिण्ड)**
'भोरेश्वर महादेव' का प्राचीन मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

११३५. **धंधोली (शिवपुरी)**
(अ) गाँव के पश्चिम की ओर स्थित कालीपहाड़ी के निकट लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९३७-३८, पृ० ११-१२।
(आ) उपरोक्त मन्दिर के निकट समकालीन कूप। वही।

१५३६. **धनपुर (बिलासपुर)**
तालाब के निकट मन्दिर में स्थापित लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की उमा-महेश्वर की प्रतिमा। ना० सू०।

१५३७. **धन्वन्तरी (उज्जैन)**
एक प्राचीन शैव-मन्दिर। हे० म० इ०।

१५३८. **धमनार (मन्दसौर)**
लगभग ७वीं-९वीं शताब्दी ईसवी के धर्मनाथ के शैलकृत्त मन्दिर में लिंग तथा चतुर्भुज विष्णु की प्रतिमा। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० २७६-७९; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९०५-६, पृ० ११०; फर्गुसन—'राक-कट टेम्पल्स ऑफ़ इण्डिया'।

१५३९. धरमपुरी (धार)

चार शैव-मन्दिरों का समूह जो लगभग १२वीं-१३वीं शताब्दी ईसवी के हैं। म० भा० पु० रि० १९४०-५०।

१५४०. धुंडेरी (उज्जैन)

प्राचीन शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। इ० स्टे० ग० पृ० २२।

१५४१. नचना-कुठरा (पन्ना)

चतुर्मुख महादेव का लगभग ७वीं-८वीं शताब्दी ईसवी का मंदिर। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ९८-९९।

१५४२. नयी सोयन (शिवपुरी)

गणेश-प्रतिमा जिस पर वि० सं० १२२९ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, क्रमांक ३३।

१५४३. नरेसर (ग्वालियर)

(अ) एक तालाब के तट पर स्थित लगभग १२वीं-१३वीं शताब्दी ईसवी के आठ शैव मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९४७-४८।

(आ) लगभग १२वीं-१३वीं शताब्दी ईसवी के चार शैव-मंदिर। वही।

(इ) लगभग ८वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी के दो शैव-मंदिरों का समूह। वही।

(ई) लगभग ८वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी के चार शैव-मंदिरों का समूह। वही।

(उ) लगभग ८वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मंदिर जो दक्षिण भारतीय शैली में बना है। वही।

(ऊ) लगभग ८वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी के शैव-मंदिर के भग्नावशेष। वही।

१५४४. नवली (मन्दसौर)

'नन्दिकेश्वर-महादेव' का लगभग १२वीं-१३वीं शताब्दी ईसवी का मंदिर। इ० स्टे० ग० पृ० ४६।

१५४५. नांद-चन्द (जबलपुर)

'मृतंगेश्वर-महादेव' के मंदिर के भग्नावशेष जो संभवतः कलचुरि कालीन रहा होगा। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १६१।

१५४६. नारायनपुर (बिलासपुर)

कलचुरि कालीन शैव-मन्दिर। क० आ० स० इ० रि० भाग० ७, पृ० १९३-९५, चित्र १९; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९३०-३४, चित्र ७७-अ, ब, स, ड; रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०९), पृ० ३१५।

१५४७. निमथूर (मन्दसौर)

'पंचमुखी-महादेव' का मंदिर जिसमें वि० सं० १०२ (८) का शिलालेख है। शिलालेख में मन्दिरों का निर्माण पद्मजा द्वारा महाराजाधिराज चामुण्डराज के शासन काल में किये जाने का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० १९१७-१८; क० आ० स० इ० रि० भाग २३, पृ० १२५।**

१५४८. नेमावर (देवास)

(अ) नर्मदा के तट पर 'सिद्धेश्वर-महादेव' का मन्दिर जो लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी का है। **ए० रि० आ० स० इ० वे० स० १९२१, पृ० ९८।**

(आ) अपूर्ण शैव-मन्दिर। **वही।**

१५४९. नोहटा (दमोह)

कलचुरि कालीन शिव-मन्दिर। **आ० क० त्रि० पृ०२३७।**

१५५०. पठारी (विदिशा)

(अ) 'भीमगज-स्तम्भ' के सम्मुख लगभग ९वीं–१०वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मन्दिर। **म० भा० पु० रि० १९४९-५०।**

(आ) 'भीमगज-स्तम्भ' के निकट लगभग ९वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मन्दिर जिसका कुछ भाग भूमि में गड़ा है। **वही।**

(इ) गाँव के पूर्व की ओर 'कुकड़ेश्वर-महादेव' का मन्दिर जो लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी का है। **वही।**

१५५१. पढ़ावली (मोरेना)

(अ) गाँव के पूर्व की ओर स्थित लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मन्दिर। **ग्वा० पु० रि० १९१४-१५।**

(आ) बटेश्वर घाटी में 'बटेश्वर-महादेव' के मन्दिर के भग्नावशेष जो लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के हैं। **ग्वा० पु० रि० १९१५-१६।**

(इ) बटेश्वर घाटी में लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। **वही।**

(ई) गढ़ी में लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मन्दिर। **ग्वा० पु० रि० १९२५-२६।**

१५५२. परखेड़ा (धार)

(अ) 'भोगिश्वर-महादेव' का प्राचीन मन्दिर। **ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।**

(आ) 'नीलकण्ठेश्वर-महादेव' का प्राचीन मन्दिर। वही।

१५५३. पहाड़ो-खुर्द (ग्वालियर)

महादेव का मन्दिर जिसमें वि० सं० १३५० का शिलालेख है। ग्वा० पु० रि० १९१८-१९।

१५५४. पालि (बिलासपुर)

(अ) कलचुरिकालीन शैव-मन्दिर जिसमें रत्नपुर के जाजल्लदेव प्रथम के शासन काल के तीन शिलालेख हैं। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २१७-१९, क० लि० ए० रि० पृ० ६१-६२; क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ४१७-१९; ख० वै० पृ० १५०।

(आ) अनेक छोटे मन्दिरों के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २१७।

१५५५. पालि (सागर)

चन्देल कालीन शैव-मन्दिर। सा० डि० ग० पृ० ५४१।

१५५६. पालि-बछरा (सतना)

(अ) अर्धनारीश्वर की कलचुरि कालीन प्रतिमा। आ० क० त्रि० पृ० २२५।

(आ) षष्ट-भुजी नृत्य गणपति प्रतिमा जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० २२१।

(इ) कार्तिकेय की कलचुरि कालीन प्रतिमा। आ० क० त्रि० पृ० २२१।

१५५७. पिठोरिया (सागर)

कलचुरि कालीन शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ७०।

१५५८. पिपलोदा (धार)

शैलकृत्त शैव-प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ७२।

१५५९. पिपाड़ी (भिण्ड)

लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२८-२९, पृ० २७।

१५६०. पीपरघर (शिवपुरी)

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१४-१५।

१५६१. पीपलरावन (उज्जैन)

प्राचीन शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१७-१८।

१५६२. पुजारीपाली (रायगढ़)

(अ) कलचुरि कालीन दो शैव-मन्दिरों के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, ६८; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९०४, पृ० ३२; क० लि० ए० रि० पृ० ६५।

(आ) पुजारीपाली के पश्चिम की ओर लगभग आधे मील पर पजधार नामक ग्राम में दो प्राचीन शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० १४४; क० लि० ए० रि० पृ० ६५।

१५६३. पेन्ड्रा (बिलासपुर)

राजमहल से प्राप्त उमा-महेश्वर की प्रतिमा को लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। ना० सू०।

१५६४. पोहरी (शिवपुरी)

'केदारनाथ' का प्राचीन शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१४-१५।

१५६५. फतेहपुर (शिवपुरी)

'रामेश्वर-महादेव' का प्राचीन मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१५-१६।

१५६६. बगर (रीवा)

प्राचीन शैव प्रतिमाएँ। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ५।

१५६७. बगरोद (विदिशा)

प्राचीन शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९३२-३३, पृ० ७–८

१५६८. बजरंगढ़ (गुना)

लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०।

१५६९. बड़वानी (पश्चिम निमाड़)

(अ) सिद्धनाथ का प्राचीन शैव-मन्दिर जो मूल रूप में सम्भवतः जैन-मन्दिर था। वे० नि० डि० ग० पृ० ४३४।

(आ) गणपति का मन्दिर जिसे स्थानीय 'वाणी-विणायक' मन्दिर के नाम से पुकारा जाता है। वही।

१५७०. बदनावर (धार)

लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मन्दिर। म० भा० पु० रि० १९४८-४९।

१५७१. बरगाँव (जबलपुर)

(अ) कलचुरि कालीन सोमनाथ का मन्दिर जिसमें शबर का लेख उत्कीर्ण है। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १०१, १६३; क० लि० ए० रि० पृ० २७; हैं० त्रि० मा० पृ० ६६, चित्र १८-अ।

(आ) सोमनाथ के मन्दिर के निकट कलचुरि कालीन शैव-मन्दिर का सिरदल। है० त्रि० मा० पृ० १०७, चित्र ३६-ब।

१५७२. बरगाँव (रीवा)

शिव की नृत्य-प्रतिमा जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० १८४।

१५७३. बरहटा (होशंगाबाद)

शैव-स्मारकों के भग्नावशेष। शु० अ० ग्र० पृ० २०६-२०७।

१५७४. बलारपुर (शिवपुरी)

एक प्राचीन शैव-मंदिर। ग्वा० पु० रि० १६१४-१५।

१५७५. बाघ (धार)

(अ) लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी का महाकाल का मंदिर। आ० ग्वा० पृ० ६१; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग २, पृ० १६।

(आ) दक्षिण-पूर्व की ओर पहाड़ी पर स्थित लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी के शैव-मंदिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १६३०-३१, पृ० ८।

१५७६. बारा (भिण्ड)

प्राचीन तीन अथवा चार शैव-मंदिरों के अवशेष। ग्वा० पु० रि० १६२६-३०, पृ० ७-८।

१५७७. बारोद (गढ़ी) (शिवपुरी)

एक प्राचीन शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १६२२-२३।

१५७८. बालोद (दुर्ग)

सात शैव-मंदिरों का समूह। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १३३-३४, चित्र १५; क० लि० ए० रि० पृ० ४६।

१५७६. बिचरोद (उज्जैन)

दो शैव-मन्दिरों का समूह। ग्वा० पु० रि० १६१७-१८।

१५८०. बिजवाड़ (देवास)

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मंदिर। इ० स्टे० ग० पृ० ६।

१५८१. बिलहरी (जबलपुर)

कलचुरि शासन कालीन कामकंदला का मंदिर। क० आ० स० इ० रि० भाग ६, पृ० ३४, चित्र ७; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १६०४, पृ० ३३; है० त्रि० मा० पृ० ४६-४७।

१५८२. बिलाव (शिवपुरी)

प्राचीन शैव-मंदिरों के समूह के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १६१४-१५।

१५८३. बिलौवा (ग्वालियर)

गाँव से एक मील दूर शैलकृत गुफाओं में लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की शैलकृत शैव-प्रतिमाएँ। ग्वा० पु० रि० १६४७-४८।

१५८४. बिसेसरा (बिलासपुर)

लगभग ६वीं शताब्दी ईसवी के शैव-मठ के भग्नावशेष। बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१६१०) पृ० २६३।

१५८५. बीना (सागर)

कलचुरि मन्दिर के भग्नावशेष तथा प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० १६५६-६०, पृ० ७०।

१५८६. बूढ़ी-राई (शिवपुरी)

(अ) रामेश्वर महादेव का मंदिर। ग्वा० पु० रि० १६१४-२३।

(आ) भैरवजी का मन्दिर। वही।

१५८७. बैजनाथ (रीवा)

वैद्यनाथ महादेव का मन्दिर, जो सम्भवतः कलचुरि शासक लक्ष्मणराज द्वारा शैवाचार्य हृदयशिव को दिया गया था, जैसा कि बिलहरी से प्राप्त शिलालेख में उल्लेख किया गया है। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १५४-५५; है० त्रि० मा० पृ० ६१-६२ का० इ० इ० भाग ४, खण्ड १; ए० इ० भाग १, पृ० २५६, २६८।

१५८८. भक्तर (गुना)

महादेव का मन्दिर जिसमें वि० सं० ६७० का यात्री का लेख है। ग्वा० पु० रि० १६१४-२३।

१५८९. भरावली (मोरेना)

प्राचीन शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १६२६-३०, पृ० ३१।

१५९०. भानपुरा (मन्दसौर)

शिव, नटराज तथा स्कन्द की प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० (सा० रि०) १६६५-६६, पृ० १-४२।

१५६१. भारोली (भिण्ड)

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१४-१५।

१५६२. भीतरवार (ग्वालियर)

गोलेश्वर-महादेव का प्राचीन मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१४-२३।

१५६३. भूमरा (पन्ना)

गुप्तकालीन शिव-मन्दिर। बैनर्जी रा० दा०–'शिव टेम्पल एट भूमरा' (मिमायर आफ दी आर्कयलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया, क्रमांक १६; माडर्न रिव्यू (कलकत्ता) भाग ४५, पृ० ५७-५८; 'एज आफ दी इम्पिरियल गुप्ताज' पृ० १४२-४५, चित्र २, ४।

१५६४. भेड़ाघाट (जबलपुर)

(अ) चौंसठ-योगिनी के गौरीशंकर-मन्दिर में शिव-दुर्गा की प्रतिमा। है० त्रि० मा० पृ० ९१।

(आ) चौंसठ-योगिनी मन्दिर में रखी शिव की खण्डित प्रतिमा। वही पृ० ८७।

(इ) चौसठ-योगिनी-मन्दिर में रखी नृत्य-गणपति की प्रतिमा। वही पृ० ८६।

(ई) उक्त मन्दिर में रखी गणपति की खड़ी प्रतिमा। वही।

(उ) चौसठ-योगिनी के गौरी-शंकर मन्दिर में नृत्य-गणपति की प्रतिमा। वही, पृ० ९१।

१५६५. भैरमगढ़ (बस्तर)

(अ) कार्तिकेय की प्रतिमा जो पूर्व-मध्यकालीन है। इ० आ० रि० १९६८-६९।

(आ) भैरव की प्रतिमा जो पूर्व-मध्यकालीन है। वही।

(इ) पार्वती की प्रतिमा जो पूर्व-मध्यकालीन है। वही।

१५६६. भैरोंगढ़ (उज्जैन)

काल-भैरव, उकरेश्वर महादेव, तारकेश्वर महादेव तथा सिद्धवात के शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९२६ २७, पृ० १८।

१५६७. भैंसोदा (मोरेना)

(अ) गाँव के उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ३२९।

(आ) गाँव के दक्षिण की ओर स्थित लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ३२९।

१५९८. भोजपुर (रायसेन)

एक ऊँचे चबूतरे पर स्थित परमार कालीन शिव-मन्दिर जिसमें विशाल शिवलिंग स्थापित है। म० प्र० स० पुरातत्त्व विशेषांक, १३ जून १९७०, पृ० ५१।

१५९९. भोपाली (बैतूल)

पहाड़ी पर स्थित महादेव का एक प्राचीन गुफा-मन्दिर। क० लि० ए० रि० पृ० ४४।

१६००. मऊ (बालाघाट)

शैव-प्रतिमाएँ। क० लि० ए० रि० पृ० २५।

१६०१. मझोली (जबलपुर)

शिव-पार्वती की प्रतिमा। ज० डि० ग० पृ० ६८८।

१६०२. मढ़ा-गुड़हारू (सतना)

(अ) कलचुरि कालीन शैव-मन्दिर। आ० क० त्रि० पृ० २३९।

(आ) कलचुरि कालीन शैव-मन्दिर। आ० क० त्रि० पृ० २७५।

१६०३. मन्दसौर (मन्दसौर)

(अ) धुमटेश्वर महादेव का प्राचीन मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९२२-२३।

(आ) गणेश का प्राचीन मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

(इ) शिवना नदी के तट पर स्थापित अष्ट-मुखी लिंग। म० प्र० स० १३ जून १९७०, पृ० १५; म० भा० इ० पृ० ३६०।

१६०४. मरई (रीवा)

(अ) कलचुरि कालीन शिव-दुर्गा की एक उत्कृष्ट प्रतिमा। है० त्रि० मा० पृ० ९४, चित्र ४७-अ।

(आ) कलचुरि कालीन शैव-मन्दिर। है० त्रि० मा० पृ० ६२-६४, चित्र २०-अ; आ० क० त्रि० पृ० २७५।

१६०५. मल्लार (बिलासपुर)

पातालेश्वर मन्दिर के निकट एक घर में संग्रहीत शिव, भैरव, उमा-महेश्वर, उमा तथा गणपति की प्रतिमाएँ जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की हैं। ना० सू०।

१६०६. महसौन (रीवा)

कलचुरि कालीन शैव-मन्दिर। आ० क० त्रि० पृ० २७७।

१६०७. महासमुंद (रायपुर)

लगभग १४वीं शताब्दी ईसवी के दो शैव-मन्दिर। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १५६; क० लि० ए० रि० पृ० ५१; रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१६०६), पृ० ३१४।

१६०८. महिदपुर (उज्जैन)

(अ) नारकेश्वर महादेव का मन्दिर। है० म० इ०।

(आ) धुर्जटेश्वर महादेव का मन्दिर। वही।

१६०६ महुआ (शिवपुरी)

(अ) शिव मन्दिर जिसमें उदित के पुत्र वत्सराज का लगभग ७वीं शताब्दी ईसवी का शिलालेख है। आ० ग्वा० पृ० १००; ग्वा० पु० रि० १६१४-१५।

(आ) लगभग ७वीं-८वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मन्दिर। वही।

१६१०. महुवन (गुना)

(अ) गाँव के दक्षिण-पश्चिम की ओर लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १६२५-३६, पृ० ६, २०, २१।

(आ) लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मन्दिर जिसमें लिंग तथा महिषमर्दिनी की प्रतिमा है। वही।

(इ) नदी के तट पर टीले पर तीन शैव-मन्दिरों के भग्नावशेष। वही।

(ई) एक प्राचीन शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। वही।

१६११. महू (उज्जैन)

एक प्राचीन शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १६१७-१८।

१६१२. माकनगज (मन्दसौर)

गाँव के पूर्व की ओर स्थित शैव-मन्दिर जो लगभग ५वीं-७वीं शताब्दी ईसवी का है। कहा जाता है कि यहाँ स्थापित चतुर्मुखलिंग राजस्थान के बर्दुन नामक स्थान पर हटाया गया। ग्वा० पु० रि० १६२६-३०।

१६१३. माकला (उज्जैन)

(अ) विशालकाय त्रिमूर्ति जिसे स्थानीय काली अथवा माता के नाम से पूजा जाता है। इ० स्टे० ग० पृ० ४२।

(आ) लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का 'महाकालेश्वर' मन्दिर। वही।

(इ) गणेश का प्राचीन मन्दिर। वही।

१६१४. मांडा (सीधी)

लगभग ७वीं शताब्दी ईसवी की शैलकृत्त गुफा जिसमें शिव-प्रतिमा स्थापित है। म० प्र० स०, ५ सितम्बर १६७०, पृ० १२-१५।

१६१५. **मांडू दुर्ग (धार)**

(अ) सात शैव-शैलकृत्त कोठरियों का समूह जिसे 'सत-कोठरी' कहा जाता है। **याज़दानी : 'धार एण्ड मांडू' पृ० १२२।**

(आ, शैव-शैलकृत्त कोठरियाँ जिन्हें लोहानी गुफा कहते हैं। **हे० मा० मा०।**

१६१६. **मान्धाता (पूर्व निमाड़)**

(अ) ओंकारेश्वर का मन्दिर जिसमें प्राचीन मन्दिर के विशाल स्तम्भ तथा ज्योतिर्लिङ्ग स्थापित है। **इ० नि० ग० पृ० ४६९।**

(आ) सिद्धेश्वर का अपूर्ण प्राचीन मन्दिर। **वही, पृ० ४६९-७०।**

(इ) गौरी-सोमनाथ का प्राचीन मन्दिर जिसमें विशालकाय लिंग स्थापित है। **वही, पृ० ४७०।**

(ई) अनेक प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष। **वही, पृ० ४७०।**

(उ) नर्मदा के दक्षिण तट पर स्थित अमरेश्वर मन्दिर जिसमें ११वीं शताब्दी के चार लेख उत्कीर्ण हैं। **वही।**

(ऊ) अमरेश्वर मन्दिर के निकट विद्धेश्वर मन्दिर। **वही।**

१६१७. **मामोन (गुना)**

गाँव के दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के शैव-मन्दिर के भग्नावशेष जिसमें शिव-पार्वती की प्रतिमा उपलब्ध है। **ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० २१।**

१६१८. **मारा**

शैलकृत्त गुफाओं के तीन समूह जिन्हें स्थानीय 'छेवारी मारा', 'बारादरी मारा' तथा 'रावण मारा, के नाम से पुकारा जाता है। इनमें शैव-प्रतिमाएँ हैं। **क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० पृ० २०-३१।**

१६१९. **मितावली (मोरेना)**

पहाड़ी पर स्थित 'एकोत्तर-सौ-महादेव' का मन्दिर जिसमें उपलब्ध वि० सं० १३८० के शिलालेख में महाराज देवपाल द्वारा मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० १९१८-१९; वही, १९४२-४६, पृ० ६७।**

१६२०. **मियाना (गुना)**

प्राचीन शैव-मन्दिर। **ग्वा० पु० रि० १९१८-१९।**

१६२१. **मुड़पार (रायपुर)**

प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष जिसमें शैव तथा वैष्णव प्रतिमाएँ प्राप्त हुईं। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १४७; क० लि० ए० रि० पृ० ५१-५२।**

१६२२. मोड़ी (मन्दसौर)

लकुलीश शिव का मन्दिर जिसमें वि० सं० १३१७ का शिलालेख है। इ० स्टे० ग० पृ० ४३।

१६२३. रखेतरा (गुना)

लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी की अनेक शैव-प्रतिमाएँ तथा आले। ग्वा० पु० रि० १६२४-२५, पृ० १५, १६, ३८।

१६२४. रणोद (गुना)

लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मठ जिसे स्थानीय 'खोखई-मठ' के नाम से पुकारा जाता है। प्रस्तरों से बने दो-मन्जिले इस मठ से प्राप्त एक शिलालेख में मत्तमयूर शाखा के शैवाचार्य व्योमकेश द्वारा इस मठ के निर्माण का उल्लेख है। इस शिलालेख में मत्तमयूर शाखा के शैवाचार्यों की वंशावली दी है तथा शासक अवंति-वर्मन् का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० १६१४-१५; आ० ग्वा० पृ० १२१; ए० इ० भाग १, पृ० ३५४; क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३०३-३०६।

१६२५. रतनपुर (बिलासपुर)

कठीदेवल मन्दिर में संग्रहीत गणेश-प्रतिमा जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। ना० सू०।

१६२६. रपेठ (मोरेना)

एक प्राचीन शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १६१४-२३।

१६२७. राई (बूढ़ी) (शिवपुरी)

'रामेश्वर' तथा 'भैरव' के दो प्राचीन शैव-मन्दिरों के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १६१६-१७।

१६२८. राजिम (रायपुर)

(अ) 'राजीव-लोचन' के मन्दिर के पश्चिम की ओर स्थित 'राजेश्वर' का शैव-मन्दिर। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० १२-१३; क० लि० ए० रि० पृ० ५३।

(आ) 'राजेश्वर' मन्दिर के दक्षिण की ओर स्थित 'दानेश्वर' का शैव-मन्दिर। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० १३; क० लि० ए० रि० पृ० ५३।

(इ) 'कुलेश्वर' का शैव-मन्दिर जिसमें जगतराऊ का शिलालेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० १५-१६; वही, भाग ७, पृ० १४६; क० लि० ए० रि० पृ० ५४; ख० वै० पृ० ३५८।

(ई) 'राजीव-तेलिन' का मन्दिर जिसमें आधुनिक काल में शिव की पूजा होती है। क० लि० ए० रि० पृ० ५३।

१६२९. रामगढ़ पहाड़ी (सरगुजा)

(अ) शैव-प्रतिमाएँ। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ३४-३५।

(आ) शिव की अष्टभुजी प्रतिमा। वही, पृ० ३५।

(इ) एक शैव मन्दिर के भग्नावशेष। वही, पृ० ३५-३६।

१६३०. रिथोरा (मोरेना)

प्रचीन शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० ९।

१६३०/१. रीठी (जबलपुर)

लगभग १०-१२ शैव तथा वैष्णव-मन्दिरों के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १६०; है० त्रि० मा० पृ० ३१; ज० डि० ग० पृ० ६९०; क० लि० ए० रि० पृ० २९।

१६३१. रीवा (रीवा)

(अ) राजप्रासाद के सम्मुख स्थापित किया गया विशाल तोरण जो मूलरूप में गुर्गी के कलचुरि कालीन शैव-मन्दिर के सम्मुख स्थापित था। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १४३-४४; वही, भाग १९, पृ० ८०; है० त्रि० मा० पृ० ७२-७६, चित्र २५, २६।

(आ) प्रस्तर-खण्ड पर उत्कीर्ण शिव तथा पार्वती की निम्न उद्भृत प्रतिमाएँ। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १४४।

(इ) शिव की नृत्य-मूर्ति जिसे वर्तमान में गोविंदगढ़ में ले जाया गया है। यह कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० १८३-८४।

(ई) कलचुरि कालीन हर-गौरी की प्रतिमा। वही, पृ० १८६।

(उ) स्थानीय दुर्ग में गणपति प्रतिमा जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० २२०।

१६३२. रूपनाथ (जबलपुर)

प्राचीन शिव-लिंग। क० आ० स० इ० रि० भाग ९; पृ० ३८।

१६३३. लखारी (गुना)

लगभग ९वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी के दो शैव-मन्दिरों का समूह जिनमें वि० सं० १००० का शिलालेख प्राप्त हुआ। ग्वा० पु० रि० १९२४-२५, पृ० १३-१४।

१६३४. लवण (भिण्ड)

एक प्राचीन शैव-मन्दिर तथा प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ५९।

१६३५. लांजी (बालाघाट)

एक प्राचीन शैव-मन्दिर। क० लि० ए० रि० पृ० २५।

१६३६. लाफा (बिलासपुर)

गुफा में स्थित लिंग । बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१६१०), पृ० २७४-७५ ।

१६३७. शंकरगढ़ पहाड़ी (सतना)

गुप्तकालीन शैलकृत्त शैव-प्रतिमाएँ । इ० आ० रि० १६६७-६८, पृ० ६७ ।

१६३८. शंखुघर (मन्दसौर)

प्राचीन शैव-मन्दिर । हे० म० इ० ।

१६३६. शनिचरा (मोरेना)

प्राचीन शैव-मन्दिर जिसे स्थानीय 'पार्वती की जगह' कहते हैं । ग्वा० पु० रि० १६१४-१५ ।

१६४०. शम्साबाद (विदिशा)

मध्यकालीन शैव-प्रतिमाएँ । इ० आ० रि० १६५६-६०, पृ० ७१ ।

१६४१. शिवरीनारायण (बिलासपुर)

लगभग ६वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी का चन्द्रचूड़ेश्वर मन्दिर । निकट ही दीवार में लगा रत्नपुर के कलचुरि शासक जाजल्लदेव द्वितीय का चेदि संवत् ६१६ का शिलालेख है । क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १६७-६८; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १६०३-०४, पृ० ३०-३१; क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५१६ ।

१६४२. सकरवारा (जबलपुर)

नृत्य-गणपति की प्रतिमा । इ० आ० रि० १६६०-६१, पृ० ६० ।

१६४३. सकर्रा (गुना)

(अ) तालाब के तट पर लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मन्दिर । ग्वा० पु० रि० १६२७-२८, पृ० ६ ।

(आ) लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी में बने मन्दिर की दीवार पर लगी शैव-प्रतिमाएँ । ग्वा० पु० रि० १६२७-२८, पृ० १० ।

१६४४. सतनवाड़ा (शिवपुरी)

गाँव के उत्तर-पूर्व की ओर स्थित लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मन्दिर जो १५वीं-१६वीं शताब्दी ईसवी में सुधारा गया । ग्वा० पु० रि० १६२३-२४, पृ० १४ ।

१६४५. सतना (सतना)

अर्धनारीश्वर के रूप में शिव की प्रतिमा । इ० आ० रि० १६६७-६८, पृ० ६७ ।

१६४६. सनपुही (जबलपुर)

शिव की लगभग ४० प्रतिमाएँ जो विभिन्न मुद्राओं में हैं। ये कलचुरि कालीन हैं। **आ० क० त्रि० पृ० १५।**

१६४७. सन्दोर (गुना)

प्राचीन शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। **ग्वा० पु० रि० १९१८-१९।**

१६४८. सामली (मन्दसौर)

एक प्राचीन शैव-मन्दिर। **ग्वा० पु० रि० १९१७-१८।**

१६४९. सिंघपुर (शहडोल)

कलचुरि कालीन उमा-महेश्वर की प्रतिमा। आ० क० त्रि० पृ० १८८

१६५०. सिनावल (दतिया)

पार्वती की मूर्ति जिस पर सिद्धमातृका लिपि में लगभग ८वीं शताब्दी ईसवी का लेख उत्कीर्ण है। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ५०।

१६५१. सिरपुर (रायपुर)

(अ) प्राचीन शैव-मन्दिर जो स्थानीय 'गन्धेश्वर मन्दिर' के नाम से पुकारा जाता है। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १६९-७०; वही, भाग १७, पृ० २५; क० लि० ए० रि० पृ० ५५; ख० बै० पृ० १५२, ३५६।**

(आ) प्राचीन शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। **वही।**

(इ) ईंटों के बने मन्दिर के भग्नावशेष, चतुर्मुख लिंग आदि की प्राप्ति। **इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६१।**

(ई) एक घेरे में रखी शैव-प्रतिमाएँ। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १७३।**

(उ) १९५४ के उत्खनन में प्राप्त पंचायतन शाखा के शिव-मन्दिर के भग्नावशेष। **शु० अ० प्र० पृ० १८८।**

(ऊ) उपरोक्त उत्खनन में प्राप्त एक विशाल शिवलिंग। **वही।**

१६५२. सुन्दरसी (उज्जैन)

'महाकालेश्वर' का शैव-मन्दिर जिसके एक स्तम्भ पर वि० सं० १२२४ का शिलालेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० १९१७-१८।**

१६५३. सुरवाया (शिवपुरी)

(अ) एक दो-मंजिला शैव-मठ जो लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी में बनाया गया होगा। **गा० सु० पृ० ८-९।**

(आ) लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी के तीन शैव-मन्दिरों के समूह के भग्नावशेष। **गा० सु० पृ० ९।**

(इ) उक्त मन्दिरों के निकट समकालीन कूप। वही।

१६५४. सुल्तानपुर (धार)

(अ) प्राचीन शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १६१६-१७।

(आ) 'गंग-महादेव' का प्राचीन शैव मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १६१६-१७।

१६५५. सुवासरा (मन्दसौर)

लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी की पूर्व-मध्यकालीन शैव-प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० (सा० रि०) १६६५-६६, पृ० ४-५।

१६५६. सुहानिया (मोरेना)

(अ) ककनमढ़ का शैव-मन्दिर जो लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी में ग्वालियर के कछवाहा शासक कीर्तिराज द्वारा निर्माण किया गया था। ग्वालियर दुर्ग (सास-बहू मन्दिर) शिलालेख में इसका उल्लेख आया है। मन्दिर का नाम कीर्तिराज की रानी ककनावती के नाम पर हुआ। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३६६-४००; आ० ग्वा० पृ० १२४।

(आ) गाँव के उत्तर की ओर पहाड़ी पर स्थित लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी का शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १६२६-३०, पृ० १६।

१६५७. सेमरखेड़ी (शिवपुरी)

लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी के दो शैव-मन्दिरों के समूह के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १६२८-२६।

१६५८. सेमुलडा (शिवपुरी)

प्राचीन शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १६१६-१७।

१६५६. सेवई (ग्वालियर)

शिव, गणेश, कार्तिकेय आदि की प्रतिमाएँ जो लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की हैं। ग्वा० पु० रि० १६३३-३४, पृ० १४।

१६६०. सेंवढ़ा (दतिया)

सिन्ध नदी के तट पर प्राचीन शिव-मन्दिर। म० प्र० स० पुरातत्त्व विशेषांक १३ जून, १६७०, पृ० २८।

१६६१. सेसई (शिवपुरी)

लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के शैव-मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १६२६-३०, पृ० २६।

१६६२. सोनकछ (उज्जैन)

एक प्राचीन शैव-मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १६१७-१८।

१६६३. सोहागपुर (शहडोल)

(अ) कलचुरि कालीन 'विराटेश्वर-शिव' का मन्दिर जो लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का है। **क० आ० स० इ० रि० भाग० ७, पृ० २४०-४३; है० त्रि० मा० पृ० ४८, ५३।**

(आ) दो शैव-मन्दिरों के समूह के भग्नावशेष। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २४४।**

१६६४. हरनखेड़ी (उज्जैन)

प्राचीन शैव-मन्दिर। **ग्वा० पु० रि० १६१७-१८।**

१६६५. होशंगाबाद (होशंगाबाद)

मध्यकालीन शैव-प्रतिमाएँ। **इ० आ० रि० (सा० रि०) १६६४-६५, पृ० ४-२।**

उ—शाक्त स्मारक तथा प्रतिमाएँ

१६६६. अजयगढ़ (पन्ना)

किले के तरहोनी द्वार के निकट शैलकृत्त 'अष्ट-शक्ति' की प्रतिमाएँ, जिनके नीचे शक्तियों के नाम उत्कीर्ण हैं। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ४७।**

१६६७. अडभार (बिलासपुर)

(अ) प्राचीन देवी-मन्दिर के भग्नावशेष। **बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१६१०), पृ० २५५।**

(आ) महिषासुरमर्दिनी की प्रतिमा जिसे काली के रूप में पूजा जाता है। **वही।**

१६६८. अन्तरा (शहडोल)

(अ) चामुण्डा की प्रतिमा, जो कलचुरि कालीन है। **आ० क० त्रि० पृ० १६१।**

(आ) 'श्री सिंहनी' की प्रतिमा, जो कलचुरि कालीन है। **वही, पृ० १६१-६२।**

१६६९. अफजलपुर (मन्दसौर)

आशापुरी नामक देवी के मन्दिर में संग्रहीत प्राचीन प्रतिमाएँ। **ग्वा० पु० रि० १६१४-२२।**

१६७०. अमझेरा (धार)

(अ) चामुण्डा का मन्दिर। **ग्वा० पु० रि० १६१६-१७।**

(आ) अम्बिका का मन्दिर। **वही।**

१६७१. अमरोल (ग्वालियर)

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का 'बेहमाता' का मन्दिर। **ग्वा० पु० रि० १६४०-४१, पृ० २१।**

१६७२. आंतरी (उज्जैन)

आधुनिक देवी का मन्दिर, जो लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेषों से बना है। इ० स्टे० ग० पृ० ६।

१६७३. आंतरी (ग्वालियर)

तुर्की-गोलकी माता का प्राचीन मन्दिर। ग्वा० डि० ग० पृ० ३५७।

१६७४. आरंग (रायपुर)

पार्वती का आधुनिक मन्दिर जो प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेषों से बनाया गया है। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १६०।

१६७५. इन्द्रगढ़ (मन्दसौर)

गजलक्ष्मी की प्राचीन प्रतिमा। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० १-४२।

१६७६. एरण (सागर)

गुप्तकालीन गजलक्ष्मी की प्रतिमा। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२, चित्र ७१-अ।

१६७७. करीमगंज (जबलपुर)

मनसा देवी की प्रतिमा जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० १६०।

१६७८. करेडी (उज्जैन)

'महाकाली' का प्राचीन मन्दिर। हे० म० इ०।

१६७९. कागपुर (विदिशा)

गाँव के पश्चिम की ओर सड़क के निकट लगभग ९वीं शताब्दी ईसवी के दो मन्दिरों का समूह, जिसमें सप्तमातृकाएँ, शिव, गणेश आदि की प्रतिमाएँ हैं। ग्वा० पु० रि० १९३१-३२, पृ० ७।

१६८०. कारीतलाई (जबलपुर)

'देवी-मढ़िया' का मन्दिर जिसमें कलचुरि शासक लक्ष्मणराज प्रथम का कलचुरि संवत् ९५३ का शिलालेख प्राप्त हुआ क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० १७८।

१६८१. कोलारस (शिवपुरी)

'शीतला-माता' के मन्दिर में रखी लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की प्रतिमाएँ। ग्वा० पु० रि० १९१८-१९।

१६८२ कुंडलपुर (शिवपुरी)

लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी का देवी का मन्दिर, जिसमें महिषासुरमर्दिनी आदि की प्रतिमाएँ हैं। ग्वा० पु० रि० १९२२-२३।

१६८३. खजुराहो (छतरपुर)

(अ) शिवसागर झील के दक्षिण-पश्चिम में चट्टान पर स्थित शाक्त सम्प्रदाय से सम्बन्धित चौंसठ-योगिनी मन्दिर जो छत्र-विहीन तथा आयताकार है और एक ऊँची जगती पर निर्मित है। इसकी लम्बाई १०२।। फुट तथा चौड़ाई ५६।। फुट है, जिसके मध्य में स्थित प्रांगण के चारों ओर मूलतः ६७ कोठरियाँ थीं, जिनमें अब मात्र ४५ अवशिष्ट हैं। योगिनी मूर्तियों में अब केवल तीन शेष हैं, जो महिषासुरमर्दिनी, माहेश्वरी तथा ब्रह्माणी की हैं। खजुराहो के मन्दिरों में यह प्राचीनतम है जिसे ६वीं शताब्दी ईसवी के अन्त तक मान सकते हैं। ख० धा० पृ० १३-३५; ख० कु० पृ० ५१-६०; ख० दे० प्र० पृ० १२-२२; ख० स्क० सि० पृ० १०-१८; ख० जे० पृ० ८७-१६०; ए० आइ० क्रमांक १५।

(आ) जगदम्बी मन्दिर जो निराधार प्रासाद है। इसमें गर्भगृह, अन्तराल, महामण्डप तथा अर्धमण्डप हैं। मौलिक रूप से यह एक वैष्णव-मन्दिर था परन्तु विष्णुमूर्ति लुप्त हो जाने के पश्चात् इसमें पार्वती की चतुर्भुज प्रतिमा स्थापित कर दी गई। इसकी निर्माण तिथि १०००-१०२५ ई० के बीच की मानी गई है। वही।

(इ) पार्वती का छोटा-सा मन्दिर, जो विश्वनाथ मन्दिर के पास ही दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। इसमें आजकल गोधासना पार्वती की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। किन्तु प्रवेशद्वार के ललाटबिम्ब में विष्णु की प्रतिमा उत्कीर्ण होने के कारण यह अनुमानित है कि मूलतः यह वैष्णव मन्दिर था। वही।

(ई) शाक्त प्रतिमाएँ, जिनके प्राप्ति-स्थान निम्नलिखित हैं—
लक्ष्मी प्रतिमाएँ---

(१) वामन मन्दिर
(२) लक्ष्मण मन्दिर
(३) कन्दरिया मन्दिर
(४) विश्वनाथ मन्दिर
(५) खजुराहो संग्रहालय

ख० स्क० सि० पृ० ५७-५६।

सरस्वती प्रतिमाएँ—

(१) पार्श्वनाथ मन्दिर
(२) कन्दरिया मन्दिर
(३) विश्वनाथ मन्दिर
(४) चतुर्भुज मन्दिर
(५) वामन मन्दिर
(६) जगदम्बी मन्दिर

(७) पार्श्वनाथ मन्दिर
(८) लक्ष्मण मन्दिर
(९) खजुराहो संग्रहालय

वही, पृ० ५९-६० ।

दुर्गा तथा उसके विभिन्न रूप—

(१) दुर्गा
(अ) विश्वनाथ मन्दिर
(आ) लक्ष्मण मन्दिर
(इ) लक्ष्मण मन्दिर के निकट दो छोटे मन्दिर

(२) वन-दुर्गा
(अ) विश्वनाथ मन्दिर

(३) नन्दा
(अ) खजुराहो संग्रहालय

(४) देवी
(अ) जगदम्बी मन्दिर
(आ) पार्श्वनाथ मन्दिर

(५) भुवनेश्वरी
(अ) लक्ष्मण मन्दिर

(६) सर्वमंगला
(अ) कन्दरिया मन्दिर

(७) घण्टकर्णी
(अ) विश्वनाथ मन्दिर

(८) महिषासुरमर्दिनी
(अ) खजुराहो संग्रहालय
(आ) लक्ष्मण मन्दिर
(इ) चौंसठ योगिनी मन्दिर

देवी के दूसरे रूप—

(१) अम्बिका
(अ) लक्ष्मण मन्दिर

(२) त्रिपुरा

(अ) खजुराहो संग्रहालय

(३) पार्वती

(अ) पार्वती मन्दिर

(आ) खजुराहो संग्रहालय

(इ) लक्ष्मण मन्दिर

(४) अम्बा

(अ) लक्ष्मण मन्दिर

(आ) जगदम्बी मन्दिर

(इ) कन्दरिया मन्दिर

(ई) विश्वनाथ मन्दिर

(५) शिवा

(अ) जगदम्बी मन्दिर

(६) योगेश्वरी

(अ) खजुराहो संग्रहालय

(आ) दूलादेव मन्दिर

(इ) लक्ष्मण मन्दिर

सप्तमातृकाएँ—

(१) वैष्णवी

(अ) आदिनाथ मन्दिर

(आ) जगदम्बी मन्दिर

(इ) गाँधी संग्रहालय, छतरपुर

(ई) चतुर्भुज मन्दिर

(उ) वामन मन्दिर

(ऊ) खजुराहो संग्रहालय

(२) ब्रह्माणी

(अ) देवी मन्दिर

(आ) कन्दरिया मन्दिर

(इ) खजुराहो संग्रहालय

(ई) चौंसठ-योगिनी मन्दिर

(उ) लक्ष्मण मन्दिर

(३) माहेश्वरी

(अ) कन्दरिया मन्दिर

(४) चामुण्डा

(अ) रूद्र-चामुण्डा-दूलादेव मन्दिर

(आ) सिद्ध योगेश्वरी-खजुराहो संग्रहालय

(५) वाराही

खजुराहो-संग्रहालय

(६) कौमारी

(अ) कन्दरिया मन्दिर

(आ) आदिनाथ मन्दिर

(इ) जगदम्बी मन्दिर

(ई) पार्श्वनाथ मन्दिर

ख० स्क० सि० पृ० ५७-७० ।

(उ) अन्य देवी प्रतिमाएँ जो निम्नलिखित स्थानों में प्राप्त हैं—

(१) वारुणी—जगदम्बी मन्दिर
(२) नरसिंही—चतुर्भुज मन्दिर
(३) काली—प्रतापेश्वर मन्दिर
(४) सद्योजात—खजुराहो संग्रहालय
(५) मनसा—गाँधी संग्रहालय-छतरपुर; लक्ष्मण मन्दिर
(६) गंगा-यमुना—ब्रह्मा मन्दिर, विश्वनाथ मन्दिर, कन्दरिया मन्दिर, खजुराहो संग्रहालय
(७) महाकाली—विश्वनाथ मन्दिर, लक्ष्मण मन्दिर
(८) मनोन्मनी—प्रतापेश्वर मन्दिर

(ऊ) अन्य देवी प्रतिमाएँ जिन्हें वाहन के अभाव में पहचानना कठिन है—

(१) सरस्वती तथा बाला- विश्वनाथ मन्दिर
(२) अपराजिता अथवा काली—प्रतापेश्वर मन्दिर
(३) चामुण्डा अथवा काली—लक्ष्मण मन्दिर, खजुराहो संग्रहालय ।

ख० स्क० सि० पृ० ८०-८४ ।

१६८४. खजुहा (रीवा)

सरस्वती प्रतिमा, जो कलचुरि कालीन हैं। आ० क० त्रि० पृ० २२२।

१६८५. खरोद (बिलासपुर)

दो ईंटों के बने मन्दिरों के भग्नावशेष, जिनमें एक देवी (काली) का था। निकट ही देवी की अन्य प्रतिमाएँ प्राप्त हैं। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २०३; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९०४, पृ० ३१-३२; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९०९-१०, पृ० ११-१८, चित्र ४।

१६८६. खलारी (रायपुर)

खलारी देवी का मन्दिर। रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०९), पृ० २९७।

१६८७. गढ़िया (सीहोर)

महिषासुरमर्दिनी की प्रतिमा। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

१६८८. ग्वालियर दुर्ग (ग्वालियर)

लगभग १२वीं शतब्दी ईसवी के 'माता-देवी' के मन्दिर के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३६३-६४।

१६८९. गिरवानी (शिवपुरी)

'काली-देवी' के प्राचीन मन्दिर में इन्द्राणी, पार्वती, कौमारी आदि की प्रतिमाएँ। इस मन्दिर की बनावट टोंगरा के मन्दिर से मिलती-जुलती है। ग्वा० पु० रि० १९२८-२९, पृ० १४।

१६९०. गुर्गी (रीवा)

(अ) गुर्गज टीले से प्राप्त 'उमा' के रूप में 'दुर्गा' की प्रतिमा। है० त्रि० मा० पृ० ७७, चित्र ३७-अ।

(आ) कलचुरि कालीन सरस्वती प्रतिमा। आ० क० त्रि० पृ० २२२।

१६९१. गन्धावल (उज्जैन)

शीतला-माता के मन्दिर में लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की प्रतिमाएँ। ग्वा० पु० रि० १९४२-४६, पृ० २२-२३।

१६९२. चन्देरी (गुना)

जोगेश्वरी देवी का प्राचीन मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१४-२३।

१६९३. छुरी (बिलासपुर)

कोसगईं किले में देवी का मन्दिर तथा कुछ प्रतिमाएँ। बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९१०), पृ० २६४।

१६९४. तिगवाँ (जबलपुर)

कंकाली देवी के मन्दिर में रखी प्राचीन देवी-प्रतिमाएँ। ज० डि० ग० पृ० ६९७-९८।

१६९५. तुमेन (गुना)

लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी का 'विन्ध्यवासिनी देवी' का मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१८-१९।

१६९६. तेरही (शिवपुरी)

'मोहज-माता' का लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी का मन्दिर। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १७७; ग्वा० पु० रि० १९३४-३५, पृ० ७।

१६९७. तेवर (जबलपुर)

तेवर ग्राम में संरक्षित निम्नलिखित शाक्त प्रतिमाएँ—

(अ) प्राचीन बावड़ी के एक दीवार में लगी चतुर्भुज देवी की प्रतिमा (ते-१०६)। व्य० सू०।

(आ) त्रिपुरेश्वर मन्दिर के भग्नावशेषों में पीपल-वृक्ष के नीचे संग्रहीत प्रतिमाओं में रखी चतुर्भुज देवी प्रतिमा (ते-११७)। वही।

१६९८. दुदाखेड़ी (मन्दसौर)

देवी का प्राचीन मन्दिर। ए० रि० आ० स० इ० वे० स० १९२०-२१, पृ० ८।

१६९९. देवबलोदा (दुर्ग)

शिवमन्दिर की दीवार में लगी महिषासुरमर्दिनी की प्रतिमा, जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। ना० सू०।

१७००. धार (धार)

सरस्वती प्रतिमा, जो ब्रिटिश संग्रहालय में संरक्षित है। इस पर परमार शासक भोज का वि० सं० १०८१ का लेख उत्कीर्ण है। ए० इ० भाग १८, पृ० ३२०, क्रमांक ३; रूपम, १९२४, पृ० २; भण्डारकर सूची, क्रमांक १२०।

१७०१. नगरिया (रीवा)

पद्मादेवी की प्रतिमा जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० १८९-९०।

१७०२. नचना-कुठरा (पन्ना)

गुप्तकालीन पार्वती का मन्दिर। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ९६-९८।

१७०३. नरेसर (ग्वालियर)

पहाड़ी पर लगभग ८वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी का 'माता' का मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९४७-४८।

१७०४. नवली (मन्दसौर)

लगभग १२वीं-१३वीं शताब्दी ईसवी का देवी का मन्दिर। हे० म० इ०।

१७०५. पचावली (शिवपुरी)

महिषासुरमर्दिनी का प्राचीन मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९२२-२३।

१७०६. पठारी (विदिशा)

लगभग ५वीं शताब्दी ईसवी की शैलकृत्त गुफाएँ, जिनमें सप्तमातृकाओं की प्रतिमाएँ हैं। ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० १२, २५।

१७०७. पालि (बिलासपुर)

महादेव के मन्दिर में प्राप्त सरस्वती की प्रतिमा जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। ना० सू०।

१७०८. पालि-बछरा (सतना)

कलचुरि कालीन सरस्वती की प्रतिमा। आ० क० त्रि० पृ० २२२।

१७०९. पंचगवाँ (शहडोल)

(अ) 'श्री काली हंसवाहिनी' की प्रतिमा, जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० १९३।

(आ) कलचुरि कालीन 'श्री काली' की प्रतिमा। वही, पृ० १९५।

१७१०. पंचमठा (रीवा)

'श्री वासना' की प्रतिमा, जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० १९३।

१७११. बगरोद (विदिशा)

'विजासनी देवी' के प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९३२-३३, पृ० ७-८।

१७१२. बड़वानी (पश्चिम निमाड़)

कालिकामाता का प्राचीन मन्दिर। वे० नि० डि० ग० पृ० ४३४।

१७१३. बड़ी-देलची (उज्जैन)

'हिंगलज-माता' का प्राचीन मन्दिर। हे० म० इ०।

१७१४. बडोह (विदिशा)

लगभग ९वीं शताब्दी ईसवी का 'गडरमल मन्दिर' जिसमें मूल रूप में मातृकाओं की मूर्तियाँ रखी थीं। बाद में इसे जैन अथवा बौद्ध मतावलम्बियों द्वारा प्रयोग में लाया गया। इसकी बनावट भेड़ाघाट अथवा खजुराहो के चौंसठ योगिनी मन्दिरों से मिलती-जुलती है। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० ६९-७९; वही, भाग १०, पृ० ७१-७४; ग्वा० पु० रि० १९२३-२४, पृ० ८; आ० ग्वा० पृ० २४।

४५

१७१५. बरगाँव (रीवा)

पद्मादेवी की प्रतिमा, जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० १८९।

१७१६. बहुरीबंद (जबलपुर)

गुप्तकालीन महिषासुरमर्दिनी की शैलकृत्त प्रतिमा। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८।

१७१७. बाघ (धार)

बाघेश्वरी देवी का प्राचीन मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१४-२२।

१७१८. बालकवाड़ा (निमाड़)

भवानी का प्राचीन मन्दिर। हे० म० इ०।

१७१९. बिचरोद (उज्जैन)

'शीतला माता' का प्राचीन मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१७-१८।

१७२०. बिलासपुर (बिलासपुर)

'वीरासनदेवी' की तथा अन्य मध्यकालीन प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६९।

१७२१. बूढ़ीखार (बिलासपुर)

स्थानीय खण्डित देवालय में रखी महिषासुरमर्दिनी की प्रतिमा, जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। ना० सू०।

१७२२. बैजनाथ (रीवा)

चामुण्डा की प्रतिमा, जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० १९१।

१७२३. बोरिया (दुर्ग)

बोरिया के तीन मील दूर उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित 'कंकालीदेवी' के मन्दिर के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ४४-४६।

१७२४. भानपुरा (मन्दसौर)

वाराही, इन्द्राणी, स्कन्दमाता तथा वीणाधर की प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० १-४२।

१७२५. भिलसा (विदिशा)

प्राचीन 'चर्चिका-देवी' मन्दिर के भग्नावशेषों से बना 'बीजामण्डल' मसजिद। मसजिद के एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण शिलालेख में परमार शासक नरवर्मन् तथा चर्चिका देवी का उल्लेख है। आ० ग्वा० पृ० ६५; ए० रि० आ० स० इ० वे० स० १९१३-१४।

१७२६. भेड़ाघाट (जबलपुर)

'चौसठ योगिनी' का खुला गोल मन्दिर जिसके घेरे में ८१ प्रतिमाएँ रखी हैं। घेरे के केन्द्र में 'गौरीशंकर' का मन्दिर स्थित है। क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ६०; क० लि० ए० रि० पृ० २७; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९०७-८, पृ० २३४; ब्लाक—कन्जरवेशन नोट्स ऑन भेड़ाघाट; हैं० त्रि० मा० पृ० ६६-७० तथा ७८-९२; ख० वैं० पृ० ३२३-२६; एनुअल रिपोर्ट ऑफ इण्डियन एपिग्राफी, १९६४-६५, क्रमांक सी-२०८३-२१४७।

१७२७. मल्लार (बिलासपुर)

(अ) डिड़ीनेश्वरी मन्दिर में रखी सरस्वती की प्रतिमा, जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। ना० सू०।

(आ) मध्यकालीन दुर्गा की प्रतिमा। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८।

(इ) अम्बिका की प्राचीन प्रतिमा। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ५९।

१७२८. माकनगंज (मन्दसौर)

महिषासुरमर्दिनी का मन्दिर, जिसमें लगभग ५वीं-७वीं शताब्दी ईसवी का अस्पष्ट शिलालेख है। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०।

१७२९. मान्धाता (पूर्व निमाड़)

रावण नाले के निकट महाकाली की दशभुजी विशाल प्रतिमा। इ० नि० ग० पृ० ४७१।

१७३०. मैहर (सतना)

शारदा देवी का प्राचीन मन्दिर, जिसमें लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी का लेख उत्कीर्ण है। लेख में ब्राह्मण देवधर द्वारा अपने स्वर्गवासी पुत्र की पुण्य स्मृति में सरस्वती के मन्दिर निर्माण का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ३३-३४; इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ५७।

१७३१. मोरवान (मन्दसौर)

'शीतला-माता' के मन्दिर में रखी लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की महिषासुरमर्दिनी की प्रतिमा तथा अन्य प्रतिमाएँ। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० २०-२१।

१७३२. रतनपुर (बिलासपुर)

महामाया मन्दिर में संग्रहीत महिषासुरमर्दिनी की प्रतिमा जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। ना० सू०।

१७३३. रामगढ़ पहाड़ी (सरगुजा)

दुर्गा की बारह-भुजी प्रतिमा। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ३५।

१७३४. रीवा (रीवा)

(अ) चतुर्भुजी देवी की प्रतिमा जिस पर लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी का लेख उत्कीर्ण है। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १४४।

(आ) स्थानीय दुर्ग में स्थित जगन्नाथ मन्दिर में रखी अष्टभुजी महिषासुरमर्दिनी की प्रतिमा। आ० क० त्रि० पृ० १८९।

(इ) पद्मादेवी की प्रतिमा जो कलचुरि कालीन है। वही, पृ० १९०।

१७३५. लड़ई-लोहारी (जबलपुर)

कलचुरि कालीन योगिनी प्रतिमा जिस पर लेख उत्कीर्ण है। आ० क० त्रि० पृ० १४।

१७३६. लवण (भिण्ड)

देवी के प्राचीन मन्दिर में रखी प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ५९।

१७३७. लाफागढ़ (बिलासपुर)

स्थानीय दुर्ग में दुर्गा का मन्दिर। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २१९-२२३; क० लि० ए० रि० पृ० ६१; बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९१०), पृ० २७४।

१७३८. विदिशा (विदिशा)

परमार शासन कालीन नासिका खण्ड पर उत्कीर्ण सप्तमातृका की प्रतिमा। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० ४-:।

१७३९. सकर्रा (गुना)

लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर की दीवार पर लगी वाराही, वैष्णवी, पार्वती आदि की प्रतिमाएँ। ग्वा० पु० रि० १९२७-२८, पृ० १०।

१७४०. सकरी (जबलपुर)

'चामुण्डा' की प्रतिमा। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६०।

१७४१. सगौर (पश्चिम निमाड़)

बाघेश्वरी देवी का प्राचीन मन्दिर। वे० नि० डि० ग० पृ० ४५७।

१७४२. सतना (सतना)

'श्री नरसिंही' की प्रतिमा, जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० १९१-९२।

१७४३. सिंघपुर (शहडोल)

चामुण्डा की प्रतिमा, जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० १९१।

१७४४. सिरोहा (शिवपुरी)

देवी (सम्भवत: पार्वती) का मन्दिर, जो लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का है। ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० ८।

१७४५. सिलचट (रीवा)

'काली' की दुर्लभ प्रतिमा जो कलचुरि कालीन है। है० त्रि० मा० पृ० ९८-९९. चित्र ३९-अ; आ० क० त्रि० पृ० १९१।

१७४६. सुहानिया (मोरेना)

अम्बिका देवी का लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का मन्दिर। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ४०१; आ० ग्वा० पृ० १२५।

१७४७. सेवई (ग्वालियर)

देवी प्रतिमाएँ जो लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की हैं। ग्वा० पु० रि० १९३३-३४, पृ० १४।

१७४८. त्रिपुरी (जबलपुर)

उत्खनन में प्राप्त महिषासुरमर्दिनी की प्रतिमा। इ० आ० रि० १९६८-६९।

ऊ—सौर स्मारक तथा प्रतिमाएँ

१७४९. अजयगढ़ (पन्ना)

दुर्ग में स्थित सूर्य की प्रतिमा। म० प्र० स० १३ जून १९७०, पृ० ७५।

१७५०. उन्नी (टीकमगढ़)

प्रतिहार शासन कालीन सूर्य-मन्दिर। म० प्र० स० २० जून, १९७०, पृ० ७।

१७५१. कारीतलाई (जबलपुर)

सूर्य-प्रतिमाएँ। ख०वै० पृ० ३२९; ज० डि० ग० पृ० ६८३।

१७५२. कोटगढ़ (बिलासपुर)

सूर्य-प्रतिमा जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। ना० सू०।

१७५३ कोनी (बिलासपुर)

कलचुरि कालीन मन्दिर के भग्नावशेषों में सूर्य-प्रतिमा। ए० इ० भाग २७, पृ० २७६।

१७५४. खजुराहो (छतरपुर)

(अ) चित्रगुप्त का सूर्य-मन्दिर, जिसके गर्भगृह में ५ फुट ८ इंच ऊँची सूर्य की प्रतिमा

प्रतिष्ठित है। यह निराधार प्रासाद है, जिसमें गर्भगृह, अन्तराल, महामण्डप तथा अर्धमण्डप है। शैली की दृष्टि से इसकी निर्माण तिथि १०००-१०२५ ईसवी के बीच मानी गई है। ख० धा० पृ० १३-३५; ख० कृ० पृ० ५१-६०; ख० दे० प्र० पृ० १२-२२; ख० स्क० सि० पृ० १०-१८; ख० जे० पृ० ८७-१६०; ए० आइ० क्रमांक १५।

(आ) सूर्य की प्रतिमाएँ जिनके प्राप्ति-स्थान निम्नलिखित हैं—

(१) लक्ष्मण मन्दिर
(२) चित्रगुप्त मन्दिर
(३) चतुर्भुज मन्दिर
(४) प्रतापेश्वर मन्दिर
(५) खजुराहो संग्रहालय
(६) दूलादेव मन्दिर
(७) जवारी मन्दिर
(८) विश्वनाथ मन्दिर

ख० दे० प्र० पृ० १८४-८५ क्रमांक, १-३२; वही, पृ० १६१-१८३।

१७५५. टोंगरा (शिवपुरी)

लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी के दो सूर्य-मन्दिर, जिनकी वनावट अनोखी है। ग्वा० पु० रि० १९२८-२९, पृ० ११-१२।

१७५६. तातापानी (सरगुजा)

सूर्य-प्रतिमाएँ। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ६३।

१७५७. नारायनपुर (बिलासपुर)

तीन प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष, जिनमें एक आदित्य (सूर्य) का था। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १९५; क० लि० ए० रि० पृ० ५२।

१७५८. पनागर (जबलपुर)

लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की विशाल सूर्य-प्रतिमा। ख० वै० पृ० ३२७।

१७५९. बरहटा (नरसिंहपुर)

सूर्य कीं दुर्लभ प्रतिमा। नरसिंहपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०६), पृ० २०६।

१७६०. भरौली (भिण्ड)

एक मध्यकालीन सूर्य मन्दिर। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९८।

१७६१. भेड़ाघाट (जबलपुर)

चौंसठ योगिनी के गौरी-शंकर मन्दिर में सूर्य की प्रतिमा। है० त्रि० मा० पृ० ९१-९२, चित्र ३४।

१७६२. **मनखेड़ा (टीकमगढ़)**

लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का सूर्य-मन्दिर। **म० प्र० स० (२० जून १९७०), पृ० ७।**

१७६३. **मनोरा (रीवा)**

कलचुरि कालीन रेवन्त की प्रतिमा। **है० त्रि० मा० पृ० १०६, चित्र ४६-अ।**

१७६४. **मसौन (रीवा)**

एक तालाब के तट पर सूर्यनारायण की प्रतिमा। **है० त्रि० मा० पृ० ९३, चित्र ३७-अ।**

१७६५ **सकर्रा (गुना)**

लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर में लगी सूर्य-प्रतिमा। **ग्वा० पु० रि० १९२७-२८, पृ० १०।**

१७६६. **सामतपुर (शहडोल)**

कलचुरि कालीन सूर्य-प्रतिमा। **आ० क० त्रि० पृ० २१९।**

१७६७. **सेवई (ग्वालियर)**

सूर्य की प्रतिमाएँ जो लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की हैं। **ग्वा० पु० रि० १९३३-३४, पृ० १४।**

१७६८. **सेसई (शिवपुरी)**

लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का सूर्य-मन्दिर। **ग्वा० पु० रि० १९१४-१५।**

१७६९. **सोहागपुर (शहडोल)**

एक सूर्य प्रतिमा। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २४५।**

ए—अन्य स्मारक तथा प्रतिमाएँ

१७७०. **अकलतरा (बिलासपुर)**

आधुनिक मन्दिर जो प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेषों से बना है। **बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९१०), पृ० २५६।**

१७७१. **अंकलेश्वर (मन्दसौर)**

अष्टकोणाकार स्तम्भ जिस पर दूसरी-तीसरी शताब्दी ई० पू० का लेख अंकित है। **नव भारत दैनिक (जबलपुर), दिनांक १९ अक्टूबर, १९७०।**

१७७२. **अकेता (गुना)**

स्थानीय माता के मन्दिर में सती-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १३६९ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ५३।**

१७७३. अचल (छतरपुर)

पूर्व-मध्यकालीन प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९८।

१७७४. अजयगढ़ (पन्ना)

(अ) चन्देल शासन कालीन तीन मन्दिरों के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ४७।

(आ) चन्देल शासन कालीन दो तालाब। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ४६-४७।

(इ) चन्देल कालीन दुर्ग। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० ४६; वही, भाग २१, पृ० ४६।

(ई) सती-स्मारक, जिस पर चन्देल हम्मीरवर्मदेव के शासन काल का वि० सं० १३६८ का लेख उत्कीर्ण है। हीरालाल— ए० इ० भाग २०, पृ० १३४; माधुरी, भाग ५, खण्ड २, क्रमांक २।

(उ) चन्देलकालीन सती-स्मारक जिस पर वि० सं० १३४८ का लेख उत्कीर्ण है। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ५३।

१७७५. अर्दोनी (मोरेना)

(अ) दो सती-स्मारक जिनमें एक पर वि० सं० १४४२ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ३१।

(आ) प्राचीन मन्दिर। वही।

(इ) प्राचीन बावड़ी। वही।

१७७६. अन्तरा (शहडोल)

कलचुरि कालीन मन्दिरों के भग्नावशेष। आ० क० त्रि० पृ० २४२।

१७७७. अन्तरालिया (मन्दसौर)

प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

१७७८. अफजलपुर (मन्दसौर)

कूप जिसमें प्राचीन मूर्तियाँ तथा अन्य भग्नावशेष लगे हैं। प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९०५ पृ० ६४।

१७७९. अभान (दमोह)

कलचुरि कालीन प्रतिमाओं के भग्नावशेष। आ० क० त्रि० पृ० १६।

१७८०. अमझेरा (धार)

(अ) दो प्राचीन तालाब के समूह जो ब्रह्म-कुण्ड तथा सूर्य-कुण्ड के नाम से प्रसिद्ध हैं। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

(आ) दो प्राचीन बावड़ी जो 'सास-की-बावड़ी' तथा 'बहूजी-की-बावड़ी' के नाम से प्रसिद्ध हैं। वही।

(इ) लगभग २५ सती-स्तम्भों का समूह । **वही ।**

१७८१. अमरकंटक (शहडोल)

(अ) 'नर्मदा-माई' का मन्दिर । **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २३४; क० लि० ए० रि० पृ० ५६ ।**

(आ) एक मन्दिर के भग्नावशेष, जिसमें चतुर्भुजी 'नर्मदा-माई' की प्रतिमा है । **क० आ० स० इ० रि० भाग ६, पृ० २३१; क० लि० ए० रि० पृ० ५७; है० त्रि० मा० पृ० ५६ ।**

(इ) प्राचीन कुण्ड के भग्नावशेष जो स्थानीय मान्यताओं के अनुसार नर्मदा का उद्गम स्थल था । **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २३२; क० लि० ए० रि० पृ० ५८; है० त्रि० मा० पृ० ५८-५६ ।**

(ई) 'सावित्री-नाला' के निकट एक प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष । **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २३४-३५ ।**

(उ) कलचुरि कालीन दो सवारों की प्रतिमाएँ । **है० त्रि० मा० पृ० १०८; चित्र ५१ अ-ब ।**

(ऊ) आराधना की मुद्रा में बैठे एक मनुष्य की प्रतिमा जिसके निम्न भाग पर कलचुरि संवत् ६२२ का लेख उत्कीर्ण है । **ए० रि० भाग १५, पृ० ५०६; क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २३३; प्र० रि० आ० स० ई० वे० स० १६२०-२१, पृ० ५५; है० त्रि० मा० पृ० १०७, चित्र ४६-अ ।**

(ए) उक्त प्रतिमा से मिलती-जुलती एक अन्य प्रतिमा जिस पर कोई लेख उत्कीर्ण नहीं है । **वही ।**

(ऐ) 'करन मन्दिर' के लगभग २०० फुट उत्तर की ओर स्थित एक मन्दिर के भग्नावशेष । **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २३० ।**

(ओ) 'नर्मदा' की एक अन्य प्रतिमा जो कलचूरि कालीन है । **आ० क० त्रि० पृ० २२-२३ ।**

१७८२. अमरोल (ग्वालियर)

सती-स्तम्भ जिस पर बल्लनदेव का लेख उत्कीर्ण है । **ग्वा० पु० रि० संवत् १९९६, क्रमांक ५ ।**

१७८३. अमलेढा (मोरेना)

दो सती-स्तम्भ के समूह, जिन पर अस्पष्ट शिलालेख हैं । **ग्वा० पु० रि० १९२६-३०, पृ० ३१ ।**

४६

१७८४. अमेरा (विदिशा)

(अ) एक प्राचीन तालाब जिसके मेड़ में लगे वि० सं० ११५१ के शिलालेख में मेड़ को परमार शासक नरवर्मन् के शासन काल में विक्रम नामक ब्राह्मण द्वारा बनाये जाने का उल्लेख है । **ग्वा० पु० रि० १९२३-२४, पृ० ७ ।**

(आ) लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष जिसे स्थानीय 'वेदी' के नाम से पुकारा जाता है । **वही ।**

(इ) लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का भवन जिसे 'वेदी' कहा जाता है । **वही ।**

१७८५. अमोदा (जबलपुर)

(अ) गोंड शासक हृदय साहि के शासन काल का सती- स्मारक जिस पर संवत् १५४५ का लेख उत्कीर्णं है । **हीरालाल सूची, क्रमांक ७८ ।**

(आ) गोंड शासक प्रेम साहि के शासन काल के दो सती-स्मारक जिन पर संवत् १४४५ तथा १४८० के लेख उत्कीर्ण हैं । **वही ।**

(इ) गोंड शासक प्रेम नारायण के शासन काल का सती-स्मारक जिस पर संवत् १६५१ का लेख उत्कीर्ण है । **ज० डि० ग० पृ० ६६७ ।**

१७८६. आल्हा-घाट (रीवा)

कलचुरि कालीन प्रतिमाएँ । **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ११४-१५ ।**

१७८७. अहलवारा (होशंगाबाद)

मध्यकालीन प्रतिमाएँ । **इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९ ।**

१७८८. आगरा (उज्जैन)

प्राचीन तालाब के मेड़ के भग्नावशेष । **ग्वा० पु० रि० १९१४-१५, पृ० २७ ।**

१७८९. आंदलखेड़ा (राजगढ़)

सती-स्तम्भ जिस पर वि० सं० ९४४ का लेख उत्कीर्ण है । **से० इ० स्टे० ग० पृ० १६२ ।**

१७९०. आमदपुर (विदिशा)

गाँव के उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित पहाड़ी पर एक प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष । **ग्वा० पु० रि० १९१४-१५ ।**

१७९१. आमला (बैतूल)

गोंड शासन कालीन दुर्ग । **म० पु० रू० पृ० ९८ ।**

१७९२. आरंग (रायपुर)

(अ) 'भाँड-देवल' मन्दिर के निकट एक अन्य मन्दिर के भग्नावशेष । **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १६२ ।**

(आ) प्राचीन टीला जिसमें प्राचीन ईंट, मिट्टी के बरतन आदि प्राप्त हुए। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १६०; वही, भाग १७, पृ० २१।

१७६३. आलापुर (मोरेना)

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९१७-१८।

१७६४. आवरा (मन्दसौर)

प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। हे० म० इ०।

१७६५. आष्टा (सिवनी)

एक हेमाडपन्ति मन्दिर जिसमें अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण है। हीरालाल सूची, क्रमांक १२८।

१७६६. इमली टिकरा (सरगुजा)

प्राचीन प्रतिमाएँ तथा सती-स्तम्भ। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ६१।

१७६७. इन्दौर (गुना)

(अ) स्मारक-स्तम्भ जिस पर वि० सं० ६०२ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९३६-३७, पृ० २५।

(आ) स्मारक-स्तम्भ जिस पर वि० सं० ९२० का लेख उत्कीर्ण है। वही।

(इ) स्मारक-स्तम्भ जिस पर वि० सं० ११७७ का लेख उत्कीर्ण है। लेख में अजयपाल नामक योद्धा के शत्रुओं पर विजय पाकर युद्ध क्षेत्र में हत होने का उल्लेख है। वही।

(ई) स्मारक-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १३४५ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८०, क्रमांक ९।

(उ) गाँव के उत्तर की ओर ऐरापत नदी के तट पर अनेक स्मारक-स्तम्भ जिनमें कुछ पर १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के लेख उत्कीर्ण हैं। ग्वा० पु० रि० १९३६-३७, पृ० ९।

१७६८. इंधर (शिवपुरी)

(अ) गाँव के उत्तर तथा पूर्व की ओर स्थित लगभग ८वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिरों के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० ८।

(आ) गाँव में पश्चिम की ओर से आने वाली सड़क पर स्मारक-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १३४५ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० २०-२४।

(इ) गाँव के पश्चिम की ओर प्राचीन नगर के भग्नावशेष जो लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी के हैं। ग्वा० पु० रि० १९२४-२५, पृ० ८।

(ई) गाँव के उत्तर की ओर नदी के तट पर प्राचीन नगर के भग्नावशेष जो लगभग ८वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के हैं। वही।

१७९९. उज्जैन (उज्जैन)

(अ) लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का तोरण जो 'चौबीस-खम्भा दरवाजा' कहलाता है। **आ० ग्वा० पृ० १४४।**

(आ) 'गढ़' नामक दूसरी-तीसरी शताब्दी ई० पू० का प्राचीन टीला जिसका १९३८-३९ में उत्खनन किया गया। उत्खनन में पंचमार्क सिक्के, प्राचीन मिट्टी के बरतन, तथा अन्य पुरावशेष प्राप्त हुए। **वही।**

(इ) वैश्या टेकरी के लगभग १ मील पूर्व की ओर स्थित कुम्हार टेकरी जिसका १९३८-३९ में उत्खनन किया गया। **ग्वा० पु० रि० १९३८-३९, पृ० १४।**

१८००. उदयगिरि (विदिशा)

(अ) गुप्तकालीन मन्दिर के भग्नावशेष। **म० उ० हि०।**

(आ) सिंह-शीर्ष युक्त स्तम्भ के भग्नावशेष। **क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ५६।**

१८०१. उदयपुर (विदिशा)

(अ) 'बीजा-मण्डल' नामक मसजिद जो मूलरूप में लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी में बना मन्दिर था। इसमें चार शिलालेख प्राप्त हुए। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० ८४-८५; आ० ग्वा० पृ० १३८।**

(आ) लगभग ११वी-१२वीं शताब्दी ईसवी में बना मन्दिर जो 'पिसनहारी मन्दिर' कहलाता है। **आ० ग्वा० पृ० १३९।**

(इ) लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी में बने मन्दिर के भग्नावशेष, जो 'बारहखम्भी' कहलाता है। **आ० ग्वा० पृ० १३९।**

१८०२. उन्दासा (उज्जैन)

स्मारक-स्तम्भ जिस पर लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० १९३५-३६, पृ० ३९।**

१८०३. उमरधा (होशंगाबाद)

सती-प्रस्तर जिस पर अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण है। **हीरालाल सूची, क्रमांक १३५।**

१८०४. उमरिया-पान (जबलपुर)

देव तथा देवियों की प्रतिमाएँ। **इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८।**

१८०५. एरण (सागर)

(अ) नाग-प्रतिमा का धड़ जो संवत् ३०० ईसवी के लगभग का है। **म० भा० वर्ष ३, अंक ३ (१९६०), पृ० १-५।**

(आ) गोंड शासन कालीन दुर्ग। **म० पु० रू० पृ० ९७।**

(इ) अनेक सती-स्मारक । क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ८६-६० ।

१८०६. ऐंती (मोरेना)

लगगग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के दो मन्दिर जिन्हें बारादरी कहते हैं। ग्वा० पु० रि० १६१४-१५, पृ० २७।

१८०७. ककरारी (रीवा)

'दरवाजा' नामक स्तम्भ-युक्त भवन जो सम्भवतः कलचुरि कालीन है। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० १५।

१८०८. कजली कनोजिया (बैतूल)

एक प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। क० लि० ए० रि० पृ० ४५।

१८०९. कदवाहा (गुना)

(अ) सती-स्मारक जिस पर वि० सं० १४५१ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १६१८-१६।

(आ) तालाव के निकट सती-स्मारक जिस पर वि० सं० ११२० (?) का अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १६२७-२८, पृ० ३६।

(इ) सती-स्मारक जिस पर वि० सं० १४६ (?) का लेख उत्कीर्ण है। वही।

(ई) सती-स्मारक जिस पर वि० सं० १४७६ का लेख उत्कीर्ण है। वही।

१८१० कानवन (धार)

स्तम्भ, जिस पर तिथि रहित लेख उत्कीर्ण है। से० इ० ग० सी० पृ० ५१४।

१८११. कनौदा (दमोह)

(अ) एक प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। क० लि० ए० रि० पृ० ३१।

(आ) तीन स्मृति-प्रस्तर, जिन पर संवत् १३४२, १३५० तथा १३६० के लेख उत्कीर्ण हैं। हीरालाल सूची, क्रमांक ११५।

१८१२. कलां (रीवा)

पूर्व-मध्यकालीन मन्दिर। इ० आ० रि० १६६०-६१, पृ० ६२।

१८१३. कसडोल (रायपुर)

प्राचीन दुर्ग के भग्नावशेष। रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१६०६) पृ० २६४।

१८१४. कांकेर (बस्तर)

प्राचीन दुर्ग तथा मन्दिर के भग्नावशेष। क० लि० ए० रि० पृ० ५०।

१८१५. कागपुर (विदिशा)

गांव के पश्चिम की ओर सड़क के किनारे लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिरों के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १६३१-३२, पृ० ७।

१८१६. कांदा-डोंगर (रायपुर)

प्राचीन दुर्ग के भग्नावशेष । **रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर** (१९०९), पृ० २९३ ।

१८१७. कापू (सरगुजा)

(अ) प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष । **क० आ० स० इ० रि० भाग १३**, पृ० ५९।

(आ) प्राचीन सती-स्तम्भ । **वही** ।

१८१८. कामेद (उज्जैन)

लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष । **ग्वा० पु० रि० १९३४-३५**, पृ० १० ।

१८१९. कायथा (उज्जैन)

प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष । **हे० म० इ०** ।

१८२०. कालीपीठ (राजगढ़)

लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी की नागी प्रतिमा । **इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५**, पृ० ४-३ ।

१८२१. कालोकोट (मन्दसौर)

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की प्रतिमाएँ । **इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६**, पृ० ४-४ ।

१८२२. किती (भिण्ड)

स्तम्भ जिस पर हनुमान की आकृति बनी है तथा वि० सं० १५५३ का लेख उत्कीर्ण है । **ग्वा० पु० रि० १९३९-४०**, पृ० १७ ।

१८२३. किर्नापुर (बालाघाट)

कुछ प्राचीन मन्दिर । **क० लि० ए० रि०** पृ० २५ ।

१८२४. किरारी (बिलासपुर)

लगभग दूसरी शताब्दी ईसवी का खण्डित काष्ठ-स्तम्भ जिस पर ब्राह्मी लिपि में लेख उत्कीर्ण है । **ए० इ० भाग १८**, पृ० १५२; **हीरालाल सूची**, क्रमांक २१४ ।

१८२५. कुण्डलपुर (दमोह)

(अ) गुप्तकालीन सपाट छत का मन्दिर । **क० आ० स० इ० रि० भाग ७**, पृ० ५८; **वही, भाग २१**, पृ० १६७ ।

(आ) प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष । **क० लि० ए० रि०** पृ० ३२।

१८२६. कुण्डलपुर (शिवपुरी)

(अ) तालाब के तट पर लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष । **ग्वा० पु० रि० १९२२-२३**।

(आ) लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी का नागदेव का मन्दिर। निकट ही एक विशाल नाग-मूर्ति प्राप्त है। **वही।**

(इ) प्राचीन गढ़ी के भग्नावशेष। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार यही स्थान हरिवंश का कुन्तलपुर है जो कृष्ण की पत्नी रुक्मणी का जन्म-स्थान था। **वही।**

१८२७. कुम्भी (जबलपुर)

प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष जो सम्भवतः कलचुरि कालीन है। **क० लि० ए० रि० पृ० २८; ज० डि० ग० पृ० ६८६।**

१८२८. कुरवई (बिलासपुर)

लगभग ६वीं-७वीं शताब्दी ईसवी का ईंटों का बना मन्दिर। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १६६।**

१८२९. कुर्रा (रायपुर)

कलचुरि कालीन भवन के भग्नावशेष। **रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०९) पृ० ३०४।**

१८३०. कुलवर (गुना)

सती-स्तम्भ जिस पर उत्कीर्ण वि० सं० १३२९ के लेख में कछवाहा राजपूत सिंहदेव की दो पत्नियाँ कुवलयदेवी तथा कुन्तादेवी के सती होने का उल्लेख है। मृत व्यक्ति के भाई देवपालदेव ने स्तम्भ को स्थापित किया। **ग्वा० पु० रि० १९२७-२८, पृ० ८।**

१८३१. कुंवारा (रायपुर)

प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। **क० लि० ए० रि० पृ० ५१।**

१८३२. कूंड़ा (जबलपुर)

(अ) सपाट छत का मन्दिर। **हीरालाल सूची, पृ० ४५।**

(आ) लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी की प्रतिमाएँ। **इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।**

(इ) स्मृति-शिला जिस पर तिथि रहित लेख उत्कीर्ण है। **हीरालाल सूची, क्रमांक ७७।**

१८३३. कुलोन (जबलपुर)

मध्यकालीन अनेक प्रतिमाएँ। **इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६०।**

१८३४. केथुली (मन्दसौर)

(अ) लगभग ११वीं-१२वीं शताब्ती ईसवी की प्रतिमाएँ। **इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० ८-४।**

(आ) विभिन्न पुरावशेष। **इ० आ० रि० १९५४-५५, पृ० ६२।**

१८३५. केनरी (छतरपुर)

प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९८।

१८३६. केरबन पिपरिया (जबलपुर)

स्मृति-शिला, जिस पर वि० सं० १३०८ का लेख उत्कीर्ण है। हीरालाल सूची, क्रमांक ७७।

१८३७. केवटी-कुण्ड (रीवा)

(अ) प्राचीन गुफा जिसमें दूसरी शताब्दी ई० पू० का पाली भाषा में लेख उत्कीर्ण है। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ११६।

(आ) तीन स्तम्भ जिन पर वि० सं० १३९७ के लेख उत्कीर्ण हैं। भण्डारकर सूची, क्रमांक ७०२।

१८३८. केसूर (धार)

प्राचीन टीला जिसमें प्राचीन ईंटों तथा मिट्टी के बरतन आदि के भग्नावशेष प्राप्त होते हैं। म० भा० पु० रि० १९४९-५०।

१८३९. कैलधार (शिवपुरी)

'कपिल-गुफा' जो स्थानीय मान्यताओं के अनुसार कपिल मुनि द्वारा निवास के लिये उपयोग की गई थी। इ० स्टे० ग० पृ० ७५।

१८४०. कोड़ (धार)

प्राचीन मन्दिर जिसमें अभिलेख प्राप्त हुआ। से० इ० ग० सी० पृ० ५१४।

१८४१. कोनी (बिलासपुर)

कलचुरि कालीन मन्दिर के भग्नावशेष जिसमें पृथ्वीदेव द्वितीय का कलचुरि संवत् ९०० का शिलालेख प्राप्त हुआ। ए० इ० भाग २७, पृ० २७६।

१८४२. कोटगढ़ (बिलासपुर)

प्राचीन दुर्ग, जिसमें मन्दिर के भग्नावशेष प्राप्त हैं। दुर्ग के द्वार पर १० वीं शताब्दी ईसवी का लेख उत्कीर्ण है। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २१२-१३; क० लि० ए० रि० पृ० ६१; बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९१०), पृ० २७३।

१८४३. कोटा (दमोह)

गोंड शासन कालीन दुर्ग। म० पु० रू० पृ० ९७।

१८४४. कोटा-उधमडे (शिवपुरी)

लगभग ८वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिरों का समूह। ग्वा० पु० रि० १९२२-२३।

१८४५. कोतवाल (मोरेना)

(अ) प्राचीन टीले जिनमें नाग शासकों के सिक्के प्राप्त होते हैं। कुछ विद्वानों के मतानुसार ये प्राचीन कान्तिपुरी, जो नाग शासकों की राजधानी थी, के भग्नावशेष हैं। ग्वा० पु० रि० १९१३-१४।

(आ) स्तम्भ जिस पर वि० सं० १३३९ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९७२, क्रमांक २४।

१८४६. कोरबा (बिलासपुर)

प्राचीन गुफा, जो रतनपुर के पूर्व में ३२ मील पर स्थित है। म० पु० रू० पृ० ९२।

१८४७. कोलारस (शिवपुरी)

सती-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १३४८ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९१८-१९।

१८४८. कोसगई (बिलासपुर)

कलचुरि कालीन दुर्ग तथा मन्दिर के भग्नावशेष। भग्नावशेषों से प्राप्त दो शिलालेखों में कलचुरि शासक वाहर का उल्लेख है। एक शिलालेख वि० सं० १५७० का है। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० १५३-५७; क० लि० ए० रि० पृ० ६१।

१८४९. खचरोद (उज्जैन)

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी-ईसवी का प्राचीन भवन जो स्थानीय 'महल' कहलाता है। ग्वा० पु० रि० १९१७-१८।

१८५०. खजुराहो (छतरपुर)

(अ) चित्रगुप्त मन्दिर के उत्तर-पश्चिम में लगभग २०० गज की दूरी पर चोप्रा ताल नामक वर्गाकार जलाशय जिसके चारों ओर सोपान श्रृंखलाएँ हैं तथा केन्द्र में स्तम्भों पर आश्रित एक छोटा-सा मण्डप है। यह मण्डप मूलतः चौखण्डा रहा प्रतीत होता है। सम्भवतः यह एक मन्दिर था, किन्तु किस देवता का, यह कहना कठिन है। ख० धा० पृ० १३-३५; ख० कु० पृ०५१-६०; ख० दे० प्र० पृ० १२-२२; ख० स्क० सि० पृ० १०-१८; ख० जे० पृ० ८७-१६०; ए० आइ० क्रमांक १५।

(आ) नवग्रह-पट्ट जिनके प्राप्ति स्थान निम्नलिखित हैं—

(१) लक्ष्मण मन्दिर
(२) जगदम्बी मन्दिर
(३) खजुराहो संग्रहालय
(४) दूलादेव मन्दिर
(५) चतुर्भुज मन्दिर

(६) जवारी मन्दिर
(७) घण्टई मन्दिर
(८) पार्श्वनाथ मन्दिर
(९) शान्तिनाथ मन्दिर
(१०) कन्दरिया मन्दिर
(११) राजकीय संग्रहालय, धुबेला ।

ख० दे० प्र० पृ० १९७-१९८, क्रमांक १-३६; वही, पृ० १८९-१९६ ।

(इ) अष्ट-दिक्पाल प्रतिमाएँ जिनके प्राप्ति-स्थान निम्नलिखित हैं—

इन्द्र प्रतिमाओं के प्राप्ति स्थान —

(१) लक्ष्मण मन्दिर
(२) जगदम्बी मन्दिर
(३) चित्रगुप्त मन्दिर
(४) दूलादेव मन्दिर
(५) चतुर्भुज मन्दिर
(६) वामन मन्दिर
(७) जवारी मन्दिर
(८) पार्श्वनाथ मन्दिर
(९) आदिनाथ मन्दिर
(१०) कन्दरिया मन्दिर
(११) विश्वनाथ मन्दिर
(१२) खजुराहो संग्रहालय

ख० दे० प्र० पृ० २३९-४०, क्रमांक १-२९; वही, पृ० २०३-२१० ।

(ई) अग्नि प्रतिमाओं के प्राप्ति स्थान—

(१) लक्ष्मण मन्दिर
(२) जगदम्बी मन्दिर
(३) चित्रगुप्त मन्दिर
(४) दूलादेव मन्दिर
(५) चतुर्भुज मन्दिर
(६) वामन मन्दिर
(७) जवारी मन्दिर
(८) पार्श्वनाथ मन्दिर
(९) आदिनाथ मन्दिर

(१०) कन्दरिया मन्दिर
(११) विश्वनाथ मन्दिर
(१२) खजुराहो संग्रहालय

ख० दे० प्र० पृ० २४०-४१, क्रमांक १-३६; वही, पृ० २१०-२१६ ।

(उ) यम प्रतिमाओं के प्राप्ति स्थान—

(१) लक्ष्मण मन्दिर
(२) जगदम्बी मन्दिर
(३) चित्रगुप्त मन्दिर
(४) दूलादेव मन्दिर
(५) चतुर्भुज मन्दिर
(६) वामन मन्दिर
(७) जवारी मन्दिर
(८) पार्श्वनाथ मन्दिर
(९) आदिनाथ मन्दिर
(१०) कन्दरिया मन्दिर
(११) विश्वनाथ मन्दिर

ख० दे० प्र० पृ० २४१, क्रमांक १-२३; वही, पृ० २१६-२१८ ।

(ऊ) निर्ऋति प्रतिमाओं के प्राप्ति स्थान—

(१) लक्ष्मण मन्दिर
(२) जगदम्बी मन्दिर
(३) चित्रगुप्त मन्दिर
(४) दूलादेव मन्दिर
(५) चतुर्भुज मन्दिर
(६) वामन मन्दिर
(७) जवारी मन्दिर
(८) पार्श्वनाथ मन्दिर
(९) आदिनाथ मन्दिर
(१०) कन्दरिया मन्दिर
(११) विश्वनाथ मन्दिर
(१२) खजुराहो संग्रहालय

ख० दे० प्र० पृ० २४२ क्रमांक १-२५; वही, पृ० २१९-२२३ ।

(ए) वरुण प्रतिमाओं के प्राप्ति स्थान—

(१) लक्ष्मण मन्दिर

(२) जगदम्बी मन्दिर
(३) चित्रगुप्त मन्दिर
(४) दूलादेव मन्दिर
(५) चतुर्भुज मन्दिर
(६) वामन मन्दिर
(७) जवारी मन्दिर
(८) पार्श्वनाथ मन्दिर
(९) आदिनाथ मन्दिर
(१०) कन्दरिया मन्दिर
(११) विश्वनाथ मन्दिर
(१२) खजुराहो संग्रहालय

ख० दे० प्र० पृ० २४२-२४३, क्रमांक १-२५; वही, पृ० २२४-२२७।

(ऐ) वायु प्रतिमाओं के प्राप्ति स्थान—**वही। ख० दे० प्र० पृ० २४३-२४४, क्रमांक १-२२; वही, पृ० २२७-२३०।**

(ओ) कुबेर प्रतिमाओं के प्राप्ति स्थान—

(१) लक्ष्मण मन्दिर
(२) जगदम्बी मन्दिर
(३) दूलादेव मन्दिर
(४) चतुर्भुज मन्दिर
(५) वामन मन्दिर
(६) पार्श्वनाथ मन्दिर
(७) कन्दरिया मन्दिर
(८) विश्वनाथ मन्दिर
(९) खजुराहो संग्रहालय

ख० दे० प्र० पृ० २४४-४५, क्रमांक १-३७; वही, पृ० २३०-२३६।

(औ) ईशान प्रतिमाओं के प्राप्ति स्थान—

(१) लक्ष्मण मन्दिर
(२) जगदम्बी मन्दिर
(३) चित्रगुप्त मन्दिर
(४) दूलादेव मन्दिर
(५) चतुर्भुज मन्दिर
(६) वामन मन्दिर

(७) जवारी मन्दिर
(८) पार्श्वनाथ मन्दिर
(९) आदिनाथ मन्दिर
(१०) कन्दरिया मन्दिर
(११) विश्वनाथ मन्दिर

ख० दे० प्र० पृ० २४५, क्रमांक १-२३; वही, पृ० २३६-२३८।

(क) ब्रह्मा की प्रतिमाएँ जिनके प्राप्ति स्थान निम्नलिखित हैं—

(१) वामन मन्दिर
(२) नन्दी मन्दिर
(३) कन्दरिया मन्दिर
(४) लक्ष्मण मन्दिर
(५) पार्श्वनाथ मन्दिर
(६) आदिनाथ मन्दिर
(७) विश्वनाथ मन्दिर
(८) चतुर्भुज मन्दिर
(९) जवारी मन्दिर
(१०) दूलादेव मन्दिर
(११) जगदम्बी मन्दिर
(१२) खजुराहो संग्रहालय

ख० स्क० सि० पृ० ८७-८९।

(ख) वायु-वरुण प्रतिमा जो कन्दरिया मन्दिर में बनी है। **ख० स्क० सि० पृ० १०३।**

(ग) बृहस्पति-शुक्र प्रतिमा जो लक्ष्मण मन्दिर में बनी है। **वही, पृ० १०३-१०४।**

(घ) राहु-केतु प्रतिमा जो खजुराहो संग्रहालय में संरक्षित है। **वही, पृ० १०४।**

(ङ) यम-वायु प्रतिमा जो आदिनाथ मन्दिर में बनी है। **वही, पृ० १०४।**

(च) वरुण-वायु प्रतिमा जो जगदम्बी मन्दिर में बनी है। **वही, पृ० १०४-१०५।**

(छ) विष्णु (?) प्रतिमा जो कन्दरिया मन्दिर में बनी है। **वही, पृ० १०५।**

(ज) सूर्य-शिव प्रतिमा जो कन्दरिया, चतुर्भुज, जगदम्बी तथा दूलादेव मन्दिरों में बनी है। **वही, पृ० १०५-१०६।**

(झ) सूर्य-विष्णु-शिव प्रतिमा जो लक्ष्मण तथा चतुर्भुज मन्दिरों में बनी है। **वही, पृ० १०६।**

(ञ) सूर्य-विष्णु-शिव-ब्रह्मा प्रतिमा जो प्रतापेश्वर मन्दिर में बनी है। **वही, पृ० १०६।**

(ट) भौम अथवा शनि प्रतिमा जो पार्श्वनाथ मन्दिर तथा खजुराहो संग्रहालय में रखी है। वही, पृ० १०६-१०७।

(ठ) पत्र लिखती स्त्री की प्रतिमा जो इण्डियन म्यूजियम, कलकत्ता में संग्रहीत है। **स० इ० स्क० पृ० १०९९, चित्र १७५।**

१८५१. खजुरी (जबलपुर)

स्मृति-शिला, जिसपर वि० सं० १३५४ का लेख उत्कीर्ण है जिसमें बनाफ़र होल्जू के वीरक्षेत्र में देहान्त होने का उल्लेख है। **हीरालाल सूची, क्रमांक ५८।**

१८५२. खडलाई (धार)

प्राचीन शैलकृत्त प्रतिमाएँ। **ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।**

१८५३. खण्डवा (पूर्व निमाड़)

(अ) नगर के उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित प्राचीन पद्म-कुण्ड जिसकी मेढ़ में प्रतिमाएँ लगी हैं। **क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ११३।**

(आ) प्राचीन 'भैरव-ताल' के भग्नावशेष। **वही।**

(इ) नगर के दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित किलल-कुण्ड। **वही।**

(ई) प्राचीन भीम-कुण्ड, सूरज-कुण्ड, रामेश्वर-कुण्ड। **इ० नि० ग० पृ० ४६७।**

१८५४. खमतरा (जबलपुर)

देव तथा देवियों की प्राचीन प्रतिमाएँ। **इ० आ० रि १९६२-६३, पृ० ६८।**

१८५५. खमरिया (जबलपुर)

अनेक मध्यकालीन प्रतिमाएँ। **इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६०।**

१८५६. खरगोन (पश्चिम निमाड़)

नवग्रहों का प्राचीन मन्दिर। **ग्वा० पु० रि० १९२४-२५, पृ० १२; बे० नि० डि० ग० पृ० ४४५।**

१८५७. खरोद (बिलासपुर)

लगभग ७वीं शताब्दी ईसवी के पाँच छोटे मन्दिर। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २०३; क० लि० ए० रि० पृ० ६०-६१।**

१८५८. खरोद (बिलासपुर)

लक्ष्मेश्वर का मन्दिर जहाँ से चेदि संवत् ९३३ का अभिलेख प्राप्त हुआ था। **बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९१०), पृ० २७२।**

१८५९. खलारी (जबलपुर)

प्राचीन प्रतिमाएँ। **इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८।**

१८६०. खलारी (जबलपुर)

एक प्रतिमा जिस पर **'महाराजाधिराज भूमिरण'** उत्कीर्ण हैं। **हीरालाल—'जबलपुर ज्योति', पृ० १४४; हीरालाल सूची क्रमांक ६८।**

१८६१. खलारी (रायपुर)

(अ) कलचुरि कालीन मन्दिर जिसे एक मोची ने निर्माण करवाया था। **रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०९) पृ० २९७।**

(आ) प्राचीन सती-स्तम्भ। **वही, पृ० २९८।**

१८६२. खानपुर (गुना)

गाँव के पूर्व की ओर स्थित अनेक सती-प्रस्तर जिनमें एक पर वि० सं० १५४५ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पृ० रि० १९२४-२५, पृ० १२।**

१८६३. खामा (जबलपुर)

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का गरुड़-स्तम्भ। **इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ७२।**

१८६४. खिरकी (होशंगाबाद)

प्राचीन प्रतिमाएँ। **इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८।**

१८६५. खुदावली (ग्वालियर)

लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिरों के तीन समूहों के भग्नावशेष। **ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० १६।**

१८६६. खुरई (सागर)

गोंड शासन कालीन दुर्ग। **म० पु० रू० पृ० ९७।**

१८६७. खोड़ (मन्दसौर)

(अ) 'नौ-तोरण' मन्दिर जो लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी का है। **आ० ग्वा० पृ० ९९।**

(आ) 'तोरण-मन्दिर' जो समकालीन है। **ग्वा० पु० रि० १९१८-१९।**

(इ) 'तोरण-मन्दिर' जिसमें कुछ कोठरियाँ बनी हैं। **वही।**

(ई) 'भोंवारा-मन्दिर' जिसके केवल भग्नावशेष उपलब्ध हैं। **वही।**

(उ) 'तोरण-मन्दिर' के निकट एक अन्य मन्दिर के भग्नावशेष। **वही।**

(ऊ) एक मन्दिर का केवल आधार जिस पर चित्र उत्कीर्ण है। **वही।**

(ए) गाँव के बाहर तीन मन्दिरों के भग्नावशेष। **वही।**

(ऐ) दो मन्दिरों के भग्नावशेष। **वही।**

(ओ) 'चितेले की बावड़ी' नामक कूप। वही।

(औ) 'नौ-तोरण' मन्दिर के निकट समकालीन कूप। वही।

(क) 'विलैया बावड़ी नामक कूप। वही।

(ख) तोरण मन्दिर के निकट कूप। वही।

(ग) अट्ठाइस सती-स्तम्भों का समूह। वही।

१८६८. खोपरा

प्राचीन प्रतिमाओं तथा स्तम्भों के भग्नावशेष। क० लि० ए० रि० पृ० ५१।

१८६९. खेरात (भिण्ड)

चम्बल के बीहड़ों में टीले पर लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के ईंटों के बने मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९३४-३५, पृ० ११।

१८७०. खैरी (बैतूल)

बैतूल के पश्चिम में १२ मील पर स्थित ५ प्राचीन गुफाएँ। म० पु० रू० पृ० ९२।

१८७१. गजनीपुर (मन्दसौर)

प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष। हे० म० इ०।

१८७२. गढ़पेहरा (सागर)

डांगी शासकों का दुर्ग। म० पु० रू० पृ० ९७।

१८७३ गढ़-सिवनी (रायपुर)

प्राचीन दुर्ग के भग्नावशेष। रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०९), पृ० २९१।

१८७४. गढ़ाकोटा (सागर)

गोंड-शासन कालीन दुर्ग। म० पु० रू० पृ० ९७।

१८७५. गढ़ेला (शिवपुरी)

स्मारक-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १३५३ का लेख उत्कीर्ण है। लेख में किसी भट्टारक कुमारदेव तथा किसी जैन का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

१८७६. गतवाया (शिवपुरी)

लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२२-२३।

१८७७. गतौरा (बिलासपुर)

अनेक प्राचीन मन्दिर तथा प्रतिमाओं के भग्नावशेष। क० लि० ए० रि० पृ० ६०।

१८७८. गदाजर (मोरेना)

प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९१४-१५।

१८७९. गन्धावल (उज्जैन)

(अ) लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का गन्धर्वसेन का मन्दिर। **ग्वा० पु० रि० १९४२-४६,** पृ० २२-२३।

(आ) मुस्लिम दरगाह में लगे लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। **ग्वा० पु० रि० १९४२-४६।**

(इ) स्मारक-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १३४० का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७४, क्रमांक ४०।**

१८८०. गनेशपुरा (विदिशा)

वेस नदी के दक्षिण तट पर प्राचीन टीले से प्राप्त लगभग दूसरी शताब्दी ई० पू० के दो यक्ष प्रतिमाओं के धड़। **इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० ४-३।**

१८८१. ग्यारसपुर (विदिशा)

(अ) सड़क के किनारे बना लगभग ९वीं शताब्दी ईसवी का 'अठखम्भा-मन्दिर' जिसके सभा-मण्डप के आठों स्तम्भ अभी यथास्थित खड़े हैं। एक स्तम्भ पर वि० सं० १०३९ का लेख उत्कीर्ण है। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० ९०-९३; वही, भाग १०, पृ० ३१-३४; आ० ग्वा० पृ० ९१-९२।**

(आ) मानसरोवर तालाब के उत्तर की ओर पहाड़ी के पूर्वी ढलान पर प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष जो लगभग ९वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी के हैं। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७ पृ० ९०-९३; वही भाग १०, पृ० ३१-३४; आ० ग्वा० पृ० ९२।**

(इ) गाँव के पूर्व की ओर लगभग आधे मील की दूरी पर स्मारक-स्तम्भ जिस पर लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी का अस्पष्ट शिलालेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० १९३१-३२, पृ० ४।**

(ई) मानसरोवर तालाब के दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित सती-स्मारकों का समूह। **आ० ग्वा० पृ० ९४।**

(उ) स्तम्भ जिस पर वि० सं० १५५१ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक ९३।**

१८८२. ग्वालियर दुर्ग (ग्वालियर)

(अ) लगभग ३री-४थी शताब्दी ईसवी में बना 'सूरज-कुण्ड' तालाब। **क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३४२, ३५३।**

(आ) 'लक्ष्मण-द्वार' जिसका नाम तोमर (?) शासक लक्ष्मणसिंह के नाम पर पड़ा है। संभवतः यह ९वीं शताब्दी ईसवी में बनाया गया था। **डा० फो० ग्वा पृ० ३९।**

(इ) 'हिंडोला-द्वार', जिसे बादल-महल द्वार भी कहते हैं। इसे तोमरों के शासन काल में बनाया गया था। **वही।**

(ई) 'गणेश-द्वार' जिसे तोमर शासक राजा डूंगरसिंह के शासन-काल में बनाया गया था। **वही।**

(उ) 'मानसरोवर' तालाब जिसे तोमर शासक मानसिंह के शासन-काल में बनवाया गया था। **वही, पृ० ५३।**

(ऊ) 'गंगोला-ताल'। **वही।**

(इ) 'एक-खम्भा-ताल', जिसमें एक ही पत्थर का बना खम्भा है। **वही।**

(ऐ) 'रानी-ताल'। **वही।**

(ओ) 'कटोरा-ताल'। **वही।**

(औ) 'चेदी-ताल'। **तही।**

(क) शैलकृत्त 'अनार-बावड़ी'। **वही, पृ० ५४।**

(ख) शैलकृत्त 'शरद-बावड़ी'। **वही।**

(ग) 'अस्सी-खम्भा' नामक बावड़ी। **वही, पृ० ५५।**

(घ) 'मान-मन्दिर' नामक महल जो तोमर शासक मानसिंह द्वारा निर्माण करवाया गया था। इसमें बने उत्तम मूर्ति-कला तथा चित्र-कला के कारण इसे 'चित्र-महल' भी कहते हैं। **क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३५७; डा० फो० ग्वा० पृ० ४०; पाटिल—'मान-मन्दिर'।**

(ङ) किले के उत्तर-पूर्व की ओर स्थित 'गुजरी-महल' जो तोमर शासक मानसिंह द्वारा अपनी प्रिय रानी मृगनयनी के लिये निर्माण करवाया गया था। **डा० फो० ग्वा० पृ० ४२-४३।**

(च) 'करन-मन्दिर' नामक महल जो लगभग १५वीं शताब्दी ईसवी में वनाया गया था। **वही।**

(छ) 'विक्रम-मन्दिर' नामक महल जो लगभग १५वीं शताब्दी ईसवी में बनाया गया था। **वही।**

(ज) 'ग्वालिप-मन्दिर' जिसे ग्वालिप नामक सन्त की स्मृति में बनवाया गया था। किंवदन्ति के अनुसार सूरजसेन को इसी सन्त ने ग्वालियर के किले को बनाने का प्रोत्साहन दिया था। **डा० फो० ग्वा० पृ० ४४।**

१८८३. गुर्गी (रीवा)

(अ) रेहूत किले में कलचुरि कालीन अनेक मन्दिरों के भग्नावशेष। **क० आ० स० इ० रि० भाग १९, पृ० ९८; हैं० त्रि० मा० पृ० ४४, चित्र ५ अ।**

(आ) दो प्राचीन मन्दिरों की नींव। **हैं० त्रि० मा० पृ० ४४।**

१८८४. गुजर्रा (रीवा)

पूर्व-मध्यकालीन मन्दिर। **इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।**

१८८५. गुर्जी-दर्शनी (जबलपुर)

कलचुरि कालीन प्रतिमाएँ। **म० पु० रू० पृ० ८४।**

१८८६. गुड़ार (शिवपुरी)

(अ) हनुमान-खो में प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। **ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० २५।**

(आ) सिंचाई-तालाब के पश्चिम तट पर लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी के दो मन्दिरों के भग्नावशेष। **वही।**

(इ) एक अन्य प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। **वही।**

(ई) नयागाँव में स्थित स्तम्भ पर उत्कीर्ण वि० सं० १४४ (५) का लेख। **ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ६२।**

(उ) माता के मन्दिर में रखी लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की प्रतिमाएँ। **ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० २३।**

(ऊ) सती-स्मारक जिस पर अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण है। **वही, पृ० २४।**

१८८७. गरूर (दुर्ग)

(अ) स्तम्भ जिस पर काकरय के सोमवंशी शासक राणक बाघराज के शासन काल का लेख उत्कीर्ण है। **इ० ए० १९२६, पृ० ४४; हीरालाल सूची, पृ० १३७; भण्डारकर सूची, क्रमांक १८९१।**

(आ) अनेक प्राचीन सती-स्तम्भ। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १४१।**

१८८८. गोपालतलाई (बैतूल)

प्राचीन गुफा जो मुलताई से दक्षिण में ६ मील पर स्थित है। **म० पु० रू० पृ० ९२।**

१८८९. गोहदी (भिण्ड)

प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। **ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ९।**

१८९०. गौरझामर (सागर)

गोंड शासन कालीन दुर्ग। **म० पु० रू० पृ० ९७।**

१८९१. घन्सोर (सिवनी)

कलचुरि कालीन लगभग २५ मन्दिरों के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १०७-८; क० लि० ए० रि० पृ० ३८; म० पु० रू० पृ० ८४।

१८९२. घिरोंगी (भिण्ड)

प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ५९।

१८९३. घुसई (मन्दसौर)

(अ) तालाब के तट पर प्राचीन मन्दिर। ग्वा० पु० रि०१९१६-१७।

(आ) दो सती-प्रस्तर जिनमें एक पर वि० सं० १३३४ का लेख उत्कीर्ण है। वही।

१८९४. चंचोड़ा (गुना)

(अ) लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० १०।

(आ) स्थानीय प्राचीन तालाब के तट पर रखा छः फुट सात इंच लम्बा एकाश्म स्तम्भ। वही।

१८९५. चन्दनखेड़ा (जबलपुर)

सती-प्रस्तर जिस पर लेख उत्कीर्ण है। हीरालाल सूची, क्रमांक ७८।

१८९६. चन्देरी (गुना)

'खण्डर' नामक पहाड़ी में शैलकृत्त जैन-प्रतिमाएँ जिस पर लगभग १३वीं शताब्दी ईसवी के लेख उत्कीर्ण हैं। गा० च० पृ० ३०।

१८९७. चन्देरी (गुना)

कीर्तिसागर तलाब जो प्रतिहार शासक कीर्तिराज द्वारा ११वीं शताब्दी ईसवी में बनाया गया था। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ४०५; गा० च० पृ० २८-२९।

१८९८. चन्द्रेह (सीधी)

कलचुरि कालीन मठ के भग्नावशेष। इसकी एक दीवार में लगे शिलालेख में इसका निर्माण कलचुरि संवत् ७२४ में किये जाने का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ९-११; हैं० त्रि० मा० पृ० ३६-४१, चित्र २-४।

१८९९. चपका (बस्तर)

छः सती-स्मारक जिन पर लेख उत्कीर्ण है। ए० इ० भाग ९, पृ० १६६; हीरालाल सूची, क्रमांक २९७।

१९००. चमो (भिण्ड)

मध्यकालीन मन्दिर तथा प्रतिमाओं के भग्नावशेष। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८।

१९०१. चँवरपाठा (नरसिंहपुर)

गोंड शासन कालीन दुर्ग। **म० पु० रू० प० ६८।**

१९०२. चिकलदा (धार)

नागदेव के दो प्राचीन मन्दिर। **हे० म० इ०।**

१९०३. चितारा (शिवपुरी)

(अ) तीन सती-स्तम्भ। **ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।**

(आ) एक स्तम्भ जिस पर वि० सं० १२३८ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।**

(इ) प्रस्तर-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १११८ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७३, क्रमांक ५५।**

१९०४. चिनोची (भिण्ड)

मध्यकालीन मन्दिर तथा मूर्तियों के भग्नावशेष। **इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८।**

१९०५. चिरोदिया (विदिशा)

गाँव के पूर्व की ओर स्थित लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। **ग्वा० पु० रि० १९२३-२४, पृ० ८।**

१९०६. चुर्ली (ग्वालियर)

गाँव के पूर्व की ओर स्थित प्राचीन टीले जो लगभग ७वीं-८वीं शताब्दी ईसवी के किसी प्राचीन नगर के भग्नावशेष प्रतीत होते हैं। **ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० १४।**

१९०७. चैनपुर (मन्दसौर)

प्राचीन भग्नावशेष। **इ० आ० रि० १९५४-५५, पृ० ६२।**

१९०८. चौपड़ा पटी (चण्डी चोपड़ा) (दमोह)

स्थानीय प्राचीन मन्दिर में रखी प्रतिमा की चौकी पर उत्कीर्ण वि० सं० १३१३ का नरसिंहदेव के शासन काल का लेख। **हीरालाल सूची, क्रमांक १०२।**

१९०९. चोपेरा (विदिशा)

यक्षी प्रतिमा जो लगभग दूसरी शताब्दी ई० पू० की है। **ज० म० प्र० इ० प० अंक २ पृ० १९-२०।**

१९१०. चोरखो (गुना)

लगभग १२ मन्दिरों के समूह के भग्नावशेष जो लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी में बनाये गये थे। **ग्वा० पु० रि० १९३०-३१, पृ० ८-९।**

१६११. चोरपुरा (शिवपुरी)

(अ) लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी में बने दो मन्दिरों के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १६१४-२३।

(आ) लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी में बने दो अन्य मन्दिरों के भग्नावशेष। वही।

(इ) पहाड़ी के निकट लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। वही।

(ई) एक अन्य समकालीन मन्दिर के भग्नावशेष जिसका एक स्तम्भ-युक्त कमरा अभी यथावत है। वही।

१६१२. चौरागढ़ (नरसिंहपुर)

गोंड कालीन दुर्ग तथा भवनों के भग्नावशेष। नरसिंहपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१६०६)।

१६१३. छंका (भिण्ड)

एक प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १६१५-१६।

१६१४. छतरपुर (छतरपुर)

चन्देल कालीन जैन-प्रतिमा जिस पर वि० सं० १२०३ का मदनवर्मन् के शासन काल का लेख उत्कीर्ण है। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १६३५-३६, पृ० ६४।

१६१५. छपरी (बिलासपुर)

आराधना की मुद्रा में बैठे एक पुरुष की प्रतिमा जिस पर गोपालदेव का (कलचुरि) संवत् ८४० का लेख उत्कीर्ण है। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ३४; क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५८० ८२; हीरालाल सूची, क्रमांक ३०४।

१६१६. छपरी (दुर्ग)

अनेक सती-स्तम्भ जिनमें दो पर वि० सं० १४३० तथा १४४५ के लेख उत्कीर्ण हैं। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ४१; हीरालाल सूची, पृ० १७६।

१६१७. छपारा (विदिशा)

गुप्तकालीन तथा गुप्तोत्तर कालीन मन्दिर। इ० आ० रि० १६५८-५६, पृ० ७१।

१६१८. छपेरा (राजगढ़)

जैन-मन्दिरों के अवशेष। से० इ० ग० सी०, पृ० १६६।

१६१६. छयान (धार)

एक प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष जिसे स्थानीय 'देव-धर्मराज' के नाम से पुकारा जाता है। ग्वा० पु० रि० १६१४-२३।

१६२०. छिंद-खड़क (बस्तर)

संवत् ११८० में बने एक दुर्ग के भग्नावशेष । क० लि० ए० रि० पृ० ४६ ।

१६२१. छिपलीपारा (रायपुर)

लगभग १२वीं-१३वीं शताब्दी ईसवी का प्राचीन मन्दिर । इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० १-२३ ।

१६२२. छोटी-देवरी (जबलपुर)

लगभग ७वीं शताब्दी ईसवी में बनी कलचुरि कालीन ३०-४० मन्दिरों के भग्नावशेष । क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १००, १५८, चित्र २८-अ; हैं० त्रि० मा० पृ० ७७, चित्र २८-अ ।

१६२३. जखोदा (ग्वालियर)

गाँव के उत्तर की ओर शिव मन्दिर के भग्नावशेषों के निकट स्थित सती-स्तम्भ जिनमें एक पर वि० सं० १४७५ का लेख उत्कीर्ण है । ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ५७ ।

१६२४. जटाशंकर (दमोह)

गोंड शासन कालीन दुर्ग । म० पु० रू० पृ० ६७ ।

१६२५. जबलपुर (जबलपुर)

(अ) मदन-महल स्थित गोंड शासक मदनसिंह द्वारा निर्मित महल के भग्नावशेष । ज० डि० ग० पृ० ६७९ ।

(आ) गोंड शासन काल में निर्मित बाल-सागर, गंगा-सागर, रानी-ताल, चेरी ताल अन्य तालाब तथा कुछ मन्दिरों के भग्नावशेष । वही, पृ० ६७९-८० ।

१६२६. जयसिंहनगर (सागर)

डांगी शासकों का दुर्ग । म० पु० रू० पृ० ६७ ।

१६२७. जांजगीर (बिलासपुर)

गाँव के लगभग १६ मील उत्तर की ओर पहाड़ी में प्राचीन गुफा जिसमें प्राचीन प्रतिमाएँ, स्तम्भ आदि हैं । क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २१०-११ ।

१६२८. जीरण (मन्दसौर)

स्तम्भ जिस पर वि० सं० १०५३ का लेख उत्कीर्ण है जिसमें गुप्त वंश के वसन्त की पुत्री सर्वदेवी द्वारा स्तम्भ-निर्माण का तथा गुहिलपुत्र (गुहिलोत) विग्रहपाल की पत्नी का उल्लेख है । ग्वा० पु० रि० संवत् १९७०, क्रमांक २५ ।

१६२९. जोनापुरा (ग्वालियर)

(अ) प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष । ग्वा० पु० रि० १९१८-१९ ।

(आ) स्मारक-स्तम्भ जिन पर अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण हैं। **वही।**

१९३०. झरदा (उज्जैन)

बावड़ी जो लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की है। **इ० स्टे० ग० पृ० २५।**

१९३१. झरना (शिवपुरी)

सतनवाड़ा से नरवर जाने वाली सड़क पर सतनवाड़ा से चौथे मील पर सड़क से दक्षिण-पश्चिम की ओर १ फर्लांग पर लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी के भग्नावशेष। **ग्वा० पु० रि० १९२३-२४, पृ० १४।**

१९३२. झापल (बैतूल)

प्राचीन गुफा जो बैतूल से वायव्य में ४० मील पर स्थित है। **म० पु० रू० पृ० ९२।**

१९३३. टकनेरी (गुना)

स्तम्भ जिस पर वि० सं० १५ (—) का अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० संवत् १९७५, क्रमांक ५९।**

१९३४. टिमरनी (होशंगाबाद)

मध्यकालीन प्रतिमाएँ। **इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९।**

१९३५. टियोंडा (विदिशा)

राम-मन्दिर के निकट लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का स्मारक-स्तम्भ। **ग्वा० पु० रि० १९३२-३३, पृ० ८।**

१९३६. टेमरा (बस्तर)

सती-प्रस्तर जिस पर शक संवत् १२४६ का चक्रकोट के छिंदक नाग वंश के शासक महाराज हरिश्चन्द्रदेव के शासन काल का लेख उत्कीर्ण हैं। **ए० इ० भाग ९, पृ० ३९-४०; हीरालाल सूची, पृ० १६५; भण्डारकर सूची, क्रमांक १११८।**

१९३७. टोंगरा (शिवपुरी)

स्तम्भ-युक्त भवन जो लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी का है। **ग्वा० पु० रि० १९२८-२९, पृ० ११-१२।**

१९३८. टोला (जबलपुर)

(अ) देव तथा देवियों की प्रतिमाएं। **इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८।**

(आ) मूर्ति जिस पर कलचुरि संवत् ९०७ का अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण है। **हीरालाल सूची, पृ० ४४।**

१९३९. ठर्रका (दमोह)

गोंड शासन काल के ५ सती-स्तम्भ जिन पर वि० सं० १५७०, १५७१,

१७२७ तथा १७३६ के लेख उत्कीर्ण हैं। **हीरालाल—'दमोह दीपक' पृ० ८१; हीरालाल सूची, क्रमांक ११२।**

१९४०. ठाना (रायसेन)

मध्यकालीन प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० १९६७-६८, पृ० ६७।

१९४१. डमरू (रायपुर)

एक प्राचीन मन्दिर। क० लि० ए० रि० पृ० ४९।

१९४२. डांग (भिण्ड)

(अ) लगभग ९वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी का ईंटों का बना मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

(आ) सती-स्मारकों का समूह। ग्वा० पु० रि० १९४६-४७।

१९४३. डांडे-की-खिड़क (ग्वालियर)

(अ) गाँव के उत्तर की ओर पहाड़ी के निकट लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिरों के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० १५-१६।

(आ) स्थानीय जंगल में लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिरों के भग्नावशेष। वही।

(इ) सती-स्मारक जिस पर वि० सं० १४५४ का लेख उत्कीर्ण है। वही।

(ई) सती-स्मारक जिस पर वि० सं० १५६४ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० संवत् १९८६, क्रमांक १५।

१९४४. डोंगरगढ़ (दुर्ग)

प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। क० लि० ए० रि० पृ० ५०।

१९४५. ढिलवार (नरसिंहपुर)

गोंड कालीन दुर्ग के भग्नावशेष। नरसिंहपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०६)।

१९४६. तर्नोद (मन्दसौर)

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष जो गाँव में बिखरे हैं। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

१९४७. तक्षकेश्वर (मन्दसौर)

विभिन्न पुरावशेष। इ० आ० रि० १९५४-५५, पृ० ६२।

१९४८. तिगवाँ (जबलपुर)

गुप्तकालीन मन्दिर तथा मन्दिरों के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ४२; क० लि० ए० रि० पृ० ३०।

४९

१९४९. तिडनी (छतरपुर)

मध्यकालीन प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९८।

१९५०. तिलोरी (मोरेना)

(अ) लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९१७-१८।

(आ) तालाब के दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। वही।

(इ) तालाब के पश्चिम की ओर स्थित लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का मन्दिर। वही।

(ई) पहाड़ी पर एक मिलता-जुलता मन्दिर जो लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का है। वही।

(उ) लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिरों के भग्नावशेष। वही।

(ऊ) लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का प्राचीन तालाब। वही।

(ए) लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी का कूप। वही।

(ऐ) स्तम्भ जिन पर लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी की लिपि में कछवाहा तथा चौहान वंश की वंशावली का उल्लेख करते हुए लेख उत्कीर्ण हैं। वही।

(ओ) लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का स्तम्भ। वही।

(औ) सती-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १४०२ (?) का लेख उत्कीर्ण है। लेख में गणपतिदेव का उल्लेख है। वही।

(क) सती-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १४१९ का लेख उत्कीर्ण है। वही।

(ख) सती-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १५२७ का लेख उत्कीर्ण है। वही।

(ग) सती-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १५४५ का लेख उत्कीर्ण है। वही।

१९५१. तुमान (बिलासपुर)

प्राचीन मन्दिर का तोरण। बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९१०), पृ० २९९।

१९५२. तुमेन (गुना)

(अ) गाँव के पश्चिम की ओर नदी के उस पार प्राचीन टीले जो स्थानीय 'नागर-तोर' तथा 'पोला-तोर' के नाम से जाने जाते हैं। बौद्ध ग्रन्थों में इस स्थान को तुम्बवन कहा गया है। ग्वा० पु० रि० १९३४-३५, पृ० ११।

(आ) गाँव के पश्चिम की ओर स्थित प्राचीन तोरण के भग्नावशेष। वही।

(इ) प्राचीन शैल-कृत्त गुफाएँ। ग्वा० पु० रि० १९१८-१९।

(ई) प्राचीन कूप। वही।

१९५३. तूलाहेड़ा (उज्जैन)

प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९१७-१८।

१९५४. तेरही (शिवपुरी)

(अ) 'मोहज-माता' के मन्दिर के सम्मुख लगा तोरण जो लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी का है। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१ पृ० १७७; ग्वा० पु० रि० १९३४-३५, पृ० ७।**

(आ) स्मारक-स्तम्भ जिस पर वि० सं० ९६० का लेख उत्कीर्ण है। लेख में गुणराज तथा उन्दभट्ट के बीच हुए युद्ध में कोट्टपाल चण्डियण के हत होने का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० १९१४-१५।**

(इ) गाँव के दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित एक अन्य स्मारक-स्तम्भ। **ग्वा० पु० रि० १९२७-२८, पृ० १३।**

(ई) चार स्मारक-स्तम्भों का समूह। **ग्वा० पु० रि० १९१४-१५।**

(उ) सती-स्मारकों का समूह। **वही।**

१९५५. तेवर (जबलपुर)

तेवर ग्राम में संरक्षित निम्नलिखित विविध प्रतिमाएँ—

(अ) बालसागर के तट पर स्थित मन्दिर में संग्रहीत प्रतिमाएँ—

(१) खण्डित स्त्री प्रतिमाएँ (क्रमांक ते-१०, ते-९-अ, ते-१४, ते-२४)। **व्य० सू०।**

(२) खण्डित पुरुष प्रतिमाएँ (क्रमांक ते-१२, ते-?)। **वही।**

(३) मन्दिर की पूर्वी दीवार पर लगी नर्तकों की प्रतिमाएँ। **व्य० सू०।**

(आ) बालसागर के सम्मुख स्थित दो वृक्षों के नीचे संग्रहीत प्रतिमाएँ—

(१) पुरुष प्रतिमा का मस्तक। **व्य० सू०।**

(२) खण्डित पुरुष तथा स्त्री प्रतिमाएँ। **वही।**

(इ) कूप के निकट स्थित मन्दिर में रखी पुरुष प्रतिमा। **वही।**

(ई) प्राचीन बावड़ी के निकट संग्रहीत प्रतिमाएँ—

(१) पुरुष प्रतिमाएँ (ते-८१, ते-८६, ते-८०, ते-१०१)। **वही।**

(२) खण्डित प्रतिमाएँ (ते-६७, ते-६९, ते-७९)। **वही।**

(३) शार्दूल प्रतिमा (ते-१०३)। **वही।**

(४) बावली की दीवार में लगा पट्ट जिस पर एक छोटा लेख उत्कीर्ण है (ते-१५०)। **वही।**

(५) पट्ट पर उत्कीर्ण गाथासप्तशती का दृश्य। दृश्य के नीचे दो पंक्तियों का लेख उत्कीर्ण है। **है० त्रि० मा० पृ० ९२, चित्र ३४-बी।**

(उ) त्रिपुरेश्वर मन्दिर के भग्नावशेषों में पीपल-वृक्ष के नीचे संग्रहीत प्रतिमाओं में एक पट्ट जिस पर गुरू द्वारा शिष्याओं को शिक्षा देने का दृश्य उत्कीर्ण है (ते-१०७)। **वही।**

(ऊ) एक अन्य पीपल-वृक्ष के नीचे संग्रहीत प्रतिमाएँ—

(१) विशालकाय शार्दूल प्रतिमा जिस पर लेख उत्कीर्ण हैं (ते-५८)। वही।

(२) श्रृंगार करती नारी प्रतिमा (ते-५९)। वही।

(३) सुरसुन्दरी प्रतिमा (ते-५७)। वही।

(४) सप्तर्षि पट्ट (ते-६२)। वही।

(५) ब्रह्मा की प्रतिमा (ते-?) वही।

(ए) गाँव से प्राप्त एक पट्ट जिसको तीन भागों में विभाजित कर प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं। मध्य में नारी प्रतिमा तथा दोनों ओर पुरुष प्रतिमाएँ हैं। पट्ट पर उत्कीर्ण लेख में 'श्री वीरनंदि आचार्येन प्रतिमेयं करापिता' पढ़ा जा सकता है। बाजपेयी कृ० द०-डा० सतकारी मुकर्जी फेलिसिटेशन वाल्यूम (१९६९), पृ० १५९-१६१।

(ऐ) करनबेल, हथियागढ़, कारीसूरी, चौगान आदि के टीले जो लगभग ४ वर्गमील के क्षेत्र में फैले हैं। ये प्राचीन त्रिपुरी नगरी के भग्नावशेष हैं। क० आ० स० इ० रि०भाग ९, पृ० ५४-७७; वही, भाग १७, पृ० ७२; क० लि० ए० रि० पृ० ३०; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १८९४, पृ० ५; है० त्रि० मा० पृ० ६४-६६; मो० गं० दीक्षित—'त्रिपुरी एस्कवेशन रिपोर्ट—१९५२;' संकालिया 'त्रिपुरी एस्कवेशन—१९६६।'

(ओ) करनबेल टीले पर कलचुरि कालीन मन्दिर के भग्नावशेष। है० त्रि० मा० पृ० ६४।

(औ) करनबेल टीले पर अन्य दो कलचुरि कालीन मन्दिर के भग्नावशेष। है० त्रि० मा० पृ० ६५-६५, चित्र १९-अ-ब।

(क) कारी-सूरी टीले पर बेगलर द्वारा १८७३-७४ में देखे गये दो कलचुरि कालीन मन्दिरों के भग्नावशेष। ये अवशेष अब अप्राप्य हैं। क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ५९; है० त्रि० मा० पृ० ६४-६५।

(ख) कलचुरि कालीन बावड़ी के भग्नावशेष। है० त्रि० मा० पृ० ६६, चित्र २१-ब।

(ग) सुर-सुन्दरी की प्रतिमा। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६,पृ० ४-४।

१९५६. थोबन (गुना)

(अ) दो मन्दिरों के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९१४-१५।

(आ) दो अन्य मन्दिरों के भग्नावशेष। वही।

(इ) गाँव के पूर्व की ओर दो मन्दिरों के भग्नावशेष। वही।

(ई) 'गर्गज-मन्दिर' नामक प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। वही।

(उ) 'गर्गज-मन्दिर' के निकट एक प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। वही।

(ऊ) एक प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष । वही ।

१९५७. दन्तेवाड़ा (बस्तर)

(अ) प्रस्तर-स्तम्भ जिस पर एक अधिसूचना उत्कीर्ण है जो छिन्दकनाग वंश के श्री राजभूषण महाराज की कनिष्ठ बहिन मासकदेवी द्वारा प्रजा के लिए प्रचलित किया गया था । हीरालाल सूची, पृ० १६६ ।

(आ) प्रस्तर-स्तम्भ जिस पर शक सम्वत् ११४७ का जगदेकभूषण महाराज नरसिंहदेव का खण्डित तेलुगु लेख उत्कीर्ण है । ए० इ० भाग १०, पृ० ४०; हीरालाल सूची, पृ० १६४; भण्डारकर सूची, क्रमांक ११३ ।

१९५८. दमोह (दमोह)

सती-स्तम्भ जिन पर वि० सं० १३३६ तथा १३४१ के लेख उत्कीर्ण हैं । क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १६८ ।

१९५९. दादुर (धार)

खण्डित जैन-मन्दिर जिसमें विशालकाय तीर्थंकर तथा कुबेर की प्रतिमाएँ हैं । ग्वा० पु० रि० १९४०-४१, पृ० २३ ।

१९६०. दिघोरी (सिवनी)

थल नदी पर स्थित प्राचीन गुफा । म० पु० रू० पृ० ९२ ।

१९६१. दियागढ़ (जबलपुर)

देव तथा देवियों की प्रतिमाएँ । इ० आ० रि० १९६२-६३ पृ० ६८ ।

१९६२. दुर्गापुर (रीवा)

एक छोटा मन्दिर जो लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेषों से बनाया गया । क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ६ ।

१९६३. दुंडापुरा (ग्वालियर)

नदी के तट पर लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी के तीन स्मारक-स्तम्भों का समूह । ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० १५ ।

१९६४. दुर्ग (दुर्ग)

प्राचीन दुर्ग के भग्नावशेष । दु० डि० ग० पृ० १६४ ।

१९६५. देपालपुर (इन्दौर)

देपालसागर झील जिसे परमार शासक देवपाल द्वारा १३वीं शताब्दी ईसवी में बनवाया गया था । इ० स्टे० ग० पृ० १३ ।

१९६६. देवकानी (गुना)

(अ) स्थानीय गढ़ी के लगभग दो फर्लांग पूर्व की ओर स्थित लगभग १२वीं-१३वीं शताब्दी ईसवी का मन्दिर । ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० ९ ।

(आ) स्थानीय गढ़ी के निकट लगभग १२वीं-१३वी शताब्दी ईसवी की बावड़ी। ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० ९।

(इ) गणेश-मन्दिर के निकट प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष जो लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के हैं। वही।

(ई) गणेश-मन्दिर के निकट स्मारक-स्तम्भ। वही।

१९६७. देवकूट (रायपुर)

नदी के तट पर चार छोटे प्राचीन मन्दिर तथा मन्दिरों के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १४६-४७; क० लि० ए० रि० पृ० ४९; रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०९), पृ० २८०।

१९६८. देवगढ़ (छिन्दवाड़ा)

गोंड शासन कालीन दुर्ग। म० पु० रू० पृ० ९८।

१९६९. देवगाँव (मण्डला)

एक प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। क० लि०ए० रि० पृ० ३७।

१९७०. देवरी (जबलपुर)

प्राचीन मन्दिर जिसके द्वार पर गंगा, यमुना, मिथुन तथा नवग्रह की आकृतियाँ बनी हैं। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६९।

१९७१. देवरी (ग्वालियर)

प्राचीन प्रतिमाएँ तथा भग्नावशेष जो लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की हैं। ग्वा० डि० ग० पृ० ३६१।

१९७२. देवरी (सागर)

मध्यकालीन प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० ४-३।

१९७३. देवलसूर (दुर्ग)

प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। दु० डि० ग० पृ० १८४।

१९७४. देहता (जबलपुर)

स्मृति-शिला जिस पर वि० सं० १२९९ का लेख उत्कीर्ण है। हीरालाल सूची, क्रमांक ७७।

१९७५. देहरी (धार)

एक प्राचीन जैन-मन्दिर। हे० म० इ०।

१९७६. दैमापुर (जबलपुर)

(अ) देव तथा देवियों की प्राचीन प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८।

(आ) सती-स्मारक जिस पर वि० सं० १२८८ का लेख उत्कीर्ण है। हीरालाल सूची, क्रमांक ७८।

१९७७ धनपुर (बिलासपुर)

(अ) स्थानीय तालाब के तट पर लगभग ९वीं शताब्दी ईसवी के छः ईंटों के बने मन्दिरों के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २३७; क० लि० ए० रि० पृ० ६०; बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९१०), पृ० २६५।

(आ) लगभग ९वीं शताब्दी ईसवी के चार मन्दिरों के भग्नावशेष। वही।

(इ) उक्त मन्दिरों के निकट कुछ अन्य भवनों के भग्नावशेष। वही।

१९७८. धनाचा (मोरेना)

स्थानीय जंगल में एक प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

१९७९. धनैच (शिवपुरी)

प्रस्तर-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १३५१ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८८, क्रमांक १७।

१९८०. धमतरी (रायपुर)

(अ) चार मन्दिरों का समूह जिनमें एक प्राचीन तथा तीन बाद में बनाये गये। बाद में बने मन्दिर प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेषों से बनाये गये। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १४२-४५; क० लि० ए० रि० पृ० ४९-५०।

(आ) रामचन्द्र तथा बिलई-माता का मन्दिर। रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०९) पृ० २८७।

(इ) गोंडकालीन दुर्ग के भग्नावशेष। वही।

१९८१. धमतरी (रायपुर)

एक प्रतिमा जिस पर अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण है। हीरालाल सूची, क्रमांक १९४।

१९८२. धमदा (दुर्ग)

गोंड शासन कालीन दुर्ग। म० पु० रू० पृ० ९८।

१९८३. धमनार (मन्दसौर)

पहाड़ी पर स्थित दो स्तम्भ जिनमें एक पर वि० सं० १९६३ का लेख उत्कीर्ण है। क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० २७९।

१९८४. धमोरा (छतरपुर)

प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ९८।

१९८५. धरमपुरी (धार)

(अ) हिन्दू देव की विशाल प्रतिमा जो लगभग १२वीं-१३वीं शताब्दी ईसवी की है। **म० भा० पु० रि० १९४९-५०।**

(आ) गाँव के दक्षिण-पश्चिम की ओर संगम के निकट लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। **वही।**

(इ) संगम के निकट शैलकृत्त गुफाएँ। **वही।**

(ई) लगभग १२वीं-१३वीं शताब्दी ईसवी की हनुमान की विशाल प्रतिमा। **वही।**

१९८६ धानाखेड़ी (मन्दसौर)

(अ) गाँव के दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित पहाड़ी में दो शैलकृत्त गुफाएँ। **ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।**

(आ) गणेश पहाड़ी में दो शैलकृत्त गुफाएँ जिनमें गणेश की प्रतिमाएँ बनायी गयी हैं। **वही।**

(इ) गाँव के पश्चिम की ओर स्थित एक शैलकृत्त मन्दिर। **वही।**

१९८७. धानोरा (बैतूल)

प्राचीन गुफा जो तापी नदी के दक्षिण तट पर अटनेर से नैऋत्य में ८ मील पर स्थित है। **म० पु० रू० पृ० ९२।**

१९८८. धामोनी (सागर)

गोंड शासन कालीन दुर्ग। **म० पु० रू० पृ० ९७।**

१९८९. धार (धार)

(अ) 'कमाल-मौला' मसजिद जो परमार भोज द्वारा ११वीं शताब्दी में बनाये गये सरस्वती मन्दिर के भग्नावशेषों से बनाया गया। **धा० मा०।**

(आ) 'लाट' मसजिद जो ११वीं शताब्दी ईसवी के प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेषों से बनाया गया। मूल मन्दिर के सम्मुख स्थापित लौह-स्तम्भ के भग्नावशेष भग्न चबूतरे पर पड़ा है। इसी स्तम्भ के कारण मसजिद का नाम 'लाट' पड़ा। **वही।**

१९९०. धिलवार (नरसिंहपुर)

गोंड शासन कालीन दुर्ग। **म० पु० रू० पृ० ९८।**

१९९१. नचना (पन्ना)

(अ) गाँव के दक्षिण की ओर स्थित दो मन्दिर तथा एक मसजिद जो गुप्तकालीन मन्दिरों के भग्नावशेषों से बनाये गये। **इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६९।**

(आ) गाँव के दक्षिण की ओर लगभग तीन कि० मी० की दूरी पर प्राचीन दुर्ग में रखे गुप्त तथा गुप्तोत्तर काल के मन्दिरों के भग्नावशेष । वही ।

१९९२ नन्हावारा (जबलपुर)

कलचुरि कालीन प्रतिमाएँ । आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९३०-३४, चित्र ७६-ब-स ।

१९९३. नरवर (शिवपुरी)

राममन्दिर के पास प्राचीन कूप जिसमें वि० सं० १३४१ का लेख उत्कीर्ण है । लेख में सेवायिक ग्राम निवासी वंसल गोत्र के बनीया राम द्वारा यज्वपाल गोपाल के शासन काल में बावड़ी निर्माण का उल्लेख है । ग्वा० पु० रि० १९३७-३८, पृ० १२-३९ ।

१९९४. नरवर दुर्ग (शिवपुरी)

(अ) लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी में बना 'मकरध्वज-ताल' । डा० फो० ग्वा० स्टे० पृ० ८४ ।

(आ) नगर के पूर्व की ओर स्थित एक प्राचीन कूप जिससे प्राप्त वि० सं० १३३८ के शिलालेख में चाहड़ के वंशज नलपुर के शासक गोपालदेव के शासन काल में आशादित्य कायस्थ द्वारा बावड़ी निर्माण तथा वृक्ष रोपण का उल्लेख है । ग्वा० पु० रि० १९२७-२८, पृ० ४०-४१ ।

(इ) प्राचीन कूप जिसके निकट से प्राप्त वि० सं० १३३९ के शिलालेख में नलगिरि के शासक यज्वपाल गोपालदेव के शासन काल में गांगदेव द्वारा कूप निर्माण का उल्लेख है । ग्वा० पु० रि० १९१४-१५ ।

१९९५. नरसिंहपुर (नरसिंहपुर)

बगीचे में रखी प्रतिमाएँ तथा भवनों के भग्नावशेष । क० लि० ए० रि० पृ० ४३ ।

१९९६. नरेसर (ग्वालियर)

तोरण-द्वार जिसके एक स्तम्भ पर वि० सं० १३१६ का वस्तुपालदेव का लेख उत्कीर्ण है । ग्वा० पु० रि० १९१४-२३ ।

१९९७. नवली (मन्दसौर)

विभिन्न पुरावशेष । इ० आ रि० १९५४-५५, पृ० ६२ ।

१९९८. नवागढ़ (दुर्ग)

प्राचीन मन्दिर जिसमें उपलब्ध लेख के अनुसार इसका निर्माण वि० सं० ७०४ में हुआ था । दु० डि० ग० पृ० १८३ ।

१९९९. **नवागांव (रायपुर)**

आरंग के मन्दिरों के भग्नावशेषों से बने चार मन्दिर। **क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० २२; क० लि० ए० रि० पृ० ५२।**

२०००. **नागझिरी (बैतूल)**

बैतूल से दक्षिण में ५ मील पर स्थित प्राचीन गुफा। **म० पु० रू० पृ० ९२।**

२००१. **नागदा (उज्जैन)**

(अ) गाँव के दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित लगभग दूसरी-तीसरी शताब्दी ई० पू० का प्राचीन टीला जिसमें मिट्टी के प्राचीन बरतनों के टुकड़े, प्राचीन ईंटें, आहत सिक्के प्राप्त होते हैं। स्थानीय किंवदन्ति के अनुसार इसी स्थान पर महाभारत में वर्णित जनमेजय द्वारा किया गया सर्प-यज्ञ सम्पन्न हुआ था। **म० भा० पु० रि० १९४९-५०।**

(आ) १९५५-५६ में टीले का किया गया उत्खनन। **इ० आ० रि० १९५५-५६।**

(इ) शीतला-माता के मन्दिर में लगी प्राचीन प्रतिमाएँ। **म० भा० पु० रि० १९४९-५०।**

२००२. **नांद-चन्द (जबलपुर)**

(अ) लगभग १५ मन्दिरों के भग्नावशेष जो सम्भवतः कलचुरि कालीन हैं। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १६१।**

(आ) दो तोरण-द्वारों के भग्नावशेष। **क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १६१; क० लि० ए० रि० पृ० २९।**

२००३. **निमाड़ जिला**

मूर्ति जिस पर वि० सं० ११४९ का लेख उत्कीर्ण है। **इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ८१।**

२००४. **नीलकंठी (छिन्दवाड़ा)**

स्तम्भ जो किसी मन्दिर का भाग प्रतीत होता है, पर उत्कीर्ण लेख जिसमें राष्ट्रकूट कृष्ण तृतीय के नाम का उल्लेख है। **हीरालाल सूची, क्रमांक १६९।**

२००५. **पंचमनगर (दमोह)**

गोंड शासन कालीन दुर्ग। **म० पु० रू० पृ०९७।**

२००६. **पचरई (शिवपुरी)**

(अ) प्राचीन मन्दिरों का समूह। **ग्वा पु० रि० १९१४-१५।**

(आ) प्राचीन कूप जो झिल-मिल बावड़ी कहलाता है। **वही।**

(इ) झिल-मिल बावड़ी के निकट सती-स्मारक जिस पर वि० सं० १३६२ का अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९२९-३० पृ० ६२।

(ई) सती-स्मारक जिस पर वि० सं० १३१९ का लेख उत्कीर्ण है। वही।

(उ) सती-स्मारक जिस पर वि० सं० १३३९ का अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण है। वही।

(ऊ) सती-स्मारक जिस पर वि० सं० १३४५ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा पु० रि० १९१४-१५।

(ए) झिल-मिल बावड़ी के निकट सती-स्मारक जिस पर वि० सं० १३७४ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ६२।

(ऐ) झिल-मिल बावड़ी के निकट सती-स्मारक जिस पर वि० सं० १३८८ का लेख उत्कीर्ण है। वही।

(ओ) गाँव के पूर्व की ओर स्थित सती-स्मारक जिस पर वि० सं० १३७(?) का लेख उत्कीर्ण है। वही।

२००७. **पचावली (शिवपुरी)**
प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२२-२३।

२००८. **पठारी (विदिशा)**
प्रस्तर-स्तम्भ जिस पर वि० सं० ९१७ का लेख उत्कीर्ण है। लेख में राष्ट्रकूट परबल द्वारा शौरी (विष्णु या कृष्ण) के मन्दिर में गरुडध्वज के निर्माण का उल्लेख है। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ७०; ज० ए० सो० ब० भाग १७(१) पृ० ३०५; कीलहार्न—ए० इ० भाग ९, पृ० २५२; भण्डारकर—इ० ए० भाग ४०, पृ० २३९; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग १८, पृ० ११६; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १८, पृ० २२; ग्वा पु० रि० सम्वत् १९८०, क्रमांक ७; भण्डारकर सूची, क्रमांक २९।

२००९. **पढ़ावली (मोरेना)**

(अ) लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी का मन्दिर, जिसमें कुबेर की प्रतिमा स्थापित है। ग्वा० पु० रि० १९१४-१५।

(आ) लगभग ९वीं शताब्दी ईसवी में बना प्राचीन कूप, जिसे स्थानीय 'छाँव-कुआँ' कहते हैं। आ० ग्वा० पृ० ११३।

(इ) 'छाँव-कुआँ' के निकट स्थित समकालीन मन्दिर। वही।

(ई) गढ़ी के पश्चिम की ओर लगभग १०वीं-१२वीं ईसवी शताब्दी का मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १९२२-२३।

(उ) चार सपाट छत के मन्दिरों का समूह जो लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के हैं। **वही।**

(ऊ) गाँव के दक्षिण की ओर स्थित तीन मन्दिरों का समूह जो लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के हैं। **वही।**

(ए) गन्ने का रस निकालने वाली पत्थर की मशीन जिस पर लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० १९१५-१६।**

(ऐ) बटेश्वर घाटी में लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। **वही।**

(ओ) बटेश्वर घाटी में सतमढ़ी नामक सात मन्दिरों के समूह के भग्नावशेष जो लगभग १०वीं शताब्दी के हैं। वही।

(औ) बटेश्वर घाटी में चार मन्दिरों के समूह के भग्नावशेष जो लभगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के हैं। **वही।**

(क) बटेश्वर घाटी में तालाब में लगी लगभग १०वीं शताब्दी की प्रतिमाएँ। **आ० ग्वा० पृ० ११३।**

(ख) बटेश्वर घाटी में दो प्राचीन कूप। **ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ३१।**

(ग) दो स्मारक-स्तम्भ जिनपर गुप्त लिपि में अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण हैं। **ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ३३।**

(घ) विभिन्न स्तम्भ जिन पर वि० सं० १५९०, १५६६, १५८८, १५९० तथा १५९५ के लेख उत्कीर्ण हैं। **ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७२, क्रमांक ३४, ३६, ३८; वही, सम्वत् १९७१, क्रमांक ४०; वही, सम्वत् १९०२, क्रमांक ३५।**

२०१०. पदमपुर (बिलासपुर)

सती-प्रस्तर जिसपर वि० सं० १४०३ का लेख उत्कीर्ण है। **हीरालाल सूची, क्रमांक २३१।**

२०११. पन्ना (पन्ना)

कुछ महत्त्वपूर्ण गण प्रतिमाएँ। **'ललितकला', क्रमांक १० अक्टूबर, १९६१, पृ० २१-२४।**

२०१२. पवेट (सागर)

कुछ सुरक्षित प्राचीन प्रतिमाएँ। इनमें वरदमुद्रा में नागी की प्रतिमा महत्वपूर्ण है। **इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १००।**

२०१३. परसोरा (विदिशा)

गुप्त तथा गुप्तोत्तर कालीन मन्दिर। **इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ७१।**

२०१४. **पलारी (रायपुर)**
तालाब के तट पर स्थित ईंटों का बना मन्दिर। **रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०९), पृ० ३१८।**

२०१५. **पवाई (भिण्ड)**
मध्यकालीन मन्दिर तथा प्रतिमाओं के भग्नावशेष। **इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८।**

२०१६. **पवाया (ग्वालियर)**

(अ) मनुष्यकार की यक्ष मणिभद्र की प्रतिमा जिसपर ब्राह्मी लिपि में लेख उत्कीर्ण है। गर्दे: **'पद्मावती'; म० प्र० डिस्ट्रिक्ट गजेटियर—ग्वालियर, पृ० ३७३।**

(आ) नाग शासक की प्रतिमा, विशालकाय तोरण के भग्नावशेष तथा अन्य पुरावशेष। **वही।**

(इ) गाँव के दक्षिण तथा पश्चिम की ओर स्थित लगभग २री-३री शताब्दी ईसवी के प्राचीन टीले जिसमें नाग मुद्राएँ, प्राचीन मिट्टी के बरतन आदि प्राप्त होते हैं। **म० भा० पु० रि० १९४७-४८।**

(ई) गाँव के दक्षिण की ओर बडिला नामक प्राचीन टीला जो लगभग २री-३री शताब्दी ईसवी का है। **ग्वा० पु० रि० १९४२-४६, पृ० १५।**

२०१७. **पहाड़गाँव (छतरपुर)**
मध्यकालीन मन्दिर। **इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ९८।**

२०१८. **पहाड़ों-बुजरुग (ग्वालियर)**

(अ) सपाद छत का मन्दिर। **ग्वा० पु० रि० १९१८-१९।**

(आ) सती-प्रस्तरों का समूह जिनमें एक पर वि० सं० १५८१ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० १९१८-१९।**

२०१९. **पहाड़ो (छोटी) (शिवपुरी)**
सती-प्रस्तर जिसपर वि० सं० १५८१ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७५, क्रमांक १०३।**

२०२० **पाटन (जबलपुर)**

(अ) कलचुरि शैली में लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की प्रतिमाएँ। **इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।**

(आ) सती-प्रस्तर जिस पर वि० सं० १३६१ का लेख उत्कीर्ण है, जिसमें प्रतिहार राजपुत्र वाघदेव का उल्लेख आया है। **हीरालाल—ए० इ० भाग २६, पृ० ११; भण्डारकार सूची, क्रमांक ६५५; हीरालाल सूची, क्रमांक ७८।**

२०२१. पाटन (राजगढ़)

कुछ सती-स्तम्भ जिन पर लेख उत्कीर्ण हैं। **से० इ० ग० सी० पृ० १६६।**

२०२२. पाठापुर (छतरपुर)

प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। **इ० आ० रि० १६६१-६२, पृ० ६८।**

२०२३. पारा (भिण्ड)

मध्यकालीन मन्दिर तथा प्रतिमाएँ। **इ० आ० रि० १६६२-६३, पृ० ६८।**

२०२४. पारोली (मोरेना)

(अ) चार प्राचीन मन्दिरों का समूह तथा प्रतिमाएँ। **क० आ० स० इ० रि० भाग २०, पृ० १०५; ग्वा० पु० रि० १६१५-१६।**

(आ) गन्ने का रस निकालने वाली मशीन जिसपर प्राचीन लेख उत्कीर्ण हैं। **वही।**

२०२५. पाला (बालाघाट)

प्राचीन मन्दिर। **क० लि० ए० रि० पृ० २६।**

२०२६. पालि (शिवपुरी)

(अ) तीन प्राचीन मन्दिरों के समूह के भग्नावशेष। **ग्वा० पु० रि० १६१८-१६।**

(आ) एक प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। **वही।**

२०२७. पालि (सागर)

महादेव का मन्दिर जिसमें एक शिला पर वि० सं० ११६२ का लेख उत्कीर्ण है। **क० प्र० रि० १६०४, पृ० ५४; हीरालाल सूची, क्रमांक ६४।**

२०२८. पिठोरिया (सागर)

गोंड शासन कालीन दुर्ग। **म० पु० रू० पृ० ६७।**

२०२६. पिपरसेवा (मोरेना)

(अ) प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। **ग्वा० पु० रि० १६१५-१६।**

(आ) सती-स्मारक जिनमें एक पर वि० सं० १५२१ का लेख उत्कीर्ण है। **वही।**

२०३०. पिपरिया (दमोह)

स्मारक-स्तम्भ जिस पर उत्कीर्ण वि० सं० ११६८ के लेख में राष्ट्रकूट शासक महामाण्डलिक राणक जयतसिंह का हेमसिंह के साथ युद्ध होने का उल्लेख है। स्तम्भ पर युद्ध का दृश्य भी अंकित किया गया है। **हीरालाल—'दमोह दीपक' पृ० ११; हीरालाल सूची, क्रमांक ६८।**

२०३१. पिपरिया (जबलपुर)

(अ) कलचुरि कालीन विशाल मन्दिर। **इ० आ० रि० १६५८-५६, पृ० ७२।**

(आ) कलचुरि शली में लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

(इ) देव तथा देवियों की प्राचीन प्रतिमाएं। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८।

२०३२. **पिपरिया (रायसेन)**

गुप्त कालीन सपाट छत का मन्दिर। इ० आ० रि० १९६७-६८, पृ० ६७।

२०३३. **पिपाड़ी (भिण्ड)**

(अ) लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिरों के भग्नावशेष जो तालाब के किनारे स्थित हैं। ग्वा० पु० रि० १९२८-२९, पृ० २७।

(आ) गाँव के दक्षिण की ओर स्थित प्राचीन स्मारक-स्तम्भ। वही।

२०३४. **पिप्रिया (शिवपुरी)**

प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष जिसमें त्रिमूर्ति आदि की प्रतिमाएँ हैं। ग्वा० पु० रि० १९२३-२४, पृ० १५।

२०३५. **पीपरघर (शिवपुरी)**

(अ) प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९१४-१५।

(आ) छः सती-स्मारकों का समूह। वही।

२०३६. **पीपला (उज्जैन)**

सती-स्तम्भ जिसपर वि० सं० १३९५ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९१५-१६।

२०३७. **पुरा गिलाना (मन्दसौर)**

मूर्ति जिस पर तिथि रहित लेख उत्कीर्ण है। प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० भाग १९, पृ० २५, ८१।

२०३८. **फिंगेश्वर (रायपुर)**

मध्यकालीन मन्दिर, जिसके मण्डप के स्तम्भ पर उत्कीर्ण दो पंक्तियों का लेख है। इ० आ० रि० १९६९-७०।

२०३९. **फूलर (जबलपुर)**

कलचुरि शैली में लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।

२०४०. **बगरोल (होशंगाबाद)**

प्राचीन प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८।

२०४१. **बंगला (शिवपुरी)**

गाँव तथा बरुआ नदी के तट के मध्य स्थित अनेक स्मारक-स्तम्भ तथा सती-

प्रस्तर। इनमें से कुछ चित्रित हैं तथा कुछ पर लेख उत्कीर्ण हैं। सात स्मारक-स्तम्भों पर वि० सं० १३३८ के लेख उत्कीर्ण हैं जिनमें नलपुर के राजा गोपालदेव तथा जेजाकभुक्ति के राजा चन्देल वीरवर्मन् के बीच हुए युद्ध का उल्लेख है। इन स्मारक-स्तम्भों को गोपालदेव की ओर से लड़ने वाले वीर गति को प्राप्त विभिन्न योद्धाओं की स्मृति में स्थापित किये जाने का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० १९३४-३५, पृ० ८।**

२०४२. बघोरिया (शिवपुरी)

गाँव के दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित सती-स्तम्भों का समूह, जिनमें कुछ पर अस्पष्ट शिलालेख उत्कीर्ण हैं। **ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० ८।**

२०४३. बंडी (शहडोल)

कलचुरि कालीन भग्नावशेष। **आ० क० त्रि० पृ० २४२।**

२०४४. बडोह (विदिशा)

(अ) प्राचीन तालाब के तट पर बना लगभग ९वीं शताब्दी ईसवी का 'सोलही खंभी' भवन। **आ० ग्वा० पृ० ५७।**

(आ) लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिरों के समूह के भग्नावशेष जो स्थानीय 'सात मठ' (अर्थात् सात देवालय) के नाम से प्रसिद्ध हैं। भग्नावशेषों से लगता है कि यहाँ सात से अधिक मन्दिर रहे होंगे। **ग्वा० पु० रि० १९२३-२४, पृ० ८-१०; आ० ग्वा० पृ० ५८-५९।**

(इ) लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मेड़ युक्त तालाब के तट पर भवनों के भग्नावशेष। **आ० ग्वा० पृ० ५५।**

(ई) 'सोलह-खंभी' के निकट लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का स्मृति-स्तम्भ। **ग्वा० पु० रि० १९१४-२२।**

२०४५, बड़वानी (पश्चिम निमाड़)

(अ) चार प्राचीन सती-स्तम्भ। **वे० नि० डि० ग० पृ० ४३४।**

(आ) प्राचीन मठों के भग्नावशेष। **वही।**

२०४६. बड़ेगाँव (बैतूल)

कुछ प्राचीन मन्दिर। **क० लि० ए० रि० पृ० ४४।**

२०४७. बडोखर (मोरेना)

(अ) सड़क के किनारे वृक्ष के नीचे दो सती-स्मारकों का समूह जिनपर वि० स० १५४८ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० १९३५-३६, पृ० १४।**

(आ) प्राचीन स्मारक-स्तम्भ। **वही, पृ० १५।**

(इ) स्तम्भ, जिसपर वि० सं० १५९८ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९२, क्रमांक ४६।**

(ई) प्राचीन कूप। **ग्वा० पु० रि० १९३५-३६, पृ० १४।**

२०४८. **बड़ों—राजपुर (शिवपुरी)**
स्मारक-स्तम्भ जिसपर अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० १९३४-३५, पृ० २२।**

२०४९. **बढ़ोतर (शिवपुरी)**
स्मारक-स्तम्भ, जिसपर श्रीमद्गोपाल का वि० सं० १३४ (?) का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७५, क्रमांक ९३।**

२०५०. **बम्हनी (दमोह)**
सती-स्तम्भ जिसपर चन्देल शासक हम्मीरवर्मदेव तथा उसके सामन्त महाराजपुत्र वाघदेव का वि० सं० १३६५ का लेख उत्कीर्ण है। **हीरालाल—ए० इ० भाग १६, पृ० १०; वही, भाग २०, पृ० १३५; प्रो० अ० इ० ओ० का० इलाहाबाद, भाग १;** हीरालाल—'दमोह दीपक', पृ० ९५-९६; **भण्डारकर सूची, क्रमांक ६६०।**

२०५१. **बरई (ग्वालियर)**
प्राचीन 'रास-लीला घर' जिसकी बनावट ग्वालियर दुर्ग में स्थित मान मन्दिर के एक भाग से मिलती-जुलती है। **ग्वा० पु० रि० १९४६-४७।**

२०५२. **बरगांव (रीवा)**
ब्रह्मा की कलचुरि कालीन प्रतिमा। **आ० क० त्रि० पृ० २२३।**

२०५३. **बरगांव (मण्डला)**
कलचुरि कालीन प्रतिमाएँ तथा अन्य भग्नावशेष। **आ० क० त्रि० पृ० २९।**

२०५४. **बरगांव (जबलपुर)**

(अ) कलचुरि कालीन मन्दिर के भग्नावशेष। **है० त्रि० मा० पृ० ४७-४८, चित्र ९-अ-ब।**

(आ) कलचुरि कालीन मन्दिर। **वही, पृ० १०७।**

२०५५. **बरतरा (जबलपुर)**
सती-प्रस्तर जिसपर वि० सं० १३५७ का प्रतिहार बाघदेव के शासन काल का लेख उत्कीर्ण है। **हीरालाल सूची, क्रमांक ७८।**

२०५६. बरबसपुर (शहडोल)
कलचुरि कालीन भवनों के भग्नावशेष । आ० क० त्रि० पृ० २४२ ।

२०५७. बरमान-घाट (नरसिंहपुर)
गोंड कालीन मन्दिर । नरसिंहपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०६), पृ० २०७ ।

२०५८. बरहा (ग्वालियर)
पूर्व-मध्यकालीन शैलकृत्त गुफाएँ । इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ७२ ।

२०५९. बराका (ग्वालियर)
ईंटों का बना मन्दिर । हे० म० इ० ।

२०६०. बरुखेड़ा (मन्दसौर)
चार प्राचीन मन्दिर । ग्वा० पु० रि० १९१४-२२ ।

२०६१. बरेडी (मोरेना)
(अ) लगभग १३वीं शताब्दी ईसवी का मन्दिर । ग्वा० पु० रि० १९४०-४१, पृ० २३ ।
(आ) लगभग १३वीं शताब्दी ईसवी का कूप । ग्वा० पु० रि० १९४०-४१, पृ० २३ ।

२०६२. बरेहट (भिण्ड)
महत्वपूर्ण मिट्टी की बनी मूर्तियाँ जो गुप्त-शैली में हैं । इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९, चित्र ५८–स ।

२०६३. बलारपुर (शिवपुरी)
(अ) प्राचीन स्मृति-स्तम्भ । ग्वा० पु० रि० १९१४-१५ ।
(आ) तीन सती-स्तम्भ जिन पर वि० सं० १३४२, १३५६ तथा १३५७ के लेख उत्कीर्ण हैं । ग्वा० पु० रि० १९१४-१५ ।
(इ) दो स्मृति-स्तम्भ जिनमें एक पर वि० सं० ९५७ का लेख उत्कीर्ण है । ग्वा० पु० रि० १९१८-१९ ।
(ई) दो सती-स्तम्भों का समूह । वही ।
(उ) दो प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष । ग्वा० पु० रि० १९१४-१५ ।
(ऊ) चार प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष । ग्वा० पु० रि० १९१८-१९ ।
(ए) दो प्राचीन कूप । ग्वा० पु० रि० १९१४-१५; वही, १९१८-१९ ।
(ऐ) दो स्मृति-स्तम्भ जिनमें एक पर वि० सं० ९५७ का लेख उत्कीर्ण है । ग्वा० पु० रि० १९१८-१९ ।

२०६४. **बह्मनी (दमोह)**

सती-प्रस्तर जिस पर वि० सं० १३६५ अथवा १३०८ का प्रतिहार बाघदेव के शासन का उल्लेख करते हुए लेख उत्कीर्ण है। **ए० इ० भाग १६, पृ० १०; प्रो० अ० इ० ओ० का०–४था सत्र, इलाहाबाद, भाग १; हीरालाल—'दमोह दीपक' पृ० ९५-९६; हीरालाल सूची, क्रमांक १००।**

२०६५. **बहुरीबन्द (जबलपुर)**

(अ) विशाल शान्तिनाथ की प्रतिमा के निकट कलचुरि कालीन प्रतिमाएँ तथा भग्नावशेष। **इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० ४–३।**

(आ) अनेक मध्यकालीन प्रतिमाएँ। **इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६०।**

२०६६. **बाघ (धार)**

(अ) ब्रह्मा की मूर्ति, जिसपर वि० सं० १२१० का लेख उत्कीर्ण है, जिसमें परमार श्री यशोधवल की बहन श्री भामिनि द्वारा मूर्ति-निर्माण का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९८३, क्रमांक ३५।**

(आ) दो प्राचीन तालाब जिन्हें स्थानीय 'गंगा-कुई' तथा 'ब्रह्मा-कुई' के नाम से पुकारा जाता है। **ग्वा० पु० रि० १९१४-२२।**

२०६७. **बांदकपुर (सागर)**

कलचुरि कालीन मन्दिर के भग्नावशेष। **म० पु० रू० पृ० ८४।**

२०६८. **बाबा-की-मढ़िया (शहडोल)**

कलचुरि कालीन भवनों के भग्नावशेष। **आ० क० त्रि० पृ० २४२।**

२०६९. **बामौर (शिवपुरी)**

स्मारक-स्तम्भ, जिसपर वि० सं० ९५७ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९५, क्रमांक ९७।**

२०७०. **बारा (छतरपुर)**

मध्यकालीन मन्दिर। **इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९८।**

२०७१. **बारा (भिण्ड)**

(अ) चार स्मारक-स्तम्भों का समूह, जिन्हें स्थानीय 'जोगिनी' के नाम से पुकारा जाता है। **ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ७-८।**

(आ) दो सती-प्रस्तरों का समूह, जिनमें एक पर वि० सं० १४८७ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ८।**

२०७२. **बारा (शिवपुरी)**

(अ) सती-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १४८७ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ८।**

(आ) सती-प्रस्तर जिस पर वि० सं० १५३९ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० १९२८-२९, पृ० २५।**

२०७३. **बारो अथवा बरनगर (विदिशा)**

(अ) बौद्ध, जैन, वैष्णव तथा शैव प्रतिमाएँ। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० ६९।**

(आ) प्राचीन सती-स्तम्भ। **क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ७५।**

(इ) लगभग ७वीं-८वीं शताब्दी ईसवी का 'सोलह-खंभी' भवन। **वही।**

२०७४. **बारोद (गढ़ी) (शिवपुरी)**

लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के स्मारक-स्तम्भ, जिन पर अभिलेख उत्कीर्ण हैं। **ग्वा० पु० रि० १९२२-२३।**

२०७५. **बारोद (बूढ़ी) (शिवपुरी)**

(अ) गाँव के दक्षिण की ओर स्थित तालाब के तट पर सती-प्रस्तरों का समूह। **ग्वा० पु० रि० १९२२-२३।**

(आ) प्राचीन कूप जिससे वि० सं० १३३६ का यज्वपाल आसल्लदेव के शासन काल का शिलालेख प्राप्त हुआ था। **वही।**

(इ) प्राचीन गढ़ी के भग्नावशेष। **वही।**

२०७६. **बालोद (दुर्ग)**

(अ) प्राचीनतम सती-स्तम्भ जो लगभग दूसरी शताब्दी ईसवी का है। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १३६-३७; क० लि० ए० रि० पृ० ४९; ख० वै० पृ० ३६०।**

(आ) अनेक प्राचीन प्रस्तर-स्तम्भ। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १३६-३७; क० लि० ए० रि० पृ० ४९।**

(इ) प्राचीन बावड़ियाँ। **क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १३३-३४; क० लि० ए० रि० पृ० ४९।**

२०७७. **विजयराघोगढ़ (जबलपुर)**

स्तम्भ जिसपर वि० सं० ११५४ का महाराज मगधदेव का लेख उत्कीर्ण है। **हीरालाल सूची, क्रमांक ७२।**

२०७८. **बिजरी (शिवपुरी)**

(अ) लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के तीन मन्दिरों के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १६१८-१६।

(आ) सती-प्रस्तर जिस पर वि० सं० १५६६ का लेख उत्कीर्ण है। वही।

२०७६. **बिजागढ़ (पश्चिम निमाड़)**

(अ) दो वृहदाकार शैलकृत्त गुफाएँ। इ० आ० रि० १६५६-६०, पृ० ६६।

(आ) स्थानीय दुर्ग में रखी परमार शासन कालीन प्रतिमाएँ। वही।

२०८०. **बिलहरी (जबलपुर)**

(अ) प्राचीन मठ के भग्नावशेष। ख० वै० पृ० ३३१-३२।

(आ) लक्ष्मणसागर तालाब। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार इसे कलचुरि शासक लक्ष्मणराज द्वारा निर्माण कराया गया था। है० त्रि० मा० पृ० ४६; चित्र ७ अ; ख० वै० पृ० ३३०; क० लि० ए० रि० पृ० २८।

२०८१. **बिलैगढ़ (बिलासपुर)**

प्राचीन किला तथा मन्दिर के भग्नावशेष। क० लि० ए० रि० पृ० ५६; रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१६०६), पृ० २७४।

२०८२. **बिलाव (शिवपुरी)**

(अ) प्राचीन मन्दिर में रखी प्रतिमाएँ। ग्वा० पु० रि० १६१४-१५।

(आ) सती-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १३६० का लेख उत्कीर्ण हैं। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १६७१, क्रमांक ३३।

२०८३. **बिलासपुर (बिलासपुर)**

कलचुरि कालीन प्रतिमाएँ। प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १६०४, पृ० २७।

२०८४. **बिहार-कोटरा (राजगढ़)**

(अ) आधुनिक मस्जिद जो लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के स्थान पर तथा उसके भग्नावशेषों से बनाया गया है। म० भा० पु० रि० १६४६-५०।

(आ) लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी का 'सोलह-खंभी' भवन। वही।

२०८५. **बीना (सागर)**

अनेक सुरक्षित प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० १६६१-६२, पृ० १००।

२०८६. **बीरपुर (मोरेना)**

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १६३५-३६, पृ० १२।

२०८७. **बुढ़ेरा (शिवपुरी)**

झालोनी तालाब के निकट पहाड़ी पर १८ फीट लम्बा प्रस्तर-स्तम्भ, जिस पर वि० सं० १३५१ का लेख उत्कीर्ण है। लेख में कीर्तिदुर्ग, पद्मराज तथा चन्देरी और बुन्देला राजाओं का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० २२।

२०८८. **बूढ़ी-राई (शिवपुरी)**

सती-प्रस्तर, जिस पर वि० सं० १५४५ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९१४-२३।

२०८९. **बेनाई-खो (गुना)**

प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९३०-३१।

२०९०. **बेलारस (दुर्ग)**

प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। क० लि० ए० रि० पृ० ४९।

२०९१. **बेसनगर (विदिशा)**

(अ) मौर्य कालीन स्त्री प्रतिमा। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ४४।

(आ) मकर स्तम्भ-शीर्ष। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ४२-४३।

(इ) 'कल्प-द्रुम' स्तम्भ-शीर्ष। वही।

(ई) गुप्त कालीन प्रतिमाएँ। वही, पृ० ४१।

(उ) उत्खनन में प्राप्त एक प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। वही, पृ० ४५-४६।

(ऊ) आधुनिक नगर के पश्चिम की ओर प्राचीन नगर के भग्नावशेष। वही, पृ० ३६; भि० टो० पृ० ९५।

(ए) हेलियोदोर स्तम्भ के निकट प्राचीन टीले जिनका आंशिक उत्खनन १९१३-१४ में डॉ० भण्डारकर द्वारा किया गया। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९१३-१४, पृ० १८६; ग्वा० पु० रि० १९३५-३६, पृ० ७-८।

(ऐ) विशालकाय यक्ष तथा यक्षी प्रतिमाएँ जो मौर्य तथा शुंग कालीन हैं। ये इण्डियन म्यूज़ियम कलकत्ता तथा केन्द्रीय पुरातत्त्व संग्रहालय ग्वालियर में संग्रहीत हैं। ज० स० प्र० इ० प० भाग २, पृ० २०; स० इ० स्क० पृ० ५२, चित्र ४३।

(ओ) गंगा की प्रतिमा जो म्यूज़ियम आफ फाइन आर्ट्स, बोस्टर्न में संग्रहीत है। स० इ० स्क० पृ० १९७, चित्र ९७।

२०९२. **बेसानी (पन्ना)**

कलचुरि कालीन मन्दिर के भग्नावशेष जिनमें कलचुरि सम्वत् ९५८ का शिलालेख प्राप्त हुआ। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १०२।

२०९३. **बेहटी (गुना)**

लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी का मठ। ग्वा० पु० रि० १९३६-३७, पृ० ९।

२०९४. **बैजनाथ (रीवा)**

(अ) पूर्व-मध्यकालीन मन्दिर। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

(आ) प्राचीन ईंटों का बना मन्दिर। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० २।

(इ) गंगा की खण्डित प्रतिमा जो कलचुरि कालीन है। आ० क० त्रि० पृ० २२३।

(ई) नागराज की कलचुरि कालीन प्रतिमा। आ० क० त्रि० पृ० २२५।

२०९५. **बोरपेंद (बैतूल)**

गाँव के निकटवर्ती जंगल में एक प्राचीन मन्दिर। क० लि० ए० रि० पृ० ४४।

२०९६. **बोरिया (दुर्ग)**

दो पुरुष प्रतिमाएँ जिन पर जसराजदेव का (कलचुरि) सम्वत् ९१० का लेख उत्कीर्ण है। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ४४।

२०९७. **भक्तर (गुना)**

चार सती-प्रस्तर, जिनपर वि० सं० १३०४, १३८४, १५१९ तथा १७६७ के लेख उत्कीर्ण हैं। ग्वा० पु० रि० १९१४-२३।

२०९८. **भटनावर (शिवपुरी)**

(अ) गाँव के दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२८-२९, पृ० १३।

(आ) माता के मन्दिर के निकट प्राचीन सती-स्मारक। ग्वा० पु० रि० १९२८-२९, पृ० १३।

२०९९. **भदेरा (शिवपुरी)**

अनेक सती-स्मारक, जिन पर वि० सं० १४९५, १५३५, १५६५, तथा १६६८ के लेख उत्कीर्ण हैं। ग्वा० पु० रि० १९२८-२९, पृ० १४।

२१००. **भरहुत (सतना)**

नारो पहाड़ के किले के निकट खजुराहो शैली का एक मन्दिर। इ० आ० रि० १९६५-६६, पृ० ७३।

२१०१. **भरावली (मोरेना)**

अनेक सती-स्मारकों का समूह जिनपर वि० सं० १४३९, १५३९, १५९४ तथा १६७५ के लेख उत्कीर्ण हैं। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० ३२।

२१०२. **भांडेर (ग्वालियर)**
'सोन तलैया' नामक प्राचीन तालाब जहाँ स्थानीय मान्यताओं के अनुसार राजा भोजनाथ तथा युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ किया था। **ग्वा० पु० रि० १९१४-२३।**

२१०३. **भानपुरा (मन्दसौर)**
गाँव के दो मील उत्तर-पूर्व की ओर 'पठार' के निकट प्राचीन प्रतिमाएँ, दीवार तथा बस्तियों के भग्नावशेष। **इ० आ० रि० १९५४-५५, पृ० ६२।**

२१०४. **भिचोर (मन्दसौर)**
लगभग १४वीं-१५वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। **ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० १८-१९।**

२१०५. **भिदारी-कलां (जबलपुर)**
कलचुरि शैली में लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की प्रतिमाएँ। **इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६९।**

२१०६. **भिलसा (विदिशा)**
(अ) लोहांगी पहाड़ी पर स्थित लगभग तीसरी शताब्दी ई० पू० का स्तम्भ-शीर्ष जिस पर सिंह की आकृति बनी है। **आ० ग्वा० पृ० ६५।**
(आ) किले के भैरोंसिह हवेली क्षेत्र में लगभग ८वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। **ग्वा० पु० रि० १९४६-४७।**
(इ) खण्डित प्रतिमा जिस पर लक्ष्मण के पुत्र कुमारसी का वि० सं० ११५४ (?) का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० सम्वत् २०००, क्रमांक ४।**

२१०७. **भीर (बालाघाट)**
यादव कालीन हेमाडपंती देवालय। **क० लि० ए० रि० पृ० २५; म०पु०रू० पृ० ८८।**

२१०८. **भुरववा (शिवपुरी)**
लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष, जिसे मढ़ी कहा जाता है। **ग्वा० पु० रि० १९३५-३६, पृ० १२।**

२१०९. **भेड़ाघाट (जबलपुर)**
कुषाणकालीन दो प्रतिमाएँ जिन पर उत्कीर्ण लेख में भूमक अथवा भूवक की कन्या द्वारा मूर्तियों की स्थापना का उल्लेख है। **हीरालाल—'जबलपुर ज्योति' पृ० १६२; डायरेक्टर जनरल ऑफ आर्केयलाजी रिपोर्ट १९१८-१९, पृ० ३३; हीरालाल सूची, क्रमांक ४५।**

२११०, **भैंसदेही (बैतूल)**
एक प्राचीन मन्दिर जिसमें उत्कृष्ट प्रतिमाएँ हैं। **क० लि० ए० रि० पृ० ४४।**

२१११. **भेसरवास (गुना)**

पाँच सती-स्तम्भों का समूह जो लगभग १३वीं-१४वीं शताब्दी ईसवी के हैं। इसमें दो स्तम्भों पर वि० सं० १३५२ के लेख उत्कीर्ण हैं। एक लेख में नलपुर के गणपतिदेव का उल्लेख है। **ग्वा० पु० रि० १९२६-२७, पृ० १८।**

२११२. **भैरमगढ़ (बस्तर)**

पूर्व-मध्यकालीन मन्दिरों के भग्नावशेष। **इ० आ० रि० १९६८-६९।**

२११३. **भैलिपुरा (होशंगाबाद)**

मध्यकालीन प्रतिमाएँ। **इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९।**

२११४. **भोजपुर (रायसेन)**

'भोजताल' नामक विशाल प्राचीन जलाशय के मेढ़ों के अवशेष। यह जलाशय परमार शासक भोजदेव के शासन काल में निर्माण किया गया था। **म० प्र० स० पुरातत्त्व विशेषांक, जून १३, १९७०, पृ० ५१।**

२११५. **भोपाल (भोपाल)**

उमरावदुल्ला के बगीचे में प्रस्तर-स्तम्भ जिस पर शंख-लिपि में लेख उत्कीर्ण है। **इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ६८, चित्र ८२-ब।**

२११६. **भोपाली (बैतूल)**

प्राचीन गुफा जो बैतूल से पूर्व में २३ मील पर स्थित है। **म० पु० रू० पृ० ९२।**

२११७. **भौंरासा (विदिशा)**

(अ) सती-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १५६४ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० १९३५-३६, पृ० ८-९।**

(आ) प्राचीन तालाब, जो मार्कण्डी नदी का उद्गम स्थल है। स्थानीय मान्यता के अनुसार तालाब के तट पर मार्कण्डेय ऋषि का आश्रम था। **ग्वा० पु० रि० १९३५-३६, पृ० १०।**

२११८. **मगरधा (जबलपुर)**

गोंड शासन कालीन दुर्ग। **म० पु० रू० पृ० ९७।**

२११९. **मझगवां (जबलपुर)**

(अ) दो सती-प्रस्तर जिन पर वि० सं० १२४६ तथा १२९० के लेख उत्कीर्ण हैं। **हीरालाल सूची, क्रमांक ७८।**

(आ) प्रतिमा जिस पर किसी पाशुपताचार्य का उल्लेख है। **हीरालाल सूची, क्रमांक ६९।**

५२

(ई) प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष। ज० डि० ग० पृ० ६८७।

२१२०. **मझौली (जबलपुर)**
लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० १५।

२१२१. **मण्डला (मण्डला)**
(अ) काली देवी के मन्दिर में स्थित प्राचीन प्रतिमाएँ। म० डि० ग० पृ० २४६।
(आ) सती-प्रस्तर जिस पर गोंड शासक निजामशाह के शासन काल का सम्वत् १८१२ का लेख उत्कीर्ण है। हीरालाल सूची, क्रमांक १२५।

२१२२. **मढ़पिपरिया (सागर)**
सुरक्षित प्राचीन प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० १००।

२१२३. **मढ़ा-गुरुहारू (सतना)**
कलचुरि कालीन कूप, बावड़ी तथा अन्य भवनों के भग्नावशेष। आ० क० त्रि० पृ० २४०।

२१२४. **मढ़िया (जबलपुर)**
गुप्त कालीन सपाट छत का मन्दिर। इ० आ० रि० १९६८-६९।

२१२५. **मदनखेड़ी (गुना)**
लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९१८-१९।

२१२६. **मदनपुर (सागर)**
(अ) कलचुरि कालीन मन्दिर के भग्नावशेष। प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १८९४, पृ० ७।
(आ) छः प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष। क० लि० ए० रि० पृ० १५।

२१२७. **मन्दसौर (मन्दसौर)**
(अ) शिवना के तट पर महादेव घाट के विपरीत लगभग ५वीं शताब्दी ईसवी का टीला जिसमें वृहदाकार ईंटे, प्राचीन मिट्टी के बरतन तथा अन्य पुरावशेष प्राप्त हैं। ग्वा० पु० रि० १९४६-४७।
(आ) किले में गुप्तकालीन प्रतिमाएँ तथा प्राचीन टीले। वही।
(इ) एक स्तम्भ जिस पर वि० सं० १२८३ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७५, क्रमांक ४३।
(ई) शिवना नदी के पश्चिम तट पर पहाड़ी पर बना लगभग १४वीं-१५वीं शताब्दी

ईसवी का किला जो प्राचीन मन्दिर तथा अन्य भवनों के भग्नावशेषों से अलाउद्दीन खिलजी द्वारा बनवाया गया। ग्वा० पु० रि० १९३३-३४, पृ० १५।

२१२८. **मनिपुर (बिलासपुर)**

प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष। क० लि० ए० रि० पृ० ६१।

२१२९. **मनियागढ़ (छत्तरपुर)**

चन्देल कालीन दुर्ग। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० ६९।

२१३०. **मरई (रीवा)**

कलचुरि कालीन स्तम्भ। है० त्रि० मा० पृ० ९५-९८, चित्र ३८-अ-ब।

२१३१. **मढ़ियादो (सागर)**

गोंड शासन कालीन दुर्ग। म० पु० रू० पृ० ९७।

२१३२. **मल्लार (बिलासपुर)**

(अ) गुप्त कालीन प्रतिमा। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८।

(आ) दो कलचुरि कालीन मन्दिरों के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २०४।

(इ) स्तम्भ जिस पर सिद्धमातृका लिपि में लगभग ८वीं शताब्दी ईसवी का लेख उत्कीर्ण है। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० २-५।

(ई) पातालेश्वर मन्दिर के निकट घर में संग्रहीत कुबेर की प्रतिमा जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। ना० सू०।

(उ) डिडीनेश्वरी मन्दिर के निकट रखी ब्रह्मा की प्रतिमा जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। वही।

२१३३. **मसौन (रीवा)**

(अ) कलचुरि कालीन गोलाकार मन्दिर के भग्नावशेष। है० त्रि० मा० पृ० ४४-४५, चित्र ६ अ-ब।

(आ) दो प्राचीन मन्दिरों की नीवें। वही।

२१३४. **महुवन (गुना)**

दो सती-स्तम्भों का समूह जिनमें एक पर वि० सं० १४४३ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० ९, २०, २१।

२१३५. **महेश्वर (पश्चिम निमाड़)**

(अ) प्राचीन टीला जो 'नावडाटोली' कहलाता है। यहाँ पुरातत्त्व उत्खनन हुए। म० भा० पु० रि० १९४९-५०; ए० मा० न०; वे० नि० डि० ग० पृ० ४५३-५४।

(आ) मण्डल खोह नामक प्राचीन टीला जिसमें लगभग तीसरी शताब्दी ई० पू० के पुरावशेष प्राप्य हैं। **वही।**

(इ) 'भतृहरी-गुफा' जिसमें परमार कालीन प्रतिमाएँ हैं। **ए० मा० न० पृ० १७।**

२१३६. महोरी (रीवा)

सती-स्तम्भ जिनमें एक पर वि० सं० १४२१ का लेख उत्कीर्ण है। **क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ३।**

२१३७. माकनगंज (मन्दसौर)

प्राचीन कूप जिसकी बाद में मरम्मत की गयी। **ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० २०।**

२१३८. माकनी (धार)

प्राचीन टीला जिसमें वृहदाकार ईंटें, प्राचीन मिट्टी के बरतन आदि प्राप्त होते हैं। **म० भा० पु० रि० १९४९-५०।**

२१३९. माकुंदपुर (रीवा)

मुस्लिम मकबरा जो प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेषों से बना है। **क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ३-४।**

२१४०. मांडू (धार)

(अ) लोहानी दरवाजे के निकट टीले पर लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। **मा० सि० ज० पृ० १२२।**

(आ) लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी में बना तालाब जो 'मुंज-तालाब' कहलाता है। **वही, पृ० ६, ६८।**

(इ) लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी का प्रस्तर-स्तम्भ जो लोहानी दरवाजे के निकट टीले पर है। **वही, पृ० १२२।**

(ई) लगभग १३वीं-१४वीं शताब्दी ईसवी में बना 'भंगी दरवाजा'। **वही, पृ० ४१।**

(उ) लोहानी दरवाजा के निकट परमार शासन कालीन भग्नावशेष। **वही, पृ० १२१।**

(ऊ) रामगोपाल दरवाजा के निकट परमार शासन कालीन भग्नावशेष। **वही, पृ० १२१।**

(ए) 'सन्त-कोठरी' के निकट प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। **वही, पृ० १२३।**

(ऐ) 'सन्त-कोठरी' के निकट प्राचीन कूप। **वही।**

२१४१. माधोगढ़

दुर्ग के द्वार पर लगी प्राचीन प्रतिमाएँ। **क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० १।**

२१४२. **मान्धाता (पूर्व निमाड़)**

(अ) प्राचीन मन्दिर । **क० लि० ए० रि० पृ० ४०-४१ ।**

(आ) देव तथा देवियों की मध्यकालीन प्रतिमाएँ । **इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९ ।**

२१४३. **मामोन (गुना)**

(अ) गाँव की मूल स्थिति के उत्तर की ओर लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिरों के भग्नावशेष । **ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० १० ।**

(आ) गाँव की मूल स्थिति के दक्षिण की ओर लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिरों के भग्नावशेष । **वही ।**

(इ) दो भग्न स्मारक-स्तम्भ जिनमें एक पर वि० सं० १३५१ का लेख उत्कीर्ण है तथा दूसरा कीरसिंह और वीरदेव का उल्लेख करता है। **ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० २१, २५ ।**

(ई) प्राचीन कूप । **वही ।**

२१४४. **मायापुर (शिवपुरी)**

प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष जिसमें वि० सं० १२९७ का शिलालेख प्राप्त हुआ । **क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३०२ ।**

२१४५. **मासेर (विदिशा)**

लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। **ग्वा० पु० रि० १९३०-३१, पृ० ८ ।**

२१४६. **माहोली (गुना)**

सती-प्रस्तर जिस पर वि० सं० १५२६ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० १९२२-२३ ।**

२१४७. **मितावली (मोरेना)**

(अ) पहाड़ी के निकट लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष । **ग्वा० पु० रि० १९१८-१९ ।**

(आ) मूर्ति जिस पर वि० सं० १५६० का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९८, क्रमांक १२ ।**

(इ) प्रस्तर-स्तम्भ जिस पर उत्कीर्ण लेख में सूर्यस्तोत्र का एक पद तथा महाराज रामसिंह का उल्लेख है । **ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९९०, क्रमांक १४ ।**

२१४८. **मियाना (गुना)**

(अ) प्राचीन कूप जिसमें वि० सं० १५५१ का उत्कीर्ण है । **ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७५, क्रमांक ५०, ५१ ।**

(आ) सती-प्रस्तर जिस पर वि० सं० १५६३ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७५, क्रमांक ५८।

२१४९. मुखवासा (शिवपुरी)
चार सती-स्तम्भों का समूह जिनमें एक पर वि० सं० १३५६ का लेख उत्कीर्ण है। लेख में पल्हण के पुत्र कल्हण का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० १९२२-२३।

२१५०. मेहसाना (रीवा)
पूर्व-मध्यकालीन मन्दिर। इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६२।

२१५१. मैहर (सतना)
(अ) निकटवर्ती पहाड़ी पर प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। है० त्रि० मा० पृ० ७७।
(आ) कलचुरि कालीन प्रतिमाओं के भग्नावशेष। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९२२-२३, चित्र ४०-स।

२१५२. मोड़ी (मन्दसौर)
लगभग १३वीं शताब्दी ईसवी के तीन मन्दिरों के समूह के भग्नावशेष। इ० स्टे० ग० पृ० ४३।

२१५३. मोरवान (मन्दसौर)
लगभग ११वीं-१२वी शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० २०-२१।

२१५४. मोहनपुर (विदिशा)
लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२०-२१।

२१५५. मोहना (ग्वालियर)
तीन सती-स्मारकों का समूह जिनमें एक पर वि० सं० १४६२ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९२३-२४, पृ० १२।

२१५६. रखेतरा (गुना)
प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९२४-२५, पृ० १६, ३८।

२१५७. रणोद (शिवपुरी)
नागदेव की प्राचीन मूर्ति, जिसमें दो काले सर्प एक दूसरे से आलिंगनबद्ध दर्शाये गये हैं। म० प्र० स० पुरातत्त्व विशेषांक, १३ जून, १९७०, पृ० ३३।

२१५८. रतनगढ़ (मन्दसौर)
सती-स्मारक जिस पर वि० सं० ११४२ का लेख उत्कीर्ण है। लेख में गंगा नामक स्त्री के सती होने का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० १९२२-२३।

२१५९. रतनपुर (बिलासपुर)

(अ) मध्यकालीन बादलमहल दुर्ग में लगी कलचुरि कालीन मन्दिर के स्तम्भ तथा प्रतिमाएँ। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० २१४-१६; क० लि० ए० रि० पृ० ६२; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९०४ पृ० ३१-३२; बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९१०), पृ० २८९।

(आ) कठीदेवल मन्दिर में संग्रहीत राजपुरुष प्रतिमा जो लगभग १२वीं शताब्दी ईसवी की है। ना० सू०।

(इ) अनेक प्राचीन सती-स्मारक। बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९१०), पृ० २८९।

२१६०. रदेव (शिवपुरी)

सती-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १४९७ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९९२, क्रमांक ३८।

२१६१. रनेह (दमोह)

प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष जो सम्भवतः चन्देल कालीन है। क० लि० ए० रि० पृ० ३३।

२१६२. रमना (सागर)

गोंड शासन कालीन दुर्ग। म० पु० रू० पृ० ६७।

२१६३. राई (बूढ़ी) (शिवपुरी)

भैरव के मन्दिर में सती-स्तम्भ जिस पर यज्वपाल आसल्लदेव के शासन काल का वि० सं० १३२७ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

२१६४. राजगढ़ (छतरपुर)

पूर्व-मध्यकालीन प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९८।

२१६५. राजनगर (दमोह)

गोंड शासन कालीन दुर्ग। म० पु० रू० पृ० ६७।

२१६६. राजोर (देवास)

प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। है० म० इ०।

२१६७. रामगढ़ (दुर्ग)

प्राचीन दुर्ग के भग्नावशेष। दु० डि० ग० पृ० १८४।

२१६८. रामगढ़ पहाड़ी (सरगुजा)

(अ) 'जोगीमठा' नामक प्राचीन गुफा, जिसमें अशोक कालीन ब्राह्मी लिपि में लेख उत्कीर्ण है। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ४०-४१; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग ३, पृ० १२३-३१, चित्र ४३।

(आ) 'सीता-बेंगरा' नामक प्राचीन गुफा जिसमें अशोक कालीन ब्राह्मी लिपि में लेख उत्कीर्ण है। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ३९-४०।

२१६९. **रामनगर (मण्डला)**
गोंड शासन कालीन दुर्ग। **म० पु० रू० पृ० ९७।**

२१७०. **रामपुर**
सती-स्तम्भ जिस पर महाराज वीरराजदेव (?) की रानियों का वि० सं० १४०४ का लेख उत्कीर्ण है। **क० आ० स० इ० रि० भाग ९, पृ० ३४; भण्डारकर सूची, क्रमांक ७०५।**

२१७१. **रामबन (सतना)**
स्थानीय संग्रहालय में संरक्षित अग्नि की कलचुरि कालीन प्रतिमा। **आ० क० त्रि० पृ० २२४।**

२१७२. **रायपुर (रायपुर)**
अनेक प्राचीन प्रतिमाएँ संरक्षित। **क० लि० ए० रि० पृ० ४८।**

२१७३. **रायबोर (होशंगाबाद)**
मध्यकालीन प्रतिमाएँ। **इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९९।**

२१७४. **रायसेन (रायसेन)**
पर्वत शृंखला के शिखर पर निर्मित गोंड शासन कालीन दुर्ग, जिसमें अनेक महल तथा निवास गृहों के भग्नावशेष हैं। **म० प्र० स० जून १३, १९७०, पृ० ७६।**

२१७५. **रायरू (ग्वालियर)**
सती-स्मारकों का समूह, जिनमें एक पर वि० सं० १५५२ का लेख उत्कीर्ण है। **ग्वा० पु० रि० १९२२-२३।**

२१७६. **रिथोरा (मोरेना)**
(अ) गाँव के पूर्व की ओर स्थित लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी के चार स्मारक-स्तम्भ। **ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० ९।**

(आ) उक्त स्तम्भों के पश्चिम में स्थित स्मारक-स्तम्भ। **वही।**

२१७७. **रीवा (रीवा)**
यक्ष (कुबेर) की कलचुरि कालीन प्रतिमा जो मृत्युंजय मन्दिर के निकट प्राप्त हुई है। **आ० क० त्रि० पृ० २२५।**

२१७८. **रूपनाथ (जबलपुर)**
अशोक की राजाज्ञा के निकट 'लक्ष्मण-कुंड' नामक प्राचीन कुंड। निकट ही

शैलकृत्त गुफा में शिवलिंग स्थापित है। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० ५६; वही, भाग ६, पृ० ३८; क० लि० ए० रि० पृ० २६।

२१७९. रेपुरा (भिण्ड)
मध्यकालीन मन्दिर तथा प्रतिमाओं के भग्नावशेष। इ० आ० रि० १६६२-६३, पृ० ६८।

२१८०. रोण्ड (जबलपुर)
गुप्त कालीन सपाट छत का मन्दिर। द० दी० पृ० १०४।

२१८१. लखारी (गुना)
(अ) गाँव के पूर्व की ओर स्थित लगभग ११वी-१२वीं शताब्दी ईसवी का सपाट छत का मन्दिर। ग्वा० पु० रि० १६२४-२५, पृ० १४।
(आ) शिव मन्दिरों के निकट चौकोर कुआँ जिसमें लगे वि० सं० ११२४ के शिलालेख में महाराजाधिराज अभयदेव तथा राजकुमार चन्द्रादित्य तथा जल्हणदेव का उल्लेख है। वही।

२१८२. लड़ई-लोहारी (जबलपुर)
कलचुरि कालीन विशालकाय नागी प्रतिमा। आ० क० त्रि० पृ० १४।

२१८३. लांजी (बालाघाट)
(अ) स्तम्भ जिस पर देवगिरि के शासक यादव रामनायक का लेख उत्कीर्ण है। हीरालाल सूची, क्रमांक २८।
(आ) गोंड शासन कालीन दुर्ग। म० पु० रू० पृ० ६७।

२१८४. लाल पहाड़ (सतना)
शिला पर उत्कीर्ण स्तम्भ अथवा वेदी की आकृति। निकट ही कलचुरि शासक नरसिंहदेव का वि० सं० ६०६ का शिलालेख उत्कीर्ण है। है० त्रि० मा० पृ० १०६, चित्र ५३-ब।

२१८५. लालवाड़ी (बैतूल)
प्राचीन गुफा जो भोपाली से उत्तर में ४ मील पर स्थित है। म० पु० रू० पृ० ६२।

२१८६. लौन (रायपुर)
आधुनिक मन्दिर जो प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेषों से बनाया गया है। क० लि० ए० रि० पृ० ५१।

२१८७. वलीपुर (धार)
आठ स्मारक-स्तम्भों का समूह जिनमें दो पर लेख उत्कीर्ण हैं। एक लेख वि० सं०

१३२४ का है जिसमें मण्डपदुर्ग के परमार शासक जयसिंह का उल्लेख है। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

२१८८. विदिशा (विदिशा)

(अ) लगभग दूसरी शताब्दी ई० पू० का प्रस्तर-स्तम्भ का फलक। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० ४-३।

(आ) यक्षी प्रतिमा जो लगभग दूसरी शताब्दी ई० पू० की है। विक्रम स्मृति ग्रन्थ, पृ० ६९१।

(इ) कुबेर तथा कुबेरी की प्रतिमा जो दूसरी शताब्दी ई० पू० की है। म० भा० इ० पृ० ३२३।

(ई) विशालकाय यक्ष तथा यक्षी प्रतिमाएं जो शुंग कालीन हैं। ज० म० प्र० इ० प० भाग २, पृ० २०।

(उ) गंगा की गुप्त कालीन भग्न प्रतिमा। ज० म० प्र० इ० प० भाग २, पृ० २०।

(ऊ) उपरोक्त प्रतिमा से मिलती-जुलती गंगा की प्रतिमा जो बोस्टन संग्रहालय में संरक्षित है। हि० इ० इ० आ० चित्र ४८, क्रमांक १७७।

(ए) नाग तथा नागियों की मनुष्य तथा सर्पाकृति में प्रतिमाएँ जो लगभग पहली-तीसरी शताब्दी ईसवी की हैं। ज० म० प्र० इ० प० भाग २, पृ० २०।

(ऐ) ब्रह्मा, सूर्य, शिव, कार्तिकेय, पार्वती, सप्तमातृका महिषासुरमर्दिनी तथा जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ। ये प्रतिमाएँ मध्यकालीन हैं। ज० म० प्र० इ० प० भाग २, पृ० २१।

२१८९. शाहगढ़ (सागर)
गोंड शासन कालीन दुर्ग। म० पु० रू० पृ० ९७।

२१९०. शिवरीनारायण (बिलासपुर)
नारायण के मन्दिर के अहाते में एक पुरुष प्रतिमा जिस पर कलचुरि सम्वत् ८९८ का लेख उत्कीर्ण है। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १९७; ए० रि० भाग १५, पृ० ५०५-५०६; प्र० रि० आ० स० इ० वे० स० १९०३-०४, पृ० ५३; क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५८२।

२१९१. शुकुलगांव
प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग १३, पृ० ३।

२१९२. शुकलपुरा (भिण्ड)
मध्यकालीन मन्दिर तथा प्रतिमाओं के भग्नावशेष। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८।

२१९३. सकर्रा (गुना)

(अ) गाँव के पश्चिम की ओर स्थित लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी में बना तालाब। ग्वा० पु० रि० १९२७-२८, पृ० ९।

(आ) प्राचीन तालाब के उत्तरी तट पर बना लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का मन्दिर जिसकी दीवार पर पार्वती, अर्धनारीश्वर, ब्रह्मा आदि की प्रतिमाएँ लगी हैं। ग्वा० पु० रि० १९२७-२८, पृ० १०।

(इ) प्राचीन तालाब के उत्तरी तट पर बना लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी का स्मारक-स्तम्भ। ग्वा० पु० रि० १९२७-२८, १०।

(ई) प्राचीन तालाब के पश्चिमी तट पर लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का मन्दिर जिसकी दीवार पर सूर्य, गणेश तथा विष्णु की प्रतिमाएँ लगी हैं। ग्वा० पु० रि० १९२७-२८, पृ० १०।

(उ) प्राचीन तालाब के पश्चिमी तट पर बना लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी का सती-स्मारक। ग्वा० पु० रि० १९२७-२८, पृ० १०।

(ऊ) गाँव के पूर्व की ओर माता के मन्दिर के निकट चार सती-स्मारकों का समूह। प्रत्येक सती-प्रस्तर पर वि० सं० १३०४ का अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९२७-२८, पृ० ११, ३९।

(ए) माता के मन्दिर के निकट आठ सती-स्मारकों का समूह जिन पर वि० सं० १२३७, १२८१, १२८ (?), १३४१, १३४२, १३७५ तथा १३७७ के लेख उत्कीर्ण हैं। वही।

(ऐ) मन्दिर के निकट तीन सती-स्मारक जिन पर क्रमशः वि० सं० १३४२, १३७५ तथा १३९७ के लेख उत्कीर्ण हैं। वही।

(ओ) मन्दिर के निकट एक सती-स्मारक जिस पर वि० सं० १४०० का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९२७-२८, पृ० ४१।

(औ) मन्दिर के निकट एक सती-स्मारक जिस पर वि०सं० १५०१ के लेख उत्कीर्ण हैं। वही।

२१९४. सकौर (दमोह)

गुप्तकालीन सपाट छत का मन्दिर जिसमें सम्वत् १३६१ का यात्री-लेख है। क० लि० ए० रि० पृ० ३३; द० दी० पृ० १०७-८; हीरालाल सूची, क्रमांक ११९।

२१९५. सतनवाड़ा (ग्वालियर)

(अ) लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी में बना प्राचीन कूप। ग्वा० पु० रि० १९२३-२४, पृ० १४।

(आ) गांव के १ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित चार सती-प्रस्तर जिनमें एक पर वि० सं० १५२१ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९२३-२४, पृ० २५, २८।

(इ) विष्णु मन्दिर के निकट प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। वही, पृ० १४।

(ई) सती-प्रस्तर जिस पर वि० सं० १०१६ का लेख उत्कीर्ण है। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० ९४।

(उ) गांव के पश्चिम की ओर स्थित स्मारक-स्तम्भ जिसका आधा भाग जमीन में गड़ा है। ग्वा० पु० रि० १९२३-२४, पृ० १४।

(ऊ) गांव के उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित स्मारक-स्तम्भ। वही।

२१९६. **सतना (सतना)**

कलचुरि कालीन भग्नावशेष। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९२५-२६, चित्र ५९, अ-ब।

२१९७. **सन्दोर (गुना)**

स्मारक-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १०७२ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९१८-१९।

२१९८. **सन्धारा (मन्दसौर)**

लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी की प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० ४-४।

२१९९. **सलखन (बिलासपुर)**

सलखन से प्राप्त धातु प्रतिमाएँ—

सलखन में १९३६ में एक दफीना प्राप्त हुआ जिसमें धातु के दो घड़े, पाँच प्रतिमाएँ, चार घण्टे तथा तीन शमादानें सम्मिलित थीं। इनमें से एक घण्टा तथा एक गौरी की प्रतिमा रायपुर संग्रहालय में संग्रहीत है जिनका वर्णन यथा-स्थान किया गया है। दो प्रतिमाएँ नागपुर के केन्द्रीय संग्रहालय में हैं। शेष प्रतिमाएँ तथा वस्तुएँ ग्रामवासियों को वापस कर दी गयीं थीं जो वहाँ के एक मन्दिर में पुज रही हैं। नागपुर संग्रहालय की प्रतिमाओं में एक स्थानक-विष्णु प्रतिमा है तथा दूसरी चामुण्डा की प्रतिमा है। धा० प्र० पृ० १३; 'प्रगति' (नागपुर) मार्च-अप्रैल, १९५६, पृ० ९९-१००, चित्र १, ३।

२२००. **सलमानिया (शिवपुरी)**

(अ) लगभग १२वीं-१३वीं शताब्दी ईसवी का दो-मंजिला मन्दिर जो चबूतरे पर बना है। ग्वा० पु० रि० १९३५-३६, पृ० १३, १४।

(आ) मन्दिर के निकट सती-स्तम्भ। वही, पृ० २७।

२२०१. सलैया (दमोह)

सती-प्रस्तर जिस पर वि० सं० १३६२ का प्रतिहार शासक महाराजपुत्र बाघदेव के शासन काल का उल्लेख है। हीरालाल-ए० इ० भाग १६, पृ० ११; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६५६; हीरालाल सूची, क्रमांक १०१।

२२०२. सागर (सागर)

कलचुरि कालीन प्रतिमाए, लेख तथा अन्य भग्नावशेष। क० लि० ए० रि० पृ० ३४; सागर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०७) पृ० २५७; क० इ० इ० भाग ४, खण्ड १, पृ० १७४।

२२०३. सागोर (धार)

(अ) प्राचीन टीला जो सम्भवत: किसी प्राचीन नगरी के भग्नावशेष हैं। ग्वा० पु० रि० १९१६-१७।

(आ) प्राचीन स्तम्भ जिन पर अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण हैं। वही।

(इ) सती-स्तम्भों का समूह जिन पर अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण हैं। वही।

(ई) स्मारक-स्तम्भों का समूह जिन पर लेख उत्कीर्ण हैं। वही।

२२०४. सामन्तुखेड़ी (मोरेना)

(अ) चम्बल की बीहड़ों में लगभग ९वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९४०-४१, पृ० २२।

(आ) एक अन्य प्राचीन मन्दिर। वही।

(इ) चम्बल की बीहड़ों में प्राचीन टीले जो गुप्तकालीन किसी प्राचीन नगर के भग्नावशेष प्रतीत होते हैं। ग्वा० पु० रि० १९४०-४१, पृ० २२।

२२०५. सारंगपुर (राजगढ़)

चतुर्भुज ब्रह्मा की प्रतिमा जो लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी की है। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० ४-३।

२२०६. साहसपुर (दुर्ग)

एक प्रतिमा जिसे स्थानीय सहस्त्रबाहु अथवा सहस्त्रार्जुन की प्रतिमा कहते हैं। इस पर यशोराज का कलचुरि सम्वत् ९३४ का लेख उत्कीर्ण है। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ४२-४५, चित्र २२; क० लि० ए० रि० पृ० ५४; क० इ० इ० भाग ४, खण्ड २, पृ० ५९५-९६।

२२०७. सिंगोरगढ़ (दमोह)

(अ) तीन सती-प्रस्तर जिन पर वि० सं० १३५७, १३६३ तथा १३६६ की तिथियाँ

उत्कीर्ण हैं। क० आ० स० इ० रि० भाग ६, पृ० ४६, ५०; हीरालाल—'दमोह दीपक' पृ० ११२; हीरालाल सूची, क्रमांक ६७।

(आ) स्थानीय किले में स्थित एकाश्म 'कीर्ति-स्तम्भ' जिस पर वि० सं० १३६४ का लेख उत्कीर्ण है। वही।

२२०८. सिंगोरगढ़ (दमोह)

गोंड शासन कालीन दुर्ग। म० पु० रू० पृ० ६७।

२२०९. सिंघपुर (शहडोल)

कलचुरि कालीन भवनों के स्तम्भों के भग्नावशेष। आ० क० त्रि० पृ० २४२।

२२१०. सिमगा (रायपुर)

प्राचीन सती-स्तम्भ। क० आ० स० इ० रि० भाग १७, पृ० ३३; क० लि० ए० रि० पृ० ५५।

२२११. सिमरा (जबलपुर)

(अ) गांव के पूर्व की ओर स्थित चार कलचुरि कालीन मन्दिरों के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १५६; क० लि० ए० रि० पृ० २६।

(आ) तालाब के तट पर एक अन्य मन्दिर के भग्नावशेष जिसमें शैव तथा वैष्णव प्रतिमाएँ उपलब्ध हैं। वही।

(इ) सती-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १३५५ का लेख उत्कीर्ण हैं। क० आ० स० इ० रि० भाग २१, पृ० १०१।

२२१२. सिरपट (बिलासपुर)

सती-प्रस्तर जिस पर वि० सं० १४०१ का लेख उत्कीर्ण है। हीरालाल सूची, क्रमांक २३१।

२२१३. सिरपुर (रायपुर)

(अ) लगभग ५वीं-६वीं शताब्दी ईसवी का विशेष प्रकार का मन्दिर जो इन्द्रदेव को समर्पित है। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १७६।

(आ) प्राचीन मन्दिरों के समूह के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १७२।

२२१४. सिरोहा (शिवपुरी)

लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी में बना प्राचीन कूप। ग्वा० पु० रि० १९२५-२६ पृ० ८।

२२१५. सिलचट (रीवा)

(अ) कलचुरि कालीन ब्रह्मा की प्रतिमा। आ० क० त्रि० पृ० २२३।

(आ) हनुमान की कलचुरि कालीन विशाल प्रतिमा। वही, पृ० २२४।

२२१६. **सिलबारा-खुर्द (गुना)**
प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष। ग्वा० पु० रि० १९३६-३७, पृ० १०, २५।

२२१७. **सिहावा (रायपुर)**
कलचुरि कालीन मन्दिर के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १४५-४६।

२२१८. **सिहावा (रायपुर)**
छः प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष। क० लि० ए० रि० पृ० ५४; रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०९), पृ० ३४२।

२२१९. **सीतापुर (शहडोल)**
कलचुरि कालीन प्रतिमाएँ। आ० क० त्रि० पृ० २९।

२२२०. **सुपिया (रीवा)**
स्मारक-स्तम्भ जिस पर स्कन्दगुप्त के शासन काल का गुप्त सम्वत् १४१ का लेख उत्कीर्ण है। इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ५७।

२२२१. **सुनज (शिवपुरी)**
(अ) सती-स्मारक जिस पर वि० सं० १३१३ का अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९२२-२३।
(आ) लगभग १३वीं-१४वीं शताब्दी ईसवी का बना प्राचीन तालाब। वही।

२२२२. **सुन्दरसी (उज्जैन)**
सती-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १६०० का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७४, क्रमांक ४८।

२२२३. **सुरवाया (शिवपुरी)**
प्राचीन कूप जिसमें वि० सं० १३४१ का लेख उत्कीर्ण है। गा० सु० पृ० २५ तथा चित्र; भण्डारकर सूची, क्रमांक ६०७।

२२२४. **सुहानिया (मोरेना)**
(अ) लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का प्रस्तर-स्तम्भ जिसे 'भीम की लाट' कहते हैं। आ० ग्वा० पृ० १२५।
(आ) आधुनिक मढ़ी के निकट पहाड़ी की ढाल पर प्राचीन स्तम्भ। ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० १७।
(इ) लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी का स्मारक-स्तम्भ जो आधुनिक मन्दिर में लगा है। वही।

(ई) लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी के कूप । **वही, पृ० १८ ।**

(उ) लगभग ५वीं-६वीं शताब्दी ईसवी का प्रस्तर-फलक जिस पर १ से १४ तक अंक उत्कीर्ण हैं । **क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ४०१ ।**

(ऊ) लगभग ११वीं शताब्दी ईसवी के मन्दिर के भग्नावशेष । **ग्वा० पु० रि० १९१४-२३ ।**

२२२५. सेंधवा (निमाड़)

लगभग ११वीं १२वीं शताब्दी ईसवी का मन्दिर । **ग्वा० पु० रि० १९१४-१५ ।**

२२२६. सेसई (शिवपुरी)

(अ) जैन-मन्दिर के पश्चिम की ओर स्मारक-स्तम्भ जिस पर लगभग ६वीं-७वीं शताब्दी ईसवी का लेख उत्कीर्ण है । लेख में एक माता द्वारा अपने पुत्रों के युद्ध में मृत हो जाने के शोक में आत्मदाह करने का उल्लेख है । **ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० २६, ६३ ।**

(आ) स्मारक-स्तम्भ के निकट दो सती-स्मारक, जिन पर अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण हैं । **ग्वा० पु० रि० १९२९-३०, पृ० २६, ६३ ।**

(इ) सती-स्मारक के दक्षिण की ओर प्राचीन बावड़ी के भग्नावशेष । **वही ।**

२२२७. सेवई (ग्वालियर)

(अ) लगभग १०वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष । **ग्वा० पु० रि० १९३३-३४, पृ० १४ ।**

(आ) सती-स्मारक जिस पर अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण हैं । **वही ।**

२२२८. सोधनधा (उज्जैन)

अशोक-स्तम्भ का खण्डित शीर्ष । **'पुरातत्त्व', भाग २, पृ० ६५ ।**

२२२९. सोंधनी (मन्दसौर)

(अ) छठवीं शताब्दी ईसवी के दो चालीस फीट लम्बे खण्डित जय-स्तम्भ जिन पर मालवा के शासक यशोधर्मन् के लेख उत्कीर्ण हैं । लेख से ज्ञात होता है कि यशोधर्मन् द्वारा हूण शासक मिहिरकुल पर विजय प्राप्त करने की स्मृति में इन स्तम्भों को स्थापित किया गया था । **आ० ग्वा० पृ० १०४; ग्वा० पु० रि० १९२५-२६, पृ० ५; फ्लीट : क० इ० इ० भाग ३, पृ० १४२-४६; 'दशपुर जनपद संस्कृति' (मन्दसौर-१९६२) ।**

(आ) **'भैरव कुण्ड'** नामक प्राचीन तालाब । **ग्वा० पु० रि० १९१४-२३ ।**

२२३०. सोनगढ़ (सिवनी)
गोंड शासन कालीन दुर्ग। म० पु० रू० पृ० ६८।

२२३१. सोनकछ (उज्जैन)
एक स्तम्भ जिस पर लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९१७-१८।

२२३२, सोनसार (बालाघाट)
गोंड शासन कालीन दुर्ग। म० पु० रू० पृ० ९७।

२२३३. सोरर (दुर्ग)
(अ) कलचुरि कालीन मन्दिर के भग्नावशेष। क० आ० स० इ० रि० भाग ७, पृ० १३७-३८; क० लि० ए० रि० पृ० ५६।
(आ) स्तम्भ जिस पर अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण हैं। हीरालाल सूची, क्रमांक २३६; दु० डि० ग० पृ० २०५।

२२३४. सोहागपुर (शहडोल)
ठाकुर के महल में संरक्षित कलचुरि कालीन निम्न उदभृत प्रस्तर आकृतियाँ। है० त्रि० मा० पृ० १००-१०६, चित्र ४५-अ, ४२-ब, ४३, ४४।

२२३५. सोहागपुर (होशंगाबाद)
(अ) एक विशालकाय प्रतिमा। क० लि० ए० रि०, पृ० ४२।
(आ) सती-प्रस्तर जिस पर अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण है। हीरालाल सूची, क्रमांक १३५।

२२३६. हटा (दमोह)
(अ) मध्यकालीन प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० १९६७-६८, पृ० ६६।
(आ) गोंड शासन कालीन दुर्ग। म० पु० रू० पृ० ९७।

२२३७. हटा (बालाघाट)
गोंड शासन कालीन दुर्ग। म० पु० रू० पृ० ९७।

२२३८. हरचौका (सरगुजा)
मवई नदी के तट पर शैलकृत्त गुफा-मन्दिर जिनके स्तम्भों पर कलचुरि कालीन लेख उत्कीर्ण हैं। हीरालाल सूची, पृ० १८८।

२२३९. हासलपुर (शिवपुरी)
(अ) स्तम्भ जिस पर गुप्त लिपि में नागवर्मन् के शासन काल का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १९७३, क्रमांक २१।
(आ) सती-स्तम्भ जिस पर वि० सं० १५०७ का अस्पष्ट लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० १९२७-२८. पृ० १४, ४०।

(इ) सती-प्रस्तर जिस पर वि० सं० १५६५ का लेख उत्कीर्ण है। ग्वा० पु० रि० सम्वत् १६७२, क्रमांक ३३।

२२४०. हिंगलाजगढ़ (मन्दसौर)

(अ) लगभग ११वीं-१२वीं शताब्दी ईसवी के भवनों तथा प्रतिमाओं के भग्नावशेष। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० ४-४।

(आ) विभिन्न पुरावशेष। इ० आ० रि० १९५४-५५, पृ० ६२।

२२४१. हिंडोरिया (दमोह)

(अ) प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष। क० लि० ए० रि० पृ० ३१।

(आ) सती-स्तम्भ जिस पर सम्वत् १११३ का लेख उत्कीर्ण है। वही।

२२४२. हीरापुर (होशंगाबाद)

प्राचीन प्रतिमाएँ। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६८।

पंचम अध्याय

•

सिक्के तथा मुहर

(अ) आहत सिक्के

२२४३. **अकलतरा (बिलासपुर)**

चाँदी के २५३ आहत सिक्कों की निधि जिनमें ८५ छोटे माशक सिक्के थे। दो अन्य ताँबे के माशक सिक्के। इस निधि के केवल २३३ सिक्के प्राप्त किये जा सके तथा विभिन्न संग्रहालयों में संरक्षित कर दिये गये। ट्रें० ट्रो० रि० १६२५-२६; न्यू० नो० मो० क्रमांक २, पृ० २३; वही, क्रमांक ५, पृ० १-२।

२२४४. **आवरा (मन्दसौर)**

१६६०-६१ के उत्खनन में तथा धरातल खोज में प्राप्त आहत सिक्के। ज० म० प्र० इ० प० अंक ४ (१६६२), पृ० ३३।

२२४५. **इन्दौर (इन्दौर)**

(अ) स्वर्गीय अडवानी संग्रह में संरक्षित कुछ दुर्लभ आहत सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १३, पृ० २०७-८।

(आ) स्वर्गीय टिकेकर के संग्रह में संरक्षित ताँबे के आहत सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १०, पृ० २६-४२।

(इ) उज्जैन, भोपाल तथा विदिशा से प्राप्त स्व० अडवानी संग्रह में संरक्षित ताँबे के ग्यारह तथा चाँदी के आहत सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १४, पृ० ४१-४४।

२२४६. **उज्जैन (उज्जैन)**

(अ) तेरह आहत सिक्के जिसमें एक चाँदी का, एक चाँदी-चढ़े हुए ताँबे का तथा शेष ताँबे के, जो वाकणकर संग्रह में संरक्षित हैं। ज० न्यू० सो० इ० भाग १४, पृ० १७७-७८।

(आ) वाकणकर संग्रह में संरक्षित विभिन्न प्रकार के आहत सिक्के। 'उज्जयिनी दर्शन,' पृ० ४६-४६।

२२४७. एरण (सागर)

(अ) ताँबे के ३२६८ तथा चाँदी-चढ़े आहत सिक्के जो सागर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग के संग्रहालय में सुरक्षित किये गये। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९४; बाजपेयी कृ० द०—'सागर थ्रू दी एजेस,' पृ० ८, २९; 'दी क्रानालाजी आफ दी पंचमार्कड् क्वायन्स' (वाराणसी, १९६६), पृ० ४६-४७।

(आ) आहत सिक्कों की एक बड़ी निधि जो लन्दन के ब्रिटिश संग्राहलय में संरक्षित की गयी। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ७७; क्वा० ए० इ० पृ० ९९-१०२; के० इ० क्वा० ब्रि० म्यू० पृ० १४०-४४।

२२४८. करचुल्हा (जबलपुर)

१९०८ ई० में प्राप्त ९० आहत सिक्कों की एक निधि जिसमें चाँदी के ८०, पीतल के ३ तथा शेष ताँबे के थे। न्यू० नो० मो० क्रमांक २, पृ० १२; वही, क्रमांक ५, पृ० ३; ट्रे० ट्रो० रि० क्रमांक १६ (१९०८)।

२२४९. कसरावद (पश्चिम निमाड़)

(अ) १९३९-४० के उत्खनन में प्राप्त ताँबे के १० आहत सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग ८, पृ० ९९।

(आ) उत्खनन में प्राप्त चाँदी के छः आहत सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १० पृ० १४६; वही, भाग १४, पृ० ९३-९८।

(इ) १९३६-३९ ई० के उत्खनन में प्राप्त ३९ आहत सिक्के, जिनमें २९ चाँदी के तथा १० ताँबे के मिले। इ० हि० क्वा० भाग २५, अंक १ (१९४९), पृ० १-१८।

२२५०. कायथा (उज्जैन)

उत्खनन में प्राप्त आहत सिक्के। ज० वि० यू० (१९६७), पृ० १८-२०।

२२५१. केसूर (धार)

ताँबे का एक आहत सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग १५, पृ० १२५।

२२५२. ठठारी (बिलासपुर)

माशक तथा कार्षापण श्रेणी के २५९ आहत सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १९, पृ० ११०-१२।

२२५३. तारापुर (रायपुर)

चाँदी के आहत सिक्के। ज० आ० हि० रि० सो० भाग ३, पृ० ८१; न्यू० नो० मो० क्रमांक २, पृ० २२; वही, क्रमांक ५, पृ० १।

२२५४. धापेवारा (बालाघाट)

१८९३ में प्राप्त चाँदी के ९ आहत सिक्के जो नागपुर संग्रहालय में संरक्षित

किये गये। न्यू० नो० मो० क्रमांक २, पृ० १२; वही, क्रमांक ५, पृ० १; बालाघाट डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०७), पृ० ६८।

२२५५. बड़वानी (पश्चिम निमाड़)

१९४२ ई० में प्राप्त चाँदी के ३४५० आहत सिक्कों की एक निधि जो नई दिल्ली के केन्द्रीय पुरातत्त्व संग्रहालय में संरक्षित की गयी। ज० न्यू० सो० इ० भाग ५, पृ० १७२ तथा ९५; न्यू० नो० मो० क्रमांक २, पृ० ४।

२२५६. बार अथवा बायर (रायगढ़)

चाँदी के आहत सिक्कों की निधि जो सारंगढ़ के खजाने में संरक्षित की गयी। इनकी संख्या तथा अस्तित्व का अब कोई पता नहीं है। ए० इ० भाग २७, पृ० २१९; न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १।

२२५७. बालपुर (बिलासपुर)

(अ) चाँदी (?) के आहत सिक्के जो स्व० पं० लोचन प्रसाद पाण्डेय (रायगढ़) के संग्रहालय में रखे गये। न्यू० नो० मो० क्रमांक २, पृ० २२।

(आ) सोनपुर, सम्भलपुर, तारापुर तथा अन्य स्थानों से महाकोशल इतिहास परिषद द्वारा एकत्रित चार चिन्हों से अंकित आहत सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १९, पृ० १०७-१०।

२२५८. बिलासपुर (बिलासपुर)

नौ आहत सिक्के जो नागपुर संग्रहालय में संरक्षित किए गए। न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० ४; ना० म्यू० के०।

२२५९. बेसनगर (विदिशा)

(अ) १९१३-१४ के उत्खनन में प्राप्त ४८ तथा १९१४-१५ के उत्खनन में प्राप्त ५६ ताँबे के चौकोर आहत सिक्के। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९१३-१४, पृ० १८६-२२६; वही, १९१४-१५, पृ० ६६-६८।

(आ) छः आहत सिक्के। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ३७; न्यू० नो मो० क्रमांक २, पृ० २०।

(इ) १९६३-६६ के उत्खनन में प्राप्त आहत सिक्के। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० १६-१७; वही, १९६४-६५, पृ० १७-१८; वही, १९६५-६६ (सा० रि०) पृ० १-४३-४५।

२२६०. भिलसा (विदिशा)

आहत सिक्के जो भारत कला भवन, वाराणसी में संरक्षित किये गये। ज० न्यू० सो० इ० भाग १०, पृ० ८०; न्यू० नो० मो० क्रमांक २, पृ० २०।

२२६१. महेश्वर (पश्चिम निमाड़)

उत्खनन तथा खोज में प्राप्त चाँदी तथा ताँबे के आहत सिक्के। ए० मा० न० पृ०

६८-७०; ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० ३६-३६; वही, भाग १५, पृ० १६७-२०१।

२२६२. **मामदार (रीवा)**
चाँदी के ५० आहत सिक्कों की निधि जो डायरेक्टर जनरल आर्कयलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली के संरक्षण में रख दी गयी। **न्यू० नो० मो० क्रमांक २, पृ० १२।**

२२६३. **रायपुर (रायपुर)**
चाँदी के २८ तथा ताँबे के अन्य आहत सिक्के जो महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय, रायपुर में संरक्षित हैं। **ज० न्यू० सो० इ० भाग २३, पृ० ५०५।**

२२६४. **विदिशा (विदिशा)**
रायपुर संग्रहालय के लिए एकत्रित चाँदी तथा ताँबे के आहत सिक्के। **ज० न्य० सो० इ० पृ० ३०३-५।**

२२६५. **सम्भलपुर (रायगढ़)**
आहत सिक्के जो स्व० पं० लोचन प्रसाद पाण्डेय (रायगढ़) के संग्रह में रखे गये। **न्यू० नो० मो० क्रमांक २, पृ० २२५।**

२२६६. **सारंगपुर (राजगढ़)**
आहत सिक्के। **न्यू० नो० मो० क्रमांक २, पृ० २१; क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० २८८; से० इ० ग० सी० पृ० ६७।**

२२६७. **त्रिपुरी (जबलपुर)**

(अ) तेरह आहत सिक्के जो १६५१-५२ के उत्खनन में प्राप्त हुए। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० ६६-६८; 'त्रिपुरी—१६५२', पृ० १२१-२४; न्यू० नो० मो० क्रमांक २; वही, क्रमांक ५, पृ० ४।**

(आ) ६ आहत सिक्के जिसमें एक चाँदी का, २ मिश्रित धातु के तथा ६ ताँबे के प्राप्त हुए। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० ५५-५८।**

आ—अनुत्कीर्ण, ढले तथा ठप्पांकित सिक्के

२२६८. **आवरा (मन्दसौर)**

(अ) १६६०-६१ के उत्खनन में प्राप्त ताँबे के ढले सिक्के। **ज० म० प्र० इ० प० अंक ४ (१६६२), पृ० ३३।**

(आ) १६६०-६१ के उत्खनन में प्राप्त उज्जयिनी चिह्नांकित ताँबे के सिक्के। **ज० म० प्र० इ० प० अंक ४ (१६६२), पृ० ३३।**

२२६६. **उज्जैन (उज्जैन)**

(अ) अनुत्कीर्ण ढले सिक्के जो वाकणकर संग्रह में संरक्षित हैं। ज० **न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० १७८-७६।**

(आ) सिक्कों की निधि में प्राप्त एक अनुत्कीर्ण ताँबे का सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग १३, पृ० २५।

२२७०. एरण (सागर)

(अ) कुछ कार्षापण सिक्के। बाजपेयी कृ० द०—'सागर थ्रू० दी एजेस' पृ० ८।

(आ) ताँबे के ५ ठप्पे लगे सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १४, पृ० ६०-६१।

२२७१. कसरावद (पश्चिम निमाड़)

(अ) १९३६-३९ के उत्खनन में प्राप्त ताँबे के १६ ढले हुए तथा १०० उज्जयिनी चिह्नांकित सिक्के। इ० हि० क्वा० भाग २५, अंक १ (१९४९), पृ० १-१८।

(आ) १९३९-४० के उत्खनन में प्राप्त ५ ढले सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग ८, पृ० ९९।

२२७२. कायथा (उज्जैन)

उत्खनन में प्राप्त ताँबे के ढले स्वस्तिक तथा उज्जयिनी चिह्नांकित सिक्के। ज० वि० यू० (१९६७), पृ० १८-२०।

२२७३. जमुनिया (होशंगाबाद)

ताँबे के ढले तथा ठप्पे लगे सात महत्वपूर्ण सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १४, पृ० ५६-५८।

२२७४. पदम-पवाया (ग्वालियर)

(अ) ढले तथा ठप्पे लगे बीस सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १८, पृ० १६३-६८।

(आ) दो अनुत्कीर्ण ढले सिक्के। वही, पृ० ६७-६८।

(इ) चाँदी के ढले तीन सिक्के जो केन्द्रीय पुरातत्त्व संग्रहालय ग्वालियर में संरक्षित किये गये। वही, भाग १७, पृ० ३८-३९।

२२७५. महेश्वर (पश्चिम निमाड़)

उत्खनन तथा खोज में प्राप्त ताँबे के अनुत्कीर्ण ढले सिक्के। ए० मा० न० पृ० ७०-७२; ज० न्यू० सो० इ० भाग १७, पृ० ४२-४४।

२२७६. विदिशा (विदिशा)

अनुत्कीर्ण ताँबे के ढले सिक्के जो महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय रायपुर में संरक्षित किये गये। ज० न्यू० सो० इ० भाग २३. पृ० ३०५-६।

२२७७. त्रिपुरी (जबलपुर)

(अ) १९५१-५२ के उत्खनन में प्राप्त हस्ती तथा पर्वत चिन्ह युक्त ताँबे का ढला सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० ६९; दीक्षित मो० ग०—'त्रिपुरी—१९५२', पृ० १२५।

(आ) करणबेल के टीले से प्राप्त एक नये प्रकार का अनुत्कीर्ण पीतल का सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० ७०।

(इ) एरण-उज्जैन प्रकार का एक ताँबे का ठप्पा लगा सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० ६१-६२।

इ—जनराज्य तथा स्थानीय सिक्के

२२७८. इन्दौर (इन्दौर)

(अ) स्व० श्री टिकेकर के संग्रह में संरक्षित दो सिक्के जो सम्भवत: तक्षशिला चिह्नांकित हैं। ज० न्यू० सो० इ० भाग १०, पृ० २६-४२।

(आ) स्व० श्री टिकेकर के संग्रह में संरक्षित उज्जयिनी चिह्नांकित सात सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १०, पृ० २६-४२।

(इ) स्व० अडवानी संग्रह में संरक्षित ५४६ ताँबे के तथा दो सीसे के उज्जयिनी चिह्नांकित सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १३, पृ० २०६-२०७।

(ई) स्व० अडवानी संग्रह में संरक्षित सात महत्त्वपूर्ण उज्जयिनी चिह्नांकित सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १३, पृ० २११-१४।

(उ) स्व० अडवानी संग्रह में संरक्षित शिबियों (?) की राजधानी ज्येष्ठपुर के दो काँसे के सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग० १४, पृ० ५-८।

२२७९. उज्जैन (उज्जैन)

(अ) उज्जयिनी चिह्नांकित सिक्के। क० आ० स० इ० रि० भाग १४, पृ० १३८; ज० ए० सो० ब० भाग ८, पृ० १०५२; इ० हि० क्वा० भाग १०, पृ० ७२३; ज० न्यू० सो० इ० भाग २, पृ० ८१; वही, भाग ८, पृ० ९०; वही, भाग १०, पृ० ३८; वही, भाग १३, पृ० ७३, २०६, २०९।

(आ) उज्जयिनी चिह्नांकित कुछ नवीन सिक्के जो वाकणकर संग्रहालय में संरक्षित किये गये। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० १७९-८१।

(इ) ताँबे का एक नवीन जनराज्य सिक्का जिसके अग्रभाग पर कमल सहित लक्ष्मी तथा पृष्ठ भाग पर घेरे में वृक्ष तथा अन्य चिह्न अंकित किये गये हैं। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९४।

(ई) सिक्कों की निधि में प्राप्त ताँबे का एक ढला सिक्का जिसके एक ओर ठप्पा लगा है। इसके अग्रभाग पर लगभग तीसरी शताब्दी ई० पू० की ब्राह्मी लिपि में 'माहिस' उत्कीर्ण है। ज० न्यू० सो० इ० भाग १३, पृ० ७४।

(उ) उज्जयिनी चिह्नांकित ताँबे का एक ढला अथवा ठप्पा लगा सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग १३, पृ० ७४।

(ऊ) सिक्कों की निधि में प्राप्त उज्जयिनी चिह्नांकित सिक्के। ज० न्यू सो० इ० भाग १३, पृ० ७५।

(ए) उज्जयिनी चिह्नांकित ताँबे के सात नवीन सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १७, पृ० ४४-४६।

(ऐ) उज्जयिनी चिह्नांकित लगभग तीस सिक्के। एक सिक्के पर उत्कीर्ण 'उजयिन' स्पष्ट रूप से पढ़ा जा सकता है। ज० ए० सो० ब० भाग ७, पृ० १०५२।

२२८०. एरण (सागर)

आहत, ढले तथा ठप्पे लगे सिक्के जो लन्दन के ब्रिटिश संग्रहालय में संरक्षित किये गये। इनमें से एक सिक्का 'रञो धर्मपालस' लेख युक्त है तथा दो पर 'एरकिण' लेख उत्कीर्ण है। एक टूटा हुआ काँसे का ठप्पा भी प्राप्त हुआ। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ७७; के० इ० क्वा० ब्रि० म्यू० पृ० १४०-४४; क्वा० ए० इ० पृ० ९९-१०२।

२२८१. कसरावद (पश्चिम निमाड़)

(अ) १९३९-४० के उत्खनन में प्राप्त उज्जयिनी चिह्नांकित सिक्कों की एक निधि। ज० न्यू० सो० इ० भाग ८, पृ० ९९।

(आ) १९३९-४० के उत्खनन में प्राप्त एक 'मघ' सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग ८, पृ० ९९।

२२८२. खिड़िया (होशंगाबाद)

त्रिपुरी नगर-राज्य का एक सिक्का। ज० न्यू० सो इ० भाग १३ पृ० ४०-४५; न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० ५।

२२८३. जमुनिया (होशंगाबाद)

(अ) नये प्रकार के तीन ताँबे के एरण चिह्नांकित ठप्पे लगे सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० ६३-६४।

(आ) एरण-उज्जैन चिह्नांकित ताँबे का एक ठप्पा लगा सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० ६१।

(इ) भागिल नगर-राज्य के ताँबे के पाँच सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १४, पृ० ९-१४।

२२८४. तेवर (जबलपुर)

(अ) त्रिपुरी नगर-राज्य के ताँबे के दो सिक्के जो हीरालाल आर्केयलाजिकल सोसायटी, जबलपुर में संरक्षित हैं। न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० ६।

(आ) १९५१-५२ तथा १९५२-५३ के उत्खनन में प्राप्त त्रिपुरी नगर-राज्य के ताँबे के १० सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० ६८-६९; 'त्रिपुरी-१९५२', पृ० १२५।

(इ) त्रिपुरी नगर-राज्य के ताँबे के तीन सिक्के जो लन्दन के ब्रिटिश म्यूजियम में संरक्षित किये गये। कै० इ० क्वा० ब्रि० म्यू० पृ० २३९; ज० र० ए० सो० १८९४, पृ० ५५३।

(ई) त्रिपुरी नगर-राज्य के नवीन चिह्न युक्त काँसे का एक सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग २१, पृ० १८६-८७।

(उ) एरण-उज्जैन चिह्नांकित ताँबे का एक ठप्पा लगा सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० ६१-६२।

२२८५. पदम-पवाया (ग्वालियर)

(अ) पद्मावती के सात स्थानीय सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १८, पृ० ६९-७०।

(आ) ताँबे के दस जन-राज्य अथवा स्थानीय (?) सिक्के जो ग्वालियर संग्रहालय में संरक्षित किये गये। ज० न्यू० सो० इ० भाग १७, पृ० ४०-४२।

(इ) मालव गण के सिक्के। कै० क्वा० ना० प० पृ० ५७-५८।

(ई) कमल चिह्नांकित पाँच सिक्के जो सम्भवतः पद्मावती के स्थानीय सिक्के हैं। ज० न्यू० सो० इ० भाग १८, पृ० ६८।

२२८६. बालपुर (बिलासपुर)

ताँबे के चार चौकार अनुत्कीर्ण सिक्के जो महानदी में प्राप्त हुए। ज० न्यू सो० इ० भाग ९, पृ० ३१-३३; वही, भाग १२, पृ० ८-१०।

२२८७. बालाघाट (बालाघाट)

जनराज्य के ताँबे के ४७ सिक्के जो नागपुर संग्रहालय में संरक्षित किये गये। न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० ७; बालाघाट डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०७), पृ० ६९।

२२८८. बेसनगर (विदिशा)

उज्जयिनी तथा एरण चिह्नांकित पचास अनुत्कीर्ण सिक्के। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ३७।

२२८९. **भिलसा (विदिशा)**

एक दुर्लभ एरण-चिह्नांकित ताँबे का सिक्का। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १७, पृ० ४६।**

२२९०. **महेश्वर (पश्चिम निमाड़)**

(अ) उत्खनन तथा खोज में प्राप्त माहिष्मती नगर-राज्य के सिक्के। **ए० मा० न० पृ० ७७-७९; ज० न्यू० सो० इ० भाग १७, पृ० ९४-९६।**

(आ) उत्खनन में प्राप्त उज्जयिनी चिह्नांकित १८ ताँबे के सिक्के। **ए० मा० न० पृ० ७३-७७।**

(इ) उत्खनन में प्राप्त तक्षशिला चिह्नांकित ताँबे के छः सिक्के। **ए० मा० न० पृ० ७२-७३।**

२२९१. **रायपुर (रायपुर)**

(अ) उज्जयिनी तथा एरण चिन्हांकित ताँबे के ५७५ ढले तथा स्थानीय सिक्के जो स्थानीय महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय में संरक्षित हैं। **ज० न्यू० सो० इ० भाग २३, पृ० ५०५।**

(आ) एरण चिह्नांकित अठारह सिक्के जो स्थानीय महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय में संरक्षित हैं। **ज० न्यू० सो० इ० भाग २४, पृ० १६८-७२।**

(इ) विदिशा नगर-राज्य के इक्कीस सिक्के जो स्थानीय महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय में संरक्षित हैं। **ज० न्यू० सो० इ० भाग २३, पृ० ५०५।**

(ई) पद्मावती के नाग शासकों के ताँबे के १४४ सिक्के जो स्थानीय संग्रहालय में संरक्षित हैं। **ज० न्यू० सो० इ० भाग २३, पृ० ५०५।**

(उ) संग्रहालय में संरक्षित दक्षिण कोसल के ताँबे के बीस स्थानीय सिक्के। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १९, पृ० ७२-७३।**

२२९२. **विदिशा (विदिशा)**

(अ) विदिशा नगर के सिक्के जिन पर ब्राह्मी अक्षरों में 'वेदिस' अथवा 'वेद्दस' उत्कीर्ण है। इनको महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय, रायपुर में संरक्षित किया गया। **ज० न्यू० सो० इ० भाग २३, पृ० ३०७-३०८।**

(आ) शिवगुप्त तथा सखदेव, जो सम्भवतः पद्मावती के शासक थे, के ताँबे के दो सिक्के। **ज० न्यू० सो० इ० भाग २२, पृ० १३२-३३; इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ५५।**

(इ) शिवगुप्त का ताँबे का एक सिक्का जो लगभग दूसरी शताब्दी ई० पू० का है। **ज० न्यू० सो० इ० भाग २५, पृ० १०४-५।**

(ई) ढला हुआ ताँबे का एक सिक्का जिस पर लगभग पहली शताब्दी ई० पू० की ब्राह्मी लिपि में 'शिवमितस' उत्कीर्ण है। इ० आ० रि० १९६७-६८, पृ० ६३।

(उ) एक दुर्लभ सिक्का जिस पर ब्राह्मी अक्षरों में '...कनम' उत्कीर्ण है। सम्भवत: यह सिक्का विदिशा के व्यापारियों के संघ द्वारा प्रचलित किया गया था। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६३।

ई—सातवाहन शासकों के सिक्के

२२९३. आवरा (मन्दसौर)

१९६०-६१ के उत्खनन काल में धरातल खोज में प्राप्त तीन सीसे के सातवाहन सिक्के। ज० म० प्र० इ० प० अंक ४ (१९६२), पृ० ३४।

२२९४. इन्दौर (इन्दौर)

स्व० अडवानी संग्रह में संरक्षित तीन महत्त्वपूर्ण सिक्के जो सम्भवत: सातवाहन शासकों के हैं। ज० न्यू० सो० इ० भाग १३, पृ० २०९-११; वही, भाग १५, पृ० १८३-८४।

२२९५. उज्जैन (उज्जैन)

(अ) श्री सात का ताँबे का सिक्का। बाजपेयी कृ० द०—क्वायनेज ऑफ दी सातवाहनाज एण्ड क्वायन्स फ्रॉम एस्कशन्स (सं० अजयमित्र शास्त्री), पृ० २९।

(आ) सातकर्णी का ताँबे का सिक्का। वही, पृ० २९-३०।

(इ) गौतमीपुत्र सातकर्णी का चाँदी का एक सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग ८, पृ० १११; वही, भाग ९, पृ० ९३-९४; अजयमित्र शास्त्री-अर्ली इण्डियन इण्डिजेनस क्वाइन्स, पृ० ११३-११९।

(ई) सातवाहनों का एक सिक्का जो सम्भवत: गौतमीपुत्र सातकर्णी का है। ज० न्यू० सो० इ० भाग १४, पृ० ३-४।

(उ) सातवाहनों के दो पुनर्मुद्रांकित सिक्के जो वाकणकर संग्रह में संरक्षित हैं। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० ८१-८२।

२२९६. जमुनिया (होशंगाबाद)

श्री सात का ताँबे का एक सिक्का जो जमुनिया के चौहान संग्रह में संरक्षित है। ज० न्यू० सो० इ० भाग १२, पृ० ९४-९७; न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० ७।

२२९७. तेवर (जबलपुर)

(अ) सातकर्णी प्रथम के सीसे के दो सिक्के जो डा० स० ला० कटारे संग्रह में संरक्षित किये गये। ज० न्यू० सो० इ० भाग १३, पृ० ३५-३९; न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० ७।

(आ) गौतमीपुत्र श्री यज्ञ सातकर्णी का चाँदी का सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग १२, पृ० १२६-१३३; वही, भाग १३, पृ० ४६-५२; न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० ७।

२२९८. देवास (देवास)

सातवाहनों के छ: सिक्के जिनमें दो पुलुमावी के, दो सातकर्णी के, एक यज्ञश्री सातकर्णी के तथा एक कुम्भ सातकर्णी के थे। ज० न्यू० सो० इ० भाग १५, पृ० ११०।

२२९९. बालपुर (बिलासपुर)

(अ) महानदी की रेत में प्राप्त आन्ध्रवंश के शिवश्री अपिलक का एक ताँबे का सिक्का जो लगभग तीसरी शताब्दी ईसवी का है। न्यू० स० भाग ४८, लेख क्रमांक ३४४; ज० आ० हि० रि० सो० भाग १०, पृ० २२५।

(आ) सातवाहनों के दो सिक्के। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ६६।

(इ) सातवाहन शासकों का एक नया सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग २१, पृ० १०७-९।

२३००. बेसनगर (विदिशा)

१९१३-१४ के उत्खनन में प्राप्त सातवाहन शासक गौतमीपुत्र यज्ञश्री सातकर्णी का एक सीसे का सिक्का। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९१३-१४, पृ०१८६-२२६।

२३०१. भिलसा (विदिशा)

(अ) सातवाहन शासक गौतमीपुत्र यज्ञश्री के सिक्के। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९१४-१५, पृ० २१३।

(आ) वासिष्ठीपुत्र पुलुमावी के सीसे के सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग ११, पृ० १-३।

(इ) स्व० अडवानी संग्रह, इन्दौर में संरक्षित वासिष्ठीपुत्र पुलुमावी का चाँदी का एक सिक्का जो भिलसा से प्राप्त हुआ था। ज० न्यू० सो० इ० भाग १४, पृ० १-३।

२३०२. भेड़ाघाट (जबलपुर)

'सिरि सात' का काँसे का एक सिक्का जो हीरालाल आर्केयलाजिकल सोसायटी, जबलपुर में संरक्षित किया गया। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० ९५-९६ तथा २८०-८१।

२३०३. महेश्वर (पश्चिम निमाड़)

उत्खनन में प्राप्त एक नये प्रकार का सिक्का जो सम्भवत: सातवाहनों (?) का है। ए० मा० न० पृ० ७९।

२३०४. रायपुर (रायपुर)

महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय में संरक्षित सातवाहनों के ५ सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग २३, पृ० ५०५।

२३०५ विदिशा (विदिशा)

(अ, श्री सातकर्णी का ताँबे का आहत शैली का सिक्का। कृष्णदत्त बाजपेयी—क्वायन्स ऑफ दि सातवाहनाज एण्ड क्वायन्स फ्रॉम एस्कवेशन्स, पृ० २७-२८।

(आ) श्री सात का ताँबे का सिक्का। वही, पृ० २८-२९।

२३०६. त्रिपुरी (जबलपुर)

(अ) १९६८-६९ के उत्खनन में प्राप्त 'सिरि सात कनिस' तथा 'सिरि सात' उल्लेख युक्त सिक्के। इ० आ० रि० १९६९-७०।

(आ) सातकर्णी का काँसे का एक सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग २१, पृ० ११०-११।

(इ) १९५१-५२ तथा १९५२-५३ के उत्खनन में प्राप्त 'सिरि साति' के सीसे के तीन सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० ७०; 'त्रिपुरी-१९५२' पृ० १२६।

(ई) १९५१-५२ के उत्खनन में प्राप्त '···यधन' के सीसे के सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग० १६, पृ० ७०-७१।

(उ) १९५१-५२ तथा १९५२-५३ के उत्खनन में प्राप्त सीसे के आठ अस्पष्ट सातवाहन सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० ६९; 'त्रिपुरी-१९५२', पृ० १२६-२८।

उ—हिन्द-यूनानी तथा हिन्द-बाख्त्री सिक्के

२३०७. इन्दौर (इन्दौर)

(अ) स्व० अडवानी संग्रह में संरक्षित निम्नलिखित हिन्द-बाख्त्री सिक्के :

(१) प्लेटो का एक टेट्राड्राम।
(२) हेलियोक्लिस का एक ताँबे का सिक्का।
(३) स्ट्रैटो का एक हेमीड्राम।
(४) स्ट्रैटो प्रथम के दो हेमीड्राम तथा स्ट्रैटो प्रथम के साथ स्ट्रैटो द्वितीय का एक हेमीड्राम।
(५) स्ट्रैटो के साथ अगाथोक्लिसिया का एक हेमीड्राम।
(६) एपाण्डर का एक हेमीड्राम।
(७) आर्खेबियस का एक चौकोर ताँबे का सिक्का।
(८) फिलोक्सेनस के दो चाँदी के सिक्के।
(९) निकियास का एक हेमीड्राम।
(१०) अपोलोफैनेस के दो हेमीड्राम।
(११) अमिण्टास का एक डाइड्राम।
(१२) हर्मिअस तथा केलिओपे का एक हेमीड्राम।

ज० न्यू० सो० इ० भाग १३, खण्ड १, पृ० ७८-९१।

(आ) (१) यूक्रेटाइडिस के दो टेट्राड्राम।

(२) मिनाण्डर के चाँदी के दो हेमीड्राम जिनके पृष्ठभाग पर उल्लू का चित्र बना है।

(३) मिनाण्डर का एक अन्य चाँदी का हेमीड्राम।

(४) ज़िलोस का एक हेमीड्राम।

(५) ज़िलोस का ताँबे का एक चौकोर सिक्का। **ज० न्यू० सो० इ० भाग० १३, खण्ड २, पृ० २१५-१८।**

२३०८. बालाघाट (बालाघाट)

ताँबे के छः सिक्के जिनमें दो मिनाण्डर के तथा शेष अस्पष्ट हैं। **बालाघाट डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०७), पृ० ६९।**

ऊ –शक तथा पश्चिमी क्षत्रप शासकों के सिक्के

२३०९. आवरा (मन्दसौर)

(अ) १९६०-६१ के उत्खनन में प्राप्त पश्चिमी क्षत्रप रुद्रसेन तृतीय के चाँदी के सिक्के। **ज० म० प्र० इ० प० अंक ४ (१९६२), पृ० ३२-३३।**

(आ) १९६०-६१ के उत्खनन काल में धरातल खोज में प्राप्त दामजदश्री द्वितीय का ताँबे का सिक्का जिस पर चाँदी चढ़ी है। **ज० म० प्र० इ० प० अंक ४ (१९६२), पृ० ३४।**

२३१०. इन्दौर (इन्दौर)

(अ) पश्चिमी क्षत्रप शासक चष्टन का नवीन प्रकार का सिक्का जो शान्तिलाल परदेसी के संग्रह में संरक्षित है। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १८, पृ० १६९-७१।**

(आ) स्व० अडवानी संग्रह में संरक्षित शक शासक मोअ तथा अय के सिक्के। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १४, पृ० ४७-५१।**

(इ) स्व० अडवानी संग्रह में संरक्षित ताँबे का एक पश्चिमी क्षत्रप शासक का सिक्का। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १३, पृ० २१३।**

२३११. उज्जैन (उज्जैन)

(अ) स्व० अडवानी संग्रह इन्दौर में संरक्षित महाक्षत्रप चष्टन का चांदी का एक सिक्का। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १४, पृ० २०-२१।**

(आ) 'मद्दू' का एक तथा 'दास' के दो ताँबे के सिक्के। सम्भवतः ये मालवा के भूमक वंश के शक शासकों के पूर्वज थे। **इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६५-६६, पृ० ३२।**

(इ) शक शासक मद्दू, दास तथा सोम के ताँबे के तीन सिक्के। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १८, पृ० ४९-५०।**

(ई) विश्वसेन तथा रुद्रसेन के सिक्के। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १५, पृ० २२०-२२।**

२३१२. केवलारी (सिवनी)

पश्चिमी क्षत्रपों के चाँदी के तीन सिक्के। ये सिक्के क्षत्रप वीरदामन् के पुत्र महाक्षत्रप रुद्रसेन द्वितीय, महाक्षत्रप रुद्रसेन द्वितीय के पुत्र क्षत्रप भर्तृदामन् तथा स्वामी जीवदामन् के पुत्र क्षत्रप रुद्रसिंह द्वितीय के हैं। ज० न्यू० सो० इ० भाग० १६, पृ० २०७-२०९।

२३१३. गोंदरमऊ (सीहोर)

पश्चिमी क्षत्रपों के ५१ सिक्कों की निधि जिनमें महाक्षत्रप विजयसेन के ५ सिक्के, महाक्षत्रप रुद्रसेन द्वितीय के ६ सिक्के, भर्तृदामन् के १७ सिक्के, क्षत्रप विश्वसेन के १० सिक्के, रुद्रसिंह द्वितीय के ३ सिक्के, महाक्षत्रप स्वामी रुद्रसेन तृतीय का एक सिक्का तथा शेष अस्पष्ट सिक्के प्राप्त हुए। सभी स्पष्ट सिक्कों पर तिथि उपलब्ध हैं जो शक सम्वत् १५७ तथा २७० के बीच के हैं। इ० आ० रि० १९५४-५५, पृ० ६३।

२३१४. पिछोर (ग्वालियर)

चाँदी के चार सिक्के जिनके अग्रभाग पर मनुष्य की मुखाकृति तथा लेख 'श्रीदामा' और पृष्ठ भाग पर अग्निकुण्ड अंकित है। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९१३-१४, पृ० २४८-६०।

२३१५. बेसनगर (विदिशा)

(अ) सौराष्ट्र के पश्चिमी क्षत्रप ईश्वरदत्त का एक ताँबे का सिक्का। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९१४-१५ पृ० ८८।

(आ) उत्खनन में प्राप्त चाँदी के दो सिक्के जिनमें एक महाक्षत्रप वीरदामन् तथा दूसरा रुद्रसेन द्वितीय का है। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९१३-१४, पृ० २१३।

(इ) १९१३-१४ तथा १९१४-१५ के उत्खननों में प्राप्त चाँदी तथा ताँबे के क्षत्रप सिक्के। चाँदी के तीन सिक्के महाक्षत्रप वीरदामन् तथा उसके पुत्र रुद्रसेन द्वितीय के तथा ताँबे के सिक्के महाक्षत्रप ईश्वरदत्त और 'दामपुत' के थे। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९१३-३४, पृ० १८६-२२६; वही, १९१४-१५, पृ० ६६-६८।

(ई) सौराष्ट्र के पश्चिमी क्षत्रपों के आठ सिक्के। क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ३७।

२३१६. रायपुर (रायपुर)

पश्चिमी क्षत्रप शासकों के चाँदी के तीन सिक्के जो स्थानीय महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय में संरक्षित हैं। ज० न्यू० सो० इ० भाग २३, पृ० ५०५।

२३१७. विदिशा (विदिशा)

(अ) शक शासक हमुगम तथा बलाक के ताँबे के दो सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १८, पृ० ४६।

(आ) उज्जैन शाखा के शक शासक हमुगम का ताँबे का सिक्का। इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ६३

२३१८. शिवपुरी (शिवपुरी)

(अ) मुनिराज संग्रह में संरक्षित निम्नलिखित सिक्के—

(१) क्षहरात अर्त (?) का ताँबे का सिक्का।

(२) भूमक के ताँबे के सिक्के।

(३) नहपान के चाँदी के सिक्के जिन्हें गौतमीपुत्र सातकर्णी द्वारा पुनर्मुद्रांकित किया गया।

(४) चष्टन का ताँबे का सिक्का जिस पर चाँदी चढ़ी है।

(५) महाक्षत्रप रुद्रसिंह का चाँदी का सिक्का।

(६) ताँबे का एक अस्पष्ट सिक्का।

(७) दामसेन के शासन काल का एक पोटीन का सिक्का तथा इसी प्रकार के कुछ और सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १७, पृ० ८९-९८।

(आ) पश्चिमी क्षत्रप शासक रुद्रसेन तृतीय के २६ सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १५, पृ० ९८-९९।

२३१९. साँची (विदिशा)

पश्चिमी क्षत्रप शासकों के चाँदी के ४१ सिक्के जिन्हें १९१६-१७ में प्राप्त किया गया था। ये सिक्के रुद्रसेन प्रथम, रुद्रसेन द्वितीय, विश्वसिंह, भर्तृदामन्, विश्वसेन, रुद्रसिंह द्वितीय एवं रुद्रसेन तृतीय के हैं। कुछ सिक्के अस्पष्ट हैं। के० न्यू० आ० सा०, पृ० ६०-६४।

२३२०. सिवनी (सिवनी)

स्वामी जीवदामन् के पुत्र रुद्रसेन का एक चाँदी का सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग १२, पृ० १६७-६९।

२३२१. सोनपुर (छिन्दवाड़ा)

पश्चिमी क्षत्रप शासकों के चाँदी के ६७० सिक्के जिसमें संघदामन् को छोड़ रुद्रसेन प्रथम से लेकर स्वामी रुद्रसेन तृतीय तक सभी शासकों के सिक्के हैं। ये सिक्के नागपुर संग्रहालय में संरक्षित किये गये। न्यू० स० भाग ४७, लेख क्रमांक ३४५।

ए—कुषाण शासक के सिक्के

२३२२. कॅंडा जमींदारी (बिलासपुर)

कुषाण शासकों के ताँबे के २५ सिक्के जिनमें ४ नागपुर संग्रहालय में संरक्षित किये

गये । शेष प्राप्त नहीं किये जा सके । ज० न्यू० सो० इ० भाग १७, पृ० १०६; ट्रे० ट्रो० रि० क्रमांक ५, १६२२-२३ ।

२३२३. झाझापुरी (बिलासपुर)

कुषाण शासक कनिष्क तथा हुविष्कके ताँबे के पन्द्रह सिक्के । ज० न्यू० सो० इ० भाग १७, पृ० १०६; न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १० ।

२३२४. तेवर (जबलपुर)

कुषाण वासुदेव का ताँबे का एक सिक्का । म० पु० रू० पृ० ४७ ।

२३२५. पेण्ड्रवा (बिलासपुर)

यौधेय सिक्कों के साथ प्राप्त कुषाण शासकों के सिक्के जो सम्भवत: स्व० पं० लोचन प्रसाद पाण्डेय के संग्रह में संरक्षित किये गये । ज० न्यू० सो० इ० भाग १७, पृ० १०६ ।

२३२६. बिलासपुर (बिलासपुर)

ताँबे का एक कुशाण कालीन सिक्का । न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १० ।

२३२७. रायपुर (रायपुर)

स्थानीय महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय में संरक्षित कुषाण शासकों के २४ सिक्के । ज० न्यू० सो० इ० भाग २३, पृ० ५०५ ।

२३२८. विदिशा (विदिशा)

विम कदफिस का एक सिक्का । इ० आ० रि० १६६७-६८, पृ० ६३; ज० न्यू० सो० इ० भाग ३२ (१), पृ० ८२-८३ ।

२३२६. शहडोल (शहडोल)

कुषाण शासकों के सिक्कों की एक बड़ी निधि जिसमें ७५७ सिक्के प्राप्त हुए । इनमें विम कदफिस के ४४ सिक्के, कनिष्क के ३२४ सिक्के, हुविष्क के ३६२ सिक्के तथा शेष अस्पष्ट सिक्के थे । ज० न्यू० सो० इ० भाग २७, पृ० ११८-१६; वही, भाग २८, पृ० १-५; इ० आ० रि० (सा० रि०) १६६४-६५, पृ० ३-२ ।

२३३०. हरदा (होशंगाबाद)

कुषाण कालीन दो स्वर्ण सिक्के जिनमें एक हुविष्क का चौथाई स्टेटर है तथा दूसरा कनिष्क द्वितीय अथवा तृतीय का स्टेटर है । ज० न्यू० सो० इ० भाग १७, पृ० १०६; न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० ६; ना० म्यू० के० ।

ऐ—नाग शासकों के सिक्के

२३३१. अकोदा (भिण्ड)

विभिन्न प्रकार के २७० ताँबे के नागवंशी सिक्के । इ० आ० रि० १६६१-६२, पृ० ६४ ।

२३३२. इन्दौर (इन्दौर)

स्व० श्री टिकेकर के संग्रह में संरक्षित एक नागवंशी सिक्का। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १०, पृ० २६-४२।**

२३३३. उज्जैन (उज्जैन)

नागवंशी शासकों के सिक्के। **के० क्वा० ना० प० पृ० ३६।**

२३३४. एरण (सागर)

(अ) नागवंशी शासक रविनाग का एक नये प्रकार का सिक्का। **ज० न्यू० सो० इ० भाग ३१, खण्ड १, पृ० ७२-७३।**

(आ) उत्खनन तथा खोज में प्राप्त विभिन्न नाग शासकों के सिक्के। **बाजपेयी कृ० द०—'सागर थ्रू० दी एजेस' पृ० ६, २६।**

२३३५ कुतवार (मोरेना)

नागवंशी शासकों की १८६५६ सिक्कों की निधि। **ग्वा० पु० रि० १६२७-२८, पृ० १६; के० क्वा० ना० प०, पृ० ६०।**

२३३६. गोहद (भिण्ड)

नागवंशी सिक्के। **क० आ० स० इ० भाग २, पृ० ३०७; ज० ए० सो० ब० १८६५, पृ० ११५; क्वा० मे० इ०, पृ० २३।**

२३३७. नरवर (शिवपुरी)

(अ) नव-नाग शासकों के ताँबे के १४ सिक्के। **ज० ए० सो० ब० भाग ३४, पृ० ११५; क० आ० स० इ० रि० भाग २, पृ० ३०७; क्वा० मे० इ० पृ० २३; इ० हि० क्वा० भाग १, पृ० २५५।**

(आ) व्याघ्र-नाग का एक सिक्का। **कनिंघम : क्वायन्स आफ मेडिवल इण्डिया, पृ० २४ तथा ज० ए० सो० ब० भाग ३४, पृ० ११५।**

२३३८. पदम-पवाया (ग्वालियर)

(अ) नागवंशी शासक भवनाग तथा विभुनाग के सिक्के। **ज० न्यू० सो० इ० भाग ५, पृ० २०-२७।**

(आ) नागवंशी शासक भवनाग, वसुनाग, रविनाग, प्रभुनाग, स्कन्दनाग तथा बृहस्पतिनाग के ताँबे के ठप्पे लगे सिक्के जो इन्दौर संग्रहालय में संरक्षित किये गये। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १४, पृ० ७१-७६।**

(इ) नागवंशी शासक भीमनाग, स्कन्दनाग, बृहस्पतिनाग, देवनाग, गणपतिनाग तथा प्रभाकरनाग के सिक्के जो ग्वालियर के केन्द्रीय पुरातत्व संग्रहालय में संरक्षित किये गये। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १५, पृ० १३०-३५।**

(ई) नागवंशी शासक मखदत, महत, सबलसेन, अमितसेन तथा यतग (?) के सिक्के। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १७, पृ० ५३-५७।**

(उ) नागवंशी शासक प्रभाकर तथा 'महाराज' भी (?).... के ताँबे के दो सिक्के। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १७, पृ० ५२-५३।**

(ऊ) नागवंशी शासक भवनाग, विभुनाग तथा वीरसेन के नौ सिक्के जो ग्वालियर संग्रहालय में संरक्षित किये गये। ज० न्यू० सो० इ० **भाग १७,** पृ० ४७-५१।

२३३९. बेसनगर (विदिशा)

(अ) नागवंशी शासक वृषनाग का ताँबे का सिक्का जो ग्वालियर संग्रहालय में संरक्षित किया गया। ज० न्यू० सो० इ० **भाग १५, पृ० १२१-२३; वही, भाग १६, पृ० २७६।**

(आ) १९१३-१४ तथा १९१४-१५ के उत्खननों में प्राप्त नाग शासकों के ताँबे के सिक्के जो गणपतिनाग तथा गणेन्द्रनाग के थे। **आ० स० वार्षिक रिपोर्ट, १९१३-१४, पृ० १८६-२२६; वही, १९१४-१५, पृ० ६६-६८।**

(इ) १९६३ के उत्खनन में प्राप्त नाग शासकों के सिक्के जिनके एक ओर शिव का वाहन नन्दी दिखलाया गया है तथा दूसरी ओर नाग शासक का नाम 'महाराज' उपाधि के साथ दिया हुआ है। **बाजपेयी कृ० द०—'मध्यप्रदेश का पुरातत्त्व,' पृ० १६।**

(ई) नाग शासकों के आठ सिक्के। **क० आ० स० इ० रि० भाग १०, पृ० ३७।**

ऐ/१—बोधि तथा मघ राजवंश के सिक्के

२३४०. बान्धवगढ़ (शहडोल)

मघवंश के शासकों के सिक्के। **बाजपेयी कृष्णदत्त— इ० न्यू० क्रा० भाग ३, अक १** (१९६२), पृ० ११-२१।

२३४१. त्रिपुरी (जबलपुर)

(अ) बोधि राजवंश के शासक श्रीबोधि, शिवबोधि, वसुबोधि, चन्द्रबोधि के ताँबे के १०० सिक्के जो जबलपुर के डा० महेशचन्द्र चौबे के निजी संग्रह में संरक्षित हैं। **देखिये प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २४७०।**

(आ) त्रिपुरी उत्खनन में प्राप्त उपरोक्त शासकों के मृद्-मुद्रांकन। **देखिये, प्रस्तुत ग्रन्थ, क्रमांक २४४४।**

(इ) त्रिपुरी उत्खनन में प्राप्त वसुबोधि तथा शिवबोधि के ताँबे के सिक्के। **बुलेटिन आफ एनशियण्ट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड आर्कियलाजी, सागर युनिवर्सिटी, अंक ३।**

ओ—गुप्त तथा समकालीन शासकों के सिक्के

२३४२. **उज्जैन (उज्जैन)**

(अ) मालवा के शासक जिष्णु के नवीन प्रकार के पाँच सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० १०५-६।

(आ) मालवा के शासक जिष्णु के ताँबे के ३० सिक्के जो स्व० अडवानी संग्रह, इन्दौर में संरक्षित किये गये। ज० न्यू० सो० इ० भाग १३, पृ० १६२; वही, भाग १५, पृ० ८६-६३।

(इ) मालवा के शासक जिष्णु के ताँबे के बारह सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १३, पृ० १५०-५१; वही, भाग १५, पृ० ८६-६३।

२३४३. **एडेंगा (बस्तर)**

नलवंशी शासकों के बत्तीस सिक्कों की निधि जो वराहराज, भवदत्त तथा अर्थपति के हैं। इन सिक्कों को नागपुर संग्रहालय में संरक्षित किया गया। ज० न्यू० सो० इ० भाग १, पृ० २६।

२३४४. **एरण (सागर)**

(अ) उत्खनन में प्राप्त रामगुप्त के अन्य प्रकार के सिक्के जिन पर गरुड़ध्वज चिह्न अंकित है। बाजपेयी कृ० द०—'सागर थ्रू दी एजेस' पृ० २६।

(आ) रामगुप्त के ताँबे के सिक्के जिनमें कुछ के अग्रभाग पर 'श्री रामगुप्त' उत्कीर्ण है तथा पृष्ठ भाग पर गरुड अंकित है। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ६४।

२३४५. **खैरातल (रायपुर)**

श्री महेन्द्रादित्य के ५४ सोने के सिक्के जो विभिन्न संग्रहालयों में संरक्षित किये गये। ज० न्यू० सो० इ० भाग १०, पृ० १३७; वही, भाग ११, पृ० १०८-१०; ट्रे० ट्रो० रि० क्रमांक ६, १९४८-४९।

२३४६. **गणेशपुर (जबलपुर)**

गुप्त शासक का सोने का सिक्का जिसे नागपुर संग्रहालय में संरक्षित किया गया। ज० न्यू० सो० इ० भाग १७, पृ० ११०; ट्रे० ट्रो० रि० क्रमांक ८, १९१०।

२३४७. **तुमैन (गुना)**

एक चौकार सिक्का जिस पर गुप्त लिपि में 'सत्यगुप्त' उत्कीर्ण है। इ० आ० रि० १९६७-६८, पृ० ६२।

२३४८. **पट्टन (बैतूल)**

चन्द्रगुप्त द्वितीय का एक सोने का सिक्का जिसे नागपुर संग्रहालय में संरक्षित किया गया। ट्रे० ट्रो० रि० क्रमांक ३, १९३८-३९।

२३४९. पिताईबन्ध (रायपुर)

महेन्द्रादित्य के ४६ तथा क्रमादित्य के ३ सिक्कों की निधि। ये सम्भवतः दक्षिण कोसल के स्थानीय शासक थे। ज० न्यू० सो० इ० भाग २२, पृ० १८४-४७; वही, भाग २६, पृ० ३१-३९; इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० ६५।

२३५०. बमनाला (पूर्व निमाड़)

समुद्रगुप्त के ८, चन्द्रगुप्त द्वितीय के ९ तथा कुमारगुप्त के ४ सिक्के। समुद्रगुप्त के एक सिक्के पर उसे 'पराक्रम' के स्थान पर 'विक्रम' की उपाधि दी गयी है। ज० न्यू० सो० इ० भाग ५, पृ० १३५।

२३५०/१. बानबरद (दुर्ग)

काच का १, चन्द्रगुप्त द्वितीय के ७ तथा कुमारगुप्त का एक सिक्का। ये सभी स्वर्ण सिक्के हैं। नवभारत दैनिक (जबलपुर) दिनांक ७ जनवरी, १९७३ :

२३५१. बालपुर (बिलासपुर)

प्रसन्नमात्र के दो चाँदी (सम्भवतः सोने) के सिक्के जो स्व० पं० लोचन प्रसाद पाण्डेय के संग्रह में संरक्षित किये गये। प्र० अ० इ० ओ० क० ५वां; इ० हि० क्वा० भाग ९, १५।

२३५२. बेसनगर (विदिशा)

चन्द्रगुप्त द्वितीय का एक सिक्का। क० आ० स० इ० रि०भाग १०, पृ० ३७।

२३५३. भिलसा (विदिशा)

(अ) रामगुप्त के छः सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १२, पृ० १०३-१११।

(आ) रामगुप्त (?) के चार-सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १३, पृ० १२८-३०।

२३५४. रायपुर (रायपुर)

(अ) महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय में संरक्षित रामगुप्त के ताँबे के पाँच सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग २३, पृ० ५०५।

(आ) महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय में संरक्षित गुप्त शासक नरसिंहगुप्त का एक सोने का सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग २३, पृ० ५०५।

(इ) स्थानीय संग्रहालय में संरक्षित जिष्णु के ताँबे के तीन सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग २३, पृ० ५०५।

(ई) स्थानीय संग्रहालय में संरक्षित क्रमादित्य के सोने के सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग २३, पृ० ५०५।

(उ) स्थानीय संग्रहालय में संरक्षित महेन्द्रादित्य के सोने के ४६ सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग २३, पृ० ५०५।

(ऊ) स्थानीय संग्रहालय में संरक्षित प्रसन्नमात्र का सोने का एक सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग २३, पृ० ५०५।

२३५५. विदिशा (विदिशा)

(अ) गुप्त शासक 'काच' के तांबे के सिक्के। ज० म० प्र० इ० प० भाग २, पृ० २१।

(आ) रामगुप्त का एक सिक्का जिसके अग्रभाग पर शासक का नाम उत्कीर्ण है तथा पृष्ठ-भाग पर नन्दी अंकित है। इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० ३-२।

(इ) रामगुप्त के सिंह तथा गरुड प्रकार के तांबे के सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग २३, पृ० ३४०-४४।

(ई) रामगुप्त के गुरुड प्रकार के बारह तथा सिंह प्रकार के चार सिक्के। इ० आ० रि० १९६७-६८, पृ० ६३।

(उ) 'जितं भगवता पद्मनाभेन' लेखयुक्त तांबे का सिक्का (?)। ज० न्यू० सो० इ० भाग ३३ (१) पृ० १२०-२१।

२३५६. सकोर (दमोह)

गुप्त शासक समुद्रगुप्त, काच, चन्द्रगुप्त द्वितीय तथा स्कन्दगुप्त के सोने के सिक्के जिन्हें नागपुर तथा मद्रास संग्रहालय में संरक्षित किया गया। ज० न्यू० सो० इ० भाग १७, पृ० १०३-४, ११०; ट्रे० ट्रो० रि० क्रमांक ५, १९१४; वही, क्रमांक ४, १९१४; वही, क्रमांक ८, १९०९।

२३५७. सल्हेपालि (रायगढ़)

शरभपुर के शासक प्रसन्नमात्र का चाँदी का एक सिक्का। इ० हि० क्वा० भाग ९, पृ० ५९५।

२३५८. सागर (सागर)

गुप्त शासकों के सोने के छः सिक्के जो नागपुर संग्रहालय में संरक्षित किये गये। ज० न्यू० सो० इ० भाग १७, पृ० ११०; ना० म्यू० ए० रि० १९१५-१६।

२३५९. सिरपुर (रायपुर)

उत्खनन में प्राप्त प्रसन्नमात्र का सोने का एक सिक्का। न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १३।

२३६० सिवनी (सिवनी)

चन्द्रगुप्त द्वितीय का सोने का सिक्का। न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १२।

२३६१. सिहोरा (गुना)

गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय के सोने के सिक्के। ग्वा० पु० रि० १९२४-२५, पृ० १७; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, भाग २४, पृ० १६८।

२३६२. हरदा (होशंगाबाद)

चन्द्रगुप्त द्वितीय का एक सोने का सिक्का जिसे नागपुर संग्रहालय में संरक्षित किया गया। ज० न्यू० सो० इ० भाग १८, पृ० ११०; ना० म्यू० के०।

औ—हूण शासकों के सिक्के

२३६३. एरण (सागर)

हूण शासक तोरमाण के सिक्के। बाजपेयी कृ० द०—'सागर थ्रू दी एजेस', पृ० ३०।

क—आदिवराह द्रम्म

२३६४. उमरिया (जबलपुर)

चांदी के ५१३ आदिवराह द्रम्म जिनमें से केवल एक द्रम्म प्राप्त किया जा सका जिसे नागपुर संग्रहालय में संरक्षित किया गया। ट्रे० ट्रो० रि० क्रमांक ३, १९१९-२०; ना० म्यू० ए० रि० १९१९-२०।

२३६५. बस्तर (बस्तर)

चाँदी के तीन आदिवराह द्रम्म जिन्हें नागपुर संग्रहालय में संरक्षित किया गया। न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १४; ना० म्यू० के०।

ख—हिन्द-सासानी सिक्के

२३६६. आवरा (मन्दसौर)

१९६०-६१ के उत्खनन काल में धरातल खोज में प्राप्त दो हिन्द-सासानी सिक्के। ज० म० प्र० इ० प० अंक ४ (१९६२) पृ० ३४।

२३६७. इन्दौर (इन्दौर)

(अ) स्व० अडवानी संग्रह में संरक्षित चाँदी के आठ, ताँबे के दो तथा सीसे का एक सासानी सिक्का। चाँदी तथा ताँबे के कुछ सिक्कों के पृष्ठ भाग पर 'ओंकार' उत्कीर्ण है। ज० न्यू० सो० इ० भाग १३, पृ० २०५-६।

(आ) शासकीय खजाने में संरक्षित चाँदी के ११५० सासानी सिक्के। इनमें लगभग ७० सिक्कों के अग्रभाग पर मुखाकृति तथा पृष्ठ भाग पर युद्ध करते हुए घुड़सवार का चित्र अंकित है। ज० न्यू० सो० इ० भाग ८, पृ० ६६-७१।

२३६८. उज्जैन (उज्जैन)

वाकणकर संग्रह में संरक्षित ताँबे के दो उत्कीर्ण सासानी सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६ पृ० २८१-८२।

२३६९. एरण (सागर)

सासानी सिक्के प्राप्त। बाजपेयी कृ० द०—'सागर थ्रू दी एजेस' पृ० ३०।

२३७०. खेरुआ (दमोह)

चाँदी के ३१२ सासानी सिक्के जिनमें केवल ६५ प्राप्त कर विभिन्न संग्रहालयों में संरक्षित किये गये। ट्रे० ट्रो० रि० क्रमांक ८, १६३०-३१; न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १४।

२३७१. गुइदा (निमाड़)

चाँदी के ११ सासानी सिक्के जिन्हें प्राप्त नहीं किया जा सका। ट्रे० ट्रो० रि० क्रमांक ६, १६१६; न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १५।

२३७२. घटौदा (धार)

सासानी सिक्कों की एक निधि। ज० न्यू० सो० इ० भाग १५, पृ० १०४।

२३७३. चन्देरी (गुना)

सासानी सिक्कों की एक निधि। ज० न्यू० सो० इ० भाग १०, पृ० १०४।

२३७४. छिन्दवाड़ा (छिन्दवाड़ा)

चाँदी के ३१ सासानी सिक्कों की एक निधि। न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १५; ना० म्यू० के०।

२३७५. देवतपुर (शाजापुर)

सासानी सिक्कों की एक निधि। ज० न्यू० सो० इ० भाग १५, पृ० १०४।

२३७६. पाटन तहसील (जबलपुर)

ताँबे के ६६२ सासानी सिक्के जिन्हें नागपुर संग्रहालय में संरक्षित किया गया। ट्रे० ट्रो० रि० क्रमांक ८, १६१६-२०; ना० म्यू० ए० रि० १६१६-२०; न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १४।

२३७७. बरदिया (मन्दसौर)

सासानी सिक्कों की एक निधि। ज० न्यू० सो० इ० भाग १५, पृ० १०४।

२३७८. बालाघाट (बालाघाट)

चाँदी के १० सासानी सिक्के। बालाघाट डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१६०७), पृ० ६६।

२३७६. भाट पचलाना (उज्जैन)

एक नये प्रकार के सासानी सिक्के। ग्वा० पु० रि० १६२७-२८, पृ० ६७।

२३८०. महाराजपुर (सागर)

ताँबे के १८ सासानी सिक्के जिन्हें नागपुर संग्रहालय में संरक्षित किया गया। ट्रे० ट्रो० रि० क्रमांक ६, १६५४-५५; न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १५।

२३८१. मान्धाता (पूर्व निमाड़)

सासानी सिक्के जिन पर 'श्री ओंकार' उत्कीर्ण है। ज० न्यू० सो० इ० भाग ११, पृ० ५८।

२३८२. मुड़वारा तहसील (जबलपुर)

चाँदी के सासानी सिक्के। जबलपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०९), पृ० ७३; न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १४।

२३८३. मुलताई (बैतूल)

चाँदी के १६४० सासानी सिक्के जिनमें केवल १२ प्राप्त किये जा सके। ये विभिन्न संग्रहालयों में संरक्षित हैं। ट्रे० ट्रो० रि० क्रमांक १२, १९३५-३६; न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १५।

२३८४. मोहनिया-खुर्द (पूर्व निमाड़)

(अ) चाँदी के सासानी सिक्कों की एक बड़ी निधि। इ० आ० रि० १९६१-६२, पृ० ९४।

(आ) २०० सासानी सिक्कों की एक निधि। ज० न्यू० सो० इ० भाग २५, पृ० ३६-३८।

२३८५. रायपुर (रायपुर)

चाँदी के ११ तथा ताँबे के ४ सासानी सिक्के जो स्थानीय संग्रहालय में संरक्षित हैं। ज० न्यू० सो० इ० भाग २३ (१९६१) पृ० ५०५।

२३८६. सिरसा (दुर्ग)

ताँबे के १३९ सासानी सिक्के जिन्हें नागपुर संग्रहालय में संरक्षित किया गया। ट्रे० ट्रो० रि० क्रमांक ८, १९५४-५५; इ० आ० रि० १९५४-५५, पृ० ६३।

२३८७. सिवनी (सिवनी)

चाँदी के ८ सासानी सिक्के। न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १५; ना० म्यू० के०।

२३८८. हरसूद (पूर्व निमाड़)

चाँदी के १२२६ सासानी सिक्कों की निधि। ज० न्यू० सो० इ० भाग २८, पृ० २१३-१४।

२३८९. होशंगाबाद (होशंगाबाद)

चाँदी के ३८ सासानी सिक्कों की निधि जिन्हें नागपुर संग्रहालय में संरक्षित किया गया। न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १६; ना० म्यू० के०।

ग—चन्देल शासकों के सिक्के

२३६०. खजुराहो (छतरपुर)

चन्देल नरेश वीरवर्मन् का एक विशेष प्रकार का सोने का द्रम्म। **के० क्वा० इ० म्यू० (कलकत्ता) भाग १, पृ० २५४।**

२३६१. रीवा (रीवा)

चन्देल शासक मदनवर्मन् के चाँदी के ४८ सिक्कों की एक निधि। **न्यू० स० भाग २२ (१३१), १९१४।**

२३६१/१ होशंगाबाद (होशंगाबाद)

चन्देल त्रैलोक्यवर्मन् की ताम्रमुद्रा। **स० अ० इ० ओ० का० २६ (उज्जैन) १९७२, पृ० १३२।**

२३६२. त्रिपुरी (जबलपुर)

चन्देल शासक वीरवर्मन् का एक सोने का सिक्का। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० २३६-३८।**

घ—मालवा के परमार शासकों के सिक्के

२३६३. इन्दौर (इन्दौर)

(अ) परमार शासक नरवर्मन् का सोने का एक तथा ताँबे का एक सिक्का। ये सिक्के इन्दौर के श्रीपद्मसिंह तथा श्री शान्तिलाल परदेसी के संग्रह में संरक्षित हैं। **ज० न्यू० सो० इ० भाग ३०, पृ० २०८। उदयादित्य के एक अन्य सिक्के के लिए देखिए न्यू० स० भाग ३३, लेख क्रमांक २०३।**

(आ) परमार शासक उदयादित्य तथा अजयवर्मन् के क्रमशः सोने तथा चाँदी के सिक्के जो श्री पद्मसिंह श्यामसुख के निजी संग्रह में सुरक्षित हैं। **व्य० सू०।**

(इ) डा० नागू के व्यक्तिगत संग्रह में संरक्षित परमार नरवर्मन् का सोने का सिक्का। **व्य० सू०।**

ङ—कलचुरि शासकों के सिक्के

२३६४. इसुरपुर (सागर)

गांगेयदेव के सोने के ८ सिक्के जिन्हें नागपुर संग्रहालय में संरक्षित किया गया। **न्यू० स० भाग १७, लेख क्रमांक १०१।**

२३६५. खैरागढ़ राज्य (दुर्ग)

कलचुरि शासकों के ताँबे के २०० सिक्के। इनके सम्बन्ध में और तथ्य अज्ञात हैं। **ज० न्यू० सो० इ० भाग ३, पृ० २८।**

२३९६. तेवर (जबलपुर)

(अ) कृष्णराज का चाँदी का एक सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० १०७-८।

(आ) गांगेयदेव का सोने का एक सिक्का। न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १६।

२३९७. दलाल-सिवनी (रायपुर)

रत्नपुर के कलचुरि शासक पृथ्वीदेव, जाजल्लदेव तथा रत्नदेव के सोने के १३६ सिक्कों की निधि जिनमें केवल १२४ सिक्के प्राप्त किये जा सके। ट्रे० ट्रो० रि० क्रमांक ५, १९४०-४१; न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १७।

२३९८. देवास (देवास)

शासकीय कोषागार में संरक्षित रत्नपुर के कलचुरि शासक पृथ्वीदेव के सोने के दो सिक्के तथा जाजल्लदेव का एक सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग १५, पृ० ११०।

२३९९. धनपुर (बिलासपुर)

रत्नपुर के कलचुरि शासकों के ताँबे के ३९०० सिक्कों की निधि। ज० न्यू० सो० इ० भाग १८, पृ० १११-१२।

२४००. पट्टन (बैतूल)

कृष्णराज के चाँदी के दो सिक्के। ट्रे० ट्रो० रि० क्रमांक ३, १९३८-३९; न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १४।

२४०१. बच्छोदा (बिलासपुर)

कलचुरि शासकों के सोने के ९ सिक्के। न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १७।

२४०२. बरेठा (जबलपुर)

त्रिपुरी के कलचुरि शासक गांगेयदेव के चाँदी के ५४ सिक्कों की निधि। ज० न्यू० सो० इ० भाग १८, पृ० २०५-६।

२४०३. बरेला (जबलपुर)

त्रिपुरी के कलचुरि शासक गांगेयदेव के सोने के १२६ सिक्कों की निधि जिनमें केवल १०९ सिक्के प्राप्त किये जा सके। ये विभिन्न संग्रहालयों में संरक्षित किये गये। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० २८१; वही, भाग १८, पृ० ११०-११; इ० आ० रि० १९५५-५६, पृ० ६६।

२४०४. बालपुर (बिलासपुर)

(अ) कलचुरियों के तीन सिक्के। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ६६।

(आ) प्रतापमल्ल के ताँबे के १२ सिक्के जिन्हें स्व० पं० लोचन प्रसाद पाण्डेय, रायगढ़ के संग्रह में संरक्षित किया गया। इ० हि० क्वा० भाग ३, पृ० १७३।

(इ) विक्रम साइ (जो सम्भवतः रत्नपुर का कलचुरि शासक था) का एक सिक्का। इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० ६६।

(ई) कलचुरि शासकों के चाँदी के तीन सिक्के जिन्हें महाकोशल हिस्टॉरिकल सोसायटी रायगढ़ में संरक्षित किया गया। ज० न्यू० सो० इ० भाग ७, पृ० ४१-४२।

२४०५. बेसनगर (विदिशा)

(अ) १९१३-१४ के उत्खनन में प्राप्त कलचुरि कृष्णराज के चाँदी के ७ सिक्के। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९१३-१४, पृ० १८६-२२६।

(आ) कलचुरि शासक कृष्णराज का एक 'रूपक' सिक्का। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९१३-१४, पृ० २०८-२१४।

२४०६. भगौंद (बिलासपुर)

रत्नपुर के कलचुरि शासक पृथ्वीदेव के सोने के १२ तथा ताँबे के ३ सिक्के। न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १७।

२४०७. मांडू (धार)

गांगेयदेव का सोने का एक सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग १५, पृ० १०५।

२४०८. रायगढ़ राज्य (रायगढ़)

कलचुरि शासकों के ताँबे ४३ सिक्के। इनके सम्बन्ध में और तथ्य अज्ञात हैं। न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० १८।

२४० . रायपुर (रायपुर)

महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय में संरक्षित कलचुरि शासकों के सोने के ३, चाँदी के २ तथा ताँबे के ११० सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग ३, पृ० ५०५।

२४१०. सागर (सागर)

गांगेयदेव के सोने के ८ सिक्के। न्यू० स० भाग १७, लेख क्रमांक १०१।

२४११. सारंगढ़ राज्य (रायगढ़)

रत्नपुर के कलचुरि शासकों के सोने के ४६ सिक्के। प्रो० ए० सो० ब० १८९३, पृ० ९२।

२४१२. सोनसारी (बिलासपुर)

सोने के ६०० ;सक्कों की निधि जिसमें कलचुरि शासक गांगेयदेव, जाजल्लदेव, रत्नदेव, पृथ्वीदेव तथा नागवंशी शासक सोमेश्वर के सिक्के प्राप्त हुए। गोविन्द-चन्द्र के भी दो सिक्के प्राप्त हुए। ज० आ० हि० रि० सो० भाग १२, खण्ड ३,

पृ० १७७-७८; ज० न्यू० सो० इ० भाग ३, पृ० २७; वही, भाग १७, खण्ड २, पृ० ५४।

२४१३. त्रिपुरी (जबलपुर)

१९५२-५३ के उत्खनन में प्राप्त गांगयदेव का चाँदी का एक छोटा सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० ७४।

च—बस्तर के नाग शासकों के सिक्के

२४१४. सोनसारी (बिलासपुर)

१९२१ में प्राप्त ६०० सिक्कों की निधि में बस्तर के नाग शासक सोमेश्वर के ४ सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग १७, पृ० ५४-५७।

छ—देवगिरि के यादव शासकों के सिक्के

२४१५. कोठा (पूर्व निमाड़)

देवगिरि के यादव शासक सिंहण के सोने के २४ पद्मटंक। ज० न्यू० सो० इ० भाग २८, पृ० २१४-१५।

२४१६. देवास (देवास)

शासकीय खजाने में संरक्षित देवगिरि के यादव शासक रामदेव का पद्मटंक। ज० न्यू० सो० इ० भाग १५, पृ० ११०।

२४१७. परसाडिह (रायगढ़)

यादव शासक सिंहण के सोने के ३ पद्मटंक तथा एक अस्पष्ट सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग ८, पृ० १४८।

ज—कच्छपघात् शासकों के सिक्के

२४१८. ग्वालियर (ग्वालियर)

मारवाड़ के कच्छपघात् शासक वीरसिंहदेव का एक सिक्का। न्यू० स० भाग ४६, पृ० ३३३।

झ—यज्वपाल शासकों के सिक्के

२४१९. ग्वालियर (ग्वालियर)

(अ) यज्वपाल शासक चाहड़देव, आसल्लदेव तथा गोपालदेव के ७९१ सिक्के। न्यू० स० भाग ३३ (२०१), १९१८।

(आ) स्थानीय शासकीय खजाने में संरक्षित यज्वपाल शासकों के सिक्के। क्वा० मे० इ० पृ० ९२-९३; न्यू० स० भाग ३३, लेख क्रमांक २०१; वही, भाग ४०, लेख क्रमांक २९८।

ट—अन्य सिक्के

२४२०. **आवरा (मन्दसौर)**

१९६०-६१ के उत्खनन काल में धरातल से प्राप्त एक मिट्टी का बना बैल जिस पर रोमन सिक्के की छाप बनी है। **ज० म० प्र० इ० प० अंक ४ (१९६२), पृ० २५।**

२४२१. **इन्दौर (इन्दौर)**

(अ) स्व० अडवानी संग्रह में संरक्षित दामसेन (?) का एक ताँबे का सिक्का। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १३, पृ० २१३।**

(आ) दो रामटंकी सिक्के। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १५, पृ० २३६-३८।**

२४२२. **उज्जैन (उज्जैन)**

(अ) भारतीय कला भवन में संरक्षित कार्त्तिकेय सिक्के। **इण्डियन न्यूमिसमेटिक क्रानिकल, भाग ३, पृ० १८२-८८।**

(आ) श्री जयाश्रय का एक ताँबे का सिक्का। **ज० न्यू० सो० इ० भाग २०, पृ० २१९; वही, भाग २१, पृ० १३५-३६।**

२४२३. **ग्वालियर (ग्वालियर)**

ताँबे के ५ सिक्के जिनमें ४ पशुपति तथा एक श्री गुहिलपति (?) के हैं। इन शासकों की वंशावली अज्ञात है। ग्वालियर से प्राप्त एक अभिलेख में तोरमान के पुत्र पशुपति को एक शक्तिशाली सम्राट बतलाया गया है। **ज० ए० सो० ब० भाग ३४, पृ० ११५।**

२४२४. **चकरबेड़ा (बिलासपुर)**

रोमन शासकों के सोने के दो सिक्के। **ज० न्यू० सो० इ० भाग ७, पृ० ६।**

२४२५. **बालपुर (बिलासपुर)**

(अ) चीन के चाँदी के तीन तथा ताँबे का एक सिक्का। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १०, पृ० १६१।**

(आ) केसरी का एक सोने का सिक्का। **ज० आ० हि० रि० सो० भाग ३, पृ० १८१।**

२४२६. **रायपुर (रायपुर)**

स्थानीय संग्रहालय में संरक्षित एक पांचाल सिक्का। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १३, पृ० ५०५।**

२४२७. **बिलासपुर (बिलासपुर)**

रोमन शासकों के सोने के ४ सिक्के। **न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० २३।**

२४२८. रिआपुर (रायपुर)

अनन्तवर्मन् चोड़गंग के ३२ सोने के 'फणम' सिक्के। ट्रे० ट्रो० रि० क्रमांक १७, १९०८; न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० २०।

२४२९. विदिशा (विदिशा)

(अ) स्थानीय संग्रहालय में संरक्षित 'रिपोजे' सिक्के। ज० न्यू० सो० इ० भाग २३, पृ० ३०५।

(आ) शिवगुप्त का सिक्का जो लगभग दूसरी-प्रथम शताब्दी ई० पू० का है। ज० म० प्र० इ० प० अंक २, पृ० २१; ज० न्यू० सो० इ० भाग २२, पृ० १३२।

(इ) सखदेव का लगभग तीसरी शताब्दी ईसवी का सिक्का। वही।

२४३०. शिवपुरी (शिवपुरी)

रणहस्तिन् का चाँदी का सिक्का जो मुनिराज संग्रह में संरक्षित है। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० २८२-८३।

२४३१. सिरपुर (रायपुर)

उत्खनन में प्राप्त ताँबे का चीन का एक सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग १८, पृ० ६४-६६; न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० २१।

२४३२. त्रिपुरी (जबलपुर)

१९५१-५२ के उत्खनन में प्राप्त चन्द्र (?) का एक सीसे का सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० ६९-७०।

ठ—मुहर, मुद्रांकन तथा सिक्कों के ढाँचे

२४३३. आवरा (मन्दसौर)

(अ) १९६०-६१ के उत्खनन में प्राप्त एक गोलाकार मृद्-मुद्रांकन जिस पर तीसरी-दूसरी शताब्दी ई० पू० की ब्राह्मी लिपि में '(अ) पराय' उत्कीर्ण है। इस मृद्-मुद्रांकन से ज्ञात हुआ है कि आवरा का प्राचीन नाम 'अपरा' था। ज० म० प्र० इ० प० अंक ४ (१९६२), पृ० ३६।

(आ) १९६०-६१ के उत्खनन में प्राप्त एक तिकोना मृद्-मुद्रांकन जिस पर एक ओर 'समरसतस' तथा दूसरी ओर 'यसोमितस' उत्कीर्ण है। ये लेख ४थी शताब्दी ईसवी की लिपि में हैं। ज० म० प्र० इ० प० अंक ४ (१९६२), पृ० ३६।

(इ) १९६०-६१ के उत्खनन में प्राप्त एक गोलाकार मृद्-मुद्रांकन जिस पर दूसरी शताब्दी ईसवी की ब्राह्मी लिपि में 'गोसमस' उत्कीर्ण है। ज० म० प्र० इ० प० अंक ४ (१९६२), पृ० ३६।

(ई) १९६०-६१ के उत्खनन में प्राप्त हाथी दाँत का बना एक मुद्रांकन जिस पर मौर्यकालीन ब्राह्मी लिपि में 'जिधवस' उत्कीर्ण है। ज० म० प्र० इ० प० अंक ४ (१९६२), पृ० २३।

२४३४. इन्दौर (इन्दौर)

ताँबे की मुहर जिस पर गुप्त लिपि में 'जितम् दोव्यि' उत्कीर्ण है। ज० न्यू० सो० इ० भाग ३१, खण्ड १, पृ० ७४-७५।

२४३५. उज्जैन (उज्जैन)

(अ) १९५७-५८ के गढ़-कालिका टीले के उत्खनन में प्राप्त एक मृद्-मुद्रांकन जिस पर प्रथम शताब्दी ईसवी की ब्राह्मी लिपि में 'असदेवस' लेख उत्कीर्ण है। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ३२-३६।

(आ) १९५७-५८ के गढ़-कालिका टीले के उत्खनन में प्राप्त मिट्टी की बनी मन्जूषा का ढक्कन जिस पर प्रथम शताब्दी ईसवी की ब्राह्मी लिपि में 'नागवुधिश प्रवजितस' लेख उत्कीर्ण है। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ३२-३६।

(इ) १९५७-५८ के गढ़-कालिका टीले के उत्खनन में प्राप्त मिट्टी का बना सिक्के का ढाँचा जिस पर रोमन शासक आगस्टस का चित्र बना है। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ३२-३६।

(ई) १९५७-५८ के गढ़-कालिका टीले के उत्खनन में प्राप्त हाथी-दाँत की मुद्रा जिस पर तीसरी शताब्दी ई० पू० की लिपि में 'गोथजसतिसकस' लेख उत्कीर्ण है। इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ३२ ३६।

(उ) १९५६-५७ के गढ़-कालिका टीले के उत्खनन में प्राप्त हाथी-दाँत की बनी दो मुद्राएँ जिन पर तीसरी-दूसरी शताब्दी ई० पू० की लिपि में लेख उत्कीर्ण है। एक मुद्रा पर 'गोसहितकस' तथा दूसरी पर 'पत्तिलस' उत्कीर्ण है। इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० २०-२८।

(ऊ) गढ़-कालिका के निकट नाले में प्राप्त लगभग पूर्व-मौर्य काल की काँच की मुहर। इ० न्यू० क्रा० भाग ३, पृ० १५५-५७।

(ए) सिक्कों की निधि में प्राप्त ताम्र-मुद्रांकन जिस पर लगभग ४ थी शताब्दी ईसवी की लिपि में 'अप्रमद' उत्कीर्ण है। ज० न्यू० सो० इ० भाग १३, पृ० ७४-७५।

(ऐ) मृद्-मुद्रांकन जिस पर दूसरी शताब्दी ईसवी की ब्राह्मी लिपि में 'यवनिकानां' उत्कीर्ण है। इ० आ० रि० १९६८-६९।

२४३६. एरण (सागर)

(अ) मिट्टी की मुहर जिस पर गजलक्ष्मी का चित्र तथा उसके नीचे लगभग ५वीं

शताब्दी ईसवी की लिपि में 'ऐरिकिन' तथा 'गोमिक' उत्कीर्ण है। **इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० ५१।**

(आ) उत्खनन में प्राप्त काली मिट्टी की बनी मुद्रांकन जिस पर ब्राह्मी अक्षरों में 'रज्ञो सिंह श्री सेनस्य' उत्कर्ण है। **ज० न्यू० सो० इ० भाग २८, पृ० ४८।**

(इ) मृद्-मुद्रांकन जिस पर लगभग तीसरी शताब्दी ईसवी की ब्राह्मी लिपि में 'रज्ञो ईश्वरमित्रपुत्रस्य रज्ञो सिंहश्री सेनस्य' उत्कीर्ण है। यह मालवा के किसी शक शासक की प्रतीत होती है। **इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० २-६।**

(ई) उत्खनन में प्राप्त लगभग २०० ई० पू० का धातु खण्ड जिस पर ब्राह्मी लिपि में राजा इन्द्रगुप्त का नाम उत्कीर्ण है। **इ० आ० रि० १९६ -६१, पृ० ५५; ज० यू० पी० हि० सो० भाग ८ (२) १९६०।**

(उ) उत्खनन में प्राप्त शक क्षत्रप विजयसेन, रुद्रसेन द्वितीय, विश्वसिंह तथा रुद्रसिंह के १५ सिक्कों के साँचे। विजयसेन के दो साँचों पर शक सम्वत् १७० की तिथि तथा रुद्रसेन द्वितीय के साँचों पर शक सम्वत् १८०, १८५ तथा १८९ की तिथि पड़ी है। **इ० आ० रि० (सा० रि०) १९६४-६५, पृ० ३-२।**

२४३७. केसूर (धार)

बल्लाल का मृद्-मुद्रांकन जिसे धार संग्रहालय में संरक्षित किया गया। **ज० न्यू० सो० इ० भाग १५, पृ० १२४-२५।**

२४३८. दतिया (दतिया)

खोज में प्राप्त ५० मृद्-मुद्रांकन जिन पर ६वीं-७वीं शताब्दी ईसवी की लिपि में वैदिक मन्त्र उत्कीर्ण हैं। **प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी, अध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास तथा संस्कृति विभाग, सागर विश्वविद्यालय से सूचना प्राप्त।**

२४३९. धमनार (मन्दसौर)

मिट्टी की मुहर जिस पर लगभग ५वीं-६वीं शताब्दी ईसवी की लिपि में 'चन्दनगिरि महाविहार' उत्कीर्ण है। **इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० ६०।**

२४४०. बालपुर (बिलासपुर)

राणक श्री बालकेसरी की मुहर जो रायगढ़ के स्व० पं० लोचनप्रसाद पाण्डेय के संग्रह में संरक्षित की गयी। **न्यू० नो० मो० क्रमांक ५, पृ० २४; उड़ीसा हिस्टारिकल रिसर्च सोसायटी जर्नल, भाग ४, पृ० ५८-५९।**

२४४१. बेसनगर (विदिशा)

(अ) १९१४-१५ के उत्खनन में प्राप्त २६ उत्कीर्ण मृद्-मुद्रांकन, जिनमें ३ शासकों के, २ अधिकारियों के तथा शेष अन्य व्यक्तियों के थे। शासकों के

मुद्रांकनों में एक महाराज विश्वामित्र का था। आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९१४-१५, पृ० ६६-८८।

(आ) १९६३ के उत्खनन में प्राप्त शुंग-सातवाहन कालीन एक पत्थर की मुहर जिस पर प्रथम शताब्दी ई० पू० की ब्राह्मी लिपि में 'निकुभ नागस्य' लेख उत्कीर्ण है। इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० १७।

२४४२. महेश्वर (पश्चिम निमाड़)

उत्खनन में प्राप्त एक काँच के टुकड़े पर मुहर की छाप जो लगभग ४थी शताब्दी ई० पू० की है। ज० न्यू० सो० इ० भाग १५, पृ० २०१-२।

२४४३. रायपुर (रायपुर)

महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय में संरक्षित कौशाम्बी (अथवा अयोध्या) के शासक धनदेव का मृद्-मुद्रांकन। ज० न्यू० सो० इ० भाग २१, पृ० १८७-८८।

२४४४. त्रिपुरी (जबलपुर)

(अ) उत्खनन में प्राप्त बोधि वंश के शासक वसुबोधि, शिवबोधि तथा चन्द्रबोधि का मृद्-मुद्रांकन। इ० आ० रि० १९६७-६८, पृ० २३-२४।

(आ) उत्खनन में प्राप्त बोधि वंश की सात मृद्-मुद्रांकनों में चतुर्थ शासक श्रीबोधि का मुद्रांकन। इ० आ० रि० १९६८-६९।

(इ) १९५३ के उत्खनन में प्राप्त विराक की हाथी-दाँत की एक मुहर जो लगभग ३०० ई० पू० की है। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० ७३-७४।

(ई) १९६८-६९ के उत्खनन में प्राप्त महासेन का एक मृद्-मुद्रांकन। महासेन सम्भवत: ३५० ईसवी के लगभग स्थानीय शासक था। इ० आ० रि० १९६८-६९।

(उ) मौर्यकाल की सफेद पत्थर की बनी एक महत्त्वपूर्ण मुहर जिस पर स्वस्तिक, शंख, हल तथा 'टौरिन' चिह्न अंकित है। इ० आ० रि० १९६८-६९।

(ऊ) १९५३ के उत्खनन में प्राप्त लगभग पहली-दूसरी शताब्दी ईसवी की '.. मर' की हाथीदाँत की मुहर। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० ७४!

(ए) १९५१-५२ के उत्खनन में प्राप्त शक विथुड की लगभग दूसरी शताब्दी ई० के उत्तरार्द्ध की मिट्टी की मुहर। ज० न्यू० सो० इ० भाग १६, पृ० २४-२६।

(ऐ) नालन्दा महाविहार के आर्यभिक्षुसंघ की मृण्मुद्रा। ज० न्यू० सो० ई० भाग ३४ (१)।

टिप्पणी -- मध्यप्रदेश के विभिन्न संग्रहालयों तथा व्यक्तिगत संग्रहों में जो प्रकाशित तथा अप्रकाशित सिक्के उपलब्ध हैं उनकी सूची के लिए अगला (षष्ठ) अध्याय देखिये।

षष्ठ अध्याय

•

मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व संग्रहालय

(अ) केन्द्रीय शासन द्वारा संचालित संग्रहालय

२४४५. पुरातत्त्व संग्रहालय--साँची (रायसेन)

भारत शासन के केन्द्रीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा स्थापित इस संग्रहालय में क्षेत्रीय इतिहास से सम्बन्धित महत्वपूर्ण पुरावशेष संरक्षित हैं। इन पुरावशेषों को साँची के मुख्य स्तूप, चतुर्दिक स्थित अन्य स्तूप और स्मारकों से तथा यहाँ किये गये उत्खननों में प्राप्त किया गया है। ये पुरावशेष ई० पू० प्रथम शताब्दी से १२वीं शताब्दी ई० के बीच के हैं तथा इनकी कुल संख्या २९२२ है। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

क्रमांक	संग्रहालय का क्रमांक	पुरावशेषों का विवरण
(१)	(२)	(३)
१.	१ से १२०० तथा २३८९ से २८७८	**पाषाण वस्तुएँ—** स्तम्भ तथा अर्द्ध-स्तम्भों के खण्ड, वेदिका तथा वेदिका-स्तम्भों के खण्ड, उष्णीष के खण्ड, फर्श के खण्ड, उत्कीर्ण पाषाण तथा स्तम्भ, प्रतिमाओं के खण्ड जिनमें बुद्ध, बोधिसत्व, यक्ष, यक्षी, चँवरधारिणी, शिव, पुरुष तथा स्त्री प्रतिमाएँ हैं, अवशेष मन्जूषा के खण्ड, तोरण खण्ड, संकल्पित पट्ट तथा स्तूप खण्ड, अशोक स्तम्भ के खण्ड, द्वार-स्तम्भ के खण्ड तथा स्तूप के ऊपरी भाग के खण्ड तथा पट्टों पर उत्कीर्ण विष्णु, गणेश, महिषासुरमर्दिनी की प्रतिमाएँ, आदि।

(१)	(२)	(३)
२.	१२०१ से १८००	**मिट्टी की बनी वस्तुएँ—** पानी की सुराहियों के खण्ड, झारे, तकलियाँ, चक्र, अलंकृत मृद्भाण्ड, चित्रित धूसर भाण्ड, लाल भाण्ड के टुकड़े, छतों के खपरे, संकल्पित उष्णीष, मनके, बुद्ध प्रतिमा का मस्तक, अलंकृत पट्ट, मुहरें जिन पर बौद्ध बीज-मन्त्र उत्कीर्ण हैं, वृहदाकार ईंटें, भाण्ड तथा गोलाकार वस्तुएँ इत्यादि ।
३.	१८०१ से २३३७ तथा २३६४ से २३६७	**लोहे की बनी वस्तुएं—** खीले, हँसिये, चूल्हे, हथौड़े, छैनी, खुरपी, ताले, चाबी, द्वार की साँकल, चाकू, खुरचनी, उस्तरे, भाले, तलवार, कटार, तीर, छड़, विभिन्न आकार के बरतन, छल्ले, सुई इत्यादि ।
४.	२३३८ से २३४६	**काँसे की बनी वस्तुएँ—** विभिन्न प्रकार के बरतन, चूड़ियाँ, छल्ले, घण्टे तथा आभूषण की वस्तुएँ ।
५.	२३५० से २३६८	**ताँबे की बनी वस्तुएँ—** विभिन्न प्रकार के बरतन, छल्ले तथा आभूषण ।
६.	२३६९ से २३७३	**सेलखड़ी की बनी वस्तुएँ—** गोलाकार साँचे, संकल्पित मन्जूषा, ढक्कन तथा तकलियाँ ।
७.	२३७४ से २३८७	**कीमती पत्थरों की बनी तथा अन्य वस्तुएँ—** जास्पर, क्रिस्टल आदि के बने मनके तथा हाथी-दाँत और काँच की बनी चूड़ियाँ ।

(१)	(२)	(३)
८.	२८७६ से २९२२	सिक्के— ताँबे के आहत सिक्के, सीसे के सिक्के, पश्चिम क्षत्रपों के चाँदी के सिक्के तथा मुस्लिम कालीन ताँबे के सिक्के।

२४४६. पुरातत्त्व संग्रहालय--खजुराहो (छतरपुर)

छतरपुर जिले में स्थित पर्यटकों का प्रसिद्ध स्थल खजुराहो में भारत शासन के केन्द्रीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा एक संग्रहालय स्थापित किया गया है जिसमें क्षेत्रीय इतिहास से सम्बन्धित महत्वपूर्ण शिलावशेष संरक्षित किये गये हैं। लगभग सभी पूर्ण तथा खण्डित प्रतिमाएँ जो इस संग्रहालय में संरक्षित हैं, चन्देल काल से सम्बन्धित १०वीं-१२वीं सदी ईसवी की हैं। कुल मिलाकर यहाँ पर संरक्षित प्रतिमाओं की संख्या २४६१ है, जिनमें से केवल कुछ महत्वपूर्ण ही संग्रहालय की दीर्घाओं में प्रदर्शित की गयी हैं, शेष एक खुले घेरे में सुरक्षित रखे गये हैं। इस संग्रहालय में कोई भी सिक्के अथवा अभिलेख संरक्षित नहीं हैं। ढाई हजार के लगभग ये पूर्ण अथवा खण्डित प्रतिमाएँ निम्नलिखित देवी-देवता अथवा अन्य विषयों से सम्बन्धित हैं :—

अम्बिका, अग्नि, अग्नि तथा स्वाहा, अर्द्धनारीश्वर, अन्धकवध, अप्सरा
आदिनाथ
इन्द्र, इन्द्रानी
ईशान तथा कुबेर
उमा-महेश्वर (खड़ी तथा बैठी प्रतिमाएँ)
ऋषि
कल्कि, कल्याण-सुन्दर मूर्ति, कार्तिकेय, कीर्तिमुख, कुन्थनाथ, कृष्ण तथा देवकी, कौमारी
गण, गणपति-खड़े, बैठे तथा नृत्य करते हुए, गरुड, गजलक्ष्मी, गोमेध, गौरी, गंगा, गंधर्व
चक्रपुरुष, चन्द्रप्रभ, चँवरधारिणी
तीर्थंकर
दशावतार, द्वारपाल, द्वारपालिकाएँ, दिक्पाल, दुर्गा, देवी, देव
नटराज, नन्दी, नरसिंह, नवग्रह, नाग, नागी, नेमीनाथ
पार्वती, पार्श्वनाथ, पशु (विभिन्न प्रकार के), प्रेत
बलराम, ब्रह्मा, ब्रह्माणी, ब्रह्मा तथा ब्रह्माणी, बुद्ध तथा भैरव
मकर-तोरण, महावीर, महिषासुरमर्दिनी, मा तथा शिशु, मिथुन
यम, यम तथा नैरित, यमुना, योद्धा

राम तथा बुद्ध, रुद्र तथा अग्नि
लक्ष्मी, लक्ष्मी-नारायण (खड़ी तथा बैठी प्रतिमाएँ)
वराह, वरुण तथा वायु, वाराही, वादक, वामन, व्याल, विद्याधर, विष्णु,—खड़े, गरुड पर बैठे, ललितासन में बैठे, योगासन में बैठे, बैकुण्ठ विष्णु,
अनन्तशयन विष्णु, विष्णु तथा ब्रह्मा, विष्णु, ब्रह्मा तथा शिव
शिव (खड़ी तथा बैठी प्रतिमाएँ), शंख-पुरुष
सती-स्मारक, सदाशिव, सरस्वती, सप्तमातृका, सम्भवनाथ, सुमतिनाथ, सूर्य
हरिहर पितामह
त्रिविक्रम

(आ) प्रान्तीय शासन द्वारा संचालित संग्रहालय

२४४७. केन्द्रीय पुरातत्त्व संग्रहालय ग्वालियर

ग्वालियर किले के गुजरी महल में स्थित मध्यप्रदेश पुरातत्त्व विभाग द्वारा संचालित इस संग्रहालय में मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सामग्री संग्रहीत की गयी है । इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

(अ) उत्खनन तथा खोज में प्राप्त सामग्री—

इस संग्रहालय में उज्जैन, पवाया, आवरा, इन्द्रगढ़ तथा महेश्वर में किये गये उत्खननों तथा खोजों में प्राप्त प्राचीन मृद्भाण्डों के टुकड़े, उत्कीर्ण मुहरें, मृण्मूर्तियाँ, मनके, अवशेष मंजूषा आदि संरक्षित हैं । ये पुरावशेष तीसरी सदी ई० पू० से ५वीं सदी ईसवी के बीच के हैं । कौशाम्बी तथा पवाया से प्राप्त मृण्मूर्तियों तथा उत्कीर्ण ईंटों का भी एक महत्वपूर्ण संग्रह यहाँ संरक्षित है । इनके अतिरिक्त चोरपुरा (जिला शिवपुरी) से प्राप्त साँचे भी यहाँ के संग्रह में उल्लेखनीय हैं ।

(आ) अभिलेख—

इस संग्रहालय में क्षेत्रीय इतिहास से सम्बन्धित महत्वपूर्ण उत्कीर्ण लेख संरक्षित किये गये हैं । इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

क्रमांक	संग्रहालय क्रमांक	व्यक्ति अथवा राजा का नाम	वंश	तिथि	भाषा	शिला अथवा ताम्रलेख	प्राप्ति-स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)	(८)
१	१।१	गौतमीपुत्र		दूसरी शताब्दी ई० पू०	संस्कृत	स्तम्भ-लेख	बेसनगर
२	१।२	नरवर्मन्	परमार	मालव सम्वत् ४६१	संस्कृत	शिला-लेख	मन्दसौर

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)	(८)
३	१।३	कुमारगुप्त	गुप्त	गुप्त सम्वत् ११६	संस्कृत	शिलालेख	तुमेन
४	१।४	प्रभाकर		मालव सम्वत् ५२४	संस्कृत	शिलालेख	मन्दसौर
५	१।५	कुमारगुप्त	गुप्त	मालव सम्वत् ४९३	संस्कृत	शिलालेख	मन्दसौर
६	१।६	मिहिरभोज	प्रतिहार		संस्कृत	शिलालेख	सागरताल
७	१।७	कक्कुक (?)		वि० सं० १०३८	संस्कृत	शिलालेख	ग्वालियर
८	१।८	पतंगशम्भू (शैवाचार्य)			संस्कृत	शिलालेख	रणोद
९	१।९	(?)		वि० सं० १०८२	संस्कृत	नृसिंह मूर्ति-लेख	टोंगरा
१०	१।१०	महेन्द्रपाल		१०वीं सदी ईसवी	संस्कृत	शिलालेख	ग्यारसपुर
११	१।११	विक्रमसिंह	कच्छप-घात्	वि० सं० ११४५	संस्कृत	शिलालेख	दुबकुण्ड
१२	१।१२	नरवर्मन्	परमार	वि० सं० ११५१	संस्कृत	शिलालेख	अमेरा
१३	१।१४	आसल्लदेव	यज्वपाल		संस्कृत	शिलालेख	नरवर
१४	१।१५	गोपालदेव	वही	वि० सं० १३३६	संस्कृत	शिलालेख	वड़ौदी
१५	१।१६	गोपालदेव	वही	वि० सं० १३३९	संस्कृत	शिलालेख	कचेरी नरवरगढ़
१६	१।१७	(?)		सम्वत् १५५५	?	शिलालेख	?
१७	१।१८	भोवदेव		वि० सं० १५२७	संस्कृत	शिलालेख	नडेरी
१८	१।१९	हिरदेराम		वि० सं० १७५६	हिन्दी	शिलालेख	भेलसा
१९	१।२०	?	?	?	?	खण्डित शिलालेख	?
२०	१।२१	?		शुंगकालीन	?	शिलालेख	?
२१	२७।२२	?		?	संस्कृत	शिलालेख	?

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)	(८)
२२	२७।२३	?		?	फारसी	शिलालेख	नरवर
२३	२७।२४	पुलिन्द्र		वि०सं० १०६७	संस्कृत	शिलालेख	ग्यारसपुर
२४	२७। २५ए	?		?	संस्कृत	शिलालेख	ग्वालियर दुर्ग
२५	२७। २५बी	?		?	?	शिलालेख	ग्वालियर दुर्ग
२६	२७।२६	नृसिंह	शुल्की	?	संस्कृत	शिलालेख	मासेर
२७	२७।२७	अभयदेव (?)		वि०सं० ११२४	संस्कृत	शिलालेख	लखारी
२८	२७।२८	?		?	संस्कृत	शिलालेख	?
२९	२७।२९	?		?	संस्कृत	शिलालेख	?
३०	२७।३०	?		?	संस्कृत	शिलालेख	?
३१	२७। ३१-ए	उदयादित्य	परमार	?	संस्कृत	शिलालेख	उदयपुर
३२	२७ ३१-बी	उदयादित्य	परमार	?	संस्कृत	शिलालेख	उदयपुर
३३	२७।३२	?		वि० सं० १२२९	संस्कृत	शिलालेख	उदयपुर
३४	२७।३३	अधिगदेव		वि० सं० १३५०	संस्कृत	शिलालेख	सुरवाया
३५	२७।३४	?		?	संस्कृत	शिलालेख	बडोह
३६	२७।३५	गणपति	यज्यपाल	वि० सं० १३५५	संस्कृत	शिलालेख	नरवरगढ़
३७	२७।३६	?		?	फारसी	शिलालेख	?
३८	२७।३७	?		?	फारसी	शिलालेख	?
३९	२७।३८	अभयपाल	प्रतिहार	१२वीं सदी ईसवी	संस्कृत	शिलालेख	चन्देरी
४०	२७।३९	?		?	संस्कृत	शिलालेख	?
४१	२७।४०	?		?	संस्कृत	शिलालेख	?
४२	२७।४१	विक्रमदेव		वि० सं० १३३२	संस्कृत	शिलालेख	पढ़ावली
४३	२७।४२	?		वि० सं० १३४१	संस्कृत	शिलालेख	सुरवाया
४४	२७।४३	?		?	संस्कृत	शिलालेख	?
४५	२७।४४	जैतसिंह		वि० सं० १३४९	संस्कृत	शिलालेख	ग्वालियर
४६	२७।४५	?		वि० सं० १३२१	संस्कृत	शिलालेख	?
४७	२७।४६ ५९	?		?	फारसी	शिलालेख	?

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)	(८)
४८	२७।४७	?		?	फारसी	शिलालेख	?
४९	२७।४८	?		?	फारसी	शिलालेख	?
५०	२७।४९	?		?	फारसी	शिलालेख	?
५१	२७।५०	?		?	?	खण्डित शिलालेख	?
५२	२७।५१	?		?	?	खण्डित शिलालेख	?
५३	५२	?		?	संस्कृत	खण्डित शिलालेख	?
५४	५३	?		?	संस्कृत	खण्डित शिलालेख	?
५५	५४	?		?	संस्कृत	खण्डित शिलालेख	?
५६	५५	?		?	संस्कृत	खण्डित शिलालेख	?
५७	५६	?		?	संस्कृत	खण्डित शिलालेख	?
५८	५७	?		?	संस्कृत	खण्डित शिलालेख	?
५९	५८	?		?	संस्कृत	खण्डित शिलालेख	?
६०	५९	?		?	फारसी	शिलालेख	?
६१	६०	मलय-वर्मन	प्रतिहार	वि० सं० १२७७	संस्कृत	ताम्रलेख	कुरेठा
६२	६१	नरवर्मन्	प्रतिहार	वि० सं० १३०४	संस्कृत	ताम्रलेख	कुरेठा
६३	६२	?		?	?	ताम्रलेख	?
६४	६३	?		वि० सं० १७४०	?	ताम्रलेख	?
६५	६४	?		वि० सं० १७१७	?	ताम्रलेख	?
६६	६५	सुबन्धु (माहिष्मती के राजा)		५वीं सदी ईसवी	संस्कृत	ताम्रलेख	बाघगुहा

(इ) पाषाग प्रतिमाएँ—

इस संग्रहालय में जो पाषाण प्रतिमाएँ संरक्षित की गयी हैं, उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

क्रमांक	संग्रहालय का क्रमांक	प्रतिमा का विवरण	प्रतिमा का काल (ईसवी शताब्दी में)	प्रतिमा का प्राप्ति स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१	१	खण्डित स्तम्भ-शीर्ष का निम्न भाग	गुप्तकालीन	बेसनगर
२	२	स्तम्भ-शीर्ष	गुप्तकालीन	पवाया
३	३	गरुड स्तम्भ-शीर्ष	शुंगकालीन	बेसनगर
४	४	मकर स्तम्भ-शीर्ष	शुंगकालीन	बेसनगर
५	५	सिंह स्तम्भ-शीर्ष	५वीं	उदयगिरि
६	६	सिंह स्तम्भ-शीर्ष	५वीं	उदयगिरि
७	७	ताड़ स्तम्भ-शीर्ष	गुप्तकालीन	पवाया
८	८	ताड़ स्तम्भ-शीर्ष	शुंगकालीन	बेसनगर
९	९-ए	खण्डित स्तम्भ-शीर्ष	?	?
१०	९-बी	मकर स्तम्भ-शीर्ष	शुंगकालीन	बेसनगर
११	१०	खण्डित स्तम्भ-शीर्ष	शुंगकालीन	बेसनगर
१२	११	बौद्ध स्तूप की वेदिका (उत्कीर्ण)	दूसरी ई० पू०	बेसनगर
१३	१२	बौद्ध स्तूप की वेदिका के खण्ड	वही	वही
१४	१३	वही	वही	वही
१५	१४	वही	वही	वही
१६	१५	वही	वही	वही
१७	१६	वही	वही	वही
१८	१७	वही	वही	वही
१९	१८	वही	वही	वही
२०	१९	वही	वही	वही
२१	२०	यक्षिणी प्रतिमा का आवक्ष	वही	वही
२२	२१	यक्ष मणिभद्र (खड़े)	प्रथम	पवाया
२३	२२	मुख-लिंग	गुप्तकालीन	बेसनगर

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
२४	२३	बिष्णु प्रतिमा का धड़	वही	वही
२५	२४	कुबेर	वही	वही
२६	२५	मातृदेवी	वही	वहीं
२७	२६	वही	वही	वही
२८	२७	वही	वही	वही
२९	२८	वही	वही	वही
३०	२९	वही	वही	वही
३१	३०	वही	वही	वही
३२	३१	विष्णु (खड़े)	वही	वही
३३	३२	षष्ट-भुजी देवी	वही	वही
३४	३३	जैन तीर्थंकर	वही	वही
३५	३४	मुख-लिंग	वही	वही
३६	३५	नृसिंह	वही	वही
३७	३६	सिरदल	वही	पवाया
३८	३७	द्वारपाल	वही	मन्दसौर
३९	३८	एक युगल	वही	वही
४०	३९	योगिनी	वही	वही
४१	४०	स्त्री प्रतिमा	वही	वही
४२	४१	दो स्त्री प्रतिमा का पार्श्व खण्ड	वही	वही
४३	४२	मस्तक	वही	?
४४	४३	मस्तक	वही	मन्दसौर
४५	४४	नन्दी	वही	पवाया
४६	४५	नागराज	वही	वही
४७	४६	विष्णु	वही	वही
४८	४७	गंगा	वही	तुमेन
४९	४८	कुबेर	वही	वही
५०	४९	पार्वती	वही	वही
५१	५०	स्कन्द	वही	वही
५२	५१	शिव-पार्वती	वही	वही
५३	५३	शिव-पार्वती	वही	लश्कर
५४	५४	बुद्ध	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
५५	५५	विष्णु प्रतिमा का धड़	वही	वही
५६	५६	कुबेर	वही	तेरही
५७	५७	माता और शिशु	वही	बाघ
५८	५८	द्वारपाल	वही	मन्दसौर
५९	५९	मस्तक	वही	लाटू
६०	६०	बुद्ध	वही	कोटा
६१	६१	मस्तक	वही	वही
६२	६२	शिव	वही	वही
६३	६३	यम	वही	वही
६४	६४	स्कन्द	वही	वही
६५	६५	इन्द्राणी	वही	वही
६६	६६	काली	वही	वही
६७	६७	योगिनी	वही	वही
६८	६८	योगिनी	वही	वही
६९	६९	कौमारी	वही	वही
७०	७०	ब्रह्माणी	वही	वही
७१	७१	नागी	वही	वही
७२	७२	सूर्य	वही	घुसई
७३	७३	राहू-केतू	वही	वही
७४	७४	मत्स्यावतार	पूर्व-मध्य—कालीन	ग्यारसपुर
७५	७५	कूर्मावतार	वही	बडोह
७६	७६	वराह अवतार	वही	वही
७७	७७	कल्कि अवतार	वही	वही
७८	७८	शिव-उग्र रूप	वही	कोटा
७९	७९	माता और शिशु	वही	बडोह
८०	८०	अम्बिका	वही	ग्यारसपुर
८१	८१	शिव	वही	उज्जैन
८२	८२	गणेश	वही	घुसई
८३	८३	स्त्री	वही	वही
८४	८४	शिव प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
८५	८५	ब्रह्मा	वही	बेसनगर
८६	८६	चतुर्मुख लिंग	वही	बडोह

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
८७	८७	स्त्री	वही	ग्यारसपुर
८८	८८	चतुर्मुख विष्णु	वही	ग्यारसपुर
८९	८९	इन्द्र	वही	वही
९०	९०	नृसिंह	वही	वही
९१	९१	वामन	वही	वही
९२	९२	प्रभावली	वही	पढ़ावली
९३	९३	अष्टदिक्पाल	वही	बडोह
९४	९४	राम	वही	वही
९५	९५	बलराम	वही	पढ़ावली
९६	९६	कुबेर-रिद्धी	वही	वही
९७	९७	महिषासुरमर्दिनी	वही	चन्देरी
९८	९८	सिंहवाहिनी	वही	तेरही
९९	९९	कुबेर	वही	वही
१००	१००	लक्ष्मी-नारायण	वही	बडोह
१०१	१०१	चन्द्र का मुख	वही	भिलसा
१०२	१०२	शिव-पार्वती विवाह	वही	पढ़ावली
१०३	१०३	शिव-पार्वती विवाह	वही	वही
१०४	१०४	गन्धर्व	वही	लश्कर
१०५	१०५	विष्णु	वही	पढ़ावली
१०६	१०६	ब्रह्मा	वही	भिलसा
१०७	१०७	चतुर्मुख लिंग	वही	ग्यारसपुर
१०८	१०८	वराह	वही	बडोह
१०९	१०९	ब्रह्मा	मध्यकालीन	?
११०	११०	खण्डित प्रतिमा का निम्न भाग	मध्यकालीन	पढ़ावली
१११	१११	हनुमान प्रतिमा का मस्तक	वही	?
११२	११२	स्त्री	वही	?
११३	११३	हस्तियों का झुण्ड	वही	नरवर
११४	११४	जैन चौमुख	वही	ग्वालियर किला
११५	११५	जैन तीर्थंकर	वही	वही
११६	११६	वही	वही	वही
११७	११७	वही	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
११८	११८	वही	वही	वही
११९	११९	वही	वही	अहमदपुर
१२०	१२०	खण्डित प्रतिमा की चौकी (उत्कीर्ण)	वही	ग्वालियर किला
१२१	१२१	जैन तीर्थंकर	वही	पढ़ावली
१२२	१२२	वही	वही	वही
१२३	१२३	वही	वही	ग्वालियर किला
१२४	१२४	वही	वही	पढ़ावली
१२५	१२५	जैन तीर्थंकर चन्द्रप्रभ	वही	ग्वालिवर दुर्ग
१२६	१२६	जैन तीर्थंकर	वही	वही
१२७	१२७	जैन तीर्थंकर शान्तिनाथ	वही	पढ़ावली
१२८	१२८	जैन तीर्थंकर	वही	भिलसा
१२९	१२९	वही	वही	पढ़ावली
१३०	१३०	पार्श्वनाथ	वही	ग्वालियर दुर्ग
१३१	१३१	जैन चौमुख	वही	भिलसा
१३२	१३२	जैन तीर्थंकर	वही	वही
१३३	१३३	वही	वही	वही
१३४	१३४	विष्णु	वही	ग्वालियर दुर्ग
१३५	१३५	कूर्मावतार	वही	वही
१३६	१३६	वराह	वही	सुहानिया
१३७	१३७	नृसिंह	वही	पढ़ावली
१३८	१३८	वामन	वही	नरवर
१३९	१३९	त्रिविक्रम	वही	घुसई
१४०	१४०	राम-सीता	वही	सुहानिया
१४१	१४१	बलराम	वही	पढ़ावली
१४२	१४२	बुद्ध	वही	सुनारी
१४३	१४३	विष्णु-विश्वरूप	वही	सुहानिया
१४४	१४४	विष्णु-गरुड पर सवार	वही	भिलसा
१४५	१४५	विष्णु	वही	ग्वालियर दुर्ग
१४६	१४६	विष्णु-शेषाशायी	वही	वही
१४७	१४७	विष्णु	वही	पढ़ावली
१४८	१४८	वाराही	वही	बडोह
१४९	१४९	गरुड पर आसीन लक्ष्मी	वही	गंधावल

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१५०	१५०	हरिहर	वही	घुसई
१५१	१५१	विष्णु	वही	ग्वालियर दुर्ग
१५२	१५२	वामन	वही	नडेरी
१५३	१५४	नृसिंह	वही	सुहानिया
१५४	१५५	शिव	वही	ग्वालियर दुर्ग
१५५	१५६	शिव-पार्वती	वही	भिलसा
१५६	१५७	शिव-पार्वती	वही	बरहद
१५७	१५८	अर्धनारीश्वर	वही	पाली
१५८	१५९	मघाली	१३वीं	नरेसर
१५९	१६०	जम्या	वही	वही
१६०	१६१	निवउ	वही	वही
१६१	१६२	योगिनी	वही	वही
१६२	१६३	भयथवती	वही	वही
१६३	१६४	कमलासना	वही	सुहानिया
१६४	१६५	कौबेरी	वही	नरेसर
१६५	१६६	वैष्णवी	वही	वही
१६६	१६७	वियरा	वही	वही
१६७	१६८	विकनतंजा	वही	वही
१६८	१६९	वारुणी	वही	वही
१६९	१७०	इन्द्राणी	वही	वही
१७०	१७१	उमा	वही	वही
१७१	१७२	चरा	वही	वही
१७२	१७३	लक्ष्मी	वही	वही
१७३	१७४	कालो	वही	ग्वालियर दुर्ग
१७४	१७५	काली	वही	नरेसर
१७५	१७६	पार्वती	वही	वही
१७६	१७७	पार्वती	वही	सुहानिया
१७७	१७८	शिव	वही	ग्यारसपुर
१७८	१७९	शिव प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
१७९	१८०	शिव	वही	सुहानिया
१८०	१८१	शिव	वही	उदयपुर
१८१	१८२	शिव-पार्वती	वही	भिलसा
१८२	१८३	शिव	वही	सुहानिया
१८३	१८४	भैरव	वही	गुरिल का पहाड़

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१८४	१८५	शिव	वही	बरहद
१८५	१८६	गणेश	वही	पढ़ावली
१८६	१८७	गणेश	वही	वही
१८७	१८८	गणेश	वही	सुहानिया
१८८	१८९	गणेश	वही	वही
१८९	१९०	गणेश की शक्ति	वही	वही
१९०	१९१	गणेश	वही	ग्वालियर दुर्ग
१९१	१९२	गणेश-नृत्य	वही	सुहानिया
१९२	१९३	गणेश	वही	वही
१९३	१९४	गणेश और उसकी शक्ति	वही	उदयपुर
१९४	१९५	स्कन्द	वही	पढ़ावली
१९५	१९६	स्कन्द	वही	सुहानिया
१९६	१९७	स्कन्द	वही	पढ़ावली
१९७	१९८	स्कन्द	वही	सुहानिया
१९८	१९९	पिशाच युगल	वही	वही
१९९	२००	वादक	वही	बडोह
२००	२०१	नृत्य-गणेश	वही	अज्ञात
२०१	२०२	ब्रह्मा	वही	बाघ
२०२	२०३	ब्रह्मा	वही	वही
२०३	२०४	ब्रह्मा	वही	भिलसा
२०४	२०५	त्रिमूर्ति	वही	पढ़ावली
२०५	२०६	त्रिमूर्ति	वही	वही
२०६	२०७	सूर्य	वही	वही
२०७	२०८	सूर्य	वही	सुहानिया
२०८	२०९	सूर्य	वही	वही
२०९	२१०	वही	वही	पढ़ावली
२१०	२११	सरस्वती	वही	सुहानिया
२११	२१२	अग्नि	वही	वही
२१२	२१३	वही	वही	वही
२१३	२१४	वही	वही	वही
२१४	२१५	वही	वही	वही
२१५	२१६	वही	वही	कोटा

६०

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
२१६	२१७	इन्द्र	वही	सुहानिया।
२१७	२१८	ब्रह्माणी	वही	वही
२१८	२१९	ब्रह्मा	वही	थोबन
२१९	२२०	सूर्य-कमल	वही	पढ़ावली
२२०	२२१	नैरित यम	वही	सुहानिया
२२१	२२२	वही	वही	वही
२२२	२२३	वही	वही	वही
२२३	२२४	यम	वही	वही
२२४	२२५	वरुण-वायू	वही	वही
२२५	२२६	वही	वही	वही
२२६	२२७	वायू	वही	वही
२२७	२२८	कुबेर	वही	पढ़ावली
२२८	२२९	वही	वही	बडोह
२२९	२३०	गो-मुख यक्ष	वही	गन्धावल
२३०	२३१	हनुमान	वही	वही
२३१	२३२	साधु	वही	सुहानिया
२३२	२३३	साधु	वही	नरेसर
२३३	२३४	साधु	वही	सुहानिया
२३४	२३५	तपस्वी	वही	पढ़ावली
२३५	२३६	देवी	वही	सुहानिया
२३६	२३७	वही	वही	वही
२३७	२३९	स्त्री	वही	वही
२३८	२४०	वही	वही	वही
२३९	२४२	वही	वही	वही
२४०	२४३	वही	वही	मामोन
२४१	२४५	वही	वही	वही
२४२	२४६	वही	वही	बडोह
२४३	२४७	वही	वही	सुहानिया
२४४	२४८	वही	वही	वही
२४५	२४९	वही	वही	बडोह
२४६	२५०	वही	वही	वही
२४७	२५१	वही	वही	वही
२४८	२५२	वही	वही	सुहानिया

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
२४९	२५३	वही	वही	बडोह
२५०	२५४	वही	वही	सुहानिया
२५१	२५५	वही	वही	वही
२५२	२५६	वही	वही	वही
२५३	२५७	वही	वही	वही
२५४	२५८	सिंह	वही	सुहानिया
२५५	२५९	सिंह (उत्कीर्ण)	वही	वही
२५६	२६०	जैन-स्तम्भ, खण्डित	वही	वही
२५७	२६१	जैन चौमुख		
२५८	२६२	जैन चौमुख (उत्कीर्ण)		
२५९	२६३	वही		
२६०	२६४	वही		
२६१	२६५	वही		
२६२	२६६	कमल		
२६३	२६७	दो हस्ति		
२६४	२६८	सती-स्तम्भ		
२६५	२६९	सती-स्तम्भ (शंख लिपि में उत्तीर्ण लेख)		
२६६	२७०	वही (उत्कीर्ण)		
२६७	२७१	वही (उत्कीर्ण)		
२६८	२७२	वही (उत्कीर्ण)		
२६९	२७३	वही		
२७०	२७४	वही		
२७१	२७५	वही		
२७२	२७६	वही		
२७३	२७७	नाग		
२७४	२७८	मन्दिर के द्वार का पक्ष		
२७५	२७९	कमल		
२७६	२८०	सती-प्रस्तर		
२७७	२८१	अलंकृत प्रस्तर खण्ड		
२७८	२८२	अलंकृत मेहराब		
२७९	२८३	अलंकृत प्रस्तर		
२८०	२८४	अलंकृत वास्तु-खण्ड		
२८१	२८५	प्रस्तर पर उत्कीर्ण शिव-लिंग		

(१)	(२)	(३)
२८२	२८६	व्यालि तथा हस्ति
२८३	२८७	जैन साधु
२८४	२८८	पार्वती
२८५	२८९	शिव-पार्वती विवाह
२८६	२९०	उमा-महेश्वर
२८७	२९१	शिव
२८८	२९२	स्त्री
२८९	२९३	सिरदल
२९०	२९४	स्त्री-पुरुष
२९१	२९५	शिव (खड़े)
२९२	२९६	स्तम्भ-खण्ड
२९३	२९७	हस्ति का मस्तक
२९४	२९८	गन्धर्व
२९५	२९९	अलंकृत स्तम्भ
२९६	३००	फलका जिसके केन्द्र में कीर्तिमुख बना है
२९७	३०१	अलंकृत स्तम्भ-खण्ड
२९८	३०२	हस्ति का मस्तक
२९९	३०३	विष्णु (?)
३००	३०४	विष्णु खड़े
३०१	३०५	गरुड पर आरुढ़ लक्ष्मी
३०२	३०६	पार्श्वनाथ प्रतिमा का मस्तक
३०३	३०७	तीर्थंकर (खड़े)
३०४	३०८	तीर्थंकर-कायोत्सर्ग मुद्रा में
३०५	३०९	मनुष्य और व्यालि
३०६	३१०	पट्ट जिस पर अठारह तीर्थंकर प्रतिमाएँ बनी हैं
३०७	३११	द्वार-पक्ष का खण्ड
३०८	३१२	द्वार-पक्ष
३०९	३१३	द्वार-पक्ष का खण्ड
३१०	३१४	वही
३११	३१५	सिंह
३१२	३१६	वही
३१३	३१७	कमल
३१४	३१८	मन्दिर का लघु शिखर
३१५	३१९	अलंकृत स्तम्भ

(१)	(२)	(३)
३१६	३२०	वही
३१७	३२१	द्वार-स्तम्भ का खण्ड
३१८	३२२	वही
३१९	३२३	वही
३२०	३२४	वही
३२१	३२५	वही
३२२	३२६	वही
३२३	३२७	वही
३२४	३२८	स्मारक-स्तम्भ
३२५	३२९	स्तम्भ का आधार
३२६	३३०	वही
३२७	३३१	स्तम्भ-शीर्ष का खण्ड
३२८	३३२	अलंकृत स्तम्भ का खण्ड
३२९	३३३	वही
३३०	३३४	स्तम्भ-शीर्ष
३३१	३३५	वही
३३२	३३६	अलंकृत स्तम्भ का खण्ड
३३३	३३७	स्तम्भ का खण्ड
३३४	३३८	वास्तु खण्ड
३३५	३३९	खण्डित स्तम्भ
३३६	३४०	आम्लक
३३७	३४१	वही
३३८	३४२	अलंकृत स्तम्भ का खण्ड
३३९	३४३	स्तम्भ पर उत्कीर्ण चौबीस तीर्थंकर
३४०	३४४	आम्लक
३४१	३४५	स्त्री प्रतिमा का आवक्ष
३४२	३४६	ब्रह्मा
३४३	३४७	पुरुष प्रतिमा का मस्तक
३४४	३४८	स्त्री
३४५	३४९	शालभंजिका (?) का मस्तक
३४६	३५०	गणेश
३४७	३५१	पुरुष
३४८	३५२	ब्रह्मा (बैठे)
३४९	३५३	अलंकृत अर्ध-स्तम्भ

(१)	(२)	(३)
३५०	३५४	वही
३५१	३५५	अलंकृत-स्तम्भ
३५२	३५६	वही (खण्डित)
३५३	३५७	वही
३५४	३५८	वही
३५५	३६०	वास्तु-खण्ड
३५६	३६१	स्तम्भ-खण्ड
३५७	३६२	अलंकृत-स्तम्भ का खण्ड
३५८	३६३	वास्तु पट्ट
३५९	३६४	वही
३६०	३६५	वही
३६१	३६६	वही
३६२	३६७	वास्तु-खण्ड
३६३	३६८	वही
३६४	३६९	वही
३६५	३७०	वही
३६६	३७१	चक्रव्यूह
३६७	३७२	तीर्थंकर (बैठे)
३६८	३७३	वास्तु खण्ड
३६९	३७४	सिरदल
३७०	३७५	वास्तु-खण्ड
३७१	३७६	वही
३७२	३७७	अलंकृत-स्तम्भ
३७३	३७८	वही
३७४	३७९	स्मारक-स्तम्भ
३७५	३८०	वही
३७६	३८१	वही
३७७	३८२	अलंकृत-स्तम्भ
३७८	३८३	तीर्थंकर
३७९	३८४	तीर्थंकर प्रतिमा की चौकी
३८०	३८५	पट्ट पर उत्कीर्ण तीर्थंकर प्रतिमाएँ
३८१	३८६	वृक्ष के नीचे खड़े युगल
३८२	३८७	देवी प्रतिमा का आवक्ष
३८३	३८८	अलंकृत स्तम्भ का खण्ड

(१)	(२)	(३)
३८४	३८९	वास्तु-खण्ड
३८५	३९०	लघु स्त्री प्रतिमा का खण्ड
३८६	३९१	नन्दी पर बैठे लकुलीश
३८७	३९२	विष्णु (खड़े)
३८८	३९३	दो स्त्री प्रतिमाएँ (खड़ी)
३८९	३९४	वामन
३९०	३९५	बलराम
३९१	३९६	नरसिंह
३९२	३९७	वाराही
३९३	३९८	वास्तु-खण्ड
३९४	३९९	वही
३९५	४००	चतुर्भुजी देवी
३९६	४०१	पार्वती (खड़ी)
३९७	४०२	नैरित और यम
३९८	४०३	वास्तु-खण्ड पर उत्कीर्ण ब्रह्मा
३९९	४०४	शिव-पार्वती
४००	४०५	स्तम्भ-खण्ड
४०१	४०६	वही
४०२	४०७	त्रि-भंग मुद्रा में स्त्री
४०३	४०८	स्तम्भ-खण्ड
४०४	४०९	वही
४०५	४१०	व्याली तथा स्त्री
४०६	४११	सिंह
४०७	४१२	मनुष्य तथा शार्दूल
४०८	४१३	व्यालि और मनुष्य
४०९	४१४	स्त्री और दो व्यालि
४१०	४१५	मनुष्य तथा शार्दूल
४११	४१६	शार्दूल
४१२	४१७	शार्दूल तथा कीर्तिमुख
४१३	४१८	वही
४१४	४१९	कमलासन प्रतिमा (खण्डित)
४१५	४२०	द्वार का सिरदल
४१६	४२१	वादकों की कतार
४१७	४२२	यज्ञोपवीत सहित पुरुष प्रतिमा

(१)	(२)	(३)
४१८	४२३	पुरुष
४१९	४२४	शार्दूल
४२०	४२५	लघु मन्दिर
४२१	४२६	शंख
४२२	४२७	त्रिशूल
४२३	४२८	स्तम्भ-खण्ड
४२४	४२९	वही
४२५	४३०	स्त्री प्रतिमा का आवक्ष
४२६	४३१	आले में खड़े चतुर्भुज विष्णु
४२७	४३२	प्रतिमा का धड़
४२८	४३३	चतुर्भुज देव (खड़े)
४२९	४३४	प्रतिमा के पैर
४३०	४३५	वास्तु-खण्ड
४३१	४३६	प्रतिमा का खण्ड
४३२	४३७	ब्रह्मा के प्रतिमा का धड़
४३३	४३८	पुजारी युगल
४३४	४३९	प्रतिमा का धड़
४३५	४४०	चतुर्भुज देव
४३६	४४१	अलंकृत स्तम्भ
४३७	४४२	वही
४३८	४४३	सिरदल का खण्ड
४३९	४४४	शिकार का दृश्य
४४०	४४५	स्तम्भ का खण्ड
४४१	४४६	स्त्री (खड़ी)
४४२	४४७	वही
४४३	४४८	स्तम्भ का खण्ड
४४४	४४९	लघु मन्दिर
४४५	४५०	वही
४४६	४५१	ताड़-फलों का खण्ड
४४७	४५२	ताड़ स्तम्भ-शीर्ष का खण्ड
४४८	४५३	चैत्य-खिड़की का अभिप्राय
४४९	४५४	आले में बैठे चतुर्भुज देव
४५०	४५५	त्रि-भंग मुद्रा में विष्णु
४५१	४५६	द्विभुज देव प्रतिमा

(१)	(२)	(३)
४५२	४५७	विष्णु (खड़े)
४५३	४५८	पद्मासन में बैठी प्रतिमा
४५४	४५९	तीर्थंकर (खड़े)
४५५	४६०	प्रतिमा का आधार (उत्कीर्ण)
४५६	४६१	वास्तुखण्ड
४५७	४६२	तीर्थंकर
४५८	४६३	देवी प्रतिमा का निम्न भाग
४५९	४६४	प्रतिमा के आधार का खण्ड (उत्कीर्ण)
४६०	४६५	पट्ठ पर उत्कीर्ण पाँच देव प्रतिमाएँ
४६१	४६६	खण्डित ब्रह्मा
४६२	४६७	स्तम्भ खण्ड
४६३	४६८	चक्की
४६४	४६९	देवी कालिका प्रतिमा की चौकी (उत्कीर्ण)
४६५	४७०	गरुड पर बैठे विष्णु
४६६	४७१	साधु और गन्धर्व
४६७	४७२	देव (खड़े)
४६८	४७३	देव (ललितासन में बैठे)
४६९	४७४	वास्तुखण्ड
४७०	४७५	आले में बैठे पार्श्वनाथ
४७१	४७६	शिव प्रतिमा का निम्न भाग
४७२	४७७	पुजारी (खण्डित)
४७३	४७८	तीर्थंकर (बैठे)
४७४	४७९	राम-सीता इत्यादि
४७५	४८०	चैत्य-खिड़की अभिप्राय
४७६	४८१	स्तम्भ
४७७	४८२	नन्दी (बैठे)
४७८	४८३	अशोक वृक्ष का खण्ड
४७९	४७४	वही
४८०	४८५	वास्तुखण्ड
४८१	४८६	आले में बैठे नरसिंह
४८२	४८७	युद्ध का दृश्य
४८३	४८८	शिकार का दृश्य
४८४	४८९	प्रतिमा की चौकी

(१)	(२)	(३)
४८५	४९०	वास्तुखण्ड
४८६	४९१	कूर्मावतार
४८७	४९२	सिंह स्तम्भ-शीर्ष का खण्ड
४८८	४९३	युद्ध का दृश्य
४८९	४९४	स्त्री प्रतिमा का मस्तक
४९०	४९५	वही
४९१	४९६	प्रतिमा का मस्तक
४९२	४९७	बैल का मस्तक
४९३	४९८	पुरुष प्रतिमा का मस्तक
४९४	४९९	प्रतिमा का मस्तक
४९५	५००	स्त्री प्रतिमा का मस्तक
४९६	५०१	प्रतिमा का मस्तक
४९७	५०२	स्त्री प्रतिमा का मस्तक
४९८	५०३	वही
४९९	५०४	वही
५००	५०५	वही
५०१	५०६	पुरुष प्रतिमा का आवक्ष
५०२	५०७	सिंह का मस्तक
५०३	५०८	गन्धर्व
५०४	५०९	स्त्री प्रतिमा का आवक्ष
५०५	५१०	स्त्री
५०६	५११	स्त्री प्रतिमा का आवक्ष
५०७	५१२	पुरुष
५०८	५१३	पुरुष प्रतिमा का मस्तक
५०९	५१४	प्रतिमा का मस्तक
५१०	५१५	स्त्री प्रतिमा का मस्तक
५११	५१६	स्त्री प्रतिमा का मस्तक
५१२	५१७	कंकाल का मस्तक
५१३	५१८	प्रतिमा का मस्तक
५१४	५१९	वही
५१५	५२०	वही
५१६	५२१	वही
५१७	५२२	वही
५१८	५२३	अलंकृत हस्त

(१)	(२)	(३)
५१९	५२४	प्रतिमा का मस्तक
५२०	५२५	वही
५२१	५२६	वही
५२२	५२७	वही
५२३	५२८	वही
५२४	५२९	वही
५२५	५३०	वही
५२६	५३१	वही
५२७	५३२	वही
५२८	५३३	वही
५२९	५३४	वही
५३०	५३५	सिंह का मस्तक
५३१	५३६	स्त्री प्रतिमा का मस्तक
५३२	५३७	वही
५३३	५३८	वही
५३४	५३९	वही
५३५	५४०	वही
५३६	५४१	वही
५३७	५४२	वही
५३८	५४३	वही
५३९	५४४	वही
५४०	५४५	वही
५४१	५४६	वही
५४२	५४७	वही
५४३	५४८	वही
५४४	५४९	वही
५४५	५५०	वही
५४६	५५१	स्त्री प्रतिमा का आवक्ष
५४७	५५२	ब्रह्मा का आवक्ष
५४८	५५३	सूर्य (बैठे)
५४९	५५४	बन्दर
५५०	५५५	हस्त में शंख
५५१	५५६	गन्धर्व

(१)	(२)	(३)
५५२	५५७	शंख
५५३	५५८	विष्णु
५५४-५६३	५५९-५६८	मस्तक
५६४	५६९	मनुष्य
५६५	५७०	विष्णु प्रतिमा का खण्ड
५६६	५७१	खण्डित पुरुष प्रतिमा
५६७	५७२	सिरदल
५६८	५७३	स्त्री प्रतिमा का आवक्ष
५६९	५७४	महिषासुरमर्दिनी
५७०	५७५	चैत्य खिड़की में सिंह-मुख
५७१	५७६	जैन पट्ट का खण्ड
५७२	५७७	लघु पट्ट
५७३	५७८	वास्तुखण्ड
५७४	५७९	पुजारी
५७५	५८०	पुरुष प्रतिमा का आवक्ष
५७६	५८१	दो लघु जिन प्रतिमाएँ
५७७	५८२	पुरुष प्रतिमा का मस्तक
५७८	५८३	वही
५७९	५८४	ब्रह्मा (खड़े)
५८०	५८५	गणेश (खड़े)
५८१	५८६	बुद्ध
५८२	५८९	सिंह का मस्तक
५८३	५९०	ब्रह्मा (खड़े)
५८४	५९१	अलंकृत पद्म का खण्ड
५८५	५९२	प्रतिमा का धड़
५८६	५९३	कृष्ण
५८७	५९४	वही
५८८	५९५	देवी (दो खण्डों में)
५८९	५९६	सीता
५९०	५९७	राम
५९१	५९८	त्रिभंग मुद्रा में कृष्ण
५९२	५९९	राधा
५९३	६००	शंख

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
५९४	६०१	नन्दी		
५९५	६०२	पत्र		पवाया
५९६	६०३	घोड़ा (?)		वही
५९७	६०४	सिंह का मस्तक		
५९८	६०६	तीर्थंकर प्रतिमा		
५९९	६०७	वादक		
६००	६०८	काली का मस्तक		
६०१	६०९	विष्णु प्रतिमा का मस्तक		
६०२	६१०	सिंह का मस्तक		
६०३	६११	गरुड		
६०४	६१२	स्त्री प्रतिमा का धड़		
६०५	६१३	स्त्री प्रतिमा का धड़		
६०६	६१४	वादक		
६०७	६१५	तीर्थंकर प्रतिमा की चौकी		नरवर
६०८	६१६	द्वार-पक्ष का खण्ड		
६०९	६१७	प्रतिमा का धड़		
६१०	६१८	प्रतिमा का मस्तक		
६११	६१९	वही		
६१२-६२१	६२०-६२९	वही		
६२२	६३०	नन्दी का मस्तक		
६२३	६३१	पुरुष प्रतिमा का मस्तक		
६२४	६३२	योद्धा		
६२५-६२८	६३३-६३६	प्रतिमा का धड़		
६२९	६३७	ब्रह्मा (बैठे)		
६३०	६३८	पुरुष प्रतिमा		
६३१	६३९	प्रतिमा की चौकी का खण्ड		
६३२	६४०	मस्तक रहित देवी		
६३३	६४१	प्रतिमा का ऊपरी भाग		
६३४	६४३	हस्ति का अलंकृत मुख		
६३५-६३८	६४४-६४७	हस्त		
६३९-६४०	६४८-६४९	प्रतिमा का मस्तक		
६४१	६५०	स्त्री प्रतिमा का आवक्ष		
६४२	६५१	विष्णु प्रतिमा का खण्डित हस्त		

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
६४३	६५२	अलंकृत वास्तु खण्ड		
६४४	६५३	वास्तुखण्ड		पवाया
६४५	६५४	महिषासुरमर्दिनी प्रतिमा खण्ड		वही
६४६	६५६	प्रतिमा का खण्ड		वही
६४७	६५८	प्रतिमा का धड़		वही
६४८-५२	६५९-६६३	प्रतिमा का मस्तक		
६५३	६६४	यन्त्र का खण्ड		पवाया
६५४-५५	६६५-६६	प्रतिमा का चेहरा		वही
६५६	६६७	स्त्री प्रतिमा का खण्ड		
६५७-६०	६६८-७१	प्रतिमा का मस्तक		
६६१	६७२	बलराम		
६६२	६७३	प्रतिमा का मस्तक		
६६३	६७४	स्वर्गीय ग्वालियर महाराज की संगमरमर की प्रतिमा का आवक्ष		
६६४	६७५	हनुमान		
६६५	६७६	शिव-पार्वती		
६६६	६७७	नन्दी		
६६७	६७८	गणेश (खण्डित)		
६६८	६७९	स्त्री प्रतिमा का चेहरा		
६६९	६८०	स्त्री (खण्डित)		
६७०	६८१	वही		
६७१	६८२	देवी (तीन खण्डों में)		
६७२	६८३	जैन तीर्थंकर		
६७३	६८४	विष्णु		
६७४	६८५	चँवरधारिणी		
६७५	६८६	स्तम्भ का आधार खण्ड		
६७६	६८७	स्तम्भ का ऊर्ध्वं खण्ड		
६७७	६८८	स्तम्भ का खण्ड		
६७८-८१	६८९-९२	प्रतिमा का सिर		

(ई) धातु प्रतिमाएं

इस संग्रहालय में ६१ धातु प्रतिमाओं का महत्त्वपूर्ण संग्रह है जो बुद्ध, वोधिसत्व तथा अन्य हिन्दू देवताओं से सम्बन्धित हैं।

(उ) सिक्के

इस संग्रहालय में लगभग ४२ हजार से भी अधिक सिक्कों का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण

संग्रह संरक्षित है। अभी तक इस संग्रह का वर्गीकरण न होने के कारण वांछित जानकारी उपलब्ध नहीं है।

२४४८. शासकीय केन्द्रीय संग्रहालय—इन्दौर

शासकीय केन्द्रीय संग्रहालय, इन्दौर में मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व सम्बन्धी निम्नलिखित सामग्री संग्रहीत की गयी है—

(क) उत्खननों से प्राप्त पुरावशेष

(१) कसरावद उत्खनन

पश्चिम निमाड़ जिले में स्थित कसरावद नामक स्थान पर १९३६-३९ में उत्खनन किया गया। उत्खनन में जो भी महत्त्वपूर्ण पुरावशेष प्राप्त हुए उन सभी को इस संग्रहालय में सुरक्षित रखा गया है।

(देखिये 'कसरावद उत्खनन', अध्याय ७।)

(२) मोहेनजोदड़ो उत्खनन

पश्चिम पाकिस्तान के सिन्ध जिले में स्थित मोहेनजोदड़ो नामक स्थान पर किये गये उत्खनन में सिन्धु-घाटी की सभ्यता के महत्वपूर्ण पुरावशेष प्राप्त हुए थे। केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा इन पुरावशेषों के कुछ नमूने इस संग्रहालय में प्रदर्शित करने हेतु भेजे गये थे। इन पुरावशेषों में मिट्टी के खिलौने, चूड़ियाँ, मातृदेवी की प्रतिमाएँ, पशु-देवता, चित्रित भाण्ड आदि शामिल हैं। साथ ही तौलने के बाँट, तकलियाँ आदि भी हैं। इन सबको इस संग्रहालय में संरक्षित किया गया है।

(३) पहाड़पुर उत्खनन

बंगाल में स्थित पहाड़पुर नामक स्थान पर महत्त्वपूर्ण उत्खनन कार्य किया गया था। यहाँ के उत्खनन में प्राप्त कुछ महत्त्वपूर्ण पुरावशेष, विशेष रूप से मृण्मूर्तियाँ इस संग्रहालय में संरक्षित की गयीं हैं।

(४) कौशाम्बी उत्खनन

इलाहाबाद के निकट स्थित कौशाम्बी में इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा महत्वपूर्ण उत्खनन कार्य किया गया। यहाँ के उत्खनन में प्राप्त मृद्भाण्डो के टुकड़े तथा कुछ अन्य पुरावशेष इस संग्रहालय में संरक्षित किये गये हैं।

(ख) अभिलेख

इस संग्रहालय में कुछ महत्वपूर्ण अभिलेख भी संरक्षित हैं, जिनकी संक्षिप्त सूची इस प्रकार है—

क्रमांक	राज्य एवं वंश	शिला अथवा ताम्र लेख	तिथि	प्राप्ति स्थान
१.	अज्ञात	शिलालेख	प्रथम अथवा दूसरी शताब्दी ई० पू०	कसरावद
२.	राष्ट्रकूट णण्णप्प	शिलालेख	मालव सम्वत् ७६७	इन्द्रग
३.	पावड़ा जातीय कुमारियों का लेख	शिलालेख	८वीं-९वीं शताब्दी ई०	इन्द्रगढ़
४.	परमार देवपाल देव (?)	शिलालेख	सम्वत् १२८२	ओखला
५.	परमार जयवर्मन् द्वितीय	शिलालेख	वि० सं० १३१४	मोड़ी
६.	अज्ञात छतरसिंह (?)	शिलालेख	वि० सं० १४८५	डकाचा
७.	परमार महाराज भोज	ताम्रपत्र	वि० सं० १०७६	बेटमा
८.	परमार श्री भोजराजदेव	ताम्रपत्र	वि० सं० १०७९	देपालपुर

(ग) पाषाण-प्रतिमाएं

इस संग्रहालय में पाषाण प्रतिमाओं तथा शिल्पावशेषों का महत्वपूर्ण संग्रह है जिसकी संक्षिप्त सूची नीचे लिखे अनुसार है—

क्रमांक	प्रतिमा का विवरण	प्रतिमा का काल (ई० शताब्दी में)	प्रतिमा का प्राप्ति-स्थान
१.	मध्यकालीन शिव-मन्दिर का दरवाजा, जिस पर उत्कृष्ट खुदाई का काम किया है	?	चन्दवासा
२.	ब्रह्मा	१०वीं-११वीं	करेडी (उज्जैन)
३.	क्षेत्रपाल (भैरव)	११वीं-१२वीं	मोड़ी (मन्दसौर)
४.	भैरव	१०वीं	काटकूट (खरगोन)
५.	हरगौरी	८वीं-९वीं	भानपुरा (मन्दसौर)
६.	शिव-पार्वती	?	पुरा-गिलाना
७.	देवी पार्वती	?	नेमावर (देवास)
८.	भैरव	?	देपालपुर (इन्दौर)
९.	विशालकाय हनुमान प्रतिमा का आवक्ष	१०वीं-११वीं	मोड़ी
१०.	शिव	८वीं-९वीं	भानपुरा (मन्दसौर)
११.	लक्ष्मी-नारायण	११वीं	बुंजरी(मन्दसौर)
१२.	महाभैरव	१०वीं-११वीं	मोड़ी (मन्दसौर)
१३.	विष्णु का माधव रूप	१०वीं-११वीं	कुकड़ेश्वर (मन्दसौर)
१४.	सूर्य	११वीं-१२वीं	झाडोल

(१)	(२)	(३)	(४)
१५.	उमा-महेश्वर	८वीं-९वीं	आवरा (मन्दसौर)
१६.	सावित्री	१०वीं-११वीं	भानपुरा (मन्दसौर)
१७.	वीणाधर शिव	११वीं	नेमावर (देवास)
१८.	शिव-पार्वती (सपरिवार)	?	मालाहेड़ा (मन्दसौर)
१९.	उमा-महेश्वर	८वीं	भानपुरा (मन्दसौर)
२०.	शेषशायी विष्णु		मालाहेड़ा (मन्दसौर)
२१.	सूर्य-नारायण	११वीं-१२वीं	मोड़ी (मन्दसौर)
२२.	उमा-महेश्वर	११वीं-१२वीं	भानपुरा (मन्दसौर)
२३.	यम	?	करेडी
२४.	विष्णु का त्रिविक्रम रूप	१०वीं-११वीं	भानपुरा
२५.	चतुर्मुख ब्रह्मा	?	मोड़ी
२६.	नन्दी	१७वीं-१८वीं	मालाहेड़ा
२७.	वराह अवतार	?	बुंजर
२८.	तीर्थंकर-प्रतिमा का मस्तक	१२वीं-१३वीं	मोड़ी
२९.	कौशिकी	१०वीं-११वीं	इन्दोख (उज्जैन)
३०.	विष्णु का त्रिविक्रम रूप	१३वीं	चटवाड़ (देवास)
३१.	शान्तिनाथ (प्रतिमा की चौकी पर सम्वत् १२४२ का लेख उत्कीर्ण है)	सम्वत् १२४२	ऊन (पश्चिम निमाड़)
३२.	तीर्थंकर (काले ग्रेनाइट की वनी चिकनी मूर्ति)	११वीं-१२वीं	काटकूट
३३.	आदिनाथ	१२वीं-१३वीं	ऊन
३४.	नेमिनाथ	१३वीं	करेडी (उज्जैन)
३५.	मनोवेगा	११वीं-१२वीं	मोड़ी
३६.	द्वार-खण्ड	१०वीं-११वीं	इन्दौर
३७.	श्रीयंशनाथ	१२वीं	ऊन
३८.	गोमेध और अम्बिका	१२वीं-१३वीं	ऊन
३९.	तीर्थंकर	११वीं-१२वीं	विजवाड़ (देवास)
४०.	विष्णु योगासन	११वीं	नेमावर
४१.	श्री गणेश (संगमरमर की प्रतिमा)	?	करेड़ी
४२.	ब्रह्मा	?	?
४३.	नन्दी	?	?

(१)	(२)	(३)	(४)
४४	शिव	?	?
४५.	खण्डित जिन-प्रतिमा	?	?
४६.	शेषशायी विष्णु	?	?
४७.	खण्डित यज्ञवराह	?	?
४८.	मन्दिर के सिरदल का खण्ड	?	?
४९.	खण्डित प्रतिमाओं के मस्तक	?	?
५०.	योगिश्वर शिव	१२वीं	बिजवाड़ (देवास)
५१.	गणेश	?	काटकूट
५२.	नृत्य-गणपति	?	मानपुर (इन्दौर)
५३	पार्वती	१२वीं	ऊन
५४.	चामुण्डा	?	?
५५.	कात्यायिनी	?	?
५६.	महिषासुरमर्दिनी	?	?
५७.	कामधेनु	?	?
५८.	सप्तमातृका	?	?
५९.	सरस्वती	?	?
६०.	यम	?	?
६१.	कुबेर	?	?
६२.	विशालकाय विष्णु प्रतिमा	१२वीं	ऊन
६३.	रथारूढ़ सूर्य	?	देपालपुर (इन्दौर)
६४.	बुद्ध की प्रतिमा	?	बोधगया से प्राप्त
६५.	अन्य खण्डित प्रतिमाएँ	?	?

(घ) धातु प्रतिमाएँ

इस संग्रहालय में लगभग ४१ धातु-प्रतिमाएँ संरक्षित हैं, जिनमें जैन श्रुतदेवी की प्रतिमा सबसे महत्त्वपूर्ण है ।

(ङ) सिक्के

इस संग्रहालय में लगभग तीन हजार सिक्कों का एक महत्वपूर्ण संग्रह संरक्षित है। इन सिक्कों को प्राचीन, मध्यकालीन, आधुनिक तथा विदेशी सिक्कों के मुख्य प्रकारों में बाँटा जा सकता है। प्राचीन सिक्कों के प्रकार निम्नलिखित हैं—

१. आहत

२. ढले, उज्जयिनी चिह्नांकित

३. सातवाहन

४. हिन्द-यूनानी
५. कुषाण
६. पश्चिम क्षत्रप
७. नाग
८. गुप्त
९. हर्ष
१०. हिन्द-सासानी
११. कलचुरि
१२. ओहिन्द के सामन्तदेव
१३. गोविन्दचन्द्र गहड़वाल
१४. विजयनगर
१५. रामटंकी

२४४९. महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय—रायपुर

महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय, रायपुर में मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व सम्बन्धी महत्व-पूर्ण सामग्री संरक्षित है, जिसकी संक्षिप्त सूची नीचे लिखे अनुसार है --

(अ) प्रागैतिहासिक वस्तुएँ—

संग्रहालय में पूर्व तथा उत्तर पाषाण युगीन तथा ताम्रयुगीन औज़ार संरक्षित किये गये हैं। पूर्व-पाषाणयुगीन औज़ार चम्बल की सहायक अन्सर के किनारे भानपुरा के निकटवर्ती स्थानों से प्राप्त किये गये। थोड़े से औज़ार रेतम के भी हैं। इन औज़ारों में हस्तकुठार, खुरचनी आदि शामिल हैं। उत्तर-पाषाण युगीन औज़ारों में आवरा, पसेवा, शंखोद्धर, बिलोली, बोरखण्डी, संजीत, खड़ावड़ा आदि स्थानों से प्राप्त लघुपाषाणास्त्र शामिल हैं। ताम्रयुगीन औज़ारों में जो औज़ार इस संग्रहालय में संरक्षित हैं, वे १८७० ई० में बालाघाट जिले के गुंगेरिया नामक स्थान से अनायास प्राप्त उस बड़े दफीने में से कुछ हैं जिनमें कुल मिलाकर ४२४ ताँबे के औज़ार तथा १०२ चाँदी के आभूषण मिले थे। इन औज़ारों में कुछ चपटे सब्बल के आकार के हैं, कुछ विभिन्न प्रकार की बेंट तथा बिना बेंट वाली कुल्हाड़ियाँ हैं और एक कुल्हाड़ी ऐसी है जिसका आकार फरसी जैसा है।

इस सामग्री के अतिरिक्त महापाषाषयुगीन वृत्ताकार शवस्थान सम्बन्धी कुछ सामग्री भी इस संग्रहालय में संरक्षित है। रायपुर जिले में धमतरी के निकट धनोरा नामक स्थान पर महापाषाणयुगीन लगभग ५०० वृत्ताकार शवस्थान विद्यमान हैं। इनमें से कुछेक शवस्थानों का उत्खनन करने पर हड्डियों के टुकड़े, मनके, काँच

की चूड़ियों के टुकड़े और ताँबे के एक पात्र के खण्डित भाग प्राप्त हुए। ये संग्रहालय में संरक्षित हैं।

(आ) उत्खननों में प्राप्त पुरावशेष

चम्बल घाटी के पसेवा आदि कुछ स्थानों पर महत्वपूर्ण उत्खनन किये गये। इन उत्खननों में प्राप्त मृद्माण्ड, मृण्यमूर्तियाँ आदि कुछ पुरावशेष इस संग्रहालय में संरक्षित हैं। विस्तृत विवरण के लिए अध्याय ७ का अवलोकन करें।

धनोरा में किये गये महापाषाणयुगीन स्मारकों के उत्खनन में जो पुरावशेष प्राप्त हुए, वे भी इस संग्रहालय में संरक्षित हैं। विस्तृत विवरण के लिये अध्याय ७ देखें।

सिरपुर के उत्खनन में जो पुरावशेष प्राप्त हुए उनके कुछ भाग को भी इस संग्रहालय में संरक्षित किया गया है, विस्तृत विवरण के लिए अध्याय ७ का अवलोकन करें।

(इ) अभिलेख

इस संग्रहालय में क्षेत्रीय इतिहास से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण उत्कीर्ण लेख संरक्षित किये गये हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

क्रमांक	व्यक्ति अथवा राजा का नाम	राजवंश	तिथि	भाषा	सामग्री जिस पर लेख उत्कीर्ण है	प्राप्ति स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)
१.	अज्ञात	अज्ञात	दूसरी शताब्दी ईसवी	प्राकृत	काष्ट-स्तम्भ	किरारी (बिलासपुर)
२.	अज्ञात	अज्ञात	चौथी शताब्दी ईसवी	संस्कृत	शिला	आरंग (रायपुर)
३.	नरेन्द्र	शरभपुरीय	५वीं शताब्दी ईसवी	संस्कृत	ताम्रपत्र	कुरुद (रायपुर)
४.	जयराज	शरभपुरीय	५वाँ राज्य वर्ष	संस्कृत	ताम्रपत्र	आरंग (रायपुर)
५.	सुदेवराज	शरभपुरीय	राज्य वर्ष २	संस्कृत	ताम्रपत्र	खरियार (रायपुर)
६.	सुदेवराज	शरभपुरीय	राज्य वर्ष ८	संस्कृत	ताम्रपत्र	आरंग (रायपुर)
७.	प्रवरराज	शरभपुरीय	राज्य वर्ष ३	संस्कृत	ताम्रपत्र	मल्लार (बिलासपुर)
८.	भवदेव रणकेसरी	पांडुवंशी	६वीं शताब्दी ईसवी	संस्कृत	शिला	भांदक
९.	राजमाता वासटा	पांडुवंशी	६वीं शताब्दी ईसवी	संस्कृत	शिला	सिरपुर (रायपुर)

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)
१०.	महाशिवगुप्त (बालार्जुन)	पांडुवंशी	६वीं शताब्दी ईसवी	संस्कृत	ताम्रपत्र	मल्लार (बिलासपुर)
११.	महाभवगुप्त जनमेजय	सोमवंशी	राज्य वर्ष ८	संस्कृत	ताम्रपत्र	अज्ञात
१२.	महाभवगुप्त द्वितीय	सोमवंशी	राज्य वर्ष १३	संस्कृत	ताम्रपत्र	कुडोपाली
१३.	लक्ष्मणराज द्वितीय	त्रिपुरी के कलचुरि		संस्कृत	शिला	कारीतलाई (जबलपुर)
१४.	पृथ्वीदेव प्रथम	रत्नपुर के कलचुरि	(कलचुरि) सम्वत् ८३१	संस्कृत	ताम्रपत्र	अमोदा (बिलासपुर)
१५.	जाजल्लदेव प्रथम	रत्नपुर के कलचुरि	(कलचुरि) सम्वत् ८६६	संस्कृत	शिला	रत्नपुर (बिलासपुर)
१६.	पृथ्वीदेव द्वितीय	रत्नपुर के कलचुरि		संस्कृत	शिला	कोटगढ़
१७.	पृथ्वीदेव द्वितीय	रत्नपुर के कलचुरि	(कलचुरि) सम्वत् ८९०	संस्कृत	ताम्रपत्र	डैकोनी (बिलासपुर)
१८.	पृथ्वीदेव द्वितीय	रत्नपुर के कलचृरि	(कलचुरि) सम्वत् ८९६	संस्कृत	ताम्रपत्र	बिलैगढ़ (रायपुर)
१९.	पृथ्वीदेव द्वितीय	रत्नपुर के कलचुरि	कलचुरि सम्वत् १००० (९००)	संस्कृत	ताम्रपत्र	घोटिया (रायपुर)
२०.	गोपालदेव	रत्नपुर के कलचुरि	१२वीं शताब्दी ईसवी	संस्कृत	शिला	पुजारीपाली (रायगढ़)
२१.	पृथ्वीदेव द्वितीय	रतनपुर के कलचुरि	(विक्रम) सम्वत् १२०७	संस्कृत	शिला	रतनपुर
२२.	पृथ्वीदेव द्वितीय	रतनपुर के कलचुरि	(कलचुरि) सम्वत् ९०५	संस्कृत	ताम्रपत्र	अमोदा (बिलासपुर)
२३.	पृथ्वीदेव द्वितीय	रतनपुर के कलचुरि	(कलचुरि) सम्वत् ९१०	संस्कृत	शिला	रतनपुर
२४.	पृथ्वीदेव द्वितीय	रतनपुर के कलचुरि	(कलचुरि) सम्वत् ९१५	संस्कृत	शिला	रतनपुर
२५.	जाजल्लदेव द्वितीय	रतनपुर के कलचुरि	(कलचुरि) सम्वत् ९१९	संस्कृत	शिला	मल्लार
२६.	जाजल्लदेव द्वितीय	रतनपुर के कलचुरि	(कलचुरि) सम्वत ९१ (९)	संस्कृत	ताम्रपत्र	अमोदा

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)
२७.	प्रतापमल्ल	रतनपुर के कलचुरि	(कलचुरि) सम्वत् ६६६	संस्कृत	ताम्रपत्र	बिलैगढ़ (रायपुर)
२८.	वाहर	रतनपुर के कलचुरि	१५वीं-१६वीं शताब्दी ईसवी	संस्कृत	शिला	कोसगईं (बिलासपुर)
२९.	वाहर	रतनपुर के कलचुरि	(विक्रम) सम्वत् १५७०	संस्कृत	शिला	कोसगईं
३०.	ब्रह्मदेव	रायपुर के कलचुरि	(विक्रम) सम्वत् १४५८	संस्कृत	शिला	खलारी
३१.	(हरि) ब्रह्मदेव	रायपुर के कलचुरि	(विक्रम) सम्वत् १४७०	संस्कृत	शिला	खलारी (रायपुर)
३२.	भानुदेव	काकरय के सोमवंशी	(शक) सम्वत् १२४२	संस्कृत	शिला	कांकेर
३३.	अज्ञात	अज्ञात	६वीं शताब्दी ईसवी	संस्कृत	शिला	सिरपुर (गंधेश्वर मन्दिर से प्राप्त)
३४.	अज्ञात	अज्ञात	६वीं शताब्दी ईसवी	संस्कृत	शिला	सिरपुर सुरङ्ग टीले से प्राप्त
३५.	बुद्धघोष	बौद्ध आचार्य	७वीं-८वीं शताब्दी ईसवी	संस्कृत	शिला	सिरपुर
३६.	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	संस्कृत	शिला	तरेंगा (रायपुर)
३७.	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	शिला (अत्यन्त घिसा लेख)	सिरपुर
३८.	अज्ञात	अज्ञात	७वीं शताब्दी ईसवी	अज्ञात	शिला	पाण्डुका
३९.	शिवदेव	अज्ञात	८वीं शताब्दी ईसवी	संस्कृत	शिला	दुर्ग

(ई) पाषाण-प्रतिमाएं

इस संग्रहालय के पुरातत्त्व उपविभाग में जो पाषाण-प्रतिमाएँ संरक्षित हैं, उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं—

क्रमांक	संग्रहालय का क्रमांक	प्रतिमा का विवरण	प्रतिमा का काल	प्रतिमा का प्राप्ति स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
		बौद्ध प्रतिमाएँ		
१	३६३६	भूमिस्पर्श मुद्रा में बुद्ध	पांडुवंश कालीन ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी	सिरपुर उत्खनन (रायपुर)
२	३८३३	वही	वही	वही
३	३८५१	खण्डित बुद्ध प्रतिमा	वही	वहीं
४	३८२६	धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में बुद्ध	वही	वही
५	३८५०	वही	वही	वही
६	३८२८	ध्यानी बुद्ध	वही	वही
७	३८३४	बैठे बुद्ध	वही	वही
८	३८३५	वही	वही	वही
९	३७८५	अवलोकितेश्वर और तारा के साथ बुद्ध	वही	वही
१०	३८३०	अवलोकितेश्वर	वही	वही
११	३८३१	वही	वही	वही
१२	३८२६	वही	वही	वही
१३	३८४२	मन्जुश्री	वही	वही
१४	३८४३	वही	वही	वही
१५	३८२१	जम्भाल	वही	वही
१६	३८२४	चुण्डादेवी	वही	वही
१७	३८३२	बौद्ध देवता (?)	वही	वही
१८	३८४३	चरणचौकी	वही	वही
१९	०१०६	भूमिस्पर्श मुद्रा में बुद्ध	डाहल मण्डलीय कलचुरिकालीन १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी	कारीतलाई (जबलपुर)
२०	३७८०	वरद मुद्रा में बुद्ध	दक्षिण कोसलीय कलचुरि कालीन, १२वीं शताब्दी ईसवी	सिरपुर उत्खनन
		जैन प्रतिमाएँ		
२१	०००३	पार्श्वनाथ	पांडुवंश कालीन ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी	सिरपुर

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
२२	२५३७	ऋषभनाथ	डाहलमण्डलीय कलचुरि कालीन, १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी	कारीतलाई
२३	२५७६	वही	वही	वही
२४	००३३	वही	वही	वही
२५	२५९४	वही	वही	वही
२६	२५४८	वही	वही	वही
२७	२५२५	वही	वही	वही
२८	२५८९	ऋषभनाथ और अजितनाथ	वही	वही
२९	२५५७	अजितनाथ और सम्भवनाथ	वही	वही
३०	२५५६	पुष्पदन्त और शीतलनाथ	वही	वही
३१	२५३१	धर्मनाथ और शान्तिनाथ	वही	वही
३२	२५८८	शान्तिनाथ	वही	वही
३३	००३७	मल्लिनाथ और मुनिसुव्रतनाथ	वही	वही
३४	००३५	पार्श्वनाथ	वही	वही
३५	२५७७	वही	वही	वही
३६	२५५३	वही	वही	वही
३७	२५५१	पार्श्वनाथ का मस्तक	वही	वही
३८	००३६	महावीर	वही	वही
३९	२५५५	सर्वतोभद्रिका	वही	वही
४०	२६०५	द्विमूर्तिका	वही	वही
४१	२६१०	वही	वही	वही
४२	२५९५	त्रिमूर्तिका	वही	वही
४३	२५२३	खड़े तीर्थंकर	वही	वही
४४	२५८०	वही	वही	वही
४५	२६०९	जिन प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
४६	२६०४	वही	वही	वही
४७	२९१९	सहस्रजिनबिम्ब	वही	वही
४८	२५८७	वही	वही	वही
४९	२५४१	वही	वही	वही
५०	२५४०	वही	वही	वही
५१	००९७	आम्रा देवी	वही	वही
५२	००३४	खड़ी आम्रा देवी	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
५३	२५८१	अम्बिका और पद्मावती	वही	वही
५४	२५२४	सरस्वती	वही	वही
५५	०००१	ऋषभनाथ	दक्षिण कोसलीय कलचुरि कालीन, १२वीं शताब्दी ईसवी	रतनपुर (बिलासपुर)
५६	०००२	वही	वही	वही
५७	०००७	चन्द्रप्रभ	वही	वही
५८	०१०४	तीर्थंकर (खण्डित)	वही	आरंग (रायपुर)
५९	०१०५	वही	वही	वही
६०	०००५	तीर्थंकर प्रतिमा का भाग (खण्डित)	वही	रतनपुर

शैव प्रतिमाएँ

६१	००११	कल्याणसुन्दरमूर्ति शिव	पांडुवंशकालीन, ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी	रतनपुर
६२	०५४७	उमा-महेश्वर	वही	बिलासपुर जिला
६३	३७७३	गणेश	वही	सिरपुर
६४	२५२६	खड़े शिव	डाहलमण्डलीय कलचुरि कालीन १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी	कारीतलाई
६५	२५४७	शिव	वही	वही
६६	२५२९	शिव	वही	वही
६७	२६११	खण्डित शिव	वही	वही
६८	२६१४	शिव का मस्तक	वही	वही
६९	०१००	वही	वही	वही
७०	००२२	भैरव	वही	बिलहरी (जबलपुर)
७१	००२३	भैरव	वही	वही
७२	२५२४	उमा-महेश्वर	वही	कारीतलाई
७३	२५३२	पार्वती	वही	वही
७४	२५३५	पंचाग्नि तप करती पार्वती	वही	वही
७५	२५२८	लक्ष्मी	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
७६	२५७२	गणेश	वही	वही
७७	३७७५	शिवलिंग	दक्षिण कोसलीय कलचुरि कालीन १२वीं शताब्दी ईसवी	सिरपुर उत्खनन
७८	३७६६	उमा-महेश्वर	वही	वही
७९	३७८९	वही	वही	वही
८०	३७९८	वही	वही	वही
८१	३७८४	वही	वही	वही
८२	३८०३	वही	वही	वही
८३	३८१४	वही	वही	वही
८४	३८१५	वही	वही	वही
८५	३८१८	वही	वही	वही
८६	३८१९	वही	वही	वही
८७	३७७७	वही	वही	वही
८८	३७८१	वही	वही	वही
८९	३७९४	वही	वही	वही
९०	३७९३	वही	वही	वही
९१	३८०८	वही	वही	वही
९२	३८०२	वही	वही	वही
९३	०००९	वही	वही	रतनपुर
९४	०००४	पार्वती	वही	वही
९५	००१९	वही	वही	डीपाडीह
९६	३७९०	वही	वही	सिरपुर उत्खनन
९७	३७७९	वही	वही	वही
९८	३७९९	वही	वही	वही
९९	३८०९	वही	वही	वही
१००	३८१३	वही	वही	वही
१०१	३८०७	महिषासुरमर्दिनी	वही	वही
१०२	३७९५	वही	वही	वही
१०३	३७९२	वही	वही	वही
१०४	३८०६	वही	वही	वही
१०५	३८४४	बही	वही	वही
१०६	३७९१	वही	वही	वही
१०७	०००८	कार्तिकेय	वही	गोमरी

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१०८	३८०१	गणेश	वही	सिरपुर उत्खनन
१०९	३७८३	वही	वही	वही
११०	३८४७	वही	वही	वही

वैष्णव प्रतिमाएँ

१११	२५८५	नारायणमूर्ति	डाहलमण्डलीय कलचुरि कालीन १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी	कारीतलाई
११२	२५३८	गोविन्दमूर्ति	वही	वही
११३	२५४६	मधुसूदन	वही	वही
११४	००९८	त्रिविक्रम	वही	वही
११५	२५२६	वही	वही	वही
११६	२५६३	वामन	वही	वही
११७	२५३८	वामन (?)	वही	वही
११८	२५६५	हृषीकेश	वही	वही
११९	२५६४	नृसिंह	वही	वही
१२०	२५२० और २५९२	वही	वही	वही
१२१	००३१	अच्युत	वही	वही
१२२	२५७१	उपेन्द्र	वही	वही
१२३	०१०१	विष्णु का मस्तक	वही	वही
१२४	२५८४	गरुडनारायण	वही	वही
१२५	२५२७	योगनारायण	वही	वही
१२६	२५२८	योगनारायण	वही	वही
१२७	२५७०	वैष्णवी	वही	वही
१२८	००१८	त्रिविक्रम विष्णु	दक्षिण कोसलीय कलचुरि कालीन १२वीं शताब्दी ईसवी	डीपाडीह
१२९	००१२	स्थानक विष्णु	वही	रतनपुर
१३०	३७७८	विष्णु	वही	सिरपुर उत्खनन
१३१	३७७९	वही	वही	वही
१३२	०५५०	वही	वही	बिलासपुर जिला

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१३३	३७८२	वही	वही	सिरपुर उत्खनन
१३४	३८२७	वही	वही	वही

अन्य देव

१३५	२५६०	ब्रह्मा	डाहलमण्डलीय कलचुरि कालीन	कारीतलाई
१३६	२५४३	ब्रह्माणी	वही	वही
१३७	२५६८	सूर्य	वही	वही
१३८	३८००	वही	दक्षिण कोसलीय कलचुरि कालीन	सिरपुर उत्खनन
१३९	३७९७	वही	वही	वही
१४०	३८४८	वही	वही	वही

विविध प्रतिमाएँ

१४१	०५६०	गंगा (?)	पांडुवंश कालीन (८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी)	सिरपुर
१४२	०५०९	चौखट का बाँया पाख	वही	धमतरी
१४३	०५५८	चौखट का दाँया पाख	वही	सिरपुर
१४४	००५९	चौखट का बाँया पाख	वही	वही
१४५	०५०८	शिव मन्दिर के द्वार की चौखट	वही	धमतरी
१४६	०५५६	नागराज	वही	सिरपुर
१४७	०५५७	नागराज	वही	वही
१४८	०५१६	स्तम्भ	वही	देवकूट
१४९	२४०८	वही	वही	मल्लार
१५०	०५१८	चौकी	वही	सिरपुर (?)
१५१	०५४८	विभूतिपट्ट	वही	बिलासपुर जिला
१५२	०५४९	वही	वही	वही
१५३	०५१९	चौखट का खण्ड	वही	अज्ञात
१५४	०५२०	वही	वही	अज्ञात
१५५	२७२३	मस्तक	वही	बिलासपुर जिला
१५६	३७८६	विभूतिपट्ट	वही	सिरपुर उत्खनन
१५७	३७८७	वही	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१५८	३७८८	वही	वही	वही
१५९	३८११	वही	वही	वही
१६०	३८१२	वही	वही	वही
१६१	३८१५	वही	वही	वही
१६२	३८४५	वही	वही	वही
१६३	३८१७	पट्ट	वही	वही
१६४	३८१०	वही	वही	वही
१६५	३८४६	नागपट्ट	वही	वही
१६६	३८०४	पट्ट	वही	वही
१६७	३८०५	पट्ट	वही	वही
१६८	२५३३	चौखट का खण्ड	डाहलमण्डलीय कलचुरि कालीन	कारीतलाई
१६९	२५८२	परिचारक	वही	वही
१७०	२५९१	वैष्णव परिचारक	वही	वही
१७१	२५९८	परिचारक	वही	वही
१७२	२५९९	परिचारक	वही	वही
१७३	००२८	परिचारक का मस्तक	वही	वही
१७४	२५६१	परिचारिका	वही	वही
१७५	२५७८	वही	वही	वही
१७६	०१०२	स्त्री का मस्तक	वही	वही
१७७	०१०३	वही	वही	वही
१७८	००२६	नायिका	वही	वही
१७९	००२७	वही	वही	वही
१८०	००२४	वही	वही	वही
१८१	२५६९	वही	वही	वही
१८२	२६००	वही	वही	वही
१८३	२५३०	सुरसुन्दरी	वही	वही
१८४	२५७५	अप्सरा	वही	वही
१८५	२५७३	शालभन्जिका	वही	वही
१८६	२५७४	सुरसुन्दरी	वही	वही
१८७	२५७९	वही	वही	वही
१८८	००२९	मिथुन	वही	वही
१८९	००२५	मिथुन	वही	बिलहरी

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१९०	२५३४	वही	वही	कारीतलाई
१९१	२५५०	वही	वही	वही
१९२	२५६७	वही	वही	वही
१९३	२५३६	नट	वही	वही
१९४	००३२	बानरयुगल	वही	वही
१९५	००९९	महावतयुक्त हाथी	वही	वही
१९६	२६०१	हाथी	वही	वही
१९७	२५२१	गजशार्दूल	वही	वही
१९८	२५४५	वही	वही	वही
१९९	२५५९	वही	वही	वही
२००	२५६२	वही	वही	वही
२०१	२५५२	नरशार्दूल	वही	वही
२०२	२६०८	सिंह	वही	वही
२०३	२५४४	वास्तुखण्ड	वही	वही
२०४	२५२२	कीर्तिमुख	वही	वही
२०५	२५९०	वही	वही	वही
२०६	२५९३	वही	वही	वही
२०७	२५४९	वास्तुखण्ड	वही	वही
२०८	२५९६	वही	वही	वही
२०९	२५६६	वही	वही	वही
२१०	२६०७	वही	वही	वही
२११	२५८३	वही	वही	वही
२१२	२५९७	वही	वही	वही
२१३	२६०३	स्तम्भखण्ड	वही	वही
२१४	२६०२	बांट	वही	वही
२१५	२६१२	जाँता	वही	वही
२१६	२६०६	स्तम्भखण्ड	वही	वही
२१७	२६१३	वही	वही	वही
२१८	००३०	विद्याधर युगल	वही	वही
२१९	००८०	मस्तकविहीन परिचारक	(कलचुरि कालीन) दक्षिण कोसलीय	आरङ्ग
२२०	०५१५	राजपुरुष	वही	रतनपुर
२२१	००१०	चँवरधारिणी	वही	रतनपुर

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
२२२	००८१	स्तम्भखण्ड	वही	आरङ्ग
२२३	०५१०	गोंड योद्धा	गोंडकालीन	सिरपुर
२२४	०५११	वही	वही	वही
२२५	०५१२	गोंड सिपाही	वही	वही
२२६	०५१३	वही	वही	वही
२२७	०५१४	सती स्मारक	वही	रायपुर जिला
२२८	०५१७	सती स्मारक स्तम्भ	वही	रायपुर जिला
२२९	२४०५	बुरा मत कहो	वही	राजनांदगांव
२३०	२४०७	बुरा मत देखो	वही	वही
२३१	२४२६	बुरा मत सुनो	वही	वही

(उ) धातु प्रतिमाएँ

इस संग्रहालय में कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण धातु प्रतिमाएँ संरक्षित हैं। ये संग्रह रायपुर जिले के फुसेरा तथा सिरपुर से तथा बिलासपुर जिले के सलखन नामक स्थान से प्राप्त किये गये हैं। प्राचीन भारतीय कला के दृष्टिकोण से ये प्रतिमाएँ अत्यन्त महत्व-पूर्ण हैं और इन्हें जबलपुर, नागपुर, दिल्ली, पटना, वाराणसी, मद्रास, बेंगलोर, बम्बई, इन्दौर तथा यूरोप में विल्लाह्यूगेल और जूरिच में किये गये कलाप्रदर्शिनियों में प्रदर्शित किया गया है। विभिन्न ग्रन्थों में इनका प्रकाशन भी हो चुका है। इनका संक्षिप्त वर्णन तथा निर्देश इस प्रकार है—

बौद्ध प्रतिमाएँ

(१) सिरपुर से प्राप्त भूमिस्पर्शमुद्रा में बुद्ध की धातु-प्रतिमा जो लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी की है। इस पर बौद्धों का बीजमन्त्र 'ये धर्मा' आदि तथा द्रोणादित्य का नाम उत्कीर्ण है। **धा० प्र० पृ० १-२, चित्र-मुख चित्र; ज० इ० म्यू० १९५२, पृ० १०९, चित्र ११-२२:३; रायपुर संग्रहालय स्मृति भेंट पृ० ७; बौद्ध कला प्रदर्शिनी १९५६, क्रमांक १२१; रेवा (नागपुर) फाल्गुन, सम्वत् २०१३, चित्र ३; बु० प्रि० म्यू० अंक ५ (१९५५-५७), पृ० ३, चित्र २-ए; भारतीय कला प्रदर्शिनी बिल्ला ह्यूगेल, जर्मनी, १९५९, सूचीपत्र क्रमांक २३५।**

(२) सिरपुर से प्राप्त भूमिस्पर्शमुद्रा में बुद्ध की तांबे की प्रतिमा जो लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी की है। **धा० प्र० पृ० २, चित्र २-क; ज० इ० म्यू० जिल्द ८ (१९५२) पृ० १०९, चित्र ११-२२:१; रायपुर संग्रहालय स्मृति भेंट, पृ० ६; तृतीय संस्कृत विश्व परिषद नागपुर स्मृति चिह्न, चित्र १०; बु० प्रि० म्यू० अंक ५ (१९५५-५७), पृ० ३, चित्र १-बी।**

(३) सिरपुर से प्राप्त वरदमुद्रा में बुद्ध की धातुप्रतिमा जो लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी की है। धा० प्र० पृ० ३, चित्र २-ख; ज० इ० म्यू० जिल्द ८ (१९५२) पृ० १०९, चित्र ११-२२:३; रायपुर संग्रहालय स्मृति भेंट, पृ० ३; बु० प्रि० म्यू० अंक ५ (१९५५-५७) पृ० ३, चित्र २-बी; बौद्ध कला प्रदर्शिनी, १९५६, क्रमांक १३८; भारतीय कला प्रदर्शिनी, बिल्लाह्यूगेल, जर्मनी, सूचीपत्र क्रमांक २३४।

(४) सिरपुर से प्राप्त अवलोकितेश्वर पद्मपाणि की धातुप्रतिमा जो लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी की है। धा० प्र० पृ० ३-४, चित्र ३-क; ज० इ० म्यू० जिल्द ८ (१९५२) पृ० १०९, चित्र ११- २१:३; बु० प्रि० म्यू० अंक ५ (१९५५-५७) पृ० ५, चित्र-३-ए।

(५) सिरपुर से प्राप्त पद्मपाणि की ताम्र प्रतिमा जो लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी की है। धा० प्र० पृ० ४, चित्र ३-ख; बु० प्रि० म्यू० अंक ५ (१९५५-५७) पृ० ५, चित्र ३-बी।

(६) सिरपुर से प्राप्त पद्मपाणि की सोना का पानी चढ़ी ताम्र प्रतिमा जो लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी की है। धा० प्र० पृ० ४, चित्र ४-क; बु० प्रि० म्यू० अंक ५ (१९५५-५७), पृ० ५, चित्र ४-ए।

(७) सिरपुर से प्राप्त पद्मपाणि की धातु प्रतिमा जो लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी की है। धा० प्र० पृ० ५, चित्र ८-ख; ज० इ० म्यू० जिल्द ८ (१९५२) पृ० १०९, चित्र ११-२२:१; बौद्ध-कला प्रदर्शिनी १९५६, क्रमांक १४१; बु० प्रि० म्यू० अंक ५ (१९५५-५७) पृ० ६, चित्र ४-बी; भारतीय कला प्रदर्शिनी, विल्लाह्यूगेल, जर्मनी, १९५९, क्रमांक २३२।

(८) सिरपुर से प्राप्त वज्रपाणि की संग्रहालय में संग्रहीत धातु प्रतिमाओं में सर्वोत्कृष्ट प्रतिमा जो लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी की है। प्रतिमा के प्रभावली के पीठ पर बौद्ध बीज मन्त्र 'ये धर्मा....' आदि उत्कीर्ण हैं। धा० प्र० पृ० ५-६, चित्र ५; ज० इ० म्यू० जिल्द ८ (१९५२), पृ० १०९, चित्र ११-२१:२; रायपुर संग्रहालय स्मृति-भेंट, पृ० १२; 'रेवा' (नागपुर), फाल्गुन, सम्वत् २०१३, चित्र २; बौद्ध कला प्रदर्शिनी १९५६, क्रमांक १४३; बु० प्रि० म्यू० अंक ५ (१९५५-५७), पृ० ६, चित्र ५-ए; भारतीय कला प्रदर्शिनी; विल्लाह्यूगेल, जर्मनी, १९५९, सूचीपत्र क्रमांक २३३।

(९) सिरपुर से प्राप्त मंजुश्री की सोना-चढ़ी ताम्र-प्रतिमा जो लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ईसवी की है। धा० प्र० पृ० ६-७, चित्र ६-क; 'रेवा' (नागपुर) फाल्गुन, सम्वत् २०१३, चित्र ४; बु० प्रि० म्यू० अंक ५, (१९५५-५७) पृ० ६, चित्र ५-बी।

(१०) सिरपुर से प्राप्त मंजुश्री की सोना-चढ़ी ताम्र प्रतिमा जो लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी

ईसवी की है। धा० प्र० पृ० ७-८, चित्र ६-ख; बु० प्रि० म्यू० अंक ५ (१९५५-५७) पृ० ७, चित्र ६-ए।

(११) सिरपुर से प्राप्त तारा की धातु प्रतिमा जो लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी की है। प्रतिमा की पीठ पर बौद्ध बीजमन्त्र 'ये धर्मा...' आदि उत्कीर्ण है। धा० प्र० पृ० ८, चित्र ७-क; बु० प्रि० म्यू० अं० ५ (१९५५-५७), पृ० ८, चित्र ६-बी।

सिरपुर से प्राप्त अन्य बौद्ध धातु प्रतिमाएँ

(१) युगादिदेव ऋषभनाथ की नवग्रहयुक्त प्रतिमा जो मुनि कान्तिसागर के संग्रह में बतायी जाती है। धा० प्र० पृ० १३; ख० वैं० पृ० १५२, ४२६।

(२) तारा की धातु प्रतिमा जो मुनि कान्तिसागर द्वारा बम्बई के भारतीय विद्याभवन को भेजी गयी थी और तत्पश्चात् मुनि जिनविजय जी के निजी संग्रह में चली गयी। ख० वैं० पृ० २८९, ४३२; 'रेवा' (नागपुर) फाल्गुन सम्वत् २०१३, चित्र १; धा० प्र० पृ० १२, चित्र ७-ख।

(३) सिरपुर उत्खनन में प्राप्त बुद्ध की भूमिस्पर्श मुद्रा में धातु प्रतिमा। शुक्ल अभिनन्दन ग्रन्थ, इतिहास खण्ड, पृ० १८५; बु० प्रि० म्यू० अंक ५ (१९५५-५७) पृ० २, चित्र १-ए।

(४) सिरपुर उत्खनन में प्राप्त बुद्ध की मस्तक विहीन धातु प्रतिमा। बु० प्रि० म्यू अंक ५, (१९५५-५७) पृ० ८।

(५) सिरपुर उत्खनन में प्राप्त बुद्ध की प्रतिमा का केवल मस्तक वाला भाग। वही, पृ० ८।

(६) सिरपुर उत्खनन में प्राप्त एक धातु चौकी जिसके तीन ओर बौद्ध बीज मन्त्र 'ये धर्मा....' आदि उत्कीर्ण है। बु० प्रि० म्यू० अंक ५ (१९५५-५७), पृ० ८।

(७) केन्द्रीय संग्रहालय नागपुर के संग्रह में सिरपुर से प्राप्त एक प्रतिमाविहीन धातु की चौकी जिस पर 'ओं कुमारदेवस्य' उत्कीर्ण है। धा० प्र० पृ० १३, चित्र १०-ग।

वैष्णव प्रतिमा

फुसेरा (जिला रायपुर) से प्राप्त स्थानक विष्णु की ताम्र प्रतिमा जो लगभग १०वीं शताब्दी ईसवी की है। धा० प्र० पृ० ९, क्रमांक १२, चित्र ८-क।

शैव प्रतिमाएँ

(१) सलखन (जिला बिलासपुर) से प्राप्त गौरी की धातु-प्रतिमा जो लगभग ९वीं-१०वीं शताब्दी ईसवी की है। धा० प्र० पृ० ९, क्रमांक १३, चित्र ८-ख; 'प्रगति' (नागपुर) मार्च-अप्रैल १९५६, पृ० ९९-१००, चित्र १; जा० इ० म्यू० जिल्द १२, पृ० ३५-३६, चित्र १६-बी।

(२) नन्दौर खुर्द (जिला बिलासपुर) से प्राप्त गणेश की धातु-प्रतिमा जो लगभग १०वीं-११वीं शताब्दी ईसवी की है। **धा० प्र० पु० १०, क्रमांक १४, चित्र ६-क।**

विविध

सलखन (जिला बिलासपुर) से प्राप्त धातु का बना घण्टा जो सम्भवतः १०वीं शताब्दी ईसवी का है। **धा० प्र० पृ० ११, चित्र ६-ख; ज० इ० म्यू० जिल्द १२, चित्र १७-ए।**

(ऊ) सिक्के

इस संग्रहालय में सिक्कों का एक महत्वपूर्ण संग्रह संरक्षित है। इन सिक्कों की संक्षिप्त सूची इस प्रकार है—

क्रमांक	सिक्कों का वर्णन	सोना	चाँदी	ताँबा
१	आहत सिक्के		२८	६३
२	'रिपोज़े' सिक्के		३	
३	ढले तथा स्थानीय—उज्जैन तथा एरण प्रकार के			५७५
४	दक्षिण कोसल के स्थानीय सिक्के			१६
५	विदिशा नगर-राज्य के सिक्के			२१
६	पांचाल सिक्के			१
७	धनदेव का मृद्-मुद्रांक			१ (मिट्टी का बना)
८	सातवाहन सिक्के			५
९	कुषाण सिक्के			२४
१०	पश्चिम क्षत्रप सिक्के		३	
११	नागवंशी सिक्के			१४४
१२	नरसिंहगुप्त का सिक्का	१		
१३	रामगुप्त के सिक्के			५
१४	जिष्णु के सिक्के			३
१५	प्रसन्नमात्र के सिक्के	१		
१६	महेन्द्रादित्य के सिक्के	४६		
१७	क्रमादित्य के सिक्के	३		
१८	हिन्द-सासानी सिक्के		११	४
१९	कलचुरि नरेशों के सिक्के	३	२	११०
२०	दक्षिण भारतीय सिक्के	२		१

२४५०. शासकीय संग्रहालय – धुबेला (नौगाँव)

छतरपुर—हरपालपुर सड़क पर, छतरपुर से लगभग १० मील की दूरी पर स्थित मऊ-सहानियाँ नामक ग्राम है। इस ग्राम से लगभग १½ मील की दूरी पर स्थित धुबेला का महल है जिसका निर्माण मूलतः छत्रसाल द्वारा करवाया गया था। इस महल में मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व विभाग द्वारा संग्रहालय स्थापित कर क्षेत्रीय इतिहास से सम्बन्धित महत्वपूर्ण पुरावशेष संग्रहीत किये गये हैं। इनमें से महत्वपूर्ण सामग्री का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है[1]—

क. अभिलेख

इस संग्रहालय में जो महत्वपूर्ण अभिलेख संरक्षित हैं, उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

क्रमांक	व्यक्ति अथवा राजा का नाम	वंश	तिथि	भाषा	शिला अथवा ताम्रलेख	प्राप्ति-स्थान
१	भट्टारक महाराज वंगेश्वर जंगत		८० (अज्ञात-संवत्)		शिवलिंग	देवगवाँ
२	स्कन्दगुप्त	गुप्त	गुप्त सं० १४१	संस्कृत	शिला-स्तम्भ	सुपिया (रीवा)
३	महाराज लक्ष्मण		गुप्त सं० १५८	संस्कृत	ताम्रपत्र	सिंगरौली
४	भरतवल	पांडुवंश	दूसरा राज्य वर्ष	संस्कृत	ताम्रपत्र	बम्हनी
५	कर्ण	कलचुरि		संस्कृत	शिलालेख	गुर्गी (रीवा)
६	प्रबोधशिव (शैवाचार्य)			संस्कृत	शिलालेख	गुर्गी
७	मलयसिंह		कलचुरि सं० ९९४	संस्कृत	शिलालेख	कस्तरा (रीवा)

---

१. संग्रहालय की अधिकृत सूची की उपलब्धि के अभाव में यहाँ दी गयी सूचना श्री एस० के० दीक्षित द्वारा प्रकाशित 'ए गाइड टू स्टेट म्यूजियम, धुबेला' तथा व्यक्तिगत सूचना पर आधारित है।

८	कर्ण	कलचुरि		संस्कृत	शिलालेख	
९	गांगेयदेव	कलचुरि		संस्कृत	शिलालेख	मुकुन्दपुर (रीवा)
१०	युवराजदेव	कलचुरि		संस्कृत	शिलालेख	बड़ागाँव
११	यशःकर्णदेव	कलचुरि	कलचुरि सं० ८२३	संस्कृत	ताम्रपत्र	खैरहा
१२	विजयसिंह	कलचुरि	कलचुरि सं० ९६—	संस्कृत	शिलालेख	रीवा
१३	त्रैलोक्यमल्ल	चन्देल		संस्कृत	ताम्रपत्र	धुरेती
१४			वि० सं० १३९६		सती प्रस्तर लेख	
१५			वि० सं० १४३१		सती प्रस्तर लेख	सिगदई (सतना)

ख. पाषाण प्रतिमाएँ—

इस संग्रहालय में जो प्रमुख पाषाण प्रतिमाएँ संरक्षित की गयीं हैं, उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकारण है—

क्रमांक	**प्रतिमा का विवरण**	**प्रतिमा का काल (ईसवी शताब्दी में)**	**प्रतिमा का प्राप्ति-स्थान**
(१)	(२)	(३)	(४)
	जैन-दीर्घा की प्रमुख प्रतिमाए		
१	नेमिनाथ (बैठे)	१०वीं से १४वीं	
२	आदिनाथ अथवा ऋषभनाथ (बैठे)	वही	
३	आदिनाथ	वहीं	
४	पद्मनाभ (बैठे)	वही	
५	नेमिनाथ (खड़े)	वही	जगतसागर
६	पार्श्वनाथ (बैठे)	वही	
७	पार्श्वनाथ (बैठे)	वही	
८	नेमिनाथ (बैठे)	वही	जगतसागर
९	नेमिनाथ (बैठे)	वि० सं० ११९९	वही
१०	अजितनाथ (बैठे)	१०वीं-१४वीं	
११	नेमिनाथ (बैठे) खण्डित	वही	वही
१२	आदिनाथ (खड़े)	वही	वही
१३	पार्श्वनाथ	वही	

(१)	(२)	(३)	(४)
१४	पार्श्वनाथ	वही	
१५	पार्श्वनाथ	वही	
१६	गोमेध और अम्बिका सहित नेमिनाथ	वही	
१७	शीतलनाथ के यक्ष के रूप में ब्रह्मा	वही	
१८	अम्बिका	वही	
१९	चक्रेश्वरी	वही	
	देवी-दीर्घा की प्रमुख प्रतिमाएँ		
२०	श्री सावित्री	१०वीं	
२१	लक्ष्मी-नारायण	वही	
२२	उमा-महेश्वर	वही	
२३	उमा-महेश्वर	वही	
२४	उमा-महेश्वर	वही	
२५	उमा-महेश्वर	वही	
२६	उमा-महेश्वर	वही	
२७	उमा-महेश्वर	वही	
२८	उमा-महेश्वर	वही	
२९	उमा-महेश्वर	वही	
३०	लक्ष्मी-नारायण	वही	
३१	उमा-महेश्वर	वही	
३२	शिव-पार्वती-आलिंगन मुद्रा में	वही	
३३	शिव-पार्वती	वही	
३४	लक्ष्मी-नारायण	वही	
३५	शिव-पार्वती	वही	
३६	राधा-कृष्ण	वही	
३७	देवी	वही	
३८	देवी	वही	
३९	देवी	वही	
४०	श्री चक्रेश्वरी	वही	
४१	दुर्गा	वही	
४२	मातृका	वही	
४३	श्री कपालिनी	वही	
४४	मातृका	वही	
४५	चामुण्डा	वही	

(१)	(२)	(३)	(४)
४६	द्वारपालिका	वही	
४७	देवी	वही	
४८	मातृका	वही	
४९	श्री सरस्वती	वही	
५०	मनसा	वही	गुर्गी
५१	सुर-सुन्दरी	वही	
५२	नागदेवी	वही	
५३	पार्वती	वही	
५४	शालभंजिका	वही	
५५	उमा-महेश्वर	वही	
५६	अर्ध-नारीश्वर	वही	
५७	यम और यमुना	वही	
५८	यम और यमुना	वही	
५९	देवी (खड़ी)	वही	
६०	गजलक्ष्मी	वही	
६१	श्री तरला	वही	शहडोल
६२	श्री चक्रेश्वरी	वही	
६३	अष्टभुजी देवी	वही	
६४	जैन यक्षी अम्बिका	वही	
६५	श्री इतरला	वही	गुर्गी
६६	अष्टभुजी देवी	वही	
६७	श्री कृष्ण भगवती	वही	शहडोल
६८	अष्टभुजी देवी	वही	
६९	श्री दुर्गा	वही	
७०	अष्टभुजी देवी	वही	
७१	भद्रकाली	वही	
७२	श्री बदरी	वही	गुर्गी
७३	श्री भा	वही	गुर्गी
७४	श्री कपालिनी (खड़ी)	वही	शहडोल
७५	महिषासुरमर्दिनी	वही	
७६	अष्टभुजी देवी	वही	
७७	अष्टभुजी देबी	वही	
७८	श्री वासवा	वही	शहडोल

(१)	(२)	(३)	(४)
७९	अष्टभुजी देवी	वही	
८०	देवी (खड़ी)	वही	
८१	श्री यमुना	वही	
८२	अष्टभुजी देवी	वही	
८३	चतुर्भुज देवी	वही	
८४	उमा-महेश्वर	वही	
८५	देवी (खड़ी)	वही	
८६	श्री जौति	वही	गुर्गी
८७	श्री तारणी	वही	शहडोल
८८	श्री भा-नवा	वही	शहडोल
८९	श्री बाण-प्रभा	वही	शहडोल
९०	रमणी	वही	शहडोल

देव-दीर्घा की प्रमुख प्रतिमाएँ

९१	एक चौकोर पत्थर के तीन ओर उत्कीर्ण शिव और गणेश, नर्तिका तथा भैरव
९२	हरिहर
९३	नवग्रह
९४	गंधर्व
९५	स्त्री (खड़ी)
९६	देव (खड़े)
९७	पुरुष (खड़े)
९८	मिथुन
९९	मिथुन
१००	द्वार-रक्षक
१०१	कुबेर
१०२	खण्डित प्रतिमा का निम्न भाग
१०३	देव
१०४	देव (खड़े)
१०५	यज्ञ वेदिका
१०६	वादक
१०७	शिव-लिंग
१०८	दिगमण्डल

(१)	(२)	(३)	(४)
१०९	मुखलिंग		
११०	शेषशायी विष्णु		
१११	कार्तिकेय		
११२	शैव-गण		
११३	वामन अवतार		
११४	गजारिहा मूर्ति		
११५	अलक्ष्मी		
११६	भैरव		
११७	भैरव		
११८	ऋषि		
११९	हरिहर		
१२०	ब्रह्मा		
१२१	भैरव		
१२२	परशुराम भार्गव		
१२३	कृष्ण		
१२४	विष्णु त्रिविक्रम		
१२५	हयग्रीव अवतार		
१२६	नन्दिकेश्वर		
१२७	गंधर्व		
१२८	विष्णु त्रिविक्रम		
१२९	शैव-गण		
१३०	ध्यानी विष्णु		
१३१	भूमिस्पर्श मुद्रा में बुद्ध		
१३२	नर्तिका तथा मार्दंगिक		
१३३	अलक्ष्मी		

गणेश-दीर्घा की प्रमुख प्रतिमाएँ

१३४	नर्तक		
१३५	त्रि-देव		
१३६	खण्डित प्रतिमा का निम्न भाग		
१३७	तीन प्रतिमाएँ		
१३८	खण्डित प्रतिमा का निम्न भाग		
१३९	खण्डित प्रतिमा का ऊपरी भाग		
१४०	ब्रह्मा		

(१)	(२)	(३)	(४)
१४१	अपूर्ण हस्ति		
१४२	अपूर्ण हस्ति		
१४३	द्वारपाल		
१४४	व्याल		
१४५	शिव		
१४६	व्याल		
१४७	व्याल		
१४८	वराह		
१४९	नन्दी		
१५०	विष्णु		
१५१	विष्णु		
१५२	भैरव		
१५३	सूर्य		
१५४	भैरव		
१५५	विष्णु		
१५६	नन्दी		
१५७	व्याल		
१५८	व्याल		
१५९	अश्वारोही राजा		
१६०	खण्डित प्रतिमा का निम्न भाग		
१६१	शक्ति-गणेश		
१६२	विष्णु		
१६३	त्रिविक्रम		
१६४	नृत्य-गणपति		
१६५	गणपति		
१६६	पार्श्व मूर्तियाँ		
१६७	शैवगण		
१६८	व्यालमुख		
१६९	गणपति (खड़े)		
१७०	गणपति		
१७१	नृत्य-गणपति		

ग सिक्के

इस संग्रहालय में लगभग २२०० सिक्कों का एक महत्वपूर्ण संग्रह संरक्षित है। इनमें

से प्राचीन भारत से सम्बन्धित केवल कुछ ही सिक्के आहत, कुषाण कालीन तथा गधिया हैं । शेष मुस्लिम तथा आधुनिक काल से सम्बन्धित हैं ।

(घ) अन्य पुरावशेष

मऊ से प्राप्त चन्देल-छत्रसाल कालीन मृद्भाण्ड, ईंटें, घण्टा तथा आभूषण भी इस संग्रहालय में संरक्षित किये गये हैं। शेष पुरावशेष मुस्लिम तथा आधुनिक काल से सम्बन्धित हैं ।

२४५१. शासकीय संग्रहालय—भोपाल

शासकीय संग्रहालय भोपाल में मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व-सम्बन्धी निम्नलिखित सामग्री संग्रहीत की गयी हैं :—

(क) प्रागैतिहासिक पाषाण औज़ार

न्यू-भोपाल क्षेत्र की खोज में पाषाण-युगीन हस्त-कुठार, खुरचनी, विदारणी आदि औज़ार प्राप्त हुए हैं । ये संग्रहालय में संग्रहीत कर कुछ प्रदर्शित किये गये हैं।

(ख) आवरा उत्खनन-सामग्री

१९६०-६१ के आवरा (जिला मन्दसौर) के उत्खनन में विभिन्न प्रकार की सामग्री प्राप्त हुई थी (देखिए आवरा उत्खनन— अध्याय ७)। इनमें से कुछ इस संग्रहालय में प्रदर्शित किये गये हैं । प्रदर्शित सामग्री में शंख तथा हड्डी की बनी चूड़ियाँ, मनके तथा मृद्भाण्डों के ठीकरे उल्लेखनीय हैं । मृद्भाण्डों में ताम्र-पाषाण-युगीन 'लाल पर काले', 'लाल और काले', 'उत्तर काले ओपदार' तथा सादे लाल भाण्ड प्रमुख हैं ।

(ग) प्रतिमाएँ

संग्रहालय में निम्नलिखित प्रतिमाएँ संग्रहीत की गई हैं :—

क्रमांक	प्रतिमा का विवरण	प्रतिमा का काल (ईसवी शताब्दी में)	प्रतिमा का प्राप्ति-स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)
१.	जैन प्रतिमा वितान	११वीं-१२वीं	हिंगलाजगढ़ (मन्दसौर)
२.	गंगा	वही	वही
३.	माहेश्वरी	वही	?
४.	दुर्गा-नारायणी	वही	वही
५.	कौमारी	वही	वही
६.	अष्टभुजा देवी	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)
७.	प्रतिमा वितान का दाहिना भाग	११वीं-१२वीं	वही
८.	मिथुन	वही	वही
९.	देवी प्रतिमा का आसन	वही	वही
१०.	त्रिपुरान्तक शिव	वही	मोड़ी (मन्दसौर)
११.	क्षेत्रपाल भैरव	वही	हिंगलाजगढ़ (मन्दसौर)
१२.	गजासुरमर्दिनी	वही	वही
१३.	नन्दिकेश्वर	वही	वही
१४.	शिव-प्रतिमा का बाम भाग	वही	वही
१५.	देवी-प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
१६.	सुरसुन्दरी प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	नरवर
१७.	तीर्थंकर	वही	वही
१८.	तीर्थंकर	वही	वही
१९.	तीर्थंकर	वही	वही
२०.	महिषासुरमर्दिनी	७वीं-८वीं	आवरा (मन्दसौर)
२१.	अभिसारिका	१०वीं-११वीं	सुहानिया
२२.	दशावतारी विष्णु प्रतिमा के वितान का वाम भाग	११वीं-१२वीं	हिंगलाजगढ़
२३.	चँवरधारिणी	१२वीं	रतनपुर (बिलासपुर)
२४.	चन्द्रप्रभ प्रतिमा का आसन	११वीं-१२वीं	नरवर
२५.	दीपधारिणी	१०वीं-११वीं	सुहानिया
२६.	चँवरधारिणी	वही	वही
२७.	सरस्वती	११वीं-१२वीं	धार (धार)
२८.	तीर्थंकर प्रतिमा का आसन	वही	नरवर
२९.	तीर्थंकर (ध्यानास्थ) (उत्कृष्ट ओप युक्त)	वही	वही
३०.	तीर्थंकर प्रतिमा का आसन जिस पर सम्वत् १२४१ (११८४ ई०) का लेख उत्कीर्ण है।	वही	वही
३१.	गोंड वीर	१६वीं-१७वीं	सिरपुर (रायपुर)
३२.	अश्वारोही गोंड प्रमुख	वही	वही
३३.	अश्वारोही गोंड प्रमुख	वहीं	वही
३४.	गोंड वीर	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)
३५.	तीर्थंकर प्रतिमा का ऊपरी बाम भाग	११वीं-१२वीं	वही
३६.	शिल्प-खण्ड	११वीं-१२वीं	वही
३७.	प्रतिमा वितान का मध्य भाग	वही	वही
३८.	विष्णु-प्रतिमा वितान का खण्डित भाग	११वीं-१२वीं	हिंगलाजगढ़
३९.	जैन-प्रतिमा वितान	वही	नरवर
४०.	पार्श्वनाथ	वही	हिंगलाजगढ़

२४५२. शासकीय जिला पुरातत्त्व संग्रहालय—विदिशा

जिला पुरातत्त्व संग्रहालय, विदिशा में मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व सम्बन्धी निम्नलिखित सामग्री संग्रहीत की गयी है—

(क) प्रागैतिहासिक पुरावशेष

मन्दसौर जिले के विभिन्न स्थानों की खोज में प्राप्त पाषाण युगीन कुछ औज़ार इस संग्रहालय में संरक्षित किये गये हैं।

(ख) उत्खनन में प्राप्त पुरावशेष

(१) मोहेंनजोदड़ो उत्खनन

मोहेनजोदड़ो (सिन्ध जिला, आधुनिक पश्चिम पाकिस्तान में स्थित) के उत्खनन में प्राप्त कुछ आद्य-ऐतिहासिक कालीन पुरावशेष इस संग्रहालय में संरक्षित किये गये हैं। इन पुरावशेषों में महत्वपूर्ण हैं—पाषाण-औज़ार, मिट्टी की बनी मातृदेवी-प्रतिमाएँ, वृषभ, आभूषण, मनके तथा विभिन्न आकार के भाण्ड।

(२) विदिशा उत्खनन

विदिशा के उत्खनन में प्राप्त विभिन्न पुरावशेषों में कुल १७४ पुरावशेष इस संग्रहालय में संरक्षित किये गये हैं। **(विवरण के लिये देखिए अध्याय ७)**।

(३) पवाया उत्खनन

पवाया के उत्खनन में प्राप्त विभिन्न पुरावशेषों में ४३ पुरावशेष इस संग्रहालय में संग्रहीत किये गये हैं। इनमें मिट्टी की बनी पुरुष, स्त्री तथा जानवरों की आकृतियाँ महत्व-पूर्ण हैं **(विवरण के लिए देखिए अध्याय ७)**।

(४) उज्जैन उत्खनन

उज्जैन के उत्खनन में प्राप्त पुरावशेषों में २० पुरावशेष इस संग्रहालय में संग्रहीत किये गये हैं। इनमें मिट्टी के बने विभिन्न प्रकार के भाण्ड महत्वपूर्ण हैं।

(ग) पाषाण प्रतिमाएँ

क्रमांक	संग्रहालय सूची क्रमांक	प्रतिमा का विवरण	प्रतिमा का काल (ईसवी शताब्दी में)	प्रतिमा का प्राप्ति-स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१	२	नाग-दम्पति	१२वीं	विदिशा
२	३	अम्बिका	१०वीं	वही
३	४	जैन तीर्थंकर	१०वीं	बेसनगर
४	५	जैन तीर्थंकर	११वीं	विदिशा
५	६	आदिनाथ	९वीं	बेसनगर
६	७	नेमिनाथ	१०वीं	विदिशा
७	८	सूर्य (खण्डित हस्त)	१०वीं	वही
८	९	शेषशायी विष्णु प्रतिमा जिसके आधार पर लेख उत्कीर्ण है	११वीं	बेसनगर
९	१०	वामन	१२वीं	वही
१०	११	विष्णु	७वीं	वही
११	१२	विष्णु-प्रतिमा जिसकी चौकी पर लेख उत्कीर्ण हैं	१३वीं	वही
१२	१३	विष्णु	११वीं	वही
१३	१४	उमा-महेश्वर	१०वीं	वही
१४	१५	गणेश	९वीं-१०वीं	वही
१५	१६	नृत्य-गणपति	१०वीं	वही
१६	१७	दीप-धारिणी	१०वीं	विदिशा
१७	१८	नन्दी	१०वीं	विदिशा
१८	१९	कंकाल-प्रतिमा का मस्तक	११वीं	वही
१९	२०	विष्णु-प्रतिमा का मस्तक	८वीं	वही
२०	२१	विष्णु	७वीं	वही
२१	२३	दम्पति	१३वीं	वही
२२	२४	शेषशायी-प्रतिमा जिसकी चौकी पर लेख उत्कीर्ण है	१२वीं	वही
२३	२५	वामन	१०वीं	विदिशा
२४	२६	पार्श्वनाथ प्रतिमा का निम्न भाग	?	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
२५	२७	यक्षी	शुंगकालीन	बेसनगर
२६	२८	शेषशायी	१०वीं	विदिशा
२७	२९	गणपति	१०वीं	वही
२८	३०	उमा-महेश्वर	११वीं	बेसनगर
२९	३१	उमा-महेश्वर	११वीं	विदिशा
३०	३४	लिपटे हुए सर्प	प्रथम शताब्दी ई०	वही
३१	३५	गज-शार्दूल	११वीं	वही
३२	३७	हस्ति का मस्तक	१३वीं	वही
३३	३८	हस्ति का मस्तक	१३वीं	वही
३४	४३	कीर्तिमुख	?	वही
३५	४७	खण्डित शिलालेख	?	वही
३६	४९	स्तम्भ पर उत्कीर्ण लेख। इस पर दो आकृतियाँ भी हैं—एक में एक स्त्री द्वारा शिव की पूजा करते बतलाया है तथा दूसरे में एक स्त्री को अश्व के साथ मैथुन करते बतलाया है	?	वही
३७	५२	अम्बिका प्रतिमा का खण्डित ऊपरी भाग	११वीं	वही
३८	५३	कल्कि तथा वराह	?	वही
३९	५४	गौरी	१३वीं	वही
४०	५५	अप्सरा	११वीं	वही
४१	५६	सूर्य	१०वीं	वही
४२	५७	नामिका जिसके ऊपरी भाग में शिव-लिंग अंकित है	?	वही
४३	५८	वास्तु-खण्ड जिस पर खड़ी तथा बैठी जैन प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं	?	वही
४४	५९	वही	?	वही
४५	६०	वही	?	वही
४६	६२	वही	?	वही
४७	६३	वही	?	वही
४८	६४	वही	?	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
४९	६५	जैन-प्रतिमा का शीर्ष	१२वीं	वही
५०	६७	शान्तिनाथ (मस्तक खण्डित)	११वीं	वही
५१	६८	पार्श्वनाथ (मस्तक खण्डित)	?	वही
५२	६९	चँवरधारिणी	१२वीं	वही
५३	७०	वास्तु-खण्ड	?	वही
५४	७५	यक्ष-प्रतिमा का धड़	दूसरी शताब्दी ई०	वही
५५	७६	विष्णु-प्रतिमा का पार्श्व भाग	११वीं	वही
५६	७७	वास्तु-खण्ड	?	वही
५७	७९	ब्रह्मा	१३वीं	वही
५८	८०	त्रि-विक्रम विष्णु का खण्डित भाग	?	वही
५९	८१	राधाकृष्ण (?)	?	वही
६०	८२	गोमेध-अम्बिका	?	वही
६१	८३	नृत्य-आकृतियाँ	?	वही
६२	८४	पुरुष-प्रतिमा का धड़	?	वही
६३	८५	वास्तु-खण्ड	?	वही
६४	८६	अलंकृत-वास्तुखण्ड	?	वही
६५	८८	सिरदल का खण्ड	?	वही
६६	९०	स्तम्भ का खण्ड	?	वही
६७	९१	स्थापत्य-खण्ड	?	वही
६८	९२	शिव-खड़े	?	वही
६९	९३	द्वार-पक्ष का खण्ड	?	वही
७०	९५	गंगा	?	वही
७१	९६	त्रि-मुखी-ब्रह्मा	?	उदयपुर
७२	९७	वास्तुखण्ड	?	विदिशा
७३	९९	शिला-खण्ड पर बनी मनुष्य आकृतियाँ तथा शिव-लिंग	?	वही
७४	१००	अप्सरा-प्रतिमाएँ	?	वही
७५	१०१	खड़ी स्त्री-प्रतिमा	?	वही
७६	१०२	तीन स्त्री आकृतियाँ	?	वही
७७	१०३	खण्डित स्तम्भ	?	वही
७८	१०४	स्तम्भ-शीर्ष जिसके एक ओर सिंह तथा दूसरी ओर गण बना है	?	वही
७९	१०५	किसी मन्दिर के शिखर का आम्लक	?	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
८०	१०७	सिरदल का खण्ड	?	वही
८१	१०८	वास्तु-खण्ड	?	वही
८२	११०	खण्डित स्तम्भ जिसपर तीन आकृतियाँ बनी हैं	?	वही
८३	१७०	आदिनाथ (बैठे)	१३वीं	अमरावद (रायसेन)
८४	१७१	नेमिनाथ	१३वीं	विदिशा
८५	१७२	तीर्थंकर	१३वीं	अमरावद
८६	१७३	आदिनाथ	१३वीं	वही
८७	१७५	विशाल जैन-प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
८८	१७६	विशाल जैन-प्रतिमा का निम्न भाग	वही	वही
८९	१७७	गोमेद-अम्बिका (चौकी पर उत्कीर्ण लेख)	१२वीं	वही
९०	१७८	स्त्री-प्रतिमा	१०वीं	वही
९१	१७९	वास्तु-खण्ड	१५वीं	विदिशा
९२	१८०	वही	वही	वही
९३	१८१	वही	वही	वही
९४	१८२	विष्णु-प्रतिमा का ऊपरी भाग	११वीं	गंगरवारा (विदिशा)
९५	१८३	दम्पति	१०वीं	अमरावद
९६	२१६	खड़ी स्त्री-प्रतिमा	?	बेसनगर
९७	२१८	दो खड़ी स्त्री-प्रतिमाएँ, सम्भवतः चँवर-धारिणी	?	विदिशा
९८	२१९	चतुर्भुज देवी, सम्भवतः दुर्गा	?	विदिशा
९९	२३९	सुरसुन्दरी	?	वही
१००	२४०	वही	?	वही
१०१	२४१	वही	?	वही
१०२	२४२	स्तम्भ-शीर्ष, जिसपर गण-आकृतियाँ बनी हैं	?	वही
१०३	२४४	अष्ट-भुजी दुर्गा	?	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१०४	२४६	तीर्थंकर-प्रतिमा, जिसकी चौकी पर गुप्त-सम्राट रामगुप्त का लेख अंकित है। इस प्रतिमा का मस्तक खण्डित है	गुप्तकालीन	डूंगरपुरा (बेसनगर) के निकट
१०५	२४७	वही	वही	वही
१०६	२४८	वही	वही	वही
१०७	२५७	विशाल तीर्थंकर प्रतिमा जिसका मस्तक तथा पाद खण्डित हैं	?	वही
१०८	२५९	तीर्थंकर चेहरा भग्न	?	देवराजपुर (विदिशा)
१०९	२६१	नागकन्या	?	वही
११०	२६२	विष्णु-प्रतिमा का खण्डित ऊपरी भाग	?	विदिशा
१११	२६३	खण्डित विष्णु प्रतिमा	?	विदिशा
११२	२६४	चतुर्भुज देवी (?)	?	वही
११३	२६५	चतुर्भुज देवता	?	वही
११४	२६६	कमलासन में बैठी प्रतिमा का खण्डित निम्न भाग	?	वही
११५	२६७	हरिहर (?) प्रतिमा जिसका मस्तक खण्डित है	?	वही
११६	२६८	खण्डित गणपति	?	वही
११७	२६९	नन्दी	?	वही
११८	२७०	वही	?	वही
११९	२७३	नन्दी		
१२०	२७५	स्तम्भ		वही
१२१	२७७	वही		
१२२	२७८	पुरुष प्रतिमा जिसका ऊपरी तथा निम्न भाग खण्डित है	?	गंगरवारा (विदिशा)
१२३	२७९	जैन प्रतिमा	?	वही
१२४	२८०	पार्श्वनाथ	?	वही
१२५	२८१	पार्श्वनाथ	?	वही
१२६	२८२	खण्डित पार्श्वनाथ प्रतिमा का ऊपरी भाग	?	वही
१२७	२८३	वराह	?	वही

६६

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१२८	२८४	खण्डित विष्णु-प्रतिमा का ऊपरी भाग	११वीं	वही
१२९	२९८	तीर्थंकर	?	देवराजपुर (विदिशा)
१३०	?	विशालकाय कुबेर यक्ष	प्रथम शताब्दी ई० पू०	बेसनगर
१३१	?	विशालकाय जैन-प्रतिमा जिसकी चौकी पर लेख उत्कीर्ण हैं	?	?
१३२	?	दो स्तम्भ	?	अहमदपुर
१३३	?	सर्वतोभद्रिका	१०वीं	बेसनगर

(घ) सिक्के

इस संग्रहालय में कुल ६९० सिक्के संग्रहीत हैं जो सभी मुस्लिम काल से सम्बन्धित हैं।

२४५३. जिला संग्रहालय—शिवपुरी

यह संग्रहालय अपने अद्वितीय जैन पाषाण-प्रतिमाओं के संग्रह के कारण प्रसिद्ध है। इस संग्रह की अधिकतर प्रतिमाएँ शिवपुरी जिले के नरवर नामक स्थान से एक तलघर में प्राप्त हुईं। इस तलघर का पता १९३६ में लगा जबकि दो बैलों की लड़ाई में अचानक ही एक बैल गड्ढे में गिर पड़ा जिसे निकालने के लिए गड्ढे को बड़े किये जाने के कारण इस तलघर का पता लगा। इसमें १६० जैन प्रतिमाएँ सुरक्षित प्राप्त हुईं। इन प्रतिमाओं के साथ और प्रतिमाएँ एकत्रित कर इस संग्रहालय का निर्माण हुआ। अब इस संग्रहालय में ५८२ प्रतिमाएँ सग्रहीत हैं जिनका संक्षिप्त विवरण नीचे लिखे अनुसार है। इन प्रतिमाओं के अतिरिक्त इस संग्रहालय में आवरा उत्खनन में प्राप्त मृद्भाण्डों के कुछ ठीकरे (संग्रहालय क्रमांक ५१७-५३५) संरक्षित हैं।

क्रमांक	संग्रहालय का क्रमांक	प्रतिमा का विवरण	प्रतिमा का काल (ईसवी शताब्दी में)	प्रतिमा का प्राप्ति-स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१	१	तीर्थंकर	११वीं-१२वीं	नरवर
२	२	अजितनाथ	वही	वही
३	३	सम्भवनाथ	वही	वही
४	४	अभिनन्दननाथ	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
५	५	पद्मप्रभ	वही	वही
६	६	सुपार्श्वनाथ	वही	वही
७	७	तीर्थंकर	वही	वही
८	८	श्रेयंशनाथ	वही	वही
९	९	सुमतिनाथ	वही	वही
१०	१०	धर्मनाथ	वही	वही
११	११	शान्तिनाथ	वही	वही
१२	१२	कुन्थनाथ	वही	वही
१३	१३	मल्लिनाथ	वही	वही
१४	१४	नेमिनाथ	वही	वही
१५	१५	पार्श्वनाथ	वही	वही
१६	१६	अजितनाथ और सम्भवनाथ	वही	वही
१७	१७	सम्भवनाथ और नेमिनाथ	वही	वही
१८	१८	शान्तिनाथ और महावीर	वही	वही
१९	१९	तीर्थंकर खड़े (ओपयुक्त प्रतिमा)	वही	वही
२०	२०	विमलनाथ	वही	वही
२१	२१	तीर्थंकर	वही	वही
२२	२२	तीर्थंकर	वही	वही
२३	२३	तीर्थंकर	वही	वही
२४	२४	तीर्थंकर	वही	वही
२५	२५	तीर्थंकर	वही	वही
२६	२६	शान्तिनाथ	वही	वही
२७	२७	पार्श्वनाथ	वही	वही
२८	२८	तीर्थंकर	वही	वही
२९	२९	पार्श्वनाथ	वही	वही
३०	३०	शान्तिनाथ	वही	वही
३१	३१	शान्तिनाथ	वही	वही
३२	३२	तीर्थंकर	वही	वही
३३	३३	तीर्थंकर	वही	वही
३४	३४	तीर्थंकर	वही	वही
३५	३५	तीर्थंकर	वही	वही
३६	३६	तीर्थंकर	वही	वही
३७	३७	तीर्थंकर	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
३८	३८	ऋषभनाथ	वही	वही
३९	३९	ऋषभनाथ	वही	वही
४०	४०	तीर्थंकर	वही	वही
४१	४१	शान्तिनाथ	वही	वही
४२	४२	पार्श्वनाथ	वही	वही
४३	४३	तीर्थंकर	वही	वही
४४	४४	तीर्थंकर	वही	वही
४५	४५	तीर्थंकर	वही	वही
४६	४७	वास्तुखण्ड	वही	वही
४७	४९	ऋषभनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
४८	५१	वास्तुखण्ड जिस पर आले में तीर्थंकर प्रतिमा बनायी गयी है	वही	वही
४९	५२	अजितनाथ	वही	वही
५०	५३	ऋषभनाथ	वही	वही
५१	५४	मल्लिनाथ	वही	वही
५२	५६	तीर्थनाथ	वही	वही
५३	५८	तीर्थंकर	वही	वही
५४	५९	ऋषभनाथ	वही	वही
५५	६०	पद्मनाथ	वही	वही
५६	६१	सुमतिनाथ	वही	वही
५७	६२	तीर्थंकर	वही	वही
५८	६३	कुन्थनाथ	वही	वही
५९	६४	तीर्थंकर	वही	वही
६०	६६	तीर्थंकर	वही	वही
६१	६७	तीर्थंकर	वही	वही
६२	६८	ऋषभनाथ	वही	वही
६३	६९	आले में बनी खड़ी नरसिंह प्रतिमा	वही	वही
६४	७०	श्रेयंसनाथ	वही	वही
६५	७१	अनन्तनाथ	वही	वही
६६	७२	धर्मनाथ	वही	वही
६७	७३	अभिनन्दननाथ	वही	वही
६८	७४	सम्भवनाथ	वही	वही
६९	७५	तीर्थंकर	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
७०	७६	मल्लिनाथ	वही	वही
७१	७७	पद्मप्रभ	वही	वही
७२	७८	तीर्थंकर	वही	वही
७३	७९	तीर्थंकर	वही	वही
७४	८०	मुनि सुव्रतनाथ	वही	वही
७५	८१	तीर्थंकर	वही	वही
७६	८२	तीर्थंकर	वही	वही
७७	८४	नेमिनाथ	वही	वही
७८	८५	महावीर	वही	वही
७९	८६	तीर्थंकर प्रतिमा की चौकी	वही	वही
८०	८७	तीर्थंकर	वही	वही
८१	८८	अरहनाथ	वही	वही
८२	८९	सम्भवनाथ	वही	वही
८३	९०	तीर्थंकर	वही	वही
८४	९१	अष्टकोन स्तम्भ जिस पर वि० सं० १५१७ का लेख उत्कीर्ण है	वही	वही
८५	९२	तीर्थंकर	वही	वही
८६	९३	तीर्थंकर	वही	वही
८७	९४	धर्मनाथ	वही	वही
८८	९५	तीर्थंकर	वही	वही
८९	९६	तीर्थंकर	वही	वही
९०	९७	तीर्थंकर	वही	वही
९१	९८	चन्द्रप्रभ	वही	वही
९२	९९	तीर्थंकर	वही	वही
९३	१००	तीर्थंकर	वही	वही
९४	१०१	नेमिनाथ	वही	वही
९५	१०२	तीर्थंकर	वही	वही
९६	१०३	सम्भवनाथ	वही	वही
९७	१०४	श्रेयंसनाथ	वही	वही
९८	१०५	महावीर	वही	वही
९९	१०६	सम्भवनाथ	वही	वही
१००	१०७	शान्तिनाथ	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१०१	१०८	तीर्थंकर	वही	वही
१०२	१०९	तीर्थंकर	वही	वही
१०३	११०	ऋषभनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१०४	१११	तीर्थंकर	वही	वही
१०५	११२	ऋषभनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१०६	११३	ऋषभनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१०७	११४	चन्द्रप्रभ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१०८	११५	तीर्थंकर	वही	वही
१०९	११६	पद्मप्रभ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
११०	११७	तीर्थंकर	वही	वही
१११	११८	महावीर प्रतिमा की चौकी	वही	वही
११२	११९	महावीर	वही	वही
११३	१२०	मल्लिनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
११४	१२१	तीर्थंकर	वही	वही
११५	१२२	तीर्थंकर प्रतिमा की चौकी	वही	वही
११६	१२३	अभिनन्दननाथ	वही	वही
११७	१२४	तीर्थंकर प्रतिमा की चौकी	वही	वही
११८	१२५	सम्भवनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
११९	१२६	चन्द्रप्रभ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१२०	१२७	नेमिनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१२१	१२८	नेमिनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१२२	१२९	पुष्पदन्त प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१२३	१३०	ऋषभनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१२४	१३१	अजितनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१२५	१३२	तीर्थंकर प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१२६	१३३	अजितनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१२७	१३४	नेमिनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१२८	१३५	सुपार्श्वनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१२९	१३६	तीर्थंकर प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१३०	१३७	सुपार्श्वनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१३१	१३८	प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१३२	१३९	चन्द्रप्रभ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१३३	१४०	तीर्थंकर प्रतिमा की चौकी	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(३)	(५)
१३४	१४१	सुमतिनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१३५	१४३	अजितनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१३६	१४४	महावीर प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१३७	१४५	अभिनन्दननाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१३८	१४७	पुष्पदन्त प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१३९	१४८	चन्द्रप्रभ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१४०	१४९	अभिनन्दननाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१४१	१५०	छत्र	वही	वही
१४२	१५१	छत्र	वही	वही
१४३	१५२	छत्र	वही	वही
१४४	१५३	छत्र	वही	वही
१४५	१५४	छत्र	वही	वही
१४६	१५५	छत्र	वही	वही
१४७	१५६	छत्र	वही	वही
१४८	१५७	उत्कीर्ण प्रस्तर-खण्ड	वही	वही
१४९	१५८	तीर्थंकर	वही	वही
१५०	१५९	तीर्थंकर	वही	वही
१५१	१६०	तीर्थंकर	वही	वही
१५२	१६१	तीर्थंकर	वही	वही
१५३	१६२	छत्र	वही	वही
१५४	१६३	तीर्थंकर	वही	वही
१५५	१६४	खण्डित जिन प्रतिमा	वही	वही
१५६	१६५	वास्तुखण्ड	वही	वही
१५७	१६६	तीर्थंकर प्रतिमा का निम्न भाग	वही	वही
१५८	१६७	नामिका जिस पर चौबीस तीर्थंकरों की लघु प्रतिमाएँ तथा चिन्ह बने हैं	वही	वही
१५९	१६८	छत्र	वही	वही
१६०	१६९	खण्डित हस्ति	वही	वही
१६१	१७०	वास्तुखण्ड जिसपर तीर्थंकर की प्रतिमा बनी है	वही	वही
१६२	१७१	वास्तु-खण्ड जिस पर आले में खड़ी देवी की प्रतिमा बनी है	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१६३	१७२	लघु मन्दिर आकार का वास्तु-खण्ड	वही	वही
१६४	१७३	तीर्थंकर	वही	वही
१६५	१७४	हस्ति	वही	वही
१६६	१७५	वास्तु-खण्ड	वही	वही
१६७	१७६	पार्श्वनाथ	वही	वही
१६८	१७७	खण्डित छत्र	वही	वही
१६९	१७९	वास्तुखण्ड जिस पर आले में तीर्थंकर प्रतिमा बनायी गयी है	वही	वही
१७०	१८०	खण्डित तीर्थंकर प्रतिमा	वही	वही
१७१	१८१	तीर्थंकर प्रतिमा का खण्डित हस्त	वही	वही
१७२	१८२	तीर्थंकर प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
१७३	१८३	तीर्थंकर प्रतिमा का खण्डित हस्त	वही	वही
१७४	१८४	तीर्थंकर प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
१७५	१८५	खण्डित छत्र	वही	वही
१७६	१८६	पार्श्वनाथ प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
१७७	१८७	प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
१७८	१८८	खण्डित प्रस्तर जिस पर तीर्थंकर का चेहरा बना है	वही	वही
१७९	१८९	खण्डित हस्त	वही	वही
१८०	१९०	वास्तुखण्ड	वही	वही
१८१	१९१	खण्डित प्रभावली	वही	वही
१८२	१९२	खण्डित प्रभावली	वही	वही
१८३	१९३	खण्डित हस्त	वही	वही
१८४	१९४	छत्र	वही	वही
१८५	१९५	छत्र	वही	वही
१८६	१९६	छत्र	वही	वही
१८७	१९७	वास्तुखण्ड जिस पर जैन देवियाँ बनी हैं	वही	वही
१८८	१९८	वास्तुखण्ड जिस पर तीर्थंकर प्रतिमा बनी है	वही	वही
१८९	१९९	छत्र	वही	वही
१९०	२००	वास्तुखण्ड जिस पर तीर्थंकर प्रतिमा बनी है	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१९१	२०१	पद्मप्रभ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१९२	२०२	धर्मनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१९३	२०३	अनन्तनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१९४	२०४	सम्भवनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
१९५	२०५	वास्तुखण्ड जिस पर तीर्थंकर प्रतिमा बनी है	वही	वही
१९६	२०६	वास्तुखण्ड जिस पर तीर्थंकर प्रतिमा बनी है	वही	वही
१९७	२०७	वास्तुखण्ड जिस पर लघु मन्दिर बना है	वही	वही
१९८	२०८	वास्तुखण्ड	वही	वही
१९९	२०९	छत्र	वही	वही
२००	२१०	लघु मन्दिर	वही	वही
२०१	२११	मन्दिर के शिखर का आम्लक	वही	वही
२०२	२१२	मस्तकविहीन चजर्भज देवी	वही	वही
२०३	२१३	वास्तुखण्ड	वही	वही
२०४	२१४	वास्तुखण्ड	वही	वही
२०५	२१५	शिखर खण्ड	वही	वही
२०६	२१६	खण्डित तीर्थंकर प्रलिमा	वही	वही
२०७	२१७	वास्तुखण्ड	वही	वही
२०८	२१८	वास्तुखण्ड	वही	वही
२०९	२१९	छत्र	वही	वही
२१०	२२०	वास्तुखण्ड	वही	वही
२११	२२१	चंवरधारिणी	वही	वही
२१२	२२२	खण्डित हस्ति	वही	वही
२१३	२२३	अम्बिका	वही	वही
२१४	२२४	वास्तुखण्ड जिस पर मकर तोरण	वही	वही
		बना है	वही	वही
२१५	२२५	वास्तुखण्ड	वही	वही
२१६	२२६	भग्न छत्र	वही	वही
२१७	२२७	वास्तुखण्ड	वही	वही
२१८	२२८	वास्तुखण्ड	वही	वही
२१९	२२९	मस्तक विहीन तीर्थंकर	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
२२०	२३०	वास्तुखण्ड	वही	वही
२२१	२३१	वास्तुखण्ड	वही	वही
२२२	२३२	ऋषभनाथ प्रतिमा की खण्डित चौकी	वही	वही
२२३	२३३	लघु मन्दिर का शिखर	वही	वही
२२४	२३४	लघु मन्दिर का शिखर	वही	वही
२२५	२३५	अष्टभुजी ज्वाला मालिनी	वही	वही
२२६	२३६	लघु मन्दिर का शिखर	वही	वही
२२७	२३७	लघु मन्दिर का शिखर	वही	वही
२२८	२३८	खण्डित तीर्थंकर प्रतिमा जिस पर लेख उत्कीर्ण है	वही	वही
२२९	२३९	तीर्थंकर प्रतिमा का निम्न भाग	वही	वही
२३०	२४०	खण्डित तीर्थंकर प्रतिमा जिस पर संवत् १३२९ का लेख उत्कीर्ण है	वही	वही
२३१	२४१	तीर्थंकर प्रतिमा जिसकी चौकी पर सम्वत् १३२९ का लेख उत्कीर्ण है	वही	वही
२३२	२४२	तीर्थंकर प्रतिमा जिसकी चौकी पर सम्वत् १३३४ का लेख उत्कार्ण है	वही	वही
२३३	२४३	तीर्थंकर प्रतिमा जिस पर सम्वत् १३४६ का लेख उत्कीर्ण है	वही	वही
२३४	२४४	चन्द्रप्रभा प्रतिमा जिस पर सम्वत् १३४४ का लेख उत्कीर्ण है	वही	वही
२३५	२४५	चन्द्रप्रभ प्रतिमा	वही	वही
२३६	२४६	तीर्थंकर प्रतिमा का आवक्ष	वही	वही
२३७	२४८	तीर्थंकर प्रतिमा का आवक्ष	वही	वही
२३८	२४९	लघु तीर्थंकर प्रतिमा	वही	वही
२३९	२५०	चँवरधारिणी	वही	वही
२४०	२५१	छत्र	वही	वही
२४१	२५२	तीर्थंकर प्रतिमा का खण्डित हस्त	वही	वही
२४२	२५३	खण्डित चौकी	वही	वही
२४३	२५४	जैन देवी प्रतिमा का खण्डित निम्न भाग	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
२४४	२५५	वास्तुखण्ड जिस पर तीर्थंकर बैठे बतलाये गये हैं	वही	वही
२४५	२५६	वास्तुखण्ड जिस पर युगल बैठे बतलाये गये हैं	वही	वही
२४६	२५७	खण्डित हस्ति	वही	वही
२४७	२५८	खड़ी पुरुष प्रतिमा	वही	वही
२४८	२५९	हस्ति	वही	वही
२४९	२६०	वास्तुखण्ड जिस पर कीर्तिमुख बना है	वही	वही
२५०	२६१	खण्डित हस्ति	वही	वही
२५१	२६२	चँवरधारिणी	वही	वही
२५२	२६३	चँवरधारिणी	वही	वही
२५३	२६४	वास्तुखण्ड जिस पर लघु मन्दिर का शिखर बना है	वही	वही
२५४	२६५	वास्तुखण्ड जिस पर तीर्थंकर की प्रतिमा बनी है	वही	वही
२५५	२६६	खण्डित छत्र	वही	वही
२५६	२६७	खण्डित प्रतिमा का भाग	वही	वही
२५७	२६८	मस्तक विहीन तीर्थंकर प्रतिमा	वही	वही
२५८	२६९	खण्डित छत्र	वही	वही
२५९	२७०	खण्डित हस्ति	वही	वही
२६०	२७१	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
२६१	२७२	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
२६२	२७३	खण्डित छत्र	वही	वही
२६३	२७४	वास्तुखण्ड	वही	वही
२६४	२७५	लघु तीर्थंकर प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
२६५	२७६	वास्तुखण्ड	वही	वही
२६६	२७७	जैन प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
२६७	२७८	खण्डित छत्र	वही	वही
२६८	२७९	खण्डित हस्ति	वही	वही
२६९	२८०	चँवरधारिणी	वही	वही
२७०	२८१	पार्श्वनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
२७१	२८२	खण्डित छत्र	वही	वही
२७२	२८३	खण्डित छत्र	वही	वही

(२)	(२)	(३)	(४)	(५)
२७३	२८४	सर्प कुण्डल	वही	वही
२७४	२८५	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
२७५	२८६	खण्डित हस्त	वही	वही
२७६	२८७	चँवर पकड़े पुरुष प्रतिमा	वही	वही
२७७	२८८	वास्तुखण्ड	वही	वही
२७८	२८९	ऋषभनाथ प्रतिमा की चौकी	वही	वही
२७९	२९०	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
२८०	२९१	तीर्थंकर प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
२८१	२९२	पुरुष प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
२८२	२९३	खण्डित छत्र	वही	वही
२८३	२९४	खण्डित तकिया	वहीं	वही
२८४	२९५	खण्डित छत्र	वही	वही
२८५	२९६	वास्तुखण्ड	वही	वही
२८६	२९७	तीर्थंकर प्रतिमा का निम्न भाग	वही	वही
२८७	२९८	खण्डित तकिया	वही	वही
२८८	२९९	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
२८९	३००	खण्डित तकिया	वही	वही
२९०	३०१	खण्डित चँवरधारिणी	वही	वही
२९१	३०२	खण्डित हस्त	वही	वही
२९२	३०३	वास्तुखण्ड	वही	वही
२९३	३०४	खण्डित तकिया	वही	वही
२९४	३०५	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
२९५	३०६	तीर्थंकर बैठे हुए	वही	पुरानी शिवपुरी
२९६	३०७	खण्डित तीर्थंकर प्रतिमा जिस पर लेख अंकित है	वही	वही
२९७	३०८	चतुर्भुज प्रतिमा (?)	वही	वही
२९८	३०९	खण्डित तीर्थंकर प्रतिमा	वही	नरवर
२९९	३१०	हस्ति का मस्तक	वही	वही
३००	३११	खण्डित हस्त	वही	वही
३०१	३१३	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
३०२	३१४	वास्तुखण्ड	वही	वही
३०३	३१५	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
३०४	३१६	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
३०५	३१७	वास्तुखण्ड	वही	वही
३०६	३१८	चँवरधारिणी	वही	वही
३०७	३१९	उमा-महेश्वर	वही	वही
३०८	३२०	खण्डित छत्र	वही	वही
३०९	३२१	खण्डित छत्र	वही	वही
३१०	३२२	खडिण्त तकिया	वही	वही
३११	३२३	खण्डित हस्ति	वही	वही
३१२	३२४	छत्र	वही	वही
३१३	३२५	वास्तुखण्ड	वही	वही
३१४	३२८	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
३१५	३२९	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
३१६	३३०	तीर्थंकर प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
३१७	३३१	गणेश (खण्डित)	वही	वही
३१८	३३२	छत्र	वही	वही
३१९	३३३	वास्तु खण्ड	वही	वही
३२०	३३४	वास्तु खण्ड	वही	वही
३२१	३३५	सुपार्श्वनाथ प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
३२२	३३६	खण्डित स्तम्भ युक्त आला	वही	वही
३२३	३३७	शेष पर विष्णु तथा लक्ष्मी	वही	वही
३२४	३३८	सूर्यं (?)	वही	वही
३२५	३३९	वास्तु-खण्ड जिस पर चँवरधारिणी प्रतिमा बनी है	वही	वही
३२६	३४०	खण्डित हस्ति	वही	वही
३२७	३४१	तीर्थंकर प्रतिमा का मस्तक	वही	पुरानी शिवपुरी
३२८	३४२	वही	वही	वही
३२९	३४३	वही	वही	वही
३३०	३४४	वही	वही	वही
३३१	३४५	वही	वही	वही
३३२	३४६	वही	वही	वही
३३३	३४७	वही	वही	वही
३३४	३४८	वही	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
३३५	३४६	वही	वही	वही
३३६	३५०	वही	वही	वही
३३७	३५१	पुरुष प्रतिमा का आवक्ष	वही	वही
३३८	३५२	पुरुष प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
३३९	३५३	विष्णु प्रतिमा का खण्डित मस्तक	वही	वही
३४०	३५५	स्त्री प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
३४१	३५३	विष्णु प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
३४२	३५५	स्त्री प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
३४३	३५६	खण्डित स्त्री प्रतिमा	वही	वही
३४४	३५७	स्त्री प्रतिमा का आवक्ष	वही	वही
३४५	३५८	पुरुष प्रतिमा	वही	वही
३४६	३५९	पार्वती	वही	वही
३४७	३६०	स्त्री प्रतिमा	वही	वही
३४८	३६१	स्त्री प्रतिमा का आवक्ष	वही	वही
३४९	३६२	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
३५०	३६३	स्त्री प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
३५१	३६४	पुरुष प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
३५२	३६५	स्त्री प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
३५३	३६६	प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
३५४	३६७	प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
३५५	३६८	चँवरधारिणी	वही	वही
३५६	३६९	प्रतिमा का आवक्ष	वही	वही
३५७	३७०	स्त्री प्रतिमा	वही	वही
३५८	३७१	हस्ति से युद्धरत मनुष्य	वही	वही
३५९	३७२	पुरुष प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
३६०	३७३	चँवरधारिणी	वही	वही
३६१	३७५	चतुर्भुज विष्णु	वही	वही
३६२	३७६	खण्डित हस्ति	वही	वही
३६३	३७७	प्रतिमा खण्ड	वही	नरवर
३६४	३७८	खण्डित छत्र	वही	वही
३६५	३७९	खण्डित प्रस्तर	वही	वही
३६६	३८०	खण्डित स्त्री प्रतिमा	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
३६७	३८१	खण्डित स्त्री प्रतिमा	वही	वही
३६८	३८२	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
३६९	३८३	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
३७०	३८४	खण्डित हस्त	वही	वही
३७१	३८५	खण्डित छत्र	वही	वही
३७२	३८६	खण्डित अलंकरण	वही	वही
३७३	३८७	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
३७४	३८८	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
३७५	३८९	खण्डित स्त्री प्रतिमा	वही	वही
३७६	३९०	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
३७७	३९१	पुरुष प्रतिमा का धड़	वही	वही
३७८	३९२	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
३७९	३९३	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
३८०	३९४	चतुर्भुज देवी	वही	वही
३८१	३९५	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
३८२	३९६	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
३८३	३९७	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
३८४	३९८	पुरुष प्रतिमा	वही	वही
३८५	३९९	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
३८६	४००	खण्डित सिंह (?)	वही	वही
३८७	४०१	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
३८८	४०२	षष्टभुजी देवी	वही	वही
३८९	४०३	वास्तुखण्ड	वही	वही
३९०	४०४	खण्डित सिंह	वही	वही
३९१	४०५–अ	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
३९२	४०५–आ	वास्तुखण्ड	वही	वही
३९३	४०७–अ	खण्डित हस्ति	वही	वही
३९४	४०७–आ	वास्तुखण्ड	वही	वही
३९५	४०८	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
३९६	४०६–अ	खण्डित हस्ति	वही	वही
३९७	४०६–आ	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
३९८	४०९	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
३९९	४१०	खण्डित स्त्री प्रतिमा	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
४००	४११	खण्डित तीर्थंकर प्रतिमा	वही	वही
४०१	४१२	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
४०२	४१३	खण्डित हस्ति	वही	वही
४०३	४१४	खण्डित मकर	वही	वही
४०४	४१५	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
४०५	४१६	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
४०६	४१७	चँवरधारिणी प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
४०७	४१८	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
४०८	४१९	चँवरधारिणी प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
४०९	४२०	प्रतिमा का धड़	वही	वही
४१०	४२१	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
४११	४२२	खण्डित सिंह	वही	वही
४१२	४२३	खण्डित स्त्री प्रतिमा	वही	वही
४१३	४२४	वास्तुखण्ड	वही	वही
४१४	४२५	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
४१५	४२६	खण्डित चँवरधारिणी	वही	वही
४१६	४२७	खण्डित हस्ति	वही	वही
४१७	४२८	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
४१८	४२९	खण्डित चँवरधारिणी	वही	वही
४१९	४३०	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
४२०	४३१	खण्डित हस्ति	वही	वही
४२१	४३२	पुरुष प्रतिमा का धड़	वही	वही
४२२	४३३	खडित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
४२३	४३४	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
४२४	४३५	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
४२५	४३६	खण्डित हस्ति	वही	वही
४२६	४३७	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
४२७	४३८	लघु तीर्थंकर प्रतिमा का खण्डित ऊपरी भाग	वही	वही
४२८	४३९	खण्डित सिंह	वही	वही
४२९	४४०	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
४३०	४४१	पुरुष प्रतिमा का आवक्ष	वही	वही
४३१	४४२	सर्प कुण्डल	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
४३२	४४३	गंधर्व प्रतिमा खण्ड	वही	वही
४३३	४४४	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
४३४	४४५	खण्डित हस्ति	वही	वही
४३५	४४६	कीर्तिमुख	वही	वही
४३६	४४७	तीर्थंकर प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
४३७	४४८	पुरुष प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
४३८	४४९	पुरुष प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
४३९	४५०	पुरुष प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
४४०	४५१	उत्कीर्ण प्रस्तर खण्ड	वही	पुरानी शिवपुरी
४४१	४५२	गरुड पर सवार विष्णु	वही	वही
४४२	४५३	प्रस्तर खण्ड	वही	वही
४४३	४५४	प्रस्तर खण्ड पर उत्कीर्ण कुबेर	वही	वही
४४४	४५५	दो चँवरधारिणी प्रतिमाएँ	वही	वही
४४५	४५६	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
४४६	४५७	द्वारपाल	वही	वही
४४७	४५८	छत्र	वही	वही
४४८	४५९	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
४४९	४६०	चतुर्भुज पुरुष प्रतिमा	वही	वही
४५०	४६१	चतुर्भुज गणेश प्रतिमा	वही	वही
४५१	४६२	खण्डित उत्कीर्ण स्तम्भ	वही	वही
४५२	४६३	चतुर्भुज पुरुष प्रतिमा	वही	वही
४५३	४६४	खण्डित प्रस्तर जिस पर तीर्थंकर प्रतिमा बनी है	वही	वही
४५४	४६५	खण्डित पुरुप प्रतिमा	वही	वही
४५५	४६६	खण्डित शृगाल प्रतिमा	वही	वही
४५६	४६७	चतुर्भुज विष्णु	वही	वही
४५७	४६८	पुरुष प्रतिमा	वही	वही
४५८	४६९	छत्र	वही	वही
४५९	४७०	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
४६०	४७१	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
४६१	४७२	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
४६२	४७३	प्रतिमा खण्ड	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
४६३	४७४	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
४६४	४७५	स्त्री प्रतिमा का आवक्ष	वही	वही
४६५	४७६	स्त्री प्रतिमा का आवक्ष	वही	वही
४६६	४७७	खण्डित हस्ति	वही	वही
४६७	४७८	प्रस्तर खण्ड जिस पर पुरुष तथा स्त्री प्रतिमा बनी हैं	वही	वही
४६८	४७९	खण्डित तीर्थंकर प्रतिमा	वही	वही
४६९	४८०	खण्डित स्त्री प्रतिमा	वही	वही
४७०	४८४	मस्तक विहीन तीर्थंकर प्रतिमा	वही	वही
४७१	४८५	मस्तक विहीन तीर्थंकर प्रतिमा	वही	वही
४७२	५०६	विष्णु प्रतिमा का मस्तक	वही	शिवपुरी जिलाध्यक्ष कार्यालय
४७३	५०७	पुरुष तथा स्त्री प्रतिमाएँ	वही	वही
४७४	५०८	मस्तक तथा हस्त विहीन विष्णु प्रतिमा	वही	वही
४७५	५०९	तीर्थंकर प्रतिमा	वही	पुरानी शिवपुरी
४७६	५१०	अज्ञात प्रतिमा	वही	शिवपुरी जिलाध्यक्ष कार्यालय
४७७	५११	पुरुष प्रतिमा का आवक्ष	वही	पुरानी शिवपुरी
४७८	५१२	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
४७९	५१३	गणेश और शक्ति	वही	वही
४८०	५१४	भैरव (?)	वही	वही
४८१	५१५	पुरुष प्रतिमा (?)	वही	शिवपुरी जिलाध्यक्ष कार्यालय
४८२	५१६	नृत्य-गणपति	वही	वही
४८३	५२६	हनुमान प्रतिमा का मस्तक	वही	दुंडाखेड़ी
४८४	५२७	वामन	वही	वही
४८५	५२८	पुरुष प्रतिमा	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
४८६	५२९	नृत्य-गणपति	वही	पाली राजगढ़
४८७	५३०	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
४८८	५३१	सिंह	वही	वही
४८९	५३२	खण्डित प्रस्तर पर अंकित युगल	वही	वही
४९०	५३३	खण्डित प्रस्तर पर अंकित तीर्थंकर	वही	वही
४९१	५३४	खण्डित स्तम्भ	वही	वही
४९२	५३५	खण्डित स्तम्भ	वही	वही
४९३	५३६	अलंकृत स्तम्भ	वही	वही
४९४	५३७	खण्डित प्रस्तर पर अंकित तीर्थंकर	वही	वही
४९५	५३८	खण्डित तीर्थंकर प्रतिमा	वही	वही
४९६	५३९	तीर्थंकर प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
४९७	५४०	बैठे तीर्थंकर	वही	वही
४९८	५४१	खण्डित तीर्थंकर प्रतिमा	वही	वही
४९९	५४२	खण्डित तीर्थंकर प्रतिमा	वही	वही
५००	५४३	बैठे तीर्थंकर	वही	वही
५०१	५४४	बैठे तीर्थंकर	वही	वही
५०२	५४५	बैठे तीर्थंकर	वही	वही
५०३	५४६	खण्डित तीर्थंकर प्रतिमा	वही	वही
५०४	५४७	खण्डित तीर्थंकर प्रतिमा	वही	वही
५०५	५४८	खण्डित तीर्थंकर प्रतिमा	वही	वही
५०६	५४९	खण्डित तीर्थंकर प्रतिमा	वही	वही
५०७	५५०	खण्डित तीर्थंकर प्रतिमा	वही	नरवर
५०८	५५१	खण्डित तीर्थंकर प्रतिमा	वही	वही
५०९	५५२	दो स्तम्भों के बीच बैठी स्त्री	वही	वही
५१०	५५३	प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
५११	५५४	स्त्री प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
५१२	५५५	स्त्री प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
५१३	५५६	तीर्थंकर प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
५१४	५५७	तीर्थंकर प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
५१५	५५८	तीर्थंकर प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
५१६	५५९	दशभुजी शिव प्रतिमा	वही	पीपलघर

(१)	(२)	(३)	(४)	(४)
५१७	५६०	खड़ी स्त्री प्रतिमा	वही	वही
५१८	५६१	खड़ी पुरुष प्रतिमा	वही	वही
५१९	५६२	खड़ी स्त्री प्रतिमा	वही	वही
५२०	५६३	पुरुष प्रतिमा खण्ड	वही	वही
५२१	५६४	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
५२२	५६५	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
५२३	५६६	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
५२४	५६७	स्त्री प्रतिमा	वही	मियाना (गुना)
५२५	५६८	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
५२६	५६९	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
५२७	५७०	बैठे युगल	वही	शिवपुरी जिला
५२८	५७१	स्त्री तथा पुरुष	वही	वही
५२९	५७२	चँवरधारिणी	वही	वही
५३०	५७३	बैठी देवी	वही	वही
५३१	५७४	गन्धर्व	वही	वही
५३२	५७५	खड़े पुरुष तथा स्त्री	वही	वही
५३३	५७६	खण्डित पुरुष तथा स्त्री	वही	वही
५३४	५७७	पुरुष तथा स्त्री	वही	वही
५३५	५७८	खण्डित तीर्थंकर	वही	वही
५३६	५७९	प्रस्तर पर बनी नृत्य आकृति	वही	वही
५३७	५८०	चतुर्भुज नृत्य-गणपति	वही	वही
५३८	५८१	खण्डित मस्तक	वही	वही
५३९	५८२	चतुर्भुज नृत्य-गणपति	वही	वही

२४५४. शासकीय संग्रहालय—धार

शासकीय संग्रहालय धार में मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व सम्बन्धी निम्नलिखित सामग्री संग्रहीत की गयी हैं—

(क) प्रागैतिहासिक तथा आद्य-ऐतिहासिक पुरावशेष

(१) महेश्वर से एकत्रित पाषाण युगीन औज़ार।

(२) गुजरी (धार) से प्राप्त जीवाश्म।

(३) नागदा से प्राप्त ताम्रपाषाण युगीन चित्रित मुद्भाण्ड।

(४) मनोटी तथा धमनार से प्राप्त ताम्रपाषाण-युग से गुप्त-युग तक के मृद्भाण्ड।

(५) नेपावली (धार) तथा केसुर (धार) से प्राप्त चित्रित मृद्भाण्ड ।

(ख) अभिलेख

संग्रहालय में परमार कालीन निम्नलिखित शिलालेख संरक्षित हैं—

(१) दो संगमरमरी-शिलाएँ, जिन पर संस्कृत तथा प्राकृत लेख उत्कीर्ण हैं।

(२) भोजशाला, धार से प्राप्त शिलालेख जिस पर कूर्मशतक उत्कीर्ण है।

(३) भोजशाला, धार से प्राप्त अर्जुनवर्मदेव प्रशस्ति।

(४) मालीबाड़ा मोहल्ला धार से प्राप्त शिलालेख जिस पर कोदण्डकाव्य उत्कीर्ण है।

(५) शिला-खण्ड क्रमांक १ जिस पर खड्गशतम् उत्कीर्ण है।

(६) शिला-खण्ड क्रमांक ४, २२, १२, ६, ७, ८, ९, १०, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५, २६-३४ जिन पर लेख उत्कीर्ण हैं।

(७) धार से प्राप्त शिलालेख जिस पर हिन्दी में लेख उत्कीर्ण है।

(ग) प्रतिमाएँ

संग्रहालय में निम्नलिखित प्रतिमाएँ संग्रहीत की गयी हैं—

क्रमांक	संग्रहालय की सूची क्रमांक	प्रतिमा का वर्णन	प्रतिमा का काल (ईसवी शताब्दी में)	प्रतिमा का प्राप्ति स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१	१	ब्रह्मा	१३वीं	सलकनपुर
२	२	दामोदर	१३वीं	वही
३	३	श्री विष्णु (काले ओपदार पत्थर की बनी)	वही	वही
४	४	उमा-महेश्वर	११वीं	बदनावर
५	५	उमा-महेश्वर	१०वीं	वही
६	६	श्री गोविन्द	१२वीं	धार
७	७	त्रिविक्रम	१३वीं	धार
८	८	अम्बिका	१३वीं	धार
९	९	?	११वीं	धार
		(लाल पत्थर की बनी प्रतिमा)		
१०	१०	इन्द्र अथवा कुबेर	१०वीं	वही
११	११	इन्द्र व शची	११वीं	वही
१२	१२	ब्रह्मदेव	१३वीं	धरमपुरी (धार)

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१३	१३	अर्धनग्न प्रतिमा	१३वीं	वही
१४	१४	देवी	१२वीं	वही
१५	१५	नन्दी (भग्न प्रतिमा)	वही	वही
१६	१६	मन्दिर के शिखर का भाग	?	वही
१७	१७	सरस्वती	१२वीं	बदनावर
१८	१८	भग्न प्रतिमा	वही	धार
१९	१९	ब्रह्मदेव	वही	वही
२०	०	देवी (पारिचारिका सहित)	वही	वही
२१	२१	विष्णु	१३वीं	वही
२२	२५	मार्कण्डेय	वही	वही
२३	२६	गंगा	वही	वही
२४	२७	वराह व नन्दी	?	माण्डव
२५	२८	चँवरधारिणी	१२वीं	धार
२६	३०	लक्ष्मी-नारायण	१४वीं	बदनावर
२७	३१	कीर्तिमुख	?	मनावर
२८	३२	देवी	?	धार
२९	३३	प्रभावली	?	धार
३०	३४	वही	?	वही
३१	३५	त्रिकोण	?	वही
३२	३६	प्रभावली का खण्ड	?	वही
३३	३७	श्वेताम्बर जैन प्रतिमा (खड़ी)	?	बदनावर
३४	३८	वृक्ष के नीचे खड़ी प्रतिमा	?	वही
३५	३९	कमलासन पर बैठी देवी	?	वही
३६	४०	देवी (खड़ी प्रतिमा)	?	वही
३७	४१	देवी (बैठी प्रतिमा)	?	वही
३८	४२	देवी (खड़ी प्रतिमा)	?	वही
३९	४३	खण्डित प्रतिमा का निम्न भाग	१३वीं	वही
४०	४४	माता तथा शिशु	११वीं	धार
४१	४५	सूर्य (खड़ी प्रतिमा)	१२वीं	धार
४२	४६	भग्न प्रतिमा	?	?
४३	४७	प्रतिमा का मस्तक	?	?
४४	४८	देवी (ललितासन में बैठी)	?	धार
४५	४९	देवी (खड़ी)	?	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
४६	५०	नरसिंह	?	?
४७	५१	देवी (ललितासन में बैठी)	?	धार
४८	५२	देवी (खड़ी, मस्तष्क विहीन)	?	धार
४९	५३	सिरदल का खण्डित भाग	?	धार
५०	५४	स्तम्भ का खण्डित भाग	?	धार
५१	५७-ए	चिन्तामणि पार्श्वनाथ	१२वीं	धार
५२	५८	विष्णु	१२वीं	धार
५३	५९	विष्णु	वही	वही
५४	६०	विष्णु (खण्डित)	वही	वही
५५	६१	यक्ष प्रतिमा का मस्तक	?	?
५६	६२	अम्बिका	१३वीं	धार
५७	६३	सूर्य	१०वीं	धार
५८	६५	प्रभावली (जैन)	वही	वही
५९	६६	जैन वास्तु खण्ड	?	?
६०	६७	तीर्थंकर	?	धार
६१	६८	तीर्थंकर (पद्मासन में बैठे आधार पर उत्कीर्ण लेख)	?	?
६२	६९	तीर्थंकर (खण्डित कमर के ऊपर का भाग)	१३वीं	?
६३	७०	तीर्थंकर (बैठे)	?	?
६४	७१	तीर्थंकर (खड़े)	?	?
६५	७२	तीर्थंकर (बैठे-आधार पर उत्कीर्ण लेख)	१२वीं	?
६६	७३	जैन प्रतिमा (खड़ी) (श्वेताम्बर)	?	?
६७	७४	तीर्थंकर (खड़े-नग्न) (खण्डित)	?	?
६८	७५	जैन-प्रतिमा का मस्तक	?	बदनावर
६९	७६	जैन-प्रतिमा की प्रभावली	?	?
७०	७७	तीर्थंकर (बैठे)—आधार पर उत्कीर्ण लेख	?	?
७१	७८	जैन-प्रतिमा की प्रभावली	?	धार
७२	७९	परिचारक	?	?

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
७३	?	तीर्थंकर (खण्डित-कमर के ऊपर का भाग-आधार पर उत्कीर्ण लेख)	?	?
७४	८०	जैन प्रभावली	?	?
७५	८०	जैन प्रभावली	?	?
७६	८२	तीर्थंकर (बैठे-खण्डित मस्तक-आधार पर उत्कीर्ण लेख)	संवत् १२२६	?
७७	८३	जैन वास्तु-खण्ड	?	?
७८	८४	तीर्थंकर (बैठे-खण्डित प्रतिमा—कमर के ऊपर का भाग)	?	?
७९	८५	तीर्थंकर (खड़े-दोनों हाथ खण्डित-आधार पर उत्कीर्ण लेख)	१३वीं	धार
८०	८६	खण्डित प्रतिमा	?	बदनावर
८१	८७	ब्रह्मदेव (खण्डित-केवल ऊपर का भाग)	?	वही
८२	८८	खण्डित प्रतिमा	?	वही
८३	८९	खण्डित स्त्री प्रतिमा	?	वही
८४	९०	जैन वास्तु-खण्ड (मध्य में तीर्थंकर)	?	धार
८५	९१	खण्डित जैन प्रतिमा (श्वेताम्बर)	?	वही
८६	९२	वही	?	वही
८७	९३	जैन प्रभावली का खण्डित भाग	?	वही
८८	९४	जैन प्रभावली का खण्डित भाग	?	वही
८९	९५	तीर्थंकर (बैठे)	१२वीं	वही
९०	९६	जैन प्रभावली का खण्डित भाग	?	?
९१	९७	तीर्थंकर (चौखट में बैठे)	?	?
९२	९८	श्वेताम्बर जैन प्रभावली	?	?
९३	९९	कमल पर ललितासन में बैठी देवी	?	बदनावर
९४	१००	जैन प्रतिमा (मस्तक खण्डित)	?	वही
९५	१०१	शिव-पार्वती (खण्डित)	?	वही
९६	१०२	जैन-प्रभावली	?	धार
९७	१०३	द्वारपाल	?	वही
९८	१०४	खण्डित प्रतिमा	?	धार

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
९९	१०५	जैन प्रभावली का खण्डित भाग	?	बदनावर
१००	१०६	गणपति	?	वही
१०१	१०७	उमा-महेश्वर	?	वही
१०२	१०८	उमा-महेश्वर	१०वीं	वही
१०३	१०९	खण्डित प्रतिमा का मस्तक	?	वही
१०४	११०	वही	?	वही
१०५	१११	देवी (खण्डित)	?	वही
१०६	११२	ब्रह्मदेव	?	वही
१०७	११३	जैन-प्रभावली	?	वही
१०८	११४	जैन-प्रतिमा (खड़ी)	?	वही
१०९	११५	जैन-प्रतिमा (खड़ी)	?	वही
११०	११६	उमा-महेश्वर	?	वही
१११	११७-२०	मन्दिर के द्वार के चौखट के तीन खण्डित भाग	?	वही
११२	१२१	स्तम्भ का खण्डित भाग	?	वही
११३	१२२	प्रतिमा का खण्डित भाग	?	वही
११४	१२३	प्रभावली का खण्डित भाग	?	?
११५	१२४	प्रतिमा के मस्तष्क (खण्डित)	?	?
११६	१२५	सूर्य	?	?
११७	१२६	प्रतिमा का मस्तक	?	धार
११८	१२७	यन्त्र (बीजमन्त्र)	परमार-कालीन	धार
११९	१२८	प्रतिमा का मस्तक	?	विदिशा
१२०	१७१	गधागाल स्तम्भ	?	धार
१२१	२९६	तीर्थंकर (खड़े)	?	वही
१२२	२९७	तीर्थंकर (बैठे)	?	वही
		(आधार पर उत्कीर्ण लेख)	?	वही
१२३	२९८	शान्तिनाथ (बैठे) (आधार पर उत्कीर्ण लेख)	?	वही
१२४	२९९	तीर्थंकर (बैठे) (आधार पर उत्कीर्ण लेख)	?	वही
१२५	३०४	नटी	११वीं	धार

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१२६	३०५	विष्णु	वही	वही
१२७	३४०	विष्णु	१२वीं	गंधवानी (धार)
१२८	३४१	विष्णु (बैठे)	?	वही
१२९	३४८	तीर्थंकर	१२वीं	धार
१३०	३४९	पद्मप्रभदेव	१२वीं	वही
१३१	३५०-५१	तीर्थंकर	वही	वही
१३२	३५२	देवी	?	?
१३३	३५३	स्तम्भ जिस पर जैन प्रतिमा उत्कीर्ण है	?	?
१३४	३५५	स्तम्भ पर उत्कीर्ण देवी	?	?
१३५	३५६	स्तम्भ पर उत्कीर्ण तीन तीर्थंकर-प्रतिमाएँ	?	?
१३६	३५७	स्तम्भ पर उत्कीर्ण खड़ी तीर्थंकर प्रतिमा	?	?
१३७	३५९	तीर्थंकर प्रतिमा (छोटी)	१२वीं	धार
१३८	३६०	तीर्थंकर	वही	वही
१३९	३६१	एक छोटी प्रतिमा	?	?
१४०	३६२	तीर्थंकर (बैठे)	१२वीं	धार
१४१	३६६	गोमुख यक्ष	१३वीं	धार
१४२	३६७-६८	दो तीर्थंकर प्रतिमाएँ	?	?
१४३	३७४	खण्डित देव-प्रतिमा	?	आवरा
१४४	३७५	खण्डित देवी (बैठी प्रतिमा)	?	वही
१४५	३८७	यज्ञ-वराह (भग्न)	९वीं	धार
१४६	३८८	ब्रह्माणी	?	गंधवानी
१४७	३९१	चतुर्भुज देव प्रतिमा	?	?
१४८	३९२	खण्डित स्तम्भ का भाग	?	?
१४९	३९३	चँवरधारिणी	?	?
१५०	३९४	लक्ष्मी-नारायण	?	?
१५१	३९८	देवी (ललितासन में बैठी)	?	धार
१५२	४००	विष्णु की लघु प्रतिमा	१२वीं	धार
१५३	४०१	कामधेनु	वही	वही
१५४	४०३	नरसिंह	?	वही
१५५	४०४	तीर्थंकर (बैठे)	?	वही

(१)	(२)	(३)	(१)	(५)
१५६	४०२	मिश्रित धातु की बनी तीर्थंकर प्रतिमा (संग्रहालय में केवल यही एक धातु प्रतिमा है)	१२वीं	धार

(घ) सिक्के तथा मुहर

संग्रहालय में निम्नलिखित सिक्के तथा मुहर संग्रहीत हैं जो उज्जैन से प्राप्त किये गये—

(१) आहत — ११
(२) कार्तिकेय — ११
(३) आंध्र — २
(४) नाग — १
(५) महाकाल — १
(६) जिष्णु — १
(७) छोटे चौकोर— ३

संग्रहालय में बल्लाल (?) की एक मिट्टी की बनी मुहर संरक्षित है। इनके अतिरिक्त धार से प्राप्त कुछ ताँबे के सिक्के भी संरक्षित हैं।

(च) अन्य वस्तुएँ

अन्य वस्तुओं में—

(१) माकणी से प्राप्त परमार कालीन ईंटें;

(२) माकणी, केसुर, गंधवानी तथा उज्जैन से प्राप्त मिट्टी के खिलौने तथा अन्य वस्तुएँ;

(३) नागदा, धार, केसुर से प्राप्त मुद्रांकन, मिट्टी के खिलौने मृद्भाण्ड आदि उल्लेखनीय हैं।

२४५५. शासकीय संग्रहालय—भानपुरा (जिला मन्दसौर)

इस संग्रहालय में मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व की महत्त्वपूर्ण सामग्री संरक्षित है जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

(अ) उत्खनन-सामग्री

मन्दसौर जिले में आवरा, मनोटी तथा इन्द्रगढ़ के उत्खनन में जो पुरावशेष प्राप्त हुए उनमें से प्राचीन ईंटें, मिट्टी की नादें आदि कुछ पुरावशेष इस संग्रहालय में संरक्षित किये गये हैं।

(आ) पाषाण प्रतिमाएँ

इस संग्रहालय में महत्वपूर्ण पाषाण प्रतिमाएँ संरक्षित हैं, जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

क्रमांक	संग्रहालय सूची क्रमांक	प्रतिमा का विवरण	प्रतिमा का काल	प्रतिमा का प्राप्ति स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१	१	सेवक	११वीं एवं १२वीं शताब्दी ई०	गड़ोद
२	२	ब्रह्मागण	वही	सुजानपुरा
३	३	सेविका	वही	अंसर
४	४	शिवगण व चँवरधारणी	वही	मोड़ी
५	५	गणेश	वही	मालासेरी
६	६	देवी	वही	अंसर
७	७	विष्णु	वही	इन्द्रगढ़
८	८	सेवक	वही	सुजानपुरा
९	९	पार्वती	वही	सुजानपुरा
१०	१०	महिषासुरमर्दिनी	वही	अंसर
११	११	देवी	वही	लौटखेड़ी
१२	१२	अग्नि	वही	मोड़ी
१३	१३	सेवक	वही	इन्द्रगढ़
१४	१४	सेविका	वही	अंसर
१५	१५	शिव	वही	लोटखेड़ी
१६	१६	भैरव	वही	मोड़ी
१७	१७	सेवक	वही	मोड़ी
१८	१८	शिव	वही	सुजानपुरा
१९	१९	महिषासुरमर्दिनी	वही	मालासेरी
२०	२०	विष्णु	वही	अंसर
२१	२१	भैरव	वही	सुजानपुरा
२२	२२	महिषासुरमर्दिनी	वही	अंसर
२३	२३	सेविका व सेवक	वही	मालासेरी
२४	२४	भैरव	वही	सुजानपुरा
२५	२५	ब्रह्मा	वही	सुजानपुरा
२६	२६	ब्रह्मा	वही	मालासेरी
२७	२७	विष्णु	वही	इन्द्रगढ़

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
२८	२८	बौद्ध प्रतिमा	वही	सुजानपुरा
२६	२६	लक्ष्मीनारायण	वही	अंसर
३०	३०	तीर्थंकर	वही	भुजगढ़
३१	३१	पार्वती	वही	अंसर
३२	३२	लक्ष्मीनारायण	वही	सुजानपुरा
३३	३३	तीर्थंकर	वही	भुजगढ़
३४	३४	सरस्वती	वही	सुजानपुरा
३५	३५	कृष्ण	वही	खिलचीपुर
३६	३६	पारसमल	वही	भुजगढ़
३७	३७	विष्णु	वही	शंकाधार
३८	३८	लक्ष्मीनारायण	वही	अंसर
३६	३६	तीर्थंकर	वही	भुजगढ़
४०	४०	गणेश व ऋद्धि	वही	कुन्ना
४१	४१	कृष्ण	वही	सुजानपुरा
४२	४२	पार्श्वनाथ	वही	भुजगढ़
४३	४३	नर्मदादेवी	वही	भुजगढ़
४४	४४	चक्रेश्वरी	वही	लोटखेड़ी
४५	४५	विष्णु	वही	बुन्भर
४६	४६	शिव	वही	लोटखेड़ी
४७	४७	पार्वती	वही	मालासेरी
४८	४८	विष्णु	वही	सुजानपुरा
४६	४६	सूर्य	वही	खिलचीपुर
५०	५०	विष्णु	वही	सीताखल्ली
५१	५१	बाराही	वही	इन्द्रगढ़
५२	५२	वराह	वही	सुजानपुरा
५३	५३	सेविका	वही	इन्द्रगढ़
५४	५४	वाराही	वही	मोड़ी
५५	५५	रामदेव	वही	गुड़ल्ा
५६	५६	पार्वती	वही	इन्द्रगढ़
५७	५७	शिव	वही	इन्द्रगढ़
५८	५८	ब्रह्माणी	वही	इन्द्रगढ़
५६	५६	महिषासुरमर्दिनी	वही	इन्द्रगढ़
६०	६०	विष्णु	वही	इन्द्रगढ़

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
६१	६१	कुबेर	वही	इन्द्रगढ़
६२	६२	देवी	वही	इन्द्रगढ़
६३	६३	विष्णु	वही	इन्द्रगढ़
६४	६४	महिषासुरमर्दिनी	वही	इन्द्रगढ़
६५	६५	नन्दी	वही	वही
६६	६६	शिलालेख	वही	वही
६७	६७	स्तम्भ	वही	वही
६८	६८	शिवलिंग	वही	वही
६९	६९	मूर्ति खण्ड	वही	वही

गांधी—सागर चम्बल डेम नं० १ पर रखी मूर्तियों की सूची

क्रमांक	मूर्ति विवरण	काल	प्राप्ति स्थान
१	तोरण द्वार	?	?
२	नन्दी	?	?
३	जलहरी	?	?
४	मकर मुंह फैलाये हुए	?	?
५	व्याल	?	?
६	लकुलीश	?	?
७	मकर नामिका (खण्डित)	?	?
८	चतुर्भुज भैरव	?	?
९	उमा-महेश्वर	?	?
१०	चँवरधारिणी	?	?
११	द्विभुजी पुरुष प्रतिमा	?	?
१२	असुरों की पंक्ति	?	?
१३	चामुण्डा	?	?
१४	शिल्प खण्ड	?	?
१५	चतुर्भुज शेषशायी विष्णु	?	?
१६	गणपति	?	?
१७	शिल्प खण्ड	?	?
१८	विष्णु (खड़े हुए)	?	?
१९	शिव (खड़े हुए)	?	?
२०	गणपति	?	?
२१	हनुमान	?	?
२२	विष्णु	?	?

(१)	(२)	(३)	(४)
२३	शिल्पखण्ड	?	?
२४	अभिलेख	?	?
२५	शिल्पखण्ड	?	?
२६	शिल्पखण्ड	?	?
२७	चामुण्डा	?	?
२८	त्रिमूर्ति	?	?
२९	मूर्तिखण्ड	?	?
३०	ताण्डव नृत्य करते शिव	?	?
३१	शिब प्रतिमा का मस्तक	?	?
३२	शिल्प खण्ड	?	?
३३	दुर्गा	?	?
३४	शिव (खड़े हुए)	?	?
३५	मूर्ति खण्ड	?	?
३६	महिषासुरमर्दिनी	?	?
३७	शिल्पखण्ड	?	?
३८	भग्न मूर्ति (विष्णु ?)	?	?
३९	नन्दी	?	?

२४५६. स्थानीय पुरातत्व संग्रहालय, गन्धर्वपुरी (देवास)

इस संग्रहालय में जो पाषाण प्रतिमाएँ संरक्षित की गई हैं, उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :—

क्रमांक	संग्रहालय क्रमांक	प्रतिमा का विवरण	प्रतिमा का काल	प्रतिमा का प्राप्ति स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१	१	तीर्थंकर	अज्ञान	अज्ञान
२	२	तीर्थंकर	वही	वही
३	३	द्वारपाल (त्रिभंगमुद्रा)	वही	वही
४	४	द्वारपाल	वही	वही
५	५	द्वारपाल	वही	वही
६	६	द्वारपाल	वही	वही
७	७	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
८	८	तीर्थंकर (बैठे)	वही	वही
९	९	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१०	१०	स्त्री द्वारपालिका	वही	वही
११	११	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
१२	१२	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
१३	१३	देवी (भूमिस्पर्श मुद्रा में)	वही	वही
१४	१४	चक्रेश्वरी देवी (गरुड पर बैठी)	वही	वही
१५	१५	खण्डित स्त्री प्रतिमा (वक्ष के ऊपर का भाग)	वही	वही
१६	१६	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
१७	१७	उमा-महेश्वर (साथ में गणपति)	वही	वही
१८	१८	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
१९	१९	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
२०	२०	विष्णु (खण्डित)	वही	वही
२१	२१	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
२२	२२	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
२३	२३	द्वारपाल (त्रिभंग मुद्रा में)	वही	वही
२४	२४	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
२५	२५	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
२६	२६	शिव-पार्वती (पाणिग्रहण)	वही	वही
२७	२७	व्याल	वही	वही
२८	२८	द्वारपाल (खण्डित)	वही	वही
२९	२९	विष्णु (गरुड पर बैठे)	वही	वही
३०	३०	चंवरधारिणी	वही	वही
३१	३१	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
३२	३२	खण्डित स्तम्भ	वही	वही
३३	३३	पाँच तीर्थंकर	वही	वही
३४	३४	मंदिर-द्वार का खण्ड	वही	वही
३५	३५	खण्डित देवी प्रतिमा	वही	वही
३६	३६	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
३७	३७	खण्डित स्तम्भ	वही	वही
३८	३८	मकर मुख	वही	वही
३९	३९	शिव (ध्यानस्थ मुद्रा में)	वही	वही
४०	४०	यक्ष	वही	वही
४१	४१	अलंकृत स्तम्भ खण्ड	वही	वही
४२	४२	तीर्थंकर (बैठे)	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
४३	४३	छत का अलंकृत खण्ड	वही	वही
४४	४४	छत का अलंकृत खण्ड	वही	वही
४५	४५	प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
४६	४६	शिव-पार्वती	वही	वही
४७	४७	द्वारपालिका (त्रिभंग मुद्रा में)	वही	वही
४८	४८	द्वारपालिका	वही	वही
४९	४९	द्वारपालिका	वही	वही
५०	५०	उमा-महेश्वर	वही	वही
५१	५१	देवी प्रतिमा	वही	वही
५२	५२	उमा-महेश्वर	वही	वही
५३	५३	स्तम्भ-खण्ड	वही	वही
५४	५४	द्वारपालिका	वही	वही
५५	५५	द्वारपालिका	वही	वही
५६	५६	द्वारपालिका	वही	वही
५७	५७	हस्ति तथा सिंह	वही	वही
५८	५८	देव प्रतिमा	वही	वही
५९	५९	शिव	वही	वही
६०	६०	उमा-महेश्वर	वही	वही
६१	६१	तीर्थंकर (ध्यानस्थ मुद्रा में)	वही	वही
६२	६२	अंबिका	वही	वही
६३	६३	द्वारपालिका	वही	वही
६४	६४	तीर्थंकर (ध्यानस्थ)	वही	वही
६५	६५	द्वारपाल	वही	वही
६६	६६	अलंकृत स्तम्भ खण्ड	वही	वही
६७	६७	द्वारपाल	वही	वही
६८	६८	दो तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
६९	६९	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
७०	७०	तीर्थंकर (बैठे)	वही	वही
७१	७१	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
७२	७२	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
७३	७३	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
७४	७४	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
७५	७५	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
७६	७६	तीर्थंकर (कमर के ऊपर का भाग)	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
७७	७७	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
७८	७८	तीर्थंकर (बैठे)	वही	वही
७९	७९	दो तीर्थंकर	वही	वही
८०	८०	देवी प्रतिमा	वही	वही
८१	८१	तीर्थंकर (बैठे)	वही	वही
८२	८२	तीर्थंकर (बैठे)	वही	वही
८३	८३	तीर्थंकर (बैठे)	वही	वही
८४	८४	स्त्री व पुरुष खण्डित प्रतिमा	वही	वही
८५	८५	तीर्थंकर के पैर	वही	वही
८६	८६	विष्णु प्रतिमा के वक्ष के ऊपर का भाग	वही	वही
८७	८७	मस्तक रहित उमा-महेश्वर	वही	वही
८८	८८	विष्णु प्रतिमा का सिर	वही	वही
८९	८९	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
९०	९०	अंबिका	वही	वही
९१	९१	तीर्थंकर (बैठे)	वही	वही
९२	९२	देवी	वही	वही
९३	९३	तीर्थंकर (बैठे)	वही	वही
९४	९४	शिल्प खण्ड	वही	वही
९५	९५	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
९६	९६	वराह (दो खण्डों में)	वही	वही
९७	९७	तीर्थंकर (बैठे)	वही	वही
९८	९८	शिल्प खण्ड	वही	वही
९९	९९	शिल्प खण्ड	वही	वही
१००	१००	द्वार खण्ड	वही	वही
१०१	१०१	तीर्थंकर (कमर के ऊपर का भाग)	वही	वही
१०२	१०२	चार तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
१०३	१०३	चतुर्मुखी देव	वही	वही
१०४	१०४	ब्रह्मा	वही	वही
१०५	१०५	वराह रूप	वही	वही
१०६	१०६	देवी (बैठी)	वही	वही
१०७	१०७	शिव	वही	वही
१०८	१०८	महिषासुरमर्दिनी	वही	वही
१०९	१०९	उमा-महेश्वर	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
११०	११०	विष्णु	वही	वही
१११	१११	नन्दी	वही	वही
११२	११२	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
११३	११३	विष्णु	वही	वही
११४	११४	देवी (त्रिभंग मुद्रा में)	वही	वही
११५	११५	तीन महात्मा	वही	वही
११६	११६	गंधर्व	वही	वही
११७	११७	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
११८	११८	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
११९	११९	तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
१२०	१२०	स्त्री-पुरुष	वही	वही
१२१	१२१	मूर्ति-खण्ड	वही	वही
१२२	१२२	द्वारपालिकाएँ	वही	वही
१२३	१२३	खण्डित प्रतिमा के कमर के नीचे का भाग	वही	वही
१२४	१२४	पार्वती	वही	वही
१२५	१२५	खम्भ-खण्ड	वही	वही
१२६	१२६	मूति-खण्ड	वही	वही
१२७	१२७	प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
१२८	१२८	स्तम्भ-खण्ड	वही	वही
१२९	१२९	प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
१३०	१३०	तीर्थंकर प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
१३१	१३१	मूर्ति-खण्ड	वही	वही
१३२	१३२	तीर्थंकर प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
१३३	१३३	मूर्ति-खण्ड	वही	वही
१३४	१३४	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१३५	१३५	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१३६	१३६	विष्णु	वही	वही
१३७	१३७	देवी	वही	वही
१३८	१३८	मूर्ति खण्ड	वही	वही
१३९	१३९	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१४०	१४०	द्वारपालिका	वही	वही
१४१	१४१	मकर-मुख	वही	वही
१४२	१४२	मूर्ति-खण्ड	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१४३	१४३	द्वारपाल	वही	वही
१४४	१४४	द्वारपालिका	वही	वही
१४५	१४५	शिव	वही	वही
१४६	१४६	शिवलिंग	वही	वही
१४७	१४७	नन्दी	वही	वही
१४८	१४८	तीर्थंकर (कमर के ऊपर का भाग)	वही	वही
१४९	१४९	विष्णु (चक्रेश्वर)		
१५०	१५०	सिंह	वही	वही
१५१	१५१	देव प्रतिमा	वही	वही
१५२	१५२	देव प्रतिमा	वही	वही
१५३	१५३	स्त्री-पुरुष	वही	वही
१५४	१५४	द्वारपाल व द्वारपालिका	वही	वही
१५५	१५५	मूर्ति खण्ड	वही	वही
१५६	१५६	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१५७	१५७	द्वारपालिका	वही	वही
१५८	१५८	चक्रेश्वरी देवी	वही	वही
१५९	१५९	द्वारपालिका	वही	वही
१६०	१६०	द्वारपालिका	वही	वही
१६१	१६१	अलकृत स्तम्भ खण्ड	वही	वही
१६२	१६२	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१६३	१६३	अलंकृत द्वार खण्ड	वही	वही
१६४	१६४	अलंकृत द्वार खण्ड	वही	वही
१६५	१६५	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१६६	१६६	तीर्थंकर	वही	वही
१६७	१६७	देव प्रतिमा	वही	वही
१६८	१६८	खण्डित देवी प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
१६९	१६९	देवी प्रतिमा	वही	वही
१७०	१७०	वारह तीर्थंकर (खड़े)	वही	वही
१७१	१७१	स्तम्भ खण्ड	वही	वही
१७२	१७२	स्तम्भ खण्ड	वही	वही
१७३	१७३	तीर्थंकर (ध्यानावस्थ)	वही	वही
१७४	१७४	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१७५	१७५	तीर्थंकर (बैठे)	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१७६	१७६	स्तम्भ खण्ड	वही	वही
१७७	१७७	तीर्थंकर	वही	वही
१७८	१७८	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१७९	१७९	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१८०	१८०	प्रतिमा खण्ड	वही	वही

२४५७. स्थानीय पुरातत्व संग्रहालय आशापुरी (रायसेन)

स्थानीय भूतनाथ मन्दिर, बिलौटा मन्दिर तथा ग्राम पंचायत भवन में कुछ पाषाण प्रतिमाएँ संरक्षित की गयीं हैं। इनमें से भूतनाथ मन्दिर का संग्रह सबसे महत्वपूर्ण है जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

क्रमांक	संग्रहालय क्रमांक	प्रतिमा का विवरण	प्रतिमा काल (ईसवी शताब्दी में)	प्रतिमा का प्राप्ति स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१	३	खण्डित स्तम्भ	अज्ञात	आशापुरी
२	१	शिव-पार्वती	वही	वही
३	२	शिव-पार्वती	वही	वही
४	७	पुरुष	वही	वही
५	५	सूर्य	वही	वही
६	४	पुरुष	वही	वही
७	६	दो पुरुष	वही	वही
८	८	पाँच प्रतिमाएँ	वही	वही
९	९	नरसिंह	वही	वही
१०	१०	शिव-पार्वती	वही	वही
११	११	वराह	वही	वही
१२	१२	कमण्डलधारी पुरुष	वही	वही
१३	१४	प्रतिमा का आवक्ष	वही	वही
१४	१३	विष्णु (खण्डित)	वही	वही
१५	१५	शिव (नृत्य मुद्रा में)	वही	वही
१६	१६	पुरुष	वही	वही
१७	१७	स्त्री	वही	वही
१८	१८	मिथुन	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१९	१९	शिखर	वही	वही
२०	२०	स्त्री प्रतिमा	वही	वही
२१	२१	गणेश	वही	वही
२२	२२	पुरुष (खड़े)	वही	वही
२३	२३	पुरुष	वही	वही
२४	२४	कुबेर	वही	वही
२५	२५	पुरुष	वही	वही
२६	२६	चार मिथुन प्रतिमाएँ	वही	वही
२७	२७	स्तम्भ	वही	वही
२८	२८	कंकाल	वही	वही
२९	२९	स्त्री प्रतिमा	वही	वही
३०	३०	मिथुन	वही	वही
३१	३१	पुरुष	वही	वही
३२	३२	पुरुष	वही	वही
३३	३४	शिव तथा विष्णु	वही	वही
३४	३३	पुरुष	वही	वही
३५	३६	त्रिमुखी प्रतिमा	वही	वही
३६	३५	नृत्य गणपति	वही	वही
३७	३७	व्याल	वही	वही
३८	३८	चार प्रतिमाएँ (खड़ी)	वही	वही
३९	४०	सूर्य (खड़े)	वही	वही
४०	४३	स्त्री (खड़ी)	वही	वही
४१	४१	स्त्री (खड़ी)	वही	वही
४२	४२	विष्णु	वही	वही
४३	४३	सूर्य	वही	वही
४४	४७	दो प्रतिमाएँ	वही	वही
४५	४९	दो प्रतिमाएँ	वही	वही
४६	५०	स्त्री	वही	वही
४७	५५	स्त्री-पुरुष	वही	वही
४८	५१	विष्णु तथा लक्ष्मी	वही	वही
४९	५२	स्त्री-पुरुष	वही	वही
५०	५६	विष्णु	वही	वही
५१	५३	ब्रह्मा	वही	वही
५२	१३६	दो स्त्री	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
५३	१३८	मिथुन	वही	वही
५४	१४१	विष्णु	वही	वही
५५	१३७	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
५६	५४	स्त्री-पुरुष	वही	वही
५७	४५	मिथुन	वही	वही
५८	१३५	चतुर्भुज प्रतिमा	वही	वही
५९	१३४	विष्णु प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
६०	१३३	शिव (खड़े)	वही	वही
६१	—	दुर्गा	वही	वही
६२	१३१	शिव	वही	वही
६३	१३१	महिषासुरमर्दिनी	वही	वही
६४	१५९	शिव-पार्वती	वही	वही
६५	१५८	शिव-पार्वती	वही	वही
६६	१५७	पुरुष	वही	वही
६७	१५८	पुरुष	वही	वही
६८	१५४	पुरुष	वही	वही
६९	—	कार्तिकेय	वही	वही
७०	१५३	स्त्री-पुरुष	वही	वही
७१	१५५	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
७२	१४८	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
७३	१४७	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
७४	१५०	त्रिमूर्ति	वही	वही
७५	१४९	नरसिंह	वही	वही
७६	१४६	पुरुष (खड़े)	वही	वही
७७	१४५	शिव-पार्वती	वही	वही
७८	८७	गज-शार्दूल	वही	वही
७९	१४२	शिव-पार्वती	वही	वही
८०	१४३	स्त्री प्रतिमा	वही	वही
८१	१३९	पुरुष खण्डित	वही	वही
८२	—	प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
८३	—	प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
८४	१८५	प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
८५	—	प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
८६	—	प्रतिमा का मस्तक	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
८७	१४०	पुरुष खण्डित	वही	वही
८८	१७४	शेषशायी विष्णु	वही	वही
८९	८५	तीन स्त्री प्रतिमाएँ	वही	वही
९०	—	खण्डित स्तम्भ	वही	वही
९१	१७९	नृत्य गणपति	वही	वही
९२	७९	पुरुष	वही	वही
९३	७८	पुरुष	वही	वही
९४	६०	पुरुष	वही	वही
९५	६१	पुरुष (बैठे)	वही	वही
९६	६३	अलंकरण	वही	वही
९७	५९	स्त्री-पुरुष	वही	वही
९८	६२	ब्रह्मा	वही	वही
९९	१६८	व्याल	वही	वही
१००	१७८	नृत्य गणपति	वही	वही
१०१	५८	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	वही
१०२	६४	पुरुष	वही	वही
१०३	१७२	सूर्य	वही	वही
१०४	६५	अलंकरण	वही	वही
१०५	५७	अलंकरण	वही	वही
१०६	१७१	ब्रह्मा	वही	वही
१०७	१६६	नरसिंह	वही	वही
१०८	—	स्त्री-पुरुष	वही	वही
१०९	१७३	पुरुष	वही	वही
११०	१७७	दो पुरुष	वही	वही
१११	१६७	देव प्रतिमा	वही	वही
११२	१६९	दो प्रतिमाएँ	वही	वही
११३	१७५	कुबेर	वही	वही
११४	—	देव प्रतिमा	वही	वही
११५	६७	शिव	वही	वही
११६	१६३	दो पुरुष	वही	वही
११७	१६५	पुरुष	वही	वही
११८	१६२	पुरुष	वही	वही
११९	१७१	देव	वही	वही
१२०	७०	स्त्री-पुरुष	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१२१	१६०	अलंकरण	वही	वही
१२२	—	गज-शार्दूल	वही	वही
१२३	—	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१२४	७७	गरुड नारायण	वही	वही
१२५	१७६	स्त्री (खण्डित प्रतिमा)	वही	वही
१२६	१७९	नृत्य पुरुष	वही	वही
१२७	१९९	कीर्तिमुख	वही	वही
१२८	१९८	खण्डित स्तम्भ	वही	वही
१२९	१८७	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
१३०	१९२	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
१३१	२०१	मिथुन	वही	वही
१३२	२००	कीर्तिमुख	वही	वही
१३३	१९५	स्त्री-पुरुष	वही	वही
१३४	७४	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
१३५	—	खण्डित प्रतिमा	वही	तही
१३६	१९४	वास्तुखण्ड	वही	वही
१३७	७६	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१३८	६९	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१३९	६८	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१४०	—	वास्तुखण्ड	वही	वही
१४१	१८९	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१४२	१५१	खण्डित स्त्री प्रतिमा	वही	वही
१४३	१७८	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१४४	७२	व्याल	वही	वही
१४५	१८६	वास्तु खण्ड	वही	वही
१४६	—	गणेश	वही	वही
१४७	—	कीर्तिमुख	वही	वही
१४८	२२८	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१४९	—	कंकाल	वही	वही
१५०	८४	मिथुन	वही	वही
१५१	—	नारी कमलधारिणी	वही	वही
१५२	—	पुरुष	वही	वही
१५३	—	विष्णु	वही	वही
१५४	—	गणेश	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१५५	—	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१५६	—	स्तम्भ	वही	वही
१५७	—	स्तम्भ	वही	वही
१५८	—	वास्तु खण्ड	वही	वही
१५९	—	विष्णु (बैठे)	वही	वही
१६०	—	कीर्तिमुख	वही	वही
१६१	—	दो स्त्री	वही	वही
१६२	७५	त्रिमूर्ति	वही	वही
१६३	—	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१६४	—	व्याल	वही	वही
१६५	—	ब्रह्मा, विष्णु, हनुमान	वही	वही
१६६	२०२	पुरुष (बैठे)	वही	वही
१६७	७१	स्त्री प्रतिमा	वही	वही
१६८	२०३	महिषासुरमर्दिनी	वही	वही
१६९	२०५	मिथुन	वही	वही
१७०	२०४	मिथुन	वही	वही
१७१	२०७	स्त्री प्रतिमा	वही	वही
१७२	२०६	वास्तु खण्ड	वही	वही
१७३	२०८	कंकाल	वही	वही
१७४	२१०	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१७५	२०९	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१७६	२११	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१७७	२१२	गणेश	वही	वही
१७८	२१४	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१७९	२१३	वास्तु खण्ड	वही	वही
१८०	२१६	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१८१	२१५	वास्तु खण्ड	वही	वही
१८२	२१७	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१८३	२१८	महिषासुरमर्दिनी	वही	वही
१८४	—	सुरसुन्दरी	वही	वही
१८५	२२७	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१८६	२२०	वास्तु खण्ड	वही	वही
१८७	२२१	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
१८८	२२२	ब्रह्मा	वही	वही

(१)		(२)	(३)	(४)	(५)
१८९	२२३	वास्तु खण्ड		वही	वही
१९०	२२५	वास्तु खण्ड		वही	वही
१९१	—	वास्तु खण्ड		वही	वही
१९२	२२४	प्रतिमा खण्ड		वही	वही
१९३	—	द्वार खण्ड		वही	वही
१९४	८३	प्रतिमा खण्ड		वही	वही
१९५	—	प्रतिमा खण्ड		वही	वही
१९६	—	द्वार खण्ड		वही	वही
१९७	—	नवग्रह		वही	वही
१९८	—	महिषासुरमर्दिनी		वही	वही
१९९	—	सरस्वती		वही	वही
२००	—	प्रतिमा खण्ड		वही	वही
२०१	—	प्रतिमा खण्ड		वही	वही
२०२	—	प्रतिमा खण्ड		वही	वही
२०३	—	शिव (बैठे)		वही	वही
२०४	—	शिव पार्वती		वही	वही
२०५	—	प्रतिमा खण्ड		वही	वही
२०६	—	ब्रह्मा (खड़े)		वही	वही
२०७	—	कीर्तिमुख		वही	वही
२०८	—	कीर्तिमुख		वही	वही
२०९	२२९	स्तम्भ के ऊपर का भाग		वही	वही
२१०	२३२	स्तम्भ के नीचे का भाग		वही	वही
२११	२३१	स्तम्भ के नीचे का भाग		वही	वही
२१२	२३३	स्तम्भ के नीचे का भाग		वही	वही
२१३	२३४	स्तम्भ के नीचे का भाग		वही	वही
२१४	—	खण्डित प्रतिमा		वही	वही
२१५	—	ब्रह्मा		वही	वही
२१६	—	प्रतिमा खण्ड		वही	वही
२१७	—	वास्तु खण्ड		वही	वही
२१८	—	खण्डित स्तम्भ		वही	वही
२१९	—	प्रतिमा खण्ड		वही	वही
२२०	—	प्रतिमा खण्ड		वही	वही
२२१	२३०	प्रतिमा खण्ड		वही	वही
२२२	८८	वराह (खड़े)		वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
२२३	९९	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
२२४	८२	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
२२५	१५१	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
२२६	८१	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
२२७	—	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
२२८	९१	कार्तिकेय	वही	वही
२२९	९२	खण्डित स्तम्भ	वही	वही
२३०	९३	सूर्य	वही	वही
२३१	—	गरुड	वही	वही
२३२	१९०	खण्डित स्तम्भ	वही	वही
२३३	—	स्त्री	वही	वही
२३४	—	द्वार-पक्ष	वही	वही
२३५	—	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
२३६	—	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
२३७	९५	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
२३८	९६	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
२३९	९७	स्त्री प्रतिमा	वही	वही
२४०	९८	स्त्री प्रतिमा	वही	वही
२४१	८०	देव प्रतिमा	वही	वही
२४२	—	स्त्री	वही	वही
२४३	१०१	कार्तिकेय	वही	वही
२४४	१०२	पुरुष	वही	वही
२४५	१०३	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
२४६	—	स्त्री प्रतिमा	वही	वही
२४७	१०४	खण्डित स्तम्भ	वही	वही
२४८	१०७	खण्डित स्तम्भ	वही	वही
२४९	१०६	खण्डित स्तम्भ	वही	वही
२५०	१११	खण्डित स्तम्भ	वही	वही
२५१	११३	खण्डित स्त्री	वही	वही
२५२	१०८	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
२५३	१०९	कंकाल	वही	वही
२५४	११०	स्त्री प्रतिमा (खण्डित)	वही	वही
२५५	११२	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
२५६	११४	प्रतिमा खण्ड	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
२५७	११५	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
२५८	१२५	सिंह	वही	वही
२५९	१२६	नन्दी	वही	वही
२६०	१२९	नन्दी	वही	वही
२६१	१२८	नन्दी	वही	वही
२६२	१२७	नन्दी	वही	वही
२६३	११६	विष्णु	वही	वही
२६४	११७	देवी	वही	वही
२६५	११८	सिंह (बैठे)	वही	वही
२६६	१८०	मिथुन	वही	वही
२६७	११९	शिव	वही	वही
२६८	१२१	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
२६९	१२३	व्याल	वही	वही
२७०	१२३	खण्डित स्तम्भ	वही	वही
२७१	२७०	द्वार खण्ड	वही	वही
२७२	२७१	सूर्य (खड़े)	वही	वही
२७३	२७२	कार्तिकेय (खड़े)	वही	वही

२४५८. जबलपुर जिलाध्यक्ष कार्यालय संग्रहालय—जबलपुर

जबलपुर नगर में जिलाध्यक्ष कार्यालय के एक कमरे में कुछ महत्वपूर्ण प्रतिमाएँ संरक्षित की गयी हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :--

क्रमांक सूची	कार्यालय क्रमांक	प्रतिमा का वर्णन	प्रतिमा का काल	प्रतिमा का प्राप्ति-स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१	१	अप्सरा	१२वीं शताब्दी ईसवी	शहीद स्मारक (जबलपुर)
२	२	सुरसुन्दरी	वही	तेवर (जबलपुर)
३	३	देवी	वही	कारीतलाई (जबलपुर)
४	४	शालभंजिका	?	?
५	५	चतुर्भुज इन्द्र	?	शहीद स्मारक (जबलपुर)

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
६	६	अष्टभुजी देवी	१२वीं शताब्दी ईसवी	वही
७	७	तीर्थंकर आदिनाथ	वही	मझोली (जबलपुर)
८	८	वास्तुखण्ड	वही	गुर्जी दर्शनी (जबलपुर)
९	९	तीर्थंकर	वही	गढ़ाघाट (जबलपुर)
१०	१०	वामन	१२वीं-१३वीं शताब्दी ईसवी	गुर्जी-दर्शनी
११	११	गरुड	१२वीं शताब्दी ईसवी	?
१२	१२	तीर्थंकर	८वीं शताब्दी ईसवी	गुर्जी-दर्शनी
१३	१३	वास्तुखण्ड	१२वीं शताब्दी ईसवी	वही
१४	१४	उमा-महेश्वर	१२वीं शताब्दी ईसवी	?
१५	१५	मूर्ति-खण्ड	वही	?
१६	१६	मूर्ति-खण्ड	वही	?
१७	१७	अप्सरा	वही	कारीतलाई
१८	१८	मूर्ति-खण्ड	वही	?
१९	१९	बोधिसत्व (गान्धार कला)	५वीं शताब्दी ईसवी	ग्वारीघाट (जबलपुर)
२०	२०	चतुर्भुज वायु	१२वीं शताब्दी ईसवी	कारीतलाई
२१	२१	अप्सरा	वही	वही
२२	२२	देवी	वही	वही
२३	२३	अग्नि तथा स्वाहा	वही	वही
२४	२४	पद्मपाणी अवलोकितेश्वर	१०वीं शताब्दी ईसवी	?
२५	२५	गरुड	१२वीं शताब्दी ईसवी	?
२६	२६	अप्सरा	वही	कारीतलाई
२७	२७	बुद्ध (गान्धार कला)	५वीं शताब्दी ईसवी	ग्वारीघाट (जबलपुर)
२८	२८	विष्णु	१२वीं शताब्दी ईसवी	?
२९	२९	कल्याणी देवी	९वीं शताब्दी ईसवी	?
३०	३०	तर्पण मुद्रा में राहू	८वीं शताब्दी ईसवी	?
३१	३१	मूर्ति-खण्ड	?	?
३२	३२	गणपति	?	?

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
३३	३३	ब्रह्माणी	९वीं शताब्दी ईसवी	?
३४	३४	शिव-पार्वती (चौपड़ खेलते हुए)	१२वीं शताब्दी ईसवी	तेवर (जबलपुर)
३५	३५	विष्णु	वही	गुर्जी-दर्शनी
३६	३६	देवी	?	?
३७	३७	शिल्पखण्ड	१२वीं शताब्दी ईसवी	शहीद स्मारक (जबलपुर)
३८	३८	गणेश	वही	लड़ई लुहारी (जबलपुर)
३९	३९	भैरव	वही	तेवर
४०	४०	मूर्तिखण्ड	वही	वही
४१	४१	वही	वही	वही
४२	४२	उमा-महेश्वर प्रतिमा का खण्ड	१२वीं शताब्दी ईसवी	तेवर
४३	४३	विष्णु-शिव	वही	वही
४४	४४	लक्ष्मी-नारायण प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
४५	४५	नाग	९वीं शताब्दी ईसवी	?
४६	४६	सिरदल का खण्ड	८वीं शताब्दी ईसवी	शहीद स्मारक (जबलपुर)
४७	४७	तीर्थंकर	१२वीं शताब्दी ईसवी	वही
४८	४८	स्तम्भ का खण्ड	?	?
४९	४९	देवी	८वीं शताब्दी ईसवी	तेवर

(इ) विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित संग्रहालय

२४५९. गौर पुरातत्त्व संग्रहालय—सागर विश्वविद्यालय, सागर

सागर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग के गौर पुरातत्त्व संग्रहालय में मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व-सम्बन्धी निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण सामग्री संग्रहीत की गयी है :—

(क) प्रागैतिहासिक तथा आद्य-ऐतिहासिक पुरावशेष

(१) विभाग द्वारा विभिन्न स्थानों में खोज तथा उत्खनन में पूर्व-पाषाणकालीन, मध्य-पाषाण कालीन तथा उत्तर-पाषाण कालीन विभिन्न प्रकार के औजार पर्याप्त संख्या में प्राप्त हुये हैं। इनका एक अच्छा संग्रह इस संग्रहालय में विद्यमान है।

विभाग द्वारा किये गये विभिन्न उत्खननों में आद्य-ऐतिहासिक मृद्‌भाण्ड तथा अन्य पुरावशेष भी मिले हैं। इनका भी अच्छा संग्रह संग्रहालय में विद्यमान है।

(ख) उत्खननों से प्राप्त सामग्री

(१) त्रिपुरी उत्खनन

जबलपुर जिले में स्थित त्रिपुरी का उत्खनन पहले १९५२-५३ में तथा बाद में १९६५-७० में किया गया। छः वर्षों के उत्खनन में जो भी महत्त्वपूर्ण पुरावशेष प्राप्त हुए उन सभी को संग्रहालय में सुरक्षित रखा गया (देखिये **"त्रिपुरी उत्खनन", अध्याय-७**)।

(२) सिरपुर उत्खनन

रायपुर जिले में स्थित सिरपुर का उत्खनन १९५३-५६ के वर्षों में किया गया। उत्खनन का प्रारम्भ सागर विश्वविद्यालय द्वारा किया गया तथा अन्त में मध्यप्रदेश शासन के पुरातत्त्व विभाग के द्वारा हुआ। विश्वविद्यालय द्वारा किये गये उत्खनन में जो महत्त्वपूर्ण पुरावशेष प्राप्त हुए उनका पूरा संग्रह इस संग्रहालय में विद्यमान है (देखिये **"सिरपुर उत्खनन" अध्याय-७**)।

(३) एरण उत्खनन

सागर जिले में स्थित एरण का उत्खनन विश्वविद्यालय द्वारा १९६०-६५ के वर्षों में किया गया। उत्खनन में जो महत्त्वपूर्ण पुरावशेष प्राप्त हुए, उन सभी को इस संग्रहालय में सुरक्षित रखा गया है (देखिये **"एरण उत्खनन", अध्याय-७**)।

(४) पिपरिया उत्खनन

सतना जिले में स्थित पिपरिया का उत्खनन १९६८-६९ के वर्ष में किया गया। उत्खनन में प्राप्त पुरावशेष तथा शिल्पावशेष संग्रहालय में संरक्षित किये गये हैं (देखिए **"पिपरिया उत्खनन" अध्याय-७**)।

(ग) अभिलेख

इस संग्रहालय में कुछ अखिलेख भी संरक्षित किये गये हैं जिनकी संक्षिप्त सूची निम्नानुसार है—

क्रमांक	संग्रहालय सूची क्रमांक	राज्य एवं वंश	शिला अथवा ताम्र लेख	तिथि	प्राप्ति-स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)
१	एम० ६४	शक	शिलालेख	चौथी ईसवी शताब्दी	एरण
२	एम० ६६-४	परमार	शिलालेख	तेरहवीं ईसवी शताब्दी	राहतगढ़

(१)	(२)	(३)		(४)	(५)
३	एम० ६३-७२	शंकरगण	शिलालेख	आठवीं ईसवी शताब्दी	सागर
४	एम० ६६	शिवगुप्त बालार्जुन के समय का अभिलेख	शिलालेख	सातवीं-आठवीं ईसवी शताब्दी	सिरपुर
५	एम० ६५	— —	शिलालेख	सातवीं-आठवीं ईसवी शताब्दी	सिरपुर
६	एम० ६०-५८	— —	देवनागरी अभिलेख	अठारवीं-उन्नीसवीं ईसवी शताब्दी	— —
७	एम० ६७	आठवीं शती का बौद्ध लेख	ब्रह्मी लिपि	आठवीं ईसवी शताब्दी	लेह (लद्दाख)

(घ) पाषाण प्रतिमाएँ

इस संग्रहालय में पाषाण-प्रतिमाओं तथा शिल्पावशेषों का महत्त्वपूर्ण संग्रह है, जिसकी संक्षिप्त सूची नीचे लिखे अनुसार है :—

क्रमांक	संग्रहालय सूची क्रमांक	प्रतिमा का वर्णन	प्रतिमा का काल (ईसवी शताब्दी में)	प्रतिमा का प्राप्ति-स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१	१	मनुष्याकृति का निम्न भाग (लाल बलुआ पत्थर की बनी)	६वीं-७वीं	त्रिपुरी (जबलपुर)
२	२	प्रतिमा का खण्डित भाग	पूर्व-मध्यकालीन	वही
३	३	स्त्री-प्रतिमा का खण्डित मस्तक	८वीं	वही
४	४	प्रतिमा का मस्तक	६वीं	वही
५	५	शूची (?)	शुंगकालीन	भरहुत (सतना)
६	६	स्त्री-प्रतिमा का मस्तक	६वीं-७वीं	त्रिपुरी (जबलपुर)
७	७	सूर्य-प्रतिमा का खण्डित भाग	पूर्व-गुप्तकालीन	ऊँचेहरा (सतना)
८	८	खण्डित हस्त	?	त्रिपुरी (जबलपुर)
९	९	उत्कीर्ण यक्ष प्रतिमा	?	भूमरा

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१०	१०	पौराणिक द्वि-मुखी घोड़े का खण्डित आकार	कलचुरि कालीन	त्रिपुरी (जबलपुर)
११	११	द्वारपाल प्रतिमा का खण्डित ऊपरी भाग	गुप्तकालीन	नचना
१२	१२	पक्षी तथा फल के आकार का खण्डित भाग	दूसरी शताब्दी ई०पू०	भरहुत (सतना)
१३	१३	ऊष्णीष का खण्डित भाग	शुंग कालीन	वही
१४	१४	पद्मासन में बैंठे प्रतिमा का खण्डित भाग	पूर्व-मध्यकालीन	त्रिपुरी
१५	१५	पाषाण खण्ड जिस पर संकल्पित स्तूप की लघु आकृति का भाग अंकित है	?	भरहुत
१६	१६	स्त्री प्रतिमा का खण्डित भाग	गुप्तकालीन	भूमरा
१७	१७	प्रतिमा का खण्डित भाग	दूसरी शताब्दी ई० पू०	भरहुत
१८	१८	अर्धनारीश्वर शिव	६०० ई०	गोपालगंज (सागर)
१९	१९	स्त्री प्रतिमा का खण्डित हस्त	कुषाणकालीन	त्रिपुरी
२०	२०	स्त्री प्रतिमा (खड़ी)	पूर्व-मध्यकालीन	वही
२१	२१	देवी (सम्भवतः पार्वती) प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
२२	२२	मनुष्य प्रतिमा का मस्तक	उत्तर-मध्यकालीन	वही
२३	२३	चक्की का खण्डित भाग	दूसरी शताब्दी ई०पू० से प्रथम शताब्दी ईसवी के बीच	वही
२४	२४	प्रतिमा का खण्डित हस्त	मध्यकालीन	वही
२५	२५	प्रतिमा के आधार का खण्डित भाग जिस पर ब्राह्मी लिपि में 'यतो' उत्कीर्ण है	मध्यकालीन	त्रिपुरी
२६	२६	मनुष्य प्रतिमा के बाँये हाथ का खण्डित भाग	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
२७	२७	शिला-खण्ड	मध्यकालीन	पुरवा (जबलपुर)
२८	२८	द्वारपाल प्रतिमा का खण्डित भाग	पूर्व-मध्यकालीन	त्रिपुरी
२९	२९	शालभंजिका प्रतिमा का ऊपरी भाग	?	वही
३०	३०	प्रतिमा का धड़	मध्यकालीन	रामसेरया ? (त्रिपुरी)
३१	३१	प्रतिमा का मस्तक जिसमें सुन्दर केश-विन्यास प्रदर्शित है	?	त्रिपुरी
३२	३२	त्रिभंग मुद्रा में कृष्ण	मध्यकालीन	वही
३३	३३	गजलक्ष्मी प्रतिमा का ऊपरी भाग	?	वही
३४	३४	खण्डित प्रतिमा (सम्भवतः विष्णु का ऊपरी भाग)	मध्यकालीन	वही
३५	३५	बाँयी ओर जाती हुई लघु प्रतिमा	वही	वही
३६	३६	लघु प्रतिमा का मस्तक	मध्यकालीन	त्रिपुरी
३७	३७	स्त्री प्रतिमा	वही	वही
३८	३८	खण्डित प्रतिमा का हस्त जिसमें कमल पकड़े हैं	शुंगकालीन	वही
३९	३९	कीर्तिमुख	मध्यकालीन	वही
४०	४०	स्त्री-प्रतिमा का खण्डित मस्तक	पूर्व-मध्यकालीन	वही
४१	४१	प्रतिमा का खण्डित हस्त	मध्यकालीन	वही
४२	४२	प्रतिमा का खण्डित हस्त	वही	रामसेरया (त्रिपुरी)
४३	४३	शिल्प-खण्ड पर उत्कीर्ण चतुर्मुख-लिंग	वही	त्रिपुरी
४४	४४	स्त्री प्रतिमा का मस्तक	पूर्व-मध्यकालीन	रामसेरया (त्रिपुरी)
४५	४५	प्रतिमा का निम्न भाग	मध्यकालीन	वही
४६	४६	नृसिंह प्रतिमा का आवक्ष	वही	त्रिपुरी
४७	४७	स्त्री प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
४८	४८	विष्णु प्रतिमा का खण्डित भाग	वही	वही
४९	४९	लघु प्रतिमा का मस्तक	उत्तर-गुप्तकालीन	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
५०	५०-अ	प्रतिमा (सम्भवतः किन्नर) का खण्डित भाग	मध्यकालीन	त्रिपुरी
५१	५०-ब	पद्मासन में बैठे प्रतिमा का खण्डित भाग	वही	वही
५२	५१	शिल्प-खण्ड जिस पर जटा-मुकुट उत्कीर्ण हैं	वही	जबलपुर-सिहोरा मार्ग पर
५३	५२	सुसज्जित हस्ति	वही	त्रिपुरी
५४	५३	पद्मासन में बैठे मस्तक विहीन प्रतिमा	वही	वही
५५	५४	महाविष्णु की खण्डित प्रतिमा	पूर्व-मध्यकालीन	वही
५६	५५	उष्णीष का खण्डित भाग	शुंगकालीन	भरहुत
५७	५६	उष्णीष का खण्डित भाग	वही।	वही
५८	७६	ध्यान मुद्रा में बैठे जैन-तीर्थंकर; आधार पर उत्कीर्ण लेख	११०० ई०	त्रिपुरी
५९	७७	खण्डित स्त्री प्रतिमा का ऊपरी भाग	मध्यकालीन	वही
६०	७८	खण्डित स्त्री प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
६१	७९	पुरुष प्रतिमा	वही	वही
६१-अ	८०	गज-शार्दूल	वही	देवरी
६२	८१	शिलाखण्ड पर उत्कीर्ण नृत्य-मुद्रा में स्त्री प्रतिमाएँ तथा दो अन्य प्रतिमाएँ	वही	वही
६३	८२	खण्डित देवी (?) प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	?
६४	८३	खण्डित शिव प्रतिमा का नीचे का भाग	वही	?
६५	८४	शिलाखण्ड	वही	बीना (सागर)
६६	८५	विष्णु (?) प्रतिमा का खण्डित भाग	वही	?

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
६७	८६	किन्नर तथा मिथुन (?) आकृति-युक्त शिलाखण्ड	वही	?
६८	८७	शिलाखण्ड	पूर्व-मध्यकालीन	?
६९	८८	मकरमुख आकृति युक्त शिलाखण्ड	मध्यकालीन	?
७०	९७	कायोत्सर्ग मुद्रा में लीन तीर्थंकर प्रतिमा	११वीं शताब्दी ई०	देवरी
७१	९८	द्वार-पक्ष का खण्ड	वही	वही
७२	९९	द्वार-पक्ष	११वीं-१२वीं शताब्दी ई०	बरोदा
७३	१००	शिलाखण्ड पर उत्कीर्ण नवग्रह	१०वीं	रेहली
७४	१०१	खण्डित शिलाखण्ड जिस पर पुरुष तथा स्त्री प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं	११वीं	देवरी
७५	१०२	शिलाखण्ड जिसपर पुरुष-प्रतिमा उत्कीर्ण है	मध्यकालीन	वही
७६	१०३	चतुर्मुख विष्णु (खड़े)	१०वीं-११वीं	वही
७७-७९	१०४-६	मनुष्य तथा शार्दूल	वही	वही
८०	१०७	गजशार्दूल	वही	वही
८१	१०८	शिलाखण्ड पर उत्कीर्ण मिथुन	वही	बरोदा
८२	१०९	शिलाखण्ड पर उत्कीर्ण चतुर्भुज वराह	वही	देवरी
८३	११०	शिलाखण्ड पर उत्कीर्ण चतुर्भुज विष्णु	वही	वही
८४	१११	शिलाखण्ड पर उत्कीर्ण चतुर्भुज विष्णु	वही	वही
८५	११२	चतुर्भुज दुर्गा-प्रतिमा	९वीं-१०वीं	वही
८६	११३	चतुर्भुज शिव प्रतिमा का ऊपरीभाग	मध्यकालीन	वही
८७	११४	किसी खण्डित प्रतिमा (सम्भवत: गंगा) का ऊपरी भाग	?	माढ़ पिपरिया
८८	११५	किसी खण्डित प्रतिमा का भाग जिसमें शिव-पार्वती को कैलाश पर बैठे बतलाया गया है	?	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
८९	११६	किसी खण्डित प्रतिमा का भाग जिसमें स्त्री आकृतियाँ हैं	?	?
९०	११७	द्वार-पक्ष का खण्डित भाग जिस पर मिथुन, गन्धर्व आदि उत्कीर्ण हैं	?	बरोदा
९१	११८	खण्डित स्त्री प्रतिमा का निम्न भाग	मध्यकालीन	वही
९२	११९	मन्दिर का खण्डित भाग	?	वही
९३	१२०	वास्तुखण्ड जिस पर विद्याधर उत्कीर्ण हैं	मध्यकालीन	वही
९४	१२१	वास्तुखण्ड जिस पर मन्दिर उत्कीर्ण है	वही	वही
९५	१२२	वस्तुखण्ड जिस पर खण्डित पुरुष प्रतिमा उत्कीर्ण है	वही	वही
९६	१२३	वस्तुखण्ड पर उत्कीर्ण अलंकरण	वही	वही
९७	१२४	गंधर्व प्रतिमा	वही	वही
९८	१२५	वास्तुखण्ड पर उत्कीर्ण दो खड़ी स्त्री प्रतिमाएँ	वही	वही
९९	१२६	वास्तुखण्ड पर उत्कीर्ण दो पुरुष प्रतिमाएँ	वही	वही
१००	१२७	वास्तुखण्ड पर उत्कीर्ण पुरुष प्रतिमाएँ	वही	वही
१०१	१२८	चतुर्भुज अग्नि प्रतिमा	वही	माढ़ पिपरिया
१०२	१२९	चतुर्भुज प्रतिमा (खड़ी)	वही	वही
१०३	१३०	खण्डित गरुड प्रतिमा	वही	वही
१०४	१३१	खण्डित प्रतिमा का दाहिना भाग जिसमें पुरुष तथा स्त्री आकृतियाँ बनी हैं	वही	वही
१०५	१३२	योद्धा	वही	वही
१०६	१३३	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
१०७	१३४	खण्डित प्रतिमा का ऊपरी बांया भाग	वही	देवरी
१०८	१३५	खण्डित चतुर्भुज दुर्गा प्रतिमा	वही	बरोदा

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१०९	१३६	खण्डित पुरुष प्रतिमा	वही	माढ़ पिपरिया
११०	१३७	खण्डित स्त्री प्रतिमा	वही	वही
१११	१३८	खण्डित स्त्री प्रतिमा का निम्न भाग	वही	वही
११२	१३९	अपूर्ण प्रतिमा	वही	वही
११३	१४०	शिलाखण्ड के तीन टुकड़े जिनपर देवनागरी अक्षरों में लेख उत्कीर्ण है	?	?
११४	१४०-अ	वास्तुखण्ड जिस पर कुबेर प्रतिमा उत्कीर्ण है	?	?
११५	१४१	खण्डित प्रतिमा का मस्तक	मध्यकालीन	एरण
११६	१४२	खण्डित प्रतिमा का मस्तक जिस पर केश विन्यास प्रदर्शित है	गुप्त-उत्तर-गुप्तकालीन	वही
११७	१४३	कुबेर की खण्डित लघु प्रतिमा	उत्तर-गुप्त कालीन	वही
११८	१४४	शिलाखण्ड पर उत्कीर्ण पुष्प	मध्यकालीन	वही
११९	१४५	मिट्टी का बना कुत्ता जिसके गले में रस्सी पड़ी है	उत्तर-शुंग कालीन	वही
१२०	१४६	मिट्टी की बनी खण्डित प्रतिमा का निम्न भाग	?	वही
१२१	१४७	वास्तु खण्ड	?	?
१२२	१४८	पुरुष प्रतिमा का मस्तक जिस पर पगड़ी बंधी है	?	एरण
१२३	१४९	प्रतिमा का मस्तक	पूर्व-मध्यकालीन	वही
१२४	१५०	सिरदल का खण्डित भाग	गुप्तकालीन	वही
१२५	१५१	शिलाखण्ड पर उत्कीर्ण गजलक्ष्मी प्रतिमा	वही	वही
१२६	१५२	वास्तुखण्ड पर बनी चंवर-धारिणी	पूर्व-मध्यकालीन	वही
१२७	१५३	वास्तुखण्ड पर बनी स्त्री प्रतिमा का आवक्ष	वही	वही
१२८	१५४	विष्णु (?) प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
१२९	१५५	प्रतिमा का मस्तक	गुप्तकालीन	वही
१३०	१५६	नाग-मस्तक	वही	वही
१३१	१५७	पुरुष प्रतिमा का आवक्ष	पूर्व-मध्यकालीन	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१३२	१५८	विशालकाय द्वि-भुजी-नृवराह प्रतिमा जिसके आधार पर 'श्री महेश्वर-दत्तस्य' तथा 'वराहदत्तस्य' उत्कीर्ण है	५वीं-६वीं	वही
१३३	१५९	खण्डित सिल का भाग	?	वही
१३४	१६०	ललितासन में बैठे कुबेर की प्रतिमा	६०० ई०	वही
१३५	१६१	चतुर्भुज नृसिंह प्रतिमा	गुप्तकालीन	पहलेजपुर (सागर)
१३६	१६२	आदिनाथ प्रतिमा का धड़	पूर्व-मध्यकालीन	खजुराहो (छतरपुर)
१३७	१६३	वास्तुखण्ड पर बना कल्पवृक्ष	गुप्तकालीन	एरण
१३८	१६४	वास्तुखण्ड पर बना अलंकरण	वही	वही
१३९	१६५	वास्तुखण्ड पर बना चैत्य-तोरण अलंकरण	वही	वही
१४०	१६६	द्वार-पक्ष का खण्डित भाग	पूर्व-मध्यकालीन	वही
१४१	१६७	मनुष्य रूप में नाग-देव प्रतिमा का धड़	कुषाणकालीन	वही
१४२	१६८	चतुर्भुजी देवी-प्रतिमा का खण्डित निम्न भाग	पूर्व-मध्यकालीन	वही
१४३	१६९	सिरदल का खण्ड जिस पर द्वारपाल बना है	वही	वही
१४४	१७०	खण्डित पट्ट का ऊपरी भाग	वही	वही
१४५	१७१	सती-स्तम्भ का खण्ड	१८वीं	वही
१४६	१७२	प्रतिमा-आधार का खण्ड	गुप्तकालीन	वही
१४७	१७३	शिलाखण्ड पर बनी पुरुष प्रतिमाएँ	वही	वही
१४८	१७४	नागी-प्रतिमा	वही	वही
१४९	१७५	ललितासन में पुरुष प्रतिमा	वही	वही
१५०	१७६	खण्डित पुरुष प्रतिमा का निम्न भाग	मध्यकालीन	वही
१५१	१७७	खण्डित पुरुष प्रतिमा	मध्यकालीन	वही
१५२	१७८	वास्तुखण्ड	पूर्व-मध्यकालीन	वही
१५३	१७९	चौकोर स्तम्भ-शीर्ष	गुप्तकालीन	वही
१५४	१८०	शिलाखण्ड पर बना तोरण	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१५५	१८१	द्वार-पक्ष (?) का खण्ड जिस पर पुरुष प्रतिमा बनी है	मध्यकालीन	वही
१५६	१८२	अष्ट-भुजी नृत्य गणपति प्रतिमा का धड़	पूर्व-मध्यकालीन	वही
१५७	१८३	पट्ट का ऊपरी भाग जिस पर विष्णु के अवतारों का चित्रण है	१०वीं	वही
१५८	१८४	त्रि-भंग मुद्रा में खड़े भैरव	१२वीं-१३वीं	वही
१५९	१८५	खण्डित हनुमान-प्रतिमा	९वीं	वही
१६०	१८६	खण्डित प्रतिमा	१३वीं	वही
१६१	१८७	शिलाखण्ड पर बनी प्रतिमा का धड़	उत्तर-मध्यकालीन	वही
१६२	१८८	प्रस्तर-खण्ड पर बनी द्वि-भुजी प्रतिमा	पूर्व मध्यकालीन	वही
१६३	१८९	प्रतिमा का आधार जिस पर स्त्री-आकृति बनी है	१०वीं-११वीं	वही
१६४	१९०	खण्डित प्रतिमा का मस्तक	पूर्व-मध्यकालीन	वही
१६५	१९१	शिला-खण्ड पर बना हस्ती का मस्तक	गुप्त अवथा पूर्व-मध्यकालीन	भापसोन घाट
१६६	१९२	लघु स्त्री प्रतिमा (कमर के नीचे का भाग खण्डित)	पूर्व मध्यकालीन	वही
१६७	१९३	विशाल शिला पर बनी तीन नामिकाएँ : पहले में ललितासन में बैठे शिव, दूसरे में घोड़े पर बैठे रेवन्त तथा तीसरे में युद्ध का दृश्य प्रदर्शित किया गया है	११वीं	ईश्वरपुर (खोज में प्राप्त)
१६८	१९४	द्वार-पक्ष का खण्ड	११वीं	वही
१६९	१९५	शिलाखण्ड पर बनी चतुर्भुज विष्णु तथा लक्ष्मी-प्रतिमाएँ	वही	वही
१७०	१९६	शिलाखण्ड पर बना स्त्री आवक्ष	१०वीं-११वीं	वही
१७१	१९७	स्तम्भ पर बनी सप्तमातृकायें	१०वीं	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१७२	१९८	पट्ट का ऊपरी भाग जिस पर विष्णु तथा ४ गन्धर्व प्रतिमाएँ बनी हैं	११वीं	बीना
१७३	१९९	पट्ट का खण्डित ऊपरी भाग जिस पर चतुर्भुज तथा त्रि-मुखी ब्रह्मा की प्रतिमा बनी है	वही	वही
१७४	२००	सातफन युक्त नागी	वही	वही
१७५	२०१	द्वार-पक्ष का खण्ड जिसपर गंगा की आकृति है	९वीं	वही
१७६	२०२	विशाल सिरदल जिसके केन्द्र में सात घोड़ों के रथ पर सवार सूर्य प्रतिमा बनी है	११वीं	वही
१७७	२०३	शिलाखण्ड जिस पर वराह बना है	वही	वही
१७८	२५७	द्वार-पक्ष का निम्न भाग	९वीं-१०वीं	वही
१७९	२५८	आले में बना नृसिंह	उत्तर-गुप्तकालीन	वही
१८०	२५९	सिरदल का खण्ड जिसपर गंधर्व आकृतियाँ बनी हैं	?	?
१८१	२६०	द्वार-पक्ष का निम्न भाग	८वीं-९वीं	?
१८२	२६१	द्वार-पक्ष का खण्ड जिसपर अप्सराएँ बनी हैं	९वीं	?
१८३	२६२	ललितासन में बैठे युगल	११वीं	?
१८४	२६३	द्वारपाल	१०वीं	?
१८५	२६४	एक दृश्य में तीन प्रदर्शित आकृतियाँ	८वीं-९वीं	?
१८६	२६५	सिल का खण्ड	?	?
१८७	२६६	खण्डित गज-लक्ष्मी प्रतिमा का ऊपरी भाग	?	?
१८८	२६७	खण्डित द्वारपाल प्रतिमा का निम्न भाग	?	?
१८९	२६८	तीर्थंकर प्रतिमा का धड़	९वीं	?
१९०	२६९	पद्मासन में बैठे चतुर्भुज देव	९वीं-१०वीं	?

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१६१	२७०	नामिका खण्ड	६वीं-१०वीं	?
१६२	२७१	सूर्य प्रतिमा का धड़	८वीं-६वीं	?
१६३	२७२	क्रूर आकृति युक्त अर्द्ध-देव प्रतिमा	?	?
१६४	२७३	खण्डित नामिका	?	?
१६५	२७४	देव प्रतिमा का खण्डित निम्न भाग	?	?
१६६	२७५	नृसिंह (?) प्रतिमा का खण्डित निम्न भाग	?	?
१६७	२७६	प्रतिमा का आधार खण्ड	?	?
१६८	२७७	द्वार-पक्ष का खण्ड	?	?
१६६	२७८	चतुर्भुज प्रतिमा का खण्डित बाम भाग	?	?
२००	२७६	तीर्थंकर प्रतिमा का खण्डित दायां भाग	?	?
२०१	२८०	अर्धनारीश्वर प्रतिमा	?	?
२०२	२८१	वास्तु-खण्ड पर बनी अर्द्ध-स्तम्भों के बीच चतुर्भुज सूर्य प्रतिमा	११वीं-१२वीं	एन०सी०सी कार्यालय, सागर
२०३	२८२	द्वार-पक्ष का खण्ड जिसपर यमुना की प्रतिमा बनी है	११वीं	वही
२०४	२८३	वास्तु-खण्ड जिस पर बादक बने हैं	११वीं-१२वीं	वही
२०५	२८४	चौकोर वास्तु-खण्ड	वही	वही
२०६	२८५	खण्डित विष्णु प्रतिमा का ऊपरी भाग	११वीं	वही
२०७	२८६	ध्यान मुद्रा में बैठी मस्तक विहीन प्रतिमा	११वीं	वही
२०८	२८७	चामुण्डा प्रतिमा का ऊपरी भाग	१२वीं	वही
२०६	२८८	दस-भुजी शिव-प्रतिमा	११वीं-१२वीं	वही
२१०	२८६	स्तम्भ, जिस पर दो नामिकाएँ बनी हैं	१७वीं-१८वीं	वही
२११	२६०	अलंकृत वास्तु-खण्ड	११वीं	वही
२१२	२६१	वास्तु-खण्ड जिसपर गणेश प्रतिमा बनी है	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
२१३	२९२	मस्तक विहीन खड़ी सूर्य-प्रतिमा, सूर्य की दाहिनी ओर पिंगला तथा ऊषा हैं तथा बायीं ओर प्रत्युषा है	वही	वही
२१४	२९३	अलंकृत स्तम्भ का खण्ड	पूर्व-मध्यकालीन	वही
२१५	२९४	सोलह-भुजी दुर्गा प्रतिमा दो खण्डों में	१०वीं	वही
२१६	२९५	खण्डित चतुर्भुज-प्रतिमा	११वीं	वही
२१७	२९६	द्वार-पक्ष खण्ड जिस पर गंगा की प्रतिमा बनी है	११वीं	वही
२१८	२९७	त्रि-भंग मुद्रा में विष्णु (मस्तक विहीन प्रतिमा)	?	वही
२१९	२९८	अलंकृत वास्तु-खण्ड	?	वही
२२०	२९९	खण्डित उमा-महेश्वर प्रतिमा	११वीं-१२वीं	वही
२२१	३००	शिला-खण्ड (?)	?	वही
२२२	३०१	वास्तु-खण्ड जिस पर चतुर्भुज विष्णु-प्रतिमा बनी है	१२वीं-१३वीं	वही
२२३	३०२	अलंकृत वास्तु-खण्ड	११वीं	वही
२२४	३०३	द्वार-पक्ष खण्ड	११वीं-१२वीं	वही
२२५-२६	३०४+३०७	सोलह-भुजी दुर्गा-प्रतिमा दो खण्डों में	वही	वही
२२७	३०५	द्वार-पक्ष खण्ड, जिस पर गंगा की प्रतिमा बनी है	वही	वही
२२८	३०६	वास्तु-खण्ड पर उत्कीर्ण ज्यामितिक आकार	वही	वही
२२९	३०९	वास्तु-खण्ड जिस पर चतुर्भुज देवी प्रतिमा बनी है	वही	वही
२३०	३१०	द्वार-पक्ष खण्ड	वही	वही
२३१	३११	वृहदाकार खण्डित प्रतिमा का दाहिना भाग	११वीं-१२वीं	वही
२३२	३१२	विष्णु (?) प्रतिमा का आवक्ष	वही	?
२३३	३१४	खण्डित प्रतिमा का भाग	११वीं	?
२३४	३१५	विष्णु (?) प्रतिमा, खण्डित	वही	?

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
२३५	३१६	उद्भृत नवग्रह पट्ट का खण्ड	वही	?
२३६	३१७	मस्तकविहीन सूर्य-प्रतिमा	१२वीं	?
२३७	३१८	द्वार-पक्ष खण्ड जिस पर गंगा की प्रतिमा उत्कीर्ण है	?	?
२३८	३१९	तीन नामिकाओं में बनी ११ आकृतियाँ	?	?
२३९	३२०	गदा सहित चतुर्भुज वामन	?	?
२४०	३२१-२२	गंगा-यमुना	?	?
२४१	३२३	वास्तु-खण्ड	?	?
२४२	३२४	शिला-खण्ड, जिसे तीन नामिकाओं में बाँटा गया है	?	?
२४३	३२५	खण्डित विष्णु-प्रतिमा	?	?
२४४	३२६	चौकी पर बैठी उमा	?	?
२४५	३२७	दो परिचारिकाओं सहित गंगा	?	?
२४६	३२८	वास्तु-खण्ड	?	?
२४७	३२९	वाराही (खड़ी) प्रतिमा	?	?
२४८	३३१	सिरदल, जिस पर गरुडासन विष्णु-प्रतिमा बनी है	?	?
२४९	३३९	वेदिकाओं के बीच ललितासन में बैठे कुबेर	?	?
२५०	३४०	सिरदल जिस पर मातृकायें तथा गणेश उत्कीर्ण हैं	?	?
२५१	३४७	सिरदल, जिस पर चतुर्भुज तथा त्रिमुखी सूर्य-प्रतिमा बनी है। सूर्य को सात घोड़े युक्त रथ पर बैठे बतलाया गया है	?	?
२५२	३४९-५०	वास्तु-खण्ड, जिस पर चतुर्भुज शिव-प्रतिमा बनी है	?	?
२५३	३५७	शिव-पार्वती (बैठे)	?	?
२५४	३५८	चतुर्भुज विष्णु	?	?
२५५	३५९	खण्डित दुर्गा-प्रतिमा का निम्न भाग	?	?
२५६	३६०	सिरदल पर उत्कीर्ण त्रि-मूर्ति	?	?
२५७	३६५	भैरव तथा कुत्ता	?	?
२५८	३६८	ललितासन में बैठी बीसभुजि दुर्गा	?	?

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
२५९	३७०	वामन (?) प्रतिमा	?	?
२६०	३७१	अपूर्ण महाविष्णु प्रतिमा	?	?
२६१	४०८	खण्डित प्रतिमा (संभवतः विष्णु) का निम्न भाग	?	?
२६२	४०९	खण्डित इन्द्राणी (?) प्रतिमा का निम्न भाग	?	?
२६३	४१०	चतुर्भुज पुरुष-प्रतिमा का ऊपरी दाहिना खण्ड	?	?
२६४	४१८	हंस पर बैठी सरस्वती, खण्डित	?	?
२६५	४१९	खण्डित तीर्थंकर प्रतिमा का निम्न भाग	?	?
२६६	४२०	खण्डित शिव (?) प्रतिमा का निम्न भाग	?	?
२६७	४२१	खण्डित शिव प्रतिमा का ऊपरी दाहिना भाग	?	?
२६८	४२२	खण्डित गंगा प्रतिमा का निम्न भाग	?	?
२६९	४२३	लघु नागी प्रतिमा	?	?
२७०	४३०	मस्तक विहीन स्त्री प्रतिमा	?	नेपाल महल (सागर)
२७१	४३१	त्रि-भंग मुद्रा में चतुर्भुज वरुण	?	वही
२७२	४३६	नामिका में बनी ब्राह्मणी प्रतिमा	?	लोहारी (जबलपुर)
२७३	४३७	शिला-खण्ड पर बनी पार्वती	?	वही
२७४	४४१	विष्णु प्रतिमा का खण्ड जिसमें चक्र-पुरुष बना है	गुप्तकालीन	पिपरिया (सतना)
२७५	४४२	वास्तुखण्ड पर बनी गदादेवी की प्रतिमा	वही	वही
२७६	४४३	वास्तुखण्ड पर बनी गदादेवी	वही	वही
२७७	४४४-४४९	वास्तुखण्ड तथा द्वार-पट्ट खण्ड	वही	वही
२७८	४५०	शिव प्रतिमा का मस्तक	९वीं-१०वीं	पलारी (रायपुर)

विविध प्रतिमाएँ

क्रमांक १-६६ वास्तुखण्ड, सती-स्तम्भ, द्वार-पक्ष खण्ड तथा अन्य खण्डित प्रतिमाओं के भाग ।

(च) सिक्के, मुहर तथा मुद्रांकन

इस संग्रहालय में लगभग १५०० सिक्के, मुहर तथा मुद्रांकनों का संग्रह है जिन्हें निम्नलिखित मुख्य प्रकारों में बाँटा जा सकता है :—

(१) आहत—ताँबे के, चाँदी के तथा चाँदी-चढ़े । ये आकार में मुख्यतः गोल तथा चौकोर हैं ।

(२) ढले हुए – ताँबे के, गोलाकार

(३) स्थानीय—ताँबे के, एरण, उज्जैन, विदिशा तथा त्रिपुरी

(४) स्थानीय —पंचाल, अयोध्या, कौशाम्बी, मथुरा आदि के

(५) गणराज्य—मालव, यौधेय, ताँबे के, गोलाकार

(६) हिन्दी-यूनानी—ताँबे के, गोलाकार

(७) कुषाण—ताँबे के, गोलाकार

(८) पश्चिमी क्षत्रप—चाँदी के, चष्टन तथा रुद्रसेन द्वितीय के

(९) नाग—ताँबे के, गोलाकार छोटे

(१०) मघ—चाँदी तथा ताँबे के गोलाकार

(११) गुप्त—रामगुप्त के गरुडध्वज प्रकार, ताँबे के गोलाकार

(१२) हिन्द-सासानी—चाँदी के गोलाकार

(१३) विभिन्न कालों से सम्बन्धित उत्कीर्ण मुहर तथा मुद्रांकन-उत्खनन तथा खोज में प्राप्त ।

२४६०. विक्रम कीर्ति-मन्दिर संग्रहालय, विक्रम विश्वविद्यालय—उज्जैन

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के विक्रम कीर्ति-मन्दिर संग्रहालय में मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व सम्बन्धी निम्नलिखित सामग्री संग्रहीत की गयी है—

(क) प्रागैतिहासिक तथा आद्य-ऐतिहासिक पुरावशेष

विक्रम विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग द्वारा रामपुरा, भानपुरा, मनोटी, बुधवाया, रामगढ़, भोपाल, रायसेन, भोजपुर, रायपुर आदि स्थानों में किये गये खोज में पूर्ण-पाषाण-कालीन, मध्य-पाषाण-कालीन तथा उत्तर-पाषाण-कालीन विभिन्न प्रकार के औज़ार पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हुए हैं। इनका एक अच्छा संग्रह इस संग्रहालय में विद्यमान है ।

विभाग द्वारा किये गये कायथा उत्खनन में आद्य-ऐतिहासिक मृद्भाण्ड तथा अन्य पुरावशेष मिले हैं । इनका भी संग्रह संग्रहालय में विद्यमान है ।

(ख) उत्खननों से प्राप्त सामग्री

उज्जैन जिले में स्थित कायथा नामक स्थान पर विभाग द्वारा उत्खनन किया गया जिसमें विभिन्न कालों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण पुरावशेष प्राप्त हुए। उन सभी पुरावशेषों को इस संग्रहालय में सुरक्षित रखा गया है। (देखिये—"**कायथा उत्खनन**" अध्याय–७)।

(ग) अभिलेख

इस क्षंग्रहालय में निम्नलिखित प्रकाशित तथा अप्रकाशित अभिलेखों का महत्वपूर्ण संग्रह है—

(१) खण्डित क्षत्रप लेख जिसमें "दामस्यपुत्रस्यराज्ञो" आदि का उल्लेख है (अप्रकाशित)।

(२) सिद्धराज जयसिंह की उज्जयिनी प्रशस्ति, जिसमें मालवा विजय तथा धार के राजा यशवर्मदेव को पराजित करने का उल्लेख है (प्रकाशित)।

(३) परमार भोज का अभिलेख, जिसमें साकेत विजय का उल्लेख हैं (अप्रकाशित)।

(४) परमार देवपालदेव का अभिलेख, जिसमें "तुरक्कों" को पराजित करने का उल्लेख है (अप्रकाशित)।

(५) "विज्जसिंह अरिशंकू" का अभिलेख, जिसमें खुरासानी खरों को हराने का उल्लेख है (अप्रकाशित)।

(६) परमार भोज का अभिलेख, जिसमें खर्जुरवाहक को पराजित करने का उल्लेख है (अप्रकाशित)।

(७) परमार नरवर्मन् का अभिलेख, जिसमें नरवर्मन् द्वारा अपने बड़े भाई लक्ष्मण-देव के स्मरण में अखण्ड दीप जलाने के लिए भूमिदान दिए जाने का उल्लेख है। प्रारम्भ में ही उदयादित्य का उल्लेख आया है (अप्रकाशित)।

(घ) पाषाण प्रतिमाएँ

इस संग्रहालय में महत्त्वपूर्ण पाषाण प्रतिमाओं तथा शिल्पावशेषों का संग्रह है, जिसकी संक्षिप्त सूची निम्न प्रकार है :—

संग्रहालय की सूची क्रमांक	प्रतिमा का वर्णन	प्रतिमा का काल (ईसवी शताब्दी में)	प्रतिमा का प्राप्ति-स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)
१	पार्वती (खड़ी)	परमार-कालीन (१०वीं-११वीं सदी ई०)	उज्जैन
२	चामुण्डा	वही	वही
३	महिषासुरमर्दिनी	वही	वही
४	पार्वती (खड़ी)	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)
५	पार्वती (खड़ी)	वही	वही
६	शिव-पार्वती (खड़े)	वही	वही
७	पार्वती (बैठी)	वही	वही
८	पार्वती (खड़ी)	वही	वही
९	पार्वती (खड़ी)	वही	वही
१०	उमा-महेश्वर	वही	वही
११	उमा-महेश्वर	वही	वही
१२	खण्डित उमा-महेश्वर प्रतिमा का निम्न भाग	वही	वही
१३	खण्डित उमा-महेश्वर प्रतिमा	वही	बही
१४	शिव-पार्वती	वही	वही
१५	शिव-पार्वती	वही	वही
१६	खण्डित शिव-पार्वती प्रतिमा	वही	वही
१७	उमा-महेश्वर	वही	वही
१८	उमा-महेश्वर	वही	वही
१९	उमा-महेश्वर	वही	वही
२०	उमा-महेश्वर	वही	वही
२१	प्रतिमा का खण्डित भाग	वही	वही
२२	सिरदल का खण्डित भाग	वही	वही
२३	प्रतिमा का खण्डित भाग	वही	वही
२४	खण्डित चँवरधारिणी प्रतिमा	वही	वही
२९	अशोक कालीन स्तम्भ-शीर्ष । यह चुनार के बलुए पत्थर से बना है तथा इसके एक भाग पर अब भी मौर्य-कालीन ओप है	मौर्यकालीन (तीसरी शताब्दी ई० पू०)	सोढंग (उज्जैन से ३ मील उत्तर-पश्चिम)
३०	खण्डित प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
३१	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
३३	सिरदल का खण्ड	?	?
३४	यक्ष	शुंगकालीन (प्रथम शताब्दी ई० पू०)	बुधवाया (उज्जैन)
३५	प्रतिमा का खण्ड	परमार कालीन (१०वीं-१३वीं सदी ई०)	उज्जैन

(१)	(२)	(३)	(४)
३६	प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
३९	कीर्तिमुख	वही	वही
४०	शिव (बैठे)	वही	वही
४४	यक्ष	वही	वही
४७	गजासुर बध	वही	वही
४९	शिव (खड़े)	वही	वही
५०	शिव (खड़े)	वही	वही
५१	ब्रह्मा	वही	वही
५२	ब्रह्मा	वही	वही
५३	ब्रह्मा	वही	वही
५६	ब्रह्मा	वही	वही
५७	विष्णु	वही	वही
५८	मस्तक विहीन पुरुष-प्रतिमा	वही	वही
५९	विष्णु	वही	वही
६०	विष्णु	वही	वही
६१	प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
६२	सूर्य	वही	वही
६३	सूर्य	वही	वही
६४	विष्णु	वही	वही
६५	शेषशायी विष्णु	वही	कायथा (उज्जैन)
६६	खण्डित प्रतिमा का बाम भाग	वही	उज्जैन
६७	खण्डित विष्णु-प्रतिमा का निम्न भाग	वही	वही
६८	विष्णु	वही	वही
६९	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
७०	खण्डित प्रतिमा	वही	वही
७१	प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
७२	प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
७३	प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
७४-८४	प्रतिमाओं के खण्ड	वही	वही
८२	खण्डित शेषशायी विष्णु-प्रतिमा	वही	वही
८५	यज्ञ-वराह	वही	वही
८६-८९	प्रतिमाओं के खण्ड	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)
९२	सूर्य-प्रतिमा का आवक्ष तथा ऊपरी भाग	वही	कायथा (उज्जैन)
९३	खण्डित देवी	वही	उज्जैन
१०१	तीर्थंकर	वही	ओखलेश्वर (उज्जैन)
१०८	खण्डित प्रतिमा का मस्तक	वही	उज्जैन
११२	खण्डित शिव-प्रतिमा	वही	वही
११४	खण्डित शिव-प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
११९	खण्डित विष्णु-प्रतिमा का निम्न भाग	वही	वही
१३१	विष्णु (खड़े)	वही	वही
१३६	गणेश	वही	वही
१३८	गणेश	वही	वही
१४२	त्रिमूर्ति	वही	वही
१४३	चक्रेश्वर	वही	वही
१४४	शिव	वही	वही
१४५	खण्डित कुबेर प्रतिमा	वही	वही
१४७	शिल्प खण्ड	वही	वही
१५३	मूर्ति खण्ड	वही	वही
१५५	दम्पति	वही	वही
१५६	शिव-प्रतिमा का खण्डित मस्तक	वही	वही
१५९	विष्णु	वही	वही
१६०	शिव	वही	वही
१६१	विष्णु (खड़े)	वही	वही
१६३	शिल्प खण्ड	वही	वही
१६७	त्रिमूर्ति	वही	वही
१७०	खण्डित तीर्थंकर-प्रतिमा के ऊपर का भाग	वही	वही
१७१	त्रिमूर्ति (?)	वही	वही
१७३	शिव-पार्वती	वही	वही
१७५	काल-भैरव	वही	वही
१७६	दशावतारी विष्णु-प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
१७७	गणेश	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)
१८१	शिल्प खण्ड	वही	वही
१८३	गंगा	वही	वही
१८५	विष्णु	वही	वही
१८७	कुबेर	वही	वही
१८८	चामुण्डा	वही	वही
१९१	देवी	वही	वही
१९२	तीर्थंकर-प्रतिमा का निम्न भाग जिसके चौकी पर लेख उत्कीर्ण है	वही	वही
१९३	शिव-प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
२०४	खण्डित शिव-प्रतिमा	वही	वही
२५८	दम्पति	वही	वही
?	खण्डित गणेश-प्रतिमा	वही	वही
?	दम्पति	वही	वही
?	शिव	वही	वही
?	अष्टभुजी देवी	वही	वही
?	ब्रह्मा-शिव	वही	वही
?	सिरदल का खण्ड	वही	वही
?	स्तम्भ का खण्ड जिस पर लेख उत्कीर्ण है	वही	वही
?	विशालकाय शिव-प्रतिमा	वही	वही
?	खण्डित ब्रह्मा-प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
?	नाग	वही	वही
?	नन्दी	वही	वही
?	उमा-महेश्वर	वही	वही
?	नाग	वही	वही
?	शिव	वही	वही
?	खण्डित त्रिमूर्ति	वही	वही
?	यज्ञवराह	वही	वही
?	विष्णु	वही	वही

(ई) स्थानीय संस्थाओं द्वारा संचालित संग्रहालय

२४६१. हिन्दुस्तान चैरिटी ट्रस्ट संग्रहालय, भोपाल

भोपाल में बिड़ला-मंदिर के घेरे में स्थित 'हिन्दुस्तान चैरिटी ट्रस्ट' संग्रहालय

की स्थापना हाल ही में हुई है। इस संग्रहालय में निम्नलिखित प्रतिमाएँ संग्रहीत की गयी हैं—

क्रमांक	प्रतिमा का विवरण	प्रतिमा काल (ईसवी शताब्दी में)	प्रतिमा का प्राप्ति-स्थान
	शैव-प्रतिमाएँ		
१	कार्तिकेय (बैठे)	८वीं	थानेगाँव (रायसेन)
२	लकुलीश (?) (बैठे)	९वीं-१०वीं	रायसेन
३	उमा-महेश्वर	१०वीं	आशापुरी (रायसेन)
४	नृत्य-गणपति	१०वीं	आशापुरी (रायसेन)
५	शिव (खड़े)	१०वीं	आशापुरी (रायसेन)
६	शिव (गजासुर-वध)	१०वीं	हिंगलाजगढ़ दुर्ग (मन्दसौर)
७	शिव-पार्वती (खड़े)	१०वीं	हिंगलाजगढ़ दुर्ग (मन्दसौर)
८	शिव-पार्वती (खड़े)	१३वीं	समसगढ़ (सीहोर)
९	उमा-महेश्वर	१३वीं	समसगढ़ (सीहोर)
१०	वही	वही	वही
११	नटराज	१३वीं	समसगढ़ (सीहोर)
१२	चतुर्भुज शिव (ललितासन में बैठे)	१३वीं	समसगढ़ (सीहोर)
१३	नन्दी	१३वीं	समसगढ़ (सीहोर)
१४	शिव-प्रतिमा का आवक्ष (प्रभामण्डल सहित)	१०वीं	हिंगलाजगढ़ (मन्दसौर)
१५	आले में बैठे शिव की छोटी प्रतिमा	१०वीं	हिंगलाजगढ़ (मन्दसौर)
१६	उमा-महेश्वर	१२वीं-१३वीं	? (सीहोर)
१७	नटराज	१३वीं	समसगढ़ (सीहोर)
१८	अर्धनारीश्वर	१०वीं	आशापुरी (रायसेन)
१९	उमा-महेश्वर	१२वीं	नेवरी मंदिर, भोपाल (सीहोर)
	वैष्णव प्रतिमाएँ		
२०	शंख-पुरुष	९वीं	आशापुरी (रायसेन)
२१	शंख तथा चक्रपुरुष इत्यादि	८वीं	थानेगाँव (रायसेन)
२२	नृ-वराह	१०वीं	थानेगाँव (रायसेन)
२३	हरिहर	१०वीं	थानेगाँव (रायसेन)

(१)	(२)	(३)	(४)
२४	खण्डित विष्णु प्रतिमा का ऊपरी भाग-प्रभामण्डल जिसमें दशावतार ब्रह्मा, ब्रह्माणी इत्यादि बने हैं।	९वीं	आशापुरी (रायसेन)
२५	स्तम्भ पर बनी नरसिंह, परशुराम आदि प्रतिमाएँ	९वीं-१०वीं	आशापुरी (रायसेन)
२६	विष्णु जिसके नीचे का भाग खण्डित है	९वीं-१०वीं	आशापुरी (रायसेन)
२७	खण्डित विष्णु-प्रतिमा का ऊपरी बायाँ भाग जिस पर ब्रह्मा, दशावतार आदि की प्रतिमाएँ बनी हैं	९वीं-१०वीं	आशापुरी (रायसेन)
२८	स्थानक विष्णु	वही	वही
२९	खण्डित विष्णु प्रतिमा का ऊपरी दायाँ भाग जिस पर शिव तथा वामन की प्रतिमाएँ बनी हैं	वही	वही
३०	सूर्य प्रतिमा का बायाँ भाग जिसमें केवल अलंकरण उपलब्ध हैं। मुख्य प्रतिमा खण्डित है।	९वीं-१०वीं	आशापुरी (रायसेन)
३१	चतुर्भुज सूर्यनारायण (बैठे)	१०वीं	हिंगलाजगढ़ (मन्दसौर)
३२	चतुर्भुज विष्णु (खड़े)	१२वीं	? (देवास)
३३	विष्णु (मस्तक खण्डित)	९वीं	वराहखेड़ी (रायसेन)
३४	लक्ष्मीनारायण (गरुड़ पर आसीन)	१०वीं	हिंगलाजगढ़ (मन्दसौर)
३५	लक्ष्मी-नारायण (खड़े)	१३वीं	समसगढ़ (सीहोर)
३६	शेषशायी विष्णु	१३वीं-१४वीं	?
३७	शंखपुरुष	१३वीं	समसगढ़ (सीहोर)
३८	यज्ञ-वराह	१३वीं	समसगढ़ (सीहोर)

शाक्त प्रतिमाएँ

३९	माता तथा शिशु	१०वीं	?
४०	त्रिमूर्ति-महेश्वरी	१०वीं	हिंगलाजगढ़ दुर्ग (मन्दसौर)
४१	सिंहवाहिनी	वही	वही
४२	गणेशी	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)
४३	इन्द्राणी	वही	वही
४४	चामुण्डा	वही	वही
४५	स्त्री-परिचारिकाएँ	१०वीं	आशापुरी (रायसेन)
४६	नायिका	वही	वही
४७	गजलक्ष्मी	९वीं-१०वीं	वही
४८	आले में खड़ी चतुर्भुज देवी	१०वीं	वही
४९	पार्वती	वही	वही
५०	लक्ष्मी	वही	वही
५१	सप्तमातृका प्रतिमा का खण्डित भाग, जिसमें दो मातृकाएँ रह गयी हैं	वही	?
५२	वाराही	१०वीं-११वीं	?
५३	चामुण्डा	१२वीं-१३वीं	?
५४	गंगा	१४वीं	?
५५	प्रतिमा के एक ओर इन्द्राणी तथा दूसरी ओर वाराही	१०वीं	आशापुरी (रायसेन)
	विविध प्रतिमाएँ		
५६	जैन गोमेध तथा अम्बिका	?	गन्धर्वपुरी (देवास)
५७	ब्रह्मा	१०वीं	समसगढ़ (सीहोर)
५८	वरुण तथा कुबेर	१०वीं	आशापुरी (रायसेन)
५९	कुबेर	१३वीं	समसगढ़ (सीहोर)
६०	वरुण (खण्डित मस्तक)	९वीं	वराहखेड़ी (रायसेन)
६१	हनुमान	१३वीं	समसगढ़ (सीहोर)
६२	अनेक वास्तु-खण्ड		

२४९२. सिंधिया संग्रहालय, ग्वालियर

ग्वालियर के राजमहल में स्थित संग्रहालय में मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व सम्बन्धी कुछ सामग्री एकत्रित की गयी है। इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

(अ) खोज सामग्री—

इस संग्रहालय के संचालक श्री के० पी० नौटियाल द्वारा कुतवार में आसन नदी पर स्थित एक प्राचीन टीले की खोज में 'काले तथा लाल' मृद्भाण्ड, चित्रित घूसर भाण्ड', मौर्य तथा कुषाणकालीन मृद्भाण्ड तथा मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई जिन्हें इस संग्रहालय में संरक्षित किया गया है।

(आ) पाषाण प्रतिमाएँ

इस संग्रहालय में जो पाषाण प्रतिमाएँ संरक्षित की गयी हैं, उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

क्रमांक	संग्रहालय का क्रमांक	प्रतिमा का विवरण	प्रतिमा का काल (ईसवी शताब्दी में)	प्रतिमा का प्राप्ति स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१	६६.१	आलिंगन उमा-महेश्वर	११वीं	शिवपुरी
२	६६.२	सूर्य की टूटी हुई प्रतिमा	१०वीं	बटेश्वर (मुरैना)
३	६६.३	जैन तीर्थंकर, सम्भवतः शान्तिनाथ	१२वीं	पढ़ावली (मुरैना)
४	६६.४	कार्तिकेय अथवा स्कन्द	१४वीं	बटेश्वर
५	६६.५	खड़े हुए जैन तीर्थंकर	१२वीं	पढ़ावली
६	६६.१२	सुरसुन्दरी अथवा अप्सराएँ	११वीं	बटेश्वर
७	६६.७	वराह, लाल पत्थर की बनी	९वीं-१०वीं	बटेश्वर
८	६६.८	उमा-महेश्वर	१०वीं	वही
९	६६.९	पार्श्वनाथ	१३वीं	पढ़ावली
१०	६६.१०	भग्न विष्णु प्रतिमा का निम्न भाग	९वीं-१०वीं	बटेश्वर
११	६६.११	किरात मूर्ति	११वीं	बेहट (मुरैना)
१२	६६.१३	शिव एवं नग्न भैरव	९वीं	बटेश्वर
१३	६६.१४	पुरुष	१०वीं	शिवपुरी
१४	६६.१५	ऋषभनाथ अथवा आदिनाथ	११वीं	पढ़ावली
१५	६६.१६	चामुण्डा प्रेत पर खड़ी	११वीं	बटेश्वर
१६	६६.१७	यमुना	११वीं	पढ़ावली
१७	६६.१८	भग्न नवग्रह प्रतिमा	१२वीं	बटेश्वर
१८	६६.१९	गंगा एवं वायु	१२वीं	बटेश्वर
१९	६६.२०	जैन तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ का सिर	११वीं	ग्वालियर
२०	६६.२१	जैन तीर्थंकर का मस्तक	१२वीं	पढ़ावली
२१	६८.२२	हाथी सूंड	३५० ई० लगभग	पवाया
२२	६८.२३	स्त्री-मुण्ड	३५० ई० लगभग	पवाया
२३	६८.२४	नृत्यमुद्रा में शिवगण	प्रथम शताब्दी ई० पू०	पवाया

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
२४	६८.२५	सुन्दर केश सज्जा युक्त यक्ष-मुण्ड	वही	पवाया
२५	६८.२६	सुन्दर केश सज्जा युक्त यक्षी मुण्ड	दूसरी शताब्दी ई० पू०	पवाया
२६	६८.२७	अप्सरा	११वीं	शिवपुरी
२७	?	महिषासुरमर्दिनी	११वीं	ग्वालियर
२८	?	सिंहमूर्ति	१२वीं	रानीघाटी (ग्वालियर)

(इ) सिक्के :—

इस संग्रहालय में कुषाण शासकों के १२, नाग शासकों के ५००, आदिवराह ३ तथा हिन्द-सासानी सिक्के संग्रहीत हैं।

२४६३. जयसिंहपुरा जैन मंदिर संग्रहालय—उज्जैन

उज्जैन के जयसिंहपुरा स्थित जैन-मंदिर में महत्वपूर्ण पाषाण-प्रतिमाएँ संग्रहीत की गयी हैं। इनका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है—

क्रमांक	प्रतिमा का विवरण	काल (ई० शताब्दी में)	प्राप्ति-स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)
१	तीर्थंकर (बैठे)	परमार कालीन (१०वीं-१३वीं सदी ई०)	सुन्दरसी (शाजापुर)
२	तीर्थंकर (खड़े)	वही	कुसुमखो (गुना)
३	खण्डित प्रतिमा का पाद-पीठ	वही	वही
४	पद्म-प्रभु	वही	वही
५	पार्श्वनाथ	वही	वही
६	खण्डित पार्श्वनाथ-प्रतिमा	वही	बदनावर
७	तीर्थंकर	वही	वही
८	शिव-पार्वती	वही	उज्जैन
९	खंगासन तीर्थंकर	वही	गुना जिला
१०	जैन-प्रतिमा की प्रभावली	वही	सोनकछ
११	जैन-प्रतिमा की प्रभावली	वही	बदनावर
१२	जैन-प्रतिमा (बैठे)	वही	अजितखो (गुना)

(१)	(२)	(३)	(४)
१३	जैन-प्रतिमा (खड़े)	वही	गुना जिला
१४	खण्डित जैन-प्रतिमा	वही	सुन्दरसी
१५	खण्डित जैन-प्रतिमा	वही	जामनेर (शाजापुर)
१६	खण्डित जैन-प्रतिमा	वही	वही
१७	खण्डित सरस्वती-प्रतिमा	वही	बदनावर
१८	खण्डित जैन-प्रतिमा (खड़े)	वही	वही
१९	खण्डित जैन-प्रतिमा (बैठे)	वही	?
२०	खण्डित प्रतिमा की प्रभावली	वही	धार
२१	खण्डित जैन-प्रतिमा (खड़ी)	वही	अजितखो (गुना)
२२	तीर्थंकर-प्रतिमा (खड़े)	वही	कुसुमखो
२३	तीर्थंकर (खड़े)	वही	अनन्तखो (गुना)
२४	पद्मावती	वही	बदनावर
२५	तीर्थंकर (बैठे)	वही	सुन्दरसी
२६	प्रभावली के खण्ड में बनी जिन-प्रतिमा	वही	धार
२७	भैरव	वही	उज्जैन
२८	सुव्रतमुनि	१५वीं-१६वीं श० ई०	धार
२९	सुव्रतमुनि	वही	?
३०	तीर्थंकर (बैठे)	परमार कालीन	वही
३१	प्रभावली	वही	बदनावर
३२	तीर्थंकर (बैठे) प्रतिमा की चौकी पर उत्कीर्ण लेख	वही	जावस
३३	तीर्थंकर (बैठे) प्रतिमा की चौकी पर उत्कीर्ण लेख	वही	उदयपुर
३४	तीर्थंकर (बैठे)	वही	कोदक (धार)
३५	तीर्थंकर (बैठे)	वही	धार
३६	तीर्थंकर (बैठे)	वही	बदनावर
३७	जिन-प्रतिमा जिसकी चौकी पर लेख उत्कीर्ण है	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)
३८	जिन-प्रतिमा (बैठे)	वही	गुना जिला
३९	जिन-प्रतिमा (बैठे)	वही	वही
४०	जिन-प्रतिमा (खड़े)	वही	वही
४१	जिन-प्रतिमा (बैठे)	वही	बदनावर
४२	जिन-प्रतिमा (खड़े)	वही	धार
४३	शिव-पार्वती	वही	उज्जैन
४४	सरस्वती	वही	बदनावर
४५	जिन-प्रतिमा (खड़े)	वही	जामनेर
४६	जिन-प्रतिमा (खड़े)	वही	वही
४७	जिन-प्रतिमा का खण्डित निम्न भाग जिस पर लेख उत्कीर्ण है	वही	बदनावर
४८	वही	वही	वही
४९	खण्डित विष्णु-प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	उज्जैन
५०	प्रभावली का खण्डित भाग	वही	बदनावर
५१	तीर्थंकर (बैठे)	वही	उज्जैन
५२	सहस्त्रजिनबिम्ब	वही	गोन्दलमऊ (शाजापुर)
५३	तीर्थंकर (खड़े)	वही	गुना जिला
५४	तीर्थंकर (खड़े)	वही	कुसुमखो (गुना)
५५	विशाल तीर्थंकर-प्रतिमा (बैठे)	वही	गोन्दलमऊ
५६	भैरव	वही	वही
५७	जिन-प्रतिमा (खड़े)	वही	वही
५८	घोड़े पर सवार जिन-देवी जिसकी चौकी पर लेख उत्कीर्ण है	वही	बदनावर
५९	स्तम्भ जिसके चारों ओर जिन-प्रतिमाएँ बनी हैं	वही	गुना जिला
६०	वही	वही	वही
६१	वही	वही	वही
६२	वही	वही	वही
६३	वही	वही	वही
६४	वही	वही	वही
६५	खण्डित प्रभावली	वही	बदनावर

(१)	(२)	(३)	(४)
६६	शिव	वही	उज्जैन
६७	सरस्वती (?)	वही	बदनावर
६८	खण्डित प्रभावली	वही	वही

२४६४. भारती कला भवन, माधवनगर, उज्जैन — वाकणकर संग्रह

उज्जैन के माधवनगर में स्थित भारती कला-भवन में श्री वि० श्री० वाकणकर द्वारा महत्त्वपूर्ण पुरावशेष, प्रतिमाएँ तथा सिक्के संग्रहीत किये गये हैं। इनका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है—

(क) प्रागैतिहासिक पुरावशेष

श्री वाकणकर द्वारा अपने भारत, यूरोपीय तथा अमरीकी भ्रमण के दौरान महत्व-पूर्ण प्रागैतिहासिक पुरावशेष एकत्र किये गये। भारत, यूरोप तथा अमेरिका के प्रागैतिहासिक कालीन पुरावशेषों का यह संग्रह इस संग्रहालय में संरक्षित है।

भारत, यूरोप, अमेरिका तथा अफ्रीका में स्थित प्रागैतिहासिक कालीन गुफा-चित्रों के रंगीन छाया-चित्र भी श्री वाकणकर द्वारा लिये गये। इन छाया-चित्रों का संग्रह भी इस संग्रहालय में सुरक्षित है।

(ख) पाषाण प्रतिमाएँ

क्रमांक	प्रतिमा का विवरण	काल (ई० शताब्दी में)	प्राप्ति-स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)
१	पार्वती	परमार कालीन (१०वीं १३वीं शताब्दी ई०)	उज्जैन
२	लक्ष्मी-नारायण	वही	वही
३	पार्वती	उत्तर-गुप्त कालीन	बदनावर (धार)
४	पार्वती	परमार कालीन	उज्जैन
५	पार्वती	उत्तर-गुप्त कालीन (४थी-५वीं शताब्दी ई०)	बदनावर (धार)
६	सरस्वती	परमार कालीन	धार (धार)
७	लकुलीश	राष्ट्रकूट कालीन (९वीं शताब्दी ई०)	उज्जैन
८	शिव	वही	चंदवासा (मन्दसौर)

(१)	(२)	(३)	(४)
९	नग्नभट्टारिकाएँ (तीन लघु प्रतिमाएँ)	?	उज्जैन
१०	वही	?	मन्दसौर
११	वही	?	पीपलरवा (शाजापुर)
१२	वही	?	शुजालपुर
१३	महिषासुरमर्दिनी (लघु प्रतिमा)	?	उज्जैन
१४	वही	?	बदनावर
१५	विष्णु (लघु प्रतिमा)	?	उज्जैन
१६	वही	?	बदनावर
१७	वही	?	शाजापुर
१८	वही	?	मन्दसौर
१९	चँवरधारिणी	?	?

इनके अतिरिक्त मिट्टी की बनी मंदसौर से प्राप्त यक्षिणी तथा उज्जैन से प्राप्त नरसिंह की लघु प्रतिमाएँ भी महत्वपूर्ण हैं।

(ग) सिक्के

श्री वाकणकर द्वारा लगभग ५।९ हजार सिक्कों का एक महत्वपूर्ण संग्रह इस संग्रहालय में एकत्रित किया गया है। इनको निम्नलिखित मुख्य प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है। मुख्य तथा उप-प्रकारों को मिलाकर ये सिक्के ७५५ प्रकारों में विभाजित किये जा सकते हैं—

सिक्कों के मुख्य प्रकार

१—आहत—तांबे के

२—आहत—चाँदी के

३—आहत—छोटे, चौकोर

४—आहत—गोलाकार

५—उज्जयिनी (ढले)—वृषभ प्रकार

६—उज्जयिनी (ढले)—अश्व प्रकार

७—उज्जयिनी (ढले)—हस्ती प्रकार

८—उज्जयिनी (ढले)—देवी प्रकार
९—उज्जयिनी (ढले)—लक्ष्मी प्रकार
१०—उज्जयिनी (ढले)—स्कन्द—देवसेना प्रकार
११—उज्जयिनी (ढले)—उत्कीर्ण प्रकार
१२—उज्जयिनी (ढले)—कच्छप प्रकार
१३—उज्जयिनी (ढले)—मेढक प्रकार
१४—उज्जयिनी (ढले)—अन्य चिन्हांकित प्रकार
१५—स्वस्तिक
१६—हस्ती तथा चैत्य
१७—हस्ती तथा मेरु
१८—क्रास
१९—आन्ध्र—सातवाहन
२०—क्षत्रप
२१—नाग
२२—जिष्णु
२३—महाकाल
२४—दण्डधारी
२५—राम
२६—रुद्रिल
२७—हिन्द-सासानी
२८—मध्यकालीन

२४६५. पुरातत्त्व संग्रहालय, रामबन (सतना)

सतना—रीवा सड़क पर, सतना से लगभग ११ किलोमीटर की दूरी पर स्थित श्री शारदा प्रसाद जी द्वारा स्थापित रामबन आश्रम है। इस आश्रम के एक कक्ष में छोटा-सा पुरातत्त्व संग्रहालय स्थापित किया गया है जिसमें दूसरी सदी ई० पू० से आधुनिक काल तक शिल्पावशेषों के कुछ महत्वपूर्ण अवशेष आदि एकत्रित किए गये हैं। सुरक्षा की दृष्टि से हाल ही में इनमें से महत्वपूर्ण सामग्री को सतना में श्री नीरज जैन, संचालक, सुषमा प्रेस के संरक्षण में स्थानान्तरित कर दिया गया है। रामबन में एकत्रित की गयी सामग्री का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :—

(क) पाषाण प्रतिमाएँ

क्रमांक	संग्रहालय का क्रमांक	प्रतिमा का वर्णन	प्रतिमा का काल (ईसवी सदी में)	प्रतिमा का प्राप्ति-स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१	१	स्तम्भ पर उत्कीर्ण कमलपुष्प	तीसरी-दूसरी सदी ई० पू०	भरहुत[1]
२	२	शूची खण्ड	वही	वही
३	३	शूची खण्ड	वही	वही
४	४	वही	वही	वही
५	५	स्तम्भ खण्ड	वही	वही
६	६	विशाल स्तम्भ का खण्ड	वही	वही
७	७	शूची का भाग	वही	वही
८	८	सिरदल का भाग	वही	वही
९	९-४२	पाषाण खण्ड	वही	वही
१०	४३	पाषाग खण्ड पर उत्कीर्ण लेख 'तसदानम्'	वही	वही
११	४४	पाषाण खण्ड पर उत्कीर्ण लेख '......उत (म)'	वही	वही
१२	४५	पाषाण खण्ड पर उत्कीर्ण अलंकरण	वही	वही
१३	४६	वही	वही	वही
१४	४७	यक्षी प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
१५	४८	स्तम्भ का ऊपरी भाग	वही	वही
१६	४९	विविध आभूषण धारण किये हुए स्त्री तथा पुरुष	वही	वही
१७	५०	बन्दर का मुख	वही	वही
१८	५१ से ५३	स्तूप के चिह्न सहित पाषाण खण्ड	वही	वही
१९	५४ से ५५	वेदिका सहित पाषाण खण्ड	वही	वही

---

१. यहाँ पर संरक्षित भरहुत स्तूप के भग्नावशेषों पर लिखे गये लेखों के लिए देखिये : ज० म० प्र० इ० प० भाग ५, पृ० २; इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० १००, ज० इ० म्यू०, भाग १७-२० (१९६१-६४) पृ० ३४-३७।

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
२०	५६	बौद्ध वृक्ष सहित पाषाण खण्ड	वही	वही
२१	५७ से ७६	पाषाण खण्ड	वही	वही
२२	७७	पाषाण खण्ड	गुप्तकाल	अज्ञात
२३	७८	द्वार-स्तम्भ का खण्ड	वही	वही
२४	७९	इमारती पत्थर पर उत्कीर्ण प्रतिमाएँ	वही	वही
२५	८०	स्तम्भ का ऊपरी भाग	वही	वही
२६	८१	पार्श्वनाथ-ध्यानस्थ	वही	वही
२७	८२	इमारती पत्थर पर उत्कीर्ण मृग	वही	वही
२८	८३	महिषासुरमर्दिनी प्रतिमा का खण्डित पिछला भाग	वही	वही
२९	८४	इमारती पत्थर पर उत्कीर्ण रीछ	वही	वही
३०	८५	इमारती पत्थर पर उत्कीर्ण सूअर	वही	वही
३१	८६	चतुर्भुज देवी	वही	वही
३२	८७	विष्णु प्रतिमा का धड़	वही	वही
३३	८८	दण्डधारी गण	वही	वही
३४	८९	द्वार-स्तम्भ का खण्ड	वही	वही
३५	९०	मयूर पर बैठी कौमारी प्रतिमा	वही	वही
३६	९१	चतुर्भुज विष्णु	वही	वही
३७	९२	इमारती पत्थर पर शिव-पार्वती	वही	वही
३८	९३	गवाक्ष का टुकड़ा	वही	वही
३९	९४	खड़े विष्णु	वही	वही
४०	९५	स्तम्भ पर उत्कीर्ण कमल	वही	वही
४१	९६	स्तम्भ पर उत्कीर्ण द्वारपाल	वही	वही
४२	९७	इमारती पत्थर पर उत्कीर्ण स्त्री-पुरुष	वही	वही
४३	९८	विष्णु प्रतिमा का टुकड़ा	वही	वही
४४	९९	खड़ी स्त्री	वही	वही
४५	१००	कार्तिकेय	वही	वही
४६	१०१	प्रस्तर पर उत्कीर्ण बच्चे की आकृति	वही	वही
४७	१०२	स्त्री का सिर	वही	वही
४८	१०३	वही	वही	वही
४९	१०४	वही	वही	वही
५०	१०५	वही	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
५१	१०६	पत्थर का टुकड़ा	मध्यकालीन	वही
५२	१०७	शिव-पार्वती	वही	वही
५३	१०८	द्वार-स्तम्भ का टुकड़ा	वही	वही
५४	११०	भग्न प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
५५	१११	स्तम्भ का ऊपरी भाग	वही	वही
५६	११२	खण्डित वराह प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
५७	११३	विष्णु का धड़	वही	वही
५८	११४	मूर्ति का खण्ड	वही	वही
५९	११५	स्त्री प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
६०	११६	कुबेर	वही	वही
६१	११७	अलंकृत प्रस्तर	वही	वही
६२	११८	तीर्थंकर प्रतिमा का निचला भाग	वही	वही
६३	११९	आदिनाथ	वही	वही
६४	१२०	मूर्तिखण्ड	वही	वही
६५	१२१	बुद्ध-प्रतिमा का सिर	वही	वही
६६	१२२	जैन प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
६७	१२३	तीर्थंकर ध्यानस्थ	वही	वही
६८	१२४	अलंकृत प्रस्तर खण्ड	वही	वही
६९	१२५	आदिनाथ प्रतिमा जिसका सिर खण्डित है	वही	वही
७०	१२६	प्रस्तर खण्ड	वही	वही
७१	१२७	तीर्थंकर ध्यानस्थ	वही	वही
७२	१२८	ध्यानस्थ तीर्थंकर	वही	वही
७३	१२९	ध्यानस्थ तीर्थंकर	वही	वही
७४	१३०	मूर्ति खण्ड	वही	वही
७५	१३१	पुरुष का सिर	वही	वही
७६	१३२	वराह	वही	वही
७७	१३३	अलंकृत प्रस्तर	वही	वही
७८	१३४	स्तम्भ पर उत्कीर्ण विष्णु	वही	वही
७९	१३५	कुबेर	वही	वही
८०	१३६	चतुर्भुज देव	वही	वही
८१	१३७	उमा-महेश्वर	वही	वही
८२	१३८	शिव-पार्वती	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
८३	१३९	द्वारपाल	वही	वही
८४	१४०	अष्टभुजी देवी	वही	वही
८५	१४१	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
८६	१४२	शिव-पार्वती खण्डित	वही	वही
८७	१४३	प्रस्तर खण्ड	वही	वही
८८	१४४	हनुमान प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
८९	१४५	अष्टभुजी देवी का धड़	वही	वही
९०	१४६	प्रतिमा का खण्ड	वही	वही
९१	१४७	नृत्य-गणपति	वही	वही
९२	१४८	कंकाली प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
९३	१४९	अलंकृत प्रस्तर	वही	वही
९४	१५०	कैलाश पर शिव-पार्वती	वही	वही
९५	१५१	स्त्री का धड़	वही	वही
९६	१५२	प्रतिमा खण्ड	वही	वही
९७	१५३	कुबेर	वही	वही
९८	१५४	गणपति	वही	वही
९९	१५५	गणपति	वही	वही
१००	१५६	अभयमुद्रा में खड़े पुरुष	वही	वही
१०१	१५७	स्त्री प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
१०२	१५८	विष्णु प्रतिमा का धड़	वही	वही
१०३	१५९	पुरुष प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
१०४	१६०	देवी मूर्ति का धड़	वही	वही
१०५	१६१	शिव-पार्वती	वही	वही
१०६	१६२	मूर्ति का धड़	वही	वही
१०७	१६४	स्त्री मूर्ति का ऊपरी भाग	वही	वही
१०८	१६५	स्त्री मूर्ति का ऊपरी भाग	वही	वही
१०९	१६६	हरिहर प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
११०	१६७	स्त्री का धड़	वही	वही
१११	१६८	विष्णु प्रतिमा का धड़	वही	वही
११२	१६९	स्त्री मूर्ति का ऊपरी भाग	वही	वही
११३	१७०	नृसिंह	वही	वही
११४	१७१	साधु प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
११५	१७२	दो तीर्थंकर	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
११६	१७३	पुरुष	वही	वही
११७	१७४	स्त्री मूर्ति का धड़	वही	वही
११८	१७५	पुरुष-मूर्ति	वही	वही
११९	१७६	मूर्ति-खण्ड	वही	वही
१२०	१७७	वराह	वही	वही
१२१	१७८	विष्णु प्रतिमा का ऊपरी भाग	वही	वही
१२२	१७९	जैन यक्ष तथा यक्षी	वही	वही
१२३	१८०	पुरुष मूर्ति का ऊपरी भाग	वही	वही
१२४	१८१	वही	वही	वही
१२५	१८२	मानव मूर्ति का धड़	वही	वही
१२६	१८३	स्त्री मूर्ति का धड़	वही	वही
१२७	१८४	शिव-पार्वती प्रतिमा का निचला भाग	वही	वही
१२८	१८५	प्रस्तर पर उत्कीर्ण देवी तथा शार्दूल आकृति	वही	वही
१२९	१८७	त्रिभंग मुद्रा में पुरुष	वही	वही
१३०	१८८	समुद्र-मंथन का दृश्य	वही	वही
१३१	१८९	शार्दूल	वही	वही
१३२	१९०	अलंकृत प्रस्तर	वही	वही
१३३	१९१	खण्डित शार्दूल	वही	वही
१३४	१९२	मूर्ति-खण्ड	वही	वही
१३५	१९३	चतुर्भुज देवी	वही	वही
१३६	१९४-९५	लघु स्तूप	वही	वही
१३७	१९६	मिट्टी की पुरुष प्रतिमा का धड़	वही	वही
१३८	१९७	काँसे की मूर्ति	वही	वही
१३९	१९८	बड़ा देव	वही	वही
१४०	१९९	बड़ा देव	वही	वही
१४१	२००	घोड़े का अग्रभाग	वही	वही
१४२	२०१	बड़ा देव	वही	वही
१४३	२०३	शिव का मस्तक	वही	वही
१४४	२०४	विष्णु प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
१४५	२०५	पुरुष प्रतिमा का मस्तक	वही	वही
१४६	२०६	सिर	वही	वही
१४७	२०७	पुरुष प्रतिमा का सिर	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१४८	२०८-०९	पुरुष प्रतिमा का सिर	वही	वही
१४९	२१०	विष्णु प्रतिमा का सिर	वही	वही
१५०	२११ से २६१	विविध मध्यकालीन प्रतिमाओं के सिर	वही	वही
१५१	२६२ से २८२	विभिन्न प्रतिमाओं के खण्ड	वही	वही
१५२	३७८	हनुमान	वही	वही
१५३	३७९-८०	कीचक	वही	वही
१५४	३८३	शिवलिंग	वही	वही
१५५	३८६	शिव-पार्वती	वही	वही
१५६	३९३	शिवगण	वही	वही
१५७	४७८	शिव-पार्वती	वही	वही
१५८	५६० से ५६७	तीर्थंकर	वही	वही
१५९		हनुमान का धड़	अज्ञात	कचलोहा
१६०		मूर्ति का सिर	वही	जसो
१६१		अलंकृत प्रस्तर खण्ड	वही	भरहुत
१६२		दो खण्डित प्रतिमाएँ	वही	ऊँचेहरा
१६३		तीन प्रतिमाएँ	वही	खमरेही
१६४		मस्तक विहीन प्रतिमा	वही	पढ़ी
१६५		वेदिका	वही	सतना-अमरपाटन सड़क के किनारे
१६६		स्तम्भ-खण्ड	वही	वही
१६७		सिंह	वही	वही
१६८		अप्सरा	वही	वही
१६९		आले का पत्थर	वही	वही
१७०		छज्जा का पत्थर	वही	वही
१७१		तोरण खण्ड	वही	वही
१७२		सिंह	वही	वही
१७३		विष्णु	वही	वही
१७४		अश्वारोही	वही	वही
१७५		विद्याधर युगल	वही	वही
१७६		तीर्थंकर प्रतिमाएँ	वही	मड़ई
१७७		वीणा वादक	वही	वही
१७८		तोरण खण्ड	वही	वही
१७९		पद्मासन में बैठी देवी	वही	वही

(१)	(२)	(३)	(४)
१८०	सिंह	वही	वही
१८१	चरणचिह्न	वही	वही
१८२	अलंकृत प्रस्तर खण्ड	वही	भरहुत
१८३	मस्तक विहीन विष्णु	वही	परसमनिया

ख—अन्य पुरावशेष

सागर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग द्वारा किये गये प्रागैतिहासिक कालीन पाषाणास्त्र, ताम्र-पाषाण युगीन मृत्भाण्डों के टुकड़े, उत्तरी काले ओपदार भाण्ड के टुकड़े तथा गंगा घाटी से प्राप्त भाण्डों के कुछ टुकड़े भी इस संग्रहालय में संरक्षित किये गये हैं।

(३) व्यक्तिगत संग्रह

इन्दौर में प्राचीन सिक्कों का व्यक्तिगत संग्रह

इन्दौर नगर में प्राचीन सिक्कों के महत्वपूर्ण संग्रह अनेक व्यक्तियों के पास हैं। इनमें से कई प्रकार के सिक्के अभी भी अप्रकाशित हैं। कुछ व्यक्तिगत संग्रह निम्न प्रकार हैं—

२४६६. डाक्टर नागू का निजो संग्रह

इन्दौर के प्रमुख चिकित्सक डा० नागू के निजी संरक्षण में लगभग **सोलह हज़ार** प्राचीन सिक्कों का विशाल संग्रह विद्यमान है। इन सिक्कों को निम्नलिखित मुख्य प्रकारों में बाँटा जा सकता है—

क्रमांक	**प्रकार**			**संख्या (लगभग)**
(१)	(२)			(३)
१	आहत—चाँदी के		--	१००
२	आहत--ताँबे के		—	५०००
३	ढले—उज्जयिनी चिन्हांकित		--	५००
४	स्थानीय—	एरण	—	५००
		विदिशा	—	१००
		तक्षशिला	—	५००
		उज्जैन	—	१०
		कौशाम्बी	—	३०
५	स्वस्तिक		—	५००
६	गणराज्य-यौधेय		—	१२
७	शुंग-पुश्यमित्र		—	१

(१)	(२)		(३)
८	आन्ध्र	—	२००
९	कुषाण	—	५००
१०	क्षत्रप	—	२००
११	नाग	—	८००
१२	रुद्रिल	—	२०
१३	शेवक	—	३
१४	गुप्त-रामगुप्त	—	१००
१५	जिष्णु	—	२०
१६	आदिवराह	—	३०
१७	कलचुरि कृष्णराज	—	१०
१८	परमार-नरवर्मन्	—	१ (सोने का)
१९	चौहान	—	२०००
२०	गधिया	—	२०००
२१	वलभी	—	?
२२	विष्णुकुण्डिन	—	?
२३	अन्य उत्कीर्ण	—	२०
२४	अस्पष्ट	—	१०००

उपरोक्त सिक्कों के अतिरिक्त विदिशा से प्राप्त कुछ मुहरें भी डा० नागू द्वारा संग्रहीत की गई हैं।

परमार शासक नरवर्मन् का अप्रकाशित एक ताम्रपत्र भी इस संग्रह में हाल ही में संरक्षित किया गया है।

डा० नागू के निजी संग्रह में कांस्य प्रतिमाओं का एक विशाल भण्डार भी विद्यमान है, जो परमार काल से मराठा काल के मध्य के हैं।

२४६७. श्री उमरावसिंह बबेल का निजी संग्रह

इन्दौर के एक प्रमुख व्यापारी श्री उमरावसिंह बबेल के निजी संग्रह में लगभग चार हज़ार प्राचीन सिक्कों का एक मूल्यवान संग्रह विद्यमान है। इन सिक्कों के मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैं—

क्रमांक	प्रकार		संख्या (लगभग)
(१)	(२)		(३)
१	आहत—चाँदी के	—	५०
२	आहत—ताँबे के	—	२५०

(१)	(२)		(३)
३	ढले—उज्जयिनी चिन्हांकित	—	८००
४	स्थानीय— एरण	—	१००
	तक्षशिला	—	३००
५	गणराज्य—यौधेय	—	१००
६	शुंग	—	५०
७	आन्ध्र	—	५०
८	हिन्द-यूनानी	—	१०
९	कुषाण	—	१००
१०	क्षत्रप	—	३००
११	सासानी	—	२००
१२	नाग	—	१००
१३	गुप्त	—	५
१४	जिष्णु	—	२५
१५	आदिवराह	—	१००
१६	गधिया	—	५००
१७	चौहान	—	१००
१८	वलभी	—	१००
१९	विष्णुकुण्डिन	—	५०
२०	अस्पष्ट	—	२००

२४९८. श्री पद्मसिंह श्यामसुख का निजी संग्रह

इन्दौर के श्री पद्मसिंह श्यामसुख का निजी संग्रह भी सिक्कों के दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस संग्रह में लगभग **आठ हजार** प्राचीन सिक्के हैं जिन्हें निम्नलिखित मुख्य प्रकारों में बाँटा जा सकता है—

क्रमांक	**प्रकार**		**संख्या (लगभग)**
(१)	(२)		(३)
१	आहत—चाँदी के	—	२००
२	आहत—ताँबे के	—	२२००
३	ढले—उज्जयिनी चिन्हांकित	—	२०००
४	स्थानीय—एरण	—	५००
	तक्षशिला	—	२००
	कौशाम्बी	—	५०

(१)	(२)		(३)
५	गणराज्य—यौधेय	—	१०
६	हिन्द—यूनानी	—	५०
७	आन्ध्र	—	५०
८	कुषाण	—	१००
९	क्षत्रप	—	५०
१०	नाग	—	५००
११	गुप्त	—	१००
	गुप्त (रामगुप्त)	—	१०
१२	जिष्णु	—	५
१३	आदिवराह	—	५०
१४	हिंद-सासानी	—	२०००
१५	कलचुरि—कृष्णराज	—	१
१६	परमार—उदयादित्य	—	२ (सोने के)
	नरवर्मन्	—	३ (सोने के)
	अजयवर्मन्	—	१ (चाँदी का)
१७	चौहान	—	१००
१८	यादव (पद्मटंक)	—	५
१९	वलभी	—	२००
२०	विष्णुकुण्डिन	—	१००
२१	चन्देल—कीर्तिवर्मन्	—	१ (सोने का)
२२	गहड़वाल—गोविन्दचन्द्र	—	१ (सोने का)

इन संग्रहों के अतिरिक्त इन्दौर नगर में श्री राजेन्द्र कुमार सेठी, श्री शान्तिलाल परदेसी तथा कुछ अन्य व्यक्तियों के भी निजी संग्रह हैं जिनमें प्राचीन सिक्कों के महत्वपूर्ण संग्रह विद्यमान हैं।

२४६९. मड़वैया कुटीर संग्रहालय—विदिशा

मड़वैया कुटीर, विदिशा में पुरातत्त्व अन्वेषक श्री राजमल जैन मड़वैया द्वारा पुरातत्त्व की निम्नलिखित सामग्री निजी संग्रह में संग्रहीत की गयी हैं—

(क) पाषाण प्रतिमाएं तथा अभिलेख

क्रमांक	प्रतिमा का विवरण	प्रतिमा का काल (ईसवी शताब्दी में)	प्रतिमा का प्राप्ति स्थान
(१)	(२)	(३)	(४)
१	पुरुष-प्रतिमाओं के पांच खण्डित मस्तक	?	विदिशा

(१)	(२)	(३)	(४)
२	खण्डित पुरुष-प्रतिमा	?	वही
३	विष्णु-प्रतिमा का मस्तक	?	वही
४	चतुर्भुज खण्डित विष्णु प्रतिमा	?	वही
५	खण्डित जैन-प्रतिमा	?	वही
६	उत्कृष्ट केश विन्यास युक्त खण्डित स्त्री प्रतिमा का मस्तक	?	वही
७	वही	?	वही
८	मस्तक विहीन तीर्थंकर प्रतिमा	?	वही
९	खण्डित स्त्री प्रतिमाएँ	?	वही
१०	उत्कृष्ट केश विन्यास युक्त खण्डित स्त्री प्रतिमा का मस्तक	?	वही
११	खण्डित नागी-प्रतिमा का मस्तक	?	वही
१२	खण्डित प्रतिमा का दाहिना भाग, जिसमें गंधर्व युगल अंकित हैं	?	वही
१३	पुरुष प्रतिमा का धड़ जिस पर उत्कृष्ट अलंकरण है	?	वही
१४	नृत्य मुद्रा में स्त्री प्रतिमाएँ	?	वही
१५	लघु विष्णु-प्रतिमाएँ	?	वही
१६	अंबिका-प्रतिमा का आवक्ष	?	वही
१७	देवी-प्रतिमा का मस्तक	?	वही
१८	भैरव-प्रतिमा, जिसका निम्न भाग खण्डित है	?	वही
१९	लघु देवी-प्रतिमा जिसका निम्न भाग खण्डित है	?	वही
२०	लघु महिषासुरमर्दिनी-प्रतिमा	?	वही
२१	कार्तिकेय-प्रतिमा	?	वही
२२	सिरदल का खण्ड	?	वही
२३	प्रतिमा का खण्डित मस्तक, जिसमें उत्कृष्ट केश विन्यास है	?	वही
२४	योद्धा-प्रतिमा का खण्ड	?	वही
२५	लघु शिव पार्वती-प्रतिमा	?	वही
२६	त्रि-मुखी प्रतिमा	?	वही
२७	तीर्थंकर	?	वही
२८	विशाल तीर्थंकर-प्रतिमा का मस्तक	?	वही

(१)	(२)	(३)	(४)
२९	वही	?	वही
३०	विष्णु-प्रतिमा का मस्तक	?	वही
३१	तीर्थंकर प्रतिमा की प्रभावली	?	वही
३२	लकुलीश	?	वही
३३	स्तम्भ-खण्ड, जिस पर लेख उत्कीर्ण है	?	वही
३४	शिलाखण्ड जिनपर लेख उत्कीर्ण हैं	?	वही
३५	खण्डित कीर्तिमुख	?	वही
३६	गज-शार्दूल	?	वही
३७	सिरदल का खण्ड	?	वही
३८	खण्डित जैन-प्रतिमा	?	वही
३९	सिरदल का खण्ड	?	वही
४०	शिव-पार्वती	?	वही
४१	खण्डित प्रतिमा का निम्न भाग	?	वही
४२	नवग्रह-पट्ट का खण्ड	?	वही
४३	सिरदल का खण्ड	?	वही
४४	आले में बनी नरसिंह-प्रतिमा	?	वही
४५	खण्डित ब्रह्मा प्रतिमा	?	वही
४६	खण्डित प्रतिमा का निम्न भाग	?	वही
४७	द्वार-पक्ष का खण्ड	?	वही
४७-अ	वही	?	वही
४९	दार-पक्ष का खण्ड जिस पर लेख अंकित है	?	वही
५०	नागी-प्रतिमा	?	वही
५१	दार-पक्ष का खण्ड जिस पर लेख अंकित हैं	?	वही
५२	दार-पक्ष का खण्ड	?	वही
५३	स्तम्भ का खण्ड जिस पर अलंकरण है	?	वही
५४	वही	?	वही
५५	चतुर्भुज देव-प्रतिमा	?	वही
५६	सिरदल का खण्ड	?	वही

(ख) सिक्के

श्री राजमल मड़वैया ने निम्नलिखित सिक्के भी एकत्रित किये हैं—

१ आहत, ढले तथा ठप्पे लगे—तांबे के—लगभग १०,०००

२. आहत—चांदी के लगभग २००

३. उज्जैन चिन्हांकित—ताँबे के लगभग २००
४. सातवाहन—पोटीन के—१
५. क्षत्रप—चाँदी के—२५
६. नाग—ताँबे के लगभग २००
७. गुप्त सम्राट रामगुप्त—ताँबे के—२५
८. हिन्द-सासानी—चाँदी के—२५

२४७०. डॉ० महेश चन्द्र चौबे का निजी संग्रह, जबलपुर

जबलपुर के प्रमुख चिकित्सक डा० महेशचन्द्र चौब के निजी संग्रह में पुरातत्त्व की कुछ महत्वपूर्ण सामग्री संरक्षित है। इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

सिक्के

डा० चौबे द्वारा जो प्राचीन सिक्के संग्रहीत किये गये हैं, उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

क्रमांक	सिक्कों का वर्णन	संख्या		
		सोना	चाँदी	ताँबा
१	आहत सिक्के —— ——		२००	५००
२	अनुत्कीर्ण, ढले तथा ठप्पे लगे सिक्के—			
	एरण तथा उज्जयिनी —			२०
३	जनराज्य तथा स्थानीय सिक्के—त्रिपुरी			५
४	सातवाहन शासकों के सिक्के—			
	सिरिसातकनिस, सिरिसातस			२
	यज्ञसातकर्णी —		१	
५	कुषाण शासकों के सिक्के—वासुदेव			१
६	शक तथा पश्चिम क्षत्रप शासकों के सिक्के-विजयदामन् —		१	
	सत्यदामन् —		१	
७	नाग शासकों के सिक्के—भवनाग, महाराज भ —			२
८	बोधि राजवंश-शिवबोधि, चन्द्रबोधि, श्रीबोधि,—बोधि			१००
९	गुप्त तथा समकालीन शासकों के सिक्के			
	चन्द्रगुप्त—		१	
१०	हिन्द सासानी सिक्के—			५०
११	कलचुरि शासकों के सिक्के (कृष्णराज, गांगेयदेव)	३	५०	१०
१२	चन्देल शासकों के सिक्के—वीरवर्मदेव		१	

अभिलेख

इस संग्रह में क्षेत्रीय इतिहास से सम्बन्धित एक उत्कीर्ण लेख संरक्षित किया गया है। इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

क्रमांक	व्यक्ति अथवा राजा का नाम	वंश	तिथि	भाषा	शिला अथवा ताम्र-लेख	प्राप्ति स्थान
१—	दिक्पालों की वन्दना नमोयमः इत्यादि	—	११वीं सदी	संस्कृत लिपि नागरी	पाषाण पूगीफल	कोनी (सिहोरा) जबलपुर

सप्तम अध्याय

•

मध्यप्रदेश में पुरातत्त्व उत्खनन

मध्यप्रदेश के इतिहास की महत्ता को देखते हुए मध्यप्रदेश की सीमा के अन्तर्गत स्थित अनेक स्थलों पर उत्खनन का कार्य करवाया गया। यह कार्य विभिन्न वर्षों में केन्द्रीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग तथा मध्यप्रदेश शासन के पुरातत्त्व विभाग के अतिरिक्त कुछ विश्वविद्यालयों द्वारा सम्पन्न हुआ। विभिन्न स्थलों पर किये गये पुरातत्त्व उत्खनन का वर्णन इस प्रकार है—

२४७१. आदमगढ़ (१९६०-६१)

होशंगाबाद नगर की बाहरी सीमा पर नर्मदा नदी के दक्षिण तट पर स्थित आदमगढ़ की विश्वविख्यात चित्रित शैलकृत गुफाएँ हैं। इनकी महत्ता को देखते हुए भारतीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा यहाँ श्री आर० व्ही० जोशी तथा श्री एम० डी० खरे के निर्देशन में १९६०-६१ में उत्खनन करवाया गया।

कुल मिलाकर यहाँ अठारह खदानें (ए० डी० जी०-१ से ए० डी० जी० १८ तक) लगायी गयीं, जिनमें कुछ गुफाओं के अन्दर लगायी गईं तथा कुछ बाहर। इस उत्खनन में सबसे प्राचीन औज़ार पूर्व-पाषाणयुगीन हस्त-कुठार, विदारणी, अंडिल, चक्रिक उपकरण, खुरचनी, शल्क तथा क्रोड प्राप्त हुए। खदान क्रमांक ए० डी० जी०-१ में कालानुक्रमिक तीन स्तर पाये गये। खदान क्रमांक ए० डी० जी०-१० तथा ए० डी० जी०-१२ में भी यही स्तर तथा मिलते-जुलते औज़ार प्राप्त हुए। सभी खदानों में सर्वोपरि दो स्तरों में काँच के टुकड़े, काँच की चूड़ियों के टुकड़े तथा केल्सेडोनी के टुकड़ों के अतिरिक्त और कोई औज़ार प्राप्त नहीं हुए। इसके विपरीत काली मिट्टी के स्तर से प्रचुर मात्रा में लघुपाषाणीय औज़ार प्राप्त हुए। काली मिट्टी के ऊपरी भाग में कुछ मृद्भाण्डों के टुकड़े तथा हड्डियों के टुकड़े भी मिले।

इ० आ० रि० १९६०-६१, पृ० १३; चित्र २, पृ० १२, चित्र ३, पृ० १४, चित्र ४, पृ० १६ तथा फलक २०-२३।

२४७२. आवरा (१९६०-६१)

मन्दसौर जिले में चन्दवासा नगर के ६ मील पश्चिम की ओर स्थित आवरा (प्राचीन 'अपरा') ग्राम स्थित है। इस गाँव तथा गाँव से आधे मील की दूरी पर स्थित चम्बल नदी के

बीच के भाग में टीलों की एक शृंखला विद्यमान थी जो अब चम्बल बाँध बनने के कारण जल में समा चुकी है। इन टीलों में प्राचीन 'अपरा' नगर के खण्डहर थे, अतः डूबने से पहले इनका सीमित उत्खनन मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व विभाग द्वारा १९६०-६१ में डा० एच० व्ही० त्रिवेदी के निर्देशन में करवाया गया। इस उत्खनन से मालवा के प्राचीन इतिहास पर (विशेष रूप से ताम्रपाषाण युग से गुप्त काल तक) महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ा है।

उत्खनन में प्राप्त सामग्री के आधार पर यहाँ पर बसी सभ्यता को निम्नलिखित छः कालों में विभाजित किया गया है—

प्रथम काल—	पाषाण युग
द्वितीय काल—	ताम्रपाषाण युग (१५०० ई० पू० से ६०० ई० पू० तक)
तृतीय काल—	५०० ई० पू० से १०० ई० पू० तक
चतुर्थ काल—	१०० ई० पू० से ३०० ईसवी तक
पंचम् काल—	३०० ईसवी से ५०० ईसवी तक
षष्ठ काल—	उत्तर-मध्ययुग (मुस्लिम मराठा काल)

उपरोक्त विभिन्न कालों की महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

प्रथम काल (पाषाण युग)

चम्बल घाटी की खोज में आवरा के निकटवर्ती क्षेत्र से पाषाण युगीन औज़ार प्राप्त हुए हैं। ये औज़ार इस स्थल पर बसी सर्वप्रथम सभ्यता के सूचक हैं।

द्वितीय काल (ताम्रपाषाण युग) (१५०० ई० पू० से ६०० ई० पू० तक)

इस उत्खनन के सीमित होने के कारण इस काल से सम्बन्धित लोगों के रहन-सहन, खान-पान आदि के विषय में स्पष्ट प्रकाश नहीं पड़ सका। कुछ मकानों की नींव तथा फर्श के अवशेष मिले हैं। यह ज्ञात नहीं हो सका कि इस काल के निवासी आर्य थे अथवा अनार्य। उनकी खाद्य सामग्री क्या थी, यह कहना भी कठिन है। उत्खनन में कुछ मछली की हड्डियाँ अवश्य ही प्राप्त हुई हैं। विभिन्न प्रकार के लघु पाषाण औज़ार प्राप्त होने से ज्ञात होता है कि ये लोग इस प्रकार के औजार घरेलू उपयोग में लाते थे। ताँबे का उपयोग भी इन्हें ज्ञात था। उत्खनन में ताँबे की एक कुल्हाड़ी इस काल से सम्बन्धित स्तर से प्राप्त हुई है। घरेलू उपयोग में इस काल के निवासी चित्रित 'लाल पर काले', 'लाल और काले', सफेद रंग से रँगे, अनगढ़ लाल, काले तथा भूरे और उत्कर्तित भांडों का उपयोग करते थे। इन विभिन्न प्रकार के मृद्भाण्डों के अनेक ठीकरे उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। इनके अतिरिक्त बहुत थोड़े से अन्य महत्वपूर्ण प्रकार के ठीकरे भी प्राप्त हुए हैं। यह सभ्यता महेश्वर-नावडा-टोली, नागदा आदि के ताम्रपाषाण युगीन सभ्यता के समकालीन थी।

तृतीय काल (५०० ई० पू० से १०० ई० पू० तक)

ताम्रपाषाण युगीन निवासियों की अपेक्षा इस युग के लोगों के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अधिकप्रकाश पड़ा है।

इस युग से सम्बन्धित स्तर से जले हुए मकानों के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जिससे ज्ञात होता है कि यहाँ के निवासी कच्चे मकानों में रहते थे जिनकी दीवारें बाँस, लकड़ी, मिट्टी आदि से बनती थीं तथा छतों पर लोहे के खीलों के सहारे रखे गये टाइल्स का उपयोग होता था। इस युग के निवासी लोहे का उपयोग अच्छी तरह जानते थे। उत्खनन में प्राप्त होने की सामग्रियों में वाणाग्र, शूलाग्र, खीले, हँसिया, छैनी, टाँगने योग्य दीप, कुल्हाड़ी आदि प्राप्त हुए हैं। ताँबे की बनी अनेक वस्तुएँ भी मिली हैं जिनमें चूड़ियाँ, छल्ले, छड़ आदि उल्लेखनीय हैं।

पत्थर की बनी वस्तुओं में तीन चक्कियाँ प्रमुख हैं। स्टिटाइट पत्थर के बने दो गोलाकार मंजूषा के ढक्कन भी महत्वपूर्ण हैं। मूल्यवान पत्थरों के बने विभिन्न आकार तथा प्रकार के मनके भी इस स्तर से प्राप्त हुए हैं।

शंख की बनी चूड़ियाँ, हड्डी की वस्तुएँ तथा हाथीदाँत की कृतियाँ भी महत्वपूर्ण हैं। हाथीदाँत की वस्तुओं में मातृदेवी की आकृति, कटार-नुमा वस्तु तथा एक मुद्रांक महत्वपूर्ण हैं। हाथीदाँत के बने इस मुद्रांक पर मौर्यकालीन ब्राह्मी लिपि में 'जिधवस' खुदा है।

मिट्टी की बनी वस्तुओं में बच्चों के खिलौने, मनुष्य तथा पशु आकृतियाँ, मनके तथा मुद्राएँ महत्वपूर्ण हैं। एक मिट्टी के मुद्रांक पर '(अ) पराय' शब्द खुदा है, जिससे पता लगता है कि इस स्थान का प्राचीन नाम 'अपरा' था। मिट्टी के बने विभिन्न आकार-प्रकार के जो भाण्ड इस काल में उपयोग में लाये जाते थे, वे थे : काले ओपदार उत्तरी भाण्ड, काले और लाल भाण्ड, अनगढ़ लाल तथा सादे काले भाण्ड।

इस युग की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इस काल की उन्नत जल-निकास-व्यवस्था थी। जल की निकासी पकायी गयी मिट्टी के बने पाइपों से होती थी। इसके अतिरिक्त वलय कूप, शोषक गर्त, शोषक कूप आदि के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं।

इस काल के स्तर से आहत तथा ढले हुए सिक्के भी प्राप्त हुए हैं।

चतुर्थ काल (१०० ई० पू० से ३०० ईसवी तक)

इस युग के निवासी पकी ईंटों के बने मकानों में रहते थे। उत्खनन में प्राप्त मकानों के अवशेषों से अवश्य ही मकानों के विभिन्न आकारों का स्पष्ट चित्र सामने नहीं आ सका। लोहे तथा ताँबे का उपयोग इस काल में बहुत होता था, जैसा कि प्राप्त सामग्री से ज्ञात होता है। शंख तथा हाथीदाँत की चूड़ियाँ तथा अन्य आभूषण बनाना इस काल का एक मुख्य उद्योग प्रतीत होता है। पकी मिट्टी की बनी चूड़ियाँ तथा कान के आभूषण प्रचुर मात्रा में मिले हैं। इस युग से सम्बन्धित स्तर से जो मिट्टी की गेंद, छिद्रयुक्त ढक्कन, मनुष्य तथा पशुओं की आकृतियाँ प्राप्त हुई हैं, वे शैली के दृष्टिकोण से तृतीय काल की वस्तुओं से उन्नत हैं। मिट्टी के बने एक बैल का खण्डित पिछला भाग भी प्राप्त हुआ है जिस पर दूसरी-तीसरी शताब्दी के ब्राह्मी अक्षरों में '....सवय' लेख उत्कीर्ण है। सजावट के लिए काम में आने वाली एक गोलाकार मिट्टी के टुकड़े के एक ओर कमल पर खड़ी एक देवी का चित्र है तथा दूसरी

ओर कमल अंकित किया गया है। दो मिट्टी की बनी मुद्रांक भी इस काल के स्तर से मिली हैं। एक गोलाकार मुद्रांक पर दूसरी शताब्दी ईसवी की ब्राह्मी लिपि में चार अक्षरों का लेख 'गोसमस' खुदा हुआ है। एक अन्य तिकोनाकार मुद्रांक के एक ओर 'समरसतस' तथा दूसरी ओर 'यसोमितस' लेख खुदे हैं। ये लेख लगभग चौथी शताब्दी ईसवी की लिपि में हैं। इस काल से सम्बन्धित मृद्भाण्ड हैं : लाल ओपदार भाण्ड, सादे लाल भाण्ड, अनगढ़ लाल तथा अनगढ़ काले भाण्ड। जल-निकासी व्यवस्था में भी इस काल के निवासी उतने ही उन्नत थे जितने कि पिछले काल के। उत्खनन में प्राप्त सिक्कों में पंचमार्क, ढले, उज्जैन चिह्न युक्त तथा क्षत्रप सिक्के प्रमुख हैं। रोमन सभ्यता से सम्पर्क इस काल की एक प्रमुख विशेषता है, जैसा कि उत्खनन में प्राप्त एक मिट्टी के बने बैल के पिछले भाग पर बने रोमन सिक्के के छाप से प्रतीत होता है।

पंचम् काल (३०० ईसवी से ५०० ईसवी तक)

आवरा के सीमित उत्खनन में इस काल से सम्बन्धित अवशेष केवल एक टीले (ए० व्ही० आर० में टीला क्रमांक ३) में उपलब्ध हुए हैं। उत्तर-क्षत्रप काल से सम्बन्धित इन अवशेषों में भवनों के कुछ अवशेषों के अतिरिक्त मिट्टी की बनी टोटियाँ, मृद्भाण्डों के ठीकरे, मनके, मनुष्याकृतियाँ, खिलौने आदि प्राप्त हुए हैं। इस काल से सम्बन्धित मृद्भाण्ड हैं : अनगढ़े लाल रंग के भाण्ड जिन पर सफेद पृष्ठभूमि पर काले रंग की चित्रकारी की है, गहरे धूसर वर्ण के भाण्ड, लाल रंगे मोटे भाण्ड तथा चमकीले भांड।

षष्ठ काल (उत्तर-मध्ययुग—मुस्लिम-मराठा काल)

लगभग पाँचवीं-छठी शताब्दी ईसवी के पश्चात् यह स्थान उजड़ गया, ऐसा प्रतीत होता है। परन्तु सतह से प्राप्त मुस्लिम-मराठा कालीन सिक्के तथा अन्य अवशेषों से ऐसा ज्ञात होता है कि उत्तर-मध्य युग में यह स्थान फिर से आवाद हो गया।

एच० व्ही० त्रिवेदी—रिपोर्ट ऑफ़ दी एस्कावेशन्स एट आवरा; ज० म० प्र० इ० प० अंक ४ (१९६२), पृ० १३-४०; इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० २४-२५।

२४७३. इन्द्रगढ़ (१९५८-५९)

मन्दसौर जिले में स्थित इन्द्रगढ़ नामक स्थान से एक शिलालेख प्राप्त हुआ, जिसके अनुसार राष्ट्रकूट नन्नप के शासन काल में इस स्थान पर एक शिव-मन्दिर का निर्माण कराया गया था, जिसके कुछ अवशेष प्राप्त हुए। इस मन्दिर का पूर्ण रूप ज्ञात करने के लिए १९५८-५९ में इस मन्दिर के अवशेषों का उत्खनन करवाया गया।

इन्द्रगढ़ में यह उत्खनन तीन स्थलों पर करवाया गया। पहला स्थल देवालय के क्षेत्र में था। इस स्थल पर देवालय के जो अवशेष मिले, उनमें चौकोर, त्रिकोण तथा अन्य आकृतियों की सादी और कोरी प्रस्तर शिलाएँ, स्तम्भ, देहली, दासा, तोरण आदि के भाग तथा विभिन्न देव प्रतिमाएँ और उनके खण्ड प्रमुख थे। प्रमुख प्रतिमाएँ नन्दी, भैरव, पार्वती, विष्णु,

लक्ष्मी और वाराही की मिलीं। कुछ प्रतिमाएँ ऐसे स्थल पर मिलीं जिनसे वहाँ उस मन्दिर के उप-मन्दिर के अस्तित्व का पता चलता है। इनके अतिरिक्त उत्खनन में छोटी-छोटी वस्तुएँ भी मिलीं, जैसे काँच और मिट्टी की मणि, ताँबे के पुराने सिक्के, जला हुआ धान्य, काँच और हाथीदाँत की चूड़ियाँ इत्यादि। इन सबमें लोहास्त्रों की संख्या अधिक पायी गयी जिनमें कटारों और नुकीले अग्रभागों की विपुलता दिखी जो यहाँ किसी समय हुए युद्ध के द्योतक हैं। बारहवीं सदी ई० के एक शिलालेख के खण्ड भी मिले जिनके आधार पर मंदिर के उस समय तक अस्तित्व का अनुमान किया जा सकता है। अत: यह मन्दिर ८वीं से १२वीं सदी ई० तक विद्यमान था, ऐसा अनुमान लगाया गया है।

उपरोक्त स्थल के अतिरिक्त एक दूसरे स्थल पर भी उत्खनन करवाया गया जो पहले स्थल से लगभग दो फर्लांग पूर्व में था। इसमें यहाँ की प्राचीन बस्ती के अवशेष, जिसमें ईंट और पत्थरों की पुरानी दीवालों के भाग, चूड़ियों के टुकड़े, मनके, अन्य आभूषण, तोलने के बाँट तथा लोहास्त्र आदि प्राप्त हुए। एक अस्तिपंजर भी मिला जिससे यहाँ पर हुए युद्ध का अनुमान लगाया जा सकता है।

एक तीसरे स्थल पर भी उत्खनन करवाया गया जो मन्दिर के दक्षिण-पूर्व की ओर था। इसमें दो मंजिले जले हुए मकान के अवशेष, घरेलू उपयोग की अन्य वस्तुएँ तथा तीन अस्तिपंजर मिले जिनमें से दो में फँसे लोहे के तीर के फलक मिले। इससे यहाँ पर हुए युद्ध की सत्यता और भी प्रमाणित होती है। यह आक्रमण सम्भवत: मुस्लिम काल में हुआ होगा।

इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २८; गा० पु० पृ० ९-१४

२४७४. उज्जैन (१९३८-३९, १९५५-५८, १९६४-६५)

प्राचीन भारत के सांस्कृतिक केन्द्रों में उज्जयिनी को जितना महत्व मिला, उतना इस देश के बहुत कम नगरों को मिल सका। क्षिप्रा नदी के तट पर बसी इस नगरी का स्थान धर्म, साहित्य, विज्ञान, कला और व्यवसाय के क्षेत्रों में प्रमुख रहा। हिन्दू, बौद्ध तथा जैन तीनों साहित्यों में इस नगरी का गुणगान किया गया है। उज्जयिनी के प्राचीन वैभव के सम्बन्ध में जितना साहित्यिक प्रमाण उपलब्ध है, उतनी ही महत्वपूर्ण पुरातत्व की सामग्री भी उपलब्ध है। अत: इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि इस नगरी ने पुरातत्त्वविदों का ध्यान कई बार अपनी ओर आकर्षित किया तथा आज भी कर रही है।

उज्जयिनी की प्राचीन महत्ता को देखते हुए यहाँ कई बार पुरातत्त्व उत्खनन किये गये। यहाँ पर सर्वप्रथम उत्खनन ग्वालियर राज्य के पुरातत्त्व विभाग द्वारा श्री मो० ब० गर्दे के निर्देशन में १९३८-३९ ई० में करवाया गया। इस उत्खनन में कई टीलों को खुदवाया गया, जिसमें से महत्वपूर्ण अवशेष प्राप्त हुए। इनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—

आधुनिक नगर के उत्तर की ओर क्षिप्रा नदी के तट पर बसे ३० से ५० फुट ऊँचे कई टीले हैं जो लगभग एक वर्ग मील के क्षेत्र में फैले हुए हैं। ये 'गढ़' कहलाते हैं।

१९३८-३९ में यहाँ नरीक्षण-उत्खनन किया गया, जिसमें मौर्यकालीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए। अवशेषों में मिट्टी के बने वलय-कूप, वृहदाकार भाण्ड, मृद्-मुद्राएँ, मिट्टी के खिलौने, आहत सिक्के आदि प्राप्त हुए।

दूसरा उत्खनन आधुनिक नगर की उत्तर-पूर्व दिशा में तीन मील की दूरी पर स्थित 'वैश्या टेकरी' नामक टीले का किया गया। इस टीले के उत्खनन में एक विशाल स्तूप के अवशेष प्राप्त हुए, जिसका निर्माण सम्भवत: 'वैश्य-पुत्री' सेट्ठि-धीता द्वारा अशोक के शासन काल में करवाया गया था। यह विशाल स्तूप मानों एक वृहदाकार पहाड़ी ही है, जिसका व्यास ३५० फुट तथा ऊँचाई १०० फुट है। श्यामल मुरुम को कूट-कूट कर इस वृत्ताकार स्तूप का निर्माण किया गया था। उत्खनन-काल में भीतर से इसे पोला पाया गया। सम्भवत: भीतर से यह लकड़ी के लट्ठों से बनायी हुई अर्ध-वृत्ताकार मेहराब पर आधारित था। स्तूप को बाहर से ईंटों की जुड़ाई से आवेष्टित कर दिया गया था। वृहदाकार इन ईंटों के माप अधिकतम २२॥ इंच × १८॥ इंच × ३॥। इंच, तथा २२॥ इंच × १५॥ इंच × ३॥। इंच थे, जिससे इनका मौर्यकालीन होना ही प्रतीत होता है। ये ईंटें अच्छी तरह पकी हुई नहीं थीं, जिसके फलस्वरूप इनके नष्ट हो जाने के कारण स्तूप का कुछ भाग खुल गया था। उत्खनन में स्तूप के ऊपर चाँदी की एक आहत मुद्रा तथा ढाली हुई एक अवन्ति-मुद्रा प्राप्त हुए थी।

वैश्या-टेकरी के लगभग १०० गज पश्चिम की ओर स्थित एक अन्य टीला था। इसका भी उत्खनन किया गया, जिसमें एक छोटे अपूर्ण स्तूप के अवशेष प्राप्त हुए।

वैश्या-टेकरी के लगभग १०० गज दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित एक और टीला था जिसे 'पल्लेवाली टेकरी' अथवा 'ककंर-टेकरी' के नाम से पुकारा जाता था। इस वर्ष इस टीले का भी उत्खनन किया गया जिसमें एक अन्य स्तूप के अवशेष मिले जिसकी बनावट 'वैश्या-टेकरी' के स्तूप से मिलती-जुलती थी।

वैश्या-टेकरी के पूर्व की ओर लगभग १ किलोमीटर की दूरी पर स्थित 'कुम्हार टेकरी' नामक एक अन्य टीला था। यह टीला २२० फुट लम्बा, ११० फुट चौड़ा तथा १५ फुट ऊँचा था। इस टीले से अधिक संख्या में मृद्भाण्ड प्राप्त होने के कारण इसे 'कुम्हार टेकरी' के नाम से पुकारा जाता था। १९३८-३९ में इसका भी उत्खनन करवाया गया जिससे यह ज्ञात हुआ कि यह एक श्मशान-भूमि थी। यहाँ उत्खनन में प्राप्त मुद्राओं से यह स्पष्ट हो गया कि यह कि यह टीला ई० पू० दूसरी शताब्दी के पूर्व का था। उत्खनन काल में टीले की ऊपरी सतह से केवल २।३ फुट की गहराई से कंकाल प्राप्त हुए जिनकी संख्या कुल ४२ थी। इनमें से १८ कंकालों की जाँच, निरीक्षण तथा अध्ययन के लिए भारतीय मानव शास्त्रीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा कलकत्ता ले जाया गया। उनके अभिवेदन के अनुसार इन कंकालों से सम्बन्धित लोगों को 'इण्डो-आर्यन' जाति का माना जा सकता है।

कुम्हार टेकरी के पूर्वोक्त भागों की खुदाई में प्रमुख पुरातत्वीय अवशेषों में विभिन्न आकार के मृद्भाण्ड तथा शंख, मणि, खिलौने आदि प्राप्त हुए। उपर्युक्त मानव कंकालों के

साथ सीपों के तथा अन्य प्रकार के मणि काफी मात्रा में मिले। इस टेकरी पर तथा उसकी ऊपरी सतहों में उज्जैन के 'हाथी और चैत्य' चिन्हांकित तांबे के ढले हुए सिक्के प्राप्त हुए हैं जिसके आधार पर यह कहा गया है कि यह ई० पू० दूसरी या उसके पूर्व के समय की है। सम्भवतः यह श्मशान समीप के विहार के भिक्षु तथा भिक्षुणियों से ही सम्बन्धित था।

उज्जैन का महत्वपूर्ण उत्खनन भारतीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा १९५५ में श्री एन० आर० बनर्जी के निर्देशन में प्रारम्भ करवाया गया। यह उत्खनन १९५८ तक चलता रहा। इन तीनों वर्ष उत्खनन का स्थल था क्षिप्रा तट पर स्थित गढ़कालिका टीला। टीले के उत्खनन में कुल चार कालों से सम्बन्धित पुरातत्त्व की सामग्री प्रकाश में आयी जिनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—

प्रथम काल (७५० ई० पू० से ५०० ई० पू० तक)

इस काल से सम्बन्धित स्तर से 'काले और लाल', लाल रंग से पुते हुए तथा अनगढ़े मृद्भाण्डों के ठीकरे प्राप्त हुए। लोहे का प्रयोग प्रारम्भ से ही दिखने में आता है। मकान मिट्टी के बने पाये गये। इस काल के उत्तरार्ध से सम्बन्धित एक चौकोर परकोटे के अवशेष भी मिले, जो क्षिप्रातट को छोड़ नगर को तीनों ओर से घेरे हुए था। यह परकोटा आधार पर ७५ मी० चौड़ा था तथा इसकी ऊँचाई १३ मी० थी। इसके चारों ओर २४ मी० चौड़ी खाई थी जो प्रतिरक्षा का कार्य सुदृढ़ करती थी। इस परकोटे में कई बार दरारें बनीं तथा उन्हें सुधारा गया। नगर में प्रवेश का प्रमुख द्वार उत्तर-पश्चिम की ओर था, जहाँ कई सड़कों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

द्वितीय काल (५०० ई० पू० से २०० ई० पू० तक)

इस काल से सम्बन्धित स्तर से प्रथम काल में प्राप्त मृद्भाण्डों के अतिरिक्त काले ओपदार उत्तरी भाण्डों के ठीकरे प्राप्त हुए। काले ओपदार उत्तरी भांडों की संख्या अत्यधिक होने के कारण ऐसा प्रतीत होता है कि ये स्थानीय ही तैयार किये जाते थे। अधिक संख्या में हड्डी के बने वाणाग्र भी इस स्तर से प्राप्त हुए हैं। अन्य वस्तुओं में सिक्के, उत्कीर्ण मुद्रा, लोहे के बने वाणाग्र तथा शूलाग्र और मिट्टी, ताँबे तथा मूल्यवान पत्थरों के बने विभिन्न प्रकार के आभूषण महत्वपूर्ण हैं। यह निर्माण-परक काल प्रतीत होता है जिसमें पकी तथा कच्ची ईंटों के अनेक भवन आदि बनाये गये, जिनके अवशेष उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। पकी ईंटों का बना १० मी० × ८ मी० के एक तालाब के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। पकी ईंटों से बने एक नहर के अवशेष भी ५६ मी० की दूरी तक प्राप्त हुए हैं। पत्थरों के मनके, वाणाग्र आदि बनाने के एक कारखाने के अवशेष भी इस काल से सम्बन्धित स्तर से प्राप्त हुए हैं।

तृतीय काल (२०० ई० पू० से १३०० ईसवी तक—शुंग काल से परमार काल तक)

इस काल से सम्बन्धित स्तर से उज्जैयिनी चिन्हांकित सिक्के तथा मिट्टी की प्रतिमाएँ अधिक मात्रा में प्राप्त हुई हैं। कुषाण काल से सम्बन्धित मिट्टी की बनी स्त्री प्रतिमा उल्लेखनीय है। मूल्यवान पत्थरों के मनके बनाये जाना इस काल का एक प्रमुख उद्योग प्रतीत होता

है। यहाँ उल्लेखनीय है कि 'पेरिप्लस आफ़ दी एरिथ्रीयन सी' नामक पुस्तक में उज्जैन के मूल्यवान पत्थरों के बने हुए वस्तुओं के एक प्रमुख व्यापार-केन्द्र के रूप में होने का उल्लेख आया है। इस काल से सम्बन्धित स्तर से कच्चे मकानों के अवशेष मिले हैं। इनके अतिरिक्त वलय-कूप, शोषक भाण्ड तथा नालियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। सार्वजनिक प्रयोग में लाये गये एक चूल्हे के अवशेष भी मिले हैं।

चतुर्थ काल (१४वीं शताब्दी ईसवी-परमार काल के अन्त से मुस्लिम काल के प्रारम्भ तक)
इस काल से सम्बन्धित स्तर से १४वीं शताब्दी ईसवी के सिक्के, चमकीले मृद्भाण्डों के ठीकरे तथा अन्य ठीकरे, ईंट तथा पत्थर के बने भवनों के अवशेष आदि प्राप्त हुए हैं। लगता है इस काल के निवासी केवल थोड़े समय के लिए यहाँ रहे तथा इसके बाद इसे छोड़कर चले गये।

केन्द्रीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा १९६४-६५ में उज्जैन में फिर से एक लघु-उत्खनन करवाया गया। श्री के० एम० श्रीवास्तव के निर्देशन में किये गये इस उत्खनन का प्रमुख उद्देश्य था कार्बन-१४ की विधि के द्वारा तिथि निर्धारण करने के लिये उज्जैन के विभिन्न कालों से सम्बन्धित स्तरों से सामग्री एकत्रित करना। इस उत्खनन में द्वितीय काल से सम्बंधित स्तर से एक चूने का बना पात्र प्राप्त हुआ जिसका आकार ५० × ५० × ४० से० मी० था तथा जिसमें नलिकाएँ लगी थीं। यह पात्र खण्डित अवस्था में प्राप्त हुआ, अत. इसका उपयोग समझ में न आ सका।

इसी वर्ष मध्यप्रदेश शासन के पुरातत्त्व विभाग को चौबीस-खम्भा द्वार के निकट एक लघु-उत्खनन कर लगभग ११वीं शताब्दी में बने एक मन्दिर के अवशेषों को निकालना पड़ा। स्थानीय नगर-पालिका द्वारा बनाये जा रहे एक सड़क के निर्माण काल में इस मन्दिर के अवशेष दिखने में आये। प्राप्त अवशेषों से ज्ञात हुआ कि लगभग १५वीं शताब्दी ईसवी में इस मन्दिर के भग्नावशेषों को इसी स्थल पर बने एक मसजिद में उपयोग में लाया गया। कुछ समय पश्चात् यह मसजिद भी त्यागे जाने के कारण खण्डहरों में परिवर्तित हो गया।

ग्वा० पु० रि० १९३८-३९, पृ० १३-१४; इ० आ० रि० १९५५-५६, पृ० १९; वही, १९५६-५७, पृ० २०-२८, चित्र २६-३५; वही, १९५७-५८, पृ० ३२-३६, चित्र ३८-४५; वही, १९६४-६५, पृ० १८, चित्र १४, १८; स० का० दीक्षित—'उज्जैयिनी : इतिहास तथा पुरातत्त्व'।

२४७५. एरण (१९६०-६५)

सागर जिले में सागर नगर से ४७ मील उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित एरण (प्राचीन ऐरिकिण) नामक स्थान पर सागर विश्वविद्यालय की ओर से प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी के निर्देशन में १९६०-६१ में उत्खनन कार्य प्रारम्भ किया गया। यह कार्य पाँच वर्षों (१९६०-६५ तक चलता रहा, जिससे यहाँ के इतिहास पर नया प्रकाश पड़ा है।

आधुनिक एरण ग्राम बीना (प्राचीन वेण्वा) नदी के दक्षिण तट पर उसके द्वारा तीनों ओर से घेरे हुए एक प्राचीन टीले पर बसा हुआ है। प्राचीन ऐरिकिण नगर लगभग १ मील × १/४ मील के क्षेत्रफल पर बसा हुआ था। नदी के क्षरण के कारण इस नगर के भग्नावशेष अब केवल कुछ टीलों के रूप में ही रह गये हैं, जिनमें सबसे बड़ा टीला ४० फुट ऊँचा है। इन टीलों के उत्खनन द्वारा स्तरण प्रमाण तथा उपलब्ध सामग्रियों के आधार पर यहाँ पर बसे सभ्यता को निम्नलिखित चार कालों में विभाजित किया गया है—

प्रथम काल—	(ताम्रपाषाण युग) २००० ई० पू० से ७०० ई० पू० तक
द्वितीय—(अ) काल—	(पूर्व-ऐतिहासिक) ७०० ई० पू० से २०० ई० पू० तक
द्वितीय—(ब) काल—	२०० ई० पू० से १०० ई० तक
तृतीय काल —	प्रथम शताब्दी ईसवी से ६वीं शताब्दी ईसवी तक
चतुर्थ काल —	मध्यकालीन से १८०० ईसवी तक।

प्रथम काल

उत्खनित सामग्री के आधार पर इस काल को ताम्रपाषाण युग माना गया है। अवशेषों में लघुपाषाण औज़ार, 'काले और लाल' तथा चित्रित 'लाल-पर-काले' मृद्भाण्ड, मिट्टी की मूर्तियाँ तथा विभिन्न पत्थरों एवं मिट्टी की गुरियाँ प्राप्त हुई हैं। कुछ भूरे रंग के मृद्-पात्र भी मिले जो मोटे तथा पतले दोनों प्रकार के हैं। मिट्टी की मूर्तियों में जानवरों की प्रतिमाएँ अधिक हैं। ताँबे की आदिम कुल्हाड़ियों के टुकड़े, गोलाकार सोने का टुकड़ा, मिट्टी तथा शंख की चूड़ियों के टुकड़े भी प्राप्त हुए हैं। समकालीन एक गोल चूल्हा भी मिला है जिसके किनारे उठे हुए हैं तथा जिसकी फर्श पक्की है। उत्खनन में नगर की प्राचीन रक्षा-दीवाल मिली है जो कड़ी मिट्टी की बनी है। इसकी चौड़ाई १५४ फुट तथा ऊँचाई २१ फुट है। इसके दक्षिण में खाई बनायी गयी थी जो रक्षा कार्य को और मजबूत बनाती थी।

द्वितीय—(अ) काल

इस काल में ताँबे के स्थान पर लोहे का प्रयोग होने लगा था, जिसके कई टुकड़े उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। ताम्रपाषाण-युगीन 'काले और लाल' भाण्ड इस काल में भी मिलते हैं, परन्तु बनावट के आकार-प्रकार में पूर्वकाल की अपेक्षा ये भिन्न हैं। 'लाल-पर-काले' भाण्डों से मिलते-जुलते कुछ टुकड़े इस युग के स्तर में भी मिलते हैं, परन्तु ताम्रपाषाण युगीन विशेष प्रकार के भाण्डों का उपयोग इस युग में बन्द हो चुका था। इस युग के उत्तरार्ध काल के स्तर से 'काले ओपदार उत्तरी भाण्ड' के कुछ ठीकरे मिलते हैं। इसी स्तर से कुछ आहत तथा कबीले सिक्के और सीसे का एक अर्धवृत्ताकार टुकड़ा (तौल २.६७ किलोग्राम) मिला है, जिस पर मौर्य कालीन ब्राह्मी लिपि में एवं पाली भाषा में 'रञो ईदगुतस' लिखा है। इस राजा का नाम अभी तक अज्ञात था। इस काल के अवशेषों में कोई भी निर्मित भवन के अवशेष प्राप्त नहीं हुए, यद्यपि ईंट तथा पत्थरों के टुकड़े अवश्य ही मिले हैं। अन्य उल्लेखनीय वस्तुओं में मिट्टी की मूर्तियाँ तथा गुरियाँ, शंख तथा चमकीले पत्थरों के आभूषण, बाँट आदि हैं।

द्वितीय—(ब) काल

इस काल में 'काले और लाल' मृद्भाण्डों का प्रयोग प्रायः बन्द हो गया। अधिकतर मृद्भाण्ड सादे लाल हैं तथा कुछ पर काले रंग की चित्रकारी है। इस काल से सम्बन्धित स्तर से ३२६८ आहत सिक्कों की एक निधि प्राप्त हुई जो लगभग दूसरी-पहली शताब्दी ई० पू० की हैं। इनमें से अधिकतर सिक्के ताँबे के हैं तथा कुछ पर चाँदी की परत चढ़ी है। अन्य उल्लेखनीय वस्तुओं में मिट्टी की बनी जानवर तथा मनुष्याकृतियाँ, लोहे के टुकड़े, गुरियाँ, शंख तथा चमकीले पत्थरों के आभूषण आदि हैं।

तृतीय काल

इस काल में पूर्वोक्त दोनों समयों जैसे मृद्भाण्ड नहीं मिलते। उनके स्थान पर लाल पालिश युक्त मृद्भाण्ड मिले हैं जिनमें कुछ पर काले रंग से खड़ी रेखाएँ चित्रित हैं। पकी ईंटों का प्रयोग इस काल में अधिक हुआ। ईंटों के मकान छोटे आकार के हैं तथा उनकी निर्माण कला बहुत साधारण है। इस काल की प्राप्त अन्य वस्तुओं में चाँदी और ताँबे के सिक्के, मिट्टी, शंख तथा पत्थरों के मनके, शंख की चूड़ियाँ, लोहे तथा हड्डी की वस्तुएँ, मिट्टी की बनी पशु तथा मनुष्य मूर्तियाँ तथा कुछ पत्थर के अवशेष हैं। सिक्कों में क्षत्रप, नाग, गुप्त सम्राट राम-गुप्त तथा हिन्द सासानी सिक्के उपलब्ध हुए हैं। हूण शासक तोरमाण की भी मुद्राएँ मिली हैं। पश्चिमी शक क्षत्रप राजा की मुद्रा बनाने के लिए प्रयुक्त पकी मिट्टी के साँचे का एक टुकड़ा भी मिला है। इस पर सिक्के के आमने-सामने वाले दोनों भाग डाले जाते थे। इस काल की प्राप्त एक अन्य मिट्टी की मुद्रा के ऊपरी भाग में गजलक्ष्मी का चित्र बना है तथा निम्न भाग में ब्राह्मी लिपि में 'ऐरिकिणे गोमिक विष (या) धिकर (णस्य)' उत्कीर्ण है। एक ताँबे के टुकड़े पर कीर्तिमुख अंकित है। एक अन्य मिट्टी की मुद्रा पर गुप्त लिपि में 'महादण्डनायक सिंहनन्दि' उत्कीर्ण है।

चतुर्थ काल

एरण के उत्खनन में उत्तर-मध्यकाल की कुछ वस्तुएँ भी मिली हैं, जिनका समय १६वीं से १८वीं शताब्दी तक ठहरता है। सम्भवतः इसी काल में पत्थर की एक नगर दीवाल का निर्माण हुआ जिसके अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं।

इ० आ० रि० १९६०-६१ पृ० १७-१८, चित्र २४-२९; वही, १९६१-६२, पृ० २४-२५, चित्र ३९-४२; वही, १९६२-६३, पृ० ११-१२. चित्र ३०-३५; वही, १९६३-६४, पृ० १५-१६, चित्र ९-१०; वही, १९६४-६५, पृ० १६-१८; बाजपेयी कृ० द०—'सागर थ्रू दी एजेज़', पृ० २६-३१; ज० म० प्र० इ० प० अंक ४ (१९६२), पृ० ४१-४४; बुलेटिन ऑफ एनशियन्ट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड आर्कयलाजी, यूनिवर्सिटी ऑफ़ सागर, अंक १ (१९६७), पृ० २९-३८; बाजपेयी कृ० द०—'मध्यप्रदेश का पुरातत्त्व,' पृ० १७-१९।

२४७६. कसरावद (१६३६-३६)

पश्चिम-निमाड़ जिले में कसरावद नगर के दक्षिण में तीन मील की दूरी पर तथा महेश्वर से ६ मील दूर नर्मदा के तट पर स्थित इतबर्डी नामक टीला है। १६३६ में 'नर्मदा व्हैली रिसर्च बोर्ड' के सचिव श्री व्ही० आर० करन्दिकर द्वारा इस टीले का उत्खनन प्रारम्भ करवाया गया। उनके आकस्मिक निधन के कारण इस उत्खनन को इन्दौर संग्रहालय के क्यूरेटर श्री व्ही० एन० सिंह द्वारा जारी रख कर अगले दो वर्षों में पूरा किया गया। उत्खनन में प्राप्त सामग्री को इन्दौर संग्रहालय में ले जाया गया, जहाँ वे आज भी सुरक्षित हैं।

उत्खनन में प्राप्त सामग्री के आधार पर यहाँ के अवशेषों को निम्नलिखित भागों में बाँटा गया है—

(१) बौद्ध स्तूप तथा निवास गृह
(२) मृद्भाण्ड तथा मिट्टी की बनी अन्य वस्तुएँ
(३) धातु की बनी वस्तुएँ
(४) सिक्के
(५) पत्थर की बनी वस्तुएँ
(६) शिलालेख
(७) विविध वस्तुएँ

इनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है—

(१) बौद्ध स्तूप तथा निवास गृह

यहाँ के उत्खनन में कुल मिलाकर ग्यारह स्तूपों के अवशेष प्राप्त हुए हैं जिनमें से एक स्तूप टीले के केन्द्र में तथा अन्य दस टीले के पूर्वी भाग में स्थित पाये गये। एक को छोड़ सभी स्तूप वृहदाकार पकी ईंटों के बनाये गये थे। बनावट में ये साधारण स्तूपों के समान ही पाये गये हैं।

मुख्य स्तूप के उत्तर-पूर्व की ओर स्थित एक कुण्ड के आकार की बनावट मिली। यह किस काम में लाया जाता होगा, यह ज्ञात नहीं।

उत्खनन में टीले के पश्चिम खण्ड में कुछ भवनों की नींवें प्राप्त हुई हैं। मुख्य स्तूप के उत्तर की ओर ७५ फुट लम्बे २० फुट चौड़े आकार के एक बड़े कमरे के अवशेष प्राप्त हुए हैं। सड़कों तथा नालियों की व्यवस्था पर भी कुछ प्रकाश पड़ा है। टीले के अन्य भागों में भी भवनों के कुछ अवशेष मिले हैं। ये सभी वृहदाकार ईंटों के बने थे। मकानों की छत पर लगाये गये टाइलों के भी अवशेष प्राप्त हुए हैं।

(२) मृद्भाण्ड तथा मिट्टी की बनी अन्य वस्तुएँ

यहाँ के उत्खनन में विभिन्न आकार तथा प्रकार के मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं। इनमें से कुछ चमकीले, लाल, काले तथा पीले हैं। कुछ ठीकरों पर ब्राह्मी लिपि में लेख उत्कीर्ण हैं।

ठीकरे इतने अधिक खण्डित हैं कि किन्हीं भी दो टुकड़ों को जोड़कर किसी लेख को पूरा कर पढ़ सकना असम्भव है। अक्षरों की बनावट तीसरी-दूसरी शताब्दी ई० पू० के बेसनगर अभिलेख तथा भरहुत स्तूप के अभिलेखों से मिलती-जुलती है। लेखों की भाषा प्राकृत है तथा अधिकतर व्यक्तियों के नाम उत्कीर्ण हैं। कुछ ठीकरों पर स्वस्तिक, फूल, पत्ते, मछली, मुर्गे, ज्यामितिक आकार आदि बने हैं।

मिट्टी की बनी अन्य वस्तुओं में दो वृहदाकार भाण्ड, ३९ गोलाकार वस्तुएँ, तिकोनी ईंटें, गोलाकार छिद्रयुक्त वस्तुएँ, मनके आदि प्राप्त हुए हैं। यहाँ उल्लेखनीय है कि उत्खनन में मिट्टी की बनी मनुष्य तथा पशु आकृतियों तथा खिलौनों का जो समकालीन युग के प्रायः सभी उत्खननों में प्राप्त हुई हैं, सम्पूर्ण अभाव है।

(३) धातु की बनी वस्तुएँ

उत्खनन में प्राप्त धातु की बनी वस्तुओं में स्वर्ण का एक छोटा आभूषण, चाँदी के २९ आहत तथा ताँबे के २६ अन्य सिक्के, ताँबे की बनी एक छोटी मंजूषा, लोहे की कीलें आदि महत्वपूर्ण हैं।

(४) सिक्के

जैसा कि ऊपर कहा गया है, इस उत्खनन में चाँदी के २९ तथा ताँबे के १२६ सिक्के प्राप्त हुए हैं, जिनका विभाजन निम्न प्रकार किया गया है—

(क) आहत सिक्के, २९, चाँदी के, चौकोर।

(ख) आहत सिक्के, १०, ताँबे के, चौकोर।

(ग) ढले हुए सिक्के, १६, ताँबे के।

(घ) उज्जयिनी चिह्नांकित सिक्के, १००, ताँबे के।

इन सिक्कों के अतिरिक्त एक ताँबे का चौकोर टुकड़ा तथा कौड़ियाँ भी मिली हैं।

(५) पत्थर की बनी वस्तुएँ

पत्थर की बनी वस्तुओं में दो नरम पत्थर की बनी मंजूषा, तीन गेंदनुमा वस्तुएँ तथा अन्य विविध वस्तुएँ महत्त्वपूर्ण हैं।

(६) शिलालेख

स्तूप क्रमांक २ के निकट एक गोलाकार शिलालेख प्राप्त हुआ। आठ पंक्तियों का यह शिलालेख दूसरी शताब्दी ई० पू० की लिपि में लिखा गया था। परन्तु अब यह लेख केवल कुछ अक्षरों को छोड़कर पूर्ण रूप से मिट चुका है।

(७) विविध वस्तुएं

विविध वस्तुओं में दो मृदभाण्डों में संरक्षित हड्डियाँ, दो हाथीदाँत के टुकड़े, चार काँच के मनके तथा लगभग १ दर्जन शंख महत्वपूर्ण हैं।

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि कसरावद के उत्खनन में प्राप्त वस्तुएँ केवल दूसरी शताब्दी ई० पू० से सम्बन्धित हैं। इसके बाद की कोई भी वस्तु उत्खनन में प्राप्त नहीं हुई। ऐसा लगता है कि दूसरी शताब्दी ई० पू० के बाद यह स्थान उजाड़ हो गया तथा सम्भवतः यहाँ के निवासी बौद्ध भिक्षु निकटस्थ बाघ गुफा में चले गये।

इ० हि० क्वा० भाग २५, अंक १ (१९४९) पृ० १-१८; रि० अ० ह्री० स्टे० १९३६, पृ० ७३; वही, १९३७, पृ० ८६; वही, १९३८, पृ० १३५; वही १९४१, पृ० १३७।

२४७७. कायथा (१९६५-६६ से १९६७-६८)

उज्जैन के १५ मील पूर्व की ओर छोटी काली-सिन्ध नदी पर स्थित कायथा (प्राचीन कापित्थ) नामक ग्राम है जो वराहमिहिर की जन्मभूमि होने के नाते विख्यात है। १९६५-६६ में विक्रम विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व एवं संग्रहालय विभाग की ओर से श्री वि० श्री० वाकणकर के निर्देशन में यहाँ उत्खनन का कार्य प्रारम्भ करवाया गया जो तीन वर्षों तक चला। तीसरे वर्ष डेकन कालेज रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना, के द्वारा भी इस उत्खनन में योगदान दिया गया। कायथा के उत्खनन ने इस क्षेत्र की ताम्रपाषाणयुगीन सभ्यता के इतिहास में एक नया मोड़ दिया है जिससे मालवा के प्राचीन इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ा है।

कायथा उत्खनन में प्राप्त सामग्री के आधार पर यहाँ पर विभिन्न काल में स्थित सभ्यताओं को निम्नलिखित दस काल-खण्डों में विभाजित किया गया है—

प्रथम काल— २२०० ई० पू० से २००० ई० पू०,
द्वितीय काल—१९०० ई० पू० से १६०० ई० पू०,
तृतीय काल—१७५० ई० पू० से १३०० ई० पू०,
चतुर्थ काल —छठी शताब्दी ई० पू० से दूसरी शताब्दी ई० पू०,
पंचम् काल—शुंग-कुषाण युग,
षष्ट काल—गुप्त तथा गुप्तोत्तर युग,
सप्तम् काल—परमार युग,
अष्टम् काल —मुस्लिम युग,
नवम् काल—मराठा युग,
दशम् काल—आधुनिक युग ।

प्रथम काल (२२०० ई० पू० से २००० ई० पू०)

श्री वी० श्री० वाकणकर ने इस सभ्यता को 'कायथा सभ्यता' के नाम से पुकारा है। इसका कारण यह है कि इस काल के अवशेष अपनी एक विशिष्टता रखते हैं तथा अभी तक मनोटी को छोड़कर अन्य किसी भी उत्खनन में ऐसे अवशेष नहीं मिले हैं। सबसे महत्वपूर्ण दो उपलब्धियाँ हैं। एक तो मिट्टी के विविध भाण्ड तथा दूसरे ताम्र या कांस्य के अनेक उपकरण। उत्खनन में प्राप्त मृद्भाण्डों की विशेषता यह है कि बनावट तथा आकार में कुछ अंशों तक ये

७९

हरप्पीय भाण्डों से साम्य रखते हैं । परन्तु यहाँ से प्राप्त मृद्भाण्डों पर उपलब्ध अलंकरण, चित्रण तथा लेपन हरप्पीय भाण्डों से भिन्न हैं । चित्रण अधिकतर ज्यामितिक आकार के हैं । लेपों में गहरा ललिया-काला, लाल, गहरा बैंगनी तथा हल्का लाल रंग काम में लाया गया है, जबकि चित्रण के लिए लाल, सफेद, गहरा लाल व काला रंग काम में लाया गया है । कुछ मृद्भाण्डों पर पकाने के पूर्व एवं पश्चात् विशिष्ट चिह्न अंकित किये जाते थे जिनका साम्य अवश्य ही हरप्पीय लिपि से है ।

उत्खनन में अनेक ताम्र उपकरण प्राप्त हुए हैं जिनमें २९ कंकण, १ छेनी तथा २ कुल्हाड़ियाँ हैं । कुल्हाड़ियाँ अन्य स्थानों से प्राप्त कुल्हाड़ियों से भिन्न हैं तथा ढली हुई हैं । ये आकार में सुन्दर, वजन में भारी तथा बिन्दु-चिन्हांकित हैं । प्राचीन ताम्रोपकरण में मालवा में यह सबसे बड़ा संग्रह होगा । इनके अतिरिक्त अकीक की दो मालाएँ तथा ७० हजार के लगभग स्टीएटाइट की मणियाँ भाण्ड में रखी पायी गयी हैं । मालाएँ मोहनजोदड़ो के समान हैं, जिनमें अकीक, स्फटिक तथा स्टिएटाइट काम में लायी गयी हैं । इनके अतिरिक्त इस काल से सम्बन्धित स्तर से स्फटिक व चकमक पत्थर के लघुपाषाण औज़ार भी प्राप्त हुए हैं । यहाँ के निवासियों की विकसित सभ्यता को देखकर ऐसा लगता है कि ये लोग किसी अन्य क्षेत्र से पर्याप्त विकसित सभ्यता को लेकर यहाँ आये थे । रेडियो-कार्बन की विधि से इस सभ्यता का काल २२०० ई० पू० से २००० ई० पू० तक आँका गया है ।

द्वितीय काल (१९०० ई० पू० से १६०० ई० पू०)

प्रथम काल के अन्त से दूसरे काल के प्रारम्भ के बीच लगभग १०० वर्ष का अन्तर प्रतीत होता है । इस अन्तर-काल के सम्बन्ध में हमें कुछ भी ज्ञात नहीं । इस काल से सम्बन्धित स्तर से प्राप्त सामग्री प्रथम काल की सामग्री से भिन्न है तथा ये राजस्थान में पाये गये, 'आहाड़' सभ्यता से साम्य रखते हैं । इस काल के भाण्ड चित्रित 'काले और लाल', चमकीले घर्षित लाल एवं मटियाले भूरे हैं । इन भाण्डों पर सफेद अथवा गुलाबी रंग से चित्रकारी की गयी है । ऐसे भाण्ड लोथल के उत्खनन में हरप्पीय भाण्डों के साथ, मनोटी के उत्खनन में 'मनोटी-भाण्डों' के साथ व उनसे स्वतन्त्र, आवरा के उत्खनन में स्वतन्त्र तथा नागदा, महेश्वर-नावडाटोली एवं एरण के उत्खननों में 'मालवा-भाण्डों' के साथ उपलब्ध हुए हैं । यहाँ उनका अस्तित्व 'कायथा-भाण्डों' के पश्चात् तथा 'मालवा-भाण्डों' के पूर्व पाया गया है । अन्य सामग्री में लघुपाषाण औज़ार, ताँबा, मिट्टी की बनी पशु तथा मनुष्याकृतियाँ हैं । इस स्तर से एक हरप्पीय मुहर के प्राप्त होने की भी सूचना मिली है । रेडियो-कार्बन की तिथि से इस सभ्यता का काल १९०० ई० पू० से १६०० ई० पू० के बीच स्वीकार किया गया है ।

तृतीय काल (१७५० ई० पू० से १३०० ई० पू०)

इस युग में भौतिक-सभ्यता के उपकरण अधिक उन्नत हुए । मिट्टी की बनी हुई विविध मानवाकृतियाँ तथा पशु आकृतियाँ इस काल से सम्बन्धित स्तर से प्राप्त हुई हैं । यहाँ के

निवासी मिट्टी से बनाये गये घरों में रहते थे जिनके जले हुए अवशेष उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। इन तथ्यों से स्पष्ट है कि तत्कालीन युग के लोग सभ्यता की दृष्टि से अपने पूर्ववर्ती लोगों की अपेक्षा अधिक उन्नत हो गये थे।

इस काल के लोग जो भाण्ड प्रयोग में लाते थे, उन्हें 'मालवा-भाण्ड' कहते हैं। इसी प्रकार इस काल की सभ्यता को 'मालवा-ताम्रपाषाण-सभ्यता' कहा जाता है। भाण्डों में हल्के लाल रंग के पात्रों पर गहरे काले रंग से ज्यामितिक चित्र मिले हैं। इनके अतिरिक्त हिरन, कुत्ते, बैल आदि के रेखात्मक चित्र भी मिले हैं। इस काल में पर्याप्त मात्रा में गेहूँ होता था। उत्खनन में प्राप्त जले हुए चावल के अवशेष से ज्ञात होता है कि चावल का ज्ञान भी इन लोगों को था। मांसाहार भी प्रचलित था। ये लोग मातृदेवी की उपासना के साथ अग्नि-पूजा भी करते थे। ताम्रप्रयोग के साथ ये लोग लघुपाषाण औज़ार भी काम में लाते थे। यह सभ्यता प्रादेशिक परिवर्तन के साथ सम्पूर्ण मालव, चेदि, विदर्भ व महाराष्ट्र में फैली हुई थी। रेडियो-कार्बन की विधि से इस सभ्यता का काल १७५० ई० पू० से १३०० ई० पू० के बीच स्वीकार किया गया है।

चतुर्थ काल (६वीं शताब्दी ई० पू० से दूसरी शताब्दी ई० पू०)

तृतीय काल के अन्त से चतुर्थ काल के प्रारम्भ के बीच लगभग ६-७ सौ वर्षों का मध्यान्तर प्रतीत होता है जिसके सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात नहीं। इस काल के निवासी लोहे का उपयोग करते थे तथा घरेलू उपयोग में चित्रित भूरे पात्र तथा 'काले ओपदार उत्तरी भाण्ड' प्रयोग करते थे। उत्खनन में प्राप्त सामग्री में लोहे के उपकरण, ताँबे के आभूषण, हाथीदाँत की बनी मातृदेवी की प्रतिमाएँ, विभिन्न प्रकार के पत्थरों के बने मनके, मिट्टी की मनुष्य तथा पशुआकृतियाँ आदि प्रमुख हैं। इस काल में मातृदेवी की उपासना होती रही।

पंचम् काल (शुंग-कुषाण युग)

यह काल शुंग-कुषाण युग से सम्बन्धित है। इस काल के स्तर से शुंग कालीन मिट्टी की विशिष्ट मनुष्याकृतियाँ प्राप्त हुई हैं। इसके अतिरिक्त ढले हुए सिक्के भी मिले हैं जिनके एक ओर स्वस्तिक तथा दूसरी ओर चक्र अथवा मनुष्याकृति बनी है।

षष्ठ काल (गुप्त तथा गुप्तोत्तर काल)

इस काल से सम्बन्धित स्तर से पकी ईंटों के बने मकानों के अवशेष, चूल्हे आदि प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त गुप्त शैली में एक बुद्ध की प्रतिमा भी मिली है। एक चक्की भी इस स्तर से प्राप्त हुई है।

सप्तम् से दशम् काल (परमार, मुस्लिम, मराठा तथा आधुनिक काल)

इस स्थान पर परमार, मुस्लिम, मराठा से आधुनिक काल तक बस्ती रही है, ऐसा प्रतीत होता है। सभी कालों से सम्बंधित कुछ-न-कुछ अवशेष उत्खनन में प्राप्त हुए हैं।

परन्तु ये सामग्रियाँ इतनी महत्वपूर्ण नहीं हैं कि कुछ नवीन ऐतिहासिक तथ्य प्रकाश में आ सके।

इ० आ० रि० १९६४-६५, पृ० १६-१७; वही १९६७-६८; कला भारती शोध विवरण पत्र, सामयिक परिपत्र क्रमांक ५, पृ० १-५; दी विक्रम (विक्रम यूनिवर्सिटी जर्नल) कायथा एस्कवेशन नम्बर, १९६७, पृ० १-५२।

२४७८. ग्यारसपुर (१९३३)

ग्वालियर राज्य के पुरातत्त्व विभाग द्वारा हिंडोला- तोरण के निकट मई, १९३३ में उत्खनन करवाया गया। उत्खनन का मुख्य उद्देश्य था उस मूल मन्दिर के आकार तथा प्रकार के बारे में मत निश्चित करना जिसका यह तोरण एक अंग था। उत्खनन में मूल मन्दिर के आधार का पता लग गया जिससे यह ज्ञात हुआ कि पूर्व से पश्चिम की ओर इसकी लम्बाई १५० फुट तथा उत्तर से दक्षिण की ओर चौड़ाई ८५ फुट थी। मन्दिर में एक गर्भगृह, दो छज्जों से युक्त एक बड़ा कमरा तथा एक आँगन था जिसमें प्रवेश के लिए दो द्वार थे। द्वारों को तोरणों से सुसज्जित किया गया था तथा जो तोरण आज विद्यमान है, वह इन दोनों द्वारों में से दक्षिण की ओर बने प्रवेश द्वार पर लगा था। गर्भगृह का शिखर आम्लशिलों से सुशोभित था तथा उसका मुख पूर्व की ओर था। चार स्तम्भ जो आज विद्यमान हैं, वे बड़े कमरे के केन्द्र भाग में लगे हुए थे। मूल मन्दिर लगभग ८ फुट ऊँचे चबूतरे पर बना था। यह वैष्णव मन्दिर था। उत्खनन में जो पुरावशेष प्राप्त हुए, उनमें खण्डित प्रतिमाएँ तथा अलंकरण, दो लघु लेख तथा १०वीं शताब्दी ईसवी का एक बड़ा लेख मिला जिसमें शिवगण, चामुण्डराज तथा महेन्द्रपाल का उल्लेख है। उत्खनन में केवल एक ताँबे का सिक्का मिला जो मालवा के शासक गयासुद्दीन तुगलक का था।

ग्वा० पु० रि० १९३२-३३, पृ० ६-७।

२४७९. धनोरा (१९५६-५७)

रायपुर जिले में धमतरी के निकट स्थित धनोरा नामक स्थान पर महापाषाणयुगीन लगभग ५०० स्मारक विद्यमान हैं। महापाषाणयुगीन स्मारकों का अध्ययन करने हेतु १९५६ ५७ में स्व० डा० मो० ग० दीक्षित के निर्देशन में यहाँ के कुछ स्मारकों का उत्खनन करवाया गया। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इन्हें चार वर्गों में विभाजित किया गया। कुल मिलाकर प्रथम वर्ग के तीन तथा दूसरे वर्ग के एक स्मारक का उत्खनन किया गया। उत्खनन में हड्डियों के टुकड़े, मनके, कांच की चूड़ियों के टुकड़े तथा ताँबे के एक पात्र के खण्डित भाग प्राप्त हुए। उत्खनन में उपलब्ध प्रमाण अपूर्ण रहे।

इ० आ० रि० १९५६-५७, पृ० ३५, चित्र ५१-५२।

२४८०. नागदा (१९५५-५६)

उज्जैन जिले के नागदा नामक स्थान पर चम्बल नदी के तट पर कई प्राचीन टीले स्थित हैं। इनमें से एक टीले का उत्खनन केन्द्रीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा श्री एन०

आर० बनर्जी के निर्देशन में १९५५-५६ में करवाया गया। उत्खनन का मुख्य उद्देश्य था—मध्यभारतीय ताम्रपाषाण युगीन सभ्यता के स्तरीय प्रमाण प्राप्त करना। नब्बे फुट ऊँचे इस टीले के उत्खनन में जो पुरावशेष प्राप्त हुए उन्हें तीन काल खण्डों में विभाजित किया गया जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है —

प्रथम काल

इस काल से सम्बन्धित २२ फुट ऊँचे स्तर से कच्ची तथा पकी ईंटों के बने भवन तथा दीवारों के अवशेष प्राप्त हुए। इनमें एक दीवार दुर्ग की प्राचीर रही होगी, ऐसा प्रतीत होता है। उत्खनन में जो मृद्भाण्ड प्राप्त हुए, उनमें लाल तथा मखनिया रंग के भाण्ड थे जिनके बाहरी भाग पर काले रंग से विभिन्न प्रकार की चित्रकारी की गयी थी। इनके अतिरिक्त कुछ धूसर तथा सादे भाण्डों के ठीकरे भी प्राप्त हुए। मृद्भाण्डों के अतिरिक्त कैल्सेडोनी, क्वार्टज़, कार्नेलियन आदि पत्थरों के बने विभिन्न प्रकार के लघुपाषाणास्त्र पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हुए। इस काल के लोग ताँबे का उपयोग सीमित मात्रा में करते थे। मिट्टी के बने मनके, खिलौने तथा घरेलू उपयोग की अन्य वस्तुएँ भी इस काल से सम्बन्धित स्तर से प्राप्त हुईं।

द्वितीय काल

प्रथम काल से सम्बन्धित ही यह दूसरा काल था, परन्तु इस काल से सम्बन्धित स्तर से काले तथा मखनिया रंग के भाण्ड के स्थान पर 'काले और लाल' भाण्डों के ठीकरे प्राप्त हुए। इस काल में रचनात्मक काम प्रथम काल के समान ही चलता रहा तथा पक्की और कच्ची ईंटों के मकान आदि बनते रहे।

तृतीय काल

इस काल में भी पकी तथा कच्ची ईंटों के भवन आदि बनते रहे। इस काल से सम्बन्धित स्तर से जो मृद्भाण्ड प्राप्त हुए, उनमें काले ओपदार उत्तरी भाण्ड, विभिन्न प्रकार के लाल भाण्ड तथा कणिकात्मक भाण्ड के ठीकरे प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त घरेलू उपयोग की विभिन्न वस्तुएँ, वृहदाकार भाण्ड तथा साधारण उपयोग के भाण्ड प्राप्त हुए। घरेलू उपयोग की वस्तुओं में मिट्टी के बने मनके, खिलौने तथा चक्के, हाथीदाँत के बने लटकन तथा पिन, हड्डी की बनी वस्तुएँ, ताँबे के बने आभूषण तथा लोहे की वस्तुएँ मिलीं। इस काल से सम्बन्धित स्तर के ऊपरी भाग से प्राप्त एक ठीकरे पर उत्कीर्ण लगभग दूसरी शताब्दी ई० पू० के एक लेख से ज्ञात होता है कि यहाँ पर बसे इस सभ्यता का अन्त इस काल के पश्चात् हो गया।

इ० आ० रि० १९५५-५६, पृ० ११-१९, चित्र २०-२५।

२४८१. पवाया (१९२४-२५. १९३३-३४, १९३९-४०, १९४०-४१)

ग्वालियर से दक्षिण-पश्चिम की ओर लगभग ४० मील की दूरी पर पदम-पवाया अथवा पवाया नामक ग्राम है जो सिन्धु तथा पार्वती नदी के संगम पर बसा हुआ है। आज

के विद्वान् विशद चर्चा के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यही प्राचीन पद्मावती नगरी का स्थल है जो नाग शासकों की तीन राजधानियों में से एक थी। महाकवि भवभूति ने अपने प्रसिद्ध नाटक 'मालती माधव' में इस नगरी की भौगोलिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक दशा का सजीव एवं विशद वर्णन किया है।

पद्मावती प्रथम शताब्दी ईसवी से ११वीं शताब्दी ईसवी तक अत्यन्त समृद्ध नगरी थी, जिसके कुछ अवशेष आज भी प्राप्त हुए हैं। इन अवशेषों में महत्वपूर्ण हैं—यक्ष मणिभद्र की प्रतिमा जिस पर शिवनन्दी के शासन काल का लेख उत्कीर्ण है, खण्डित ताड़-स्तम्भ शीर्ष, गुप्तकालीन विष्णु मन्दिर के अवशेष, प्रस्तर की विष्णु-प्रतिमा, मन्दिर के तोरण का अत्यन्त सुन्दर दृश्यों सहित प्रस्तर खण्ड, पीठ-से-पीठ लगाये दोनों ओर पुरुषाकृति का स्तम्भ-शीर्ष जो सम्भवतः सूर्य-स्तम्भ था तथा अनेक मृण्मूर्तियाँ। ये सभी अवशेष अब ग्वालियर संग्रहालय में संरक्षित हैं।

पार्वती नदी के दोनों ओर ऊँचे टीले हैं, जिनमें पद्मावती नगरी के भग्नावशेष स्थित हैं। इनमें से एक टीले का उत्खनन कार्य ग्वालियर राज्य के पुरातत्त्व विभाग द्वारा श्री मो० ब० गर्दे के निर्देशन में १९२४-२५, १९३३-३४, १९३९-४० तथा १९४०-४१ के वर्षों में सम्पन्न किया गया। यह टीला पार्वती नदी के उत्तर की ओर आधुनिक ग्राम से लगभग १ मील की दूरी पर स्थित था। उत्खनन किये गये टीले का आकार २००×२००×३० फुट का था जिसके चारों ओर प्रस्तर, प्राचीन मृद्भाण्डों के खण्ड आदि बिखरे हुए थे। इन्हीं अवशेषों में ताड़-स्तम्भ शीर्ष प्राप्त हुआ था। टीले के उत्खनन में एक मन्दिर के केवल आधार के अवशेष प्राप्त हुए। यह आधार तीन विशाल चबूतरों के रूप में था जो एक के ऊपर एक निर्मित किये गये थे। इनकी पूरी ऊँचाई ३२ फुट के लगभग थी। ईंटें आकार में १८ इंच लम्बी, ९ इंच चौड़ी, ३ इंच ऊँची थीं। ऐसा लगता है कि ईंटों पर मूलतः चूने का पलस्तर किया गया था जिसके कुछ अवशेष उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। इस मन्दिर का ऊपरी भाग कैसा बना होगा, इसकी कल्पना करना कठिन है, परन्तु इसी मन्दिर के पास लगभग १२ फुट लम्बा तोरण प्रस्तर प्राप्त हुआ है। इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि इन चबूतरों के ऊपर कोई अत्यन्त मनोरम निर्माण था, जिसमें सम्भवतः ईंट, लकड़ी आदि से गर्भगृह, प्रदक्षिणा-पथ आदि बने थे। इस प्रकार के मन्दिर का उदाहरण केवल रामनगर (प्राचीन अहिच्छत्रा) के ईंटों के बने मन्दिर में ही मिल सकता है। इस मन्दिर के पास एक विष्णु प्रतिमा मिली है, जिससे यह परिणाम निकाला गया है कि यह विष्णु मन्दिर ही था। इस मन्दिर के पास अधिक संख्या में मृण्मूर्तियाँ मिली हैं। सम्भवतः इनका उपयोग मन्दिर की दीवारों को सजाने में किया जाता होगा। पास ही एक स्तम्भ-शीर्ष मिला है, जिसमें दोनों ओर सूर्य की आकृति बनी हुई है। यह स्तम्भ-शीर्ष सम्भवतः इसी मन्दिर के प्रांगण में स्थित होगा।

ग्वा० पु० रि० १९२४-२५, पृ० ९; वही १९३३-३४, पृ० ९; वही, १९३९-४०, पृ० १५; वही, १९४०-४१, पृ० १७-२०; आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९२४-२५,

पृ० १६५-६६; वही, १९२५-२६, पृ० १६०; वही, १९१५-१६, पृ० १०१-१०९; पाटिल डी० आर०—'दी कल्चरल हेरिटेज ऑफ मध्यभारत (१९५२)', पृ० ८०।

२४८२. पसेवा (१९५७-५८)

मन्दसौर जिले में स्थित इस स्थान पर मध्यप्रदेश शासन की ओर से स्व० डॉ० मो० ग० दीक्षित के निर्देशन में १९५७-५८ में एक लघु उत्खनन करवाया गया। उत्खनन में ईंटों की बनी कई दीवारों के अवशेष प्राप्त हुए। विभिन्न आकार के अनेक मात्रा में मृद्भाण्ड भी प्राप्त हुए। इसके अतिरिक्त मिट्टी की बनी विभिन्न वस्तुएँ तथा शीशे के मनके मिले।

इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० २८।

२४८३. पिपरिया (१९६८-६९)

सतना जिले में पिपरिया नामक स्थान पर हाल ही में एक गुप्तकालीन मन्दिर के अवशेष खोज निकाले गये। इस मन्दिर के आकार-प्रकार का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए सागर विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व विभाग द्वारा प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी के निर्देशन में १९६८-६९ में यहाँ उत्खनन करवाया गया। उत्खनन से ज्ञात हुआ कि यहाँ एक विष्णु मन्दिर का निर्माण ५वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में किया गया था। यह मन्दिर भूमरा में स्थित गुप्त मन्दिर की शैली का था। द्वार के खण्डित चौखट तथा मण्डप के स्तम्भों के खण्डित भागों पर उत्कृष्ट चित्रकारी देखी गयी। कुछ प्रतिमाओं के खण्डित अवशेष भी प्राप्त हुए।

इ० आ० रि० १९६८-६९।

२४८४. बिलावली (१९६२-६३)

देवास जिले में देवास से तीन कि० मी० उत्तर-पूर्व की ओर कालीसिन्ध नदी के दक्षिण तट पर स्थित एक टीले का लघु-उत्खनन केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा श्री व्ही० के० मिश्र के निर्देशन में १९६२-६३ में करवाया गया। उत्खनन में निम्नलिखित काल से सम्बन्धित सामग्री प्रकाश में आयी है। इन कालों की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

प्रथम काल

इस काल के स्तर से प्राप्त मृद्भाण्डों में 'काले और लाल' तथा लाल रंग से पोते गये भाण्ड प्राप्त हुए।

द्वितीय काल

इस काल के स्तर से आहत सिक्के तथा मौर्यकालीन ओपदार पत्थर मिले।

तृतीय काल

इस काल के स्तर से प्रथम शताब्दी ईसवीं के लगभग के मृद्भाण्ड तथा अन्य सामग्री प्राप्त हुई।

चतुर्थ काल

चतुर्थ काल के स्तर से पूर्व-मध्यकालीन सामग्री प्राप्त हुई।

इ० आ० रि० १९६२-६३, पृ० १०, चित्र २८-२९।

२४८५. बेसनगर १९१०, (१९१३-१४, १९१४-१५, १९६३-६६)

मध्यप्रदेश के प्राचीन नगरों में विदिशा का नाम उल्लेखनीय है। प्राचीन बौद्ध, जैन तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में इसके अनेक उल्लेख आये हैं। यहाँ से पुरातत्त्व की सामग्री भी प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुई है। इस नगर की प्राचीन महत्ता को देखते हुए यहाँ कई बार पुरातत्त्वीय उत्खनन किये गये।

बेसनगर का सर्वप्रथम उत्खनन श्री एच० एच० लेक के नेतृत्व में १९१० में किया गया। उत्खनन का स्थल खामबाबा का निकटवर्ती भाग था जहाँ कई टीलों को खुदवाया गया। यह उत्खनन अवैज्ञानिक ढंग से किया गया अतः इससे कोई विशेष उपलब्धि नहीं हो सकी। इस उत्खनन का वर्णन 'जर्नल ऑफ दी बाम्बे एशियाटिक सोसायटी' के भाग २३, पृ० १३५-४६ में प्रकाशित किया गया।

अगले तीन वर्षों तक यहाँ कोई और उत्खनन नहीं किया गया। वैज्ञानिक ढंग का सर्वप्रथम उत्खनन केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा १९१३-१४ में श्री डी० आर० भण्डारकर के निर्देशन में करवाया गया। यह कार्य १९१४-१५ में पूरा हुआ। १९१३-१४ के उत्खनन का मुख्य उद्देश्य हेलियोदोर स्तम्भ में उल्लिखित वासुदेव के मन्दिर के भग्नावशेषों को खोज निकालना था। अतः हेलियोदोर स्तम्भ के निकट खदानें ली गयीं। उत्खनन में एक चबूतरे के अवशेष प्राप्त हुए। इस चबूतरे पर वासुदेव का मन्दिर तथा हेलियोदोर स्तम्भ स्थापित किये गये थे। चबूतरे के दक्षिण की ओर निकट ही एक भवन की नींव मिली। यह भवन सम्भवतः वासुदेव के मन्दिर की देखरेख करने वाले पुजारी आदि के लिए बनाया गया होगा। मकान तथा मन्दिर को घेरे हुए एक अनोखे प्रकार की प्रस्तर वेदिका थी। ऐसी वेदिका भारत के अन्य किसी भी स्थान से प्राप्त नहीं हुई है। ६६ फुट लम्बी एक अन्य दीवार के अवशेष भी इस वर्ष के उत्खनन में मिले। हेलियोदोर के निकटवर्ती क्षेत्र के अतिरिक्त गणेशपुरा में भी खदान लगायी गयी। परन्तु वहाँ कोई उल्लेखनीय भवन के अवशेष प्राप्त नहीं हुए।

१९१४-१५ के उत्खनन में मौर्य अथवा पूर्व-मौर्य काल की नहर के अवशेष प्राप्त हुए, जो सम्भवतः बेस नदी से जोड़ी गयी थी। बेसनगर से उदयगिरि जाने वाले मार्ग पर स्थित एक अन्य टीले का उत्खनन भी इस वर्ष किया गया। उत्खनन में कुछ कुण्ड तथा बड़े कमरों के अवशेष मिले। कमरों से अथवा उनके निकट से २६ उत्कीर्ण मृद्-मुद्रांकन प्राप्त हुए। मौर्यकालीन एक बौद्ध स्तूप के अवशेष भी प्राप्त हुए।

इन दोनों वर्षों के उत्खननों में महत्त्वपूर्ण पुरावशेष थे : मिट्टी के बने मनुष्य तथा पशु-पक्षी की आकृतियाँ और खिलौने, शंख तथा हाथीदाँत की बनी चूड़ियाँ, लोहे, ताँबे तथा काँसे की बनी घरेलू उपयोग की वस्तुएँ तथा आभूषण, मौर्य, शुंग तथा गुप्तकालीन मृद्भाण्डों

के ठीकरे, पत्थर की बनी मंजूषा तथा मनके और लोहे के बने अस्त्र। इनके अतिरिक्त महत्व-पूर्ण सिक्के भी मिले। १९१३-१४ के उत्खनन में हेलियोदोर स्तम्भ के निकट उत्खनन में ६८ सिक्के मिले जिनमें ४६ आहत, ५ क्षत्रप, ५ नाग, १ सातवाहन, १ अस्पष्ट तथा ७ कलचुरि थे। गणेशपुरा के निकट टीले के उत्खनन से ३२ आहत सिक्के मिले। १९१४-१५ के उत्खनन में ६६ सिक्के मिले जिनमें ५६ आहत तथा शेष क्षत्रप, नाग और विविध सिक्के थे। बेसनगर से उदयगिरि जाने वाले मार्ग पर स्थित टीले के उत्खनन में प्राप्त २६ मृद्-मुद्रांकनों में २ शासकों के, ३ अधिकारियों के तथा अन्य व्यक्तिगत थे।

बेसनगर का फिर से उत्खनन १९६३ में केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा प्रारम्भ कर-वाया गया। श्री एम० डी० खरे के निर्देशन में यह कार्य १९६६ तक चलता रहा।

प्रथम वर्ष (१९६३-६४) में उत्खनन के लिए तीन स्थानों पर खदानें ली गयीं। प्रथम खदान (बी० एस० एन०-१) बेतवा तथा बेस नदियों के संगम पर ली गयी। दूसरी खदान (बी० एस० एन०-२) विदिशा से अशोकनगर जानेवाले मार्ग के किनारे ली गयी। इसी प्रकार तीसरी खदान (बी० एस० एन०-३) हेलियोदोर स्तम्भ के क्षेत्र में ली गयी। अगले वर्ष चौथी खदान (बी० एस० एन०-४) भी ली गयी। वहाँ ताम्रपाषाण युगीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए।

उत्खनन में बेतवा तथा बेस नदियों के संगम वाला क्षेत्र सबसे महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। यहाँ छह युगों की सभ्यता प्रकाश में आयी जिनकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

प्रथम काल (ताम्रपाषाण युग)

१९६३-६४ के उत्खनन में बी० एस० एन०-१ के खदान में इस काल से सम्बन्धित स्तर से 'काले और लाल', काले तथा कुछ सादे मृद्भाण्ड प्राप्त हुए। इनके अतिरिक्त जान-वरों की हड्डियाँ तथा लोहे की वस्तुएँ भी मिलीं। १९६४-६५ के उत्खनन में बी० एस० एन०-१ तथा बी० एस० एन०-४ के खदानों के उत्खननों से यह बात प्रमाणित हो गयी कि विदिशा का प्रथम काल ताम्रपाषाण युगीन सभ्यता का था। उत्खनन में इस काल से सम्बन्धित 'लाल पर काले', 'लाल और काले' तथा कुछ भूरे मृद्भाण्डों के ठीकरों के अतिरिक्त लघु-पाषाणास्त्र, मिट्टी के मनके आदि प्राप्त हुए।

द्वितीय काल

इस काल के स्तर से 'काले ओपदार उत्तरी भाण्ड' का मिलना प्रारम्भ हो जाता है। प्रथम काल से सम्बन्धित 'लाल और काले', 'लाल पर काले' तथा लाल मृद्भाण्डों के ठीकरे भी मिलते हैं परन्तु उनकी संख्या बहुत कम है। इनके अतिरिक्त ताँबे तथा लोहे की विभिन्न वस्तुएँ, मिट्टी के मनके, हड्डी की बनी वस्तुएँ, पकी मिट्टी के बने दान-सर, पत्थर के सिल-बट्टे तथा पंचमार्क सिक्के प्राप्त हुए हैं। इस काल का अन्त किसी संघर्ष के पश्चात् हुआ प्रतीत होता है, जैसा कि जले हुए अवशेषों के प्रमाण के लगातार मिलने से ज्ञात होता है।

एक मजबूत नगर-रक्षा दीवाल और उसके भीतर निर्मित एक दूसरी दीवाल के अवशेष भी इस काल से सम्बन्धित स्तर से प्राप्त हुए हैं। कुछ वलयकूप के अवशेष भी मिले हैं।

तृतीय काल (शुंग-सातवाहन युग)

इस काल के स्तर से प्राप्त मृद्भाण्डों में सादे लाल, 'लाल और काले', तथा 'केओलिन' के भाण्ड प्रमुख हैं। अन्य प्राप्त वस्तुओं में संगमरमर की वस्तुएँ, शंख की चूड़ियाँ, मिट्टी तथा पत्थर के मनके, पत्थर के सिल-बट्टे, ओप युक्त हड्डी के उपकरण तथा आहत सिक्के हैं। एक पत्थर की मुहर भी प्राप्त हुई है जिस पर प्रथम शताब्दी ई० पू० की ब्राह्मी लिपि में 'निकुम्भ नागस्य' लेख अंकित है। सम्भवतः इस प्रकार की मुद्रा निकुम्भ नामक देवता के मन्दिर के प्रसाद के रूप में प्रयोग में लायी जाती होगी।

चतुर्थ काल (नाग-कुषाण युग)

इस काल के स्तर से प्राप्त वस्तुओं में लाल मृद्भाण्ड, जिनमें कुछ काले रंग से चित्रित हैं, मिट्टी के बने मनके, कान के आभूषण, खेलने की मुहरें, दान-सर आदि प्रमुख हैं। उत्खनन में ताँबे के सिक्के भी प्राप्त हुए हैं, जिनमें अनेक सिक्के नाग शासकों के हैं। इन सिक्कों पर एक ओर शिव का वाहन नन्दी दिखलाया गया है तथा दूसरी ओर नाग शासक का नाम 'महाराज' उपाधि के साथ दिया हुआ है।

पंचम् काल (गुप्त युग)

इस काल में मृद्भाण्डों की पुरानी परम्परा चलती रही, यद्यपि उसमें कमी आ गयी। इस युग में प्रचलित नये प्रकार के मृद्भाण्डों पर उत्कर्तित तथा ठप्पे लगे अलंकरण मिलने लगे जो काफी संख्या में प्राप्त हुए हैं। इनके अतिरिक्त मिट्टी की बनी मानव तथा पशु प्रतिमाएँ, बर्तनों को अलंकृत करने वाले मिट्टी के ठप्पे तथा मिट्टी और शंख की बनी चूड़ियाँ प्राप्त हुईं। ईंट का एक गोल चबूतरा भी मिला जो सम्भवतः धार्मिक कार्यों के लिए उपयोग में लाया जाता था। इस काल के पश्चात् कुछ शताब्दियों तक यह स्थान उजड़ा रहा।

षष्ठ काल (पूर्व-मध्य युग)

इस काल की वस्तुएँ पूर्व-मध्ययुगीन हैं। उत्खनन में कुछ दीवालों के अवशेष मिले हैं जो लगभग आधे दर्जन पशु-हड्डियों से पूर्ण मृद्भाण्डों को घेरे हुए हैं। इनके अतिरिक्त एक ताँबे का सिक्का, एक खण्डित प्रतिमा, मिट्टी के मनके, गोलाकार तौल तथा चित्रित धूसर और सादे लाल मृद्भाण्डों के ठीकर प्राप्त हुए हैं।

बी० एस० एन०-२ की खदान विदिशा—अशोक नगर सड़क पर सड़क की दाहिनी ओर खोदी गयी। इस खदान में प्रथम काल से पंचम काल तक सम्बन्धित स्तरों से प्राप्त वस्तुएँ बी० एस० एन०-१ के उन्हीं कालों के स्तरों से प्राप्त सामग्री से आकार तथा प्रकार में मिलती-जुलती हैं। यहाँ गुप्तोत्तर काल की कोई सामग्री प्राप्त नहीं हुई।

बी० एस० एन०-३ की खदान हेलियोदोर स्तम्भ के निकट ली गयी। इसमें तीनों वर्ष उत्खनन किया गया जिससे यहाँ पर स्थित प्राचीन विष्णु मन्दिर तथा गरुड-शीर्ष-स्तम्भ पर अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ा है। तीन वर्ष के उत्खनन से इस निष्कर्ष पर पहुँचा गया कि इस मन्दिर का मूलत: निर्माण मौर्ययुग में किया गया होगा। मन्दिर का निचला भाग दीर्घ-वृत्ताकार मिला है। इस प्रकार का स्थापत्य प्राचीन भारतीय स्थापत्य के इतिहास में अनूठा है। इस मन्दिर का पुन:निर्माण शुंग युग में हुआ तथा इसके चारों ओर प्रदक्षिणा-पथ बनाया गया। प्रारम्भिक मन्दिर के ऊपरी भाग में लकड़ी की शहतीरों का उपयोग किया गया था। शुंगकाल में इस मन्दिर की ख्याति सुनकर तक्षशिला के यवनराज अन्तलिकित के राजदूत हेलियोदोर ने मन्दिर के सामने प्रसिद्ध गरुड-ध्वज का निर्माण कराया। मन्दिर क्षेत्र में आठ गोलाकार गर्त मिले हैं जिनमें सम्भवत: पाषाण स्तम्भ लगे थे। इनमें से सम्भवत: दोनों किनारों के स्तम्भों पर उसी प्रकार के गरुड-शीर्ष लगे थे जिस प्रकार का शीर्ष हेलियोदोर के स्तम्भ पर था। कुछ स्तम्भों पर उत्कीर्ण लेख भी रहे होंगे। इस स्थल के उत्खनन में मिट्टी के विविध भाण्ड तथा आहत सिक्के भी प्राप्त हुए हैं।

मन्दिर के उपयोग के बन्द होने के समय से १९वीं शताब्दी तक यह क्षेत्र उजड़ा रहा। तत्पश्चात् आज तक यह क्षेत्र फिर से आबाद रहा है।

अ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट, १९१३-१४, पृ० १८६-२२६; वही, १९१४-१५, पृ० ६६-८८; जर्नल आफ बाम्बे एशियाटिक सोसायटी भाग २३, पृ० १३५-४६; इ० आ० रि० १९६३-६४, पृ० १६-१७ तथा चित्र ११-१२; वही, १९६४-६५, पृ० १७-१८, चित्र १५-१६; वही, १९६५-६६ (सा० रि०) पृ० १-४३-४५।

२४८९. मन्दसौर (१९२२-२३)

केन्द्रीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा १९२२-२३ में मन्दसौर (प्राचीन दशपुर) के निकट सोंधनी गाँव में स्थित यशोधर्मन् के स्तम्भ के निकट परीक्षण उत्खनन करवाया गया। उत्खनन का उद्देश्य स्थानीय स्मारकों का संरक्षण तथा और भी पुरावशेष प्राप्त करना था। भूमि पर पड़े यशोधर्मन् कालीन स्तम्भों के निकट किये उत्खनन से ज्ञात हुआ कि स्तम्भ आज भी अपने मूल स्थान पर ही पड़े हैं। स्तम्भों की नींव भूमि की आधुनिक सतह से केवल डेढ़ फीट नीचे ही मिल गयी। स्तम्भ के सिंह-शीर्ष के निकट उत्खनन में एक द्वि-मुखी पुरुष का सिर प्राप्त हुआ जो सम्भवत: स्तम्भ के ऊपर लगा हुआ था।

यशोधर्मन् कालीन स्तम्भ के नींव के लगभग ७५ फुट पश्चिम की ओर स्थित एक टीले का उत्खनन भी किया गया। उत्खनन में ईंटों के बने एक वृहदाकार भवन के अवशेष मिले। निकट ही एक वृहदाकार शिवलिंग की प्राप्ति से अन्दाज लगाया गया कि वह एक शिवमन्दिर रहा होगा। मनुष्याकार के द्वारपालों की दो प्रतिमाएँ जो निकट ही प्राप्त हुईं, सम्भवत: इस मन्दिर के द्वार पर लगी होंगी। सम्भवत: यह शिवमन्दिर भी यशोधर्मन् द्वारा ही बनाया गया होगा।

सोंधनी के निकट खिलचीपुर ग्राम में एक तोरण स्तम्भ प्राप्त हुआ जो भूमि में आधा गड़ा हुआ था। इस लेख की कला से यह ५वीं-६वीं सदी ईसवी का प्रतीत हुआ। अतः इस स्थल पर भी उत्खनन किया गया। भूमि की आधुनिक सतह के १२ फुट नीचे तक उत्खनन करने के पश्चात् पूरे तोरण को तथा उसके मूलस्थान को देखा जा सका। यह तोरण एक मन्दिर के द्वार पर लगाया गया था। इस मन्दिर के अवशेष भी उत्खनन में प्राप्त हुए। यह तोरण मूल तोरण का केवल एक ओर का स्तम्भ था। दूसरे स्तम्भ को सम्भवतः मुस्लिम काल में यहाँ से हटा लिया गया था तथा मन्दसौर के दुर्ग के निर्माण में उपयोग में लाया गया था। तोरण पर उत्कीर्ण शैव धर्म सम्बन्धित पौराणिक चित्रणों से अनुमान लगाया गया कि जिस मन्दिर के सम्मुख यह लगाया गया था, वह शैव मन्दिर रहा होगा।

मन्दसौर के मुस्लिम कालीन किले के दक्षिण-पूर्व की ओर एक गुप्तकालीन विशालकाय शिव की प्रतिमा भूमि में आधी गड़ी प्राप्त हुई। इस प्रतिमा के चारों ओर १६ फुट गहरे उत्खनन से पता चला कि यह एक गुप्तकालीन मन्दिर में स्थित थी। मुस्लिम काल में गिर जाने के पश्चात् सम्भवतः इसे फिर एक दीवाल के सहारे खड़ा करने का प्रयत्न किया गया।

इन सभी उत्खननों में मूल मन्दिरों की नीवों के केवल कुछ ही अवशेष प्राप्त हो सके। उत्खननों में प्राप्त पुरावशेषों की संख्या भी कम थी।

आ० स० इ० वार्षिक रिपोर्ट १९२२-२३, पृ० १८५-८६।

२४८७. मनोटी (१९५९-६०)

मन्दसौर जिले में स्थित इस ग्राम में मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व विभाग द्वारा डॉ० एच० व्ही० त्रिवेदी के निर्देशन में तथा श्री वी० श्री० वाकणकर की सहायता से १९५९-६० में उत्खनन करवाया गया।

कुल मिलाकर यहाँ तीन खदानें लगायी गयीं जिनमें एक लम्बी तथा दो छोटी थीं। दो खदानों में सात कालों से सम्बन्धित अवशेष प्राप्त हुए। इस स्थान पर विभिन्न काल में बसी सभ्यताओं द्वारा जो मृद्भाण्ड उपयोग में लाये गये उन्हें निम्नलिखित समूहों में बाँटा जा सकता है :—

(१) 'काले और लाल' मृद्भाण्ड, जिनमें भीतरी भाग चित्रित हों। ये आहाड़ तथा नागदा के मृद्भाण्डों से मिलते-जुलते हैं।

(२) लाल भाण्ड जिन पर काले रंग से चित्रकारी की गयी है। इनमें टोंटी-दार भाण्ड महेश्वर से प्राप्त भाण्डों के समान हैं।

(३) उक्त प्रकार के पतले भाण्ड, जिनके आकार लोथल के परवर्ती काल के स्तरों से प्राप्त भाण्डों से मिलते-जुलते हैं।

(४) अनगढे काले भाण्ड।

उत्खनन से यह ज्ञात हुआ कि यहाँ पर बसी प्रारम्भिक सभ्यता बाढ़ आने के कारण उजड़ गयी। तत्पश्चात् यहाँ के निवासियों ने बाढ़ से रक्षार्थ कच्ची ईंटों की एक मोटी दीवाल

बनवायी। इसके बाद यहाँ के निवासी एक बार और बाढ़ग्रस्त हुए और यह स्थान छोड़कर चले गये। तत्पश्चात् यहाँ पर एक नयी सभ्यता की बस्ती स्थापित हुई। उक्त घटनाएँ आद्यैतिहासिक काल तक हुई। तत्पश्चात् ऐतिहासिक काल से लेकर मध्ययुग तक से सम्बन्धित स्तर मिले हैं।

इ० आ० रि० १९५९-६०, पृ० २५।

२४८८. महादेव पिपरिया (१९६२-६३, १९६४-६५)

नर्मदा नदी के तट पर स्थित विभिन्न स्थानों से पूर्व-पाषाण कालीन, मध्य-पाषाण कालीन तथा उत्तर-पाषाण कालीन औज़ार प्राप्त हुए हैं। अतः पाषाण कालीन संस्कृति का अध्ययन करने के लिए नर्मदा का तट अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इस दृष्टिकोण से नर्मदा तट के स्तर-अनुक्रम का ज्ञान प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक समझा गया। अतः १९६२-६३ तथा १९६४-६५ के वर्षों में श्री जी० एस० सुपेकर के निर्देशन में नरसिंहपुर जिले में महादेव पिपरिया नामक स्थान पर नर्मदा के बायें तट पर स्थित एक पाषाण युगीन स्थल का उत्खनन करवाया गया। उत्खनन में नर्मदा के बायें तट के स्तर-अनुक्रम का जो चित्र प्रस्तुत हुआ वह निम्नप्रकार था—

ऊपर से नीचे की ओर जाते हुए निम्नलिखित स्तर—

(१) हल्के-पीले भूरे रंग की मिट्टी का स्तर (१५ मी०)

(२) रेत तथा मिट्टी का स्तर, जिसमें मध्य-पाषाण कालीन औज़ार मिले (५ मी०)

(३) मिले-जुले अस्पष्ट स्तर

(४) लाल-भूरे रंग की मिट्टी का स्तर (३ मी०)

(५) संगुटिक बजरी का स्तर जिसमें एक शल्क प्राप्त हुआ (२५ मी०)

(६) पीली-भूरी कड़ी कंकड़ युक्त मिट्टी का स्तर (१·५ मी०)

(७) पीली-भूरी रेतीली मिट्टी का स्तर (१·५ मी०)

(८) संगुटिक गोलाश्म का स्तर जिसे १·५० मी० तक खोदा गया तथा यह और भी गहरा पाया गया। इसमें मध्य तथा उत्तर पाषाण युगीन औज़ार प्राप्त हुए।

इ० आ० रि० १९६२-६३; वही, १९६४-६५, पृ० १६।

२४८९. महेश्वर-नावडाटोली (१९५२-५३, १९५७-५९)

मध्यप्रदेश के पश्चिम निमाड़ जिले में इन्दौर से लगभग ५० मील दक्षिण नर्मदा के उत्तरी तट पर महेश्वर नामक स्थान है। इतिहासकार यहीं प्राचीन माहिष्मती नगरी की स्थिति मानते हैं, जो बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार अवन्ति जनपद की राजधानी थी। माहिष्मती की प्राचीन महत्ता का उल्लेख महाभारत और अन्य पुराणों में तथा कालिदास, दण्डी, राजशेखर आदि के ग्रन्थों में आया है। महेश्वर के ठीक सामने नर्मदा के दूसरे तट पर नावडाटोली नामक स्थान है जहाँ से ताम्रपाषाण युगीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं। इन दोनों स्थलों

का उत्खनन डेक्कन कालेज रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना के संचालक डॉ० हंसमुख धीरजलाल सांकलिया के निर्देशन में पहले १८५२-५३ में तथा बाद में १९५७-५९ में करवाया गया।[१] इस उत्खनन से महेश्वर तथा नवडाटोली से प्राप्त अवशेषों के आधार पर इन स्थानों पर बसी सभ्यता को निम्नलिखित सात कालों में विभाजित किया गया है—

प्रथम काल—	पूर्व-पाषाण युग
द्वितीय काल—	मध्य-पाषाण युग
तृतीय (अ) काल—	ताम्रपाषाण युग
तृतीय (आ) काल—	—वही—
तृतीय (इ) काल—	—वही—
तृतीय (ई) काल—	—वही—
चतुर्थ काल—	४०० ई० पू० से १०० ई० पू० तक
पंचम् काल—	१०० ई० पू० से १०० ईसवी तक
षष्ठम् काल—	१०० ई० से ५०० ई० तक
सप्तम् काल—	उत्तर-मध्य युग (मुस्लिम-मराठा काल)

उपरोक्त विभिन्न कालों की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

प्रथम काल

सहस्त्रधारा, महेश्वर तथा मण्डलेश्वर की खोज में ४०० से अधिक पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार प्राप्त हुए। महेश्वर-नावडाटोली के निकट प्राप्त ये औज़ार इन स्थलों पर बसी सर्व-प्रथम सभ्यता से सूचक हैं।

द्वितीय काल

उपरोक्त स्थानों की खोज में मध्यपाषाण युगीन औज़ार भी प्राप्त हुए। मध्यपाषाण युगीन कुछ औज़ार महेश्वर की पाँचवें खदान में भी निम्नतम स्तर से मिले। ये औज़ार इन स्थलों पर बसे मध्यपाषाण युगीन सभ्यता के सूचक हैं।

तृतीय काल

तृतीय (अ) काल से सम्बन्धित लोग झोपड़ीनुमा मिट्टी के घरों में रहते थे जो चौकोर, गोल अथवा आयताकार होते थे। उनकी छतें सपाट होती थीं। दीवालें तथा छतें घास मिली हुई मिट्टी की बनती थीं। छत को रोकने के लिए बाँसों का प्रयोग होता था। दीवालों को

---

१. महेश्वर में मण्डल खोह का उत्खनन सर्वप्रथम १९३५-३६ में करवाया गया। कुछ मनके चमकीले मृद्‌भाण्डों के टुकड़े तथा पंचमार्क सिक्के प्राप्त हुए (**देखिये, रि० ए० हो० स्टे० १९३६, पृ० ७५; वही, १९४५, पृ० १६८**)।

सफेद मिट्टी या चूने से पोत दिया जाता था। फर्श के बनाने में चूना और पीली या काली मिट्टी का इस्तेमाल किया जाता था। घरों के चूल्हों पर भी चूने का पलस्तर होता था। लोग गेहूँ, चना, मटर, मसूर और मूँग की खेती करते थे तथा भैंस, भेड़, बकरी, सूअर आदि जानवरों का पालन करते थे। वे पत्थर के बने फलक तथा ताँबे और काँसे के विविध औज़ारों का उपयोग करते थे। यात्रा के लिए ये लोग गाड़ियों का उपयोग करते थे। घरेलू उपयोग के लिए ये लोग चाक पर बने हुए सुन्दर मिट्टी के बने बरतनों का उपयोग करते थे। ये 'काले और लाल,' 'लाल पर काले' मृद्भाण्ड कहलाते हैं। इनके अतिरिक्त सफेद रंगे हुए बरतन जिन पर काले रंग से आकर्षक चित्रकारी की है, भी प्राप्त हुए हैं। महाराष्ट्र तथा कर्नाटक से प्राप्त भाण्डों के सदृश यहाँ कुछ भूरे मृद्भाण्ड भी मिले हैं।

तृतीय (आ) काल के स्तर से कुछ जले हुए प्रमाणों के अतिरिक्त चावल की खेती करने के सर्वप्रथम प्रमाण मिले हैं। मृद्भाण्डों के उपयोग में प्रमुख परिवर्तन यह है कि इस स्तर में 'लाल और काले' मृद्भाण्ड पूर्ण रूप से अनुपस्थित हैं। इनके अतिरिक्त छोटे आकार के साधार पानपात्रों का अधिक मात्रा में मिलना उल्लेखनीय है।

तृतीय (इ) काल से सम्बन्धित स्तर से जलने के प्रमाण की अधिकता है तथा इसी के साथ कतिपय विदेशियों के आगमन के प्रमाण उपस्थित हैं। ये विदेशी सम्भवत: पश्चिम से आये थे। पश्चिम देशों से मिलते-जुलते नये मृद्भाण्डों का इस स्तर से पाया जाना इस बात की ओर संकेत करता है। नये मृद्भाण्डों में एक उच्च कोटि के लाल रंग के मृद्भाण्ड हैं जिनपर काले रंग से चित्रकारी की है। ये 'जोरवे-वेयर' कहलाते हैं। इनके साथ टोंटीदार बर्तनों का भी प्रचलन प्रारम्भ हुआ।

तृतीय (ई) काल से सम्बन्धित स्तर से टोंटीदार प्याले तथा उत्कृष्ट चमकीले लाल मृद्भाण्ड प्राप्त हुए। ये मृद्भाण्ड आकार तथा प्रकार में समकालीन ईरान के मृद्भाण्डों से मिलते-जुलते हैं, अत: इनका आगमन उसी ओर से यहाँ आये हुए विदेशियों (सम्भवत: आर्यों) की ओर संकेत करता है।

उत्खनन में प्राप्त ताम्रपाषाण युगीन विभिन्न स्तरों से प्राप्त कुछ स्तरों को कार्बन तिथि निर्धारण के लिए अमेरिका के पेन्सलवानिया विश्वविद्यालय तथा बम्बई के टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ फण्डामेन्टल रिसर्च की प्रयोग शालाओं में भेजा गया। प्राप्त तिथियों से महेश्वर-नावडाटोली में इस काल का प्रारम्भ लगभग ई० पू० १७वीं शताब्दी में तथा अन्त लगभग ई० पू० १५वीं शताब्दी में निर्धारित किया गया है।

चतुर्थ काल

महेश्वर-नावडाटोली में आद्य-इतिहास का युग लगभग ई० पू० १४वीं शताब्दी में अन्त हो गया। उत्खनन के साक्ष्य से ऐसा लगता है कि आगामी लगभग १००० वर्षों तक यह स्थल उजाड़ रहा। लगभग ई० पू० ४०० में इस स्थान पर फिर से नयी आबादी बसी। इस काल के निवासी 'काले और लाल' तथा 'काले ओपदार उत्तरी भाण्ड' का उपयोग करते थे। ये लोग लोहे के उपकरण तथा आहत और ढले सिक्कों का उपयोग करने वाले थे। कच्चे

मकानों के स्थान पर ये लोग पकी ईंटों के बने मकानों में रहते थे। इस काल से सम्बन्धित स्तर से मिट्टी की बनी मूर्तियाँ, खिलौने, आभूषण विभिन्न प्रकार के पत्थरों से बने मनके आदि प्राप्त हुए हैं। नावडाटोली से प्राप्त तीसरी शताब्दी ई० पू० के एक स्तूप के अवशेष भी इसी काल से सम्बन्धित हैं। स्तूप में प्रयोग लाये गये कुछ ईंटों पर तीसरी शताब्दी ई० पू० के ब्राह्मी अक्षर उत्कीर्ण हैं। इस स्तूप का विनाश बाढ़ आ जाने के कारण हुआ प्रतीत होता है।

पंचम् काल

इस काल से सम्बन्धित स्तर केवल महेश्वर में लगायी गयी खदानों में मिले हैं। इस काल में 'काले और लाल' मृद्भाण्डों का उपयोग बहुत कम हो गया तथा इनके स्थान पर सफेद और लाल रंग के मृद्भाण्डो का उपयोग बढ़ गया।काँच की वस्तुओं का उपयोग भी इस काल में बहुत बढ़ गया प्रतीत होता है। लोग पकी ईंटों के बने मकानों में रहते थे।

षष्ठ काल

प्राचीन इतिहास से सम्बन्धित यहाँ का यह अन्तिम काल था। इसके अवशेष महेश्वर के टीले क्रमांक १ तथा २ के उत्खनन में मिले हैं। चमकीले लाल मृद्भाण्डों का उपयोग इस काल की विशेषता है। 'काले और लाल' मृद्भाण्डों के उपयोग में कमी तथा अनगढ़ लाल और काले मृद्भाण्डों के उपयोग में वृद्धि इस काल में स्पष्टतः दिखायी पड़ती है। उत्खनन में इस काल से सम्बन्धित आवास गृहों के कुछ भग्नावशेष भी प्राप्त हुए हैं।

सप्तम् काल

यह काल उत्तर-मध्ययुग से सम्बन्धित है जब यह क्षेत्र मुस्लिम तथा मराठों के अधिकार में था। इसके पूर्व के पूर्व-मध्ययुगीन तथा पूर्व-मुस्लिम युगीन अवशेषों के कोई भी प्रमाण महेश्वर-नावडाटोली के उत्खनन में प्राप्त नहीं हुए।

संकालिया, सुब्बाराव तथा देव:'दी एस्कवेशन्स ऐट महेश्वर एण्ड नावडाटोली १९५२-५३' पृ० १-२५७; इ० आ० रि० १९५७-५८, पृ० ३०-३१, चित्र ३२-३७; वही, १९५३-५४, पृ० ८ चित्र ८।

२४९०. मोड़ी (१९५८-५९)

मन्दसौर जिले में मोड़ी नामक स्थान पर स्थित एक चित्रित शैलकृत्त निवास में १९५८-५९ में उत्खनन करवाया गया। उत्खनन में आठ स्तर प्रकाश में आये, जिनमें से विभिन्न प्रकार के पाषाणयुगीन औज़ार प्राप्त हुए। इन औज़ारों में प्रमुख थे, कैलसेडोनी के बने शल्क तथा फलक, तिकोने तथा अर्ध-चन्द्राकार औज़ार तथा अन्य औज़ार। साथ ह मृद्भाण्डों के भी चार ठीकरे प्राप्त हुए।

इ० आ० रि० १९५८-५९, पृ० २८।

२४६१. सिरपुर (१६५३-५६)

रायपुर जिले में सिरपुर (प्राचीन श्रीपुर) ग्राम रायपुर के ३७ मील उत्तर-पूर्व में महासमुन्द तहसील में महानदी के दाहिने तट पर स्थित है। वर्तमान ग्राम नदी और रायकेड़ा तालाब के मध्यवर्ती स्थान में बसा हुआ है। सातवीं शताब्दी ईसवी के पूर्व इस स्थान के प्राचीन इतिहास का कुछ भी ज्ञान नहीं है। सातवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में यहाँ सोमवंशी या शरभपुरीय राजाओं की राजधानी स्थापित हुई। आठवीं शताब्दी ईसवी से श्रीपुर के उल्लेख बहुत अधिक मिलने लगते हैं, परन्तु महाशिवगुप्त बालार्जुन के शासन के बाद के प्राचीन सिरपुर के विषय में पर्याप्त सूचना उपलब्ध नहीं है। नौवीं शताब्दी ईसवी से श्रीपुर ने फिर से अपनी गौरवपूर्ण ख्याति प्राप्त कर ली तथा तीवरदेव के शासन काल में श्रीपुर सम्पूर्ण महाकोशल की राजधानी बन गया।

सिरपुर के तीन उल्लेखनीय स्मारक है—लक्ष्मण मन्दिर, राम मन्दिर तथा गन्धर्वेश्वर मन्दिर। इनके अतिरिक्त यहाँ के प्राचीन अवशेष टीलों के रूप में चार वर्ग-मील के विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए हैं। इनमें से कुछ टीलों के उत्खनन का कार्य सागर विश्वविद्यालय द्वारा १६५३-५४ में तथा अन्य टीलों का उत्खनन मध्यप्रदेश शासन के पुरातत्त्व विभाग द्वारा १६५४-५५ तथा १६५५-५६ में किया गया। उत्खनन का निर्देशन स्वर्गीय डॉ० मो० ग० दीक्षित ने किया।

प्रथम वर्ष (१६५३-१६५४) में लक्ष्मण मन्दिर के उत्तर-पूर्व में स्थित एक ऊँचे टीले का उत्खनन करवाया गया। उत्खनन में पंचायतन शैली के एक प्राचीन शैव-मन्दिर के भग्नावशेष प्राप्त हुए। यह मन्दिर ८-१० फुट ऊँचे पत्थरों के आधार पर बना हुआ था जिसके सम्मुख ईंटों का कोठरीनुमा ढाँचा था। पश्चिम दिशा के सामने ४॥ फुट ऊँचा एक बड़ा शिवलिंग मिला तथा निकट ही कुछ छोटी मूर्तियाँ मिलीं। इस क्षेत्र में मिली महत्वपूर्ण उपलब्धियों में महिषासुरमर्दिनी, द्वारपालिका तथा राजकीय दम्पति की प्रतिमाएँ उल्लेखनीय हैं।

दूसरे वर्ष (१६५४-५५) में लक्ष्मण मन्दिर के एक मील दक्षिण में सुरक्षित जंगल में स्थित दो टीलों का अधिक व्यापक रूप से उत्खनन किया गया। प्रथम टीले से दो बौद्ध मठों के भग्नावशेष प्राप्त हुए जो एक-दूसरे के बगल में बनाये गये थे। दूसरे टीले से कई छोटे भवनों के तथा विहारों के भग्नावशेष मिले। मुख्य मन्दिर में एक विशिष्ट प्रकार की योजना देखने को मिली जिसमें उत्तर-गुप्त कालीन मन्दिर और मठ का सम्मिश्रण दिखता है। छते हुए द्वार, एक सभामण्डप, पूजास्थान आदि की उपस्थिति से यहाँ मन्दिर की सब आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं। मुख्य पूजास्थान में भूमिस्पर्श मुद्रा में ६॥ फुट ऊँची बुद्ध की विशाल प्रतिम मिली। मठ के बरामदे की पिछली ओर चार कतारों में ८ × ६ फुट के आकार की १४ कोठरिय मिलीं, जिनमें प्रत्येक में आलों की व्यवस्था की गयी थी। यह मठ दुमंजिला था जिनमें एक सुदृढ़ सीढ़ी के माध्यम से उत्तर- पश्चिम कोण पर एक प्रवेश द्वार था। इसका निकटवर्ती कमरा मठ के कोशागार के रूप में काम में लाया जाता था। उत्तरी बरामदे के मलवे को साफ कराते हुए महाशिवगुप्त के शासन काल का १४ पंक्तियों का एक लेख मिला। इस लेख

के अनुसार महाशिवगुप्त के शासन काल में आनन्दप्रभ नामक एक भिक्षु ने कुटी विहार का निर्माण किया था और इसके साथ एक अन्न-सत्र की व्यवस्था की थी जिसमें मठ में निवास करने वाले भिक्षुओं को चावल तथा खाद्यान्न निश्चित परिमाण में दिया जाता था। उत्खनन में २००० से अधिक पुरावशेष मिले जिनके अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि मठ के निवासी सुखी जीवन व्यतीत करते थे। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि मठ में रहने वाले बौद्ध धर्म के अनुयायी होने पर भी आधुनिक समाज के निम्न मध्यवर्ग के व्यक्ति थे और किसानी, बर्तन बनाने तथा सुवर्ण आदि विभिन्न काम-धन्धों को अपनाते थे। इन सभी कारीगरों के औज़ार भी उपलब्ध हुए हैं। एक कमरे में सुनार के औज़ार का पूरा सेट प्राप्त हुआ जिसमें चिमटियाँ, चिमटे, छोटी हथौड़ी, तिपाई, कसौटी आदि सभी उपकरण थे। निःसन्देह उत्खनन में प्राप्त अनेक काँसे की मूर्तियाँ स्थानीय कलाकारों द्वारा यहीं पर निर्मित की गयी होंगी। इनमें उल्लेखनीय सोने के पत्तरों से बनी महात्मा बुद्ध की प्रतिमा है जिसकी आँखें चाँदी से बनायी गयी थीं। काँसे की मूर्तियों के अतिरिक्त पत्थर की भी छोटी-बड़ी मूर्तियाँ उपलब्ध हुई हैं। पूजा के धार्मिक उपादानों के अतिरिक्त घरेलू उपयोग में आने वाली वस्तुएँ भी प्राप्त हुईं। एक रसोई घर के अवशेषों में कढ़ाई, तवा, चमचे, करछी, मथानी, सरोता आदि उपलब्ध हुए। दैनिक व्यवहार में आने वाली वस्तुओं में स्प्रिंगयुक्त ताला, लोहे कीघण्टियाँ, दरवाजे के कब्जे, जंजीरें, चटकनियाँ, द्वार की साँकल, लोहे की कीलें आदि मिली हैं। इनके अतिरिक्त आटे की चक्की, सिल-बट्टे, ऊखल, मिट्टी के दिये, पानी रखने के टूटे घड़े आदि भी प्राप्त हुए हैं। बौद्ध मंत्र अंकित एक ताम्रपट्ट तथा अनेक मुहरें भी मिली हैं।

उक्त मठ का उपयोग कब और क्यों बन्द हुआ, इसका अनुमान लगाना कठिन है। डॉ० दीक्षित के अनुसार, " भूतल विज्ञान, परिस्थिति सम्बन्धी एवं पुरातत्त्व सम्बन्धी प्रमाणों से स्पष्ट हो जाता है कि इस स्थान पर बाद में ऐसे लोगों ने अधिकार कर लिया जो अपने पूर्ववर्तियों के समान शान्तिप्रिय न थे। ये बाद में आये शैव मतावलम्बी थे। इन्होंने या तो बौद्ध लोगों को भगा दिया अथवा उनकी खाली कोठरियों पर अधिकार कर लिया। उन्होंने मठ के कुछ भागों का एक द्वार बनाकर मरम्मत करवायी और मठ की पुरानी कोठरियों का भी प्रयोग किया। सम्भवतः वे शिकार एवं वन्य व्यवसाय कर अपना जीवन-यापन करते थे। यह बात खुदाई में प्राप्त बहुत-से आयुधों एवं हथियारों से स्पष्ट होती है। उनकी धार्मिक पूजा शिव-पार्वती, महिषासुरमर्दिनी, गणेश और लिंग-जैसे दैवी उपादानों एवं देवताओं की प्रस्तर मूर्तियों की व्यक्तिगत पूजा तक मर्यादित थी, क्योंकि बहुत-सी बौद्ध प्रतिमाएँ बुरी तरह क्षत-विक्षत एवं खण्डित रूप में उपलब्ध हुई हैं ....यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि ये लोग किस काल से सम्बन्धित थे क्योंकि खुदाई के ऊपरी स्तर से किसी भी प्रकार का विवरण उपलब्ध नहीं हुआ है और आकृतियों एवं सामग्री की स्थिति से यह परिणाम अवश्य निकाला जा सकता है कि मठ पर उक्त शैव आक्रमण दसवीं शताब्दी के पूर्व नहीं हुआ होगा। संक्षेप में, मठ के जीवन में यह पश्चात् मध्यवर्ती कालीन एक संक्षिप्त अस्थायी दौर ही रहा होगा। इस अधिकार के कुछ समय बाद ही मठ निर्जन हो गया होगा। उपेक्षा, भवन में लगी

हुई इमारती लकड़ियों के स्वाभाविक क्षय एवं दूसरे कारणों से इसका विनाश हो गया और सारा प्रदेश जंगलों से व्याप्त हो गया होगा।''

उत्खनन का कार्य तीसरे वर्ष (१९५५-५६) में भी चला। इस वर्ष में उत्खनित चार स्थान थे। आवास-क्षेत्र, मठ-क्षेत्र, स्वस्तिकाकार मठ-क्षेत्र तथा किले का क्षेत्र।

[इ० आ० रि० १९५३-५४, पृ० १२, चित्र १०-बी, डी; वही, १९५४-५५, पृ० २४-२६, चित्र ४८-४९-ए, सी तथा चित्र ६, पृ० २५; वही, १९५५-५६, पृ० २६-२७; कटारे-''एक्सकेवेशन्स एट सिरपुर'' : इ० हि० क्वा० भाग ३५, अंक १, मार्च १९५९, पृ० १-६; प्रगति (मध्यप्रदेश शासन) जनवरी-फरवरी-१९५६, पृ० १२; शुक्ल अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० १८४-१९१।]

२४९२. त्रिपुरी (१९५२-५३, १९६५-७०)

जबलपुर जिले में जबलपुर नगर से लगभग ९ मील पश्चिम की ओर शहपुरा जाने वाले मार्ग पर तेवर गाँव से लगे हुए प्राचीन त्रिपुरी नगरी के भग्नावशेष विद्यमान हैं। ये अवशेष अनेक टीलों तथा स्मारकों के रूप में नर्मदा तट पर कई वर्ग मील के घेरे में फैले हुए हैं। त्रिपुरी के ऐतिहासिक महत्त्व को देखते हुए यहाँ उत्खनन करवाये गये।

त्रिपुरी का सर्वप्रथम उत्खनन १९५२-५३ में सागर विश्वविद्यालय द्वारा स्व० डॉ० मो० ग० दीक्षित के निर्देशन में किया गया। हथियागढ़ टीले पर किये गये इस उत्खनन से ज्ञात हुआ कि इस स्थान पर सर्वप्रथम बस्ती लगभग १००० ई० पू० में थी जहाँ के निवासी लघुपाषाणास्त्र तथा चित्रित मृद्भाण्डों का उपयोग करते थे। इसके पश्चात् यहाँ लगभग तीसरी शताब्दी ई० पू० में मौर्यकालीन बस्ती थी जब त्रिपुरी के नगर-राज्य का स्वतन्त्र अस्तित्व था। इस नगर-राज्य में त्रिपुरी नामांकित सिक्के चलते थे। यहाँ के निवासी मिट्टी के बने मकानों में रहते थे तथा घरेलू उपयोग में एक विशेष प्रकार के मृद्भाण्डों का उपयोग करते थे जिसे 'काले ओपदार उत्तरी भाण्ड' के नाम से जाना जाता है। यह बस्ती काफी समय तक रही। इस काल में आहत सिक्कों का भी उपयोग होता था। प्रथम शताब्दी ई० पू० में यह स्थान सातवाहन शासकों के आधिपत्य में आ गया। उत्खनन में सातवाहन सिक्कों की प्राप्ति से इस बात का पुष्टीकरण हो गया है। इस काल में त्रिपुरी में बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ। उत्खनन में समकालीन दो बौद्ध विहार प्राप्त हुए हैं। त्रि-रत्न चिन्हांकित मृद्भाण्ड तथा अन्य सामग्री से भी यहाँ बौद्ध धर्म-प्रचार का पता चलता है। चौथी शताब्दी ईसवी में यहाँ विदेशियों (सम्भवतः हूणों) का आक्रमण हुआ जिन्होंने त्रिपुरी तथा निकटवर्ती क्षेत्र को ध्वंस किया। इसके बाद का इतिहास अस्पष्ट है। ९वीं शताब्दी में यह कलचुरि शासकों की राजधानी थी तथा उनका काल त्रिपुरी इतिहास में स्वर्णिम अध्याय था।

त्रिपुरी का नर्मदा तट पर बसी हुई प्राचीन माहिष्मती नगरी से क्या सम्बन्ध था तथा क्या प्राचीन त्रिपुरी के नाश में माहिष्मती के लोगों का कोई हाथ था, इस समस्या का समाधान करने के लिए १९६५-६६ में त्रिपुरी में फिर से उत्खनन प्रारम्भ किया गया।

इस उत्खनन में डेक्कन कालेज रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना; एम० एस० यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा तथा सागर विश्वविद्यालय ने भाग लिया तथा उत्खनन का कार्य डॉ० हंसमुख धीरजलाल सांकलिया के नेतृत्व में किया गया। उस वर्ष के उत्खनन से ऐसा कोई प्रमाण प्राप्त नहीं हो सका जिसके आधार पर प्राचीन माहिष्मती तथा त्रिपुरी का कोई सम्बन्ध जोड़ा जा सकता।

१९६६ से १९७१ तक यह कार्य सागर विश्वविद्यालय द्वारा विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग के अध्यक्ष प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी द्वारा कराया गया। अभी तक प्राप्त उत्खनित सामग्री के आधार पर त्रिपुरी के इतिहास को निम्नलिखित कालों में रखा गया है—

प्रथम काल—(ताम्रपाषाण युगीन) लगभग १००० ई० पू० से ५०० ई० पू० तक
द्वितीय काल—(ऐतिहासिक) ५०० ई० पू० से ३०० ई० पू० तक
तृतीय काल— ३०० ई० पू० से १०० ई० पू० तक
चतुर्थ काल— १०० ई० पू० से २०० ईसवी तक
पंचम् काल— २०० ईसवी से ३०० ईसवी तक

विभिन्न कालों की महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

प्रथम काल

१९५२ के त्रिपुरी उत्खनन में ताम्रपाषाण युगीन जो मृद्भाण्डों के टुकड़े मिले थे, उसी प्रकार के टुकड़े १९६६ के उत्खनन में भी प्राप्त हुए। इन चित्रित 'लाल पर काले' मृद्भाण्डों के साथ विभिन्न प्रकार के लघुपाषाण औज़ार भी प्राप्त हुए हैं। एक गढ्ढे में पक्की मिट्टी का अर्धवृत्ताकार मृद्पात्र भी मिला है जिस पर लाल पालिश है तथा उसके सिर पर धागा डालने के लिए छिद्र बना है। साथ ही धूसर रंग के ठीकरे भी प्राप्त हुए हैं।

द्वितीय काल

द्वितीय काल के निवासी बाणगंगा तथा एक लघु स्त्रोत के संगम पर स्थित टीले पर रहते थे। यह टीला काफी लम्बा है परन्तु चौड़ा अधिक नहीं है और तीन भागों में विभाजित है। सम्भवतः इसी कारण इसका नाम त्रिपुरी पड़ा। यहाँ के लोग मिट्टी के मकानों में रहते थे जिनकी फर्श चूने से पुती रहती थी। ये निवासी कई प्रकार के पके हुए मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करते थे जैसे—

(क) कटोरे, थाली आदि बर्तन जिनके बाहरी भाग काले अथवा लाल होते थे तथा अन्दर के भाग काले होते थे।

(ख) थाली, कटोरे, लोटे आदि जो लाल रंग के होते थे।

(ग) छोटे लोटे, थाली, पानी रखने के बर्तन जिनके बाहरी भाग पर सफेद रंग की परत होती थी।

(घ) थाली, कटोरे आदि जो 'काले ओपदार उत्तरी भाण्ड' के नाम से जाने जाते हैं। इनका प्रयोग बहुत कम होता था।

इन बर्तनों के अतिरिक्त इस काल के निवासी लोहा, ताँबा, काँसा, हाथीदाँत तथा अर्ध कीमती पत्थरों की बनी हुई वस्तुओं का प्रयोग करते थे।

तृतीय काल

इस काल में यहाँ के निवासियों के जीवन में स्पष्ट उन्नति दिखायी पड़ती है। वे अब मिट्टी के कच्चे मकानों में रहने की बजाय पकी ईंटों के बने हुए मकानों में रहने लगे। इन मकानों में स्वच्छता का बहुत ध्यान रखा जाता था। गन्दे पानी को निकालने के लिए वलयकूप, शोषक-गर्त आदि का उपयोग तथा कचरा फेंकने के लिए बड़े चहबच्चों के उपयोग के प्रमाण मिले हैं। मकान की छतों पर खपरैलें लगायी जाती थीं जिन्हें लकड़ी की शहतीरों के ऊपर कीलों से फँसा दिया जाता था। मकानों में अनाज जमा करने के लिए बड़े-बड़े मटके होते थे। द्वितीय काल में उपयोग में लाये जाने वाले मृद्भाण्डों के विविध प्रकार मिलने के अतिरिक्त इस काल में सुन्दर लाल रंग के रंगे हुए थाली, कटोरे आदि भी प्राप्त हुए हैं। इनके अतिरिक्त चित्रित मुहरें, विभिन्न प्रकार के पत्थर की बनी छोटी वस्तुएँ, मनकों के हार तथा हड्डी की बनी वस्तुओं का उपयोग होता था। त्रिपुरी नगर-राज्य के सिक्के भी इसी काल के स्तर से प्राप्त हुए हैं।

चतुर्थ काल

इस काल में सभ्यता का विकास बराबर चलता रहा। अब कच्चे मकानों के स्थान पर पकी बड़ी ईंटों के मकान बनाये जाने लगे। इन मकानों में वलयकूप का उपयोग भी अधिक होने लगा। इस काल के स्तरों से त्रिपुरी नगर-राज्य के सिक्कों के स्थान पर सातवाहन तथा क्षत्रपों के सिक्के प्राप्त हुए हैं। इनमें से कई सिक्के दुर्लभ कोटि के हैं।

इस काल में मिट्टी के बर्तन बनाने की कला में भी एक नया प्रयोग प्रारम्भ हुआ। अब मिट्टी के बरतनों को ठप्पों की सहायता से अलंकृत किया जाने लगा। ठप्पों द्वारा बनाये गये चित्रों में स्वस्तिक, त्रिरत्न तथा पूर्णघट उल्लेखनीय हैं।

मुलायम पत्थर से विभिन्न प्रकार के बर्तन, आभूषण, सिंगारदान आदि बनाने की कला का भी इसी काल में प्रादुर्भाव हुआ। चीनी मिट्टी के बरतन भी इस काल के स्तरों से प्राप्त हुए हैं। पालिश किये हुए लाल रंग के बर्तनों के कटोरे, थालियाँ और टोंटीदार गुलाबदानियों का प्रयोग इस काल में विशेष उल्लेखनीय है।

पंचम् काल

इस काल में लोहे के भालों, बाण, फलकों आदि का निर्माण बड़ी संख्या में होने

लगा। इस प्रकार के प्राचीन औजारों की अपेक्षा अब ये मजबूत बनने लगे। जोड़ के स्थान पर जोड़ को मजबूत करने के लिए अब लोहे की चूड़ियाँ बनायी जाने लगी। उत्खनन में एक विशेष उल्लेखनीय भाले का फलक मिला है जिसकी मूठ के ऊपर पीतल की दाँतेदार चूड़ियाँ लगी हैं। इसे देखने से ज्ञात होता है कि इस काल में विभिन्न प्रकार के अस्त्र बनाने की कला में अब पर्याप्त विकास हो चुका था।

इस युग से सम्बन्धित एक खदान से प्राप्त भवन के अवशेष उल्लेखनीय हैं। प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी के अनुसार, "प्रतीत होता है कि इस जगह धातु के उपकरण बनाने का एक छोटा उद्योग गृह था। इस भवन का प्लेटफार्म धनुषाकार मिला—ईंटों का फर्श जिसपर गोल खम्भे लगे थे। इस धनुषाकार प्लेटफार्म के समीप ही आग जलाने का एक भट्ठा भी प्राप्त हुआ। यहाँ पाये गये मिट्टी के अभिलिखित ठप्पों के आधार पर इस मकान की निर्माण-तिथि दूसरी-तीसरी शती ईसवी कही जा सकती है। तेरहवीं खदान में लकड़ी के खम्भे जले हुए टुकड़े सहित दूसरी-तीसरी शताब्दी की भट्ठी मिली। इसी खदान में पकी ईंटों की बनी हुई नाली सहित ईंटों के पक्के भवन के खण्डहर मिले। इसकी तिथि प्रथम शती ईसवी है।"

आगे प्रो० बाजपेयी कहते हैं—"खुदाई में गणेश, महिषमर्दिनी और अन्य देवों की प्रतिमाएँ मिलीं। पक्की ईंटों की मानवाकृतियाँ तथा पशु और पक्षियों की आकृतियाँ अच्छी संख्या में प्राप्त हुईं। इस वर्ष प्राप्त महत्वपूर्ण मुद्राओं में उल्लेखनीय त्रिपुरी जनपद की ताँबे की एक गोल मुद्रा है, जिसपर अशोक कालीन ब्राह्मी लिपि में त्रिपुरी का नाम लिखा है। आहत तथा साँचे में ढले सिक्के, सातवाहन शासकों के ताँबे और सीसे के सिक्के, हिन्द-सासानी और कलचुरि शासकों के सिक्के भी मिले हैं। बोधि नामक राजवंश के शासकों के पकी मिट्टी के सात ठप्पे प्राप्त हुए, जिनमें से एक पर 'श्री बोधि' राजा का नाम लिखा है। त्रिपुरी में किये गये पहले उत्खननों में इस वंश के तीन शासकों-शिवबोधि, वसुबोधि तथा चन्द्रबोधि के नाम ज्ञात हुए थे। इस वर्ष उत्खनन में प्राप्त मिट्टी की एक मुद्रा पर महासेन का नाम अंकित है। ३५० ईसवी के लगभग त्रिपुरी क्षेत्र पर इस राजा का शासन रहा होगा। स्वस्तिक, नन्दिपद, हल और शंख के चिह्नों से अंकित सफेद पत्थर की मौर्यकालीन मुद्रा भी उल्लेखनीय है। चिकने पत्थर पर बने एक छल्ले पर मातृदेवी और दो नागिनों को पकड़े हुए गरुड़ की आकृतियाँ हैं। यह इस वर्ष की उपलब्धियों में एक दुर्लभ वस्तु है। इन वस्तुओं के अतिरिक्त अनेक आभूषणों के साँचे, अर्ध-कीमती प्रस्तरों और पकी मिट्टी के मनके और धातु के उपकरण बड़ी संख्या में प्राप्त हुए।" (मध्यप्रदेश का पुरातत्त्व, पृ० २२-२३)।

[मो० ग० दीक्षित—'त्रिपुरी १९५२'; 'त्रिपुरी एस्कवेशन्स-१९६६'—शार्ट रिपोर्ट; इ० आ० रि० १९६५-६६; वही, १९६६-६७; वही, १९६७-६८; वही, १९६८-६९; कृष्णदत्त बाजपेयी—'मध्यप्रदेश का पुरातत्त्व,' पृ० २०-२३; 'भवन्स जर्नल', भाग १३, अंक २, अगस्त १४, १९६६, पृ० १७३-७८।]

२४९३. मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व उत्खननों में कार्बन-१४ की रीति से निर्धारित कुछ तिथियाँ

१*	२*	३*	४*	५*
		आदमगढ़		
टी० एफ० १२०	उत्तर पाषाण युग (लघुपाषाण औजार)	७२४०±१२५	७४५०±१३०	—
		उज्जैन		
टी० एफ० ४०७	काले और लाल भाण्ड प्राप्त होने वाला स्तर	२०५०±१००	—	१०० ई० पू०
टी० एफ० ४०९	काले ओपदार उत्तरी भाण्ड प्राप्त होने वाला स्तर	२४००±९५	—	४५० ई० पू०
		एरण		
पी० ५२७	ताम्रपाषाण युग	२५१५±५८	२५९०±६०	—
पी० ५२८	ताम्रपाषाण युग	२८७८±६५	२९६४±६७	—
टी० एफ० ३२६	द्वितीय (अ) काल	२९०५±१०५	२९९०±११०	—
टी० एफ० ३२४	वही	३१३०±१०५	३२२०±११०	—
पी० ५२६	ताम्रपाषाण युग	३१३६±६८	३२३०±७०	—
पी० ५२५	द्वितीय काल	३१९३±६९	३२८९±७१	—
टी० एफ० ३३०	प्रथम काल	३२२०±१००	३३१५±१०५	—
टी० एफ० ३२७	वही	३२८०±१००	३३७५±१०५	—
टी० एफ० ३२९	वही	३३००±१०५	३३९५±११०	—

* १. **प्रयोग शाला क्रमांक** : पी = पेन्सिलवानिया विश्वविद्यालय (संयुक्त राष्ट्र अमेरिका) प्रयोगशाला। टी० एफ० = टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ फण्डामेण्टल रिसर्च प्रयोगशाला, बम्बई।

२. **काल तथा वस्तु**

३. **रेडियो कार्बन की ५५६८±३० के अर्ध-जीवन की रीति के अनुसार निर्धारित तिथि**

४. **रेडियो कार्बन की ५७३०±४० के अर्ध-जीवन की रीति के अनुसार निर्धारित तिथि।** इन तिथियों की गणना वर्तमान काल से की गयी है, अर्थात् वर्तमान की ईसवी सन् की १९५० की तिथि को इन तिथियों से घटाने से ई० पू० की तिथि प्राप्त की जा सकती है।

५. **ईसवी पूर्व की तिथि**

१	२	३	४	५
टी० एफ० ३३१	वही	३३५५±९०	३४५०±९५	—
पी० ५२९	ताम्रपाषाण युग	३८६९±७२	४०२३±७४	—
		कायथा		—
टी० एफ० ६७४	पूर्व-ऐतिहासिक चतुर्थकाल	२३५०±९५	२४२०±१००	
टी० एफ० ४०२	ताम्रपाषाण युगीन तृतीय काल	३२४०±१००	३३३०±१००	
टी० एफ० ३९७	वही	३३५०±१००	३४५०±१००	—
टी० एफ० ३९८	वही	३५२०±१००	३६२५±१००	—
टी० एफ० ३९९	वही द्वितीय काल	३५२५±१००	३६२५±१००	—
टी० एफ० ३९६	वही तृतीय काल	३५७५±१०५	३६८०±११०	—
टी० एफ० ४००	वही द्वितीय काल	३८००±१०५	३९१५±११०	—
टी० एफ० ६८०	वही प्रथम काल	३८५०±९५	३९६५±११०	—
टी० एफ० ६७८	ताम्रपाषाण युग	—	३६३५±१००	१६८५ ई० पू०
टी० एफ० ६७६	वही	—	३२५५±१०५	३१०५ ई० पू०
टी० एफ० ६७९	वही	--	३२५०±१३५	१३०० ई० पू०
टी० एफ० ७७६	वही	—	३५५५±११५	१६०५ ई० पू०
टी० एफ० ७७७	वही	—	३७३०±१००	१७८० ई० पू०
टी० एफ० ७७८	वही	—	३६५५±९५	१७०५ ई० पू०
टी० एफ० ७८१	वही	—	३७८५±१००	१८३५ ई० पू०
टी० एफ० ७८२	वही	—	३८३०±१०५	१८८० ई० पू०
		नावडाटोली		
पी० २०५	ताम्रपाषाण युगीन तृतीय-ई काल	३२९४±१२५	३३९३±१२८	—
टी० एफ० ५९	ताम्रपाषाण युगीन तृतीय-अ काल	३३८०±१०५	३४८१±१०८	—
पी० २०४	वही, तृतीय-इ काल	३४४९±१२७	३५५२±१३०	—
पी० ४७५	वही, तृतीय-अ काल	३४५५±७०	३५५९±७३	—
पी० २००	वही	३४५७±१२७	३५६०±१३०	—
पी० २०१	वही	३४९२±१२८	३६०७±१३१	—
पी० २०२	वही तृतीय-आ काल	३५०३±१२८	३६०८±१३१	—

१	२	३	४	५
पी० ४७६	वही	४१२५±६९	४२४९±७२	—
		बेसनगर		
टी० एफ० ३८७	काले ओपदार उत्तरी भाण्ड	—	२४२०±१०५	४७० ई० पू०
		त्रिपुरी		
टी० एफ० ६८१	पूर्व-ऐतिहासिक काल	—	२२२०±१०५	२७० ई० पू०

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

•

प्रथम अध्याय

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

A. General Histories

Allchin Bridget and Raymond : **The Birth of Indian Civilization.** 1968.

Banerji N. R. : **Iron Age in India.** Delhi, 1965.

Bhandarkar D. R. : **Lectures on the Ancient History of India.** Calcutta, 1919.

Bhandarkar R. G. : **Early History of the Deccan.** Calcutta, 1928.

De Terra and Peterson : **Studies on the Ice Age etc. in India and associated Human Cultures.** Washington, 1939.

Dutt R. C. : **History of Civilization in Ancient India.** London, 1893.

Gordon D. H. : **The Pre-historic Background of Indian Culture,** Bombay, 1958.

Jayaswal K. P. : **History of India, 150-350 A. D.** Lahore, 1933.

Imperial History of India, Lahore, 1934.

Lal B. B. : **Indian Arcaeology Since Independence.** Delhi, 1964.

Law B. C. : **Khastriya Clans in Buddhist India.** Calcutta, 1922.

Ancient Mid-Indian Kshatriya Tribes, Vol. I. Calcutta, 1924.

Some Kshatriya Tribes of Ancient India. Calcutta, 1924.

India as Described in the Early Texts of Buddhism and Jainism. London, 1941.

Tribes in Ancient India. Poona, 1943.

Majumdar R. C. : **The History and Culture of the Indian People.**

Vol. I : **The Vedic Age.**
Vol. II : **The Age of Imperial Unity.**
Vol. III : **The Classical Age.**
Vol. IV : **The Age of Imperial Kanauj.**
Vol. V : **The Struggle for Empire.**

Majumdar R. C. : **History of Bengal.** Vol. I. Dacca, 1943.

Mishra D. P. : **Studies in the Proto-History of India.** Delhi, 1971.

Mishra V. N. and Mate M. S. : **Indian Pre-history**—1964. Poona, 1965.

Mitra P. : **Pre-historic India.** Calcutta.

Mookerji R. K. : **Hindu Civilization.** London, 1936.

Ojha K. C. : **History of Foreign rule in India.**

Oldenburg H. : **Ancient India.** Chicago, 1898.

Pargiter F. E. : **Ancient Indian Historical Tradition.**

Purana Text of the Dynasties of the Kali Age. London, 1913.

Rapson E. J. (Ed) **Cambridge History of India.** Vol. I. Cambridge, 1922.

Rapson E. J. : **Ancient India.** Cambridge, 1914.

Raychaudhary H. C. : **Political History of Ancient India.** 5th Ed. Calcutta, 1950.

Ray H. C. : **Dynastic History of Northern India.** 2 Vols. Calcutta, 1931, 1936.

Sankalia H. D. : **Indian Archaeology-To-day.** Bombay, 1962. **Pre and Proto History in India and Pakistan.** Bombay, 1962.

Shastri Nilakantha : **Comprehensive History of India.** New Delhi.

Sinha B. P. : **The Decline of the Kingdom of Magadha.** Patna, 1954.

Smith V. A. : **Early History of India.** 4th Ed. Oxford, 1924.

Stuart Piggot : **Pre-historic India.** 1950.

Subbarao B. : **The Personality of India.** Baroda. 1958.

Tripathi R. S. : **History of Ancient India.**

Vaidya C. V. : **History of Mediaeval Hindu India.** 3 Vols. Poona, 1921-26.

Wheeler Sir Mortimer : **Civilization of the Indus Valley and Beyond.** 1966.
Early India and Pakistan. 1959.
The Indus Civilization. 3rd Ed. Cambridge, 1958.

Yazdani G. : **The Early History of the Deccan.** Oxford, 1960.

B. Dynastic, Regional and Local Histories and Miscellaneous books and articles.

अग्निहोत्री जी. आर. : **विन्ध्यप्रदेश का इतिहास** । रीवा, विक्रम संवत् १८६० । **राज्य सोहावल का इतिहास**

Aiyangar S. K. : **Studies in Gupta History.** Madras, 1928.

Altekar A. S. : **The Rastrakutas And Their Times.** Poona, 1934.

बाजपेयी कृष्णदत्त : **Sagar Through the Ages.** Sagar, 1964.

मध्यप्रदेश का पुरातत्त्व, भोपाल १९७० ।

भारतीय संस्कृति में मध्यप्रदेश का योग । इलाहाबाद १९६५ ।

'Mahakosala in Ancient literature Journal of Kalinga Historical Society, Septe-mber, 1946.

'New light on the history of ERAN'. JUPHS, viii (ii), 1960.

'New Archaeological discoveries in Vidisha.' JMPIP, No. 2, 1960.

'New light on the early history of Central India'. Bhattasali Commemoration Volume, Dacca, 1965.

'Cultural heritage of Mahakoshal'. Cultural Forum, New Delhi, 1965.

'New light on Indian History from Eran Excavations'. PAIOC, Gauhati, 1964.

'मालवा की महानगरी उज्जयिनी ।' माधुरी, नवम्बर, १९४५ ।

'मध्यप्रदेश का कलात्मक वैभव' । हिन्दी अनुशीलन, प्रयाग (धीरेन्द्र वर्मा विशेषांक) ।

'पूर्वी-मालवा के इतिहास पर नया प्रकाश ।' मध्यभारती, सागर, १९६१ ।

'एरण उत्खनन ।' सागरिका, सागर, संवत् २०१९, अंक १ ।

'मध्यप्रदेश में अतीत के उत्खनन की प्रगति ।' मध्यप्रदेश सन्देश, दिसम्बर २६, १९६४ ।

'मध्यप्रदेश में रंगशाला का प्राचीन रूप ।' वही, जुलाई १७, १९६५ ।

'विन्ध्य क्षेत्र : सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य ।' संस्कृति, नई दिल्ली, वर्ष ६, अंक ४, १९६५ ।

Banerji R. D : **The Age of the Imperial Guptas.** Varanasi, 1933.

Barua B. M. : **Asoka and His Inscriptions.** Calcutta, 1946.

Bhandarkar D. R. : **Asoka** (Carmichael Lecturers, 1923), 2nd Edn. Calcutta, 1932.

Bhargava P. L. : **Chandragupta Maurya.** Lucknow, 1935.

Bhatia P. : **The Paramaras.** Delhi.

Bose N. S. : **History of the Chandellas of Jejakabhukti.** Calcutta, 1956.

Burhanpur Arch, Society : बुरहानपुर परिचय ।

Chatterjee G. S. : **Harshavardhana** (in Hindi). Allahabad, 1938.

Chattopadhyaya B. : **The Age of Kushanas—A Numismatic Study.**

Dandekar R. N. : **A History of the Guptas.** Poona, 1941.

Dixit M. G. : **Tripuri**—1952.

Dixit R. K. : **The Chandellas of Jajakabhukti and Their Times.** (A thesis for Ph. D. Lucknow University, 1950).

Dongray K. B. : **In Touch with Ujjain**, 1935.

दीक्षित स० का० : **उज्जयिनी इतिहास तथा पुरातत्त्व** । इन्दौर, १९६८ ।

द्विवेदी नन्दकिशोर : **धार राज्य का इतिहास**, १९१७ ।

द्विवेदी हरिहर निवास तथा द्विवेदी विजयगोविन्द : मध्यभारत का इतिहास । प्रथम खण्ड (सन् ३५० ई० तक) । ग्वालियर, १९५६ ।

Ganguli D. C. : **History of the Paramara Dynasty.** Dacca, 1933.

Garde M. B. : **'The Yajvapala or Jajapellas of Narwar'.** Epigraphia India XLVII, p. 241.

Gokhle S. : **'The Present and Ancient Boundaries of Madhya Pradesh'.** JMPIP. No. 5, pp. 95-135.

Gokhle Sobhna : **Historical and Cultural Ethnography of M. P.** Ph. D. Thesis, Poona University 1960.

हीरालाल रायबहादुर : **मध्यप्रदेश का इतिहास।** काशी, संवत् १९६६।

Hiralal and Russell : **Tribes and Castes in C. P. and Berar.**

Karim Fazal : इतिहास नागौद राज्य (३ भाग), १९४६।

जैन सूरजमल : परमार कुल दिवाकर तथा बरवतगढ़ संस्थान का इतिहास, १९४१।

Macphail J. M. : **Asoka.** Calcutta.

Majumdar A. K. : **Chaulukyas of Gujrat.** Bombay, 1956.

Majumdar R. C. . **Vakataka Gupta Age.**

मेहता जी० पी० : **चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य।** इलाहाबाद, १९३२।

मिराशी वा० वि० : **कलचुरि नरेश और उनका काल।** मध्यप्रदेश साहित्य परिषद, भोपाल सं० २०२२।

कलचुरि नृपति आणि त्यांचा काल। मध्यप्रदेश साहित्य परिषद, भोपाल, १९५६।

वाकाटक राजवंश का इतिहास तथा अभिलेख। नागपुर।

Mirashi V. V. : **Studies in Indology.** 4 Vols, Nagpur.

मिश्र केशवचन्द्र : **चन्देल और उनका राजत्व-काल।** काशी, संवत् २०११।

Mishra V. D. : **History of the Gurjaras and Pratiharas.**

Mitra S. K. : **Early Rulers of Khajuraho. Calcutta,** 1958.

Mookerji R. K. : **Chandragupta Maurya and His Times.** Madras, 1943.

Asoka. London, 1928.

The Gupta Empire. Bombay, 1948.

Harsha. Oxford, 1926.

Vikram Volume. Ujjain, 1948.

Mukherjee B. N. : **The Kushanas and the Deccan.**

Munshi K. M. : **The Glory that was Gurjara Desa.** Bombay, 1944.

Narain A. K. : **Indo Greeks.**

Nema S. R. : **The Political History of the Somavamsi Kings of South Kosala and Orissa.** (A Thesis for Ph. D. Nagpur University, 1970, Unpublished).

पाण्डेय चन्द्रभान : आन्ध्र सातवाहन साम्राज्य का इतिहास । दिल्ली, १९६३ ।

Pandeya L. P. : **'Topographical position of Mahakoshal and Trikalinga from inscriptions'.** OHRS, Vol. 6, pp. 103-05.

Pandey Sudhakar : **Kalachuris of Ratanpur.** (A thesis for Ph. D. in the University of Saugor—1962).

Panikkar K. M. : **Sri Harsa of Kanauj.** Bombay, 1922.

Patil D. R. : **The Cultural Heritage of Madhya Bharat.** Gwalior, 1952.

Pires E. : **The Maukharis.**

Puri Baijnath : **The History of the Gurjara Pratiharas.** Bombay, 1957.

रघुवीर प्रसाद : झारखण्ड झंकार, १९३० ।

Sahu N. K. : **'History of Kosala and the Somavamsis of Utkala'.** OHRS. Vol. 3 pp. 127-36.
'Nalas'. Ibid. Vol. 11, pp, 95-02.

सम्पूर्णानन्द : सम्राट हर्षवर्धन । बम्बई, वि० सं० १९७७ ।

Sankalia, H. D. : **'In search of the three cities.'** JMPIP, No. 5, pp. 55-60.

Sastri Nilkantha K. A. : **Age of Nandas and Mauryas.**

Selatore R. N. : **Life in the Gupta Age.** Bombay, 1948.

Seth K. N. : **Growth of the Paramara Power in Malwa.** (Thesis for Ph. D. degree in the University of Saugor—1962).

Sharma Dasaratha : **The Early Chauhana Dyanasties.**

Sharma R. K. : **A Cultural Study of the Kalachuri Inscriptions.** (Ph. D. Thesis in the University of Jabalpur—1964).

Sharpe A. : **Topographia Indica-II**, E. J. Brill, Leiden 1966.

शास्त्री रघुनन्दन : **गुप्तवंश का इतिहास** । लाहौर, १९३२ ।

Shembavnekar K. M. : **The Glamour about the Guptas.** Bombay, 1953.

Shukla Rajmani : **Saka Kshatraps of Western India.** (A thesis for Ph. D. in the University of Saugor–1966).

समर बहादुर सिंह : **सरगुजा का ऐतिहासिक पृष्ठ**, १९५६ ।

श्री विष्णु महायज्ञ : **रत्नपुर स्मारक ग्रन्थ**, वि० सं० २००० ।

शुक्ल प्रयागदत्त : **मध्यप्रान्त मरीचिका** ।

Singh Mahesh : **Bhoja Paramara and his times.** (A thesis for Ph. D. in the University of Saugor—1963).

Sircar D. C. : **Successors of the Satavahanas in the Lower Deccan.** Calcutta, 1939.

Smith V. A. : **Asoka, the Buddhist Emperor of India.** 3rd Ed. Oxford, 1920.

Tiwari B. P. : **Vindhya Pradesh at a glance,** 1955.

Tiwari S. P. : **इन्दौर राज्य का इतिहास** ।

Thakur Upendra : **The Hunas in India.**

ठाकुर केदार नाथ : **बस्तरभूषण अर्थात बस्तर राज्य का वर्णन**, १९०८ ।

Thapar R. : **Asoka and the Decline of the Mauryas.** Oxford, 1953.

तिवारी गोरेलाल : **बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास** । काशी, १९३३ ।

Tripathi R. S. : **History of Kanauj,** Varanasi, 1937.

त्रिपाठी भगवती प्रसाद : **बुन्देलखण्ड की प्राचीनता** । वाराणसी, संवत् २०२१ ।

Trivedi H. V. : **'The Yajvapalas af Narwar'.** Journal of the Madhya Pradesh, Itihasa Parishad, No. 2, 1960, pp. 322-32.

उपाध्याय बी० एस० : **गुप्त साम्राज्य का इतिहास।** दो खण्ड, इलाहाबाद, १९३९।

Verma S. P. : **Development of the Naga cult in Madhya Pradesh upto 12th Century A. D.** (A Thesis for Ph. D. in the University of Saugor-1963).

Vora G. K. : **पंचेड़ ठिकाने का इतिहास।** १९३५।

विद्यालंकार सत्यदेव : **मध्यभारत जनपदीय अभिनन्दन ग्रन्थ।** १९५९, पृ० १-९७५।

व्यौहार राजेन्द्र सिंह : **त्रिपुरी का इतिहास।** जबलपुर, १९३९।

Govt. of India : **Imperial Gazetteer of India.** (New Edition), Oxford, 1908.

Gazetteer of India and Pakistan, 2 Vols. Delhi, 1951-53.

Central India State Gazetteer Series, Vol. I-VI, as under :—

Vol. I, **Gwaliar State Gazetteer,** in 4 parts, 1908-9.

Vol. II, **Indore State Gazetteer,** in 2 parts, Indore, 1931.

Vol. III, **Bhopal Gazetteer,** Calcutta, 1908.

Vol. IV, **Rewah State Gazetteer,** Lucknow, 1927.

Vol. V, **Western State (Malwa) Gazetteer,** Bombay, 1908.

Vol. VI, **Eastern States (Bundelkhand) Gazetteer,** Lucknow, 1907.

Govt. of C. P. & Berar : **Balaghat District Gazetteer,** Allahabad, 1907.

Betul District Gazetteer, Allahabad, 1907.

Bilaspur District Gazetteer, Allahabad, 1907.

Chhindwara District Gazetteer, Bombay, 1907.

Damoh District Gazetteer, Allahabad, 1906.

Durg District Gazetteer, Calcutta, 1910.

Gazetteer of the Feudatory States of Chhattisgarh, Bombay, 1909.

Hoshangabad District Gazetteer, Calcutta, 1908.

Jubbulpore District Gazetteer, Bombay, 1909.

Mandla District Gazetteer, Bombay, 1912.

Narsinghpur District Gazetteer, Bombay, 1906.

Nimar District Gazetteer, Allahabad, 1908.

Raipur District Gazetteer, Bombay, 1909.

Saugar District Gazetteer, Allahabad, 1907.

Seoni District Gazetteer, Allahabad, 1907.

Govt. of Madhya Pradesh : **Revised District Gazetteers of M. P. as under :—**

Gwalior District Gazetteer, Bhopal, 1965.

Jabalpur District Gazetteer, Bhopal, 1968.

East Nimar District Gazetteer, Bhopal, 1969.

West Nimar District Gazetteer, Bhopal, 1967.

Sagar District Gazetteer, Bhopal, 1967.

Betul District Gazetteer, Bhopal, 1971.

Narsinghpur District Gazetteer, Bopal, 1971.
Indore District Gazetter, Bhopal, 1972.
Durg District Gazetteer, Bhopal, 1972.
Raipur District Gazetteer, Bhopal, 1973.

गोकुल प्रसाद : रायपुर रश्मि ।
दुर्ग दर्पण ।
सिवनी सरोजिनी ।
गुप्त प्यारेलाल : बिलासपुर वैभव ।
राय कीर्तिभानु : निमाड़ निशाकर ।
राय चन्द्रभानु : नरसिंह नयन ।
हीरालाल : सागर सरोज (१९२२) ।
मंडला मयूख ।
जबलपुर ज्योति ।
दमोह दीपक ।

●●

द्वितीय अध्याय

प्रागैतिहासिक तथा आद्य-ऐतिहासिक पुरातत्त्व

Abbyu	: **'Rock-paintings of Hoshangabad'.** NMB, No. 2.
Ahmed Nisar	: **'The Stone Age Cultures of Upper Sone Valley'** (Ph. D. Thesis-Poona-1967).
Allchin Bridget	: **'The Indian Middle Stone Age etc.'** Institute of Archaeology, University of London, Bulletin No 1—1959, pp. 1-36.
Allchin Bridget and Raymond	: **The Birth of Indian Civilization.** 1968.
Anderson	: **'Rock-paintings of Singhanpur'.** JBORS, 1918, pp. 298-306.
	मध्यप्रदेश का पुरातत्त्व । भोपाल, १९७० ।
Bajpai K. D.	: **Sagar Through the Ages.** Sagar, 1964.
Ball V.	: **'An ancient stone implement made of magnetic iron ore (from Nurbudda valley).'** PASB, 1881, pp. 120-121,
Banerji N. R.	: **Iron Age in India.** Delhi, 1965.
Blandford W. T.	: **'Notes on Jabalpur Neoliths'.** PASB, 1866, pp. 230-34.
	'The worked agates of the early stone period from Central India'. PASB, 1886, pp. 230-34.
Boule M.	: **'Peintures pre-historique dans une caverne de 1' Inde L'.'** Anthropologie, XXVI, 1915, p. 304.

Brown C. : **Catalogue of the Pre-historic Antiquities in the Indian Museum**. 1917.

Bruce Foote : **Catalogue of Pre historic Antiquities. Notes on their Age and distribution.** Madras, 1921.

Carey V. J. : **'A perforated stone found on a 'Chabo-utra' at Jabalpur'**. PASB, 1886, pp. 135-36.

Das Gupta N. C. : **'Bibliography of Pre-historic Antiquities'**. JASB (NS) XXVII, 1931 pp. 1-96.

De Terra and Paterson : **Studies on the Ice Age etc. in India and Associated Human Cultures.** Washington, 1939.

Dixit M. G. : **Tripuri—1952.**
मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व की रूपरेखा। १९५४।

Evans J. : **'Some discoveries of worked flints.** PSA II, sq. vol. III, 1853.

Ghosh A. : **'Pre-historic exploration in India'**. IHQ, XXIV, (1948), pp. 1-18.

Ghosh Manoranjan : **'Rock-paintings and other antiquities of pre-historic and later times'**. MASI, No 2, 1932.

गुप्त जगदीश : प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, १९६३।

Gordon D. H. : **'Hoshangabad Paintings'**. ILN, Sept. 21, 1935.

'Date of Singhanpur Paintings'. SC, V, No. 3, pp. 142-47.

: **'Rock-paintings of Kabra Pahad'**. SC, V. No. 5 pp. 269-70.

'Rock-Paintings of Mahadeo Hills'. IAL, X (1935), pp. 35-41.

'Animals and Demons in Indian Cave Art'. SC.

'The Mesolithic Industries of India'. Man, XXXVIII, (Feb. 1938) No. 19, p. 23.

'Warfare in Indian Cave Art'. SC. V. No. 10, pp. 578-84.

'Artistic Sequence of the Rock-paintings in Mahadev Hills'. SC. V. No. 6, pp. 322-27; No. 7 pp. 387-92.

'Holocene in India'. AI No. 6, p. 71.

'Rock-paintings of Kabra Pahar'. SC, V. No. 5, p. 1-5.

'The Stone Industries of Holocene in India and Pakistan'. AI, No. 6.

Haswell J. : **'Remarks on two flints at Jabalpur' etc.** TEGS, I, 1870, pp. 198-200.

Hunter G. R. : **'Interim Report on the Excavations in the Mahadeo Hills'.** NUJ, No. 1.

'Final Report on the Excavations in the Mahadev Hills'. NUJ, No. 2.

Joshi R. V. : **'Acheulian Succession in Central India'.** Asian Perspective Vol. 8, 1, 1964.

'Stone Age Industries in Damoh area'. AI, No. 17 (1961) pp. 5-36.

Khatri A. P. : **Stone Age Cultures of Malwa.** Ph. D. Thesis, Deccan College Post-Graduate and Research Institute Libraries, Poona (1958).

'Stone Age and Pleistocene Chronology of the Narmada Valley'. Anthropos, Vol. 56, pp. 519-30.

'Palaeolithic Industry of River Shivna'. BDCRI, Taraporewala Volume, No. 18, pp. 159-72.

Krishnawami V. D. : **'Pre-historic Bastar'.** PISC, (40th session) Lucknow (1953).

'Stone Age in India'. AI, No. 3, pp. 11-57.

'Progress in Pre-history'. AI, No. 9, Silver Jubilee Number, pp. 53-79.

Lal B. B. : **Indian Archaeology Since Independence**, Delhi, 1964.

'Exploration and Excavation : The Pre-historic period and Proto-historic period'. Archaeology in India pp. 17-50.

Le mesuriar H. P. : **'Note on the twelve stone hatchets from the neighbourhood of Jabalpur'**. (Contains a short account of a large number of celts near the Cha-chye falls on the river Tonse). PASB, XXX, 1861, pp. 81-85.

Lydekker R. : **'Siwalik and Narbada Equide'**. PI, Ser X, II, pt. 3 pp. 67-98, 1882.

'Note on some Siwalik and Narmada fossils'. RGSI, XV, pp. 102-107, 1882.

'Siwalik and Narmada Proboscidea'. PI, Ser, X, I, pp. 182-300, Suppl. Ibid. II, pt. 2, pp. 63-66, 1880.

'Siwalik and Narbada Bunodont Suina'. PI, Ser. X, III, pt. 2 pp. 35-104, 1884.

'Siwalik and Narbada Carnivora'. PI, Ser. X, pt. 6 pp. 178-363, 1884.

'Synopsis of Niwalik and Narbada Mammalia'. PI, Ser. X, III, pt. 2, pp. 122 et. seq. 1884.

'Siwalik and Narbada Chelonia'. PI, Ser. X, pt. 6, pp. X, 155-208, 1884.

'Notes on Siwalik and Narbada Chelonia'. RGSI, XXII, pp. 56-58, 1889.

Medlicott H. B. : **'Stone implements from the Ossiferous Pliocene Deposits of the Narbada Valley'.** PASB, p. 138.

Mishra D. P. : **Studies in the Proto-History of India.** New Delhi, 1971.

Mishra M. L. : **'On the figure of Giraffae......of Hoshangabad'.** JBHU, 9, pp. 25-32.

'On some stone implements from Hoshangabad'. PIAS, Vol. X, No. 4 (1939) pp. 275-85.

Mishra V. N. and Mate M. S. : **Indian Pre-history : 1964.** Deccan College Series No. 32 (1965).

Mitra P. : **Pre-historic India.** Calcutta.

Mulheran J. : **'Cromlechs of Central India'.** PASB, 1868, pp. 116-18.

'Notes on the crosses and cromlechs of Chhindwara District'. PASB, 1869, pp. 147-51.

Oakes R. E. : **'Flint implements collected in the neighbourhood of Jabbulpore'.** PASB, 1869, pp. 51-53.

Oldham R. D. : **'Collection of stone implements from Central India exhibited and described at the monthly meeting of the Asiatic Society of Bengal for 1897'.** PASB, 1897, p. 123.

'Bronze imlements found near Jabbulpore'. PASB, 1869, p. 60; IA, 1905 p. 240.

'Sketch of the geology of Central Provinces'. RGSI, IV. pp. 69-81, 1871.

Pandey S. K. : **Rock-Paintings and Engravings in Madhya Pradesh** (A thesis for Ph. D. in the University of Saugor—1970).

Piddington H. : **'Note on the fossil jaw sent from Jabalpur by Spilbury'**. JASB X, pp. 620-625, 1841.

Princep J. : **'Note on the fossil bones discovered near Jabbulpore'**. JASB, II, pp. 583-588; 1883.
'Note on the fossil bones on the Nerbuda valley discovered by Spilbury near Narsinghpur etc.' JASB, III 1834 pp. 396-403.

Rao V. V. : **"Animal remains in pleistocene deposits of Narmada Valley and their Association with Stone Age tools in India"**. JMPIP, Vol. 5, pp. 28-30.

Rivett Carnac H. : **'Pre-historic remains in Central India'**. JASB, XLVIII pt. I pp. 1-16, 1879.
'Pre-historic remains in Central India.' JASB, XLVIII pt. I, 1-16, 1879.
'On flint implements from Central India'. Journal of antiquity and Scientific Society of the Provinces of India, 1886.

Roth T. R. : **'Remarks on fossils discovered in the valley of Narbuda'**. JASB, X, 1841, pp. 627-28.

Sankalia. H. D. Subbarao B. and Deo S. B. : **Excavations at Maheswar and Navadatoli**. Poona and Baroda, 1958.
'Excavations in Narmada Valley'. JMSUB, II, No. 2 (1953), pp. 99-106.
'The Archaeological sequence of Central India'. S. W. Journal of Anthropology, University of Mexico, IX, No. 4 (1953), pp. 343-56.

Sankalia H. D. and Khatri H. D. : **'Stone Age Cultures of Malwa'**. JPSI. D. N. Wadia Jublee Number, ol. 2 pp. 183-89.

Sankalia H. D. : **Tripuri Excavations—1966** (Short report). **Indian Archaelogy To-day**. Bombay, 1962.

'Pre and proto-history of Malwa'. JMPIP No. I pp. 25-36.

'Spouted Vessels from Navdatoli (Madhya Bharat) and Iran'. Antiquity Vol. XXIX, No. 114, pp. 112-14.

'Navdatoli Dancers'. Antiquity Vol. XXIX. pp. 28-31.

'Kavi Kalidasa Aur Maheshwar Ki Prachinata' (in Hindi). JMPIP, No. 4, pp. 107-109.

'Excavations at Maheshwar and Nevasa and their possible bearing on Puranic History'. JAS, Bombay, Sardha Satabdi Commemoration Vol. pp. 229-39.

'New light on the Aryan Invasion of India : links with the Iran of 1000 B. C. discovered in Central India'. ILN. pp. 478-79.

'The four phases of ancient Navdatoli revealed in curious and beautiful pots'. ILN. pp. 182-83.

'The Copper and Stone Age Pottery of Maheshwar-Navdatoli'. Marg, Vol. XIV, No. 3, pp. 28-36.

'Earliest Farmers in the Narmada Valley'. The Indo Asian Culture, New Delhi, July 1962,

Pre and Proto-history in India and Pakistan. Bombay, 1962.

Sharma Y. D. : **'Proto-historic remains'—Archaeological Remains Monuments and Museums.** (1964)' pt. I pp. 1-42.

Singh Udai Vir : **Proto-historic pottery of Eastern Malwa.** Ph. D. Thesis-University of Saugor, Sagar, (1965).

'Excavation at Eran'. JMPIP, No. 4, pp. 41-44.

Sen D. and Ghosh A. K. : **'Lithic Culture complex in the Pleistocene sequence of the Narmada Valley, Central India'.** Rivista di Scienze Preistoriche, 18. fasc. 1-4, 196.

Smith : **'The Copper Age and pre-historic bronze implements of India'.** IA, XXXIV (1905), pp. 229-44.

Spilbury G. G. : **'Presentation of a fragment of a large fossil bone from Jabalpur'.** JASB, II, p. 263, 1883.

'Geological section across the valley from Tendukheri to Bittoul'. JASB, III, pp. 388-95, 1834.

'Note of new sites of fossil deposits in the Nerbudda valley'. JASB, VI, 1837, pp. 487-89.

'A letter from the Nerbudda fossil field'. JASB, VII, 1838, p. 91.

'Notes on various fossil sites on the Nerbudda' (Illustrated by specimen and drawings). JASB, 1839, pp. 950-52.

'Notes on the fossil discoveries in the valley of Nerbudda'. JASB, X, 1841, pp. 626-27.

'Notes on the Narbudda fossils'. JASB, XIII, 1884, pp. 765-66.

Stoliczka F. : **'Notes on Pangshura tecta and two other species of chelonia from the Newar Ter-**

tiary deposits of the Nerbudda valley'. RGSI, II, 1869, pp. 36-39.

Subbarao B. : **'The personality of India'**. Baroda, 1958.

Supekar S. G. : **'The Chalcolithic Blade Industry of Maheshwar and a Note on the History of the Technique'.** BDCRI, Vol. XVII, No. 2, pp. 126-49.

Swiny J. D. : **'Notes on Jabalpur Neoliths'.** PASB, 1865, pp. 77-80.

'Notes on flint and stone implements from Jubbulpore'. JASB, VIII, 1864, pp. xvii-xviii.

'Notes on flint arrow-heads discovered in the Jubbulpore district'. PASB, 1865, pp. 77-79.

Theobald W. : **'On the Tertiary and alluvial deposits of the central portion of the Nerbudda valley'.** Memoir of the Geological Survey of India, II, 1860, pp. 279-98.

'Celts found in Bundelkhand etc.' PASB, XXXI, 1862, pp. 323-27.

Trivedi C. B. : **Store Age Industries of Bhopal.** JMPIP vol. 7 (1969) pp. 27-38.

Trivedi H. V. : **'Excavation at Avra'.** JMPIP, No. 4, pp. 13-40.

Report of the Excavation conducted on the ancint site of Avra. Bhopal.

Verdenburg E. : **'Pleistocene movements as indicated by the irregularities of the gradient of the Nerbudda and other rivers in the Indian Peninsula'.** RGSI, XXXIII, 1906, pp. 33-45.

Wainwright G. J. : **Pleistocene Deposit of the Lower Narmada River and an Early Stone Age Industry from the River Chambal.** 1964.

Wakankar V. S. : **'Painted Rock-shelters in India".** Revista De Science Pre-historiche Vol. XVII, FASc. 1/4/1962.

'Paintures Rupestrees Indiennes.' Object et Mondes, Tom III, Fasc. 2, ETE, 1963.

●●

तृतीय अध्याय

अभिलेख

Bajpai K. D. : **'Interpretations of some Bharhut Inscriptions'**. JUPHS, 1963.

'Interpretation of Svabhoganagara in the Eran inscription of Samudragupta'. EI, 1965.

Barua B. M. : **Asoka and his Inscriptions.** Calcutta, 1946.

Barua B. M. and Sinha G. : **Bharhut Inscriptions.** Calcutta, 1926.

Bhandarkar D. R. : **List of Inscriptions of Northern India.** Appendix to Epigraphia Indica, Vol. XIX-XXIII.

Bhandarkar D. R. and Majumdar S. : **Inscriptions of Asoka**. Calcutta, 1920.

Chaudhary S. : **Bibliography of Studies in Indian Epigraphy** (1926-50). Baroda, 1966.

द्विवेदी हरिहर निवास : ग्वालियर राज्य के अभिलेख । ग्वालियर, १९४७ ।

Fleet J. F. : **Inscriptions of the Early Gupta Kings and their Successors. Corpus Inscriptionum Indicarum Vol. III.** Calcutta, 1888 (Reprinted, 1963).

Hiralal R. B. : **Inscriptions in the Central Provinces and Berar**. 2nd Edition, Nagpur, 1932.

Hultzsch E. : **Inscriptions of Asoka Corpus Inscrip-**

tionum Ind carum, Vol. I, London, 1925 (Reprinted, 1969).

Lele C. B. : **Paramara Inscriptions in the Dhar State 875-1310 A. D.** Dhar State Historical Series, pp. xvii-100.

Luders : **List of Brahmi Inscriptions upto 400 A. D.** Epigraphia Indica, Vol. X.

Mirashi V. V. : **Inscriptions of the Kalachuri Chedi Era. Corpus Inscriptionum Indicarum, Vol. IV, pt. I and II.** Ootacumund, 1955.

Inscriptions of the Vakatakas. Corpus Inscriptionum Indicarum, Vol. V. 1963.

: वाकाटक राजवंश का इतिहास तथा अभिलेख । नागपुर ।

For a complete list of his papers on Inscriptions see 'Studies in Indology', Vols. 1-4, Nagpur.

Pandeya L. P. : **'Mahakoshal in Inscriptions'**. MHSP, 19 : 1 : pp. 25-33.

Sarma R. : **Piyadasi Inscriptions.** Muradpur, 1915.

Senart E. **Les Inscriptions de Piyadasi.** Paris, 1881, 86.

'Satavahana Inscriptions'. Epigraphia Indica, Vol. VII, VIII.

Sircar D. C. : **Select Inscriptions bearing on Indian History and Civilization Vol. I.** (From the sixth century B. C. to the Sixth century A. D.) Calcutta, 1942.

●●

चतुर्थ अध्याय

स्मारक तथा प्रतिमाएँ

Agrawal Urmila : **Khajuraho Sculptures and their Significance.** New Delhi.

Agarwal V. S. : **Gupta Art.** Locknow, 1948.
Indian Art, Varanasi, 1965.
Studies in Indian Art, Varanasi, 1965.

Anand Mulk Raj and Kramrisch St. : **Homage to Khajuraho.** Marg Publication, Bombay (Marg X, No. 3, 1957).

Anant R. S. : **Art and Architecture of the Kalachuris and Tripuri.** (Thesis for Ph. D degree in the University of Jabalpur-unpublished).

अवस्थी रामाश्रय : खजुराहो की देव-प्रतिमाएँ । आगरा, १९६७ ।

Bajpai K. D. . **'Some interesting Ganga figures from Panna'.** Lalit Kala, No. 10, Oct. 1961.
'New interesting sculptures from Bharhut'. Vogel Commemoration Volume, Leiden.
'New Bharhut sculptures and interpretations of some inscriptions, JMPIP, Vol. V (1967), pp. 1-7.
'New Bharhut sculptures'. Journal of Indian Museum, Vol. XVII-XX, 1961-64, pp. 34-37.

'भरहुत का कला-वैभव तथा नई उपलब्धियाँ।' शारदा प्रसाद अभिनन्दन ग्रन्थ, १९६५।

भारतीय वास्तुकला का इतिहास (हिन्दी समिति : उत्तर-प्रदेश सरकार-१९७३)

Banerjea J. N. : **The Development of Hindu Iconography**, 2nd Ed. Calcutta, 1956.

Banerji R. D. : **The Haihayas of Tripuri and Their Monuments**, Calcutta, 1931.

Bhattacharya B. C. : **Indian Images**, pt. I. Calcutta, Simla, 1921.
The Jaina Iconography, Lahore, 1939.

Bhattacharya P. : **The Canon of Indian Art or a Study of Vastuvidya.** 1963.

Brown P. : **Indian Architecture** (Buddhist and Hindu periods). 3rd Ed. Bombay, 1956.

Burgess James : **Buddhist Cave Temples and Their Inscriptions**, 2nd Ed. 1964.

Chakravarti S. N. : **'Recently acquired Sunga sculptures from Bharhut'.** BPWM, No. 6, pp. 71-73, plate 1.

Coomaraswamy A. K. : **History of Indian and Indonesian Art.** London, 1927, Dover Edition, New York, 1965.

Cousens H. : **List of Antiquarian Remains in C. P. and Berar.**

Cunningham A. : **Bhilsa Topes.** London, 1854, (Re-printed).

Day M. C. : **My Pilgrimage to Ajanta and Bagh.** London, 1925.

Dhama B. L. : **A Guide to Khajuraho**, Bombay, 1927.

Dhama B. L. and Chandra S. C. : **Khajuraho** (Guide Book). Delhi, 1953. (Also Hindi Tr. 1962.)

Dhavalikar M. K. : **Sanchi-A Cultural Study.**

द्विवेदी हरिहर निवास : त्रिपुरी (बिदिशा, पद्मावती और बाघ)। ग्वालियर, १९५४।

Dikshit M. G. : **Some Buddhist Bronzes from Sirpur.** BPWM, No. 5, pp. 1-11.

दीक्षित मो० ग० : मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व की रूपरेखा। सागर, १९५४।

दीक्षित स० का० : उज्जयिनी इतिहास तथा पुरातत्त्व। इन्दौर, १९६८।

Directorate of Information, Madhya Pradesh. : **Khajuraho** (Album). Bhopal, 1958.

Fergusson J. : **History of Indian and Eastern Architecture.** 2nd Ed. Revised and Edited by J. Burgess and R. P. Spiers. London, 1910.

Fergusson J. and Burgess. : **Cave Temples of India**, 2nd Ed. 1969.

Foucher A. : **The Beginnings of Buddist Art**, London, 1918.

Ganguli O. C, Goswami A. and Tarafdar A. : **The Art of the Chandellas**, Calcutta, 1957.

Garde M. B. : **Archaeology in Gwalior.** 1934.

A Hand Book of Gwalior. 1936.

Directory of Forts in Gwalior State.

Padmavati. Gwalior, 1952.

Guide to Surwaya.

Guide to Chanderi.

Government of Madhya Bharat : **Descriptive and Classified list of Archaeological Monuments in Madhya Bharat.** Gwalior, 1952.

Haldar A. K. : **Buddhist Caves of Bagh.** Burlington Magazine 1910-11.

The paintings of the Bagh Caves. Rupam, No. 8, 1921.

Havell E. B. : **Indian Sculpture and Painting**. London, 1908.

Hiralal R. B. : **'The Golaki Matha'**. JBORS, XIII, 1927, pp. 137-44.

India Society : **The Bagh Caves**. London, 1927.

Jain B. C. : **'Jain Bronzes from Rajnapur-Khinkhini**. JIM, Vol. 11, pp. 15-20.

'Sculptures from Karitalai and Ratanpur'. Ibid. Vol. 14-16, pp. 19-24.

'Two Gauri images in the Raipur Museum'. Ibid. Vol. 12. pp. 35-36.

खरे महेश्वरी दयाल : बाघ की गुफायें । भोपाल १९७१ ।

Kramrisch St. : **Indian Sculpture.** Calcutta, 1933.

The Hindu Temple, 2 Vols. Calcutta, 1946.

Krishna Deva : **Khajuraho** (Guide book). New Delhi, 1965.

'The Temples of Khajuraho in Central India'. AI, No. 15. pp. 43-65.

Kunwarlal : **Immortal Khajuraho**. Delhi, 1965.

Luard C. E. : **'Buddhist Caves of Central India : Bagh'.** Indian Antiquary, 1910.

Dhar and Mandu.

Maisey F. C. : **Sanchi and its Remains.** London, 1892.

Marg Publication (Bombay) : **Madhya Pradesh Sculptare Numbers** —1973

Marshall Sir John : **Guide to Sanchi**. 2nd Ed. Delhi, 1936.

Marshall and Foucher : **Monuments of Sanchi**, 3 Vols. Delhi, 1940.

Mishra R. N. : **Development of Yaksa cult with special reference to the Yaksa iconography of M. P.** (A Thesis for Ph. D in the University of Saugor–1968).

भरहुत : मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, १९७१ ।

Mitra D. : **Sanchi**, 2nd Ed. New Delhi, 1965.

मुनि कान्तिसागर : **खण्डहरों का वैभव**। काशी, १९५६।
खोज की पगडण्डियाँ। काशी, १९५३।

Pathak V. S. : **'Vaikuntha at Khajuraho and Kasmiragama school'.** JMPIP, No. 2, pp. 9-18.

Patil D. R. : **Monuments of Udayagiri Hills. The Cultural Heritage of Madhya Bharat,** 1952.
Mansingh's Palace in Gwalior Fort. Gwalior, 1945.

Radhey Sharan : **The Geographical background of the Kalachuri Art.** JMPIP, No. 5, pp. 47-54.

Rao T. A. G. : **Elements of Hindu Iconography.** 2 Vols. Madras, 1914, 1916. (Re-printed, 1968).

Ray Nihar Ranjan : **Maurya and Sunga Art.** Calcutta, 1945.

Rowland Benjamin : **The Art and Architecture of India.** London, 1953.

Saraswati S. K. : **A Survey of India Sculpture.** Calcutta, 1957.

शर्मा मोहनलाल : **पद्मावती**, म० प्र० हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, १९७१।

शास्त्री अजयमित्र : **त्रिपुरी**। म० प्र० हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, १९७१।

Shukla D. N. : **Hindu Canons of Iconography.** Lucknow, 1958.

Smith V. A. : **History of Fine Art in India and Ceylon.** 3rd Ed. Bombay.

Sukh Nandan : **Study of Temple Architecture in Vindhya Pradesh region (from the earliest times to 13th cent. A. D.)** (A Thesis for Ph. D in the University of Saugar–1965).

सूचना तथा प्रकाशन विभाग मध्यप्रदेश शासन : **सतपुड़ा की रानी पंचमढ़ी**, १९६५।

ठाकुर विष्णुसिंह : **राजिम।** म० प्र० हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, १९७२।

Trivedi H. V. : **The Bibliography of Madhya Bharat Archaeology.** Gwalior, 1953.
'Some interesting Indore museum sculptures'. JIM, Vol. 11, pp. 42-46.

Vidya Prakash : **Khajuraho.** Bombay, 1967.

Vijayatunga J. : **Khajuraho** (Guide book). Delhi, 1960.

Wauchope R. S. : **Buddhist cave temples of India.** Calcutta, 1933.

Yazdani : **Mandu–the city of joy.**

Zennas E. and Auboyer J. : **Khajuraho.** The Hague, 1960.

●●

पंचम अध्याय

सिक्के

Ahmad N. : **'The bearing of archaeological evidence from Maheshwar on the chronology of Madhya Pradesh coins'**. SPC PC, pp. 48-50

'On the local coins of Maheshwar and Navdatoli Excavation'. SPLC, pp. 89-94.

Allan J. : **Catalogue of coins of Ancient India in the British Museum**. London, 1936.

Altekar A. S. : **Coinage of Gupta Empire**. (Hindi Translation also).

Catalogue of the Gupta Gold Coins in the Bayana Hoard.

Bajpai K. D. : **'Chronological sequence of punch-marked coins at Eran'**. SPCPC, pp. 46-48.

'A new Kosala hoard of punch-marked coins'. JNSI, VIII (i), 1946.

'A new copper coin of Ramagupta'. JNSI, XVIII (i) 1956.

'A New copper coins from Kausambi and Vidisha'. JNSI, XXII, 1960.

'Three interesting copper coins from Vidisha,. PAIOC, 1959.

'A new coin of King Sivagupta of East Malwa'. JNSI, XXV (i), 1963.

'Fresh light on the problem of Ramagupta'. IHQ, Calcutta, 1963.

'Identification of Ramagupta'. JIH, Augt, 1964.

'The Ramagupta problem-re-discussed. JNSI, XXVII, 1965.

बैनर्जी राखाल दास : प्राचीन मुद्रा । बनारस, १६२५ ।

Bhandarkar D. R. : **Carmichael Lectures on Ancient Indian Numismatics.** Calcutta, 1921.

Bidyabinod B. B. : **Supplementary Catalogue of the coins in the Indian Museum, Non-Muhammadan Series.** Calcutta, 1923.

Brown C. J. : **Catalogue of the coins of the Guptas, the Maukharis etc. in the Provincial Musuem, Lucknow.** Allahabad, 1920.

Coins of India. Calcutta, 1922.

Chakraborty S. K. : **A study of Ancient Indian Numismatics.** Calcutta, 1931.

Chhattopadhyaya B. : **The Age of the Kushanas—A Numismatic Study.**

Cunningham A. : **Coins of Ancient India from the earliest times down to the seventh century A. D.** London, 1891. (Re-printed, 1963).

Coins of Mediaeval India from the seventh century down to the Muhammadan conquest. London, 1894. (Re-printed, 1967).

Coins of Alexandar's Successors in the East, the Greeks and Indo-Schythians. Part I, London, 1869. (Re-printed, 1969).

Coins of the Indo-Scythians. Rep. Num. Chron. London, 1888-92. (Re-printed, 1962).

Later Indo-Scythians. Rep. Num. Chron. London, 1893-95.

Gairola T. R. : 'Weights of Punch-Marked Coins from Barwani (M. B.)'. AI. No. 7, pp. 79-85.

Gardner, Percy : 'The coins of the Greek and Scythian Kings of Bactria and India'. London, 1886.

Gupta P. L. : Coins. New Delhi, 1969.

Herzfeld E. : Kushano-Sassanian coins. MASI, Calcutta 1930. Also MASI, Nos. 59, 62.

Jain B. C. : Inventory of the hoards and finds of coins and seals from Madhya Pradesh Numismatic Notes and Monographs, No. 5, Varanasi, 1957.

Kahre M. D. : 'A Note on the Punch-Marked Coins from the recent excavations at Eran'. SPCPC.

Mahalingam T. V. : 'The bearing of local coins on the religious condition of Central India'. SPLC, pp. 54-58.

Maity S. K. : Early Indian coins and currency system. New Delhi, 1971.

Mirashi V. V. : For a complete list of his papers on numismatics, see Studies in Indology Vols. 1-4 Nagpur.

Narain A. K. : Coin Types of Indo-Greek Kings.

Narain A. K. and Jenkins G. K. : Coin Types of the Saka Pahlava Kings of India.

Nath B. B. : 'Kalachuri coins from Sonpur'. OHRS, Vol. I., pp. 36-40.

Pandey D. B. : 'Minting technique of Central Indian local coins'. SPLC, pp. 87-88.

Paruck F. D. J. : Sassanian Coins. Bombay, 1924.

Rajguru S. N. : 'New hoard of gold coins of the Nagavamsi kings of Chakrakotya'. OHRS, Vol. 8, pp. 75-82.

Rapson E. J. : Indian coins. Strassburg, 1897, (Re-printed, 1969).

Catalogue of coins of the Andhra Dynasty, the Western Kshatrapas, the Traikutaka dynasty and the Bodhi dynasty (Catalogue of India Coins in the British Museum, Vol. IV) London, 1908.

Roy T. N. : 'The bearing on Maheshwar Navdatoli excavations on the chronology of local coins.' SPLC.

hastri A. M. : 'Religious study of the symbols on the local coins of Central India'. SPLC, pp. 70-86.

Singhal C. R. : Bibliography of India Coins. Bombay, 1950.

Smith V. A. : Catalogue of coins in the Indian Museum, Calcutta, including the cabinet of the Asiatic Society of Bengal. Vol. I, Oxford, 1906.

Trivedi H. V. : Catalogue of the Coins of the Naga dynasty of Padmavati. Gwalior, 1957.

Trivedi H. V., S. K. Bhatt, V. S. Wakankar (Eds.) : Journal of the Numismatic Society of Madhya Pradesh (Indore).

Whitehead R. B. : Catalogue of Coins in the Punjab Museum, Lahore, Vol. I. Indo-Greek Coins. Oxford, 1914.

Wright H. N. : Catalogue of Coins in the Indian Museum, Calcutta, including the Cabinet of the Asiatic Society of Bengal, Vol. II. Oxford, 1907.

'A study of the Metrology of the local coins of Central India'. SPLC pp. 120-32.

'The religious study of a symbol on an Avanti coins'. SPLC, pp. 133-36.

'The bearing of excavations on the chronology of the local coins of Central India'. SPLC, pp. 157-60.

●●

षष्ट अध्याय

मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व संग्रहालय

Dikshit S. K. : **A Guide to Central Archaeological Musem, Gwalior**. Bhopal, 1962.

A Guide to the State Museum, Dhubela, Nowgong (BKD), Vindhya Pradesh, 1955-57). Nowgong, 1957.

दीक्षित स० का० तथा गर्ग आर० एस० : केन्द्रीय संग्रहालय, इन्दौर में संरक्षित उत्कीर्ण लेख एवं हस्तलिखित ग्रन्थ— विवरणात्मक सूची, भाग १। इन्दौर, १९६२।

जैन बालचन्द्र : महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय—पुरातत्त्व उपविभाग प्रदर्शिका । रायपुर, १९६०।

महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय-प्रकृति इतिहास उप-विभाग प्रदर्शिका। रायपुर, १९६०।

महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय-मानव-शास्त्रीय उप-विभाग प्रदर्शिका। रायपुर, १९६०।

महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय-पुरातत्त्व उप-विभाग में संग्रहीत वस्तुओं का सूचीपत्र, भाग २-पाषाण प्रतिमाएँ। रायपुर, १९६०।

महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय-पुरातत्त्व उप-विभाग सूचीपत्र भाग ३, धातु प्रतिमाएँ। रायपुर, १९६०।

महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय रायपुर में सुरक्षित उत्कीर्ण लेखों की विवरणात्मक सूची। रायपुर, १९५७।

उत्कीर्ण लेख। रायपुर, १९६१।

List of Coin Deposits in the M. G. M. Musem, Raipur.

Sankalia, Subbarao and Deo : **The Excavations at Maheswar and Navdatoli-1952-53**. Poona, 1958, pp. 1-257.

सागर विश्वविद्यालय : मध्य-भारती (शोध पत्रिका)।

त्रिवेदी हरिहर : गांधीसागर का पुरातत्त्व। भोपाल।

Report of the Excavation conducted on the ancient site of Avra. Bhopal.

Tripuri Excavations—1966 : **Short Report.**

University of Saugor : **Bulletin of Ancient Indian History and Archaeology.**

Vikram University : **The Vikram-Kayatha Excavation Number.** Ujjain, 1967.

●●

LIST OF THESES APPROVED IN THE DIFFERENT UNIVERSITIES FOR AWARD OF PH. D. DEGREES ON THE SUBJECTS PERTAINING TO THE HISTORY, CULTURE AND ARCHAEOLOGY OF MADHYA PRADESH

Serial No.	Title of Thesis	Research Scholar	University	Year of Award
1	2	3	4	5
1	Musical Culture in Vindhya Region	S. K Banerjee	Saugar	1966
2	Study of the Kausambi and South Koshal Coinage (upto the Gupta Period)	Usha Jha	Saugar	1968
3	Development of Yaksa Cult with special reference to the Yaksa-iconography of M. P.	R. N. Mishra	Saugar	1968
4	Kalachuris of Ratanpur	Sudhakar Pandey	Saugar	1962
5	Growth of Paramara Power in Malwa	K. N. Seth	Saugar	1962
6	Bhoja Paramara and his times	Mahesh Singh	Saugar	1963
7	Proto-historic potters of Eastern Malwa	Udai Vir Singh	Saugar	1966
8	Study of temple architecture in Vindhya Pradesh region (from the	S. P. Verma	Saugar	1965

earliest time to 13th century AD.)			
9 देवगढ़ की जैनकला का सांस्कृतिक अध्ययन	B. C. Jain	Saugar	1970
10 Rock-paintings and engravings in Madhya pradesh	S. K. Gupta	Saugar	1970
11 Painted Rock-Shelters in Madhya Pradesh	S. K. Pandey	Saugar	1970
12 Development of Naga Cult in Madhya Pradesh upto 12th Century A. D.	S. P. Verma	Saugar	1963
13 Art and Architecture of the Kalachuris of Tripuri	R. S. Anant	Jabalpur	1966
14 Ancient History and Culture of Daksina Kosala	V. S. Thakur	Jabalpur	1965
15 The Kalachuris of Mahismati and Tripuri	R. N. Mishra	Jabalpur	1966
16 A Cultural Study of the Kalachuri Inscriptions	R. K. Sharma	Jabalpur	1966
17 राजस्थान तथा मध्यप्रदेश के प्राचीन गणराज्य	I. K. Dwivedi	Jabalpur	1970
18 Historical and Cultural Ethnography of Madhya Pradesh	Sobhna Gokhle	Poona	1960
19 Stone Age Cultures of Malwa	A. P. Khatri	Poona	1958
20 The Political History of the Somavamsi Kings of South Kosala and Orissa	S. R. Nema	Nagpur	1970

21	Palaeolithic Industries of Northren Bundelkhand	Rameshwar Singh	Poona	1965
22	Pleistocene Geology and Pre-historic Archaelogy of the Central Narmada Basin with special reference to Narsinghpur district	G. G. Supekar	Poona	1968
23	Historical Geography of M. P. from Early Records	P. K. Bhattacharya	Calcutta	1972
24	The Stone Age Cultures of Upper Sone Valley (M. P.)	Nisar Ahmed	Poona	1967
25	India in the age of Yaso Varman	S. M. Mishra	Lucknow	1971
26	Rajasekhara as a poet and critic	Sushma Kumar	Delhi	1971

● ●

LIST OF SUBJECTS PERTAINING TO THE HISTORY, CULTURE AND ARCHAEOLOGY OF MADHYA PRADESH ON WHICH RESEARCH IS BEING CONDUCTED IN THE DIFFERENT UNIVERSITIES

Serial No.	Title of Thesis	Research Scholar	University
1	2	3	4
1	मध्यप्रदेश के गुप्तकालीन वास्तु का अध्ययन	V. K. Deolia	Saugar
2	सतना जिले की प्राचीन मूर्तिकला का अध्ययन	Km. Usha Khare	—do—
3	मध्यप्रदेश की गुप्तकालीन मूर्तिकला का अध्ययन	Smt. Urmila Awasthi	—do—
4	Development of Jainism in Madhya Pradesh from the earliest times to 1200 A. D.	Gopilal Amar	—do—
5	Critical study of sculptures of Ajaigarh and Kalinjar	S. K. Sullere	—do—
6	Political history of Madhya Pradesh during Gupta period	Y. N. Mishra	—do—
7	Pre and proto-history of Raipur district with special reference to Seonath valley.	K. M. Vyas	—do—
8	Archaeology of Bastar region	V. D. Jha	—do—
9	A study of Archaeological remains in Jabalpur district (from the earliest times to 319 A. D.)	Sarabjeet Singh	—do—

10	A study of historical geography of ancient Madhya Pradesh	B. K. Singh	Saugar
11	The study of Gupta remains in Satna, Panna and Jabalpur districts.	Shri Kamalapati	—do—
12	मध्यप्रदेश के प्राचीन जैन अभिलेखों का अध्ययन	K. C. Jain	—do—
13	Costumes and Ornaments as depicted in early sculptures of Gwalior museum, from Sunga to Gupta period.	Smt. S. Ayyar	—do—
14	Early historical geography of Vindhya region.	K. L. Agrawal	—do—
15	Study of janapada coinage of ancient Malwa.	Smt. Kiran Shrivastava	—do—
16	Study of historical archaeology of Eastern Malwa.	R. K. Agrawal	—do—
17	Inter-state relations of M. P. during 1200 A. D.	R. N. Agrawal	—do –
18	Cultural history of Malwa from 600 A. D. to 1300 A. D.	Ku. Shanti Mishra	—do—
19	Development of Shaivism in Madhya Pradesh region from the earliest times to 1200 A. D.	S. D. Tiwari	—do—
20	Political history of Madhya Pradesh from 200 B. C. to 300 A. D.	G. C. Singh	—do—
21	A critical study of Jaina art in Northern Madhya	P. C. Singhai	—do—

	Pradesh (Tikamgarh, Chhatarpur, Panna and Damoh districts)		
22	विदिशा का इतिहास	H. N. Dwivedi	—do—
23	गुप्तकालीन मालवा	M. H. Trivedi	Jabalpur
24	Studies in Jaina antiquities in M. P.	S. C. Jain	—do—
25	चेदी जनपद का प्राचीन इतिहास (प्राचीन काल से कलचुरि आगमन तक)	V. P. Dwivedi	—do—
26	कलचुरि मूर्तिकला का समालोचनात्मक अध्ययन	S. K. Namdeo	—do—
27	प्राचीन भारत के गणराज्यों के सिक्कों तथा मुद्राओं का समालोचनात्मक अध्ययन (पूर्वी पंजाब, राजस्थान और मध्यप्रदेश)	A. K. Chandorkar	—do—
28	Erotic Sculptures of Khajuraho	L. N. Chaudhary	—do—
29	खजुराहो की जैन मूर्तिकला	K. L. Jain	—do—
30	भोज-राजनैतिक तथा सांस्कृतिक अध्ययन	R. P. Yadav	—do—
31	Bhoja Paramara and His Times	A. K. Awasthi	Lucknow
32	Topography and Historical Geography of Madhya Pradesh	Kala Joshi	—do—
33	प्राचीन एवं मध्यकालीन मालवा में जैन धर्म का अध्ययन	T. S. Gaud	Vikram University, Ujjain
34	मालवा के प्राचीन नगर तथा उनका सांस्कृतिक इतिहास	Smt. Indira Anand	—do—
35	उज्जयिनी का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास (प्रारम्भ से १२०० ई० तक)	S. K. Arya	—do—

36	प्रांग-मौर्य मालवा	J. C. Joshi	Vikram University Ujjain
37	Cultural and Economic life of Malwa from 3rd century B. C. to 12th cent. A. D.	Km. Usha Tikku	—do—
38	History of Gwalior region during the early mediaeval period (801-1249 A. D.)	J. P. Shrivastava	—do—
39	The Tomara rulers of Gwalior (1358-1526 A. D.)	P. S. Kushwaha	—do—
40	Mediaeval Malwa (1085-1399 A. D.)	R. S. Garg	—do—
41	A study of Rock-paintings of Barkhera Area	S. C. Jain	Saugar
42	Study of the Coinage of the Malwa region (upto C. 400 A. D.)	Nandita Mishra	—do—
43	Archaeology of Rewa District	A. G. Rehman	Poona
44	सोनार घाटी का पुरातत्त्व	D. P. Chaurasia	Sagar
45	Historical Archaeology of Bilaspur District	Indra Sharma	—do—
46	Brahmanical Images of Central India (9th to 12th century A. D.)	R. Awasthy	Lucknow
47	होशंगाबाद जिले की प्राचीन मूर्तिकला का अध्ययन	V. Awasthy	Sagar
48	विदिशा : उदयगिरि की प्राचीन मूर्तिकला का अध्ययन	S. Chadda	—do—
49	विन्ध्यक्षेत्र की पूर्व-मध्यकालीन मूर्तिकला का अध्ययन	Rekha Mishra	—do—
50	ग्वालियर तथा मोरेना जिलों का	Shashi Dikshit	—do—

	प्राचीन वास्तु तथा मूर्तिकला का अध्ययन		
51	A study of Rock-paintings of Barkhera area	S. C. Jain	—do—
52	छतरपुर जिले की प्राचीन मूर्तिकला का अध्ययन	नाथुराम यादव	—do—
53	A literary study of the Inscriptions of Kalachuri-Chedi Era.	Tal Puri	Delhi
54	मध्यप्रदेश की गुप्तोत्तरकालीन अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन	Saritri Gangele	Sagar
55	Pre-History of Sagar District	Shri Yadav	—do—
56	छत्तीसगढ़ क्षेत्र का प्राचीन इतिहास	R. M. Dass	— do —
57	गढ़ा-मण्डला का राजनैतिक इतिहास	Suresh Mishra	—do—
58	दक्षिण कोसल के अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन	S. K. Chatterjee	Jabalpur
59	त्रिपुरी का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास	M. K. Dubey	—do—
60	छत्तीसगढ़ की कलचुरि कालीन कला का अध्ययन	L. S. Nigam	Raipur

● ●

वंशावली

नंद वंश

(महावंश के अनुसार वंशावली)

अ—हर्यंक कुल

१—बिम्बिसार
|
२—अजातशत्रु
|
३—उदयभद्र
|
४—अनुरुद्ध
|
५—मुण्ड
|
६—नागदशक

आ—शिशुनाग कुल

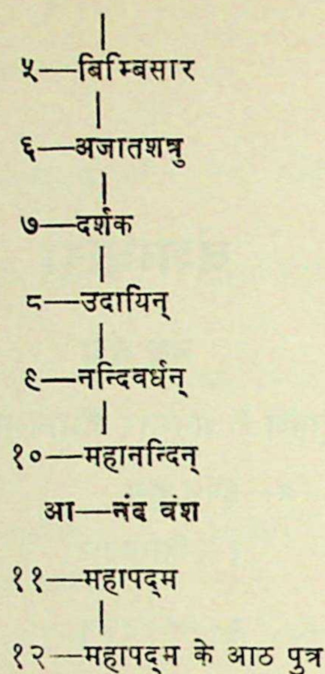
७—शिशुनाग
|
८—कालाशोक
|
९—कालाशोक के दस पुत्र

इ—नव-नन्द

(पुराणों के अनुसार वंशावली)

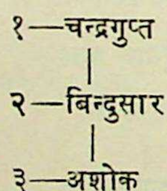
अ—शिशुनाग वंश

१—शिशुनाग
|
२—काकवर्ण
|
३—क्षेमधर्मन्
|
४—क्षतौज

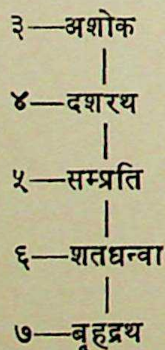


मौर्य वंश

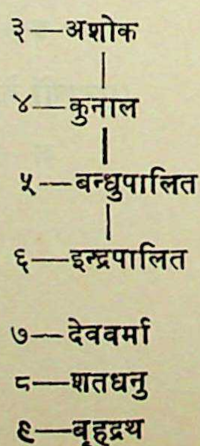
(पुराणों के अनुसार वंशावली)



मत्स्य पुराण के अनुसार



वायु तथा ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार



शुंग वंश

१—पुष्यमित्र
|
२—अग्निमित्र
|
३—वसुज्येष्ठ अथवा सुज्येष्ठ
|
४—वसुमित्र
|
५—अन्ध्रक
|
६—पुलिन्दक
|
७—घोष
|
८—वज्रमित्र
|
९—भागवत
|
१०—देवभूति

कण्व वंश

१—वसुदेव
|
२—भूमिमित्र
|
३—नारायण
|
४—सुशर्मन्

सातवाहन वंश

(पुराणों के अनुसार वंशावली)

१—सिमुक	(२३ वर्ष का राजत्वकाल)
२—कृष्ण	(१० " ")
३—सातकर्णि	(१० " ")

४—पूर्णोत्संग (१८ वर्ष का राजत्वकाल)
५—स्कन्धस्तम्भी (१८ " ")
६—सातकर्णी (५६ " ")
७—लम्बोदर (१८ " ")
८—आपीलक (१२ " ")
९—मेघस्वाति (१८ " ")
१०—स्वाति (१८ " ")
११—स्कन्दस्वाति (७ " ")
१२—मृगेन्द्र स्वातिकर्ण (३ " ")
१३—कुन्तल स्वातिकर्ण (८ वर्ष का राजत्व काल)
१४—स्वातिकर्ण (१ " ")
१५—पुलोमावि (३६ " ")
१६—अरिष्टकर्ण (२५ " ")
१७—हाल (५ " ")
१८—मन्तलक अथवा पत्तलक (५ " ")
१९—पुरिकशेण अथवा पुरीन्द्रसेन (२१ " ")
२०—सुन्दर सातकर्णी (१ " ")
२१—चकोर सातकर्णी (६ माह " ")
२२—शिवस्वाति (२८ वर्ष " ")
२३—गौतमीपुत्र (२१ " ")
२४—पुलोमा (२८ " ")
२५—शिवश्री पुलोमा (७ " ")
२६—शिवस्कन्ध सातकर्णी (३ " ")
२७—यज्ञश्री सातकर्णी (२९ " ")
२८—विजय (६ " ")
२९—चण्डश्री सातकर्णी (१० " ")
३०—पुलोमावि (७ " ")

कुषाण वंश

१—कुजुल कैडफिसेस
२—वीम कैडफिसेस

३—कनिष्क प्रथम

४—वासिष्क

५—हुविष्क

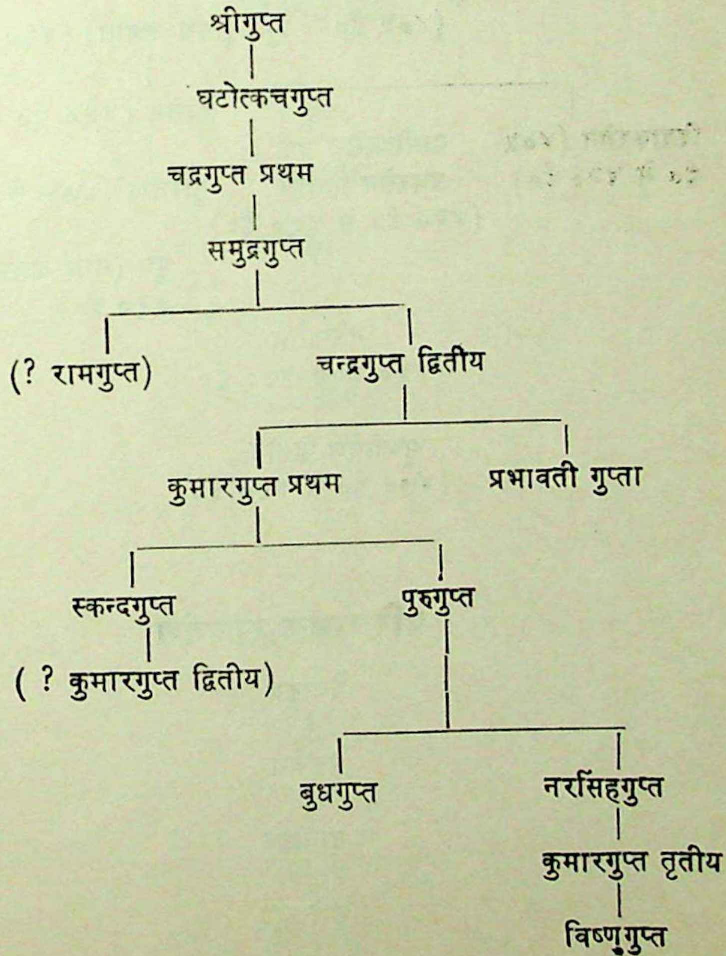
६—कनिष्क द्वितीय

७—वासुदेव प्रथम

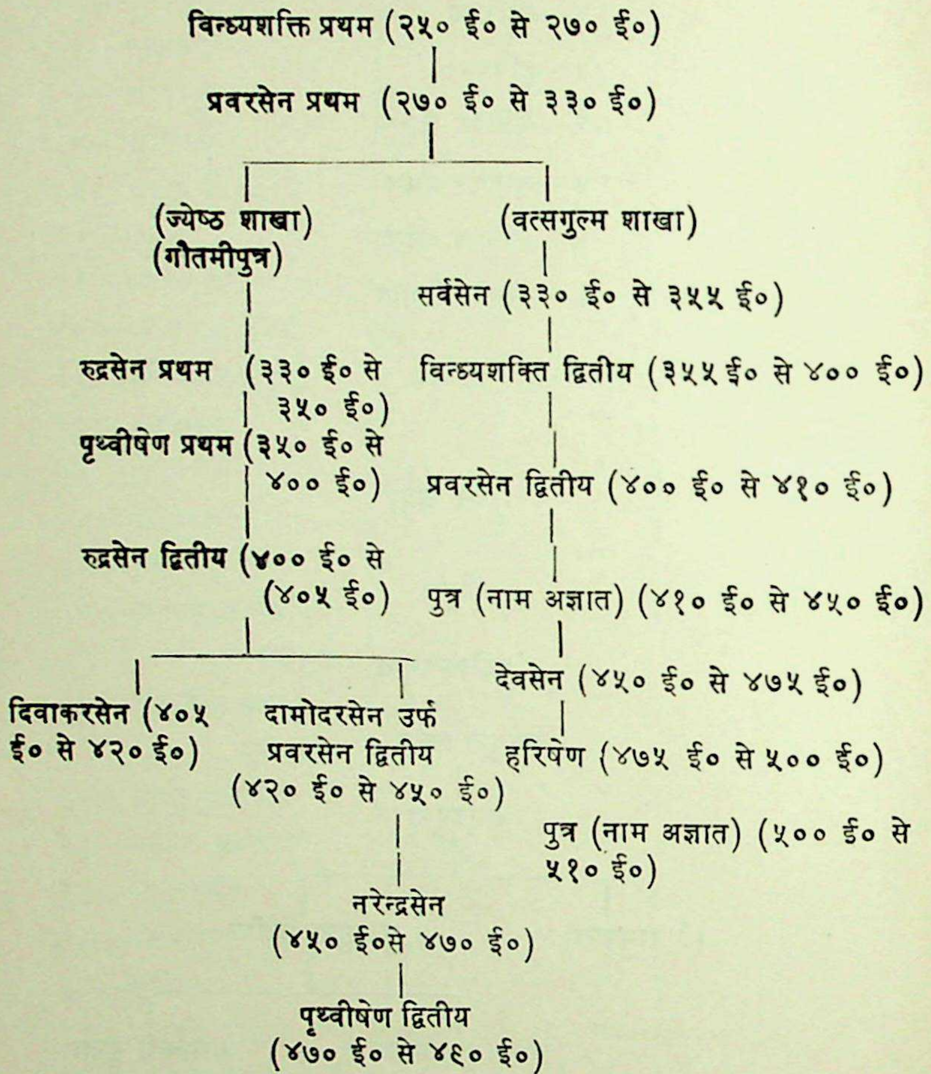
८—कनिष्क तृतीय

९—वासुदेव द्वितीय

गुप्त वंश



वाकाटक वंश



परिव्राजक राजवंश

देवाढ्य
|
प्रभंजन
|
दामोदर
|
हस्तिन्
|
संक्षोभ

उच्चकल्प के महाराज

ओघदेव
|
कुमारदेव
|
जयस्वामिन्
|
व्याघ्र
|
जयनाथ
|
सर्वनाथ

राजर्षितुल्य कुल

शूरा
|
दयित प्रथम
|
विभीषण
|
भीमसेन प्रथम
|
दयितवर्मा द्वितीय
|
भीमसेन द्वितीय

नल वंश

भवदत्तवर्मा
|
? स्कन्दवर्मा
|
अर्थपति
|
पृथ्वीराज
|

विरूपाक्ष
|
विलासतुंग

शरभपुरीय वंश

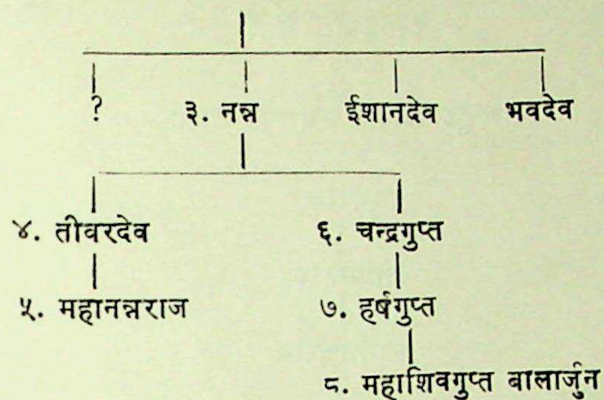
१. शरभ
|
२. नरेन्द्र
⋮
३- प्रसन्नमात्र
|
४. जयराज-मानमात्र-दुर्गराज
|
५. सुदेवराज   ६. प्रवरराज   व्याघ्रराज

वर्धन वंश

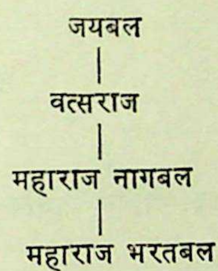
महाराज नरवर्धन
|
महाराज राज्यवर्धन
|
महाराज आदित्यवर्धन
|
परमभट्टारक महाराजाधिराज प्रभाकरवर्धन
|
परमभट्टारक महाराजाधिराज राज्यवर्धन   परमभट्टारक महाराजाधिराज हर्षवर्धन

दक्षिण कोसल का पाण्डव वंश

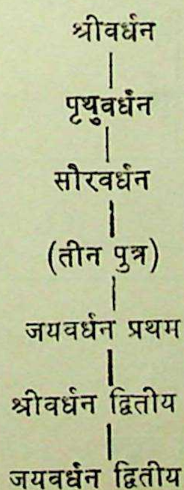
१. उदयन
|
२. इन्द्रबल



मेकल का पाण्डव वंश

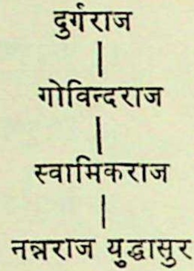


शैल वंश



राष्ट्रकूट वंश

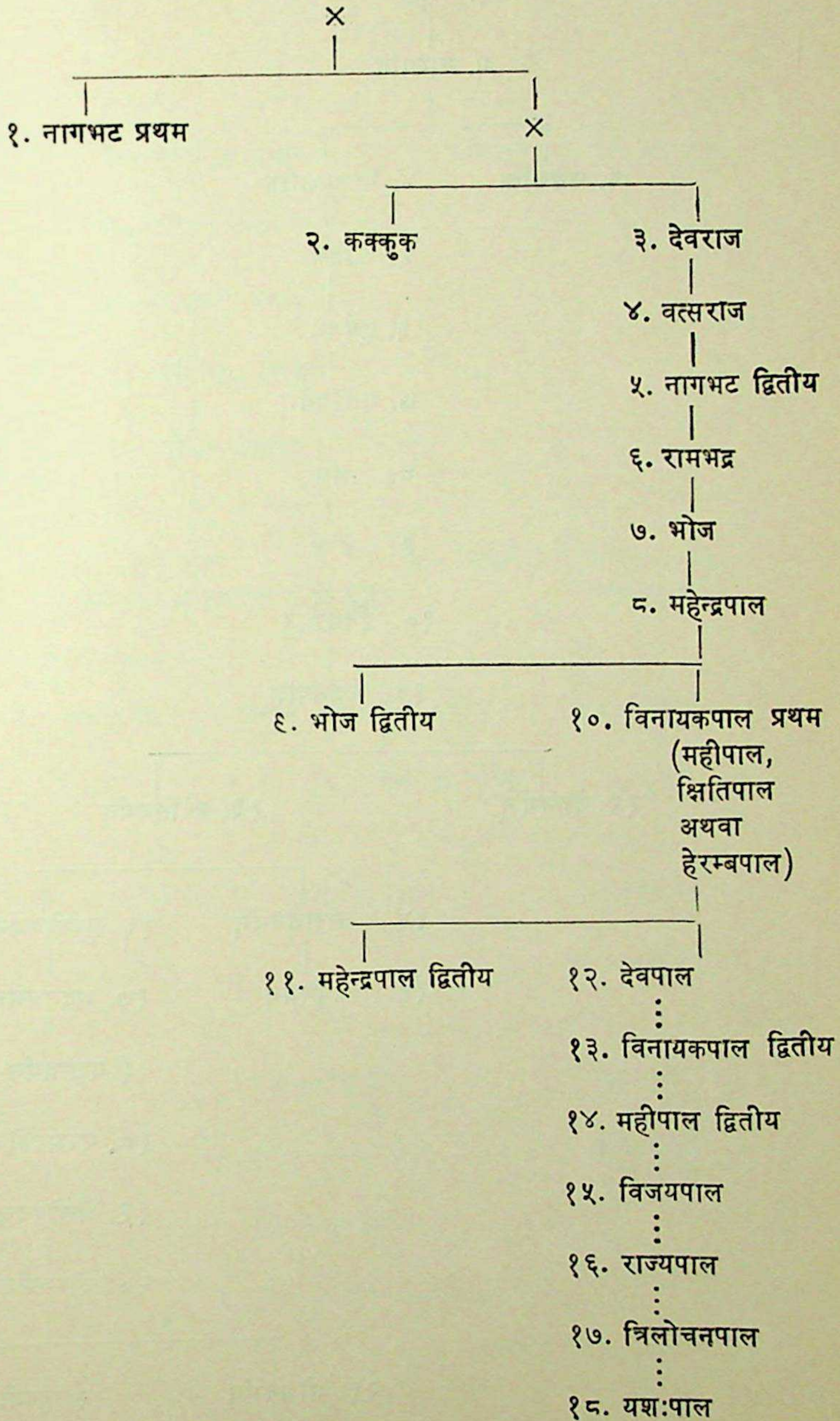
राष्ट्रकूट वंश की अचलपुर शाखा



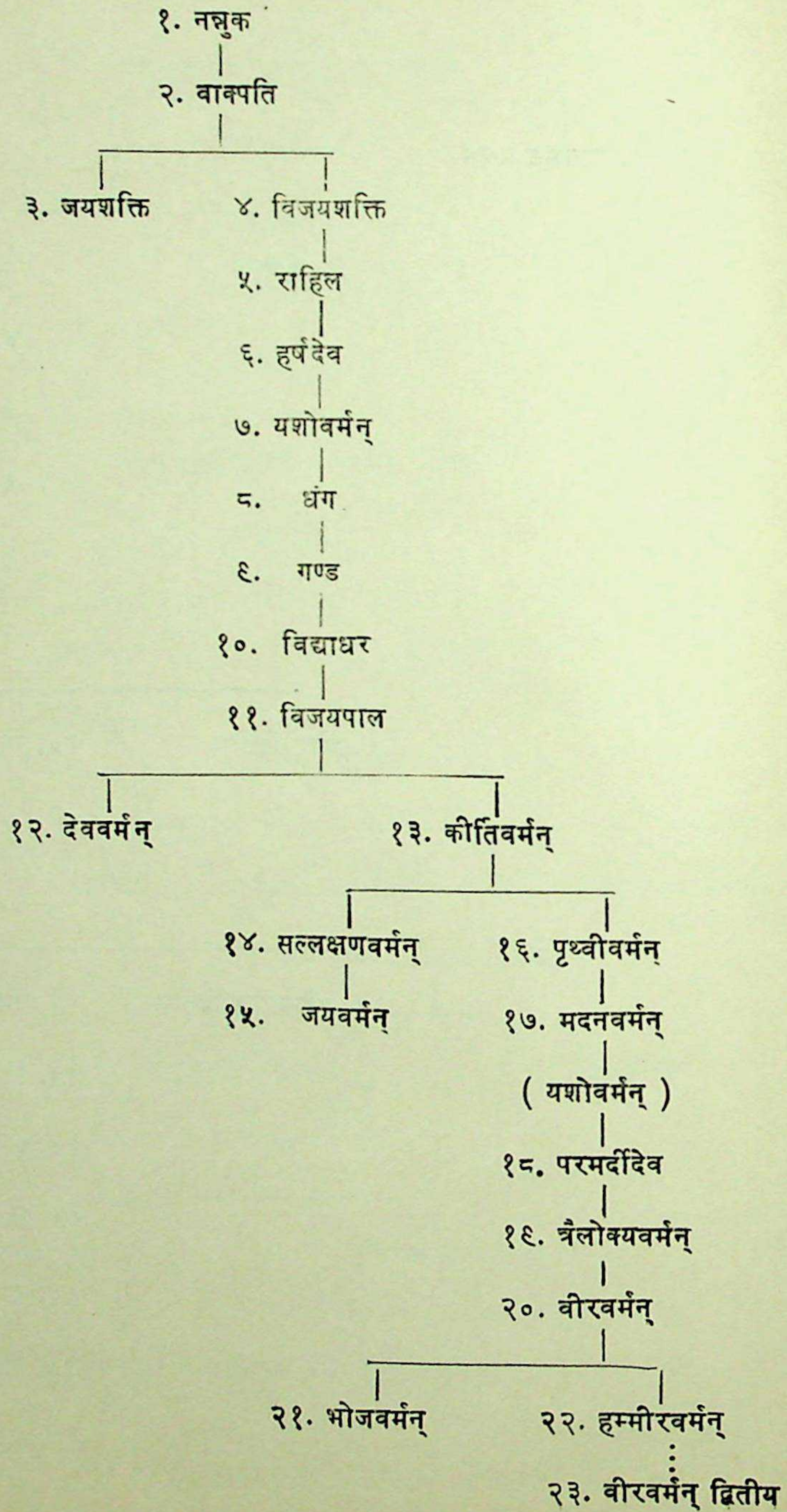
राष्ट्रकूट वंश की मान्यखेट शाखा

- कर्क्क प्रथम
  - इन्द्र प्रथम
    - १. दन्तिदुर्ग
  - २. कृष्ण प्रथम
    - ३. गोविन्द द्वितीय
    - ४. ध्रुव
      - स्तम्भ
      - कर्क्क
      - ५. गोविन्द तृतीय
        - ६. अमोघवर्ष प्रथम
          - ७. कृष्ण द्वितीय
            - जगत्तुंग
              - ८. इन्द्र तृतीय
                - ९. अमोघवर्ष द्वितीय
                - १०. गोविन्द चतुर्थ
              - ११. अमोघवर्ष तृतीय
                - १२. कृष्ण तृतीय
                  - १५. इन्द्र चतुर्थ
                - १३. खोट्टिग
                - निरूपम
                  - १४. कर्क्क द्वितीय
          - कन्या चन्द्रोबलब्बे
      - इन्द्र (गुजरात शाखा का)

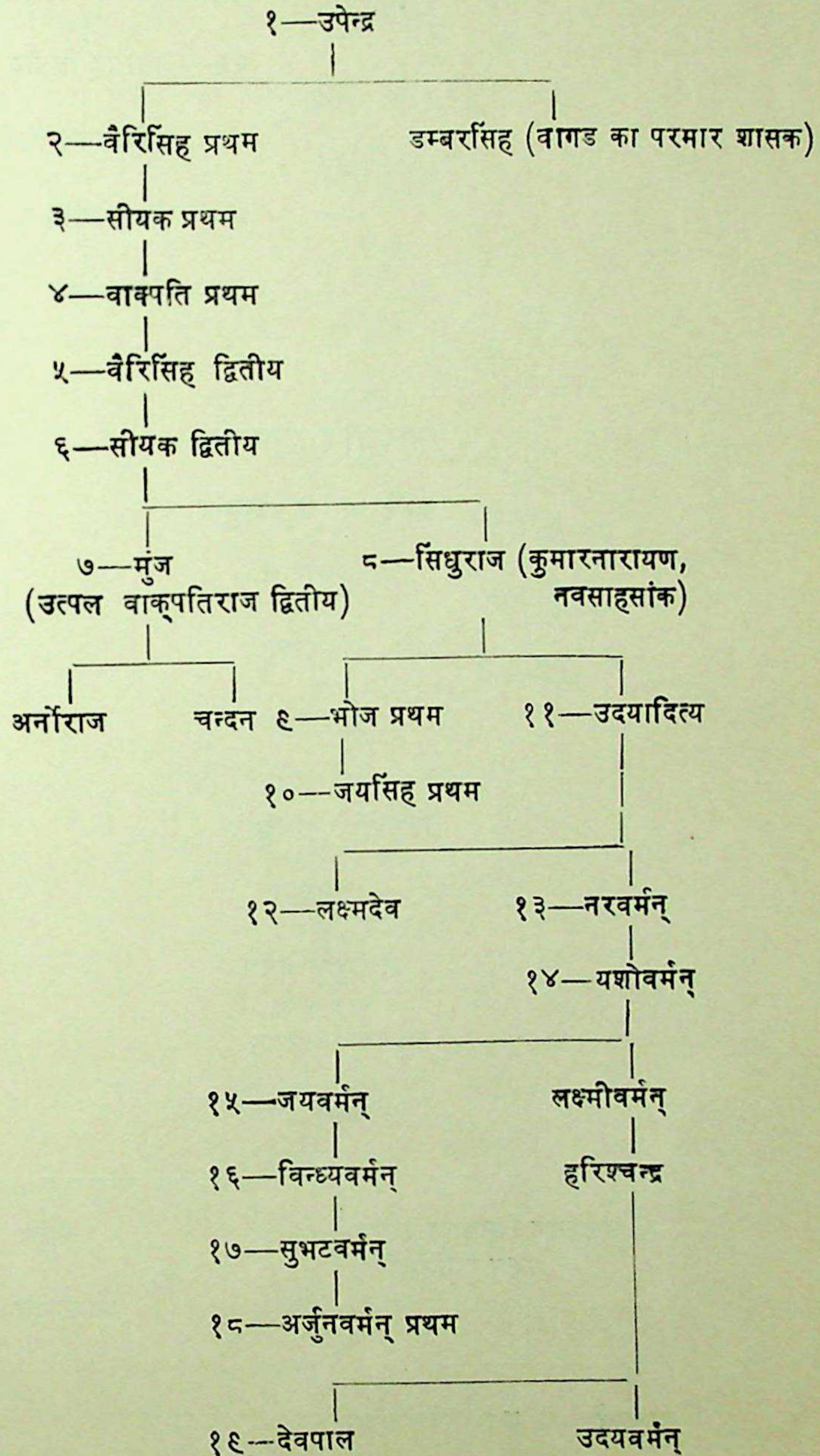
उज्जयिनी तथा कान्यकुब्ज का गुर्जर--प्रतिहार वंश

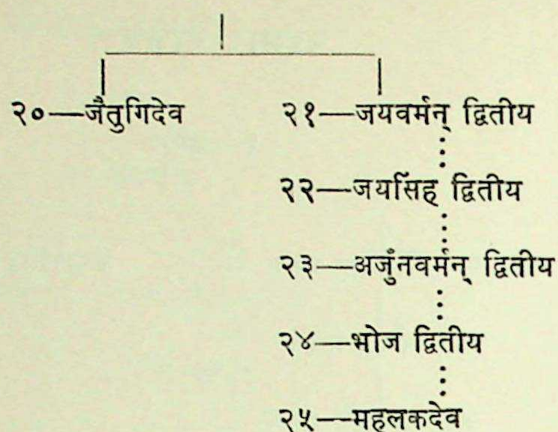


चन्देल राजवंश


१. नन्नुक
२. वाक्पति
३. जयशक्ति
४. विजयशक्ति
५. राहिल
६. हर्षदेव
७. यशोवर्मन्
८. धंग
९. गण्ड
१०. विद्याधर
११. विजयपाल
१२. देववर्मन्
१३. कीर्तिवर्मन्
१४. सल्लक्षणवर्मन्
१५. जयवर्मन्
१६. पृथ्वीवर्मन्
१७. मदनवर्मन्
(यशोवर्मन्)
१८. परमर्दीदेव
१९. त्रैलोक्यवर्मन्
२०. वीरवर्मन्
२१. भोजवर्मन्
२२. हम्मीरवर्मन्
२३. वीरवर्मन् द्वितीय

परमार राजवंश


१—उपेन्द्र
२—वैरिसिंह प्रथम
डम्बरसिंह (वागड का परमार शासक)
३—सीयक प्रथम
४—वाक्पति प्रथम
५—वैरिसिंह द्वितीय
६—सीयक द्वितीय
७—मुंज (उत्पल वाक्पतिराज द्वितीय)
८—सिंधुराज (कुमारनारायण, नवसाहसांक)
अर्नोराज
चन्दन
९—भोज प्रथम
११—उदयादित्य
१०—जयसिंह प्रथम
१२—लक्ष्मदेव
१३—नरवर्मन्
१४—यशोवर्मन्
१५—जयवर्मन्
लक्ष्मीवर्मन्
१६—विन्ध्यवर्मन्
हरिश्चन्द्र
१७—सुभटवर्मन्
१८—अर्जुनवर्मन् प्रथम
१९—देवपाल
उदयवर्मन्



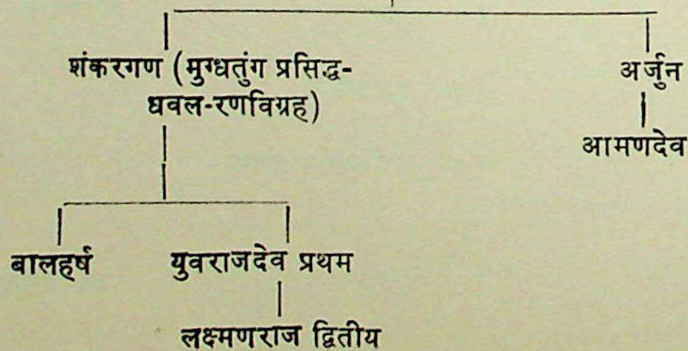
कलचुरि राजवंश

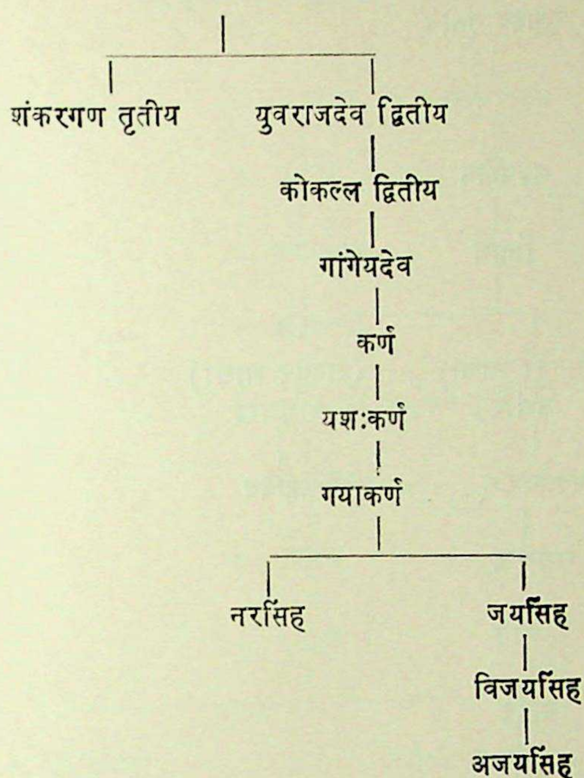
माहिष्मती के कलचुरि

कृष्णराज
:
शंकरगण
:
बुद्धराज
:

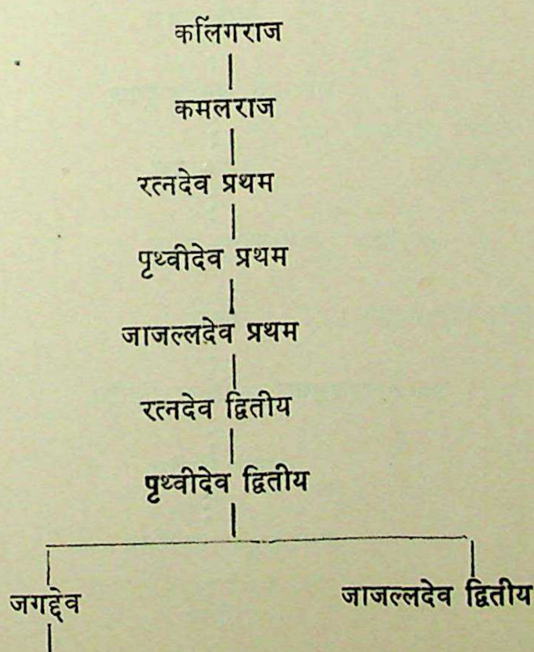
त्रिपुरी के कलचुरि

वामराज
:
शंकरगण प्रथम
:
लक्ष्मणराज प्रथम
|
कोकल्ल प्रथम





रतनपुर तथा रायपुर के कलचुरि

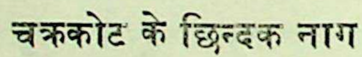


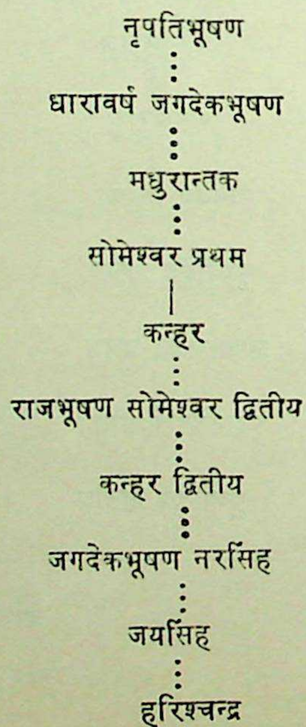
रत्नदेव तृतीय
|
प्रतापमल्ल
|
लक्ष्मीदेव
|
सिंहण
|

(रतनपुर शाखा) — (रायपुर शाखा)

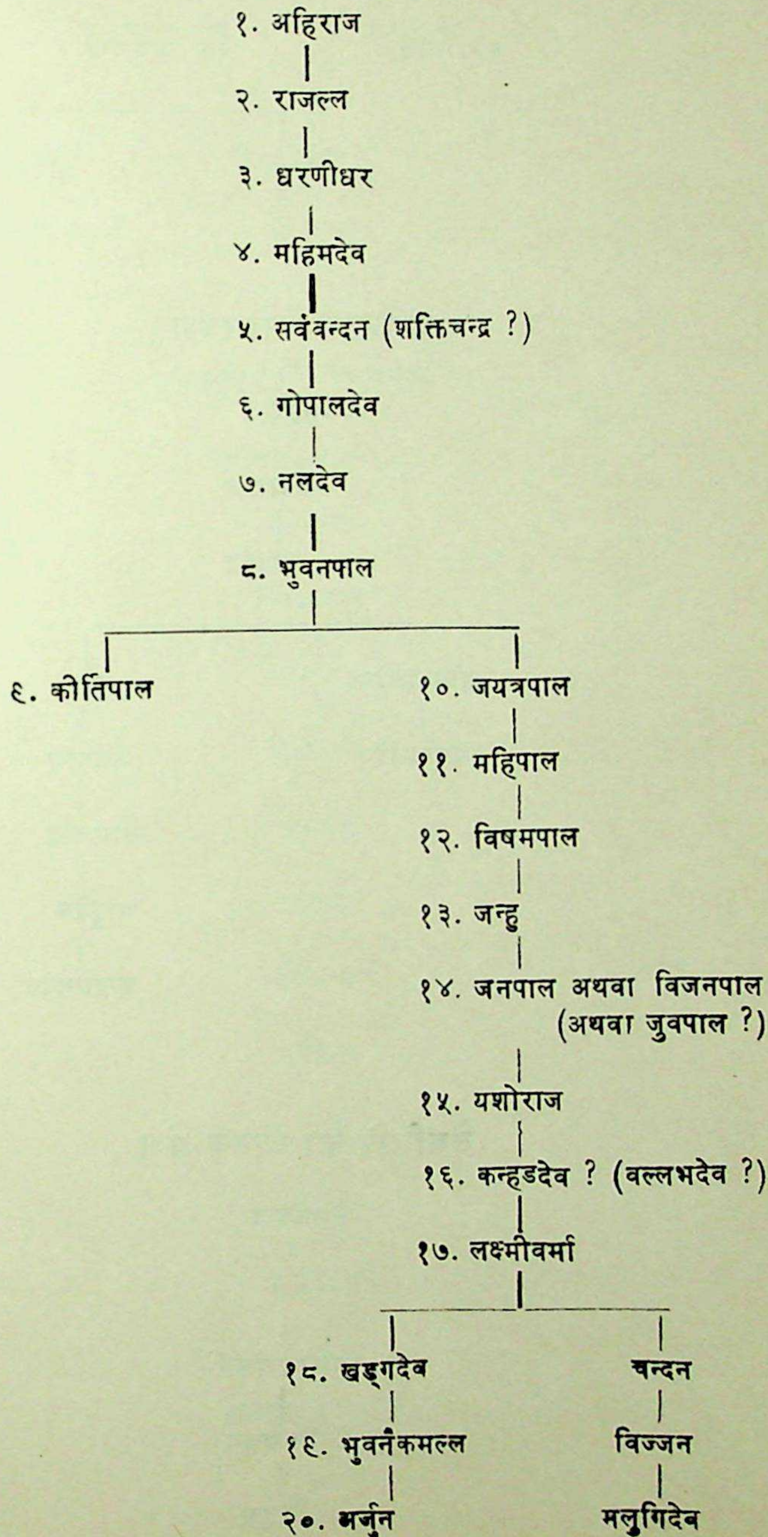
(रतनपुर शाखा)
डंघीर
|
मदनब्रह्मन्
|
रामचन्द्र
|
रत्नसेन
|
वाहर

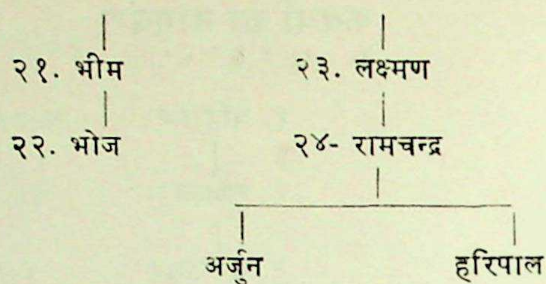
(रायपुर शाखा)
रामचन्द्र
|
ब्रह्मदेव



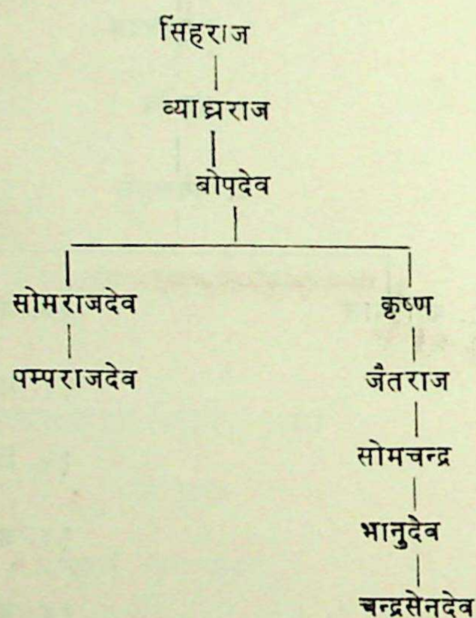


कवर्धा का नागवंश

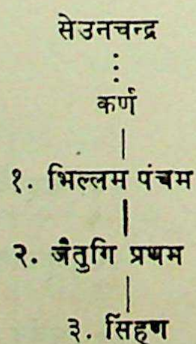

१. अहिराज
२. राजल्ल
३. धरणीधर
४. महिमदेव
५. सर्ववन्दन (शक्तिचन्द्र ?)
६. गोपालदेव
७. नलदेव
८. भुवनपाल
९. कीर्तिपाल
१०. जयत्रपाल
११. महिपाल
१२. विषमपाल
१३. जन्हु
१४. जनपाल अथवा विजनपाल
(अथवा जुवपाल ?)
१५. यशोराज
१६. कन्हडदेव ? (वल्लभदेव ?)
१७. लक्ष्मीवर्मा
१८. खड्गदेव
१९. भुवनैकमल्ल
२०. अर्जुन
चन्दन
विज्जन
मलुगिदेव

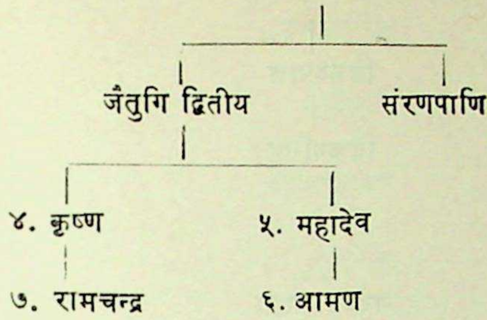


कांकेर का सोमवंश



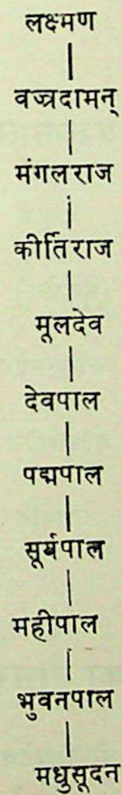
देवगिरि का यादव वंश



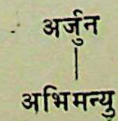


कच्छपघात् राजवंश

ग्वालियर शाखा



दुबकुण्ड शाखा



|
विजयपाल
|
विक्रमसिंह

नरवर शाखा

गगनसिंह
|
शरदसिंह
|
वीरसिंह

नरवर का यज्वपाल राजवंश

चाहड़
|
(नृवर्मन्)
|
आसल्लदेव
|
गोपालदेव
|
गणपति

ग्वालियर का तोमर राजवंश

वीरसिंहदेव
|
उद्धरणदेव
|
विक्रमदेव
|
गणपतिदेव
|

डुंगरेन्द्रसिंह
|
कीर्तिसिंह
|
कल्याणमल्ल
|
मानसिंह
|
विक्रमादित्य

• •

परिशिष्ट

पिछले अध्यायों में वर्णित सामग्री के अतिरिक्त हाल ही में मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कुछ और सामग्री प्रकाश में आयी है। विभिन्न अध्यायों से सम्बन्धित इस सामग्री का विवरण निम्नानुसार है—

द्वितीय अध्याय

२४९४. केवलारी (दतिया)

पाषाण-युगीन औज़ार।

प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी से सूचना प्राप्त।

२४९५. रडुवापुर (दतिया)

पाषाण-युगीन औज़ार। वही।

२४९६. इन्दरगढ़ (दतिया)

पाषाण-युगीन औज़ार। वही।

२४९७. बड़ोनी (दतिया)

दतिया से ६ मील की दूरी पर स्थित चित्रित शिलाश्रय। वही।

२४९८. घरावा (दतिया)

चित्रित शिलाश्रय। वही।

२४९९. सोरर (दुर्ग)

महापाषाणीय-स्मारक। वही।

२५००. घनोरा (दुर्ग)

महापाषाणीय-स्मारक। वही।

२५०१. मगझर (दुर्ग)

महापाषाणीय-स्मारक। वही।

२५०२. ककरभाट (दुर्ग)

महापाषाणीय-स्मारक । वही ।

२५०३. कारीभदार (दुर्ग)

महापाषाणीय-स्मारक । वही ।

२५०४. राजिम (रायपुर)

लघुपाषाण-औज़ार तथा मिट्टी के प्राचीन बर्तन। इ० आ० रि० १९६८-६९, पृ० ११।

२५०५. ग्वालियर-टेकनपुर मार्ग (ग्वालियर)

(अ) हस्तकुठार, फॉसिल तथा हड्डियाँ जो ग्वालियर-टेकनपुर मार्ग पर पुल के निकट नदी के कटे किनार से प्राप्त हुईं । वही ।

(आ) उपरोक्त पुल के निकट 'बंजारों-का-टीला' जिससे काले और लाल तथा मालवा मृद्भाण्ड प्राप्त हुए । वही ।

२५०६. डबरा (ग्वालियर)

पूर्व-पाषाण-युगीन औज़ार जो सोन नदी के तट पर डबरा के निकट प्राप्त हुए । वही ।

२५०७. पनिहार (ग्वालियर)

पूर्व-पाषाण-युगीन औज़ार जो आगरा-बम्बई मार्ग पर पनिहार के निकट जंगल से प्राप्त हुए । वही ।

२५०८. मोरार नदी

मध्य-पाषाण औज़ार जो मोरार नदी के दायें तट पर बाँध के निकट प्राप्त हुए । वही ।

२५०९. नूराबाद (मोरैना)

उत्तर-पाषाण-युगीन स्थल । इ० आ० रि०, १९६८-६९, पृ० १२ ।

२५१०. जसारा (मोरैना)

उत्तर-पाषाणयुगीन स्थल । वही ।

२५११. बिलखरिया (रायसेन)

पाषाण-युगीन औज़ार जो भोपाल-रायसेन मार्ग पर स्थित इस ग्राम के निकट प्राप्त हुए । वही ।

२५१२. नेवावली (धार)

ताम्रपाषाण-युगीन स्थल । यहाँ कायथा सभ्यता से सम्बन्धित मृद्भाण्ड प्राप्त हुए । इ० आ० रि० १९६८-६९, पृ० ६५ ।

२५१३. जबलपुर जिला

जबलपुर जिले में भदोरा, चपना, दरोरी, देवरी, डोली, खरेटा, पिपरिया, सकरी, गढ़ा, सलैया, विलायत-कलां तथा विलायत-खुर्द से प्राप्त मध्य-पाषाण युगीन औज़ार। डोली, पिपरिया तथा सलैया से पूर्व-पाषाण युगीन औज़ार भी प्राप्त हुए। इ० आ० रि० १९६८-६९, पृ० ६५।

२५१४. जावद (मन्दसौर)

पाषाण-युगीन औज़ार। वही।

२५१५. लाखाजुआर तथा पाण्डुनगर (रायसेन)

भीमबैठका क्षेत्र के इन दोनों स्थलों में प्राप्त शिलाश्रय। इ० आ० रि० १९६८-६९, पृ० ६६।

२५१६. साँची (रायसेन)

छः चित्रित शिलाश्रय। वही।

२५१७. मीन तथा रूनिजा (रतलाम)

इन दो स्थानों पर उपलब्ध ताम्रपाषाण युगीन स्थल। वही।

२५१८. मालथोन (सागर)

पूर्व-पाषाण-युगीन औज़ार। वही।

२५१९. पठारी (विदिशा)

पूर्व, मध्य तथा उत्तर-पाषाण युगीन औज़ार। वही।

२५२०. रामगढ़ (पश्चिम निमाड़)

पूर्व-पाषाण-युगीन औज़ार। वही।

तृतीय अध्याय

२५२१. ग्वालियर (ग्वालियर)

कच्छपघात् अजयपालदेव का वि० सं० १२५१ का अभिलेख। राम शर्मा : ए० इ० भाग ३८ (३), १९६९, पृ० १३३-३४।

२५२२. नरेसर (मोरेना)

कच्छपघात् अजयपालदेव का वि० सं० १२४९ का मूर्ति-लेख। वही, पृ० १३२-३३।

२५२३. सिरपुर (रायपुर)

आचार्य बुद्धघोष का शिलालेख। बालचन्द्र जैन : ए० इ० भाग ३८ (२), १९६६, पृ० ५९-६२।

२५२४. थोबन (गुना)

हरिराज (प्रतिहार) का वि० सं० १०५५ का शिलालेख। बालचन्द्र जैन तथा सी० बी० त्रिवेदी से सूचना प्राप्त।

२५२५. बूढ़ी-चन्देरी (गुना)

रणपालदेव (प्रतिहार) का वि० सं० ११०० का शिलालेख। वही।

२५२६. विदिशा (विदिशा)

परमार महाकुमार त्रैलोक्यवर्मन् का शिलालेख। वही।

२५२७. होशंगाबाद (होशंगाबाद)

दो अभिलेख-पहला परमारवंशी महाकुमार हरिश्चन्द्रकालीन वि० सं० १२५३ का तथा दूसरा नागरी लिपि में लिखा वि० सं० १४९३ का। प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी से सूचना प्राप्त।

चतुर्थ अध्याय

२५२८. दतिया (दतिया)

नगर के पी० आर० ओ० कार्यालय में रखी ८वीं-१०वीं शताब्दी की अनेक प्रतिमाएँ। प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी से सूचना प्राप्त।

२५२९. बड़ोनी (दतिया)

(अ) बड़ोनी के दक्षिण में स्थित गोपेश्वर पहाड़ी के निकट स्थित शिव मन्दिर और प्रतिहार तथा कच्छपघात् कालीन अनेक प्रतिमाएँ। वही।

(आ) उपरोक्त शिव मन्दिर के निकट स्थित तीन बौद्ध स्तूप के अवशेष। वही।

२५३०. केवलारी (दतिया)

सातवाहन-कुषाण कालीन टीले तथा ९वीं-१०वीं शताब्दी की कुछ प्रतिमाएँ। वही।

२५३१. किन्नरगढ़ (दतिया)

सेंवढ़ा के निकट किन्नरगढ़ में स्थित १०वीं-११वीं सदी की अनेक प्रतिमाएँ। वही।

२५३२. उनाव (दतिया)

दतिया से १७ कि० मी० पूर्व की ओर इस गाँव में स्थित प्राचीन सूर्य मन्दिर। वही।

२५३३. कुण्डलपुर (दमोद)

गुप्तकालीन दो मन्दिर। वही।

९१

२५३४. दमोह जिला

दमोह जिले में स्थित चित्राखेड़ा, बांदकपुर, हिन्डोरिया तथा नाला में उपलब्ध चन्देल-कलचुरि कालीन अनेक प्रतिमाएँ। **वही।**

२५३५. खरवई (रायसेन)

खोज में प्राप्त बौद्ध स्तूप के अवशेष। **वही।**

२५३६. तुमैना (गुना)

(अ) मौर्यकालीन तीन बौद्ध स्तूपों के अवशेष।

(आ) चतुर्मुखी शिवलिंग, शिवगण तथा तीर्थंकर पार्श्वनाथ की प्रतिमाएँ।

(इ) सप्तमातृका फलक-गुप्तकालीन।

(ई) सर्वतोभद्र-७०० ई० सं०

(उ) नाग प्रतिमा, उत्तर-गुप्त कालीन।

(ऊ) विश्वरूप विष्णु, ९वीं सदी।

(ए) कौमारी प्रतिमा-८०० ई० सं०।

(ऐ) नटराज शिव-७०० ई० सं०।

प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी से सूचना प्राप्त।

२५३७. सागर (सागर)

(१) सूर्य प्रतिमा-१०वीं सदी।

(२) वायु प्रतिमा-१०वीं सदी। **वही।**

२५३८. देवरी कलाँ (जबलपुर)

गुप्तकालीन सपाट छत का मन्दिर। **इ० आ० रि० १९६८-६९, पृ० ६५।**

२५३९. फिरोजपुर (रायसेन)

स्तम्भ-शीर्ष। **वही।**

२५४०. गुलगांव (रायसेन)

नाग तथा नागी प्रतिमाएं। **वही।**

२५४१. राहतगढ़ (सागर)

वैष्णव तथा जैन प्रतिमाएं। **वही**

२५४२. आष्टा (सीहोर)

सप्तमातृका फलक। **वही।**

२५४३. अमरकंटक (शहडोल)

कार्तिकेय प्रतिमा । **वही** ।

२५४४. दुर्जनपुरा (विदिशा)

गुप्तकालीन प्रतिमाएँ । वही ।

पंचम अध्याय

२५४५. खुड़िमुड़ी (दुर्ग)

कलचुरि शासक रत्नदेव के अनेक सिक्के । इ० आ० रि० १९६८-६९, पृ० ६० ।

२५४६. अनूपपुर (शहडोल)

गुप्तकालीन दो सिक्के जो चन्द्रगुप्त द्वितीय के हैं। ये महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय रायपुर में संरक्षित किये गये । वही ।

२५४७. बेल्डी (शहडोल)

गुप्तकालीन सिक्के जो महन्त घासीदास स्मारक संग्रहालय रायपुर में संरक्षित किये गये । वही ।

२५४८. उज्जैन (उज्जैन)

(अ) गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय का काँसे का सिक्का जो गढ़-कालिका टीले से प्राप्त हुआ । वही ।

(आ) ताँबे का सिक्का जिस पर १०० ई० पू० की ब्राह्मी लिपि में 'प्रमुदस' उत्कीर्ण है । **प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी से सूचना प्राप्त ।**

२५४९. इन्दौर (इन्दौर)

उज्जैन के दो स्थानीय शासक 'सवितस' तथा 'रञो दतस' के सिक्के जो डा० नागू के संग्रह में संरक्षित हैं । ये सिक्के दूसरी-प्रथम शताब्दी ई० पू० के हैं । **ज० न्यू० सो० इ० भाग ३२, खण्ड १, पृ० ७७-७८ ।**

२५५०. तुमैन (गुना)

(अ) १९७१-७२ के उत्खनन में प्राप्त ताँबे के आहत सिक्के । **प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी से सूचना प्राप्त ।**

(आ) ब्राह्मी लिपि लेख युक्त ताँबे के सिक्के । **वही ।**

(इ) १९७२-७३ के उत्खनन में प्राप्त ५८९ चाँदी के हिन्द-सासानी सिक्के । **वही ।**

(ई) १९७२-७३ के उत्खनन में प्राप्त मृद्-मुद्रांकन जिस पर 'सिहस्य' लेख उत्कीर्ण है । **वही ।**

२५५१. **बड़ोनी (दतिया)**

स्तूप के अवशेष से प्राप्त मृद्-मुद्रांकन जिसपर ६वीं-७वीं-सदी के ब्राह्मी लिपि में लेख उत्कीर्ण है। प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी से सूचना प्राप्त।

२५५२. **साँची (रायसेन)**

गुप्तकालीन ताँबे का सिक्का जो सम्भवत: चन्द्रगुप्त द्वितीय (?) का है। प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी से सूचना प्राप्त।

२५५३. **शहडोल (शहडोल)**

मघ वंश के प्रथम शासक भीमसेन के ४ सिक्के। इनके साथ मघ वंश के कुछ और सिक्के भी मिले। प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी से सूचना प्राप्त।

२५५४. **त्रिपुरी (जबलपुर)**

नालन्दा महाविहार का मृद्-मुद्रांकन। अजयमित्र शास्त्री तथा आर० के० शर्मा : ज० न्यू० सो० इ० भाग ३४ (१), १९७२, पृ० ७९-८१।

२५५५. **रायपुर जिला**

प्रसन्नमात्र का सोने का रिपोझे सिक्का। ज० न्यू० सो० इ० भाग ३४ (१), १९७२, पृ० ८४-८५।

२५५६. **ग्वालियर (ग्वालियर)**

शेषदत्त के दो नवीन सिक्के। सन्तलाल कटारे : ज० न्यू० सो० इ० भाग ३४ (२), १९७२, पृ० १८९-१९५।

२५५७. **अजयगढ़ (पन्ना)**

चन्देल त्रैलोक्यवर्मन् का एक सोने का सिक्का। एस० के० सुल्लेरे : ज० न्यू० सो० इ० भाग ३४ (२) १९७२, पृ० २६२-६३।

षष्ठ अध्याय

२५५८. गौर पुरातत्त्व संग्रहालय, सागर विश्वविद्यालय, सागर में पुरातत्त्व की निम्नलिखित सामग्री एकत्रित की गयी।

१९७१-७२ के वर्ष में कुषाण कालीन दो प्रतिमाएँ, पूर्व-मध्यकालीन ४ प्रतिमाएँ, ११ मृद्-मुद्रांकन, तथा १२ मिट्टी की बनी मूर्तियाँ संग्रहीत की गईं। इनके अतिरिक्त ४० जनराज्य सिक्के, ५० पत्थर के मनके, ५० कुषाण सिक्के, १० पूर्व-मध्यकालीन सिक्के तथा १५ मध्यकालीन सिक्के एकत्रित किये गये।

१९७२-७३ के वर्ष में इस संग्रहालय में १२६ ताँबे के सिक्के, २ चाँदी के सिक्के, ३३ मृद्-मुद्रांकन तथा २८ मूल्यवान मनके संग्रहीत किये गये। प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी से सूचना प्राप्त।

२५५९. प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग, विज्ञान महाविद्यालय, रायपुर :

इस विभागीय संग्रहालय में श्री एस० आर० शर्मा, प्रोफेसर, गृहविज्ञान महाविद्यालय जबलपुर द्वारा पुरातत्त्व की कुछ सामग्री संग्रहीत की गई जो उन्हें शहडोल जिले की खोज में प्राप्त हुई। संग्रह में प्रमुख हैं—(१) प्रस्तर जैन प्रतिमाएँ (२) कुछ अस्पष्ट प्रस्तर पुरुष आकृतियाँ (३) मिट्टी की पकी ईंट, जिसका आकार १२″×८″ है। **श्री एस० आर० शर्मा से सूचना प्राप्त।**

२५६०. डॉ० सन्तलाल कटारे का व्यक्तिगत संग्रह, जबलपुर

डॉ० सन्तलाल कटारे, यू० जी० सी० प्रोफेसर, जबलपुर विश्वविद्यालय के निजी संग्रह में मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व की महत्त्वपूर्ण सामग्री संग्रहीत है। इसका वर्णन निम्नानुसार है —

सिक्के

(१) आहत	: चाँदी के चौकोर	—१
	चाँदी के गोलाकार	—२
	ताँबे के	—७
(२) ठप्पांकित	: ताँबे के	—६
(३) ढले	: ताँबे के (हस्ति तथा पर्वत)	—४
	उज्जैन प्रकार	—३
(४) सातवाहन	: श्री सातकर्णी (सीसा)	—१
	श्री सातिस (पोटीन)	—१
	श्री यज्ञ (ताँबा)	—१
	सातकर्णी तृतीय (ताँबा)	—४
	अस्पष्ट (ताँबा)	—२
(५) मथुरा के नाग	: शेषदत्त (ताँबा)	—२
	अस्पष्ट (ताँबा)	—१
(६) पद्मावती के नाग	: अनेक शासकों के	—८९
	रुद्र	—१
(७) आजेस-प्रथम	: (ताँबा)	—२
(८) औदुम्बर	: भगवत महादेव (ताँबा)	—१
(९) किदार कुषाण	: (ताँबा)	—३
(१०) पश्चिम क्षत्रप	: रुद्रसिंह (चाँदी)	—१
	अस्पष्ट (चाँदी)	—२
	अस्पष्ट (ताँबा)	—१
(११) कलचुरि	: कृष्णराज (चाँदी)	—५

(१२) सामन्तदेव प्रकार : (ताँबा) —३
(१३) गधिया : चांदी —५
(१४) अस्पष्ट —१२

ताम्रपत्र, ताम्रमुहर तथा अन्य लेख

(१) नन्नराज का तिवरखेड़ ताम्रपत्र जिस पर युद्धाश्वर की मुहर लगी है।

(२) कलचुरि शासक जयसिंहदेव की ताम्र मुहर।

(३) रतनपुर के कलचुरि शासक राजा रणजीत सिंह का विक्रम संवत् १७३१ का कागज पर लिखा दानपत्र।

(४) रतनपुर के कलचुरि शासक तखतसिंह का विक्रम संवत् १७३३ तथा १७३४ का कागज पर लिखा दानपत्र।

(५) चन्देल जयवर्मन् के एक अज्ञात अभिलेख की स्याही की छाप।

(६) मिट्टी के प्राचीन बरतन तथा गोलाकार पत्थर जिस पर लेख उत्कीर्ण है।

सप्तम अध्याय

२५६१. बरखेड़ा तथा खरवई में खोज तथा उत्खनन (१९७१-७२)

रायसेन जिले के दो जंगलों से घिरे क्षेत्र बरखेड़ा तथा खरवई की खोज सागर विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व विभाग द्वारा १९७१-७२ के वर्ष में की गई। खोज का लक्ष्य था इस भाग में उपलब्ध अज्ञात चित्रित शिलाश्रयों को ढूंढ़ निकालना तथा उनका वर्गीकरण कर अध्ययन करना। खोज के परिणाम निम्नानुसार रहे—

बरखेड़ा क्षेत्र—

बरखेड़ा क्षेत्र के ५ वर्गमील इलाके में प्राप्त १६२ चित्रित शिलाश्रयों को चार समूहों में बांटा गया। ये शिलाश्रय त्रिनैका, पंडरपुर, भीमबैठका तथा लाखाजुआर में हैं। इस क्षेत्र के कुछ शिलाश्रयों में प्राप्त उत्कीर्ण चित्र सबसे महत्त्वपूर्ण खोज थी। ऐसे गुफा-उत्कीर्णन अभी तक भारत में कहीं भी प्राप्त नहीं हुए हैं। इनका काल ८वें तथा छठे सहस्राब्द ई० पू० के बीच का है। पाँच स्तूप और विहार के अवशेष भी इस क्षेत्र में मिले।

एक शिलाश्रय (क्रमांक सी-२६) में उत्खनन कार्य करवाया गया जिसमें पूर्व-पाषाण-युगीन, मध्य-पाषाण-युगीन तथा उत्तर-पाषाण युगीन स्तर स्पष्ट रूप से प्रकाश में आये। इससे पश्चात् के स्तर में उस सभ्यता के अवशेष मिले जो लाल और काले तथा लाल-पर-काले मृद्भाण्ड उपयोग में लाते थे। इस काल से सम्बन्धित सबसे महत्त्वपूर्ण अवशेष नरकंकाल था जिसकी तिथि लगभग २०००-

१५०० ई० पू० के बीच मानी जा सकती है। इस स्तर के पश्चात् इतिहास कालीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए। एक आहत सिक्का, जो १०० ई० पू० के लगभग का है, इस स्तर से प्राप्त हुआ।

खरवई क्षेत्र--

खरवई क्षेत्र की खोज में ५५ नये चित्रित शिलाश्रय मिले। इनमें से एक शिलाश्रय (क्रमांक बी०-१) में उत्खनन किया गया जिसमें लघुपाषाणास्त्र के दो स्तर प्रकाश में आये।

इस क्षेत्र में एक नई दिशा की ओर की गई खोज में लगभग १०० नई चित्रित शिलाश्रयों को ढूंढ निकाला गया। इन शिलाश्रयों के निकट ही एक महापाषाणीय-स्मारक खोज निकाला गया। इस स्मारक का यहाँ पाया जाना इस क्षेत्र की विशेषता प्रतीत होती है। एक बौद्ध स्तूप के अवशेष भी मिले जिसकी दीवारें आज भी सुरक्षित हैं।

(प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी के सूचना प्राप्त)

२५६२. **भीमबैठका उत्खनन (१९७१-७२, १९७२-७३)**

भोपाल के २६ मील दक्षिण की ओर विन्ध्य पर्वतमालाओं में स्थित भीम-बैठका (अर्थात् भीम के बैठने का स्थान) की पहाड़ियाँ हैं। लगभग १० किलो-मीटर के क्षेत्र में फैली हुई इन पहाड़ियों में ६०० से अधिक शिलाश्रय हैं जिनमें उपलब्ध प्रागैतिहासिक कालीन चित्रकला, पाषाण तथा पुरातत्त्व की अन्य सामग्री के कारण यह क्षेत्र विश्व के पुरातात्विक मानचित्र में महत्त्वपूर्ण स्थान पर बिठा दिया गया है।

विश्व भर में इस प्रकार के शिलाश्रयों की इतनी बड़ी संख्या किसी एक स्थान में आज तक नहीं प्राप्त हो सकी।

भीमबैठका की खोज का श्रेय उज्जैन के श्री वी० श्री० वाकणकर को है जिन्होने इसे १९६८ ई० मे ढूंढ निकाला था। तत्पश्चात् डा० श्यामकुमार पाण्डेय तथा श्री मुकर्जी की सहायता से उन्होंने खरवई, शहदकराड तथा भीम-बैठका की कुछ शिलाश्रयो में परीक्षण- उत्खनन करवाया। इन खुदाइयों में मध्य तथा उत्तरपाषाण युगीन पाषाणास्त्र तथा अवशेष प्राप्त हुए। १९६९ में डॉ० सांकलिया तथा श्री वाकणकर ने इस क्षेत्र का फिर से दौरा कर विस्तृत रूप से उत्खनन करने का निश्चय किया। १९७१-७२ में सागर तथा विक्रम विश्व-विद्यालयों ने यहाँ सर्वप्रथम नियमित रूप से उत्खनन कार्य सम्पन्न किया। १९७२-७३ में यहाँ और अधिक व्यापक स्तर पर डेक्कन कालेज रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना, विक्रम विश्वविद्यालय तथा लोक कला संग्रहालय, बासल (स्वीटज़रलैण्ड) द्वारा उत्खनन कार्य किया गया। अभी यह उत्खनन भविष्य में भी लगभग ५ वर्ष

तक चलने की योजना है। अब तक छोटी-बड़ी दस शिलाश्रयों में उत्खनन हुआ है, जिनमें भारी मात्रा में पुरातात्विक अवशेष मिले हैं।

उत्खनन के आधार पर यहाँ पर बसी सभ्यताओं को निम्नलिखित सांस्कृतिक क्रमों में रखा गया है—

काल ६—मध्यकालीन तथा आधुनिक मिट्टी के बरतन प्रयोग में लाने वाली संस्कृति।

काल ५—प्रारम्भिक ऐतिहासिक मिट्टी के बरतन तथा लघुपाषाणास्त्र प्रयोग में लाने वाली संस्कृति।

काल ४—लघुपाषाणास्त्र तथा मिट्टी के बरतन प्रयोग में लाने वाली ताम्रपाषाण संस्कृति।

काल ३—लघुपाषाणास्त्र तथा कुछ उत्तर पुरापाषाण उपकरण प्रयोग में लाने वाली संस्कृति।

काल २—मध्यपाषाण युगीन संस्कृति।

काल १—(आ) एश्यूलियन संस्कृति।

काल १—(अ) चौपर व चॉपिंग उपकरण उपयोग में लाने वाली संस्कृति।

भीमबैटका की एक गुफा के उत्खनन में मध्यपाषाणयुगीन एक स्तर से पत्थरों को चुनकर बनाई गई एक दीवार मिली है, जिसकी लम्बाई ६ मीटर तथा चौड़ाई ०·८ मीटर है। भारत में अभी तक हुए पुरातात्विक उत्खननों से प्राप्त प्राचीन दीवारों में यह सबसे प्राचीन मानव दीवार है। इस स्तर से रंगों के अनेक टुकड़े भी मिले हैं जिन्हें घिस कर रंग बनाया जाता था, जिससे गुफायें चित्रित की जाती थीं। इस स्तर में इन रंगों की प्राप्ति से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि यहाँ की गुफाओं में पाये जाने वाले प्राचीनतम चित्र मध्यपाषाण युगीन हैं। मध्यपाषाण युगीन स्तर से नर कंकाल भी प्राप्त हुए हैं।

भीमबैठका में उपलब्ध ४७५ शिलाश्रयों में प्रागैतिहासिक चित्र मिले हैं, जिन्हें लाल, सफेद, हरे व पीले रंगों से बनाया गया है। ये चित्र गुफाओं के छतों व दीवारों पर हैं। इनका तुलनात्मक अध्ययन कर विद्वानों ने इन्हें चार सांस्कृतिक कालों में बाँटा है जो निम्नानुसार है—

१—मध्यपाषाण काल १०,००० से ४,००० वर्ष पूर्व।

२—ताम्रपाषाण काल ४,००० से २,५०० वर्ष पूर्व।

३—प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल २,५०० से १,५०० वर्ष पूर्व।

४—उत्तर ऐतिहासिक काल १,५०० से ७०० वर्ष पूर्व।

इन चित्रों में अधिकांश मध्यपाषाण काल के हैं। चित्रों में पशुओं का प्राधान्य है। पशुओं में जंगली जानवर तथा बारहसिंगा, सूअर, शेर, हिरन, घरेलू जानवर यथा गाय, घोड़ा और कुत्ता, जलचर यथा मछली, केंकड़े, कछुआ आदि दिखाये गये हैं। इसके अतिरिक्त मानव जीवन के अनेक पहलू, उदाहरणार्थ नृत्य, वेशभूषा, आभूषण, मद्यपान, शिकार आदि के अनेक दृश्य हैं। इन चित्रों से तत्कालीन संस्कृति पर प्रकाश पड़ता है।

कुछ शिलाश्रयों में उत्कीर्ण चित्र भी हैं। उत्कीर्ण चित्र का यहाँ पाया जाना इस क्षेत्र की विशेषता प्रतीत होती है, क्योंकि भारत के अन्य किसी भी भाग में अभी तक गुफा उत्कीर्णन प्राप्त नहीं हुई हैं।

कुछ अन्य शिलाश्रयों में ब्राह्मी, शंख तथा गुप्त लिपि में लेख भी मिले हैं। शंख लिपि में लिखे लेखों की संख्या ५० से अधिक है। इस क्षेत्र में स्तूपाकार अवशेष भी कहीं-कहीं मिले हैं। इनकी संख्या अभी तक ३५ है।

१९७३-७४ का उत्खनन श्री वी० श्री० वाकणकर (विक्रम विश्वविद्यालय), डॉ० वीरेन्द्र नाथ मिश्र (डेक्कन कालेज, पूना) तथा कुमारी सुसान हास (बासल विश्वविद्यालय, स्वीट्ज़रलैण्ड) के निर्देशन में चल रहा है।

(जर्नल आफ़ इण्डियन हिस्ट्री भाग ५१, खण्ड-१, अप्रैल १९७३, पृ० २३-३२; धर्मयुग सप्ताहिक (बम्बई), रविवार, दिनांक ३० सितम्बर, १९७३, पृ० ८-१३।)

२५६३. तुमैन उत्खनन (१९७१-७२; १९७२-७३)

गुना जिले में अशोकनगर के १० कि० मी० दक्षिण में स्थित तुमैन (प्राचीन तुम्बवन) का उत्खनन सागर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग द्वारा प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी के निर्देशन में तथा श्री श्यामकुमार पाण्डेय तथा श्री विवेकदत्त झा की सहायता से वर्ष १९७१-७२ में प्रारम्भ किया गया। उत्खनन कार्य १९७२-७३ में जारी रहा तथा अभी भी चल रहा है। उत्खनन कराने के उद्देश्य तुम्बवन के गुप्त तथा उत्तर-गुप्त कालीन इतिहास पर प्रकाश डालना है। इस ओर अभी तक जो उपलब्धियां हुई हैं उनका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है।

१९७१-७२ में दो खदानों में उत्खनन कार्य प्रारम्भ किया गया। पहली खदान (टी० एम० एन०—१) 'तेलिन का खेड़ा' तथा दूसरी खदान (टी० एम० एन०—२) 'गढ़ी' नामक टीले पर लगाई गई। इन दोनों के सामूहिक प्रमाणों के आधार पर यहाँ के प्राचीन सांस्कृतिक कालों को चार भागों में विभाजित किया गया।

प्रथम काल से सम्बन्धित स्तर को ५वीं शताब्दी ई० पू० से २री शताब्दी ई० पू० के बीच रखा गया है। इस स्तर से उत्तरी काले ओपदार भाण्ड, काले और लाल भाण्ड, सफेद रंगे भाण्ड तथा सादे लाल भाण्ड प्राप्त हुए हैं। अन्य अवशेषों में पकी ईटें, मिट्टी, ताँबे तथा हाथीदाँत के आभूषण, लौह अस्त्र, ताँबे के आहत सिक्के आदि प्रमुख हैं।

द्वितीय काल (दूसरी शताब्दी ई० पू० से प्रथम शताब्दी ई० तक) के स्तर से अभ्रक मिले भाण्ड, सादे लाल खुदे भाण्ड तथा कुछ काले चित्रित भाण्ड प्राप्त हुए। सफेद रंगे भाण्ड तथा उत्तरी काले ओपदार भाण्डों का इन स्तरों में अभाव है। अन्य सामग्री में मकानों के अवशेष, आहत तथा जनराज्य सिक्के तथा खिलौने प्रमुख हैं।

तृतीय काल (प्रथम शताब्दी ई० से ५वीं शताब्दी ई० तक) के स्तरों से चमकीले लाल भाण्ड, छापे गये भाण्ड, लाल रंगे तथा काले रंगे भाण्ड प्राप्त हुए। टी० एम० एन०—२ में दो वलय कूप प्राप्त हुए। इस काल में मकान पकी ईंटों तथा पत्थरों की ईंटों से बनाये जाते थे। अन्य सामग्री में मकानों के अवशेष, चूल्हे, जले खाद्यान्न, मिट्टी, पत्थर, ताँबे, काँच तथा हाथीदाँत के आभूषण, घरेलू उपयोग में आने वाली अन्य वस्तुएँ तथा दो टूटी मूर्तियाँ प्रमुख हैं।

चतुर्थ काल (६वीं शताब्दी ई० से १२वीं शताब्दी ई० तक) के स्तर में सादे लाल भाण्ड प्रमुख रूप से प्राप्त हुए। कहीं-कहीं काले रंगे तथा अभ्रक रंगे भाण्ड भी मिले। अन्य सामग्री में मकानों के अवशेष तथा घरेलू उपयोग में आने वाली अन्य वस्तुएँ प्रमुख थीं। पत्थर की बनी गणेश की दो लघु प्रतिमाएँ भी इस काल के स्तर से प्राप्त हुई।

इस वर्ष की महत्त्वपूर्ण खोज में प्राप्त मौर्यकालीन तीन बौद्ध स्तूप प्रमुख हैं। ये स्तूप यथासम्भव मौर्यकाल में विदिशा तथा मथुरा को जोड़ते हुए मार्ग पर बनाये गये थे। तुम्बवन इस मार्ग पर स्थित था। इनमें से एक स्तूप की सफाई की गई तथा उसके बाहरी भाग पर मौर्यकालीन ईंटों की जुड़ाई देखी गई। ऊँचाई में यह स्तूप १२ मीटर तथा गोलाई ६३ मीटर है। स्तूप के घेरे का एक टूटा स्तम्भ भी यहाँ से प्राप्त हुआ है।

१९७२-७३ के वर्ष में तीन और खदानें (टी० एम० एन०—४, ५, ६) ली गईं। टी० एम० एन० ४ की खदान आधुनिक गाँव के मध्य में ली गई। इस खदान में एक वृहदाकार मकान के अवशेष मिले जिसे पत्थर की ईंटों से बनाया गया था। टूटे खुदे स्तम्भ, गुप्त और प्रतिहार-कालीन प्रतिमायें तथा छ: कोष्ठागार इस मकान में मिलीं। इस खदान की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी ५८९ हिन्द-सासानी सिक्के जिन्हें ताँबे के बरतन में रखा पाया गया।

टी० एम० एन०—५ की खदान को आधुनिक गाँव के उत्तर की ओर 'ओअर' नाले के निकट लिया गया। इस खदान के उत्खनन में भवनों के अवशेष प्राप्त हुए जो गुप्त, कुषाण, शुंग तथा मौर्यकालीन हैं। शुंग कालीन एक वलय-कूप तथा मौर्यकालीन एक जलाशय भी प्राप्त हुआ।

टी० एम० एन०—६ की खदान को पूर्वी द्वार के बायीं ओर स्थित टीले पर लिया गया। इस खदान में २·५ मीटर के नीचे पत्थर का स्तर आने के कारण अधिक गहराई तक नहीं खोदा जा सका। इस टीले के ऊपर तथा खदान में कुषाण कालीन अवशेष प्राप्त हुए।

प्रथम वर्ष में किये गये उत्खनन की तरह इस वर्ष के उत्खनन में भी यहाँ की प्राचीन संस्कृति चार कालों से सम्बन्धित पाई गई।

(प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी से सूचना प्राप्त)

२५६४. कायथा उत्खनन कार्बन— १४ की रीति से निर्धारित तिथि—

१	२	३	४	५
टी० एफ० ७७९	ताम्रपाषाण युगीन लकड़ी का कोयला—७वें स्तर से प्राप्त-क्रमांक ६९३	—	३७९० ± ११०	१८५० ई०पू०

(इ० आ० रि० १९६८-६९)

महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ तथा लेख

Katare S. L. — **'A note on Golkimatha**, JBORS, VOL. XLIII pp. 43-53

'Excavations at Sirpur' IHQ, XXXV, pp. 1-8.

'A note on the so-called Jabalpur Inscription of Sivaghosha. Jour. Oriental Institute, Baroda, XXIII pp. 369-72. Earlier written by Smt. Sobhna Gokhle on the same inscription in the same Journal No. XX pp. 442ff.

Shastri A. M. — **'Fresh light on the Bodhis'** JNSI, XXXIV, pp. II (1972), pp. 213-22

Pahadiya S. M. — **'Buddhist sangha organisation in Malwa.'** Jour. of Oriental Institute, Baroda, Vol. XXXI No. 3, March, 1973, pp. 294-303.

Michael W. Meister. — **'Ama, Amrol and Jainism in Gwalior Fort.'** Ibid. pp. 354-58.

शोभा कानूनगो — उज्जयिनी का सांस्कृतिक इतिहास; इन्दौर, १९७२।

Jain K. C. — **Malwa Through the Ages.** Delhi, 1972.

द्विवेदी हरिहर निवास — दिल्ली के तोमर। ग्वालियर, १९७३।

Bajpai K. D. — **'Madhya Pradesh sculpture through the Ages'.** Marg. Vol. XXVI, No. 3, June 1973, pp. 27-49.

Anand Mulkraj — **Souvenirs of Madhya Pradesh sculptures.** Ibid. pp. 1–26.

●●

स्थल-सूची

(प्रत्येक नाम के आगे दर्शायी गयी संख्या प्रस्तुत ग्रंथ के सन्दर्भ क्रमांक की ओर संकेत करती है)

फ

ब

००

अनुक्रमणिका

(इस विषयानुक्रमणिका में दर्शाये गये अंक प्रस्तुत ग्रन्थ के पृष्ठों के द्योतक हैं)

घ

च

झ

ट

ठ

ड

फ

ब

श

शब्दावली

अ	
अकीक	Agate
अत्यन्त नूतन युग	Pleistocene age
अर्द्ध-स्तम्भ	Pilaster
अर्धचन्द्र फलक	Crescent blade
अर्धचन्द्राकार औज़ार	Lunate
अनगढ़ भाण्ड	Coarse ware
अभिलेख	Inscription
अवशेष मंजूषा	Relic casket
आ	
आद्य-इतिहास	Proto-history
आद्य-ऐतिहासिक युग	Proto-historic age
आद्य नव-पाषाण संस्कृति	Proto-neolithic culture
आला (ताक)	Niche
आवक्ष	Bust
उ	
उत्कर्तित	Incised
उत्कीर्ण मुद्रा	Engraved seal
उत्खनन	Excavation
उद्भूत	Relief
उपकरण	Implement
उष्णीष	Coping stone
ऐ	
ऐश्यूलो	Acheulean
ओ	
ओप	Polish

औ

औज़ार	Tool

क

कच्ची ईंट	Mud brick
कार्बन तिथि-निर्धारण	Carbon dating
काले ओपदार उत्तरी भांड	Narttom Black polished ware
काले और लाल माण्ड	Black and red ware
कुठार	Axe
कैल्सेडोनी	Chalcedony
क्रोड	Core
क्रोड औज़ार	Core tool

ख

खुरचनी	Scraper

ग

गर्त	Pit
गदासिर	Mace-head
गवाक्ष शवाधान	Posthole cist
गवाक्ष पाषाण	Posthole stone
गुफ़ा	Cave
गुफ़ा-चित्र	Cave painting
गोलाश्म मृत्तिका	Boulder clay

घ

घन	Hammerstone

च

चकमक (पत्थर)	Flint
चक्की	Grinding stone
चक्रिक उपकरण	Discoid
चर्ट (पत्थर)	Chert
चट्टान लेख	Rock inscription
चमकीले लाल माण्ड	Lustrous red ware

ज	
जीवाश्म (फॉसिल)	Fossil
जेड	Jade
ज्यामितिक	Geometric
त	
ताम्र-निधि	Copper hoard
ताम्र-युग	Copper age
ताम्र पाषाण युग	Chalcolithic age
ताम्र पाषाण संस्कृति	Chalcolithic culture
द	
द्वार-पक्ष	Door-jamb
द्विमुखी औज़ार	Bifacial tool
ध	
धड़	Torso
धर्मादेश (राजाज्ञा)	Edict
धरातल खोज	Surface exploration
धरातल संग्रह	Surface Collection
धातु युग	Metal age
धूसर माण्ड	Grey ware
न	
नवपाषाण युग	Neolithic age
नवपाषाण संस्कृति	Neolithic Culture
नव प्रस्तर उपकरण	Neolithic tools
निखात निधि	Treasure trove
निधि	Hoard
निम्न उद्भूत	Base relief
प	
पट्ट	Stela
परीक्षण उत्खनन	Trial excavation
पहलूदार	Fluted
पानपात्र	Goblet

पाषाण घेरा	Stone circle
पाषाण युग	Stone age
पुरा-पाषाण संस्कृति	Palaeolithic culture
पुरालेख	Epigraph
पुरावशेष	Antiquities
पुराप्रस्तर युग	Palaeolithic age
प्रतिमा	Image
प्रागितिहास	Pre-history
प्रागैतिहासिक युग	Prehistoric age
फ	
फलक	Blade
फलक औज़ार	Blade tool
ब	
बजरी	Gravel
बेधक	Borer
बेधनी	Point
ब्यूरिण	Burin
भ	
भाला	Lance
म	
मनका	Bead
मध्य-पाषाण युग	Middle stone age
मध्य-पाषाण संस्कृति	Mesolithic culture
महापाषाण	Megalith
महापाषाण युग	Megalithic age
महापाषाणीय स्मारक	Megalithic monument
मुहर	Seal
मुष्ठि कुठार	Boucher
मृद्‌भांड	Pottery
मृद्-मुद्रा	Clay seal
मृद्-मुद्रांकन	Clay sealing
मृद्-मुहर	Clay stamp

मृण्मूर्ति	Terracotta
मोतिए पर काला	Black-on-cream ware
मोतियालेप वाले माण्ड	Cream stipped ware
र	
रचक	Fabricator
ल	
लघुपाषाण औज़ार	Microlith tool
लाल-पर-काला माण्ड	Black-on-red ware
लाल धारी वाला वर्तन	Red-stipped ware
लौह युग	Iron age
व	
वलय कूप	Ring-well
वास्तु अवशेष	Architectural remains
विदारणी	Cleaver
वेदिका	Balustrade
वेदिका-स्तंभ	Railing pillar
श	
शक-क्षत्रप	Saka satrap
शल्क	Flake
शल्क औज़ार	Flake tool
शल्क संस्कृति	Flake culture
शवाधान	Burial
शिलालेख	Stone inscription
शिलाश्रय	Rock shelter
शिलोत्कीर्ण धर्मादेश	Rock edict
शिल्प-उपकरण	Artifact
शूल (बल्लम)	Spear
शैलकृत्त	Rock-cut
शैलकृत्त निवास	Rock dwelling
शेषक गर्त	Soak pit
शंख	Shell
स	
समलम्ब	Trapeze

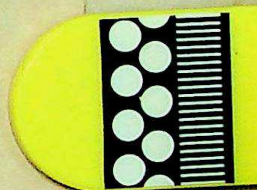
सहस्राब्द	Millenium
सिक्का	Coin
सिक्का शास्त्र	Numismatics
सिरदल	Lintel
सूची	Cross bar
सेल्ट (कुल्हाड़ी)	Celt
संग्रहालय	Museum
स्फटिक (पत्थर)	Quartz
स्मारक	Monument
स्तरण	Stratification
स्तर प्रमाण	Stratigraphical evidence
स्थल (स्थान)	Site
ह	
हस्त कुठार	Hand-axe
हाथी दाँत	Ivory
हिन्द-यूनानी	Indo-Greeks
हिम युग	Ice age
हिमानी युग	Glacial age
अं	
अंडिल	Ovate
कांस्य युग	Bronze age
गंड़ासा	Chopper
दंड टंक	Bar celt
संकल्पित (समर्पित)	Votive
संकल्पित लेख	Votive inscription
संकल्पित पट्ट	Votive tablet
संगुटिक गोलाश्म	Boulder conglomerate
संगोरा शवाधान	Cairn burial
संवत्	Era
स्तंभ	Column

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ संखया	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१३	मुष्टिकुठार	मुष्ठिकुठार
२	९	स्थिति	स्थित
५	५	पदापण	पदार्पण
२५	६	पुर्नस्थापित	पुनर्स्थापित
२७	२२	वृषनाथ	वृषनाग
४६	११	ऋद्धिपुर	ऋद्धपुर
८७	२३	अल्हघाट	आल्हाघाट
९२	४	स्वर्गवा	स्वर्गवास
११२	२१	तारदेहो	तारादेहो
१२४	१३	ईसरवा	ईसरवाड़ा
१२६	२५	२०	२००
१२८	२८	तारदेही	तारादेहो
१३१	१२	पीपल्या-बावली	पिपल्या-बावलो
१४२	२३	धाट लोहांगा	घाट लोहांगा
१५४	१६	हशंगाबाद	होशंगाबाद
१६६	५	सोरार	सोरर
१६७	१	२२	६२२
१७०	४	बुढ़िखार	बूढ़ीखार
१७१	२८	शिलाहर	शिलाहार
१७३	३०	तुमेन	तुमैन
१७४	११	बड़ोह	बडोह
१८०	२६	आरग	आरंग
१८१	७	इश्वरमऊ	ईश्वरमऊ
१८४	२३	वापक्पतराजदेव	वाक्पपतिराजदेव
१९४	२७	वाक्यपतिराज	वाकपतिराज
२०४	११	रीवा	शहडोल

२१८	३२	राजापुर	राजपुर
२२६	२५	अमरौल	अमरोल
२४३	६	७८	६७८
२४३	१२	जरवोदा	जखोदा
२६०	३१	लखनादोन	लखनादीन
२६४	२२	सोर (दुर्ग)	सोरर (दुर्ग)
२८३.	५	धनच	धनैच
२८७	११	बूढ़ी-चन्देरी	बूढ़ी-चन्देरी
२८७	१५	बूढ़ि-राई	बूढ़ी-राई
२६५	२४	केथलि	केथुलि
३०६	३	रीवा	शहडोल
३१०	१०	सिंपुर	सिघपुर
३२४	५	गरूर	गुरूर
३२४	२२	१६६८	१४६८
३२६	१८	११३५	१५३५
३३८	२१	माकनगज	माकन गंज
३३६	१६	मारा	माड़ा
३४२	५	शंखुधर	शंखुधर
३५२	४	तुमेन	तुमैन
३६२	१८	आगरा	आगर
३७६	१६	गरूर	गुरूर
३८०	२०	तलाब	तालाब
३८६	२५	तुमेन	तुमैन
४०८	१४	२०६	२१०६
४५३	१६	२४०	२४०६
४५६	१	रिआपुर	रायपुर
५२६	१५	चजर्भज देवी	चतुर्भुज देवी
६४०	२६	साथ ह	साथ ही
६६५	६	Le wesuriar	Le mesuriar
६७७	२३	Sculpture numbers	Sculpture number
७२७	१३	बाजपेयी के	बाजपेयी से

●●



मध्य प्रदेश का पुरातत्त्व - मानचित्र

किलोमीटर

राजस्थान

उत्तर-प्रदेश

बिहार

उड़ीसा

महाराष्ट्र

आन्ध्र प्रदेश

जेजाकभुक्ति

दशार्ण

अवन्ति

मालव

आकर

अनूप

विन्ध्याचल श्रेणी

सतपुड़ा श्रेणी

मैकल श्रेणी

महाकोसल

दक्षिण कोसल

चक्रकूट

मुरैना

भिण्ड

कुतवार (कान्तिपुरी)

ग्वालियर

पवाया (पद्मावती)

दतिया

झांसी

शिवपुरी

गुना

टीकमगढ़

छतरपुर

खजुराहो (खर्जूरवाहक)

पन्ना

सतना

रीवा

सीधी

भरहुत

मंदसौर (दशपुर)

रतलाम

झाबुआ

उज्जैन (उज्जयिनी)

देवास

इन्दौर

धार (धारा)

महेश्वर (माहिष्मती)

खरगोन

खण्डवा

नरसिंहगढ़

उदयगिरि

विदिशा

सांची (काकनादबोट)

रायसेन

भोपाल

सिहोर

आष्टा

भीमबेटका

होशंगाबाद

सागर

एरण

दमोह

नरसिंहपुर

जबलपुर (जाबालिपुर)

तेवर (त्रिपुरी)

शहडोल

अमरकंटक

मण्डला

छिन्दवाड़ा

बैतूल

सिवनी

बालाघाट

बिलासपुर

रायगढ़

अम्बिकापुर

रायपुर

दुर्ग

राजनांदगांव

जगदलपुर

बस्तर

नर्मदा नदी

संकेत

	गुहा-चित्र		स्तूप
	प्रागैतिहासिक काल		नदियाँ
	प्राचैतिहासिक काल		जिला-मुख्यालय
	ऐतिहासिक युगीन स्मारक		रेलें
	मध्यकालीन स्मारक		सड़कें
	मंदिर		जिलों की सीमाएँ